

जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश

[पंचम भाग]

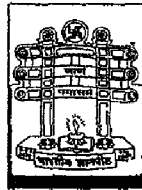
शब्दानुक्रमणिका

जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश

[पंचम भाग]

शब्दानुक्रमणिका

क्षु. जिनेन्द्र वर्णी



भारतीय ज्ञानपीठ

चतुर्थ संस्करण : 2003 □ मूल्य : 130 रुपये

भारतीय ज्ञानपीठ

(स्थापना फाल्गुन कृष्ण 9, वीर नि स 2470, विक्रम स 2000, 18 फरवरी 1944)

पुण्यश्लोका माता मूर्तिदेवी की स्मृति में
साहू शान्तिप्रसाद जैन द्वारा सस्थापित
एवं

उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रमा जैन द्वारा सम्पोषित

मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, कन्नड़, तमिल आदि प्राचीन भाषाओं में उपलब्ध आगमिक, दार्शनिक, पौराणिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक आदि विविध विषयक जैन साहित्य का अनुसन्धानपूर्ण सम्पादन तथा उनके मूल और यथासम्भव अनुवाद आदि के साथ प्रकाशन हो रहा है। जैन-भण्डारों की ग्रन्थसूचियों, शिलालेख-संग्रह, कला एवं स्थापत्य पर विशिष्ट विद्वानों के अध्ययन-ग्रन्थ और लोकहितकारी जैन साहित्य ग्रन्थ भी इस ग्रन्थमाला में प्रकाशित हो रहे हैं।

•

प्रधान सम्पादक (प्रथम संस्करण)
डॉ. हीरालाल जैन एवं डॉ. आने उपाध्ये

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ

18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110 003

मुद्रक बी के ऑफसेट, दिल्ली-110 032

© भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित

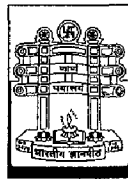
JAINENDRA SIDDHĀNTA KOŚA

[PART-V]

INDEX

by

Kshu. JINENDRA VARNI



BHARATIYA JNANPITH

Fourth Edition : 2003 □ Price : Rs. 130

BHARATIYA JNANPITH

(Founded on Phalguna Krishna 9, Vira N Sam 2470, Vikrama Sam 2000, 18th Feb 1944)

MOORTIDEVI JAIN GRANTHAMALA

FOUNDED BY

Sahu Shanti Prasad Jain

In memory of his illustrious mother Smt. Moortidevi

and

promoted by his benevolent wife

Smt. Rama Jain

In this Granthamala critically edited Jain agamic, philosophical,
puranic, literary, historical and other original texts in Prakrit,
Sanskrit, Apabhramsha, Hindi, Kannada, Tamil etc
are being published in the original form with their
translations in modern languages
Catalogues of Jain bhandaras,
inscriptions, studies on art and architecture by
competent scholars and popular
Jain literature are also being published



General Editors (First Edition)

Dr Hiralal Jain and Dr A N Upadhye

Published by
Bharatiya Jnanpith
18, Institutional Area, Lodi Road, New Delhi-110 003

Printed at B K Offset, Delhi-110 032

© All Rights Reserved by Bharatiya Jnanpith

प्रकाशकीय

जैन धर्म-दर्शन के प्रखर तत्त्ववेत्ता श्रद्धेय क्षु जिनेन्द्र वर्णी जी द्वारा लिखित 'जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश' भारतीय ज्ञानपीठ ने चार भागों में पहली बार सन् 1971-73 में प्रकाशित किया था। प्रस्तुत ग्रन्थ उक्त चारों भागों की शब्दानुक्रमणिका (इण्डेक्स) के रूप में पाँचवों खण्ड है। वैसे देखा जाए तो कोश अपने-आप में शब्दानुक्रम के रूप में ही होता है, फिर भी इस इण्डेक्स की अपनी विशेष उपयोगिता है। उदाहरण के लिए, 1 कोश में शब्द विशेष के विवेचन में प्रसंगवश अनेक ऐसे शब्दों का भी उल्लेख है, जिन्हें मुख्य शब्द के रूप में नहीं रखा गया, मात्र सन्दर्भ के रूप में ही उनका प्रयोग हुआ है, 2 अनेक ऐसे शब्द भी हैं जिनका प्रयोग प्रसंगत अनेक बार अनेक सन्दर्भों में हुआ है, साथ ही, 3 ऐसे भी अनेक शब्द हैं जिनकी प्ररूपणाओं के सन्दर्भ एक-साथ, एक-जगह न होकर ग्रन्थ में यत्र-तत्र फैले हुए हैं। इन सब बातों को ध्यान में रखकर वर्णी जी ने पूरे कोश की शब्दानुक्रमणिका जैसे श्रमसाध्य कार्य को भी अपने जीवन-काल के अन्तिम दिनों में पूरा कर दिया था। वर्णी जी ने यह शब्दानुक्रमणिका कोश के प्रथम संस्करण के आधार पर बनायी थी, लेकिन बाद में जो संस्करण निकले उनमें संशोधन-परिवर्तन के कारण चारों भागों की पृष्ठ-संख्या में अन्तर आ गया। अतः यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि यह शब्दानुक्रमणिका कोश के द्वितीय और उसके बाद के संस्करणों पर आधारित है। प्रथम संस्करण से इसकी पृष्ठ-संख्या मेल नहीं खाएगी। शब्दानुक्रम (इण्डेक्स) देखते समय पाठकों को द्वितीय आदि संस्करण को ही ध्यान में रखना होगा।

इस शब्दानुक्रमणिका (इण्डेक्स) में दिये गये शब्द के सन्दर्भ का पहला अंक कोश के भाग का सूचक है। बिन्दु के बाद के अंक उस भाग की पृष्ठ-संख्या के सूचक है। 'अ' का अर्थ उस पृष्ठ का पहला कॉलम है और 'ब' का अर्थ दूसरा कॉलम। जैसे 'केवली—2 155 अ' का तात्पर्य है कि 'केवली' शब्द के लिए देखें—द्वितीय भाग के पृष्ठ 155 का पहला कॉलम।

हमारे विशेष अनुरोध पर श्री अरहत कुमार जैन (वाराणसी) ने इस शब्दानुक्रमणिका के संशोधन कार्य—द्वितीय आदि संस्करण के अनुरूप पृष्ठ-संख्या शुद्धि के कार्य—में अथक परिश्रम किया है। जैनेन्द्र वर्णी ग्रन्थमाला, पानीपत के प्रबन्धक श्री सुरेश कुमार जैन ने भी इस दिशा में हमें पर्याप्त सहयोग दिया है। भारतीय ज्ञानपीठ की ओर से इन दोनों सहयोगी बन्धुओं के प्रति हम विशेष आभारी हैं।

—प्रकाशक

जैनेन्द्र कोश शब्दानुक्रमणिका

(क्षु. जिनेन्द्र वर्णी)

यदीया वाग्गंगा विविधनयकल्लोलविमला,
बृहज्ज्ञानाभोभिर्जगति जगता या स्नयपति ।
इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥

अ

अंक — १.१ अ । चित्रा पृथिवी ३.३८६ ब । सौधर्म स्वर्ग
पटल — निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अकन
४ ५१६, ब, आयु १.२६६ । अनुदिश स्वर्ग श्रेणीबद्ध —
निर्देश ४ ५१६ अ, अकन ४ ५१६, आयु १ २६६ ।
अक (कूट) — १.१ अ । कुण्डलवर पर्वत का — निर्देश
३ ४७५ ब, विस्तार ४८७, अंकन ३.४६७ । मानु-
षोत्तर पर्वत का — निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार
३ ४८६, अकन ३.६४ । रुचकवर पर्वत का — निर्देश
३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अकन ३.४६६ ।
अंकगणना — १.१ अ ।
अंकगणित — १.१ अ ।
अंकगति — वाम दिशा से २.२२२ अ ।
अंकप्रभ — १.१ अ । कुण्डलवर कूट — निर्देश ३.४७५ ब,
विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६७ ।
अकमय — १.१ अ । पद्मद्रुह कूट — निर्देश ३ ४७४ अ,
विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४५४ ।
अकमुख — १.१ अ ।
अकलेश्वर — १.१ अ ।
अंका — विदेहस्थ नगरी — नाम निर्देश ३.४७० ब, स्वरूप
निर्देश ३.४६० अ, विस्तार ३.४७६-४८१, अकन
३.४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ ।
अंकावती — १.१ अ । विदेहस्थ नगरी — नाम निर्देश ३.४७०
ब, स्वरूप निर्देश ३.४६० अ, ४६५ के सामने, विस्तार
३.४७६-४८१, अंकन ३.४४४, चित्र ३.४६० अ ।

अकुरारोपण — इन्द्रनन्दि १.२६६ ब ।

अंकुरार्पण यंत्र — ३.३४८ ।

अकुश रचना — अध.प्रवृत्तकरण २.८ ब, २.६ अ ।

अंकुशित — १ १ अ, वन्दना दोष ३.६२२ ब ।

अंक. को. को. — अन्तःकोटाकोटी २.२१८ ब ।

अंग — १ १ अ । अनुमान १.६८ ब, उपदेश १.४२५ अ,
देश ३ २७५ ब, पूजा ३ ८० ब, वानर वंश १.३२८
ब, शरीर १.१ ब, श्रुतज्ञान ४.६७ ब, सम्यक्
चारित्र २ २८२ अ, सम्यग्ज्ञान २.२६३ अ, सम्यग्दर्शन
४ ३५० ब, सेना ४.४४४ अ ।

अंगज्ञान — १ १ अ ।

अंगज — ४ २६ अ ।

अंगद — १.१ अ, वानरवश १.३३८ ब ।

अंगधर — मूलसंघ १ ३१६-३१७ ।

अंगनिमित्त-ज्ञान — २ ६१२ ब, ऋद्धि १.४४८ ।

अंगपण्णति — १.१ अ, इतिहास १.३४६ ब ।

अंगप्रविष्ट — ४ ६७ अ, ब ।

अगबाह्य — ४.६७ ब ।

अंगभूत — ४ ६७ अ ।

अंगांशधर — मूलसंघ १.३८७, ३२२ ब, १. परि./२.२ ।

अंगार — १.१ ब । देश ३.२७५ ब ।

अंगारक — १.१ ब । देश ३.२७५ अ ।

अंगारदोष — आहार १.२६२ अ ।

अंगारिणी — १.१ ब । विद्या ३.५४४ अ ।

अंगावर्त — १.१ ब । विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

अंगिरा — ४.३६८ ब ।

अंगिरैयक—पर्वत ३.२७५ ब ।

अंगुल—११ ब । क्षेत्र प्रमाण २.२१५ अ ।

अंगुलीचालन—१.१ ब । व्युत्सर्ग तप का दोष ३.६२२ अ ।

अंगोपांग—११ ब ।

अंगोपांग नाम कर्म प्रकृति—११ ब ; प्रकृति २.५८३ अ, ३.६५ ब, स्थिति ४.४६४, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६ अ, बन्ध ३.६८, बन्धस्थान ३.११०, उदय १.३७४ अ, ३.७५, उदय स्थान १.३६०, उदीरणा १.४११, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्व स्थान ४.३०३, त्रिसयोगी स्थान १.४०४ अ, सक्रमण ४.८४ ब । अल्पबहुत्व १.१६६ अ ।

अंजन—१२ अ । चित्रा पृथिवी ३.३८६ ब । देवकुरु का दिग्गजेन्द्र—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, ४.८५, ४.८६, अकन ३.४४४ । पाण्डुक वन मे यम देव का भवन ३.४५० ब । प्रतिष्ठा-मण्डप का द्वार-पाल देव ३.४६१ ब । वरुण लोकपाल का यान ४.५१३ अ । सनत्कुमार स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४.५१७, अकन ४.५१५, आयु १.२६७ ।

अंजन (कूट)—१२ अ । मानुषोत्तर—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अकन ३.४६४ । रुचकवर—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६८, ४.६६ ।

अंजनगिरि—१२ अ । नन्दीश्वर द्वीप मे—निर्देश ३.४६३ ब, विस्तार ३.४८७, वर्ण ३.४७८, अकन ३.४६५, चित्र ३.४६५ । रुचकपर्वत का दिग्गजेन्द्र ३.४७६ ब ।

अंजनमूल—१.२ अ । चित्रा पृथिवी ३.३६१ अ ।

अंजनमूल (कूट)—मानुषोत्तर—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अकन ३.४६४ । रुचकवर—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अक ३.४६८, ४.६६ ।

अंजनमूलक—१.२ अ ।

अंजनवर—१.२ अ । सागर द्वीप—निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अकन ३.४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष चक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४ ।

अंजन शैल—१२ अ । वक्षार गिरि—निर्देश ३.४६० अ, नाम निर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७ ।

अंजना—१.२ अ । चतुर्थ नरक—निर्देश २.५७६ अ, पटल इन्द्रक श्रेणीबद्ध २.५७८, २.५८०, विस्तार २.५७६, २.५७८, अकन ३.४३६, ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६३ ।

अंजना (नरकगति प्ररूपणा)—बन्ध ३.१००, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदय स्थान १.३६२, उदीरणा १.४११, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ । सत् ४.१७०, सख्या ४.६५, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४.४७६, काल २.१०१, अन्तर १.८, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४ अ ।

अंजना पवनंजय—इतिहास, १.३४४ अ ।

अंजली—प्रमाण १.४७२ अ ।

अजसा—१.२ अ ।

अंजुका—इन्द्राणी ४.५१३ ब ।

अंड—१२ अ ।

अंडज—जन्म १.२ अ । वस्त्र ३.५३१ अ ।

अंडर—१.२ अ, वनस्पति ३.५०६ ब, ३.५१० अ ।

अंडा—उत्पत्ति ३.५८७ ब ।

अंतःकरण—१.२ ब । मन ३.२७० अ, ३.२७१ अ ।

अंतःकोटाकोटी—१.२ ब, सहनानी २.२१८ ब ।

अंत—१२ ब, गणित २.२६ ब, २.२३० ब, गुणहानि २.२३२ अ । नरक पटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ । परमाणु ३.१६ ब ।

अंतकाल—४.३८५ ब ।

अंतकृत—१.२ ब, केवली १.२ ब, २.१५७ अ, दशाग १२ ब, ४.६८ अ ।

अंतडी—१.२ ब, औदारिक शरीर १.४७२ अ ।

अंतधन—गणित २.२३० ब ।

अंतप—मनुष्य लोक ३.२७५ ब ।

अंतमति—सल्लेखना ४.३८५ ब ।

अंतरंग—१.२ ब, उपयोग २.४०६ ब, कारण २.६२ अ, २.७२ ब, चिह्न २.४७८ ब, छेद १.२१६ ब, २.३०६ ब, ३.२६ अ, ४.५३३ ब, जल्प ३.५४३ अ, तत्त्व ३.३३६ अ, तप २.३६१ अ, त्याग ३.२७ ब, ३.२८ ब, धर्मध्यान २.४८५ ब, परिग्रह ३.२७ ब, ३.२८, ३.२६ अ, प्रत्यय ३.१२५ ब, प्रमेय ३.१४४ अ, प्रायश्चित्त ३.१५८ ब, शुद्धि ३.२६ अ, हिंसा ४.५३६ अ ।

अंतर—१.२ ब, अनुयोगद्वार १.१०२ अ, १.१०३ अ, गति परिवर्तन १.५ अ, साक्षा असाता ३.५६२ ब । प्ररूपणा—ओघ आदेश १.७-२२, अनन्तानुबन्धी १.६१ ब, उदीरणा १.४१२, उपशम १.४३८, स्थितिबन्ध ४.४५८ ब, स्वामित्व सन्निकर्ष १.२४ ।

अंतरकरण—१.२५ अ, उपशम विधान १.४३८ ब,
चारित्रमोह क्षपणा २.१८० अ ।

अंतरकृष्टि—१.२७ अ, कृष्टि २.१४० अ, ब, चारित्र
मोह क्षपणा २.१८० ब ।

अतरद—१.२७ अ, ग्रह २.२७४ अ ।

अंतरनिवासी देव—व्यन्तर देव—आयु १.२६४ ब ।

अंतरात्मा—१.२७ अ, आत्मा १.२४४ ब, जीव
२.३३३ अ, ब, त्याग-ग्रहण ३.३०५ ब, भव्य
३.२१३ अ, शास्त्रज्ञान २.२६७ ब ।

अंतरानुयोग द्वार—१.१०२ अ, काल २.६४ अ ।

अंतराय (आहार)—१.२७ ब ।

अंतराय कर्म प्रकृति—१.२७ ब, अघातीवत् १.६१ अ,
आबाधा १.२४६ अ । प्ररूपणा—प्रकृति १.२७,
३.८८, स्थिति ४.४६७, अनुभाग १.६४ ब, ६५,
अनुभाग का अल्पबहुत्व १.१६७ अ, १.१६६ ब,
प्रदेश ३.१३६ । बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.११०,
उदय १.३७५, उदय के निमित्त १.३६७ ब, उदय
स्थान १.३८७ ब, उदीरणा १.४०० अ, १.४११,
उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान
४.२६४, त्रिसंयोगी भंग १.४०१ अ, १.३६६ ब ।
अध्यवसाय स्थान १.६५, ३.१३८ अ, अल्पबहुत्व
१.१६७ अ, सक्रमण ४.८५ ब ।

अंतरायाम—अन्तरकरण १.२५ अ, १.२६ ब, १.२७ अ,
उपशम १.४४१ अ ।

अंतरिक्ष निमित्तज्ञान—२.६१२ ब, ऋद्धि १.४४८ ।

अंतरिक्ष स्थिति—अर्हन्नातिशय १.१३८ अ ।

अंतरित—श्रद्धान ४.४५ अ ।

अंतर्द्वीप—१.२६ ब । कुमानुष द्वीप—निर्देश ३.४६२ ब,
विस्तार ३.४४६, अकन ३.४४४, ३.४६१, ३.४६४ के
सामने । कालविभाग २.६३, भोगभूमि २.४६२ ब ।
चक्रवर्ती का वैभव ४.१३ ब । ग्लेच्छ—निर्देश
३.२७३ ब, ३.३४५ ब, ३.३४६ अ, अवगाहना
१.१८०, आयु १.२६४ अ, गुणस्थान ३.२३६ अ ।
बोद्धामिमत् ३.४३४ ब ।

अंतर्द्वान ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५१ ब ।

अतर्पण्य—१.२६ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

अंतर्मग्न—मोक्षमार्ग ३.३३७ ब ।

अंतर्मुख चित्रप्रकाश—दर्शनोपयोग २.४०६ ब, २.४०७ अ,
अंतर्मूर्त—१.३० अ, काल का प्रमाण २.२१६ ब,
सहनानी २.२२० अ ।

अंतर्विचारिणी—१.३० अ, विद्या ३.५४४ अ ।

अतस्थिति—अन्तरकरण १.२५ ब, सक्रमण ४.८६ ब ।

अंतश्चित्प्रकाश—दर्शनोपयोग २.४०६ ब, २.४०७ अ ।

अतस्तत्त्व—तत्त्व २.३५३ ब ।

अंतिम गुणहानि—गणित २.२३२ अ ।

अतिमतीर्थ—कृतिकर्म २.१३४ अ, समवसरण ४.३३१ ब ।

अत्यसौक्ष्म्य—सूक्ष्म ४.४३८ ब ।

अत्यस्थौल्य—४.४३६ अ ।

अध—१.३० अ, नरक पटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार
२.५८० अ, अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

अधपाषाण—३.२१२ अ ।

अधश्रद्धान—४.४४ अ ।

अधहस्ती न्याय—एकान्त १.४६३ ब ।

अंधेद्रा—नरक पटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार
२.५८० अ, अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

अंध्र—नगरी १.३० ब ।

अंध्रकृष्टि—१.३० अ, वानरवश ६.३३८ ब ।

अंध्रकवृष्टि—१.३० अ, यदुवश १.३८६, हरिवश
१.३४० अ ।

अंबर—१.३० ब ।

अंबरतिलक—१.३० ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब ।

अंबरीष—१.३० ब ।

अबर्णा—१.३० ब । नदी ३.२७६ अ ।

अबा—कुरुवश १.३३६ अ, व्यतर गणिका ३.६११ ब ।

अबालिका—कुरुवश १.३३६ अ ।

अंबिका—कुरुवश १.३३६ अ । नव नारायण ४.१८ ।

अंबुवान—३.५३२ अ ।

अंभोद—राक्षस वंश १.३३८ अ ।

अंभोधि—यदुवश १.३३७ ।

अंश—१.३० ब, उत्पादादि १.३५८ अ, ३.६१ ब, केवलज्ञान
२.२५६ ब-२.६०, गणित २.२२३ ब, गुण २.२४१
अ, ज्ञान २.२५६ ब, चारित्र २.२६३ ब, परमाणु
३.१७ अ, पर्याय ३.४५ ब, बन्ध ३.३३४ अ, भेद
विज्ञान ३.३३४ अ, मोक्ष ३.३३४ अ, राग १.४३२
अ, ब, ३.२०५ ब, सवर ४.१४३ ब, सम्यक्त्व
३.३०६ अ, ३.१० अ ।

अंश कल्पना—१.३० ब, विकलादेश ३.५३६ ब ।

अंशपना—३.१८ ब ।

अंशुमान—विद्याधर वश १.३३६ अ ।

अ—असजी २.२१६ अ ।

अकंप—यदुवश १.३३७ ।

अकंपन—१.३० ब, गणधर २.२१३ अ, राज्यवश १.३३५
अ, यदुवश १.३३७ ।

अकंपनाचार्य—१.३० ब, विष्णुकुमार १.३३६ अ ।

अकबर—१३० व ।

अकम्प—दे० अकप ।

अकम्पन—दे० अकंपन ।

अकम्पनाचार्य—दे० अकपनाचार्य ।

अकरण—उपशम १४३७ अ ।

अकर्तव्य—धर्म २४७१ व ।

अकर्ता—एकान्तवाद २३४४ ब, कर्ताकर्म २.२४ ब, ज्ञानी २.२६६ अ, ज्ञानचेतना २.२६८ ब, ३००, राग ३.३६६ अ, सम्यग्दृष्टि ४.३७६ अ ।

अकर्तृत्व—कर्ताकर्म २.२४ ब, शक्ति १.३० ब, नय २.५२३ ब ।

अकर्म—उदय १.३६६ ब ।

अकलक—चन्द्र १.३२३ ब, त्रैविद्य १.३० ब, १.३२५ १.३३२ अ, भट्ट १.३१ अ, मूलसध १.३२२ ब, इतिहास १.३३४ अ, १.३४७ ब ।

अकलक स्तोत्र—१.३१ अ, अकलक १.३१ अ, आगम परम्परा १.३४१ ब ।

अकषाय—कषाय २.३६ अ ।

अकषाय वेदनीय—३.३४४ अ ।

अकषायी—उदय १.३८२, उदयस्थान १.३६२, उदीरणा १.४११, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८६, सत्त्वस्थान ४.३००, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ । सत् ४.२३२, संख्या ४.१०५, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४.४८८, काल २.११३, अन्तर १.१५, भाव ३.२२१ अ, अल्पबहुत्व १.१५० अ ।

अकाम निर्जरा—२.६३२ ब ।

अकाय—सिद्ध—निर्देश २.४४, ४५ अ, जीवसमास २.३४२ । अल्पबहुत्व १.१४७ ब, सत् ४.२११ ।

अकाह—३.५२५ ब ।

अकार्य कारणशक्ति—१.३१ अ ।

अकाल नय—१.३१ अ, नय २.५२३ ब ।

अकालमृत्यु—३.२८४ अ ।

अकालवर्ष—१.३१ अ, राष्ट्रकूट वष १.३१५ अ, ब ।

अकालाध्ययन—१.३१ अ ।

अकालुष्य—शुभोपयोग १.४३४ ब ।

अकिंचित्कर—कारण २.६८ अ ।

अकिंचित्कर हेतुभास—१.३१ अ ।

अकुशलानुबन्धा—२.६२२ ब ।

अकृत—१.३१ ब ।

अकृतिधारा—गणित २.२२६ अ ।

अकृतिमातृकाधारा—गणित २.२२६ अ ।

अकृत्रिम गृह—वसतिका ३.५२७ व, ५२८ अ ।

अकृत्रिम चैत्यालय—२.३०४ अ ।

अक्रम—अनेकान्त १.१०५ ब, २.१७२ ब, गुण २.१७२ अ, केवलज्ञान २.१४६ ब, योगस्पर्धक ३.३८३ ब ।

अक्रमवर्ती—२.१७२ ब ।

अक्रमानेकान्त—१.१०५ व, २.१७२ ब ।

अक्रियवान—१.३२ अ ।

अक्रियावाद—१.३१ व, एकान्त १.४६५ अ ।

अक्रियावादी—चार्वाक २.२६४ ब ।

अक्रूर—यदुवश १.३३७ ।

अक्ष—१.३२ अ, गणित २.२२६ अ, ब, ग्रह २.२७४ अ, निक्षेप २.५६८ ब, सुविधिनाथ २.३८४ ।

अक्षकर्म—२.२६ अ ।

अक्षत—पूजा ३.७८ ब ।

अक्षपाद—परवाद ३.२३ अ, गौतम २.६३४ अ ।

अक्षमाला—अकम्पन १.३० ब ।

अक्षमृक्षण—३.२२६ ब ।

अक्षमृक्षण वृत्ति—१.३२ अ ।

अक्षयनिधिब्रत—१.३२ अ ।

अक्षयफल दशमीव्रत—१.३२ अ ।

अक्षयानन्त—३.३३२ अ ।

अक्षयी—कुरुवश १.३३६ अ ।

अक्षर—१.३२ ब, आगम १.२२८ ब, केवलज्ञान ४.६५ ब ।

अक्षरज्ञान—१.३३ ब, श्रुतज्ञान ४.६५ अ, ६६ अ ।

अक्षरसमास—१.३३ ब ।

अक्षरसमास ज्ञान—४.६५ अ ।

अक्षरात्मक—श्रुतज्ञान ४.५६ ब, शब्द ६.२२६ ब ।

अक्षसंचार—१.३३ ब, गणित २.२२६ अ ।

अक्षांश—१.३३ ब ।

अक्षिप्र—१.३३ ब, ज्ञान ३.२५६ अ ।

अक्षीण महानस—ऋद्धि १.४४७, १.४५६ ब ।

अक्षीण महालय—ऋद्धि १.४४७, १.४५६ ब ।

अक्षीण परिभ्रमण—१.३३ ब ।

अक्षेत्रवान्—द्रव्य २.४५६ ब ।

अक्षेम—२.२०६ अ ।

अक्षोभ—१.३३ ब, विद्याधर ३.५४६ अ ।

अक्षोभ्य—यदुवश १.३३७, विद्याधर ३.५४६ अ ।

अक्षौहिणी—१.३३ ब । सेना ४.४४४ अ ।

अखंड—१.३३ ब, परमाणु ३.१८ ब, द्रव्य १.२२१ ब ।

अखंड—नरक पटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन ३.४४१, नारकी—अवगाहना १.१७८,

आयु १.२६३ ।
 अखण्ड—दे० अखण्ड ।
 अखोभिनी—संख्या प्रमाण २.२१४ ब ।
 अगर्त—१ ३३ ब, देश ३.२७५ अ ।
 अगाह—१.३३ ब, श्रद्धान ४ ३७० ब ।
 अगार—१ ३३ ब, ३४ अ ।
 अगारी—१ ३३ ब, अनगारी व्रती ३.६२६ अ, ४.५० अ,
 अनगार १ ६२ अ ।
 अगास देव—१.३४ अ ।
 अगोतार्थ—आचार्य ४ ३६४ अ ।
 अगुण—उपशम १ ४३७ अ ।
 अगुणी—नय २ ५२३ ब ।
 अगुप्ति भय—३ २०६ अ, ब ।
 अगुरु—३.३०० अ ।
 अगुरुलघु—१ ३४ अ, गुण १ ३४ अ, ४.८१ अ, मोक्ष
 ३.३२६ अ ।
 अगुरुलघु नाम कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति १ ३४ ब,
 २.५८३, ३ ८८-८९ ब, स्थिति ४ ४६५, अनुभाग
 १ ६५ अ, अनुभाग का अल्पबहुत्व १ १६६ ब, प्रदेश
 ३ १३६, बन्ध ३ ६७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय
 १.३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११,
 उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान
 ४.३०३, त्रिसयोगी १.४०४ अ, सक्रमण ४ ८४ ब,
 स्वामित्व व गुणस्थान ३ १३७ अ ।
 अगुरुलघु चतुष्क—उदय १.३७४ ब ।
 अगुरुलघु द्विक—उदय १ ३७४ ब ।
 अगुरुलघुत्व—गुण १ ३४ अ, मोक्ष ३.३२६ अ ।
 अगृहीत द्रव्य—सहजानी २ २१६ अ ।
 अगृहीत मिथ्यात्व—एकान्त १.४६४ ब ।
 अगृहीता—४.४५० ब ।
 अगृहीतार्थ—४ ४०३ ब ।
 अगल—इतिहास १.३३१ अ, १ ३३२ अ, १ ३४४ अ ।
 अग्नि—१ ३५ अ, कृत्तिका २ ५०४ ब, क्रोध १.३५ ब,
 चैत्य २.३०२ ब, जीव ४ ४५४ ब, त्रसत्त्व ४ ४५४ ब,
 देवता १.३५ ब, धर्म २.४७० अ, पंचाग्नि १.३५ ब ।
 अग्निकायिक—१ ३६ ब । (विशेष दे० तेजकायिक) ।
 अग्निकुंड—३.३२८ ब ।
 अग्निकुमार—(देव) देव—निर्देश ३ २१० ब, अवगाहना
 १ १८० ब, अवधिज्ञान १ १६८, आयु १.२६५,
 अवस्थान ३.४७१, ३.६१२, ३.६१३ । इन्द्र—निर्देश
 ३.२०८ अ, शक्ति आदि ३ २०८ ब, परिवार ३ २०६ ।
 प्ररूपणा—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय

१ ३०८, उदयस्थान १.३६२, उदीरणा १.४११,
 उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान
 ४ २८८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ । मत्
 ४ १८७, संख्या ४ ६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८१,
 काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० अ,
 अल्पबहुत्व १ १४५ अ ।
 अग्निगति—१ ३६ अ, विद्या ३.५४४ अ ।
 अग्निगुप्त—२.२१२ ब ।
 अग्निचरण—ऋद्धि १.४४७, १.४५१ ब ।
 अग्निजीव—१.३६ ब ।
 अग्निज्वाल—१.३६ ब, ग्रह २.२७४ अ, विद्याधर नगरी
 ३ ५४५ ब, ३ ५४६ अ ।
 अग्नित्रय—१ ३५ अ ।
 अग्निदत्त—कल्की २.३१ ब ।
 अग्निदेव—१ ३६ ब, भूत—तीर्थकर २.३७७, गणधर
 २ २१२ ब ।
 अग्निप्रभ देव—१ ३६ ब ।
 अग्निभूति—१ ३६ ब, गणधर २ २१३ अ ।
 अग्निमंडल—१.३५ ब, १.३६ अ ।
 अग्निमंडल यत्र—३.३४८ ।
 अग्निमित्र—१.३६ ब, शकवंश १ ३१४ अ ।
 अग्निल धावक—कल्की २.३१ ब ।
 अग्निवाहन—भावनेन्द्र—३ २०८ ब, निवास ३.२०६ ब,
 परिवार ३.२०६ अ, आयु १.२६५ ।
 अग्निवेग—यदुवंश १ ३३७ ।
 अग्निशिख—नव बलदेव ४.१७ अ, नव-नारायण
 ४ १८ अ, यदुवंश १ ३३७ ।
 अग्निशिखा—निश्चल ज्ञान २ ४६५ ब ।
 अग्निशिखी—भावनेन्द्र—३ २०८ ब, निवास ३ २०६ ब,
 परिवार ३.२०६ अ, आयु १.२६५ ।
 अग्निसह—१.३६ ब ।
 अग्निहोत्री—१ ३५ ब ।
 अग्न्याभ—लौकातिक देव ३ ४६३ ब ।
 अज्ञात—१.३६ ब, फल १ ३६३ ब, सिद्ध १.३६ ब,
 हेत्वाभास १.२६० अ ।
 अज्ञान—१ ३६ ब, अतिचार १.४३ ब, १ ३८ अ, अध्यव-
 सान १.५२ ब, अभेदज्ञान २ २६७ ब, इन्द्रिय ज्ञान
 २.२६७ ब, कर्ता कर्म २ २२ ब, क्रिया २ २६८ अ,
 चेतना २.२६७ अ, २ २६८ अ, ब, २.२६६ ब,
 निग्रहस्थान १.३८ अ, परीषह १ ३८ अ, ३ ३३ ब,
 प्रज्ञा परीषह ३ ११४ ब, मिथ्याज्ञान २.२६६ ब,
 मिथ्यात्व १.३७ अ, मिश्र गुणस्थान ३ ३०८ अ, ब,

राग ३.३६८ ब ।

अज्ञान (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०५, ३.१७५ अ, ३.३३८ ब, बन्धस्थान ३.१०८, ३.११३, उदय १.३८३, उदयस्थान १.३६३ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.२८७, ४.३००, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०७ अ, सत् ४.२३३, सख्या ४.१०५, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४.४८८, काल २.११३, अन्तर १.१५, भाव ३.२२१ अ, ३.३०४ ब, अल्पबहुत्व १.१५० अ ।

अज्ञान निग्रहस्थान—१.३८ अ ।

अज्ञान परीषह—१.३८ अ, परीषह ३.३३ ब, ३.३४ ब ।
प्रज्ञा परीषह ३.११४ ब ।

अज्ञानवाद—१.३८ अ, एकान्त १.४६५ अ ।

अज्ञानान्धकार—२.२२ ब ।

अज्ञानी—अनुभव १.८४ ब, कर्ता २.२२ ब, २.२६६ ब, ज्ञान २.२६५ अ, मिथ्यादृष्टि १.३७ अ, २.२६६ ब, २.२७३ अ, ३.३०४ ब, मोक्षमार्ग ३.३३७ ब, राग ३.३६८ अ, हिंसा ४.५३४ अ ।

अज्ञायक—३.३०३ ब ।

अग्र—१.३८ ब, एकाग्र १.४६५ ब ।

अग्रदेवी—ज्योतिष देव २.३४६ अ, वैमानिक देव ४.५१२, ४.५१३ ।

अग्रनिर्वृत्ति क्रिया—४.१५२ अ ।

अग्रप्रलम्ब—२.३६६ अ ।

अग्रबीज—३.५०२ ब, ३.५०६ अ ।

अग्रमुख—१.३६ अ ।

अग्रय—श्रुतज्ञान ४.६० अ ।

अग्रवया—१.३६ अ ।

अग्रस्थिति—४.४५७ अ ।

अग्रहण वर्गणा—३.५१३ अ, ब, ३.५१४ अ ।

अग्रायणी—१.३६ अ, ४.६७ ब, ४.६८ ब ।

अग्राह्य वर्गणा—३.५१३ अ-ब, ३.५१४ अ ।

अग्नोद्यान—२.३८३ ।

अघ—१.३६ अ, ग्रह २.२७४ अ ।

अघनधारा—गणित २.२२६ अ ।

अघनमातृका धारा—गणित २.२२६ अ ।

अघाती—अनुभाग १.६० ब, प्रकृति ३.६१ ब, वेदनीय ३.५६४ अ ।

अघोर—ऋद्धि १.४४७, १.४५४ अ, गुण ब्रह्मचर्य १.४४७, १.४५४ अ, १.४५५ अ, १.४५६ अ, गुण ब्रह्मचारी ३.२०४ अ ।

अचक्षुदर्शन—अनुभव १.८१ ब, दर्शनोपयोग २.४१३ अ,

ब, २.४१४ ब । प्ररूपणा—बन्ध ३.१०६, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८४, उदयस्थान १.३६३ अ, उदीरणा १.४११, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४.३०६, त्रिसयोगी भग १.४०७ ब । सत् ४.२४०, सख्या ४.१०७, क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४.४६०, काल २.११५, अन्तर १.१००, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व १.१५१ ।

अचक्षु दर्शनावरण—२.४२० अ । प्ररूपणाएँ—प्रकृति २.४२० अ, ३.८८, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १.६४ ब, प्रदेश ३.१३६ । बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.१०६, उदय १.३७४ ब, उदयस्थान १.३८७ ब, उदीरणा १.४११ ब, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६४, त्रिसयोगी भग १.३६६ अ, संक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८ अ ।

अचर ज्योतिष विमान—निर्देश २.३४६ ब, संख्या २.३४८ ब, अवस्थान २.३४८ ब ।

अचल—१.३६ ब, गणधर २.२१२ ब, २.२१३ अ, जीव प्रदेश २.३३६ अ, नारायण ४.२६ अ, प्रतिमा २.१३६ अ । बलदेव ४.१६ अ, वासुपूज्य नाथ २.३६१ ।

अचलग्राम—नगर ३.२७६ अ ।

अचलप्र—१.३६ ब ।

अचलमात्रा—१.३६ ब ।

अचलयोग—४.४१७ अ ।

अचल स्तोक—१.३६ ब ।

अचलात्म—१.३६ ब । काल-प्रमाण २.२१६ ब, २.२१७ अ ।

अचला देवी—विद्युत्प्रभ गजदन्त की देवी ३.४७३ अ, अकन ३.४५७ ।

अचलावली—१.३६ ब, आबली १.२७६ अ ।

अचलित—३.१६ अ ।

अचाक्षुष—४.४३८ ब । स्कन्ध ४.४४७ ब ।

अचार—अभक्ष्य ३.२०२ ब ।

अचारित्र—अध्यवसान १.५२ ब ।

अचिता—३.२६२ अ ।

अचित्तित—मनःपर्यय ज्ञान ३.२६५ ब, ३.२६७ अ ।

अचित्त—१.३६ ब, काल २.८१ ब, गुणयोग ३.३७६ अ, पाहुड ३.१५६ ब, पूजा ३.७४ ब, ३.८० अ, बन्धक ३.१७६ अ, भाव ३.२१८ ब, योनि १.३६ ब, ३.४८७ अ, वर्गणा ३.५१६ ब, ३.५१८ अ, शल्य ४.२६ ब, सचित्त ४.१५८ अ ।

अचित्त तद्व्यतिरिक्त—अन्तर १.३ ब ।

अचित्त नोकर्म द्रव्यबन्ध—३.१७६ अ ।

अचित्त पाहुड—३ १५६ ब ।

अचेतन—१ ३६ ब, गुण २.२४४ ब, जीव ३ ३३२ ब, द्रव्य २.४५५ ब, सापेक्ष धर्म ४.३२३ ब, स्त्री ४.४५१ अ ।

अचेतनत्व—अजीव १.४१ ब ।

अचेलक—१.३६ ब ।

अचेलकत्व—१.३६ ब, १.४० ब, निर्ग्रथ २.६२१ ब, लिग ३ ४१६ ब, ३.४१६ अ, साधु ४.४०८ अ, ४.४०९ अ ।

अचेल व्रत—१ ४० अ ।

अचैतन्य—सापेक्ष धर्म १.१०६ अ ।

अचौर्य—अणुव्रत १.२१३ ब, अस्तेय १ २१३ अ, अहिंसा १.२१७ अ, चारित्र शुद्धि व्रत २.२६४ ब, महाव्रत १.२१३ ब ।

अच्छेज्ज—१ ४१ अ, वसतिका दोष ३.५२६ अ ।

अच्युत—१ ४१ अ । सनत्कुमार चक्री ४ १० ब ।

अच्युत स्वर्ग—१.४१ अ । स्वर्ग—पटल ४.५१८, विस्तार ४.५१८, उत्तर विभाग ४.५२० ब, अवस्थान ४.५१४ ब, अंकन ४.५१५, इन्द्रक श्रेणीबद्ध ४.५१८, ५२० । इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब, उत्तरेन्द्र ४.५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, अवस्थान ४.५२० ब, चित्त आदि ४.५११ ब, विमान नगर व भवन ४.५२०-५२१ । देव—अवगाहना १ १८१ अ, अवधिज्ञान १ १६८ ब, आयु १.२६८, आयु बन्ध योग्य परिणाम १ २५८ ब ।

अच्युत स्वर्ग (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११, उदीरणा-स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१६२, सख्या ४.६८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०५, अन्तर १.१०, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ अ ।

अच्युता—१.४१ अ, विद्या ३ ५४४ अ ।

अछेद—अर्द्धच्छेद २.२२५ ।

अछेद्य—१.४१ अ ।

अज—अजघन्य २ २१८ ब ।

अज—१.४१ अ, पूर्वाभाद्रपद २.५०४ ब, श्रोता ४ ७४ ब ।

अजक—मगध देश १ ३१२ ।

अजघन्य—अनुभाग १ ८६ अ, सहनानी २ २१८ ब ।

अजघन्य पद—१.१०२ ब, १.१०३ ब ।

अजघन्य विभक्ति—१.१०३ ब ।

अजयवर्मा—१ ४१ अ, भोजवंश १.३१० अ ।

अजातशत्रु—१.४१ अ, मगधदेश १ ३१२, यदुवंश १.३३७ ।

अजितंजय—१.४१ अ, भरत चक्री ४.१५ अ, सुव्रतनाथ २.३६१ ।

अजितधर—१.४१ अ, रुद्र ४.२२ अ, अनन्तनाथ २ ३६१ ।

अजित—१ ४१ अ, पूर्व भव २.३७६-३६१, चन्द्रप्रभ का यक्ष २ ३७६ ।

अजितनाथ—१ ४१ अ । राक्षसवंश १.३३८ ब, विद्याधर वंश १.३३६ ब, इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ ।

अजितनाभि—१ ४१ अ, रुद्र ४.२२ अ, धर्मनाथ कालीन रुद्र २ ३६१ ।

अजितपुराण—१.४१ ब, इतिहास १ ३३३ अ ।

अजितवीर्य—२ ३६२ ।

अजितसेन—१ ४१ ब, इतिहास १.३३२ ब, १ ३४५ अ ।

अजीव—१ ४१ ब, कर्म २ २७ अ, ब, कषाय २ ३७ ब, क्रोध २ ३७ ब, विचय २ ४७६ अ ।

अजीवाधिकरण—१ ४६ अ ।

अट्ट—१ ४२ अ । सख्या प्रमाण २.२१४ ब, काल प्रमाण २.२१६ अ, २ १७ अ ।

अट्टांग—१ ४२ अ, काल प्रमाण २.२१६ अ, २ १७ अ ।

अट्ठाईस—प्रकृति ४.८७ ब, २७६ अ, मूलगुण ४.४०४ अ ।

अठारह—एकट्ठी की सहनानी २.२१८ ब, दोषातीत (अर्हन्त व आप्त) १.१३७ अ, १.२४८ अ, श्रेणी ४ ७२ अ ।

अड्ड—काल प्रमाण २.२१६ अ ।

अड्डांग—काल प्रमाण २ ११६ अ ।

अड्डाईद्वीप—१ ४२ अ, २ ४६२ ब, मनुष्य लोक ३.२७४ ब, चित्र ३.४६४ के सामने ।

अड्डाई द्वीप प्रज्ञप्ति—अमितगति १.१३२ अ ।

अणत्थमिय कहा—इतिहास १ ३४५ ब ।

अणहिल—४ ८० ब ।

अणिमा ऋद्धि—१.४४७, १.४५० ब ।

अणु—१.४२ अ, परमाणु ३.१४ अ, ३.१८ अ, संघात ४.४४७ अ ।

अणुचटन—३ २३७ अ ।

अणुछेदन—२ ३०६ ब, ३०७ अ ।

अणुवयरयण पद्मि—१.४२ अ, इतिहास १.३४५ अ, १.३३२ अ ।

अणुवर्गणा—३.५१३ अ, ३.५१५ ब ।

अणुविभजन—१.४२ अ ।

अणुव्रत—अस्तेय १.२१३ अ, अहिंसा १.२१५ ब, परिग्रह

३२६, बद्धायुष्क १२६२ ब, ब्रह्मचर्य ३१८६ ब,
व्रत ३६२७ अ, श्रावक ४५० ब, सत्य ४२७० ब,
रात्रिभुक्ति २४०३ अ ।

अणुव्रतरत्नप्रदीप—इतिहास १.३४५ अ ।

अणुव्रती अगारी १.३३ ब ।

अण्ड—दे० अण्ड ।

अण्डज—दे० अण्डज ।

अण्डर—दे० अण्डर ।

अण्डा—दे० अण्डा ।

अतत—१४२ अ, सापेक्ष धर्म ११०६ अ, ११११ अ ।

अतत्त्व शक्ति—१.४२ अ ।

अतद्भाव—अभाव ११२८ अ, अन्यत्व १.११२ अ ।

अतिकाय—१.४२ अ । व्यन्तरेन्द्र—निर्देश (महोरग देव)

३२६३ अ, ३६११ अ, सख्या ३६११ अ, परिवार
३६११ ब, आयु १.२६४ ब ।

अतिक्रम—१.४२ अ ।

अतिक्रांत—१४२ ब । मत्याख्यान ३१३१ ब ।

अतिगोल—१४२ ब ।

अतिचार—१४२ ब, अज्ञान १३८ अ, १४३ ब, अचौर्य
३६३८ ब, अतिथिसंविभाग १४५ अ, अनर्थदण्ड
१.६४ अ, १६४ ब, अनशन १६५ ब, १६६ अ,
अवमौदर्य १२०० अ, अस्तेय १.२१३ ब, अहिंसा
१२१ अ, ३.६२८ ब, आखेट-त्याग १.२२५ ब,
आगमज्ञान १.२२८ अ, आदान-निक्षेपण ४.३४१ ब,
आलोचना १२७७ अ, ईर्या समिति ४.३४० अ,
उदबर फल १३६३ अ, एषणा समिति ४३४१ अ,
कायक्लेश २४७ ब, कायगुप्ति २.२५० अ, कायोत्सर्ग
३.६२१ ब, ६२३ ब, गुप्ति २.२५० अ, जलगालन
२३२५ ब, दिग्व्रत २४२६ अ, देशव्रत ३.४५१ अ,
परस्त्रीत्याग ३.१६१ ब, परिग्रह परिमाण ३२७ अ,
प्रतिक्रमण ३.६२१ अ, प्रतिष्ठापना समिति ४.३४२ अ,
प्रायश्चित्त ३१५८ ब, प्रोषधोपवास ३१६४ ब,
ब्रह्मचर्य ३.१६१ अ, ६२८ ब, भावना ३६२६ ब,
भाषा समिति ४.३४० ब, भोगोपभोगपरिमाण
३.२३६ अ, ३.६२८ ब, मद्यत्याग ३.२६० ब,
मधुत्याग ३.२६० अ, मनोगुप्ति २.२५० अ, मांस
त्याग ३.२६३ अ, मौन ३३४५ ब, रस-परित्याग
३.३६३ ब, रात्रिभुक्ति-त्याग ३.४०१ ब, वदना
३.६२२ ब, वचनगुप्ति २२५० अ, विवेक
३.५६७ अ, वृत्तिपरिसंख्यान ३५८१ अ, वेश्या-
गमनत्याग ३.१६१ ब, व्युत्सर्ग ३.६२३ ब,
शिकारत्याग १.२२५ ब, शीलव्रत ३.१६१
ब, श्रुतज्ञान १.२२८ अ, सत्य ३.६२८ ब,

४२७२ अ, समिति ४३४०-३४२, सम्यग्दर्शन
४३५१ अ, सत्लेखना ४३८३ ब, सामायिक
४४१६ अ, स्वदारसतोप ३१६१ अ ।

अतिथि—१४४ ब ।

अतिथिसंविभाग—१.४५ अ ।

अतिदुःखमा काल—१.२७५ अ ।

अतिपुरुष—१.४५ अ, किपुरुष २१२५ अ ।

अतिप्रसंग—१.४५ अ ।

अतिबल—१.४५ अ, इक्ष्वाकुवंश १३३५ अ, गणधर
२.२१३ अ, नारायण ४.२६ अ, पद्मप्रभनाथ व सुमति
नाथ २३७८ ।

अतिबाल विद्या—३१६६ अ ।

अतिभारारोपण—१२१६ अ ।

अतिरक्त—पाण्डुकवन की शिला—निर्देश ३.४५० ब,
विस्तार ३४८४, वर्ण ३४७७, अकन ३४५० ।

अतिवीर—१४५ अ ।

अतिवीर्य—१४५ अ, इक्ष्वाकुवंश १३३५ अ ।

अतिबेलम्ब—१४५ अ ।

अतिव्याप्त—लक्षण ३.४०६ ब ।

अतिशय—अर्हन्त १.४५ ब, १.१३७ ब ।

अतिशायन हेतु—४५४० ब ।

अतिसुषमा काल—१.२७५ अ ।

अतिसूक्ष्म—४४४६ अ ।

अतिस्थापना—अपकर्षण १११३ ब, आवली १.२७६ अ,
उत्कर्षण १३५३ ब, ३५५ ।

अतिस्थापनावली—आवली १२७६ ब ।

अतिस्थूल—४.४४६ अ ।

अतीन्द्र—वानरवश १.३३८ ब ।

अतीन्द्रियज—४४२६ ब ।

अतीन्द्रिय सुख—४४३१ अ, ब, ४.४३३ ब ।

अतीत—काल ११४२ ब, ४४५ अ, गोचर नय
२.५२२ अ, नयपक्ष २५१८ अ, पर्याप्ति ३४२ अ,
प्राण ३१५२ ब, संसार ३२१२ अ, स्मरण
३१८६ ब ।

अतोरण—विमलनाथ २३७७ ।

अतिथिनेपुर—कालप्रमाण २२१६ अ ।

अतिथिनेपुरांग—कालप्रमाण २.२१६ अ ।

अत्यन्ताभाव—११२७ ब—१.१२६ ब ।

अत्यन्तायोग व्यवच्छेद—एवकार १.४६७ अ, ब ।

अत्यय—१.४५ ब ।

अन्नाणभय—३.२०६ ब ।

अत्रिलक्षणत्व—सापेक्ष धर्म १.१०६ अ ।

अथान—३.२०३ अ ।

अथालंद—चारित्र २.२८० ब, सल्लेखना १.४५ ब ।

अदंढ्यता अधिकार—३.१६६ अ ।

अदंतधोवन—१.४६ अ, २.४७ ब ।

अदतमंजन—कायक्लेश २.४७ ब ।

अदत्त—१.२१५ अ ।

अदत्तग्रहण—आहारातराय १.२६ ब, अस्तेय १.२१३ ब, १.२१४ ब, ४.४४६ अ ।

अदत्तादान—अस्तेय १.२१३ अ, १.२१५ अ, ४.४४६ अ, प्रत्यय ३.१५६ अ ।

अदरख—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०४ अ ।

अदर्शन—अध्यवसाय १.५२ ब, परीषह ३.३३ ब, ३.३४ अ, १.४६ ब, प्रज्ञापरीषह ३.११४ ब ।

अदिति—१.४६ ब, विद्याधर वंश १.३३६ अ ।

अदीक्षा ब्रह्मचारी—३.१६४ ब ।

अदृष्ट—१.४६ ब, व्युत्सर्ग ३.६२३ अ ।

अदेव—देव ३.३०० अ ।

अद्धा—१.४६ ब, काल २.८६ ब ।

अद्धा असक्षेप—१.४६ ब ।

अद्धाच्छेद—१.४७ अ, अनुयोगद्वार १.१०३ अ, विभक्ति ३.५५७ अ ।

अद्धापत्य—उपमाप्रमाण २.२१८ अ, कालप्रमाण २.२१७ ब, क्षेत्रप्रमाण २.२१५ ब ।

अद्धायु—आयु १.२५३ अ, ब ।

अद्धा सागर—कालप्रमाण २.२१७ ब ।

अद्वैत—२.४५८ अ । द्रव्यार्थिक नय २.५४२ ब ।

अद्वैत दर्शन—१.४७ अ, वेदान्त ३.५६६ अ ।

अद्वैत नय—१.४७ अ, २.५२३ अ ।

अद्वैतवाद—१.४७ अ, एकान्त १.४६५ अ ।

अद्वैतसिद्धि—३.५६५ ब ।

अध करण—उपशम १.४३६ ब, ४.४० अ ।

अधःकर्म—१.४८ अ, आहारदोष १.२८७ ब, २.६० ब, उद्दिष्ट १.४१३ ब, कर्म २.२६ अ, २.७ अ, वसंतिका दोष ३.५२८ ब । प्ररूपणाएँ—सत् ४.२६६ अ, सख्या ४.११६ ब, क्षेत्र २.२०८, भाव ३.२२३ ।

अधःप्रवृत्त—अप्रमत्त ४.१३० अ, उपशम १.४३६ ब, ४.४० अ ।

अधःप्रवृत्त संक्रमण—४.८४ अ, ४.८५ ब, ४.८७ ब, अल्पबहुत्व १.१७४ ब ।

अधःप्रवृत्त संयत—गुणश्रेणी निर्जरा अल्पबहुत्व १.१७४ ।

अधःप्रवृत्तिकरण—अपूर्वकरण २.१३ अ, उपशम १.४३६ ब, १.४४० अ, चारित्रमोह क्षपणा २.१७६ ब,

परिणाम २.७-११ ।

अधरोष्ठ—कायोत्सर्ग अतिचार ३.६२१ ब ।

अधर्म—अमूढदृष्टि १.१३३ अ, देवमूढता ३.३१५ ब, धर्म २.४६८ अ, ४.४३१ ब, मिथ्यादर्शन ३.३०० अ, स्वभाव ४.५०६ ब ।

अधर्म द्रव्य—२.४८७ ब, अनुभाग १.८८ अ, अस्तिकाय २.४८७ ब, उत्पादादि, १.३६२ ब, उपकार २.६३ ब ।

अधस्तन कृष्टि—२.१४१ अ, द्रव्य २.१४१ ब ।

अधस्तन द्वीप—१.४८ ब ।

अधस्तन शीर्ष—२.१४१ ब ।

अधिक—१.४६ अ, सकलन प्रक्रिया २.२२२ ब ।

अधिकरण—१.४६ अ, अनुयोग १.१०२ अ, कारक २.४६ अ, कर्ता कर्म २.१७ ब, क्षेत्र २.१६२ ब, न्याय २.६३३ ब, शक्ति १.४६ अ, सिद्धान्त ४.४२७ ब ।

अधिकार—१.१०२ अ ।

अधिकारिणी क्रिया—१.५० अ, क्रिया २.१७४ ब ।

अधिगत चारित्र—२.२८० ब ।

अधियत चारित्रार्थ—२.२८५ अ, २.८८ ब ।

अधिगम—१.५० अ ।

अधिगमज—ज्ञान १.५१ ब, सम्यग्दर्शन, १.५१ अ, ४.३६२ अ ।

अधीश्वर—३.४०० ब ।

अधोऽधिगम—१.५२ अ ।

अधोगुह्यत्व—२.२५३ ब ।

अधोग्रंथेयक—४.५१८-५२० ।

अधोगौरव धर्म—पुद्गल २.२३५ ब ।

अधोधिम—२.६०२ ब ।

अधोमुख—१.५२ अ, नारद ४.२१ अ ।

अधोलोक—निर्देश १.५२ अ, ३.४४० ब, नरक २.५७६ अ, विस्तार २.५७६ ब, चित्र ३.४४१, रत्नप्रभा ३.३८६ ब । क्षेत्रप्ररूपणा २.१६१ ब ।

अधोलोक सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३ अ ।

अध्यधि—१.५२ अ, आहारदोष १.२६० ब ।

अध्ययन—शास्त्र ४.५२४ ब, स्वाध्याय ४.५२३ अ ।

अध्ययनकुशल साधु—१.५२ अ ।

अध्यवधि—१.५२ अ, आहारदोष १.४१३ अ ।

अध्यवसान—१.५२ अ, पौद्गलिक ३.३१८ ब, परिग्रह ३.२८ ब, बन्ध ३.१७६ ब, व्यवहार नय २.५६३ अ ।

अध्यवसाय—१.५२ अ, ५३ अ, अनध्यवसाय १.६२ ब, हिंसा ४.५३३ अ ।

अध्यवसाय स्थान—कषायोदय स्थान १.५३ अ ।

अध्यात्म—१ ५४ अ, तप २.३५८ ब ।
 अध्यात्मकमलमार्तण्ड—१.५४ अ, इतिहास १ ३४७ अ ।
 अध्यात्मतरिणी—इतिहास १.३४२ ब ।
 अध्यात्मपद टीका—१ ५४ अ, इतिहास १ ३४६ ब ।
 अध्यात्मपद्धति—३ ८ अ ।
 अध्यात्मभाषा—३ ८ ब ।
 अध्यात्मरति—४ ४३४ अ ।
 अध्यात्मरहरय—१.५४ अ, आगाधर १.२८० ब, इतिहास १.३४४ अ ।
 अध्यात्मशास्त्र—१ ५४ अ ।
 अध्यात्मसंदोह—१.५४ अ, इतिहास १ ३४१ अ ।
 अध्यात्म सर्वथा—इतिहास १.३४७ ब ।
 अध्यात्मसार—इतिहास १.३४७ ब ।
 अध्यात्मस्थान—१ ५४ अ, स्थान ४.४५२ ब ।
 अध्यात्मोपनिषद्—इतिहास १ ३४७ ब ।
 अध्यारोप—१.५४ ब ।
 अध्यास—१.५४ ब, षट्कारक २.५० ब ।
 अध्व—१.५४ ब, अनुभाग १ ८६ अ, ज्ञान ३ २५८ अ, पद १ १०२ ब, १०३ ब, बन्धी प्रकृति ३ ८८ अ, ६१ अ, ३.६३, स्थान ४ ४५३ अ ।
 अध्वगत—३ १३१ ब ।
 अध्वर—१ ५४ ब, पूजा ३.७४ अ ।
 अध्वान—१ ५४ ब ।
 अनंगक्रीडा—१ ५४ ब ।
 अनन्त—१.५४ ब, कालाणु २.८६ अ, जघन्य उत्कृष्ट प्रमाण २ २१४ ब, गुण २ २४४ अ, ब, जीवराशि १.२२३ ब, द्रव्यराशि १ २२३ अ, धर्म २ २४४ ब, पर्याय १ १०६ अ, मोक्ष ३ ३३२ अ ।
 अनन्तकथा—१ ५६ अ ।
 अनन्तकायिक—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०४ अ, ब ।
 अनन्तकाल—३ २१३ ब, कालाणु २ ८६ अ ।
 अनन्तकीर्ति—१.५६ ब, नन्दिसंघ १ ३२३ ब, १ ३२४ अ, काष्ठा सघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३३० अ, आगम परम्परा १ ३४१ ब, १ ३४२ अ ।
 अनन्तगणनांक—१ ५६ ब ।
 अनन्तगुणवृद्धि—४.६६ अ ।
 अनन्तज्ञान—४ ४३२ ब, केवलज्ञान २.१४६ अ ।
 अनन्तचतुर्विंशती व्रत—१.५६ ब ।
 अनन्तचतुष्टय—अनन्तत्व १.५६ अ, चतुष्टय २.२७८ अ, अर्हन्त १.१३७ अ ।
 अनन्तजीव—लोकाकाश १.२२३ अ ।
 अनन्तदेव—१.५६ ब ।

अनन्तद्रव्य—लोकाकाश १ २२३ अ ।
 अनन्तधर्म—२ २४४ ब ।
 अनन्तधर्मत्व शक्ति—१ ५६ ब ।
 अनन्तनाथ—१ ५६ ब, पूर्वभव २ ३७६-३६१ ।
 अनन्तनाथपुराण—१ ५६ ब ।
 अनन्तनाथ पूजा—इतिहास १ ३४७ अ ।
 अनन्तपर्यायमयत्व—सापेक्ष धर्म १ १०६ अ ।
 अनन्तबल मुनि—१ ५६ ब ।
 अनन्तभाग—४ ६६ अ ।
 अनन्तमती—१ ५६ ब, सुमतिनाथ २ ३८८ ।
 अनन्तमित्र—यदुवश १ ३३६ ।
 अनन्तरक्षेत्रस्पर्श—४ ४७५ ब ।
 अनन्तर गति सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ब ।
 अनन्तर ज्ञान सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५४ अ ।
 अनन्तर चारित्र सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ब ।
 अनन्तरथ—१ ५६ ब, रघुवश १ ३३८ अ ।
 अनन्तर बन्ध—३ १७१ ब ।
 अनन्तरोपनिधा—१ ५६ ब, अनुयोग १ १०२ अ, शब्द ४ ३ ब, श्रेणी ४ ७२ अ ।
 अनन्तवर्मन—१ ५६ ब ।
 अनन्तविजय—१ ५६ ब ।
 अनन्तवीर्य—मोक्ष ३ ३२६ अ, वीर्य ३ ५७७ अ ।
 अनन्तवीर्य—चक्रवर्ती ४ ११ ब, तीर्थकर २ ३७७, ३६२ ।
 अनन्तवीर्य—१ ६० अ, इतिहास १.३३० ब, १ ३३१ ब, १ ३४२ ब ।
 अनन्तवीर्य—कुरुवंश १ ३३६ अ ।
 अनन्तव्रत कथा—इतिहास १ ३४५ ब ।
 अनन्तशक्ति—द्रव्य २ २४४ अ ।
 अनन्तसुख—४ ४३२ अ, ब, मोक्ष ३ ३२६ अ ।
 अनन्ता—सुमतिनाथ २ ३८८ ।
 अनन्ताणु वर्गणा—३ ५१३ अ, ३ ५१५ ब, ३ ५१६ अ ।
 अनन्तानन्त—१ ५६ ब, उपमा प्रमाण २ २१८ ब, पुद्गल २ १४८ अ ।
 अनन्तानन्तप्रदेशी वर्गणा—३ ५१५ अ, ३ ५१६ ब ।
 अनन्तानुबन्धी—१ ६० अ । कषाय २ ३५ ब, २ ३८ अ, २ ३६ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०३ अ, सासादन ४ ४२३ अ, ब, मिश्रगुणस्थान ३ ३१० ब ।
 अनन्तानुबन्धी प्रकृति—१ ६० अ, उपशम १ ४४० अ, विसंयोजना ३ २८३ अ । प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३.३४४ अ, स्थिति ४ ४६१, अनुभाग १ ६४ ब, प्रदेश ३.१३६, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १.१६१ अ, १.१७४ अ । बन्ध ३.६७, बन्धस्थान

३१०६, उदय १३७५, उदय की विशेषता १३७२ अ, उदयस्थान १३८६ अ, ब, उदीरणा १४११, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४२७६ अ, ४२७८, सत्त्वस्थान ४२६५, सत्त्वस्थान अल्पबहुत्व ११६५ ब, ११६७ ब, त्रिसयोगी भग १.४०१ ब। संक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व ११६८ ब।

अनंतानुबन्धी चतुष्क—उदय १३७४ ब।

अनन्तावधि ज्ञान—१.१८७ ब।

अनक्षर वचन—३२२७ अ।

अनक्षरात्मक भाषा—३२२६ ब।

अनक्षरात्मक श्रुतज्ञान—४५६ ब।

अनगार—१३३ ब, ३४ अ, ६२ अ।

अनगार धर्म—१.६२ अ।

अनगार धर्मावृत्त—१६२ ब, आशाधर १.२८० ब, इतिहास १३४४ अ।

अनधिगत चारित्र—२२८० ब, २.२८५ अ।

अनधिगम चारित्रार्थ—आर्य ८२७५ अ।

अनध्यवसाय—१६२ ब, विपर्यय ४१४५ ब, सशय ४१४५ ब, १६२ ब।

अननुगामी—१६२ ब, अवधिज्ञान ११८८ अ, ब, ११६३ ब।

अननुभाषण—१६२ ब।

अनन्य—अशरण भावना २४६१ अ।

अनन्यमय—३३३८ अ।

अनपवर्ति आयुष्क—१२६१ अ।

अनपायी—१.६२ ब।

अनभिज्ञ—४.७४ अ।

अनभिगृहीत—३३०१ अ।

अनभिलाष्य—श्रुत १२२८ ब।

अनभिव्यक्ति—१६२ ब, अभिव्यक्ति ३६१६ अ।

अनय—१.६२ ब, ग्रह २.२७४ अ।

अनयाभास—१६२ ब, नय २५२४ अ।

अनरण्य—रघुवश १.३३८ अ।

अनर्थक पदत्व—१.१३६ अ।

अनर्थबन्ध—१.६२ ब, अतिचार १.६४ अ, प्रयोजन १६४ ब, महत्त्व १६४ ब, आखेट १२२५ अ।

अनर्थसंतति—२४७० अ।

अनर्द्धि प्राप्तार्थ—आर्य १.२७४ ब।

अनर्पित—१.६४ ब।

अनल—१६४ ब, अग्नि १.३५ अ।

अनलकायिक—१६४ ब। आकाशोपपन्न देव २४४५ ब।

अनवधृत—१६५ ब।

अनवधृत अनशन—१६४ ब।

अनवधृत काल अनशन—१६५ ब।

अनवसर्पिणी सिद्ध—अल्पबहुत्व ११५३ ब।

अनवस्था—१६४ ब, दोष २४६० ब।

अनवस्थाप्य—१६४ ब, परिहार प्रायश्चित्त ३३५ ब, ३१६१ ब।

अनवस्थित—१६५ अ, अवधिज्ञान ११८८ अ, ११६३ ब, कुंड १२०६ ब।

अनशन—निर्देश १६५ अ, निश्चय १६५ अ, व्यवहार १६५ अ, तप १६५ अ, अवधृत अनवधृत काल १६५ ब, अतिचार १६५ ब।

अनस्तमी व्रत—१६६ अ।

अनाकाक्ष—नि काक्षित २५८५ ब।

अनाकाक्ष क्रिया—१.६६ अ, क्रिया २१७४ ब।

अनाकार—१.६६ अ, उपयोग १२२८-२२९, गुण २.२४२ ब, प्रत्याख्यान ३.१३१ ब।

अनागत—काल अल्पबहुत्व ११४२ ब, प्रत्याख्यान ३.१३१ ब। अमिलापा ३.१८६ ब।

अनाचरित—३५२६ अ।

अनाचार—१६६ अ, अतिचार १४४ ब।

अनाचिन्त—आहार दोष १२६० ब, १४१३ अ।

अनात्मभूत—कारण २५४ अ, लक्षण ३४०६ ब।

अनादर—१६६ अ। जम्बूवृक्ष ३४५८ अ, ३.६१३-६१४।

अनादि—१.६६ ब, अनन्त १५६ अ, अनुभाग १.८६ अ, आगम १२२८ अ, काल २.८८ ब, जीवकर्म बन्ध ३.१७३ ब, नय १६६ ब, नित्य पर्यायार्थिक नय २.५५१ ब, पद ११०२ ब, १०३ ब, परिणाम ३.३१ ब, प्रकृतिबन्ध १.६६ ब, ३.८८ अ, ३.१६६ ब, बन्धक ३.१७६ अ, बन्धी प्रकृति ३.६० ब। मिथ्या-दृष्टि १४३८ अ, २१८५ अ, ४३६८ ब, ४३६६ अ, ४३७२ अ। शरीरबन्ध ३.१७० ब, सिद्धान्त पद १४१६ ब, ३.५ अ।

अनादि नय—१६६ ब, नित्य पर्यायार्थिक २५५१ ब।

अनादि पद—११०२ ब, १०३ ब, सिद्धान्त पद १.४१६ ब, ३.५ अ।

अनादिबन्ध—जीवकर्मबन्ध ३.१६६ ब, ३.१७३ ब, प्रकृतिबन्ध १.६६ ब, ३.८८ अ, शरीरबन्ध ३.१७० ब, स्थितिबन्ध ४.४५७ अ।

अनादिबन्धक—अनन्त ३.१७६ अ, बादर साम्प्रदायिक

३ १७६ अ, सान्त ३ १७६ अ ।

अनादिबन्धी प्रकृति—३ ६० ब ।

अनादि मिथ्यावृष्टि—४ ३६६ अ, अनादि तुल्य सादि
८ ३६८ ब, उपशम १ ४३८ अ, सयमासयम
२ १८५ अ, सम्यक्त्व ४ ३६८ ब, ८ ३७२ अ ।

अनादृत—१ ६६ ब, जम्बूवृक्ष का देव ३ ८५८ अ,
३ ६१३, ६१४, दोष ३ ६२२ ब ।

अनादेय—३ ६६ अ ।

अनाभोग—अतिचार १ ४३ ब, क्रिया २ १७४ ब, निक्षेप
१ ४६ ब ।

अनायतन—१ २५१ अ, त्याग ४ ३६१ ब ।

अनारभ—१ ६६ ब ।

अनार्थ—३ ३६६ अ ।

अनालब्ध—१ ६६ ब, कायोत्सर्ग ३ ६२३ अ ।

अनालोच्य वचन—असत्य १ २०८ ब ।

अनावर्त—१ ६६ ब ।

अनावृष्टि—यदुवश १ ३३७ ।

अनाहत चक्र—पदस्थध्यान ३ ७ अ, व, हं ३ ७ ब ।

अनाहार—१ ६६ ब ।

अनाहारक—१ ६६ ब, आहारक १ २६४ ब, १ २६५ अ,
केवली २ १६४, सक्रमण (उद्वेलना) ४ ८७ अ,
समुद्घात २ १६७ ब । प्ररूपणा—बन्ध ३ १०८, बन्ध
स्थान ३ ११३, उदय १ ३८६, उदयस्थान १ ३६३ ब,
उदीरणा १ ४११, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व
४ २८१, सत्त्वस्थान ४ ३०२, ४ ३०६, त्रिसयोगी भग
१ ४०८ अ । सत् ४ १६७, सख्या ४ १६, क्षेत्र
२ २०७, स्पर्शन ४ ४६६, काल २ ११६, अन्तर
१ २१, भाव ३ २२ अ, अल्पबहुत्व १ १५३ अ ।

अनि.सरणात्मक तैजस शरीर—२ ३६४ ब ।

अनिःसृत—१ ६६ ब, ज्ञान ३ २५६ अ, ३ २५७ ब,
३ २५८ अ, प्राप्यकारी १ ३०४ ब ।

अनिदित—१ ६६ ब, किन्नर देव २ १२४ ब ।

अनिदिता—१ ६६ ब, सौमनस व नन्दन वन की दिक्कुमारी
३ ४७३ ब, ३ ४५१ ।

अनिद्रिय—१ ६६ ब, अतीन्द्रिय ४ ४३२ ब, मन ३ २७० अ,
ब, इन्द्रिय १ ३०६ ब, जीवसमास २ ३४२ ।

अनिन्द्रिय जीव—इन्द्रिय १ ३०७ अ ।

अनित्यं—सस्थान ४ १५५ अ ।

अनित्य—अनुप्रेक्षा १ ७२ अ, १ ७६ अ, जाति २ ६०७ ब,
सापेक्ष धर्म १ १०६ अ, ४ ३२३ ब ।

अनित्यत्व—उत्पादादि १ ३५८ ब, सापेक्ष धर्म १ १०६ अ,
१ १११ अ, ब, अपेक्षा निर्देश ४ ४६८ अ ।

अनित्य नय—१ ६७ अ, नय २ ५२३ अ ।

अनित्य निगोद—३ ५०३ ब ।

अनित्यवाद—एकान्त १ ४६५ अ ।

अनित्य समा जाति—२ ६०७ ब, २ ६०८ अ ।

अनिबद्ध मंगल—३ २४१ ब ।

अनियत—गति २ २३६ अ, नय २ ५२३ ब, विहार
४ ३६० ब, विहारी ३ ५७४ अ, सामायिक ४ ४१६ ब ।

अनिरुद्ध—१ ६७ अ ।

अनिर्वचनीय—अवक्तव्य १ १७७ अ, सप्तभगी ४ ३२४ ब,
४ ३२५ ब ।

अनिल—राक्षस वश १ ३३८ अ, स्वाति २ ५०४ ब ।

अनिवर्तक—१ ६७ अ, तीर्थंकर २ ३७७ ।

अनिवृत्ति—१ ६७ ब ।

अनिवृत्तिकरण—१ ६७ अ, अन्तरकरण १ २६ अ, ब,
अपूर्वकरण २ १४ अ, आरोहण अवरोहण २ २४७,
करण २ १३ अ, कषाय २ ४० ब, काय २ ४५ ब,
कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ अ, परिणाम
२ १३-१४, परिषह ३ ३४ अ, बन्धक ३ १७६ अ ।
प्ररूपणाएँ—बन्ध ३ ६८, बन्ध स्थान ३ १०८,
३ १०६, ३ ११०, ३ ११२, उदय १ ३७५, उदयस्थान
१ ३६२ अ, उदीरणा १ ४११, उदीरणा स्थान
१ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्व स्थान ४ २८६, ४ ३०४,
त्रिसयोगी भग १ ४०६ अ । सत् ४ १६३, सख्या,
४ ६४, क्षेत्र २ १६७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २ १००,
अन्तर १ ७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १ १५३ ।

अनिष्ट—१ ६८ अ, आर्त्तध्यान १ २७३ अ, पक्षाभास
३ ३ अ ।

अनिष्णात श्रोता—उपदेश १ ४२६ अ, श्रोता ४ ७५ ब ।

अनिसृष्ट—१ ६८ ब, आहार दोष १ २६१ अ, १ ४१३ अ,
वसतिका दोष ३ ५२६ अ ।

अनीक (देव)—१ ६८ ब । भवनवासी देव—निर्देश
३ २०६ अ, जम्बू व शाल्मली वृक्ष स्थल मे ३ ४५८-
४५९, आयु १ २६५ । व्यन्तर देव—निर्देश ३ ६११ ब,
श्री आदि देवियो के ३ ६१२, आयु १ २६४ ब ।
ज्योतिषी देव—निर्देश २ ३४६ अ । वैमानिक देव—
निर्देश ४ ५१२, सुमेरु की पुष्करिणियो मे ३ ४५०-
४५१, देवियाँ ४ ५१३, आयु १ २६६, १ २७० ।

अनीकदत्त—१ ६८ ब, यदुवश १ ३३७ ।

अनीकपाल—१ ६८ ब, यदुवश १ ३३७ ।

अनीकिनी—४ ४४४ अ ।

अनीश्वर्य—आहार दोष १ २६१ अ, १ ४१३ अ ।

अनीश्वर—आहार दोष १ २६१ अ, १ ४१३ अ-ब । नय

२.५२३ ब ।

अनीहार—४३६० अ ।

अनु—१.६८ ब ।

अनुकंपा—१.६६ अ, अहिंसा १.२१७ ब, करुणा २.१४ ब, शुभोपयोग १.४३४ ब, मिथ्यादृष्टि ३.३०५ अ सम्यग्दर्शन ४.३५१ अ ।

अनुकृति—१.७० अ ।

अनुकृष्टि—१.७० अ, गणित २.२३१ ब, निर्वर्गण २.६२६ अ ।

अनुकृष्टि गच्छ—१.७० अ, २.२३२ अ ।

अनुकृष्टि चय—१.७० अ, २.२३२ अ ।

अनुक्त—१.७० अ, ज्ञान ३.२५७ अ, प्राप्यकारी १.३०४ ब ।

अनुक्रम—२.१७१ ब ।

अनुगताकार—बुद्धि १.११२ ब ।

अनुगम—१.७० अ । अविभ्राद्भाव सम्बन्ध १.७० ब ।

अनुगामी—१.७० ब, अवधिज्ञान १.१८८ अ-ब, १.१६३ ब ।

अनुज्ञा—४.३६१ ब ।

अनुग्रह—१.७० ब, उपकार १.४१५ ब, स्थितिकरण ४.४७० ब ।

अनुजीवी गुण—द्रव्य २.२४३ ब ।

अनुकृष्ट—अनुभाग १.८६ अ, पद १.१०२ ब, १.०३ ब, विभक्ति १.१०३ ब, स्थिति ४.४५६ ब ।

अनुत्तर—१.७० ब, राक्षसवश १.३३८ अ, श्रुतज्ञान ४.६० अ । विमान ४.१६ ब ।

अनुत्तर देव—निर्देश ४.५१० अ, अवगाहना १.१८१ अ, अवधिज्ञान १.१६८ ब, आयु १.२६६, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १.२५८ ब । प्ररूपणा—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२, उदीरणा १.४११, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१६२, सख्या ४.६८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१ काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

अनुत्तर स्वर्ग—१.७० ब, ४.१६ ब । स्वर्ग—निर्देश ४.५१६ अ, पचविमान ४.५१४ ब, पटल इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४.५१८-५२०, अवस्थान ४.५१४ ब, अकन ४.५१५, ४.५१७, कल्पातीत ४.५१० अ ।

अनुत्तरोपपादक—१.७० ब ।

अनुत्तरोपपादक दशांग—१.७० ब, श्रुतज्ञान ४.६८ अ ।

अनुत्पत्ति समा जाति—१.७० ब ।

अनुत्पन्न देव—व्यन्तर जातीय देव—आयु १.२६४ ब ।

अनुत्पादानुच्छेद—उत्पादादि, १.३६१ अ, व्युच्छित्ति ३.६१६ अ ।

अनुत्सर्पिणी सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३ ब ।

अनुत्सेक—१.७० ब ।

अनुदय—उपशम १.४३७ अ, कारण २.६८ ब ।

अनुदिश देव—निर्देश ४.५१० अ, अवगाहना १.१८१ अ, अवधिज्ञान १.१६८ ब, आयु १.२६६, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १.२५८ ब । प्ररूपणा—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१६२, सख्या ४.६८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

अनुदिश स्वर्ग—निर्देश ४.५१४ अ, ४.५१६ अ, पटल इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४.५१८, ४.५२०, विस्तार ४.५१८, अकन ४.५१५, ४.५१७, कल्पातीत ४.५१० अ, ४.५१४ ब ।

अनुदीर्ण—उपशम १.४३७ अ ।

अनुपक्रम काल—२.८१ अ ।

अनुपचरित—सापेक्ष धर्म—अनेकान्त १.०६ अ, सप्तभगी ४.३२३ ब ।

अनुपचरित असद्भूत नय—नय २.५६१ ब ।

अनुपचरित नय—नय २.५६० अ ।

अनुपम—गणधर २.२१३ अ ।

अनुपमा—१.७१ अ ।

अनुपमान—चक्रवर्ती की विभूति ४.१५ अ ।

अनुपलब्धि (हेतु)—हेतु ४.५३६ ब ।

अनुपसंहारी हेत्वाभास—१.७१ अ ।

अनुपस्थापन—परिहार प्रायश्चित्त ३.३५ ब ।

अनुपहारक—परिहार प्रायश्चित्त ३.३६ ब ।

अनुपाख्यनिःस्वभाव—स्याद्वाद ४.४६६ अ ।

अनुपात्त—१.७१ अ ।

अनुपालना शुद्ध प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३.१३२ अ ।

अनुप्रेक्षणा—उपयोग १.४२६ ब ।

अनुप्रेक्षा—१.७१ अ, उपयोग १.४३४ ब, ध्यान २.४८२ अ ।

अनुभय असत्य—योग ३.३८० ब ।

अनुभय मन-वचन-योग—प्ररूपणा—बन्ध ३.१०४, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.२६६, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.२१३-२१४, सख्या

४ १०२, क्षेत्र २ २०२, स्पर्शन ४ ४८५, काल २.१०८, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० व, अल्पबहुत्व १.१४८ ।

अनुभयागत लब्धिस्थान—लब्धि ३ ४१४ व ।

अनुभव—१ ८० अ, अनुप्रेक्षा १ ७२ व, अनुभाग १.८८ व, आत्मानुभव १ ८२, १ ८४ व—८५, उदय १ ३६५ व, उदीरणा १ ४१० अ, चेतना २.२६६ व, दर्शन २ ४०६ व, प्रमाण (अनुभव) १ ८२ अ-व, मिथ्या-दृष्टि ३ ३०५ अ, विपाक ३.५५६ अ ।

अनुभव प्रकाश—१.८७ अ ।

अनुभाग—१.८७ अ, अनुभव १.८८ व, अल्पबहुत्व १.१६५ व-१७१ अ, अविभाग प्रतिच्छेद १ २०३ अ, आयु कर्म १ २६१ अ, ईर्ष्यापथ कर्म १ ३५० अ, कृष्टि (वगणा) २.१४० व, निर्जरा २.६२० अ, विपरिणमना ३.५५५ व ।

अनुभाग उदय—अल्पबहुत्व १.१७६, उदय १.३६५ व, १.३८६, कारण (जीव परिणाम) २ ६७ व, २ ७२ अ ।

अनुभाग काण्डक—अन्तरकरण १ २६ व, अपकर्षण १.११७ अ, काण्डक (कण्डकोत्करण काल) २.४२ अ

अनुभाग घात—अपकर्षक १ ११७, आयु का अपवर्तन १ २६१ व, स्थिति घात (अपकर्षण) १ ११७ ।

अनुभागबन्ध—अध्यवसाय स्थान १.५३ अ, ४.११६ व, अनुभागबन्ध १ ६० अ, १.६४-६५, प्रकृतिबन्ध ३ ६३ अ, प्रधानता (स्थिति) ४.४५७ व, बन्धप्रत्यय ३ १३० व, बन्धवेदना का अल्पबहुत्व १.१६५ व, १.१७६, स्थितिबन्ध ४ ४६६ ।

अनुभाग सत्त्व—अल्पबहुत्व १.१६५ व, १ १६६ अ, १ १७५, चौंसठ स्थानीय अल्पबहुत्व १.१६६ अ, समुत्कीर्तना ४.३११ ।

अनुभाग स्थान—अध्यवसाय १.५३ व, ४.११६ व, अनुभाग १ ८६ अ, स्थान ४ ४५२ व, स्पर्धक ४.४७२ व ।

अनुभाग स्वामित्व सन्निकर्ष—सत् १.६५, ३.११४, ४ ३१०, ४ ५२७-५२६, सख्या ४.११७, क्षेत्र २ २०८, स्पर्शन ४ ४६४, काल २ १२१-१२३, अन्तर १ २३, भाव ३ ३१३, अल्पबहुत्व १ १७५, ४.४६६, ४.५२७, भागाभाग ३.२१५, ४.११६ ।

अनुभाषण—१.६५ अ ।

अनुभाषणा शुद्ध प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३.१३२ अ ।

अनुभूति—अनुभव १.८१-८६ व, उपलब्धि १.४३५ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३५३ व ।

अनुभूत्यावरण—१.८४ व ।

अनुमति—१.६५ अ ।

अनुमति-त्याग प्रतिमा—अनुमति १.६६ अ ।

अनुमान—१ ६६ अ, अनि.सूत मतिज्ञान ३ २५६ व, अर्थ लिगज श्रुतज्ञान ४ ५६ अ, ईहा ज्ञान १ ३५२ अ, केवल-ज्ञान २.१५० व, प्रमाण (अनुमान) १ ६८ अ, मति-ज्ञान ३.२५४ व, ३.२५६ व, लिग (सम्यग्दर्शन) ४ ३५१ व, सोपाधिक अनुमान (उपाधि) १ ४४४ अ ।

अनुमान बाधित—बाधित ३ १८२ व ।

अनुमानित—१ ६६ अ, आलोचना १.२७७ व ।

अनुमेयता—सम्यग्दर्शन ४.३५२ अ ।

अनुमोदक—अनुमति १.६६ अ ।

अनुयोग—१ ६६ अ ।

अनुयोगद्वार—अनुयोग १.१०१ व, श्रुतज्ञान ४ ६४ व ।

अनुयोगद्वार समास—श्रुतज्ञान ४.६४ व ।

अनुयोग समास—१.१०३ व ।

अनुयोगी—१.१०४ अ ।

अनुराग—आकाक्षा (वात्सल्य) ३.५३२ व, उपलब्धि १.४३५ अ, प्रवचनवात्सल्य ३.५३२ व, राग ३.३६५ अ, वात्सल्य ३.५३३ अ ।

अनुराधा—१.१०४ अ, तीर्थकर २.३८१, नक्षत्र २.५०४ व ।

अनुरुद्ध—१.३१२, १.३१३ ।

अनुलोम—१.१०४ अ ।

अनुवाद—१.१०४ अ ।

अनुवाद वाक्य—वाक्य ३.५३१ अ ।

अनुवीचि भाषण—१ १०४ अ ।

अनुवृत्ति—१ १०४ अ ।

अनुशिष्ट—१ १०४ अ ।

अनुशिष्टि—सल्लेखना ४.३६० व ।

अनुश्रेणी—१.१०४ अ, विग्रहगति ३.५४० अ ।

अगुष्ठान—भक्ति ३ १६८ व ।

अनुसमयापवर्तना—१.१०४ अ । अपकर्षण—अपवर्तन घात १ ११६ व, अनुभागकाण्डक घात १ ११७ व ।

अनुसारी ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४८, १.४४६ व ।

अनुसूर्य तप—कायक्लेश २ ४७ अ ।

अनुस्मरण—१.१०४ अ, स्मृत्यन्तराधान ४ ४६५ व ।

अनृजु—उत्तरप्रतिपत्ति १.३५६ अ, ऋजुमतिमनःपर्यय ३ २६४ अ ।

अनृत वचन—असत्य १.२०८ अ ।

अनेक—१ १०४ अ, अनेक अजीव अनुयोगद्वार १.१०२ अ, अनेक अजीव कर्म व कषाय २ २६ अ, २.३५ व, अनेक क्षेत्र अवधिज्ञान १.१८८ व, अनेकगृहभोजी क्षल्लक २ १८६ व, अनेक जीव अनुयोगद्वार १ १०२ अ, अनेक जीव कर्म व कषाय २ २६ अ,

२३५ ब, अनेक द्रव्य २४५६ ब, अनेक प्रदेशत्व (अनेकान्त व सप्तभगी) ११०६ अ, ४.३२३ ब, सापेक्षधर्म (सप्तभगी) ४३२३ ब।

अनेकत्व—११०४ अ, अनेकान्त १.१०६ अ, ११११ अ, ब।

अनेक नय—नय २५२३ ब।

अनेक प्रदेशत्व—सापेक्षधर्म (अनेकान्त व सप्तभगी) ११०६, ४३२३ ब।

अनेक प्रदेशी—सापेक्ष धर्म (सप्तभगी) ४.३२३ ब।

अनेकान्त—११०४ ब, अनेकान्तात्मक (स्याद्वाद) ४४६७ ब, एकान्त (सप्तभगी) ४३१७ ब, सप्तभगी ४३१७ ब, सापेक्ष धर्म (अनेकान्त) ११०६ अ, सुख ४४३१ अ, स्यात् ४४६६ अ।

अनेकान्तप्राप्ती—प्रमाण (नय) २५१६ ब।

अनेक्षण—अनशन १६६ अ, तप २३६१ ब।

अनैकान्तिक हेत्वाभास—हेत्वाभास ३६१६ ब।

अनोजीविका—सावद्य खरकर्म ४४२१ ब।

अन्न—१.१११ ब, अभक्ष्य ३२०३ अ।

अन्नपाननिरोध—१ २१६ अ।

अन्नप्राशन क्रिया—४.१५१ अ। मन्त्र ३२४७ अ।

अन्नयाचानुद्देश्य—उद्दिष्ट १४१३ अ।

अन्नशोधन—आहार १२८५ ब।

अन्य—४५०७ अ।

अन्यत्व—११११ ब। अनुप्रेक्षा १७२ ब, १.७६ अ, एकत्व १७८ अ।

अन्यथानुपपत्ति—४५३८ अ, ४५४० ब।

अन्यथायुक्तिखण्डन—१११२ अ।

अन्यदेवमूढता—अमूढदृष्टि १.१३२ ब।

अन्यदृष्टि—अमूढदृष्टि १.१३३ अ।

अन्यदृष्टिप्रशंसा—१.११२ अ।

अन्यमती—कर्ता कर्म २२३ अ।

अन्ययोगव्यवच्छेद—१.११२ अ, एकान्त १.४६२ अ, एवकार १.४६७ अ।

अन्यवश—२.४८६ अ।

अन्यापोह—१.१२८ अ।

अन्योन्यगुणकार शलाका—१११२ अ।

अन्योन्याभाव—१.१२७-१२६ अ।

अन्योन्याभ्यस्तराशि—१११२ अ, गणित २.२३१ ब, कर्म स्थिति २.२३२ ब।

अन्योन्याश्रय—हेत्वाभास १११२ अ।

अन्वय—१११२ अ, द्रव्य २.४५४ ब।

अन्वयदत्ति—२४२२ ब।

अन्वयदृष्टान्त—अनुमान १६८ ब, दृष्टान्त २४३८ अ।

अन्वय द्रव्याधिक नय—२५४५ ब।

अन्वयव्यतिरेकी—हेतु ४५४० अ।

अन्वयव्याप्ति—अनुमान १६७ अ।

अन्वयी—१११२ ब, गुण २२४३ अ।

अन्वर्थ—१११२ ब।

अन्वीक्षा—२६३१ ब।

अन्वेषण—३२६६ ब।

अप्—२३३३ ब।

अपकर्ष—१११२ ब, आयुबन्ध १२५६ अ, आयुकाल अल्पबहुत्व ११७३ अ।

अपकर्षण—१११२ ब, दशकरण २६, अन्तरकरण १२५ ब, १२६ अ, ब। गुणस्थान २६ अ।

अपकर्षण (कारण)—गुणस्थान २६ अ।

अपकर्षण (दोष)—आहार १२६० ब, उद्दिष्ट १४१३ अ।

अपकर्षण प्राभूत (दोष)—आहार १२६० ब।

अपकर्ष समा—१११८ अ।

अपकाधिक जीव—अवगाहना ११७६ ब, आयु १.२६४ अ, काय २.४४ ब, जल २३२४, जीवसमास २३४३, निगोद ३५०५ ब, स्थावर ४४५३, ४४५४ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३१०४, बन्धस्थान ३.११३, उदय १३७६, उदयस्थान १३६२ ब, उदीरणा १४११, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४२६६, ४३०५, त्रिसयोगी भग १४०६ ब। सत् ४२०२, सख्या ४१००, क्षेत्र २२०१, स्पर्शन ४.४८३, काल २१०६, अन्तर ११२, भाव ३२२० ब, अल्प-बहुत्व ११४५ ब।

अपकार—उपकार १४१५ अ, कर्ता कर्म (मिथ्यात्व) २२३ अ, शरीर ४८ अ।

अपकृष्ट—१११८ ब।

अपक्रम—गति २२३६ अ।

अपक्वकर्म—उदीरणा १४०६ ब, १४१० अ।

अपक्वपाचन—उदीरणा १४०६ ब, १.४१० अ।

अपगतवेद—वेद ३.५८५ अ। प्ररूपणा—सत् ४.२२८, सख्या ४१०४, क्षेत्र २२०३, स्पर्शन ४.४८७, काल २१११, अन्तर ११५, भाव ३२२१ अ। अल्पबहुत्व ११४६ ब।

अपचय—ओम् १४७० अ।

अपचित अवयव पद—३.५ अ।

अपदर्श—१११८ ब।

अपदर्शन—कूट व देव—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार

३४८३, ३४८५, ३४८६ अकन ३४४४।

अपदेश—१११८ ब।

अपध्यान—१११८ ब।

अपमण्डल—धारणा २३२४ ब, लोक ३४३४ अ।

अपमण्डल यन्त्र—३३५३।

अपमान—निन्दा २५८८ अ, मार्दव ३२६८ ब, ३२६९ अ।

अपमृत्यु—आयु का अपवर्तन १२६१ अ, कषाय २३५ अ, मरण ३२८४ अ।

अपर—परत्वापरत्व ३१२ अ, परम ३१३ अ।

अपरत्व—काल २८३ अ, परत्वापरत्व ३१२ अ।

अपरम—परम ३१२ ब।

अपर विदेह—१११८ ब, निषध व नील पर्वत का कूट-निर्देश ३४७२ अ, विस्तार ३४८३, ३४८५, ३४८६, अकन ३४४४। गजदन्त का कूट-निर्देश ३४७३ अ, विस्तार ३४८३, ३४८५, ३४८६, अकन ३४४४। विदेहक्षेत्र का पश्चिम भाग—निर्देश ३४४६ ब, विस्तार ३४७९, ३४८०, ३४८१, अकन ३४४४, ३४६४ के सामने, इसके १६ देश व नगरियाँ ३४६० अ, ३४७० ब।

अपर व्यवहार—१११८ ब।

अपर संग्रह—१११८ ब, नय २५३४ अ।

अपर संग्रहाभास—नय २५३४ ब।

अपर सामान्य—सामान्य ४४१२ अ।

अपराजित—१११८ ब। आचार्य—मूलसध (अगधर) १३१६। इतिहास—प्रथम १३२८ अ, द्वितीय १३२९ अ, तृतीय १३२९ ब, १३४१ ब। कूट—रुचकवर पर्वत का कूट-निर्देश ३४७६ अ, विस्तार ३४८७, अंकन ३४६८। जगती—जम्बूद्वीप की जगती का द्वार—निर्देश ३४४४ ब, विस्तार ३४८४, अकन ३४४४, रक्षक देव ३६१३। नाम—गणधर २१२२ ब, ग्रह २२७४ अ, तीर्थंकर पद्मप्रभ व सुपार्श्वनाथ २३७८, बलदेव ४१८ अ, विद्याधर नगरी ३५४५ अ, हरिवंश १३४० अ।

अपराजित संघ—१११९ अ।

अपराजित (स्वर्ग)—अनुत्तर विमान—निर्देश ४५१९ अ, विमान ४५१४ ब, श्रेणीबद्ध ४५१८, अकन ४५१७, कल्पातीत ४५१०। इस विमान के देव—निर्देश ४५१० ब, अवगाहना ११८१ अ, अवधिज्ञान ११९८ ब, आयु १२६९, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १२५८ अ।

अपराजिता—१.१११ अ। दिक्कुमारी (रुचक पर्वत)—

निर्देश ३४७६ अ, ब, अकन ३४६८। नन्दीश्वर द्वीप वापी—निर्देश ३४६३ ब, नामनिर्देश ३४७५ अ, विस्तार ३४९१ अंकन ३४६५। विदेहनगरी—निर्देश ३४६० अ, नामनिर्देश ३४७० ब, विस्तार ३४७९, ३४८०, ३४८१, अकन ३४४४, ३४६४ के सामने, चित्र ३४६० अ।

अपराजिता (नाम)—१११९ अ, तीर्थंकर मुनिमुव्रतनाथ २३७९, बलदेव ४१७ ब, रघुवण १३३८ अ।

अपराह्ण—१११९ अ।

अपराध—१.११९ अ, चारित्र २२८८ ब, धर्म २४७० अ, राग ३५५८ ब।

अपरिमृहीता—१११९ अ।

अपरिग्रह—अहिंसा १२१७ अ। विशेष दे० परिग्रह-त्याग।

अपरिणत—१११९ अ, आहारदोष १२९१ ब।

अपरिमित ज्ञान—केवलज्ञान २१४९ ब।

अपरिवर्तमान परिणाम—परिणाम ३३१ ब।

अपरिशेष प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३१३१ ब।

अपरिस्पन्दात्मक पर्याय—पर्याय ३४७ अ।

अपरिस्त्रविता—१११९ अ।

अपरीत वर्गणा—वर्गणा ३५१४ ब।

अपर्याप्त—अवधिज्ञान ११९५ ब, आयु १२६४ अ, आहारक काययोग १२९८ अ, काय २४४, कर्मण-काययोग २७६ ब, केवली २१६८ अ, जीवसमास २३४३, तिर्यचगति २३६७, नरक गति २५७५ अ, निगोद ३५१०, पर्याप्ति ३४० ब, प्राण ३१५३ ब, मन ३३८० अ, मनुष्य गति ३२७३, वचनयोग ३३८० अ, समय १२९८ ब, सहनानी २२१९ अ।

अपर्याप्त काल—३४२५ अ, विशुद्धि ३५७० अ।

अपर्याप्तनाम—कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३८८, २५८३, स्थिति ४४६६, अनुभाग १९५ ब, प्रदेश ३१३७। बन्ध ३९७, बन्धस्थान ३११०, उदय १३७५ अ, उदयस्थान १३९०, उदीरणा १४११ अ, सत्त्व ४२७८ सत्त्वस्थान ४३०३, त्रिसयोगी भग १४०४, सक्रमण ४८५ अ। अल्पबहुत्व ११६८।

अपर्याप्त योग—३६०४ अ।

अपर्याप्ति—३४० ब।

अपवर्ग—१११९ ब, नैयायिक दर्शन २६३३ ब।

अपवर्तन—१११९ ब, आयु १२६१ अ, अल्पबहुत्व ११६०, कदलीघात ३२८५ ब, घात १११७ ब।

अपवर्तना घात—अपवर्तन १.११९ ब, काण्डकघात १११७ ब।

अपवर्तनोद्धर्तन—अश्वकर्ण करण १ २०४ अ ।

अपवर्त्य—१ ११६ ब ।

अपवाद—१ ११६ ब, पद्धति ३ ६ ब, पर्याय ३ ४५ ब ।

अपवाद-मार्ग—अपवाद १ १२०-१२३ अ, ब । कृतिकर्म
२ १३७ अ, शुभोपयोग १ ४३३ ब ।

अपवाद लिंग—३ ४१७ अ, ३ ४१६ अ, ब ।

अपशब्द-खंडन—१ १२३ ब ।

अपसरण—अपकर्षण १ ११५ अ ।

अपसिद्धान्त—१ १२३ ब, कर्ता कर्म २ २२ ब ।

अपहृत—अन्तर्मुहूर्त १ ३० अ ।

अपहृत संयम—अपवाद-मार्ग १ १२० ब, चारित्र
२ २८५ अ, २ २६२ अ, शुभोपयोग १ ४३३ अ-ब,
सयम ४ २३७ ब ।

अपाच्य—१ १२३ ब ।

अपात्र—१ १२३ ब, उपदेश १ ४२५ ब, ४ ७५ अ, दान
२ ४२६ ब, पात्र ३ ५२ अ, ब ।

अपादान कारक—१ १२३ ब कारक २ ४६ अ ।

अपादान-शक्ति—१ १२४ अ ।

अपान—१ १२४ अ ।

अपाप—१ १२४ अ, तीर्थंकर २ ३७१ ।

अपाय—१ १२४ अ, अवाय १ २०२ अ, ध्येय २ ५०० अ,
भावना १ २१४ ब, १ २१६ अ ।

अपायविचय—१ १२४ अ, उपायविचय २ ४७६ अ,
धर्मध्यान २ ४८२ ब ।

अपार्थक—१ १२४ अ ।

अपुनरागमन—३ ३२४ ब ।

अपुनरुक्त अक्षर—१ २२८ ब ।

अपूर्वकरण—१ १२४ अ । अध प्रवृत्तिकरण २ १३ अ,
अनिवृत्तिकरण २ १४ अ, आरोहण-अवरोहण
२ २४७ अ, उपशम १ ४४१ अ, उपशामक ४ ३४३ अ,
करण दशक २ ६ अ, कषाय २.४० ब, काय २ ४५ ब,
कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१, क्षपक ४.३४३ अ,
चारित्रमोह क्षपणा २ १८० ब, परिणाम २ ११-१३,
परिहृ ३ ३४ अ, बन्धक ३ १८० अ, सूक्ष्मसाम्पराय
४ ८६ अ ।

अपूर्वकरण (प्ररूपणा)—बन्ध ३ ६७, बन्धक ३ १७६ अ,
बन्धस्थान ३ ११० ३ १११, प्रदेशनिर्जरा का अल्प-
बहुत्व १ १७४, उदय १ ३७५ ब, उदयस्थान
१.३६२ अ, उदीरणा १.४११, उदीरणा स्थान
१.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २८६, ४.३०४,
त्रिसयोगी भंग १ ४०६ अ । सत् ४ १६३, सख्या ४.६४,

क्षेत्र २ १६७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २ १००, अन्तर
१.७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १ १४३ ।

अपूर्वकृष्टि—२ १४१ अ ।

अपूर्व चैत्यक्रिया—२ १३८ ब ।

अपूर्व स्पर्धक—कृष्टि २ १४० ब, २ १४१ ब, चारित्रमोह
क्षपणा २ १८० ब, सूक्ष्मसाम्पराय ४ ४४१ ब, स्पर्धक
४ ४७३ ब ।

अपूर्वार्थ—१ १२५ ब ।

अपेक्षा—अनेकान्त १ १०८ ब, १ १०६ अ, १ ११० अ,
अभाव ४ ५०७ अ, एकान्त १ ४६१-४६३ अ, जीव
कर्म सम्बन्ध २ ७० ब, स्वभाव २ ६० अ, स्मादाद
४ ४६८ अ ।

अपेक्षाकृत—४ ५०७ अ ।

अपोह—१ १२५ ब ।

अपोहरूपता—१.१२५ ब ।

अपोहा—ऊहा १.४४५ ब ।

अपोही—१ १२५ ब ।

अपौरुषेय—१ १२५ ब, १ २३८ ब ।

अप्यय दीक्षित—३ ५६५ ब ।

अप्रकाश—४ ३८६ अ ।

अप्रणतिवाक्—३ ४६७ ब ।

अप्रतिकर्म—१ १२५ ब ।

अप्रतिक्रमण—अमृतकुम्भ २ २८८ ब, अशुभोपयोग
१.४३३ ब, प्रतिक्रमण ३.११६ ब ।

अप्रतिघात—१ १२६ अ, १ २२३ ब, ऋद्धि १ ४४७,
१ ४५१ ब, सूक्ष्म ४ ४३६ ब ।

अप्रतिचक्रेश्वरी—१ १२६ अ, पद्मप्रभनाथ २ ३७६ ।

अप्रतिपक्ष प्रकृति—३ ६१ अ ।

अप्रतिपत्ति—१ १२६ अ, व्यक्ति ३ ६१६ अ ।

अप्रतिपातिकी—३ २६७ ब ।

अप्रतिपाती—१ १२६ अ, अवधिज्ञान १ १८८ ब,
१ १६४ अ ।

अप्रतिबुद्ध—१ १२६ अ ।

अप्रतिभा—१ १२६ अ ।

अप्रतियोगी—१ १२६ अ ।

अप्रतिष्ठान—१ १२६ अ ।

अप्रतिष्ठित—१ १२६ अ ।

अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति—निर्देश ३ ५०६ ब, जीव-
समास २ ३४३, आयु १.२६४ अ । प्ररूपणा—बन्ध
३ १०४, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदय-
स्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ उदीरणा स्थान

१४१२, सत्त्व ४२८२ सत्त्वस्थान ४२६६, ४३०५,
त्रिसंयोगी भग १४०६ ब। सत् ४२०६, सख्या
४१०१, क्षेत्र २२०१, स्पर्शन ४४८४, काल २१०७,
अन्तर ११२, भाव ३२२० ब, अल्पबहुत्व ११४६।
अप्रत्यवेक्षित—११२६ अ, उत्सर्ग १३६३ अ, निक्षेप
१५० अ।

अप्रत्याख्यान—११२६ अ, क्रिया २१७४ ब।

अप्रत्याख्यानवरण (कर्मप्रकृति)—११२६ अ, कषाय
२३५ ब, २३८ अ, २३६ अ। प्ररूपणा—प्रकृति
३८८, ३३४४ अ, स्थिति ४४६१, स्थितिसत्त्व
४३०८, अनुभाग १६४ ब, प्रदेश ३१३६, बन्ध
३६७, बन्धस्थान ३१०६, उदय १३७५, उदय-
स्थान १३३६, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान
१४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४२६५, सत्त्व
स्थान अल्पबहुत्व ११६५ ब, त्रिसंयोगी भग १४०१,
सक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व ११६८।

अप्रदेश—अनन्त १५५ ब, असंख्यात १२०६ अ, परमाणु
३१८ अ।

अप्रदेशी—११२६ ब, द्रव्य २४५५ ब, परमाणु ३१८ अ।

अप्रमत्तसंयत—असत्य मनोयोग ३३८० अ, अहिंसक
१२१६ अ, आरोहण-अवरोहण २२४७, उपशम
१४३६ ब, करण दशक २६ अ, कषाय २४० ब,
काय २४५ ब, क्षीणकषाय २४७ ब, प्रमत्त (सयत)
४१३० अ, सज्ञा ४१२२ ब, सयत ४१३० अ,
४१३१ ब, समुद्घात ४३४३ अ।

अप्रमत्तसंयत (प्ररूपणा)—बन्ध ३६७, बन्धस्थान ३११०,
प्रदेश निर्जरा अल्पबहुत्व ११७४, उदय १३७५ ब,
उदयस्थान १३६२ अ, उदीरणा १४११, उदीरणा
स्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, स्थितिसत्त्व का अल्प-
बहुत्व ११७४, सत्त्वस्थान ४२८८, ४३०४,
त्रिसंयोगी भग १४०६ अ। सत् ४१६३, सख्या
४६४, क्षेत्र २१६७, स्पर्शन ४४७७, काल २६६,
अन्तर १७, भाव ३२२२ ब, अल्पबहुत्व ११४३।

अप्रमाण—अवग्रह ११८२ ब, उपचार १४२२ अ, युक्ति
विरुद्ध १२३६ ब।

अप्रमाद—प्रमाद ३१४६ अ।

अप्रमार्जित—उत्सर्ग १३६३ अ।

अप्रयत—हिंसा ४५३५ ब।

अप्रशस्त—११२६ ब, उपशम १४३७ अ, ध्यान २४६ अ,
निदान २६० अ, नोआगम ३१५६ ब, मोह
३३४० ब, राग (उपयोग) १४३३ ब, राग

३३६५ अ, वेद ३५८८ ब, वेद्य ३५६२ अ।

अप्रशस्त विहायोगति—३५७३ ब। प्ररूपणा—प्रकृति
३८८, ३५७३ ब, स्थिति ४४६६, अनुभाग १६५ ब,
प्रदेश ३१३६। बन्ध ३६७, बन्धस्थान ३११०,
उदय १३७५, उदयस्थान १३६०, उदीरणा १४११,
सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४३०३, त्रिसंयोगी भग
१४०४, सक्रमण ४८५, अल्पबहुत्व ११६७।

अप्रसिद्ध—३२ ब।

अप्राप्त काल—११२६ ब।

अप्राप्यकारी—११२६ ब, इन्द्रिय १३०३-३०४,
३२५८ अ, अवग्रह ११८३ ब।

अप्रासुक—३२०४ ब।

अप्रिय—४२७२ ब, वचन ३४६७ ब।

अप्रेरक—कारण २६१२ अ।

अबंध—११२६ ब, आयुर्कर्म १२६३ अ, ज्ञानी
४३७५ ब, ४३७६ ब, बन्ध ३१७२ अ।

अबद्ध—११२७ अ, कारण २५६ ब।

अबद्धायुष्क—जन्म २३१३ ब, बन्ध-उदय-सत्त्वस्थान
१४००।

अबध्यदेश—सुबाहु २३६२।

अबब—सख्या प्रमाण २२१४ ब।

अबला—४४५० अ।

अबाधित—३२ ब।

अबुद्धिपूर्वक—निर्जरा १७५ ब, २६२२ ब, बुद्धि
३१८४ ब, राग ३३६६ अ।

अबबहुल भाग—११२७ अ, विस्तार ३३८६ ब, बिलो
का प्रमाण २५७, अकन ३४४१, चित्र ३३८६।

अबबुद—सख्या प्रमाण २२१४ ब।

अबभोभव—११२७ अ, वसंतिका दोष ३५३८ ब।

अब्रह्म—११२७ अ, ब्रह्मचर्य ३१६२ ब, हिंसा १२१७ अ,
४५३२ ब।

अभक्ष्य—३२०२ अ।

अभयकर—११२७ अ, ग्रह २२६३ अ।

अभय—११२७ अ, अनुत्तरोपपादिक १७० ब, मूलसंघ
१३१६।

अभयकीर्ति—नन्दिसंघ १३२३ ब, काष्ठासंघ १३२७ अ,
इतिहास १३३४ अ।

अभयकुमार—११२७ अ, मगधदेश १३१० ब।

अभयचन्द्र—११२७ अ, काष्ठासंघ १३२७ अ, नन्दिसंघ
१३२३ ब। इतिहास—प्रथम १३३२ अ, १३४५ अ।
द्वितीय १३३२ अ, १३४५।

अभयदान—२४२ अ, २४२ ब ।

अभयदेव (सूरि)—१.१२७ अ, इतिहास—१ ३३० अ, १ ३३१ अ, १ ३४२ अ ।

अभयनन्दि—१ १२७ अ, इन्द्रनन्दि १.२६६ ब, देशीय गण १ ३२४ ब, १ ३२५ । इतिहास १ ३३० अ, १ ३४२ ब ।

अभयसेन—१ १२७ ब, काष्ठासध १ ३२७ अ, पुन्नाट सध १ ३२७ अ ।

अभयानन्द—श्रियांसनाथ २ ३७ ।

अभय्य—जीव २ ३३३ ब, राशि १ ५६ अ, बन्धापसरण १.११६ अ, सापेक्ष धर्म १ १०६ अ, ४ ३२३ ब । समान भव्य ३ २१२ अ, सिद्ध ३ २११ ब । प्रहृषणा—बन्ध ३ १०७, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३८४, उदयस्थान १ ३६२, उदीरणा १ ४११, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ ३०२, त्रिसंयोगी भग १ ४०८ अ । सत् ४ २५४, सख्या ४ १०८, क्षेत्र २.२०६, स्पर्शन ४ ४६२, काल २.११७, अन्तर १ २०, भाव ३ २२२ अ, अल्प-बहुत्व १ १४२ ब, १ १५२ अ ।

अभय्यत्व—३ २१२ अ ।

अभाव—१.१२७ ब, उत्पादादि १ ३६१ अ, नय २ ५२४ अ, प्रमाण २ १५० ब, भाव ३ २२४ अ, शक्ति ३ २२४ अ, सापेक्ष धर्म ४ ३१६ ब, ४ ३२० अ ।

अभाव भावशक्ति—३.२२४ अ ।

अभाववाद—अभाव १ १२८ ब, एकान्त १ १२६ ब, १.४६५ अ ।

अभाषा—३ २२६ अ । शब्द ४.३ अ ।

अभिगमन—३ ५४६ अ ।

अभिगृहीत—३.३०१ अ ।

अभिग्रह—१ २०० अ ।

अभिघट—१ १२६ ब, आहारदोष १ २६० ब, उद्दिष्टदोष १ ४१३ अ, वसतिकादोष ३ ५२६ अ ।

अभिघातगति—२ २३५ अ ।

अभिचन्द्र—१ १२६ ब, कुलकर ४.२३, यदुवश १ ३३७, हरिवंश १ ३४० अ ।

अभिजित—१ १२६ ब, तीर्थकर २ ३८५, ब्रह्मा २.५०४ ब ।

अभिधान—१ १२६ ब ।

अभिधान विन्तामणि कोष—इतिहास १ ३४३ ब ।

अभिधान निबन्धन नाम—१ १२६ ब, २.५८२ ब ।

अभिधान मल—३.२८८ ब ।

अभिषेय—१.१२६ ब ।

अभिनन्दन—१.१२६ ब, पूर्वभव २ ३७६-३६१ ।

अभिनविबोध—१ १२६ ब, ज्ञान १ १३० अ ।

अभिनवेश—१ १३० अ ।

अभिन्न—१ १३० अ, सन्धि २, २७४ अ ।

अभिन्नपूर्वी—१ १३० अ, ऋद्धि १ ४४८, दशपूर्वी ४ ५५ अ ।

अभिप्राय—तर्क ३६ ब, वक्ता १.४२५ ब, २ ५१३ ब, स्याद्वाद ४ ५०० ब ।

अभिप्रेत—गण ३ २ ब ।

अभिमन्यु—१ १३० अ, कुस्वश १ ३३६ अ ।

अभिमान—१ १३० अ, हिसा ४ ५३३ ब ।

अभियोग (देव)—१ १३० अ, ज्योतिषी २.३४६ अ, भवनवासी ३ २०६ अ, आयु १ २६५, विजयार्धवासी ३ ४४८ अ, वैमानिक देवी ४ ५१३, देव आयु १.२६६, देवी आयु १ २७०, व्यन्तर ३ ६११ ब, आयु १.२६४ ब ।

अभियोगी भावना—१.१३० ब ।

अभिलाप—१ १३० ब ।

अभिलाप्य—श्रुतज्ञान १ २२८ ब ।

अभिलाषा—१ १३० ब, निःकाक्षित २ ५८५ ब, (दे इच्छा, मूर्च्छा, आकांक्षा, कामना, तृष्णा, आशा, राग) । परिग्रह ३ २७ ब, पुण्य ३ ६६ ब, ब्रह्मचर्य ३ १८६ अ, संज्ञा ४ १२० ब ।

अभिवृद्धि—उत्तराभाद्र २ ५०४ ब ।

अभिव्यक्ति—कर्म २ २६ अ, व्यक्ति ३ ६१६ अ ।

अभिव्यापक आधार—१ २४६ अ ।

अभिषेक—१ १३० ब ।

अभिषेक—१ १३० ब, पूजा ३ ७८ ब, वन्दना २ १३८ ब ।

अभिषेक पुर—ज्योतिषी देवो के प्रासाद २.३५१ ब ।

अभिषेक वन्दना क्रिया—२.१३८ ब ।

अभिसारिका—२ ४७० अ ।

अभीक्षणज्ञानोपयुक्ता—१ १३० ब ।

अभीक्षणज्ञानोपयोग—१ १३० ब ।

अभूतार्थ—१ १३१ अ । नय २ ५६७ ब ।

अभूतोद्भावन वचन—असत्य १ २०८ ब ।

अभेद—१ १३१ अ, उत्पादादि १ ३५६ ब १ ३६० ब, उपचार १.१३१ अ, १ ४१६ अ, ४.५०१ ब, २ ५५६ ब, कर्ता कर्म २.१७-२४, कारण कार्य २ ५५ अ, कारक २.४६ अ, २.४८६, ज्ञान २ २६१ ब, अज्ञान २.२६७ ब, चारित्र ४ ४१६ ब, द्रव्य २.४५६ ब, भोग ३.२३८ अ, रत्नत्रय ३.३३५ अ, वृत्ति १.१३१ अ, ४ ५०१ ब, समय ४.४१६ ब, सापेक्षधर्म १.१०६ अ, स्वभाव १.१३१ अ ।

अभेदोपचार—१ १३१ अ, उपचार १ ८१६ अ, नय २ ५५६ ब स्याद्वाद ४ ५०१ ब ।
 अभेद्य—१ १३१ अ, भरत चक्रवर्ती ४ १५ अ ।
 अभोक्ता—राग २ ३६६ ब, सम्पद्दृष्टि ४ ३७६ अ ।
 अभोक्तृत्व शक्ति—१ १३१ अ ।
 अभोज्य—३ ५२५ ब, गृहप्रवेश १ २६ अ ।
 अभोज्य गृहप्रवेश—आहारान्तराय १ २६ अ ।
 अभ्यंगस्नान—४ ४७१ ब ।
 अभ्यतर—१ १३१ अ, उपाधि १ ४२७ अ, ३ ६२३ ब, करण २ ६११ ब, कषाय २ ३५ ब, ग्रन्थ ३ २८ अ, तप २ ३५६ अ, २ ३६१, तप.कर्म २ २६ अ, त्याग ३ २६ ब, नेत्र २ ४६८ ब, धर्मध्यान २ ४८१ अ, परिग्रह १ ४२७ अ, ३.२८ अ, ३.६२३ ब, परिषद ३ ५६ अ, प्रत्यय ३ १२५ ब, प्रत्यय कषाय २ ३५ ब, मल ३.२८ अ, व्यास २.२२३ ब, व्युत्सर्ग ३.६२३ ब, सल्लेखना ४ ३८२३ अ, ४.३८३ अ, सूची २ २३३ ब, हेतु २.५४ अ, २ ६२ अ, ब, २ ७२ ब ।
 अभ्यन्तरोपधि व्युत्सर्ग—३ ६२३ ब ।
 अभ्यस्त—१.१३१ अ, गणित २ २२२ ब ।
 अभ्याख्यान—१.१३१ अ ।
 अभ्यागत—१.१३१ अ ।
 अभ्यास—१ १३१ अ, जिनागम ४.५२५ अ, सस्कार ४.१४६ ब ।
 अभ्युत्थान—१.१३१ ब, विनय ३ ५५२ अ, ब, ३.५५३ अ ।
 अभ्युदय—१.१३२ अ, सुख ४.५२४ अ ।
 अभ्युपगम सिद्धान्त—१.१३२ अ, ४.४२७ ब, नैयायिक दर्शन २ ६३३ ब ।
 अभ्र—१.१३२ अ, स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४ ५१६ ब । देव—आयु १.२६७ ।
 अभ्रावकाश—योग का अतिचार २.४८ अ, शय्यासन तप २.४७ ब ।
 अमनस्क—४.१२२ अ ।
 अमनोज्ञ—३.२६ ब ।
 अमम—१.१३२ अ, कालप्रमाण २.२१६ अ, २.२१७ अ ।
 अममांग—१.१३२ अ, कालप्रमाण २.२१६ अ, २.२१७ अ ।
 अमर—सुमतिनाथ २ ३८७ । हरिवंश १.३४० अ ।
 अमरकीर्ति गणी—इतिहास १.३३२ अ, १.३४४ ब ।
 अमरकोष टीका—आशाधर १.२८० ब, इतिहास (क्रिया-कलाप) १.३४४ अ ।
 अमरप्रभ—१.१३२ अ, वानरवंश १.३३८ ब ।

अमर-रक्ष—राक्षसवण १ ३३८ अ ।
 अमरसेनचरिउ—इतिहास १.३४६ ब ।
 अमरावती—४ ४४५ अ ।
 अमरेन्द्रकीर्ति—नन्दिसघ १ ३२४ अ ।
 अमर्यादित (भोजन)—१.१३२ अ, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब ।
 अमलप्रभ—१ १३२ अ, तीर्थकर २ ३७७ ।
 अमात्य—१ १३२ अ ।
 अमावस्या—१ १३२ अ, चन्द्र की गतिविधि २ ३५१ अ ।
 लवणसागर पर प्रभाव ३ ४६० ।
 अमित—कुबेर का यान ४.५१३ अ ।
 अमितगति—१.१३२ अ, माथुर संघ प्र० १ ३२७ ब, द्वि० १ ३२७ ब, यदुवश १ ३३७ । इतिहास—प्र० १ ३३० अ, १ ३४२ ब, द्वि० १.३३० ब, १ ३४३ अ ।
 अमितगति (देव)—दिवकुमारेन्द्र ३.२०८ ब, परिवार ३ २०६ अ, निवास ३ २०६ ब, आयु १.२६५ ।
 अमितगति श्रावकाचार—१.१३२ अ, इतिहास १ ३४३ अ ।
 अमित तेज—१.१३२ ब ।
 अमितप्रभ—यदुवश १ ३३७ ।
 अमितमति—४ २३ ।
 अमितवाहन (देव)—दिवकुमारेन्द्र ३ २०८ ब, परिवार ३ २०६ अ, निवास ३ २०६ ब, आयु १.२६५ ।
 अमितसेन—१ १३२ ब, पुन्नाट सघ १ ३२७ अ, इतिहास १.३२६ ब ।
 अमितांग—४ १० अ ।
 अमुख मंगल—१.१३२ ब, अमुख्य मंगल ३ २४१ ब ।
 अमूढदृष्टि—१.१३२ ब ।
 अमूर्त—१.१३३ अ, गुण २ २४४ ब, द्रव्य २.४५६ अ, सापेक्ष धर्म १.१०६ अ, ४ ३२३ ब, बन्ध ३.१७३ अ, मन.पर्यय ज्ञान ३.२६३ अ, मूर्त ३.३१६ अ, स्पर्श ४.४७६ ब ।
 अमूर्तत्व—३ ३१६ अ, शक्ति ३ ३१६ ब ।
 अमृत—अनुभाग १.६० ब, कुम्भ २.२८८ ब, भरत चक्रवर्ती ४.१५ ब, सदृश ४ २७० ब ।
 अमृतकल्प—४ १५ ब ।
 अमृतकुम्भ—अप्रतिक्रमण २.२८८ ब ।
 अमृतगर्भ—४.१५ ब ।
 अमृतचन्द्र—१ १३३ अ, इतिहास १ ३३० अ, १.३४२ अ ।
 अमृतधारा—१.१३३ अ, ३.५४५ ब ।
 अमृतप्रभ—यदुवश १.३३७ ।
 अमृतबल—इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ ।
 अमृतरस—ऋद्धि १.४५६ अ ।

अमृतरसायन—१.१३३ अ ।

अमृतवेग—राक्षसवश १ ३३८ अ ।

अमृतसर—४.१६ ब ।

अमृतस्त्रावी—ऋद्धि १.१३३ अ, १ ४४७, १ ४५६ अ ।

अमृताशीति—१.१३३ अ, इतिहाम १ ३४१ अ ।

अमेचक—१.१३३ अ ।

अमेध्य—(आहारान्तराय) १.२६ अ ।

अमोघ—१ १३३ ब, वाण ४ १५ ब, नारायण ४ १८ अ ।

अमोघ (स्वर्गपटल)—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४ ५१८,

अकन ४ ५१५ । देव-आयु १ २६८ ।

अमोघ (पर्वतीय कूट)—मानुषोत्तर—निर्देश ३.४७५ अ,

अंकन ३ ४६४ । रुचकवर—निर्देश ३ ४७६ अ,

विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८, ४६९ ।

अमोघमुली शक्ति—४.१६ ब ।

अमोघवर्ष—१.१३३ ब, राष्ट्रकूटवश १.३१५ अ, ब,

अकालवर्ष १ ३१ अ ।

अयत्न—कर्मविस्था २ ६८ अ ।

अयत्नाचारी—४ ५३५ ब ।

अयथाकाल—उदय १.३६८ अ ।

अयथार्थ—३ ३०२ ब ।

अयन—१ १३३ ब, कालप्रमाण २.२१६ अ, ब, सूर्य चन्द्र
की गतिविधि २ ३५१ अ, कायक्लेश २.४७ अ ।

अयश कीर्ति—१.१३३ ब, नामकर्म ३ ६६ अ । प्ररूपणा—

प्रकृति ३ ८८, २.५८३ अ, स्थिति ४ ४६७, अनुभाग

१ ६५ ब, प्रदेश ३ १३६ ब । बन्ध ३ ६७, बन्धस्थान

३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०,

उदीरणा १.४११, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३,

त्रिसंयोगी भग १.३६६ ब, सक्रमण ४ ८५ अ, अल्प-

बहुत्व १.१६७ अ, १ १७२ ब ।

अयस्थूल—३.६०५ अ ।

अयुत—कालप्रमाण २.२१६ अ ।

अयुतसिद्ध—१.१३३ ब, ४ ३३४ अ, द्रव्य २ ४५४ अ ।

अयुतांग—कालप्रमाण २ २१६ अ ।

अयोग—१ १३३ ब, योग ३ ३७६ ब ।

अयोगकेवली—अयोगी ३ ५०६ अ, अर्हन्त १ १३८ अ,

कर्मक्षय २ १५८ अ, कषाय २ ४० ब, काय २ ४५ ब,

केवली २ १५७ ब, २.१५८ अ, निगोद ३ ५०५ ब,

प्राण ३ १५३ ब, समुद्घात ४.३४३ अ । आरोहण क्रम

२.२४७, दश करण २.६, परिषह ३.३४, प्रदेश निर्जरा

अल्पबहुत्व १.१७४ अ ।

अयोगकेवली (प्ररूपणा)—बन्धस्थान ३.११३, उदय

१ ३७५ ब, उदयस्थान १ ३६० अ, १.३६६, १ ३६७,
उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७६, सत्त्वस्थान
४ २६३, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ अ । सत्त्व ४ १६४,
सख्या ४ ६६, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४.४७७, काल
२.१००, अन्तर १ ७, भाव ३ २०२ ब, अल्पबहुत्व
१.१४३ ।

अयोगव्यवच्छेद—१ १३३ ब ।

अयोगी—दे० अयोगकेवली ।

अणोध्य—४ १५ अ ।

अयोध्या—१ १३३ ब, नारायण ४.१८ ब, तीर्थकर ऋषभ
अजित अभिनन्दन सुमति अनन्त पार्श्व २ ३७८-३७९,
भरतक्षेत्र की राजधानी—निर्देश ३ ४४६ अ, अकन
३.४४४, ३ ४४७, विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ,
नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३ ४८०,
३ ४८१, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र
३ ४६० अ ।

अयोनिज—३ १६५ अ ।

अर—चक्रवर्ती ४ १० अ, २.३७७ । (दे० अरनाथ)

अरक्षा भय—१.१३३ ब, भय ३ २०६ अ ।

अरजस्का—१ १३३ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ ।

अरजा—१.१३३ ब । विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३.४६० अ,
नाम ३ ४७० ब, विस्तार २ ४७६-४८०-४८१,
अकन ३ ४४४, ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ ।
नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३ ४६३ ब, नाम
३ ४७५ अ, विस्तार ३.४६१, अकन ३ ४६५ ।

अरण्य—१.१३३ ब ।

अरति—कषाय १ १३३ ब, २ ३५ ब, परीषह १ १३४ अ,
३ ३३ ब, ३ ३४ अ, रति ३.३८८ ब, रागद्वेष
२ ३६ अ, शोक ४.४२ ब ।

अरति परीषह—१ १३४ अ, ३ ३३ ब, ३ ३४ अ ।

अरति प्रकृति—१ १३४ अ । प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८,
३.३४४ अ, स्थिति ४.४६१, स्थिति सत्त्वस्थान
४ ३०८, स्थिति सत्त्वस्थान का अल्पबहुत्व १ १६५ ब,
अनुभाग १ ६४ ब, प्रदेश ३.१३६, बन्ध ३ ६७, बन्ध
काल का अल्पबहुत्व १.१६१ ब, बन्धस्थान ३ १०६,
उदय १.३७५ ब, उदयस्थान १ ३८६, उदीरणा
१.४११ अ, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६५
त्रिसंयोगी भग १.४०१ ब, अल्पबहुत्व १.१६८,
४.८५ अ ।

अरति वाक्—१.१३४ अ, वचन ३ ४६७ ।

अरति वेदनीय—३.३४४ ब ।

अरनाथ—१.१३४ अ, भावि तीर्थकर २.३७७, पूर्व भब

२३७६-३६१, कुरुवश १३३५ ब, तीर्थकर १३३६ अ।

अरल सागर—उत्तरकुरु १३५६ अ।

अरविन्द—कुरुवश १३३६ अ।

अराग—सवर १४३२ ब।

अरिजय—१.१३४ अ, विद्याधर वश १३३६ अ, विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

अरिदम—अजित सुपाश्व चन्द्रप्रभ नाथ २.३७८, विद्याधर वश १३३६ अ।

अरि—१ १३४ अ, मोहनीय कर्म ३३४२ अ।

अरिकेसरी—१ १३४ अ।

अरिमर्दन—राक्षसवश १३३८ अ।

अरिष्ट—१ १३४ अ, अनन्तनाथ २.३८७, भक्ष्याभक्ष्य ३२०३ अ, यम देवो का यान ४.५१३, लौकान्तिक देव ३४६३ ब, ब्रह्म युगल स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४५१८, अकन ४५१५, देव आयु १२६७।

अरिष्टनेमि—यदुवश १३३७, हरिवश १३३६ ब।

अरिष्टपुर—१ १३४ अ, विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३४६० अ, नाम ३.४७० ब, विस्तार ३४७६, ३.४८०, ३४८१, अकन ३४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३४६० अ।

अरिष्टसम्भवा—१ १३४ अ, आकाशोपपन्न देव २४४५ ब।

अरिष्टसेन—चक्रवर्ती ४२५ अ, धर्मनाथ २३८७।

अरिष्टा—१.१३४ ब, विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३४६० अ, नाम ३४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, ३४३० अ। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३४७६ अ, विस्तार ३.४८७ अकन ३.४६८-४६९।

अरिष्टा (नरक पृथिवी)—नरक निर्देश २५७६ अ, विस्तार २५७६, २५७८, पटल इन्द्रक श्रेणी बद्ध २.५७८, २५८० अ, अकन ३,४४१। नारकी अवगाहना ११७८, अवधिज्ञान ११६८ आयु १.२६३।

अरिष्टा पृथिवी (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१००, बन्धस्थान ३११३ उदय १.५७६, उदय स्थान १.३६२, उदीरणा १.४११, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४२६८, ४३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ अ। सत् ४१७०, संख्या ४६५, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन, ४.४७६, काल २.१०१, अन्तर १८, भाव ३.२२० अ, अर्लभहुत्व ११४४।

अरिसन्नास—राक्षस वंश १.३३८ अ।

अरुचि—उपदेश १४२५ अ, राग ३.३६७ ब, ३३६६ ब, श्रद्धान ४४५ ब।

अरुण—१ १३४ ब लौकान्तिक देव ३,४६३ ब, अरुणवर द्वीप का रक्षक देव ३६१४, विजयवान नाभिगिरि का रक्षक देव ३४७१ अ। स्वर्गपटल—निर्देश ४५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४.५१६ ब। देव आयु १.२६६।

अरुणप्रभ—१ १३४ ब, अरुणवर द्वीप का रक्षक देव ३६१४।

अरुणमणि १ १३४ ब, इतिहास १.३३४ अ।

अरुणवर—१ १३४ ब।

अरुणा—१ १३४ ब, नदी ३.२७५ ब।

अरुणाभास—दशम द्वीप सागर—निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष चक्र २३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४, अकन ३४४३।

अरुणी—१.१३४ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

अरुणीवर—१ १३४ ब, नवम द्वीप—सागर—निर्देश ३४७० अ, विस्तार ३४७८, जल का रस ३४७० अ, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३६१४, अकन ३४४३।

अरुपत्व—१ १३४ ब।

अरूपी—१ १३४ ब, मूर्त ३१६ अ।

अर्क—हरिवश १.३४० अ। सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४५१६ ब, देव आयु १२६६।

अर्ककीर्ति—१ १३४ ब, अकम्पन १३० ब, इक्ष्वाकु वंश मे भरत चक्री का पुत्र १.३३५ अ, सूर्यवश १.३३६ ब।

अर्कचूड—विद्याधर वंश १.३३६ अ।

अर्कमूल—१ १३४ ब, विद्याधर ३.५४५ ब।

अर्घ—३.७६ अ।

अर्चट—१ १३४ ब, इतिहास १३२६ ब।

अर्चन—१ १३४ ब, पूजा ३८१ अ।

अर्चि—अनुदिश स्वर्ग का श्रेणीबद्ध—निर्देश ४५१६ अ, ४५१५, ५१८। देव आयु १.२६६।

अर्चनिका—वैमानिक इन्द्रो की देवी ४.५१३ ब।

अर्चिमालिनी—अनुदिश स्वर्ग का श्रेणीबद्ध—निर्देश ४५१६ अ, अकन ४.५१५, ५१७। देव आयु १२६६। सूर्य चन्द्र की पट्ट देवी, २.३४६ अ।

अर्जुनी—३५४५ ब।

अर्जुन—१.१३४ ब, कुरुवश १.३३६ अ, एक कवि

१.३२८ अ ।

अर्जुनवर्मा—१ १३४ ब, भोजवश १.३१० अ ।

अर्जुनी—१.१३४ ब ।

अर्णव—४ १६ ब ।

अर्थ—१.१३४ ब, अग्र १.३६ अ, अनन्तता १.२३४ अ, अन्वयी १.११२ ब, अवग्रह १.१८१ ब १.१८३, आगम १ २२६ ब, काल १ २३४ अ, देश १ २३४ अ, द्रव्य २.४५४ ब, ध्येय २.५०० अ, नय २.५१४ ब, २ ५४३ अ, निरीक्षण २ ५६२ अ, नैयायिक दर्शन २ ६३३ ब, पंचविध १.२३० अ, प्रमाण १ २३३ अ, शब्द १ २३२ ब, शुक्लध्यान ४ ३३ अ, ब, शुद्धि १ १३५ ब, सप्तमगी ४ ३२४ अ, ४.३२५ ब ।

अर्थकथा—कथा २.३ ब ।

अर्थक्रियाकारित्व—३.५३० ब ।

अर्थदर्शनार्थ—आर्य १ २७५ अ ।

अर्थनय—१.१३५ ब, नय २.५१४ ब, २ ५२० ब, २ ५२६ अ, ब, २ ५४३ अ ।

अर्थनिपुर—कालप्रमाण २.२१६ अ ।

अर्थनिपुरांग—कालप्रमाण २ २१६ अ ।

अर्थनिबन्धन—२.५८२ ब ।

अर्थनिमित्तक विनय—३.५४८ ब ।

अर्थपद—१.१३५ ब, ३.४ अ, ब, श्रुतज्ञान ४.६५ अ ।

अर्थपरंपरा—आगमार्थ १ २३० ब ।

अर्थपर्याय—१ १३५ ब, पर्याय ३ ४५ ब, ३ ४७ ब, सप्त-भगी ४.३ २२ ब ।

अर्थपर्याय नैगम नय—२ ५३१ अ ।

अर्थपर्यायनैगमाभास—२ ५३१ ब ।

अर्थपुरुषार्थ—१ १३५ ब ।

अर्थपुरुषार्थ—१ १३५ ब, कथा २ ३ ब, कारण ३ ७० अ ।

अर्थपौरुषी—१ ५२ अ ।

अर्थभेद—नय २.५४१ अ, मतिज्ञान ३.२५४ अ, शब्दभेद ३ २५४ अ, २ ५३६ ब ।

अर्थमल—१ १३५ ब, मल ३ २८८ ब ।

अर्थरुचि—४ ३४८ ब ।

अर्थलिङ्गज श्रुतज्ञान—अनुमान ४ ५६ अ, श्रुतज्ञान ४.६० ब, ४.६४ अ ।

अर्थवाक्य—वाक्य ३.५३१ अ ।

अर्थवाद—१ १३५ ब ।

अर्थविकल्प ज्ञान—३.५३७ ब ।

अर्थव्यंजन पर्याय नैगम—२.५३१ अ ।

अर्थव्यंजन पर्याय नैगमाभास—२ ५३१ ब ।

अर्थशुद्धि—१ १३५ ब, उभय शुद्धि १.४४४ ब ।

अर्थसंक्रान्ति—४.६१ अ ।

अर्थसंग्रह—आगमार्थ १ २३२ अ, मीमांसादर्शन ३.२११ अ ।

अर्थसंदृष्टि—१ १३५ ब, इतिहास १ ३४८ अ ।

अर्थसम—१ १३६ अ, अर्थ १ १३५ अ, निक्षेप २ १३६ अ २ ६०२ अ ।

अर्थसमय—१ १३६ अ, ज्ञान २ २६६ अ, समय ४ २८ अ ।

अर्थसम्यक्त्व—१ १३६ अ, सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब ।

अर्थसम्यक्त्वार्थ—आर्य १ २७५ अ ।

अर्थाधिकार—उपक्रम १ ४१६ ब, श्रुतज्ञान ४ ६७ ब ।

अर्थाधिगम—१ १३६ अ । अधिगम १ ५० ब ।

अर्थांतर—१ १३६ अ ।

अर्थापत्ति—१ १३६ अ, केवलज्ञान २ १५० ब ।

अर्थापत्ति समा जाति—१.१३६ अ ।

अर्थापदत्व—१.१३६ अ ।

अर्थावग्रह—१ १४६ अ । अवग्रह १.१८३ अ ।

अर्दन—१.२७२ ब ।

अर्द्ध कथानक—१ १३६ ब, इतिहास १.३४७ ब ।

अर्द्धक्रम—१ १३६ ब ।

अर्द्धगोलक—१.१३६ ब ।

अर्द्धचन्द्र—चन्द्रप्रभ २ ३७६ ।

अर्द्धच्छेदक—१ १३६ ब, गणित २.२२५ अ, राशि २ २२६ अ । सहनानी २ २१६ ब ।

अर्द्धनाराच—१.१३६ ब, सहनन ४.१५५ अ, ब ।

अर्द्धपुद्गपरावर्तन—१ १३६ ब, श्रुतज्ञान १.५८ ब ।

अर्द्धफालक—१ १३६ ब ।

अर्द्धमंडलीक—१ १३६ ब, राजा ३.४०० ब, ३.४०१ अ ।

अर्द्धेन्द्रा—१ १३६ ब ।

अर्धकंस—तौल का प्रमाण २.२१५ अ ।

अर्धकथानक—१ १३६ ब, इतिहास १ ३४७ ब ।

अर्धकांड—इतिहास १ ३४३ ब ।

अर्धचिता—३.२६२ अ ।

अर्धच्छेदराशि—१ १३६ ब, गणित २.२२५ अ, राशि २ २२६ अ, सहनानी २.२१६ ब ।

अर्धनाराचसहनन—(नामकर्म प्रकृति) प्ररूपणा—प्रकृति ३.७६, २ ५८३ अ, स्थिति ४.४६५, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६ । बंध ३.६७, बंधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३८७ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४ । सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६७, १.१६६ ।

अर्धपर्याकासन—कायक्लेश २.४७ ब ।

अर्धकालक सघ—४७७ अ, १ परिशिष्ट २ २ ।

अर्धमडलीक ३४०१ अ, राजा ३४०० ब, ३.४०१ अ ।

अर्धस्वर्गोत्कृष्ट—राक्षस वश १.३३८ अ ।

अर्धनिशन—१ ६५ अ ।

अर्पित—१.१३६ ब ।

अर्धमा—उत्तराफाल्गुन २.५०४ ब ।

अर्वाचीन पुरुष—आगम १ २३६ ब ।

अर्हत—१ १३६ ब, अवर्णवाद १ २०१ अ, आप्त (१८ दोष रहित) १ २४८ अ, ओम् १ ४६६ ब, केवलज्ञान २ १५२ ब, गुरु २ २५१ ब, ध्येय २ ५०१ अ, नमस्कार मन्त्र ३ २४८ अ, निषद्यका (व्युत्सर्ग तप) ३ ६२१ अ, पिडस्थ ध्यान ३ ५७ ब, भक्ति ३ १३८ ब, ३ १६८ ब, मोक्ष (बिद्ध) ३ ३२४ अ, बिहार ३ ५७५ अ, सामायिक ४ ४१७ ब ।

अर्ह—१ १३८ ब, सल्लेखना ४ ३६० ब ।

अर्हत्—अर्हत १ १३६ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०१ अ ।

अर्हत्पासा केवली—१ १३८ ब, इतिहास १ ३४८ अ ।

अर्हत्प्रवचन—इतिहास १.३४२ ब ।

अर्हत्सेन—१ १३८ ब, सेनसघ १ ३२६ अ, इतिहास १ ३२८ ब, १-३२६ अ ।

अर्हदत्त—१ १३८ ब, मूलसघ (श्रुतकेवली) १ ३१७, १ परि०-२ ६, इतिहास १.३२८ ब ।

अर्हदत्त (सेठ)—१.१३८ ब ।

अर्हदास (कवि)—इतिहास १ ३३२ ब, १.३४५ अ ।

अर्हद्वली—१.१३८ ब, मूलसंघ १ ३१७, १.३२२ ब, १ परि०-२ ८, नदिसघ १ परि०-४.२, पुनाट सघ १ ३२६ ब, इतिहास १ ३२८ ब ।

अर्हद्वभक्ति—१.१३८ ब, ३ १६८ ब ।

अर्हन्मंडलयंत्र—यंत्र ३ ३४६ ।

अलकारचित्तमणि—इतिहास १.३४५ ।

अलंकारोदय—१ १३८ ब ।

अलंबुष—यदुवंश १.३३७ ।

अलंबुसा—वैमानिक गणिका ४ ५१४ अ ।

अलंबु—वैमानिक महत्तरिका ४.५१३ ब ।

अलंभूषा—१.१३८ ब । रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अकन ३ ४६८-४६६ ।

अलक—१ १३८ ब, ग्रह २ २७४ अ ।

अलका—१ १३८ ब, प्रतिनारायण ४.२० ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

अलकापुरी—सजात २.३६२ ।

अलाभ—१.१३६ अ, परीषद् १.१३६ अ, ३.३३ ब, ३.३४

ब, लाभ ३.४१६ अ ।

अलीक वचन—असत्य १.२०८ ब ।

अलेख—१ १३६ अ ।

अलेश्या—३ ४२३ ब ।

अलोक—१ १३६ अ, आकाश १ २२० ब, विभाग २.४८८ ब, २ ४६० अ, हानि २ ४६० अ, वर्तना २.८५ ब, अलोकाकाश—१.२३६ अ, आकाश १ २२० ब, विभाग २ ४८८ ब, २.४६० अ, वर्तना २ ८५ ब, अल्पबहुत्व १ १४३ अ । हानि २.४६० अ ।

अलौकिक—१ १३६ अ, लोकोत्तर ३ ४६२ ब । गणना १ १३६ अ, ३ १४४ ब, सुख ४.४३१ अ, शुचि १.१३६ अ, ४.४३८ अ ।

अल्पकालिक प्रत्याख्यान—३.१३३ अ ।

अल्पतर बंध—१.१३६ अ, प्रकृतिबंध ३ ८६ अ ।

अल्प-पूर्ण उपचार—१.४२० ब ।

अल्पबहुत्व—१ १३६ अ, अनुयोगद्वार १.१०२ अ, प्ररूपणाये—जीवसामान्य ओघ १.१४३, आदेश १.१४४-१५४, सिद्ध या मुक्तजीव १.१५३, पंच शरीरो के स्वामी १ १५७ ब-१६० अ । स्थिति बंध स्थान सामान्य १.१६४ ब, स्थिति सत्त्वस्थान मोहनीय १ १६५, अनुभाग सत्त्वस्थान सामान्य १.१६६-१७०, प्रदेशबंध सामान्य १.१७१-१७३, उदीरण व उदीरणास्थान ओघ १.४१२, आयु का अपकर्ष काल १.१७३-१७४, अष्टकर्म निर्जरा १.१७४ । अवगाहना १.१५४, १ १५७, योगस्थान १.१६१ ब-६४, विशुद्धि व संक्लेशस्थान १.१६० अ, ज्ञान व चारित्र के भेदों का अवस्थान काल १ १६० ब । २३ वर्गणाएँ १.१५५, पंचशरीर वर्गणा १ १५६ ब । स्वामित्व सन्निकर्ष—बंध १ १८२, ४ ४७०, ४.५२८, बंधस्थान ४ ५२७, उदय आदि १ १७५ । अध प्रवृत्तकरण २.१० अ ।

अल्पद्वि देव—आयु के बंध योग्यपरिणाम १.२५८ अ, ब ।

अल्पविद्या—३ ५४४ अ ।

अल्पसावद्य—१.१७६ अ, सावद्य ४ ४२१ अ ।

अल्पसावद्य कर्मण्य—निर्देश ४.४२१ ब, लक्षण ४.४२१ अ, आर्य १.२७५ अ ।

अल्पावधिक—३ १३३ अ ।

अल्लीवण बंध—३.१७४ ब ।

अल्लू—(कवि) इतिहास १ ३३३ अ ।

अवंतिकामा—१ १७६ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

अवंतिवर्मा—१ १७६ ब ।

अवंती—१ १७६ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, मागध वंश

१.३१० ब, १ ३१२ यदुवश १ ३३७, अवंतीवश
इतिहास १ ३१२ ।

अवंतीवश — इतिहास १.३१२ ।

अवकाशदान — आकाश १ २२० अ ।

अवक्तव्य — १.१७६ ब, तत्त्व १.२२६ अ, भग ४ ३२४ ब,
सापेक्ष धर्म ४.३२४ ब, नय १ १७७ अ, २ ५२२ ब,
प्रकृतिवध ३.८६ अ ।

अवक्तव्यता — ४ ३१४ ब ।

अवक्तव्यवाद — १.१७७ अ, एकांत १.४६५ अ ।

अवकान्त — १.१७७ अ । नरक पटल — निर्देश २ ५७६ ब,
विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३ ४४१ । नारकी —
अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

अवगम — २ २७० व ।

अवगाढ — १ १७७ अ । दर्शनार्थ १ २७४ ब, सम्यक्त्वार्थ
१.२७४ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३४८ ब, रुचि ४ ३४८ ब ।

अवगाह — १ १७७ अ । क्षेत्र २ २०६ अ, दान १ १२० अ ।

अवगाहन — १.१७७ अ, गति २.२३५ अ ।

अवगाहनत्व — १ १७७ ब, ३ ३२६ अ ।

अवगाहना — १ १७७ ब, आकाश गुण १.११२ अ, इन्द्रिय
१ ३०५ ब, औदारिक शरीर अल्पबहुत्व १ १५८,
मुक्ति ३ ३२८ अ, वर्गणा अल्पबहुत्व १ १५६ ब, सिद्ध
अल्पबहुत्व १ १५४ अ, जघन्य अवगाहना से श्रेणी
माडने वालो की सख्या ४ ६४, षट्कालिक वृद्धि
हानि २ ६३ ।

अवग्रह — १ १८१ अ, ईहा ज्ञान १ ३५१ ब, दर्शन २ ४०६
अ, प्रामाण्य १.१८२ ब, मतिज्ञान ३.२५३ अ । ज्ञान
की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६० ब ।

अवग्रहकाल — ३.२२८ ब ।

अवग्रहतप — कायक्लेश २.४७ अ ।

अवग्रहावरणीय कर्म — बीजबुद्धि ऋद्धि १.४४८ ब ।

अवच्छिन्न — १.१८४ ब ।

अवच्छेदक — १.१८४ ब ।

अवतंस — १ १८४ ब । उत्तर कुरु का दिग्गजेन्द्र — निर्देश
३ ४७१ ब, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३.४८६,
अंकन ३.४४४ ।

अवतंसा — व्यंतर वल्लभिका ३.६११ ब ।

अवतंसिका — ४.१५ अ ।

अवतारक — १.१८४ ब ।

अवतारक्रिया — ४.१५२ अ ।

अवदान — १.१८४ ब ।

अवद्य — १.१८४ ब ।

अवद्यभावना — अस्तेय १.२१४ ब, अहिंसा २.११६ अ ।

अवधा — १ १८४ ब ।

अवधारणा — १ १८४ ब ।

अवधि — १ १८४ ब, अवधिज्ञान १ १८८ ब, जन्म
२ ३२२ अ ।

अवधिज्ञान — १.१८४ ब, उपक्रम १.४१६ ब, ऋद्धि १.४४८,
स्वामित्व २ २६१, सम्पूर्णछम ४.१२७ अ ।
प्ररूपणा — बध ३ १०५, बधस्थान ३ ११३, उदय
१ ३८३, उदयस्थान १ ३६२, उदीरणा १.४११ अ,
उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२८३, सत्त्व स्थान
४ ३००, त्रिसयोगी भग १ ४०८ अ, सत् ४.२३७,
सख्या ४ १०६, क्षेत्र ३ २०४, स्पर्शन ४.४८८, काल
२ ११३, अन्तर १ १५, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व
१ १५० अ । सिद्धो का अल्पबहुत्व १.१५४ अ ।

अवधिज्ञानावरण — १ १६६ ब । प्ररूपणा — प्रकृति ३ ८८,
२ २७१ ब, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ६४ ब, प्रदेश
२ १३६ । बध ३ ६७, बधस्थान ३.१०६, उदय
१.३७५, उदयस्थान १ ३८७ ब, उदीरणा १.४११,
उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान
४.२६४, त्रिसयोगी भग १.३६६, सक्रमण ४.८४ ब,
अल्पबहुत्व १.१६८ ।

अवधिज्ञानी — कल्की २.३१ ब, गुणित श्रेणी ४.५२४ अ,
तीर्थकर २.३८६ ।

अवधिजिन — १.१६६ ब, जिनकल्प २.३२६ अ ।

अवधिदर्शन — १.१६६ ब, दर्शन २.४१३ अ, ब । प्ररूपणा —
बध ३ १०६, बधस्थान ३.११३, उदय १.३८४,
उदयस्थान १ ३६३, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा
स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४.३०१,
४ ३०६, त्रिसयोगी भग १.४०६ अ । सत् ४.२४१,
सख्या ४.१०७, क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४ ४६०, काल
२ ११५, अन्तर १.१७, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व
१ १५१ ।

अवधिदर्शनावरण — १.१६६ ब । प्ररूपणा — प्रकृति ३ ८८,
२.४२० अ, स्थिति ४.४६० अनुभाग १ ६४ ब, प्रदेश
३.१३६ । बध ३.६७, बधस्थान ३ १०६, उदय
१.३७५, उदय स्थान १.३८७, उदीरणा १ ४११ अ,
उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान
४.२६४, त्रिसयोगी भग १.३६६, सक्रमण ४.८४ ब,
अल्पबहुत्व १ १६८ ।

अवधिमरण — १.१६६ ब, मरण ३ २८१ ब ।

अवधिस्थान — १ १६६ ब । नरक पटल — निर्देश २ ५८०
अ, इन्द्रक व श्रेणीबद्ध २ ५८० अ, विस्तार २.५८०
अ, अंकन ३.४४१ । नारकी — अवगाहना १ १७८,
आयु १.२६३ ।

अवधूत काल अनशन—१ ६५ ब, १ २०० अ ।

अवधूता—विदेहस्थ नगरी—निर्देज ३ ४६० अ नाम
३ ८७० ब, विस्तार ३ ४७६, ३ ४८०, ३ ४८१,
अकन ३ ४४४, ३ ४६८ के सामने (चित्र स० ३७),
चित्र ३ ४६० अ ।

अवधूताधिकार—३ १६६ अ ।

अवनति—कृतिकर्म २ १२३ ब, त्रिवार २ २६ अ ।

अवनमन—२ ५०६ अ ।

अवना—लवणा देवी ३ ६१४ अ ।

अवनिपाल—१ २०० अ ।

अवनीत—१ २०० अ ।

अवपीडक—१ २०० अ ।

अवबोध—२ २७० ब ।

अवमान—१ २०० अ, प्रमाण ३ १४५ अ ।

अवमौर्ध्य—१ २०० अ ।

अवयव—१ २०० ब, अनुमान १ ६८ ब, उपदेश १ ४२५
अ, ब, नैयायिक दर्शन २ ६३३ अ, गुण २ २४१,
३ ३१० अ, परमाणु ३ १८ ब, पर्याय ३ ४७ अ,
शरीर १ २०० ब, सम्यक्त्व ३ ३१० अ ।

अवयवपद—उपक्रम १ ४१६ ब ।

अवरोहक—१ २०० ब, अवतारक १ १८४ ब, अवतारक
१ १८४ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ अ ।

अवरोहण—गुणस्थान २ २४७ अ ।

अवर्णवाद—१ २०० ब, अमुर देव १ २१० ब ।

अवर्णसमा—२०१ अ ।

अवलंब—१ २०१ अ ।

अवलबना—१ २०१ अ ।

अवलबनाकरण—१ २०१ अ ।

अवलंब ब्रह्मचारी—१ २०१ ब, ३ १६४ अ ।

अवव—काल प्रमाण २ २१६ अ ।

अववाग—काल प्रमाण २ २१६ अ ।

अवश—१ २०१ ब, आवश्यक १ २७६ ब ।

अवश्य—आवश्यक १ २८० अ ।

अवष्टम्भ—कर्मोदय २ ७१ ब ।

अवसन्न—१ २०१ ब, मरण ३ २८१ ब ।

अवसन्नासन्न—१ २०१ ब, परमाणु-समूह १ २२४ अ,
क्षेत्रप्रमाण २ २१५ अ ।

अवसर्पिणी—१ २०१ ब, अवगाहना १ १८०, आयु १ २६४,
आर्यखंड १ २७५ अ, काल २ ८८, कालपरावर्तन
२ ८६, क्षेत्र २ ६२, वृद्धि-हानि २ ६१, समवसरण
४ ३३१ ब, सिद्धो का अल्पबहुत्व १ १५३ ।

अवसाय—१ २०१ ब, व्यवसाय ३ ६१७ अ ।

अवस्था—१ २०१ ब, पर्याय ३ ४५ ब, व्यवस्था
३ ६१७ अ ।

अवस्थात्याग—व्यय १ ३५७ ब ।

अवस्थान—१ २०२ अ, अस्तित्व १ २२१ ब, उत्पादादि
१ ३५६ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब, लोकाकाश १ २२२-
२२४, विहार ३ ५७४ अ, स्थान ४ ४५२ ब ।

अवस्था प्राप्ति—उत्पाद १ ३५७ अ ।

अवस्थित—१ २०२ अ, परमाणु ३ १६ अ ।

अवस्थित अवधिज्ञान—१ २०२ अ, अवधिज्ञान १ १८८ अ,
१ १६३ ब ।

अवस्थित उग्र ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७ १ ४५३ ब ।

अवस्थित गुणश्रेणी आयाम—१ २०२ अ, श्रेणी ४ ८६ ब ।

अवस्थित बंध—१ २०२ अ, बंध ३ ८६ अ ।

अवस्थित भागाहार—अनुयोगद्वार १ १०२ ब ।

अवस्थित सख्या—संख्या ४ ६२ अ ।

अवहार—अनुयोगद्वार १ १०२ अ ।

अवहार काल—अतर्मुहूर्त १ ३० अ, काल २ ८१ ब ।

अवाक् शय्यासन तप—कायक्लेश २ ४७ ब ।

अवाक्—१ २०२ अ ।

अवाच्य—सापेक्षधर्म १ १०६ अ, ४ ३२३ बा ।

अवान्तरसत्ता—अस्तित्व १ २१२ ब, द्रव्य २ ४५५ अ,
सापेक्षधर्म १ १०६ अ, ४ ३२३ अ ।

अवाय—१ २०२ अ, अवग्रह ज्ञान १ १८४ अ, धारणा
ज्ञान २ ४६१ अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६०,
मतिज्ञान ३ २५३ अ ।

अविकल्प—१ २०२ ब, ३ ५३७ अ, नय २ ५२३ अ ।

अविकृतिकरण—१ २०२ ब, आलोचना १ २७७ अ ।

अविज्ञातार्थ—१ २०२ ब ।

अविग्रह गति—३ ५४१ अ ।

अविचलस्थिति—चारित्र २ २८४ अ, निजस्वरूप
२ २८४ अ ।

अविचार—१ २०२ ब, भक्त प्रत्याख्यान ४ ३८८ ब ।

अवितथ—१ २०२ ब, ३ ५४३ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ ।

अविद्धकरण—१ २०२ ब ।

अविद्या—मिथ्यादृष्टि ३ ३०४ अ, संस्कार ४ १५० अ ।

अविध्वंस—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ ।

अविनाभाव—१ २०२ ब, व्याप्ति ३ ६१८ अ ।

अविनाभावित्व—४ ५३८ अ ।

अविनाभावी सम्बन्ध—उपचार १ ४२२ ब ।

अविनेय—१ २०२ ब ।

अविपाक—१ २०३ अ, विपाक ३ ५५६ अ ।

अविपाक प्रत्यधिक—उदय १ ३६५ ब, उपशम १ ४४२ अ,

निर्जरा १७५ ब, २६२२ अ, भावबध ३१७१ ब,
३१७२ अ।

अविभक्ति—३.५५६ ब।

अविभाग प्रतिच्छेद—१२०३ अ, अपूर्वकरण २१२ अ,
उदय १३६६ ब, खड कल्पना २२४१ अ, गुण
२२४१ अ, ब, योग मे अल्पबहुत्व १.१६२ ब, यांग
वर्गणा ३३८३ अ, स्पर्धक ४४७२ अ, ब।

अविभागी—द्रव्य १२२१ ब। परमाणु ३१६ ब।

अविरत—काय २४५ ब, दर्शन प्रतिमा २४१८ अ,
सम्यग्दृष्टि २२१२ अ।

अविरतसम्यग्दृष्टि—१२०३ अ। आरोहण-अवरोहण
७२४७, करण दशक २६, गर्हण २२३८ ब, दर्शन
प्रतिमा २४१८ अ, निर्जरा का अल्पबहुत्व १.१४१ ब,
परिषह ३३४, वेदक सम्यक्त्व २१८५, विशेष दे०
'सम्यग्दृष्टि'।

अविरतसम्यग्दृष्टि (प्रवृत्तता)—बध ३६७, बधस्थान
३.१०६, उदय १३७५, उदयस्थान १३६२ अ,
उदीरणा १४११ अ उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व
४२७८, सत्त्वस्थान ४२८८, त्रिसयोगी भग १४०६
अ। सत् ४.१६२, सख्या ४६४, क्षेत्र २१६७,
स्पर्शन ४.४७७, काल २६६, अंतर १७, भाव
३२२२ ब, अल्पबहुत्व ११४३।

अविरति—१२०३ अ, उपयोग (शुभ) १.४३३ ब, कषाय
३१२७ अ, प्रत्यय ३.१२६ अ-३२३०। प्रमाद
३.१२६ ब, बध ३१७५ अ, ३१७८ ब।

अविरुद्ध—१२०३ ब।

अविरुद्धोपलब्धि (हेतु)—२२०३ ब, ४५३८।

अविरोध—अनेकान्त १.१०६ ब, प्रामाणिकता १.२३६ अ।

अविवक्षित—४५०२ ब।

अविवेक—कर्ता कर्म २२२ ब।

अविशद—१.२०३ ब, अवग्रह ११८१ ब, १८३ अ।

अविशेष समा जाति—१२०३ ब।

अविश्वभाव—१२०३ ब।

अविसंवाद—अस्तेय १.२१४ अ।

अविहत—४.६० अ।

अवीचार—४३४ ब।

अवृद्धिक दोष—आहार १२६० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ।

अवृद्धिक प्रामुख्य दोष—आहार १७६० ब।

अव्यक्त—१.२०३ ब, आलोचना ६२७७ ब, निवृत्त्यक्षर
१.३२ ब, बाल ३२८१ अ, मन पर्यय ३७६४ अ,
राग ३.३६६ अ।

अव्यय—४.४३२ ब।

अव्यवस्था—१२०३ ब, व्यवस्था ३.६१७ अ।

अव्याघात—१२०३ ब, अपकर्षण १११३ ब, उत्कर्षण
१३५३ ब, सूक्ष्म ४४३६ ब।

अव्याप्त—१.२०३ ब, लक्षणाभास ३४०६ ब।

अव्याबाध—१२०३ ब, मोक्ष ३३२५ ब, ३३२६ अ,
लौकान्तिक देव ३४६३ ब, सुख ४४३१ ब,
४४३२ ब।

अव्युत्पन्न श्रोता—४७४ अ, ब, उपदेश १४२६ अ।

अव्रत—(दे० अविरत सम्यग्दृष्टि)।

अव्रतीगृहस्थ—मूल गुण ४५१ अ।

अशन—१.२०३ ब, आहार १२८५ अ।

अशन दोष—आहार १२८६ ब, १२६१ ब।

अशनिघोष—१२०३ ब, मानुषोत्तर के कूट का देव—
निर्देश ३४७५ अ, अकन ३४६४।

अशनिजब—१२०३ ब, महोरग देव ३२६३ अ।

अशब्द—परमाणु ३१५ ब।

अशय्याशयिनी—१२०३ ब, विद्या ३.५४४ अ।

अशरण—१२०३ ब, अनुप्रेक्षा १७३ अ, ७६ अ।

अशरीर—३३२५ ब।

अशुचि—१२०३ ब, अनुप्रेक्षा १७३ ब, १७६ ब,
आहारान्तराय १२६ अ, पिशाच ३५८ ब।

अशुद्ध—१२०३ ब, आत्मा २.३३८ अ, आत्मानुभव १.८४ अ,
१.८६ ब, उद्दिष्ट १.४१३ ब, उपयोग ८४३० ब,
१.४३१ ब, १४३२ अ, १४३४ अ, चेतना २.२६७ अ,
नय २.५५१ अ, पर्याय ३४६ ब, शुद्ध ४.३८ अ,
सापेक्ष धर्म (अनेकान्त) १.१०६ अ (सप्तभंगी
४३२३, ब।

अशुद्ध अर्थपर्याय-नैगम—नय २५३१ ब।

अशुद्धता—१२०४ अ।

अशुद्धद्रव्य अर्थपर्याय नैगम—नयाभास २५३२।

अशुद्धद्रव्य नैगम—नय २५३१ अ, नयाभास २५३२।

अशुद्धद्रव्यव्यञ्जनपर्याय नैगम—नय २.५३१ ब, नयाभास
२५३२ अ।

अशुद्ध द्रव्याधिक नय—१.२०४ अ, नय २.५४४ अ, नैगम
नय २५३२ अ, व्यवहार नय २.५५६ अ।

अशुद्धनिश्चय नय—१.२०४ अ, नय २.५५१ अ,
२.५५४ अ।

अशुद्धपर्याय—पर्याय ३.४६ ब।

अशुद्धपर्यायाधिक नय—नय २.५५१ अ।

अशुद्धपारिणामिक भाव—३.५५ अ।

अशुद्धसद्भूत—२.५६० ब।

अशुद्धोपयोग—१.२०४ अ, १.४३० ब, १.४३१ ब,

१.८३४ अ, परिग्रह २.२६ अ, विषकुम्भ १.४३४ अ, शुभाशुभ १.४३३ व, हिंसा २.२१६ ब, १.२१६ ब, ४.५३३ अ, ४.५३४ ब ।

अशुभ—३.३७७ अ, आस्रव ४.२८२ ब उपयोग १.४३० ब, १.४३३ ब, उपशम ४.४३७ अ, करण चिन्ह १.१६२ अ, शुभ ४.४१ ब, तैजस शरीर २.३६५ ब, तैजस समुद्रात २.३६८ ब, नामकर्मप्रकृति १.२०४ अ, ३.५३ ब, परिणाम १.४३१ अ, ३.३१ अ, २.६२१ अ, निरोध २.४७२ ब, प्रणिधान ३.११५ अ, मोह ३.३४० ब, योग १.२०४ अ, २.४६ ब, ३.२७७ ब, ३.३७५ ब, २.४१८ ब, ४.१४२ ब, राग ३.३६६ अ, लेश्या २.४६३ अ, ३.४२२ व, स्वप्न ४.५०४ अ ।

अशुभनामकर्मप्रकृति—१.२०४ अ, शुभ ४.४४१ अ, पाप ३.५३ ब, प्ररूपणा-प्रकृति । ३.८८, २.५८३ अ, स्थिति ४.४६, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६ । बन्ध ३.४७, बन्ध स्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदय स्थान १.३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्व स्थान ४.३०३, त्रिसयोज भग १.४०४, सक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८ ।

अशुभपरिणाम—उपयोग १.४३० ब, १.४३१ अ ब, परिणाम ३.३१ अ, व्युत्सर्ग ३.६२१ अ ।

अशुभयोग—१.२०४ अ, काययोग २.४६ ब, मनोयोग ३.३७७ ब, योग ३.३७५ ब, वचनयोग ३.४१८ ब, सवर ४.१४२ ब ।

अशुभलेश्या—३.४२२ ब, ध्याता ३.४६३ ।

अशुभोपयोग—१.२०४ अ, उपयोग १.४३० ब, १.४३१ अ, १.४३३ ब, अशुभोपयोग १.४३४ अ, गुणस्थान १.४३४ अ ।

अशून्यता—२.१३३ अ ।

अशून्य नय—१.२०४ अ, नय २.५२३ अ ।

अशोक—१.२०४ अ, ग्रह २.२७४ अ, मल्लिनाथ २.३८३, मौर्यवश १.३६३, १.३१६, विद्याधर ३.५४५ ब, व्यन्तरदेव ३.६१३ ब ।

अशोकरोहिणी व्रत—१.२०४ अ, रोहिणी व्रत ३.४०७ अ ।

अशोकवन—भावन लोक मे ३.२१० ब, व्यन्तर लोक मे ३.६१२ ब, नन्दीश्वर द्वीप मे ३.४६६ अ ।

अशोकवृक्ष—१-२०४ अ वृक्ष ३.५७६ ब, ३.५८० अ, प्रातिहार्य १.१३७ ब ।

अशोक संस्थान—१.२०४ अ, ग्रह २.२७४ अ ।

अशोका—१.२०४ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, नन्दी-श्वर द्वीप की बापी—निर्देश ३.४६३ अ, नाम ३.४७५ अ, विस्तार ३.४६१ अकन ३.४६५ ।

अशौच—४.४४ ब ।

अश्मक—१.२०४ अ, मनुष्य लाक ३.२७५ अ ।

अश्मगर्भ—मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३.५७५ अ, विस्तार ३.४८६, अकन ३.४६४ ।

अश्रद्धा—४.४६ अ ।

अश्रद्धान—तत्त्व ३.३०० अ, मिथ्यादर्शन ३.३०० अ, श्रद्धान ४.४५ ब ।

अश्रुपात—आहारान्तर्ग १.२६ अ ।

अश्रेणी—गुणस्थान २.२४७ अ ।

अश्व—१.२०४ अ, चक्रवर्ती का वैभव ४.१३ अ, ग्रह २.२७४ अ, अश्विनी नक्षत्र २.५०४ ब, माहेन्द्रदेव का यान ४.५११ ब, लौकान्तिकदेव ३.४६३ ब, सम्भव-नाथ का चिन्ह २.३७६ ।

अश्वकठ—४.२६ अ ।

अश्वकर्ण करण—१.२०४ अ, कृष्टि २.१४० ब, २.१४२ अ, स्पर्धक ४.४७३ ब ।

अश्वग्रीव—१.२०४ ब, प्रतिनारायण २.३६१ ब, ४.३० अ, ४.२६ अ ।

अश्वत्थ—१.२०४ ब, अनन्तनाथ व पार्श्वनाथ २.३८३ ।

अश्वत्थामा—१.२०४, ब ।

अश्वधर्मा—विद्याधर वश १.३३६ अ ।

अश्वध्वज—विद्याधर वश १.३३६ अ ।

अश्वपति—१.२०४ ब ।

अश्वपुरी—१.२०४ ब, विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नगरी ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ ।

अश्वमेघदत्त—१.२०४ ब, अर्जुन १.१३४ अ ।

अश्वलायन—क्रिपापादी १.४६५ अ ।

अश्ववन—पार्श्वनाथ २.३८३ ।

अश्वसेन—यदुवश १.३३७ ।

अश्वसेना—यदुवश १.३३७ ।

अश्वस्थान—२.२७४ अ ।

अश्वायु—विद्याधर वश १.३३६ अ ।

अश्विनी—१.२०४ ब, नक्षत्र २.५०४ ब, मल्लिनाथ नमिनाथ २.३८० ।

अश्विनी व्रत—१.२०४ ब ।

अष्ट—१.२०४ ब, अग २.२६३ अ, ३.५० ब, ४.३५१ अ, ४.३५८ ब, अगधर १.३६७, आयु के अपकर्ष काल १.२५६ अ, १.२६७, आयतन १.२५१ अ, कर्म ३.६२ अ, ३.३२६, कर्मप्रदेश ४.११६ ब, कर्म वर्गणा ३.५१७ अ, गुण (सिद्ध) ३.३२५ ब, ज्ञान के

अग १२६३ अ, दिक् १२०४ ब, द्रव्य (पूजा) ३७८ अ, पाहुड १३४० ब, १३४८ अ, ३५७ अ, पुत्र (अन्तकृत केवली) १२ ब, पृथिवी २५७६ ब, प्रवचनमाता ३१४८ अ, प्रातिहार्य १.१३७ ब, भक्त (तेला) ३१६४ ब, मंगल द्रव्य २३०२ अ, २३०३ अ, ४३३१ अ, मद ४३६१ व, मध्यरुचक प्रदेश ३३७६ ब, मूलगुण १,२०५ अ, ४५० ब, शुद्धि ४.३८ ब, सम्यग्दर्शन के अग ४३५० ब, ४३५१ अ, स्थान ३११० अ।

अष्टकर्म—प्रकृति ३६२ अ, उदय-उदीरणा आदि का अल्पबहुत्व ११७५, अनुभाग अल्पबहुत्व ११६६, बद्ध प्रदेश ४११६ ब, अबाधा १२४६, गुणावरोधक शक्तियाँ ३३२६।

अष्टचत्वारिंशत्—मोहनीय की प्रकृतियाँ ३३४२, ३३४३।

अष्टदिगवलोकन—१२०४ ब, व्युत्सर्ग ३६२२ अ।

अष्टद्रव्य—१२०४ ब, पूजा ३७८ अ, मंगल द्रव्य २३०२ अ, ४३३१ अ।

अष्टम—पृथिवी १२०५ अ, ३३२३ ब, ४४२५ अ, भक्त १२०५ अ, २४७ अ, भूमि ३२३४, ३३२४ अ।

अष्टमध्यप्रदेश—१२०५ अ, जीव २३३६ अ, लोक ३४४० ब।

अष्टमी क्रिया—२१३८ ब।

अष्टमी व्रत—१२०५ अ।

अष्टशती—१२०५ अ, इतिहास १३४१ ब।

अष्टसहस्री—१२०५ अ, अकलंक १३१ अ, १३१ अ। इतिहास १३४१ ब।

अष्टांक—१२०५ अ।

अष्टांग—देहावयव ११ ब, निमित्तज्ञान १२०५ अ, २६१२ ब, १४८१।

अष्टांगहृदयोद्योत—१२०५ अ, आशाधर १२८१ अ, इतिहास १३४४ ब।

अष्टादश—दोषराहित्य ११३७ अ, १२४८ अ, एकट्ठी की सहनानी २२१८ ब, श्रेणी ४७२ अ।

अष्टापद—१२०५ ब।

अष्टाविंशति—कर्म प्रकृति ४८७ ब, ४२७६ अ, मूलगुण ४४०४ अ।

अष्टात्तिक—क्रिया (कृतिकर्म) २१३८ ब, पूजा १२०५ अ, ३७५ ब, व्रत १२०५ ब।

अष्टोत्तरसहस्र—अर्हन्त भगवान के लक्षण ११३८ अ।

असंकुचित विकासत्वशक्ति—१२०५ ब।

असंकुट—२३३३ ब।

अक्षेपाद्धा—१२०५ ब, १४६ ब, आबाधा १२५० ब।

असख्यात—१.२०५ ब, अणु वर्गणा ३.५१३ अ, ३.५१५ व, ३.५१६ अ, अन्त १.५७ व, असख्यात १२०७ अ, कालाणु २८३ ब, २८५ ब, गणित प्रयोगविधि २.२१८ अ, गणित सहनानी २२१६ अ, जघन्य उत्कृष्ट १२०५ व, गुणवृद्धि ४६६ अ, ज्ञानावरण २२७१ अ, द्वीप २४६२ व, भागवृद्धि ४६६ अ, लोक सहनानी २.२१६ अ, वर्षायुष्क १.२५४ अ, १२६१ अ.ब।

असंख्यातासख्यात—१२०७ अ।

असंख्येय—१.२०७ अ, सख्या प्रमाण १२०५ ब, अद्धा १२५६ अ, १२६० ब।

असंख्येयाद्धा—आयुवध १.२५६ अ, ब।

असंख्येयासंख्येय—१२०७ अ, उपमा प्रमाण २२१८ अ।

असग—यदुवश १.३३६।

असज्ञी—१२०७ अ, आयु १.२६४, एकेन्द्रिय जीव १.३०७ अ, जीव २.२३३ ब, जीवसमास २३४३, देवगति की आयु १.३७३ व पचेन्द्रिय ४१२२ ब, प्राण ३.१५३ अ, वचनयोग ३.३८० ब, सक्लेश विशुद्धि स्थानों का अल्पबहुत्व १.१६०, सज्ञी ४.१२२ अ, ४.१२३ अ, सहनानी २.२१६ अ।

असज्ञी (प्ररूपणा)—बध ३१०८, बधस्थान ३.११३, उदय १.३८५, उदयस्थान १.३६३, उदीरणा १४११ अ, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४.३०२, त्रिसयोगी भग १.४०८ अ। सत् ४२६२, संख्या ४.१०६, क्षेत्र २.२०७, स्पर्शन ४४६३, काल २११६, अन्तर १.२१, भाव ३.३२ अ, अल्पबहुत्व १.१५२।

असंचार—१२०७ अ, सचार ४.१२४ ब।

असंदिग्ध—१.२०७ अ, वचन ४३४० अ।

असंप्राप्तसुपाटिकासंहनन—प्रकृति ३८६, २५८३, स्थिति ४४६५, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३१३६। बध ३६७, बध-स्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १४०४, संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व ११६६।

असंबद्धप्रलाप—१.२०७ ब, वचन ३.४६७ ब।

असंभव—१.२०७ ब, लक्षणाभास ३.४०६ ब।

असंभ्रांत—१.२०७ ब, नरक पटल—निर्देश २५७६ ब, विस्तार २५७६ ब, अकन ३४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।

असंमोह—१.२०७ ब।

असयत्—गुणस्थान ३.२४६ ब, संक्रमण ४.८६ अ,

समुद्रात् ४३४३ अ, साधु ४४०७ अ ।

असयतसम्यग्दृष्टि—१२०७ ब, आरोहण अवरोहण २२४७, करण दशक २६, गर्हण २२३८ ब, दर्शन प्रतिमा २४१८ अ, निर्जरा का अल्पबहुत्व ११४१ ब, परिषह ३३४, वेदकसम्यक्त्व २१८५ ब, विशेष दे० 'सम्यग्दृष्टि' ।

असंयतसम्यग्दृष्टि (प्ररूपणा)—बध ३६७, बधस्थान ३१०६, उदय १३७५, उदयस्थान १३६२, उदीरणा १४११अ, उदीरणा स्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४२८८, त्रिसंयोगी भग १४०६ अ । सत् ४१६२, संख्या ४६४, क्षेत्र २१६७, स्पर्शन ४४७७, काल २६६, अन्तर १७, भाव ३२२२ ब, अल्प-बहुत्व ११४३ ।

असयम—१२०७ ब, आहारक शरीर १२६६ अ । प्ररूपणाय—बध ३१०६, बधस्थान ३११३, उदय १३८३, उदयस्थान १३६३ अ, उदीरणा १४११, सत्त्व ४२८४, सत्त्वस्थान ४३०१, ४३०५, त्रिसंयोगी भग १४०७ ब । सत् ४२३८, संख्या ४१०६, क्षेत्र २२०५, स्पर्शन ४४८६, काल २११४, अन्तर ११७, भाव ३२२१ अ, अल्पबहुत्व ११५१ ।

अससार—१२०७ ब, अनुप्रेक्षा १७८ अ, संसार ४१४६ ब ।

असग—१२०७ ब । इतिहास १३३० ब, १३४३ अ ।

असतोपोषकर्म—१२०८ अ, सावद्य ४४२१ अ ।

असत्—१२०७ ब, अनेकान्त ११०६, उत्पाद १३५७ ब, १३५८ ब, ४१५६ ब, उत्पादादि १३५८, १३६०, कार्य १३६२, द्रव्यगुणपर्याय १३६१ ब—३६२ ब ।

असत्ता—सापेक्षधर्म ११०६ अ ।

असत्य—१२०८ अ, अनुभय ३३८० ब, असज्जी ३३८० ब, उपदेश १४२५ अ, कर्ता कर्म २२२ अ, मनोयोग (अप्रमत्त) ३३८० अ, मनोयोग (ध्यानस्थ) ३३८० अ, वचनयोग १२०६ अ, ३४६७ ब, ४२७३ अ, स्वप्न ४५०४ अ, हिंसा १२१७ अ, ४५३२ अ ।

असत्ययोग (प्ररूपणा)—बध ३१०४, बधस्थान ३११३, उदय १३७६, उदयस्थान १३६२ ब, उदीरणा १४११अ, सत्त्व ४२८३, सत्त्वस्थान ४२६६, ४३०५, त्रिसंयोगी भग १४०६ ब । सत् ४२१२, संख्या ४१०२ क्षेत्र २२०२, स्पर्शन ४४८४, काल २१०८, अन्तर ११२, भाव ३२२० ब, अल्पबहुत्व ११४६ ।

असत्यार्थ उपचरित—१४२० अ ।

असत्यासत्य—सत्य ४२७१ अ ।

असत्योपचार—१२०६ अ ।

असत्त्व—विभाव ३५६२ अ, सापेक्षधर्म ११०६ ।

असदृश उत्पाद—३३२ अ ।

असदभावस्थापना—१२०६, अन्तर १३ ब, उपशम १४३७ अ, कर्म २२६ अ, काल २८१ ब, निक्षेप २५१७ ब ।

असद्भूत—१२०६ अ, उपचार १४१६ अ-ब, व्यवहार १४२३ अ, नय २५६१ अ ।

असद्रूप—अनेकान्त ११०६ अ ।

असद्वैद्य—वेदनीय ३५६२ अ ।

असन—अभिनन्दन नाथ २३८३ ।

असम्य—४३४० अ ।

असमपर्यकासन तप—कायक्लेश २४७ ब ।

असमय फलोत्पत्ति—अर्हन्तातिशय ११३७ ब ।

असमवायी—१२०६ अ, कारण ४३३५ ब ।

असमान जातीय द्रव्य पर्याय—३४६ अ ।

असमाधि (दोष)—सल्लेखना ४३६१ ब ।

असमीक्ष्याधिकरण—१२०६ अ, अधिकरण १५० अ ।

असम्यक्—उदाहरण १२०६ अ ।

असर्वगतत्व—१२०६ अ, सर्वगतत्व ४३७६ ब, द्रव्य २४५७ अ, नय २५२३ अ, स्कन्ध ४४४७ अ ।

असवाल—इतिहास १३३३ अ, १३४६ अ ।

असहाय—केवलज्ञान २१५१ अ ।

असही—१२०६ अ, साधु ४४०४ ब ।

असाता—दुःख २४३४ ब ।

असाता वेदनीय प्रकृति—१२०६ अ, केवली २१६० ब, द्विस्थान बंधक ३५६६ ब, बधयोग्य परिणाम ३५६८ ब, वेदनीय ३५६२ अ । प्ररूपणा—प्रकृति ३८८, ३५६१, स्थिति ४४६०, ४४६६, अनुभाग १६५, ४५२७, प्रदेश ३१३६ । बध ३६७, बंध वेदना अल्पबहुत्व ११७६, बधस्थान ३१०८, उदय १३७५, उदयस्थान १३८७, उदीरणा १४११अ, उदीरणा स्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४२८७, त्रिसंयोगी भग १३५६ । सक्रमण ४८५ अ । अल्पबहुत्व ११६८ ।

असाधारण—१२०६ ब, गुण २२४० ब, २२४३ ब, पारिणामिक ३५५ अ, साधारण ४४०२ अ, हेतु ४५३६ अ, हेत्वाभास ४४०२ अ ।

असाम्प्रायादिक—बन्धक ३१७६ अ ।

असाम्यता—१२०६ ब ।

असारगल्ल—३३६१ अ ।

असावद्य कर्मार्य—आर्य १२७५ अ ।

असिकर्म—१२०६ ब ।

असिकर्मार्थ—आर्य १.२७५ अ ।

असिकथ—१ २०६ ब ।

असितपर्वत—१ २०६ ब, विद्याधर नगरी २ ५४५ अ ।

असिद्ध—१ २०६ ब, पक्षाभास १.२०६ ब, हेत्वाभास १ २०६ ब ।

असिपत्र—१ २१० ब, वन—निर्देश २ ५७२ ब, २ ५७३ अ, २ ५७७ अ । वैदिकाभिमत नरक ३ ४३३ ।

असुर—१ २१० ब, नरकों मे दुखदाता २.५७३ अ ।

असुरकुमार—१ २१० ब, भावन देव—निर्देश ३.२०८ अ, इन्द्र ३ २०८ अ, शक्तिद्विह्व आदि ३ २०८ ब, अवस्थान ३ २०६ ब, ३ ४७१, ३ ६१२-६१४ । अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १६८, आयु १ २६५ । भावन लोक ३ २१० ब ।

असुरकुमार देव (प्ररूपणा)—बध ३ १०२, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदय स्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब । सत् ४.१८८, संख्या ४.६७, क्षेत्र २ १६६, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३ २२० ब, अल्प-बहुत्व १ १४५ ।

असुर-धुषण—३ २७५ ब ।

असुर-वनीपाल—१ २१० ब ।

असूत्र—१ २१० ब, तर्कविरुद्ध १ २४६ ब, सूत्र १ २४६ अ ।

असूनृत वचन—असत्य १ २०६ अ ।

असेवक—मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब, सम्यग्दृष्टि ३ ३६६ ब ।

अस्ति—भग ४ ३१८ ब ।

अस्तिकाय—१ २११ अ ।

अस्तित्व—१ २१२ ब, अनेकान्त १ १०६ अ, नय २ ५२२ ब, २ ५२४ अ, सापेक्षधर्म १ १०६ अ, स्याद्वाद ४ ५२० ब ।

अस्तित्व अवबलव्य नय—२ ५२२ ब ।

अस्तित्व नास्तित्व नय—२.५२२ ब, १ २१३ अ ।

अस्तिनास्ति प्रवाद—१.२१३ अ, श्रुतज्ञान ४ ६८ ब ।

अस्तिनास्ति भंग—१ २१३ अ, सप्तभंगी ४ ३२१ अ ।

अस्तेय—१.२१३ अ, अहिंसा १.२१७ अ ।

अस्थि—अनुभाग १ ६१ ब-६३ ब-६४ अ, औदारिक शरीर १.४७२ अ, मान २ ३८ अ ।

अस्थित—२.३३६ अ ।

अस्थिति—४ ४५६ अ ।

अस्थिर—१.२१५ अ, स्थिर ४ ४७० ब ।

अस्थिर नाम कर्मप्रकृति—३ ६६ अ, प्ररूपणा—प्रकृति

३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४.४६७, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३ १३६ । बध ३.६७, बधस्थान ३ ११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २८७, त्रिसंयोगी भग १ ४०४ । सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८ ।

अस्थूण—विनयवादी १ ४६५ अ ।

अस्नात—४ ४७१ ब ।

अस्नान—१ २१५ अ, कायक्लेश २ ४७ ब, मूलगुण ४ ४७१ अ ।

अस्पृश्य—शूद्र ३ ५२५ ब ।

अस्पृहा—उपेक्षा १ ४४४ ब ।

अस्वभाव नय—२ ५२३ ब ।

अहंकार—१ २१५ अ, कर्ताकर्म २ २२-२३, मार्दव ३ २६६ अ ।

अहंक्रिया—१ २१५ ब, अध्यवसान १ ५२ ब ।

अहंप्रत्यय—२.३३६ अ ।

अहंमिद्र—१.२१५ ब, इन्द्र १ २६६ अ । कल्पातीत देव—अवगाहना १ १८१ अ, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६८ । प्ररूपणा—बध ३ १०२, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान ३ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०३ ब । सत् ४.१८८, संख्या ४.६७, क्षेत्र २ १६६, स्पर्शन ४ ४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२०, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

अहह—संख्या प्रमाण २.२१४ ब ।

अहिंसक—अप्रमत्त १ २१६ अ, हिंसक १.२१७ अ, हिंसा १ ११६ अ ।

अहिंसा—१.२१५ ब, हिंसा १ २१६ अ, ब ।

अहिंसाव्रत—अहिंसा १ २१५ ब, १ २१६ ब, चारित्रशुद्धि २ २६४ ब, समिति ४ ३४२ ब ।

अहित—१ २१७ ब, उपदेश १ ४२६ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब ।

अहीन्द्र—१ २१० ब ।

अहीन्द्रवर (द्वीप सागर)—निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३ ४७८, जल कारस ३.४७० अ, ज्योतिष चक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३ ६१४, अंकन ३ ४४३ ।

अहेतुक—रागादि ३ ५६१ अ, सत् ४ १५६ ब, स्वभाव ४.५०७ अ ।

अहेतुमत्—१.२१८ अ ।

अहेतुवाद—३ ८ ब ।

अहेतुसमा जाति—१ २१८ अ ।

अहोरात्र—१ २१८ अ, कालप्रमाण २.२१६ अ, ब ।

आ

आंचलिक गच्छ—४ ७७ ब ।

आँत—१ २१८ अ, औदारिक शरीर १ ४७२ अ ।

आँतरा—१ २१८ अ ।

आंदोलन करण—१ २१८ अ, अश्वकर्ण करण १ २०४ अ ।

आंध्र—१ २१८ अ, मनुष्य लोक ३ २७५ ब ।

आंध्र वंश—१ २१८ अ ।

आंवली (आहार)—१ २१८ अ ।

आसिक—१ २१८ ब, मनुष्य लोक ३ २७५ अ ।

आ—१ २१८ अ ।

आउ—कालप्रमाण २ २१६ अ ।

आउ अंग—कालप्रमाण २ २१६ अ ।

आकषित—१ २१८ अ, आलोचना १ २७७ ब ।

आकर—१ २१८ अ ।

आकर्षण—ध्यान २ ४६७ अ, मन्त्र ३ २४५ ब ।

आकस्मिक—भय १ २१८ ब, ३.२०६ अ, भीति ३ २०६ ब ।

आकांक्षा—अनुराग ३ ४८४ ब, अभिलाषा १ २१८ ब ।

१ १३० ब, उपदेश १ ४२४ ब, ममेद बुद्धि ३ ५३२ ब,

सम्यग्दृष्टि ३ ४०० अ ।

आकार—१ २१८ ब, इन्द्रिय १ ३०५ ब, औदारिक शरीर १ ४७१ ब, गुण २ २४२ ब, परमाणु ३ १७ ब, विग्रह गति १ २४७ अ ।

आकाश—१ २१६ ब, अनुभाग १ ८८ अ, उत्पादादि १.३६२ ब, उपकार २ ६३ ब, गति ३ ५७३ ब, प्रदेश श्रेणी ४ ७२ ब, भूत १ २२४ ब, ३ २३४ अ, मण्डल १ २२० ब, स्वभाव ४ ५०६ ब, अल्पबहुत्व १.१४३ अ ।

आकाशगता चूलिका—१.२२४ ब, श्रुतज्ञान ४ ६६ अ ।

आकाश गमन—अर्हन्तातिशय १ १३७ ब ।

आकाशगामित्व ऋद्धि—१.२२४ ब, ऋद्धि १.४४७, ४५१ ब, ४५२ अ ।

आकाशचारण ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५२ अ ।

आकाशनर्मल्य—अर्हन्तातिशय १.१३७ ब ।

आकाशप्रदेशराशि—२ २१६ अ, श्रेणी ४.७२ ब ।

आकाशोपपन्न देव—निर्देश २ ४४५ ब, आयु १ २६४ ब ।

आकिञ्चन्य—धर्म १ २२४ ब, परिग्रह ३ २६ ब, शीघ्र ४ ४३ अ ।

आकृति—१ २२५ अ, गुण २ २४० अ ।

आक्रन्दन—१ २२५ अ ।

आक्रोश—१ २२५ अ, परिग्रह ३ ३३ ब, ३ ३४ अ ।

आक्षेपिणीकथा—१ २२५ अ, उपदेश १.४२५ अ, १ ४२६ अ, कथा २ २ ब ।

आखेट—१ २२५ अ ।

आगत—आगम प्रामाण्य १ २३५ ब ।

आगम—१.२२५ ब, अनुयोग चतुष्टय १ ६६ ब, अभ्यास ४ ५२३ ब, अर्वाचीन पुरुष १.२३६ ब, अरपता १.२२८ ब, नय १ २३६ अ, निक्षेप २ ६०५ ब, पट्टति १ २३६ ब, ३ ८ ब, प्रामाण्य १.८२ ब, १.२३४ ब, भावना ३ ८ ब, सकलन १.२६६ ब, स्वाध्याय ४ ५२४ ब ।

आगमज्ञ—श्रुतकेवली ४.५५ ब, ४.५७ अ ।

आगमज्ञान—२.२६८ ब, अकिञ्चित्कर २ २६५, २.२६७ ब, आत्मज्ञान २.२६५, २ २६७ ब, केवलज्ञान २.१५० ब, सम्यग्ज्ञान २ २६८ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५४ ब, ४ ३५६ अ ।

आगमचक्षु—१ ७८ अ, श्रुतज्ञान ४ ६३ अ, सासादन ४ ५२४ ब ।

आगमद्रव्यनिक्षेप—अन्तर १.३ ब, अनन्त १ ५५ ब, उपशम १ ४३७ अ, काल २ ८१ ब, निक्षेप २.५६६ ब ।

आगमन—१ २३६ ब ।

आगम परपरा—इतिहास १ ३४० ।

आगमप्रमाण—१.२३४ ब, अर्थ-शब्द सम्बन्ध १ २३३ अ, आचार्य वचन १.२३७ अ, आप्त वचन १ २३४ ब, छद्मस्थ ज्ञान १ २३७ ब, जिन वचन १.२३८ अ, तर्कसंगत १.२३६ अ, परम्परा से आगत १.२३५ ब, पूर्वापर अविरोध १ २३६ अ, पौरुषेय १.२३८ अ, प्रत्यक्ष ज्ञानी १ २३५ ब, वचन-वक्ता सम्बन्ध १.२३४ ब, वाच्य-वाचक सम्बन्ध १.२३३ अ, वीतराग वचन १ २३५ अ, शब्द-अर्थ सम्बन्ध १.२३४ अ, सूत्र वचन १ २३२ ब, सूत्र अविरोध वचन १ २३८ अ, सूत्रसम वचन १ २३५ ब ।

आगमबाधित—१ २३६ ब, बाधित ३.१६२ ब ।

आगमभावनिक्षेप—अन्तर १ ३ ब, अनन्त १.५६ अ, उपशम १ ४३७ अ, कर्म २ २६ अ, जीव २ ६०५ ब,

बन्धक ३.१७६ अ, मंगल २.६०५ व।

आगमाभास—१ २३६ ब, आगम १.२२८ अ।

आगमार्थ—१ २३०, आगम १.२३० ब।

आगमिक गच्छ—४.७७ ब।

आग्नेय—१ २३६ ब।

आग्नेयी धारणा—१ २३६ ब, अग्नि १ ३६ अ।

आचण्ण (कवि)—इतिहास १ ३३२ अ।

आचरण—वर्ण-व्यवस्था ३.५२४ ब।

आचरित—१.२३६ ब, वसतिका दोष ३.५२६ अ।

आचासल (आहार)—१ २३६ ब, कायक्लेश २ ४७ अ, सल्लेखना ४ ३६२ ब-३६३ ब।

आचासलवर्धन—१.२३६ ब, सौवीर भुक्ति ४ ४४५ ब।

आचार—१ २४० अ, वर्णव्यवस्था ३ ५२४ ब, विनय ३ ५५० ब। शास्त्र ४ ३६४ ब।

आचारवर्द्धन व्रत—१ २४१ अ।

आचारसार—१ २४६ अ, इतिहास १ ३३१ ब, १.३४४ अ।

आचारांग—१ २४१ अ, श्रुतज्ञान ४ ६८ अ।

आचारांगधर—मूलसंघ १.३६६, १ परि०/२२।

आचार्य—१.२४१ अ, आलोचना १ २७८ अ, उपकार १ ४६६ अ, उपाध्याय १ ४४४ अ, ओम् १ ४६६ ब, कृतिकर्म २ १३७-१३८ १३६ ब, क्षपक ४ ३६१ अ, गुरु २.२५१ ब, २५२ ब-२५३ ब-चैत्य (प्रतिमा) २ ३०१ अ, देवत्व २ ४४४ ब, ध्येय २.५०१ अ, निष्पक्षता १.२३६ अ, पदत्याग २ १३८ ब, ४ ३६१ अ, पापभीरु १.२३२ अ, पूजा ३.७७ अ, भक्ति ३ २०६ ब, वचन प्रामाण्य १.२३७ ब, साधु ४.४१० अ, स्वर्गवास ४.५२६ अ।

आचार्यपद-प्रतिष्ठापन-क्रिया—२.१३८ ब।

आचार्य परम्परा—इतिहास १ ३२८-३३४।

आचार्य भक्ति—इतिहास १.३४० ब।

आचार्य वन्दना—कृतिकर्म २.१३७ ब-१३८ ब-१३६ ब।

आचिन्न (दोष)—आहार १ २६० ब।

आचिन्न अभिघट्ट (दोष)—आहार १.२६० ब, उद्दिष्ट १.४६३ अ।

आचेलकथ—१.२४३ अ, अचेलकत्व १ ४० अ।

आछेद्य (दोष)—१ २४३ अ, आहार १.२६१ अ, उद्दिष्ट १.४१३ अ।

आजीव (दोष)—१.२४३ अ, आहार १ २६१ अ वसतिका ३.५२६ ब।

आजीवक—१.२४३ अ, एकात १.४६४ ब।

आजीविका—१ २४३ अ, साधु के लिए निषेध ३.२४५ ब।

आज्ञा—१.२३६ ब, ध्येय २.५०० अ, प्रमाण ४.४६ अ,

रुचि ४.४६ अ, श्रद्धान ४.४४ ब, सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब।

आज्ञा कनिष्ठता—१.२६६ अ।

आज्ञाचक्र—पदस्थध्यान (ललाट) ३.६ ब।

आज्ञापनी भाषा—१.२३६ ब, भाषा ३.२२७ अ।

आज्ञाविचय—१.२३६ ब, धर्मध्यान २.४७६ अ।

आज्ञाव्यापादिकी क्रिया—१ २३६ ब, क्रिया २ १७४ ब।

आज्ञा सम्यक्त्व—१ २३६ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३४८ ब।

आज्ञा सम्यक्त्वार्थ—१ २७५ अ।

आठवीं पृथिवी—१ २०५, भूमि ३ २३४, मोक्ष ३ ३२३ ब, ३.३२४ अ, समुद्रघात ४.४२५ अ।

आढक—१ २४३ अ, तौल का प्रमाण १.४७२ अ, २ २१५।

आतप—१.२४३ अ, एकेन्द्रिय १ ३६३।

आतप (नामकर्म प्रकृति)—प्ररूपणाएँ—प्रकृति ३ ८६, २.५८३ अ, स्थिति ४.४६५, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.६५ ब, ३.६७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १.३७३, १.३७५, उदयस्थान १ ३६०, १.३६३, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व, ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४। सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१७१ ब।

आतपन—१.२४३ ब, नरक पटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २ ५७६ ब, अकन ३.४४१। नारकी—अव-गाहना १.१७८, आयु १.२६३।

आतापन योग—१.२४३ ब, अतिचार २.४७ ब, कायक्लेश २ ४६ ब, २.४७ अ-ब, २.४८ अ।

आत्म—१.२४३ ब।

आत्महत्याति—अमृतचन्द्र १.१३३ अ, इतिहास १.३४२ अ।

आत्मज्ञ—श्रुतकेवली ४ ५५ ब, ४.५७ अ।

आत्मज्ञान—आगमज्ञान २.२६५ ब, २.२६७ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५४ ब, ४.३५६ अ-ब।

आत्मघात—दे० आत्महत्या।

आत्मतत्त्व—ज्ञान २.६२ ब, श्रद्धान २.२६२ ब।

आत्मदर्शन—मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब, समाधि १ ८३ ब।

आत्मद्रव्य—१ २४३ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ, जीव २.३३२ अ।

आत्मध्यान—अनुभव १.८४-८५, प्रतीति ३.३३६ अ, प्रत्यक्ष १ ८१ ब-८६, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५, शुद्धो-पयोग १.४३१ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३५१ ब। संविति ३.३३६ अ।

आत्मनिन्दन—उपयोग १.४३४, सम्यग्दृष्टि ४.३७८ ब।

आत्मनिष्ठ—३.३०५ ब, ३.३३६ ब।

आत्मपरिणाम—(दे० जीवपरिणाम)।

आत्मप्रतीति—३ ३३६ अ ।

आत्मप्रत्यक्ष—१ ८१ ब-८६ ।

आत्मप्रवेश—परिस्पन्दन ३.३७५ अ, मन ३ २७१ अ,
शरीर मे बाहर निर्गमन ४.३४२ ब ।

आत्मप्रभावना—३.१३६ ब ।

आत्मप्रवाद—१ २४३ ब, श्रुतज्ञान ४ ६६ अ ।

आत्मप्रशंता—२.५८७ ब ।

आत्मभूत—१ २४३ ब, कारण २ ५४ अ, लक्षण
३ ४०६ ब ।

आत्ममुख (हेत्वाभास)—१.२४३ ब ।

आत्मयज्ञ—१.३५ ब, ३.३६६ ब ।

आत्मरक्ष—१ २४३ बा ज्योतिषी देव—निर्देश २ ३४६ अ ।

भवनवासी देव—निर्देश ३ २०६ अ, जम्बू शालमली वृक्ष-
स्थल मे ३.४५८-४५९, पद्म आदि हृदो मे ३ ४५३-
४५४, आयु १ २६५, व्यन्तर—निर्देश ३.६१३ ब, आयु
१.२६४, वैमानिक—निर्देश ४.५१२, सुमेरु पर्वत
की पुष्करिणियो मे ३ ४५०-४५१, आयु १.२६६ ।
देवी—गणना ४ ५१३, आयु १ २७० ।

आत्मरक्षित—३ ४६३ ब ।

आत्मरूप—सप्तभगी ४.३२४ ब, ४ ३२५ ब ।

आत्मवश—४ ५२२ अ ।

आत्मवाद—१ २४३ ब, एकान्त १.४६५ अ ।

आत्मव्यवहार—१ २४४ अ, मिथ्यादृष्टि ३.३०४ अ ।

आत्मश्रद्धान—मिथ्यादृष्टि ३.३०५ अ ।

आत्मसंबोधन—इतिहास १ ३४६ अ ।

आत्मसंविति—३.३३६ अ ।

आत्मसंस्कार—१.२४४ अ, उपकार १.४१५ ब, काल
२ ८० ब, संस्कार ४.१४६ ब ।

आत्मसमाधि—१ ८३ ब ।

आत्मसमुत्थ (दोष)—भिक्षा ३.२३३ अ ।

आत्मसात्—२ २७४ अ ।

आत्मसुख—अनुभव १.८१-८५ अ ।

आत्मस्वभाव—स्थैर्य ४.४१५ ब ।

आत्मस्वरूप—अनुभव ४ ४३४ अ, प्राप्ति ३.३३६ अ,
लीनता ४ ४१५ ब ।

आत्महत्या—१ २४४ अ, आयु-अपवर्तन १.११७ ब,
१ २६१, दोष (सल्लेखना) ४ ३८२ ब, सल्लेखना
४.३८२ ब, ४.३८३ ब ।

आत्महनन—कषाय २.३५ अ ।

आत्महित—४.५३७ अ ।

आत्मांगुल—१.२४४ अ, उपमा प्रमाण २ २१८ अ, क्षेत्र
प्रमाण २.२१५ अ ।

आत्मांजन—१ २४४ अ । वक्षार गिरि—निर्देश ३.४६० अ,
नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५-
अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७५ । इस
पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार
३.४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३.४४४ ।

आत्मा—१ २४४ अ, अग्र १ ३६ अ, आस्रव २ ४६१ अ,
ईश्वर ३.२० ब, कर्ता १.४३४ ब, गुरु २ २५२ अ,
ज्ञान २.२६५, २ २६७ अ-ब, जीव २.३३२ अ,
२.३३३ अ, २ ३३५ अ, तल्लीनता ३ ३३६ अ,
४.४१५ अ, द्रव्यास्रव २.४६१ अ, ध्यान ३ ५७ ब,
ध्येय २.५०१ ब, नैयायिक दर्शन २ ६३३ ब, पंच
परमेष्ठी ३.२३ अ, परमात्मा ३ २० अ, प्रभु ३ १४०
अ, प्रामाण्य ३ १४२ अ, श्रमण २ ८६ अ, श्रुतज्ञान
४ ६० अ ।

आत्माधीनता—२४५ अ, कर्म २ २६ अ, कृति-कर्म
२ १३६ ब, वदना ३ ४६५ ब ।

आत्मानुभव—१ २४५ अ, अनुभव १ ८६ अ, १.८१ ब-
८७ अ, अनुभूति १.८१-८७ अ, उपलब्धि १.४३५ अ,
ज्ञान १.८४ ब, ४.३५२ ब, तत्त्वश्रद्धान १.८२ ब,
प्रतीति ३ ३३६ अ, प्रत्यक्ष १.८१-८७ अ, बोधि
१ ८७ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ अ, शुद्धोपयोग १ ४३१
अ, श्रद्धान १ ८२ ब, सवित्ति ३.३३६ अ, सम्यग्दृष्टि
४.३५३ अ-ब, सुख ४ ४३१ ब ।

आत्मानुशासन—१ २४५ अ, इतिहास १ ३४१-३४२ अ ।

आत्माश्रय (दोष)—१ २४५ अ ।

आत्मिक सुख—४.४३१ ब, ४.४३३ ब ।

आत्मीय स्वरूप ४ ३२४ अ ।

आत्मोत्पन्न—४.४२६ ब ।

आत्मोपलब्धि—१.४३५ ब ।

आत्रेय—१ २४५ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ, वेदान्त
३.५६५ ब ।

आदर—१ २४५ अ, विनय ३.५५२ ब, जम्बूवृक्ष का
देव—निर्देश ३ ४५८ अ, ३.६१३, ३.६१४ ।

आदाननिक्षेपण—१ २४५ अ, अहिंसा १ २१६ अ, समिति
४ ३४१ अ ।

आदानपद—उपक्रम १.४१६ ब, पद ३ ५ अ ।

आदि—१.२४५ अ, परमाणु ३.१६ ब, श्रेणी गणित
२.२२६ ब, २.२३० ब ।

आदितोर्थ—कृतिकर्म २ १३४ ब, प्रतिक्रमण ३.११७ अ ।

आदित्य—१.२४५ अ, लौकान्तिक देव ३.४६३ ब, विद्या
३ ५४४ अ । अनुदिश स्वर्ग का इन्द्रक—निर्देश
४.५१८, विस्तार ४.५१८, अंकन ४.५१५-५१७ ।

आदित्यगति—राक्षसवश १ ३३८ अ ।

आदित्यनगर—१.२४५ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब ।

आदित्यप्रभ—१ २०५ अ ।

आदिधन—१.२४५ अ, श्रेणी गणित २.२२६ ब ।

आदिनाथ—१ २४५ ब, तीर्थंकर २ ३७८, केशलौच २ १७० अ, ऋषभनाथ १ ४५७ ब ।

आदिनाथ जयन्ती व्रत—१.२४५ ब ।

आदिनाथ निर्वाणोत्सव व्रत—१ २४५ ब ।

आदिनाथ शासन जयन्ती व्रत—१.२४५ ब ।

आदिपुराण—१ २४५ ब । इतिहास—प्र० १.३४३ अ, द्वि० १.३४५ ब, तृ० १ ३३४ अ ।

आदिपुरुष—१.२४५ ब, ऋषभनाथ १ ४५७ ब ।

आदिब्रह्मा—१.२४५ ब, ऋषभनाथ १ ४५७ ब ।

आदिमान—३.३१ ब ।

आदिलिगव्यभिचार—शब्दनय २ ५३७ ब ।

आदेयनाम कर्मप्रकृति—१.२४५ ब । प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३ अ, स्थिति ४ ४६७, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३ १३६ । बन्ध ३.६६ अ, ३ ६७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १.३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २८७, त्रिसंयोगी भग १ ४०४ । संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८ ।

आदेश—१.२४५ ब, अनुयोगद्वार १.१०२ अ, उद्दिष्ट १.४१३ अ, उपदेश १.४२४ ब, साधु ४ ४०६ ब ।

आदेशकषाय—कषाय २.३५ ब, २.३६ अ, ब, स्थापना कषाय २ ३७ ब ।

आदेशप्ररूपणा—अनुयोगद्वार १.१०३ ब । जीव सामान्य—सत् ४.१६५, सख्या ४.६५, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४.४७६, काल २.१०१, अन्तर १ ८, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४, भागाभाग ४ ११० । शरीर स्वामित्व—सत् ४ ७, क्षेत्र २.२०८, स्पर्शन ४ ४६४, भाव ३.२२३, अल्पबहुत्व १.१५६ । सघातन परि-
शातन कृति—सत् ४.२६६, संख्या ४.११६, क्षेत्र २.३०८, स्पर्शन ४.४६४, भाव ३ २२३, षट् कर्म स्वामित्व ४.२६६, बधप्रत्यय स्वामित्व ३ १२८ अ ।

आदेशप्ररूपणा (बन्ध-उदय सत्त्व)—बध ३ १००, बध-स्थान १.४३८, ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १.३६२ ब, सत्त्व ४.२८१, ४.२८५, सत्त्वस्थान ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब । अनुभाग अल्प-बहुत्व १.१६७ ।

आदेशप्ररूपणा (स्वामित्व सन्निकर्ष)—प्रकृति-स्थिति-अनुभाग-प्रदेश ३.११४-४.३१०, ४.५२७-५.२८८

५.२६ । बन्ध, उदय, सत्त्व तथा इनके स्थान—२ ३ ११४, ४.३१०, ४.५२७-५.२८-५.२६, सख्या ४.११७, क्षेत्र २ २०८, स्पर्शन ४.४६४, काल २ १२१-१२२-१२३, ४.५२७, अन्तर १.२३, भाव ३ २२३, अल्पबहुत्व १ ७५, ४ ४६६, ४ ५२७, भागाभाग ३ २१५ ४ ११७, ४ ५२७ ।

आद्या—१.२४६ अ ।

आद्यन्तमरण—१ २४६ अ, मरण ३ २८१ ब ।

आधाकम्म (दोष)—आहार १.२८७ ब, २६० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ ।

आधान क्रिया—४.१५१ अ ।

आधार—१ २४६ अ, आकाश १.२२१ अ ।

आधार आधेयसम्बन्ध—उपचार १.४२० ब, कारक २.५० अ, सम्बन्ध ४ १२६ अ ।

आधारवत्त्व—१.२४६ अ ।

आधिकारिणी क्रिया—२.१७४ ब ।

आधी मागधी भाषा—२.४३२ अ ।

आधुनिक भूगोल—निर्देश ३.४३५ ब ।

आधेय-आधार सम्बन्ध—उपचार १.४२० ब, कारक २.५० अ, सम्बन्ध ४.१२६ अ ।

आध्यात्मिक—धर्मध्यान २ ४७६ अ, १.४८१ अ, नास्तिक्य २.५८५ ब, शुक्लध्यान ४ ३२ ब, सुख ४.४३१ ब ।

आध्यान—१ २४६ अ, अपध्यान १.११८ ब, ध्यान २ ४६६ अ ।

आनंद—१.२४६ अ, अनुत्तरोपपादक दशांग १.५०, आत्मानुभव १.८१ ब-८५, पार्श्वनाथ ३ ३७८, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ, सुख ४.३३१ ब-४३२ ब ।

आनंद (कूट)—गन्धमादन गजदन्त—निर्देश ३.४७३ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४, ३.४५७ ।

आनंद पाहुड—३ १५६ ब ।

आनंदपुर—४ १६ ब ।

आनंदबोध—३ ५६५ ब ।

आनंदवती—४.१८ ब ।

आनंदवर्धन—१.२४६ ब ।

आनंदा—१.२४ ब, नन्दीश्वर द्वीप को वानी—निर्देश ३ ४६३ अ, नाम ३.४७५ ब, विस्तार ३.४६१ अकन ३ ४६५ । रुक्कवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३.४६८ ।

आनंदिता—१.२४६ ब । व्यन्तर बल्लभिका ३ ६११ ब, व्यन्तर गणिका ३.६११ ब, नन्दन वन की दिक्कुमारी ३.४७३ ।

आनंदिनी—४.१५ ब ।

आनत (देव)—देव—निर्देश ४.५१० ब, अवगाहना १.१८१ अ, अवधिज्ञान १.१६८ ब, आयु १.२६८, आयुबन्ध के योग्य रिणाम १.२५८ अ। इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब, दक्षिणेन्द्र ४.५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, चिन्ह आदि ४.५११ ब, अवस्थान ४.५२० ब, विमान नगर व भवन ४.५२०-५२१।

आनत (देवप्ररूपणा)—बध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०१। सत् ४.१६२, सख्या ४.६८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०६, भाव ३.२२७ ब, अल्पबहुत्व १.१४५ अ।

आनत (स्वर्ग)—स्वर्ग—निर्देश ४.५१४ ब, पटल इन्द्रक श्रेणीबद्ध ४.५१८, ४.५२०, दक्षिण विभाग ४.५२० ब, अकन ४.५१५। इसी स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८, अकन ४.५१५।

आनपान—१.२४६ ब, उच्छ्वास १.३५२ ब, काल का प्रमाण २.२१६ अ, प्राण ३.१५३ अ।

आनपान पर्याप्ति—३.४१ अ, काल २.८१ अ।

आनयन—१.२४६ ब।

आनर्थक्य—१.२४६ ब।

आनुपूर्वी—१.२४६ ब, उपक्रम १.४१६ ब, श्रुतज्ञान ४.६७ ब।

आनुपूर्वी नामकर्म प्रकृति—१.२४७ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३ अ, स्थिति ४.४६५, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.६७, बधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३७२ ब, १.३७३ ब, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्व स्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भंग १.४०४। सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८, १.१७६।

आपात (अतिचार)—१.२४७ ब, अतिचार १.४३ ब।

आपृच्छना—१.२४७ ब। समाचार ४.३३६ ब-३.३७ अ।

आपृच्छा—समाचार ४.३३६ ब-३.३७ अ।

आपेक्षिक—गुण १.२४७ ब, सूक्ष्मत्व ४.४३८ ब, ४.४३६ अ, स्वभाव ४.५०६।

आप्त—१.२४७ ब, आगम १.२३५ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५६ अ।

आप्तपरीक्षा—१.२४८ अ, इतिहास १.३४१ ब।

आप्तमीमांसा—१.२४८ अ, इतिहास १.३४० ब।

आप्तमीमांसा टीका—इतिहास १.३४१ ब।

आप्तमीमांसा वचनिका—इतिहास १.३४८ अ।

आप्तमीमांसा विवृति—इतिहास १.३२६ ब।

आप्तवचन—प्रामाण्य १.२३५ ब। सूत्र १.२३६ अ।

आप्ताज्ञा—आगम १.२२७ ब।

आबाधा—१.२४८ अ। मूलोत्तर प्रकृति १.२४६ अ, ४.४६०, अल्पबहुत्व १.१७६। काण्डक १.२४८ ब, काल १.२४८ अ, स्थान १.२४८ ब।

आबिद्धकरण—देशीयगण १.३२५।

आभिनिबोधक ज्ञान—१.१३० अ, उपक्रम १.४१६ ब।

आभियोग्य (वेव)—निर्देश २.४४५ ब, मध्यलोक मे ३.६१३ अ, आयुबध योग्य परिणाम १.२५८ अ।

आभीर—३.२७५ अ।

आभ्यन्तर—उपाधि १.४२७ अ, ३.६२३ ब, करण (निमित्त) २.६११ ब, कषाय २.३५ ब, कारण २.५४ अ, २.६२ अ-ब, २.७२ ब, ग्रन्थ (परिग्रह) ३.२८ अ, तप २.३५६ अ, २.३६१, तपःकर्म २.२६ अ, त्याग ३.२६ ब, धर्मध्यान २.४८१ अ, निमित्त ३.६०२ ब, नेत्र (उपयोग) २.४६८ ब, परिग्रह ३.२८ अ, १.४२७ अ, ३.६२३ ब, पारिषद देव ३.५६ अ, प्रत्यय ३.१२५ ब, मल ३.२८८ अ, व्यास २.२२२ ब, व्युत्सर्ग ३.६२३ ब, सल्लेखना ४.३८२ अ, ४.३८३ अ, सूची २.२३३ ब, हेतु (कारण) २.५४ अ, २.६२ अ-ब, २.७२ ब।

आमंत्रणी—१.२५० ब, भाषा ३.२२७ अ।

आमर्षोषध—१.२५० ब, ऋद्धि १.४४७, १.४५५ अ।

आमाशय—औदारिक शरीर १.४७२ अ।

आमुंडा—१.२५० ब।

आम्नाय—१.२५१ अ।

आम्न—अरनाथ २.३८३।

आम्नवन—शान्तिनाथ २.३८३, भावन लोक ३.२१० ब, व्यन्तर लोक ३.६१२ ब, नन्दीश्वर द्वीप ३.४६६ अ।

आय—१.२५१ अ, गुणस्थान ३.१६७ ब, वर्गीकरण २.४२८ अ, सामायिक ४.४१४ ब, ४.४१५ अ।

आय-ज्ञान—इतिहास १.३४२ ब।

आयत—१.२५१ अ। विशेष ३.४७ अ, सामान्य २.१७२ ब, २.४५४ अ।

आयतन—१.२५१ अ।

आयापाय दर्शनोद्योत—आचार्य १.२४२ अ, आयोपाय १.२७० अ।

आयाम—१.२५१ ब, उदय १.३७१ अ, गुण हानि २.२३१ ब, काण्डक २.४१ ब, निर्वर्गण २.६२६ अ।

आयु—१.२५१ ब, अकालमृत्यु (मरण) ३.२८५ अ,

अपकर्षकाल का अल्पबहुत्व ११७३ अ, करण दशक २६ अ, मरण ३२८२ अ, ब ।

आयुर्कर्म प्रकृति—अपकर्षकाल का अल्पबहुत्व, १.१७३ अ, आबाधा १.२४६ अ, १.२५० अ । प्ररूपणा—प्रकृति ३८८, १.२५३, स्थिति ४४६२, स्थितिघात १.११७ अ, अनुभाग १.६५, अनुभाग का अल्पबहुत्व १.१६६ ब, प्रदेश ३.१३६, बध ३.६७, बधस्थान ३.१०८, उदय १.३७५, उदय के निमित्त १.३६७ ब, उदय की विशेषता १.३७२ ब, उदयस्थान १.३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६४, त्रिसयोगी भग १.४०१ । संक्रमण ४.८५ अ, ४.८६ अ, अल्पबहुत्व १.१६६ ।

आयुध—नरक २.५७४ अ ।

आयुधशाला—चक्रवर्ती ४.१५ ब ।

आयुष्य—१.२५३ अ ।

आयोधन—हरिवंश १.३३६ ब ।

आयोध्य—४.१३ अ ।

आयोपाय—१.२७० अ ।

आरंभ—१.२७० ब, उपदेश १.६३ अ, अधकर्म १.४८ अ, कर्म २.२६ अ, ब । क्रिया १.२७० ब, त्याग १.२७० ब, दोष २.२६ ब ।

आरंभकोपदेश—अनर्थदण्ड १.६३ अ ।

आरंभत्याग प्रतिमा—१.२७० ब ।

आर—१.२७१ अ । नरक-पटल—निर्देश २.५७१ ब, विस्तार २.५७१ ब, अकन ३.४४१, नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

आरट्ट—१.२७१ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

आरण (देव)—१.२७१ अ, देव—निर्देश ४.५१० ब, अवगाहना १.१८१ अ, अवधिज्ञान १.१६८ ब, आयु १.२६८, आयुबंध के योग्य परिणाम १.२५८ ब । इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब, दक्षिणेन्द्र ४.५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, चिह्न आदि ४.५११ ब, अवस्थान ४.५२० ब, विमान नगर व भवन ४.५२०-५२१ ।

आरण (देव प्ररूपणा)—बध ३.१०२, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३६८, उदयस्थान १.३६२ ब । उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१६२, सख्या ४.६८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अंतर १.१०, भाव ३.२२० ब, अल्प-बहुत्व १.१४५ अ ।

आरण (स्वर्ग)—स्वर्ग—निर्देश ४.५१४ ब, पटल इन्द्रक श्रेणीबद्ध ४.५१८, ४.५२०, दक्षिण विभाग ४.५२० ब, अकन ४.४१५ । इसी स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५८८, विस्तार ४.५१८, अकन ४.५१५ ।

आरा—नरक पटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

आरातीय—१.२७१ अ, वक्ता ३.४६६ ब ।

आराधक—१.२७१ ब ।

आराधना—१.२७१ अ, भक्ति ३.१६७ ब, सल्लेखना ४.३८५ ब, ३.८६ अ, ३.८६ अ, ३.६४ अ ।

आराधना—इतिहास १.३४३ अ, १.३४६ अ ।

आराधना कथाकोष—१.३७१ ब, कथाकोष २.३ ब, इतिहास १.३४६ ब ।

आराधना पंजिका—१.२७१ ब ।

आराधना-संग्रह—१.२७१ ब ।

आराधना सार—१.२७१ ब । इतिहास १.३४२ ब ।

आराधना सार समुच्चय—इतिहास १.३४४ ब ।

आराधित—१.२७१ अ ।

आराम—३.५२८ अ ।

आरोग्य—३.४६२ ब ।

आरोप—उपचार १.४१६ ब ।

आरोहक—१.२७२ अ, श्रेणी के कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१ ब ।

आरोहण—गुणस्थान २.२४७ अ ।

आर्जव—१.२७२ अ, माया ४.१३१ ब, शुभोपयोग १.४३४ ब ।

आर्त्त—१.२७२ ब, अतिचार १.४३ ब, १.२७२ ब, ध्यान १.२७२ ब ।

आर्त्तध्यान—१.२७२ ब, अशुभोपयोग १.४३३ ब, त्याग ४.४१७ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७६ अ, ४.३७७ ब, ध्यान २.४६७ अ, साधु ४.१३२ अ ।

आर्त्त परिणाम—१.२७४ ब, आर्त्तध्यान १.२७२ ब ।

आर्द्रा—नक्षत्र १.२७४ ब, रुद्र २.५०४ ब ।

आर्य—१.२७४ ब, भोगभूमि ३.५२२ अ, मनुष्य ३.२७३ ब, वर्ण व्यवस्था ३.५२२ ब, विद्या ३.५४४ अ, विद्याधर १.३३६ अ, सत्प्ररूपणा ४.१८४, हरिवंश का राजा १.३३६ ब ।

आर्यक—मगधदेश का राजा १.३१२ ।

आर्य कूष्मांड देवी—१.२७५ अ, विद्या ३.५४४ अ ।

आर्यखंड—१.२७५ अ, निर्देश ३.४४६ अ, विदेहस्थ ३.४६० अ, गणना ३.४४५ अ, अंकन ३.४५७, ३.४६४ के सामने । काल-विभाग २.६२ अ, २.६३ ।

आर्यनंदि—१ २७५ ब, पचस्तूप सघ १-३२६ ब, इतिहास १-३२६ ब ।

आर्यमंथु—१ २७५ ब, मूलसघ १ ३३२ ब, १. परि०/ २-१, ३ १-३ । इतिहास १-३२८ ब ।

आर्यवती—१ २७५ ब, विद्या ३.५४४ अ ।

आर्यसेन—सेनसघ १-३२६ अ ।

आर्यिका—१-२७५ ब, उपवार १.४१६ अ, कल्की २ ३१ ब, गुरु २ २५३ ब, तीर्थंकर संघ २ ३८७, महाव्रत ३.५८६ ब, लिग ३.४१७ अ, वस्त्र १ ४० ब, सगति ४.११६ ब, साधु ४.१२० अ ।

आर्यिका संघ—कल्की २.३१ ब, तीर्थंकर सघ २.३८८ ।

आर्ययज्ञ—३.३६६ ब ।

आर्य वचन—आगम परम्परा १ २३४ ब ।

आहन्त्य क्रिया—संस्कार ४.१५२ अ, ४.१५३ अ ।

आलब्ध—१-२७६ अ, व्युत्सर्ग दोष १.६२३ अ ।

आलय—१-२७६ अ ।

आलयांग—१ २७६ अ, कल्पवृक्ष ३ ५७८ अ ।

आलाप—१-२७६ अ, अक्षसचार गणित .२२६ अ ।

आलापन बंध—१-२७६ अ, नोकर्म बंध ३.१७० ब ।

आलाप पद्धति—१-२७६ अ, इतिहास १.३४२ ब ।

आलुच्छन—१-२७६ अ, आलोचना १ २७६ ब ।

आलेखित—२.४६६ ब ।

आलेख्याकार—केवलज्ञान २ १४६ ब ।

आलेपन—१-२७६ ब, बंध ३ १७० अ ।

आलोक—१-२७६ ब ।

आलोकन वृत्ति—२.४०६ ब ।

आलोकितपान भोजन—अहिंसा १.२१६ अ, रात्रिभोजन ३.४०२ ब ।

आलोचन—आलोचना १-२७६ ब, दर्शन १ ४६ ब, २.४०६ ब ।

आलोचना—१ २७६ ब, प्रतिक्रमण ३.११७ अ, प्रायश्चित्त ३ १५६ ब, १६० ब, वन्दना ३.४६५ ब, शुद्धि ४.४१ अ, सल्लेखना ४.३६० ब, ४.३६१ ब ।

आवरण—१ २७८ ब, ज्ञान २.२७२ ब ।

आवर्जित करण—१-२७८ ब ।

आवर्त—१-२७६ अ, कर्म २.२६ अ, कृतिकर्म २ १३३ ब, २.१३४ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब, राक्षसवश १.३३८ अ, वदना ३.४६४ ब, सामायिक ४ ४१६ ब ।

आवर्तपुर—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

आवर्त्ता—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अकन

३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ ।

वक्षारगिरि का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२-३.४८५-३.४८६, अकन ३.४४४ ।

आवली—१-२७६ अ, अन्तर्मुहूर्त १.३० अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ अ-ब, सहनानी २.२२० अ । राक्षसवश १.३३८ अ ।

आवश्यक—१ २७६ ब, अध प्रवृत्तकरण २.११ अ, अनि-वृत्तिकरण २.१४ अ, अपूर्वकरण २.१२ ब, कृतिकर्म २.१३३ ब, गुणित कर्माधिक २ १७७ अ, शुद्धि ४ ४० ब, श्रावक ४.५१ ब ।

आवश्यकपरिहाणि—१, २८० अ ।

आवास—१ २८० अ । भावन लोक ३.२१० अ, वनस्पति ३.५०६ ब, ३.५१० अ । व्यन्तरलोक—निर्देश ३ ६१२ अ, बनावट ३.६१२ ब, विस्तार ३.६१५ अ, संख्या ३.६१२ ब ।

आवासक—आवश्यक १ २८० अ ।

आविद्धकरण—१.२८० ब, नन्दिसघ देशीयगण १.३२५ अ, पद्मनन्दि १ ३३० अ, १ ३३१ अ, इतिहास १.३२६ ब ।

आविष्कार—१ २८० ब ।

आवीचिका मरण—१ २८० ब, मरण ३.२८० अ । तृष्णा ३ ३६५ ब, ३.३६६ ब, दासत्व ३.३६८ अ, निराकरण ३ ३६८ अ । रुचक पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अकन ३ ४६८, ४६९ ।

आवृत्तकरण—१.२८० ब ।

आवृष्ट—१.२८० ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ ।

आशंसा—१.२८० ब ।

आशय—औदारिक शरीर १ ४७२ अ ।

आशा—१.२८० ब, राग—गर्त ३.३६५ ब ।

आशाधर—१ २८० ब, स्तोत्र ४ ४४६ ब, इतिहास १ ३३२ अ, १ ३४४ अ, १ ३४५ अ ।

आशिष—१ २८१ अ ।

आशीर्वाद—१ २८१ अ, नमस्कार २.५०६ ब ।

आशीर्विष (वक्षार)—१.२८१ अ, विदेहस्थ पर्वत—निर्देश ३ ४६० अ, नाम ३.४७१ अ, वर्ण ३.४७७, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने । इस पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब ।

आशीर्विष रसशुद्धि—१ २८१ अ, शुद्धि १.४४७, १ ४५५ ब ।

आश्चर्य—१.२८१ अ, पद्य आदि द्रव्यो के कूट—निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४५४ ।

आश्मरथ्य—३.५६५ ब ।

आश्रम—१.२८१ अ ।

आश्रमकेस—पार्श्वनाथ २.३८४ ।

आश्रय—१.२८१ अ, आकाश १.२२१ अ, आधार १.२४६ अ, सापेक्षधर्म ४.३२४ ब ।

आश्रय-आश्रयी सम्बन्ध—उपचार १.४२० ब, सम्बन्ध ४.१२६ अ ।

आश्रयासिद्ध—हेत्वाभास १.२१० अ ।

आश्लेषा—१.२८१ अ, नक्षत्र २.५०४ ब ।

आश्वलायन—२.१७५ ब ।

आषाढ—१.२८१ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

आसन—१.२८१ अ, कायक्लेश २.४६ ब, ४७ ब, कृति-कर्म २.१३३ ब, सामायिक ४.४१६ ब ।

आसनगृह—भवनवासी देवों के भवनों में ३.२१० ब ।

आसन तप—कायक्लेश २.४७ ब ।

आसन्न भक्ष्य—१.१८१ ब, भक्ष्य ३.२११ ब ।

आसन्न मरण—१.२८१ ब, ३.२८० अ ।

आसव—३.२०३ अ ।

आसावन—१.२८१ ब, उपघात १.४१८ ब, सासादन ४.४२३ अ ।

आसिका—१.२८१ ब, समाचार ४.३३६ ब ।

आसीधिका—असही १.२०६ अ ।

आसुर—भावन देव २.४४५ ब ।

आसुरि—साध्य दर्शन ४.३६८ ब ।

आसुरी—१.२८१ ब ।

आस्तिक्य—१.२८१ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५१ अ ।

आस्यनिविष्ट ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५५ ब ।

आस्रव—१.२८२ अ, अनुप्रेक्षा १.७४ अ, १.७८ अ, १.७९ ब, धर्मध्यान २.८८३ ब ।

आस्रव त्रिभगी—इतिहास १.३३३ अ, १.३४५ अ ।

आस्रवानुप्रेक्षा—१.२८३ ब, अनुप्रेक्षा १.७४ अ, १.७८ अ, १.७९ ब ।

आहत—जम्बू वृक्ष का देव ३.४५८ अ, ३.६१३, ३.६१४ ।

आहवनीय—१.२८३ ब, अग्नि १.३५ ब ।

आहार—१.२८३ ब, अधःकर्म १.४८ अ, अनशन १.६६ अ, अतराय १.२८ अ, अहिंसा १.२१६ अ, काल १.२८६ अ, १.२८६ अ, गूढता निषेध १.२८८ ब, चर्या १.२८६ अ, २.१३७ ब, तीर्थकर २.३७२ ब, त्याग (अथालक्ष चारित्र्य) १.४६ अ, त्याग (सल्लेखना) ४.३६२ ब, ४.३६३ अ, देव २.४४६ अ, दोष १.२८६-२६०, ४.३४१ अ, नरक २.५७२ ब,

प्रमाण १.२८५ ब, १.२८६ अ, षट्कालिक हानि-वृद्धि २.६३, सल्लेखना १.४६ अ, ४.३६२ ब, ४.३६३ अ ।

आहारक काययोग—१.२६७ ब, काययोग २.४६ अ, मरण ३.२८४ अ, वेदभाव ३.५८८ ब । प्ररूपणा—बन्ध ३.१०४, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८०, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा-स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.२६६, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०७ । सत् ४.२२०, संख्या ४.१०३, क्षेत्र २.२०२, स्पर्शन ४.४८५, काल २.१०८, अन्तर १.१३, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४८ ।

आहारक चतुष्क—उदय १.३७४ ब ।

आहारक द्विक्—उदय १.३७४ ब ।

आहारक मार्गणा—१.२६४ ब, अनाहारक १.६६ ब, ऋजु गति (अनाहारक) १.६६ ब, केवली २.१६४, केवली समुदघात २.१६७ ब, पर्याप्ति ३.१४ अ, विग्रहगति ३.५५० ब । प्ररूपणा—बन्ध ३.१०६, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८६, उदयस्थान १.३६३ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४.३०२, ४.३०६, त्रिसयोगी भग १.४०८ अ । सत् ४.२६४, संख्या ४.११०, क्षेत्र २.३०७, स्पर्शन ४.४६४, काल २.११६, अन्तर १.२१, भाव ३.२२२ अ, अल्पबहुत्व १.१५२ ब ।

आहारकमिश्र काययोग—१.२६७ ब, काययोग २.४६ अ-ब, मरण ३.२८४ अ, वेदभाव ३.५८८ ब । प्ररूपणा—दे० आहारक काययोग ।

आहारकवर्गणा—१.२६८ ब, वर्गणा ३.५१३ अ, ३.५१५ ब, ३.५१६ अ, शरीरवर्गणा ३.५१४ ब ।

आहारकशरीर—आहारक १.२६५ ब, औदारिक शरीर १.४५७ अ, कथञ्चित् प्रतिघाती (वैक्रियिक शरीर) ३.६०३ ब, निगोद ३.५०६ ब, परिहारविशुद्धि सयत् ३.३७ अ, प्रदेशो का अल्पबहुत्व १.१५६ ब, प्रमत्तसयत् ३.५०६ अ, वेदभाव ३.५८८ ब, शुक्ल लेश्या ३.४२५ ब ।

आहारकशरीर अंगोपांग—अंगोपांग १.१ ब । प्ररूपणा—दे० आहारकशरीर नामकर्म ।

आहारकशरीर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३ अ, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, अनु-भाग का अल्पबहुत्व १.१६८, प्रदेश ३.१३६, प्रदेशो का अल्पबहुत्व १.१५६ ब । बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३७६

अ. उदयस्थान १ ३६०, १ ३६६, १ ३६७, उदीरणा
१ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७५
ब ४ २७८ ४ २८१-२८२ सत्त्वस्थान ४ ३०३,
त्रिसद्योगी भग १ ४०४। सक्रमण ४.८४ ब, अल्प-
वहुत्व १ १६८।

आहारकशरीर बंध—आहारक-आहार-बध ३ १७० ब,
आहारककर्मगवध ३ १७० ब, आहारक-तैजस-बध
३ १७० ब, आहारक-तैजस-कर्मण-बध ३.१७० ब।

आहारकसमुद्घात—१ २६६ ब, केवली समुद्घात २ १६७
ब क्षेत्र २ १६६-२०७, परिहारविशुद्धि ३ ३७ अ,
मोरणान्तिक समुद्घात ४ ३४३ ब, समुद्घात ४.३४३
ब, स्पर्जन ४ ४७७-४६४।

आहार-काल—आहार १ २८५ ब, १ २८६ अ, भिक्षा
३ २८८ ब।

आहार के अतराय—अतराय १ २८ अ।

आहार के दोष—आहार १ २८६-२८०, समिति,
४ ३४१ अ।

आहारचर्या—आहार १ २८६ अ, कृतिकर्म २ १३७
भिक्षा ३ २२८ ब।

आहारत्याग—अथालद चारित्र १ ४६ अ, अनशन १ ६६
अ, प्रोषधोपवास ३ १६३ अ, सल्लेखना ४ ३६२ ब,
४ ३६३ अ।

आहार-दान—अतिथिसविभाग व्रत १.४४ ब, दान
२ ४२२ ब, २ ४२४ ब, प्रोषधोपवास ३ १६३ ब।

आहारपर्याप्ति—१ २६८ ब, पर्याप्ति ३.४१ अ।

आहारविपर्यय—१ २६८ ब।

आहारशुद्धि—अपवाद-मार्ग १ १२१ अ, आहार १.२८५
अ-ब, १ २८७ अ, १ २८६ अ।

आहारसंज्ञा—१ २६८ ब, संज्ञा ४ १२० ब, ४ १२१ अ।

आहित—अग्नि १ ३५ ब, ग्रह २ ७७४ अ।

आहुति मन्त्र—१ २६८ ब।

आह्लाद—सुख ४ ४२६ ब।

आह्लादन—पूजा ३ ८० ब।

इ-ई

इगाल—१.२६८ ब, भिक्षादोष ३ २३३ अ, वसतिका
दोष ३.५३० अ।

इगिनी (मरण)—१.२७८ ब, सल्लेखना ४ ३८६ ब,
४ ३८७ अ, ४ ३८६ अ।

इंद्र (देव)—१ २६८ ब, कल्याणक २ ३२ ब, श्वेताम्बर
(गर्भ परिवर्तन) ४ ७६ ब, ४ ७८ अ। ज्योतिषी देवों
के—निर्देश २ ३४५ ब, आयु १ २६६, नक्षत्र
२ ५०४ ब, परिवार २ ३४६ अ, सख्या २ ३४५ ब।
भवनवासी देवों के—निर्देश ४ २०८ अ, आयु १.२६५,
परिवार ३.२०६ अ, सख्या ३ २०८ अ। वैमानिक
देवों के—निर्देश ४ ५१० ब, आयु १ २६६, चिह्न—
यान आदि ४ ५११, तीर्थंकर विशालप्रभ २.३६२,
दक्षिण-उत्तर विभाग ४.५११ अ, देवियाँ ४.५१२,
निवास ४.५२० ब, परिवार ४ ५१० ब, सख्या
४.५१० ब। व्यन्तर देवों के—निर्देश ३.६११ अ,
आयु १ २६४ ब, परिवार ३.६११ ब, सख्या
३ ६११ ब।

इंद्र (नाम)—१.२६६ अ, कल्की वंश १.३११ अ, १ ३१५
अ, राक्षस वंश १.३३८ अ, विद्याधर वंश १.३३६ अ।

इंद्रक—१.२६६ अ। नरकेन्द्रक—निर्देश २ ५७६ ब, नाम
निर्देश २ ५७६-५८०, विस्तार २ ५७८-५८०, अंकन
३.४४१, सख्या २.५७८-५८०। म्वर्गेन्द्रक—निर्देश
४ ५१६ अ, नामनिर्देश ४.५१६-५१८, विस्तार
४.५१६-५१८, अंकन ४.५१७, अवस्थान ४.५१४ ब,
विमान ३ ५६३ अ, सख्या ४ ५१६, ४ ५२०।

इंद्रगिरि—हरिवंश १.३४० अ।

इंद्रजीत—१ २६६ ब, राक्षसवंश १.३३८ ब।

इंद्र त्याग (क्रिया)—१.२६६ ब, संस्कार ४.१५२ अ।

इंद्रद्युम्न—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ।

इंद्रध्वज—१.२६६ ब।

इंद्रनदि संहिता—१ २६६ ब।

इंद्रपथ—१ २६६ ब।

इंद्रपुर—१ २६६ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।

इंद्रप्रभ—राक्षसवंश १ ३३८ अ।

इंद्रभूति—१ २६६ ब, गणधर २ २१३ अ, गौतम १ ३१६,
वर्द्धमान प्रभु २.३८७।

इंद्रमत—वानरवंश २.३३८।

इंद्रराज—१ २६६ ब, राष्ट्रकूट वंश १.३१५ ब।

इंद्रवीर्य—कुरुवंश १.३३५ ब।

इंद्रद्युत—कल्की २ ३० ब।

इंद्रसेन—१ २६६ ब, सेनसंघ १.३२६ अ, इतिहास
१.३२८ ब।

इंद्राग्नि—नक्षत्र २.५०४ ब।

इंद्राणी—ज्योतिषी देवों की २.३४६ अ। भवनवासी देवों

की—निर्देश ३ २०६ अ, आयु १ २६५। वैमानिक
देवों की—निर्देश ४ ५१२; आयु १ २७०। व्यन्तर
देवों की ३ ६११ ब।

इन्द्राभिषेक (क्रिया)—१ २६६ ब, सस्कार ४ १५१ ब,
४ १५२ अ।

इन्द्रायुध—१ २६६ ब।

इन्द्रावतार (क्रिया)—१ ३०० अ, सस्कार ४ १५२ अ।

इन्द्रिय—१ ३०० अ, अवगाहना का अल्पबहुत्व १ १५८,
प्रदेशों का अल्पबहुत्व १ १५७, १ ३०१ ब, करण
२ ५ ब, नैयायिक दर्शन २ ६२३ ब, प्राप्यकारी
अप्राप्यकारी विभाग १ ३०३ अ, १.१८३ ब, मन
३ २७० ब, मुक्त जीव ३ ३७६ ब, शरीर ४ २ अ।

इन्द्रियज सुख—सुख ४ ४२१ ब, ४ ४३४ अ।

इन्द्रियज्ञान—१ ३०७ अ, उपयोग १ ४३३ अ, तप
२ २६३ ब, समय ४ १३६ ब, सल्लेखना ४ ३६६ अ,
स्वाध्याय ४ ५३५ अ।

इन्द्रियजय—१ ३०७ अ, उपयोग १ ४३३ अ, तप
२ ३६३ ब, समय ४ १३६ ब, सल्लेखना ४ ३६६ अ,
स्वाध्याय ४ ५२५ अ।

इन्द्रियपर्याप्ति—१ ३०७ अ, पर्याप्ति ३.४१ अ, ३ ४३ अ।

इन्द्रियप्रमाण—१ ३०७ ब, परोक्ष ३ ३६ अ, प्रत्यक्ष
३.१२२ ब, ३ १२३ ब, २ १५० ब, प्रमाण
३ १४३ ब, श्रुतज्ञान ४ ६३ ब।

इन्द्रियप्राण—पर्याप्ति ३ ४३ ब, प्राण ३ १५२ ब।

इन्द्रियमार्गणा—निर्देश १ ३०६ ब, जीवसमास २.३४३,
जीवों की अवगाहना १ १७६, जीवों की आयु १ २६३,
१ २६४। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०३, बन्धस्थान ३ ११३,
उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३६२, उदीरणा
१ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२,
४ २८५, ४ २६६, सत्त्व स्थान, ४ २६८, ४ ३०५,
४ ३०७, त्रिसंयोगी भगी १.४०६। सत् ४ १६३,
संख्या ४ ६६, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८२, काल
२ १०६, अन्तर १ ११, भाव ३ २२० ब, अल्प-
बहुत्व—इन्द्रियमार्गणा १ १४५, १ १५५ अ,
योगस्थान १ १६१ ब, शरीर स्वामित्व ४ ७,
१.१५१, सकलेशविशुद्धिस्थान १.१६० अ।

इन्द्रियलोभ—लोभ ३ ४६२ ब।

इन्द्रियविवेक—विवेक ३ ५६६ ब।

इन्द्रियव्याधि—लिंग ३ ४१७ ब।

इन्द्रियसंयम—१ २०७ ब, समय ४ १३८ अ, ४ १३६ अ।

इन्द्रियसुख—सुख ४ ४२१ ब, ४ ४३४ अ।

इन्द्रोपपाद (क्रिया)—१ ३०७ ब, सस्कार ४ १५१ ब।

इक्कीस—स्वभाव ४ ५०६ ब।

इक्कीस गुणस्थान प्रकरण—१ ४५८ ब इतिहास
१ ३४१ अ।

इक्षुपुष्प—असाधु की निन्दा २.५८६ अ।

इक्षुमती—१ ३०७ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

इक्षुरस—१ ३०७ ब, रस ३ ३६८ ब।

इक्षुवर (सागर व द्वीप)—१ ३०७ ब निर्देश ३ ८७० अ
विस्तार ३ ४७८, अकन ३ ८८३ जल जा रम
३ ४७० अ, ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब अधिगति देव
३ ६१४। वैदिकाभिमत क्षीरोद सागर—निर्देश
३ ४३१ ब, अकन ३ ४३८।

इक्ष्वाकुवश—१ ३०७ ब, इतिहास १ ३३५ अ तीक्ष्ण
कृषभ आदि २ ३८०, रघुवंश १ ३३८ अ सूर्यवंश
१ ३३६ ब।

इच्छा—परिग्रह ३ २४ ब, ३ २६ अ अभिलाषा १ १३० ब
लोकैषणा ३ ३६७ अ, अनाकाक्ष अनशन १ ६६ उपदेश
१ ४२४ ब, तप २ ३५७ ब, २ ३६० अ धर्म २ २७५
अ, ध्याता २ ४६३ अ, ३ ३६५ ब, राग ३ ३६६ ब
३.३६७ अ, वाद ३ ४३५ अ, विनय ३ ५२८ ब
विवेक ३ ५६६ अ, श्रद्धान ४ ३५६ अ, सल्लेखना
४.३८३ अ, साधु ४ ४०५ अ, स्वाध्याय ४ ५२३ अ।

इच्छाकार—१ ३०७ ब, विनय ३ ५५१ ब ३ ५५२
समाचार ४ ३३६ ब, सल्लेखना ४ ३६७ अ।

इच्छादेवी—१ ३०७ ब, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—
निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३ ४६८।

इच्छानिरोध—१ ३०७ ब, तप २ २५८ ब।

इच्छानुलोमा—१ ३०७ ब, भाषा ३.२२७ अ।

इच्छाराशि—१ ३०७ ब, गणित २.२२८ ब।

इच्छाविभाग (बोध)—१ ३०७ ब।

इज्या—१ ३०७ ब, पूजा ३.७४ अ।

इतरनिरोध—१ ३०८ अ, वनस्पति ३ ५०४ अ, मोक्ष
३ ३३१।

इतरेतराभाव—१ ३०८ अ, अभाव १ १२८ अ।

इतरेतराश्रय—कारण (जीवकर्म सम्बन्ध) २.७४ ब।

इति—१ ३०८ अ।

इतिवृत्त—१ ३०८ ब।

इतिहास—१ ३०८ ब।

इत्थं संस्थान—१ ३४८ अ, संस्थान ४.१५४ ब।

इत्वरिका—१ ३४८ अ।

इत्सिग—१ ३४८ ब।

इभवाहन—कुरुवश १ ३३५ ब।

इलंगोवडि—इतिहास १ ३२८ ब, १ ३४० अ।

इला—१.३४८ ब । हिमवान पर्वत का कूट तथा देवी—
निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४ ।
रुक्मवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ,
अकन ३.४६८, ३.४७६ ।

इलावर्धन—१.३४८ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ, हग्विण
१.३४० अ ।

इलावृत वर्ष—१.३४८ ब ।

इषुगति—१.३४८ ब, विप्रहृति ३.५४० व ।

इष्ट—१.३४८ ब, साध्य ३.२ ब ।

इष्टमरण—आहारान्तराय १.२६ ब ।

इष्टविभोगज—१.३४८ ब, आर्तध्यान १.२७३ ब ।

इष्टविषय—ब्रह्मचर्य ३.१८६ ब ।

इष्टानिष्ट—मोक्ष ३.५६४ ब, राग ३.३६५ ब, रुचि
४.४३० व ।

इष्टोपदेश—१.३४८ ब, इतिहास १.३४१ अ ।

इष्टोपदेश (टीका)—आशाधर १.२८० ब, इतिहास
१.३४४ अ ।

इष्वाकार—१.३४८ ब । धातकी व पुष्करार्ध का पर्वत—
निर्देश ३.४६२ ब, ४६३ ब, विस्तार ३.४८५, ३.४८७,
वर्ण ३.४७८, गणना ३.४६३ अ, अकन ३.४६४ के
सामने ।

इह लोक—अभिलाषा २.५८५ ब, भय २.२०६ अ-ब ।

ईर्या—१.३४८ ब ।

ईर्यापथ—आस्रव २.१५८ ब, उदय १.३६७ ब, कर्म
१.३४८ ब, २.२६ अ-ब, २.२२७ अ, ४.२६६ अ,
कायोत्सर्ग ३.४६५ ब, क्रिया १.३५० ब, २.१७४ ब,
शुद्धि १.३५० ब, २.१३८ ब, ४.३३६ ब, सल्लेखना
४.३८७ ब ।

ईर्यापथकर्म—१.२४८ ब, कर्म २.२६ अ-ब, २.२७ अ,
सत् ४.२६६, मख्या ४.११६ ब, क्षेत्र २.२०८, भाव
३.२२३ ।

ईर्यापथशुद्धि—१.३५० ब, कृतिकर्म २.१३८ ब, गमिनि
४.३३६ ब, सल्लेखना ४.३८७ ब ।

ईर्यापथिक—आलोचना १.२७६ ब, प्रतिक्रमण ३.११६ अ,
बन्धक ३.१७६ अ ।

ईर्या समिति—१.३५० ब, आहसा १.२१६ अ, कायगुप्ति
२.२५१ अ, शुद्धि २.१३८ ब, श्रावक ४.५२ ब,
समिति ४.३३६ अ, सल्लेखना ४.३८७ ब ।

ईशान—१.३५० ब । स्वर्ग—निर्देश ४.५६४ ब, पटल इन्द्रक
श्रेणीबद्ध ४.५१६, ४.५२०, उत्तरविभाग ४.५२० ब,
अवस्थान ४.५१४ ब, अकन ४.५१५, चित्र

४.५१६ ब । देव—अवगाहना १.१८० ब, अवधिज्ञान
१.१६८ ब, आयु १.२६६, आयु के बन्धयोग्य परि-
णाम १.२५८ ब । इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब, परिवार
४.५१२-५१३, जनरेन्द्र ४.५११ अ, अवस्थान
४.५२० ब, चिह्न आदि ४.५११ ब, विमान नगर
और भवन ४.५२०-५२१ ।

ईशानदेव (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३,
उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२, उदीरणा १.४११,
सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, त्रिसयोगी भग
१.४०६ अ । सत् ४.१६२, सख्या ४.६८, क्षेत्र २.२००,
स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव
३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

ईशित्व ऋद्धि—१.३५० ब, ऋद्धि १.४४७, १.४५१ अ ।
ईश्वर—१.३५० ब, जैनदर्शन २.३४४ ब, ३.२० ब,
नियतिवाद २.६१६ अ, विदेहस्थ तीर्थकर का नाम
२.३१२, वेदान्त ३.६०८ अ ।

ईश्वर अनिसृष्ट दोष—आहार १.२६१, उद्दिष्ट १.४१३
अ ।

ईश्वरकृष्ण—४.३६८ ब ।

ईश्वरनय—१.३५० ब, नय २.५२३ ब ।

ईश्वरवाद—१.३५० ब, एकान्त १.४६५ अ, परमात्मा
३.२१ ब ।

ईश्वरसेन—१.३५० ब, पुन्नाट सघ १.३२७ अ ।

ईषत्परोक्ष—१.१६० ब ।

ईषत्प्राग्भार—१.३५० ब, भूमि ३.२३४ ब, मोक्ष
३.३२३ ब, सासादन ४.४२५ अ ।

ईषत्ससार—४.१४६ ब ।

ईसवी संवत्—१.३५१ अ, इतिहास १.३०६ अ-ब,
१.३१० अ ।

ईहा—१.१५१ अ, अवग्रह १.१८२, ऊहा १.४४५ ब,
कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६०, धारणा २.४६१ अ,
प्रमाण १.३५१ अ, १.१८२ ब, मतिज्ञान ३.२५२ ब,
३.२५३ अ, श्रुतज्ञान ४.६२ ब, सशय १.१८२ ब ।

ईहावरणीय कर्म—१.४४६ ब ।

उ-ऊ

उ—उत्कृष्ट २.२१८ ब, उर्वक १.४४५ ब ।

उक्त—१.३५२ अ, मतिज्ञान ३.२५७ अ ।

उग्र—अभिनन्दन नाथ २ ३८३, पार्श्वनाथ २ ३८० ।

उग्रतप—१ ३५२ अ, ऋद्धि १ ४४७, १ ४५३ ब ।

उग्रवंश—१ ३५२ अ, भोजवंश १ ३३६ ब, विद्याधर वंश १ ३३८ ब ।

उग्रश्री—राक्षसवंश १ ३३८ अ ।

उग्रसेन—१ ३५२ अ, नेमिनाथ २ ३६१, यदुवंश १ ३३६, हरिवंश १ ३४० अ ।

उग्रादित्य—१ ३५२ अ, इतिहास १ ३३० अ, १.३४२ अ ।

अग्रोग्रतप—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५३ ब ।

उच्च—मोक्ष ३ ३२६ अ, मार्दव ३ २६८ ब ।

उच्चकुल—१ ३५२ अ, वर्ण-व्यवस्था ३.५२० ब ।

उच्चगोत्र—१ ३५२ अ, वर्ण-व्यवस्था ३.५२० ब, ३.५२२ ब ।

उच्चगोत्र कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३ ५२०, स्थिति ४ ४६७, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३ १३७ । बंध ३ ६७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदय की विशेषता १.३७३ ब, उदयस्थान १.३८७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६४, त्रिसंयोगी भग १ ३६६, सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८ ।

उच्चत्व—मार्दव ३ २६८ ब ।

उच्च-नीच व्यवहार से अतीत—मोक्ष ३ ३२६ अ, वर्ण व्यवस्था ३ ५२४ अ ।

उच्च पद—धर्म २ ४६६ ब ।

उच्चाटन—छपान २ ४६७ अ, मत्र ३ २४५ ब ।

उच्चार—१ ३५२ अ, आहारातराय १ २६ अ, औदारिक, शरीर १ ४७२ अ ।

उच्चारण वृत्ति—१ ३५२ अ, कषायपाहुड २.४१ अ ।

उच्चारणाचार्य—१ ३५२ अ, तत्त्व ४.२७६ ब ।

उच्छादन—१.३५३ अ ।

उच्छिष्टावली—१.३५३ अ, आवली १.२७६ ब ।

उच्छ्वास—१.३५२ अ, काल-प्रमाण २.२१६ अ, ब ।

उच्छ्वास नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३ अ, स्थिति ४ ४६५, अनुभाग १.६५ ब, प्रदेश ३ १३६ । बंध ३.६६ अ, ३.६७, बंधस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०, १.३६७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०४ । सक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६८ ।

उच्छ्वास-पर्याप्ति—१.३५२ ब, पर्याप्ति ३.४४ अ,

पर्याप्तिकाल १ ३६३-३६७ ।

उज्ज्वलित—१ ३५३ अ, नरकपटल—निर्देश २ ५७६ अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४४१, अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३ ।

उज्जिह्वि—१ ३५३ अ । नरक पटल—निर्देश २ ५७६ ब, विस्तार २ ५७६ ब, अकन ३ ४४१ ।

उज्जनी—इतिहास १ ३१० अ, मगधदेश १ ३१० ब, मूल सद्य १ परि०/२ १-३, श्वेताम्बर संघ ४ ७७ ब ।

उज्जनशुद्धि—१ ३५३ अ, शुद्धि ४ ४० ब ।

उज्ज्वलशमी व्रत—१ ३५३ अ ।

उडुपालन—विद्याधर वंश १ ३३६ अ ।

उत्कट—राक्षस वंश १ ३३८ अ ।

उत्कर—भेद ३ २३७ अ ।

उत्करण काल—काण्डक २ ४२ अ ।

उत्करिकासन तप—कायक्लेश २ ४७ ब ।

उत्कर्षण—१ ३५३ अ, अंतरकरण १ २६ अ-ब, आयु १ २६० ब, गुणस्थान २ ६ अ, दशकरण २ ६ ।

उत्कर्षण (दोष)—आहार १ २६० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ ।

उत्कर्षणप्राभूत (दोष)—आहार १ २६० ब ।

उत्कर्ष समा—१ ३५५ ब ।

उत्कल—१ ३५५ ब ।

उत्कलिका—१ ३५५ ब, श्रुतज्ञान ४ ६७ ब ।

उत्कीरण काल—१ ३५५ ब, अंतरकरण १ २५ ब, १ २६ अ, काल २ ८१ अ ।

उत्कीर्ण—अंतरकरण १ २६ अ ।

उत्कृष्ट—अनत २ २१४ ब, २.२२६ अ, अनतानत २.२१८ ब, अनुकृष्ट ३ ११४, अनुभाग (क्षयोपशम) २.१८६ अ, अनुभाग (स्थितिबध्) ४ ४५८ ब, ४.४५६ ब, अतरात्मा १ ३७ अ-ब, अवगाहना (सख्या) ४.६४ अ, असख्यात २.२१४ ब, २.२१६ अ, असख्यातामंख्यात २.२१८ अ, २.२१६ अ, आराधना (सल्लेखना) ४ ३८७ अ, कृष्टि २ १४३ अ, धर्मज्ञान २.४७६ अ, पद (अनुयोग) १ १०२ ब, १ १०३ ब, परमाणु ३.१४ अ, परितानंत २ २१८ ब, २ २१६ अ, परितासख्यात २.२१८ ब-२१६ अ, युक्तानन्त २ २१८ ब, २.२१६ अ, युक्तासख्यात २ २१८ ब, २ २१६ अ, लब्धि ३ ४१५ अ, विभक्ति (अनुयोगद्वार) १.१०३ अ ब, श्रावक (क्षुल्लक) २ १८८ ब, सख्यात २.२१४ ब, २.२१८ अ, समय-प्रबद्ध २ २१६ अ, सहनानी २.२१६ अ, स्थिति ४ ४५६ ब, ४ ४५८ ब, ४.२७६ ब ।

उत्तम—आकिचन्य १.२३४ ब, आर्जव १ २७२ अ, क्षमा

२ १७७ अ, तप २ ३६३ ब, त्याग २ ३६७ ब, धर्मवश
२ ४७६ अ, पात्र ३ ५२ ब, प्रोषधोपवास ३ १६४ अ,
बालाग्र २ २१५ ब, ब्रह्मचर्य ३ १६० ब, मार्दव
३ २६८ अ, वर्ण १ ३५५ ब, ३ २७५ ब, शौच
४ ४२ ब, सहनन ४ १५५ ब, स्त्री सहनन ३ ५६० अ।

उत्तमा—व्यतर बल्लभिका ३ ६११ ब।

उत्तमार्थ—काल १ ३५६ अ, २ ८० ब, त्याग (सल्लेखना)
४ ३८८ अ, प्रतिक्रमण ३ ११६ अ।

उत्तर—अयन २ ६१ ब, क्षण २ ५५ अ, गणित १ ३५६
अ, २ २२६ ब, ज्ञान २ ४०६ ब, देव (भावन)
३ ६१४, दिशा १ ३५६ अ, २ १३६ ब, २ ४३४ अ,
३ ६२० ब, ४ ३८६ ब।

उत्तरकल्प—स्वर्गों का उत्तर भाग ४ ५२० ब।

उत्तरकुमार—१ ३५६ अ।

उत्तरकुरु (कूट)—१ ३५६ अ। गजदत्त का कूट तथा
देव—निर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५,
३ ४८६, अकन ३ ४४४, ३ ४५७।

उत्तरकुरु (देश)—१ ३५६ अ, चातुर्वर्षिक भूगोल ३ ४३७
अ। जैनाभिमत—निर्देश ३ ४३१ ब, ३ ४५६ ब,
३ ४६२ ब, ३ ४६३ ब, विस्तार ३ ४७६, ३ ४८०,
३ ४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र
३ ४५७, गणना ३ ४४५ अ। काल-व्यवस्था २ ६३,
जीवों की अवगाहना १ १८०, जीवों की आयु
१ २६३, १ २६४। बौद्धाभिमत ३ ४३६ अ,
वैदिकाभिमत ३ ४३१ ब।

उत्तरकुरु (ब्रह्म)—१ ३५६ अ, उत्तरकुरु में स्थित—
निर्देश ३ ४५६ ब, नाम निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार
४ ४६०, ३ ४६१, अकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३ ४६४
के सामने।

उत्तरगुण—१ ३५६ अ, प्रत्याख्यान ३ १३३ अ, श्रावक
४ ५० ब, ४ ५१ अ, साधु ४ ४०४ अ।

उत्तरघर हेतु—१ ३५६ अ, कारण कार्य २ ५६ ब।

उत्तरभूलिका—१ ३५६ अ, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२३ अ।

उत्तरदिशा—१ ३५६ अ, कृतिकर्म २ १३६ ब, कायोत्सर्ग
३ ६२० ब, शुभकार्य २ ४३४ अ, सल्लेखना ४ ३८६
ब, सामायिक ४ ४१६ ब।

उत्तरधन—१ ३५६ अ, श्रेढी व्यवहार गणित २ २२६ ब,
२ २३० ब।

उत्तरपुराण—१ ३५६ अ, इतिहास १ ३४२ अ, १ ३४५ ब।

उत्तरप्रकृति (कर्मप्रकृति)—प्ररूपणाय—प्रकृति ३ ८८,
३ ६७, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ६५, प्रदेश
३ १३६। बन्ध ३ ६७, बन्धस्थान ३ १०८, उदय

१ ३७५, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १ ४११ अ,
उदीरणस्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान
४ २८७, त्रिसयोगी भग १ ३६६। अल्पबहुत्व १ १६४
ब-१६६, १ १७६, सक्रमण ४ ८५ ब। स्वामित्व
सन्निकर्ष—प्रकृति ३ ११४, सत्त्व ४ ३१०, स्वामित्व
(प्रकृति-स्थिति-अनुभाग-प्रदेश) ४ ५२७-५२८। सख्या
४ ११७, क्षेत्र २ २०८, स्पर्शन ४ ४६४, काल
२ १२१-१२२, अन्तर १ २३, भाव ३ २२३, अल्प-
बहुत्व १ १७५, ४ ४६६, ४ ५२७, भागाभाग ४ ११७।

उत्तरप्रकृति विपरिणमना—३ ५५५ ब।

उत्तरप्रतिपत्ति—१ ३५६ अ।

उत्तरभ्रातृपदा—नक्षत्र ३ ५०४ ब, विमलनाथ ३ ३८०।

उत्तरमीमांसा—१ २५६ ब, दर्शन २ ४०२ ब, मीमांसा
दर्शन ३ ३११ अ।

उत्तरमुख—कृतिकर्म २ १३६ ब, कायोत्सर्ग ३ ६२० ब,
शुभ कर्म २ ४३४ अ, सल्लेखना ४ ३८६ ब, सामायिक
४ ४१६ ब, केवलीसमुद्घात २ १६७ ब।

उत्तराध्ययन—१ ३५६ ब, श्रुतज्ञान ४ ६६ ब।

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र—१ ३५६ ब, नक्षत्र २ ५०४ ब,
तीर्थंकर २ ३८१।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र—१ ३५६ ब, नक्षत्र २ ५०४ ब।

उत्तराभिमुख—कृतिकर्म २ १३६ ब, कायोत्सर्ग ३ ६२०
ब, शुभकार्य २ ४३४ अ, सल्लेखना ४ ४८६ ब,
सामायिक ४ ४१६ ब, केवलीसमुद्घात २ १६७ ब।

उत्तरायन—२ ३५१।

उत्तरार्ध (कूट)—भरत ऐरावत विदेह देशों के विजयाधो-
पर स्थित—निर्देश ३ ४७१ ब, विस्तार ३ ४८३,
वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४४४।

उत्तराषाढ नक्षत्र—४ १५६ ब, नक्षत्र २ ५०४ ब, ऋषभ
नेमिनाथ तथा वर्द्धमान २ ३८०।

उत्तरित—१ ३५६ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६१२ अ।

उत्तरेन्द्र—व्यन्तर देव ३ ६११ अ, स्वर्ग ४ ५११ अ।

उत्तानशय्यासन तप—कायक्लेश २ ४७ ब।

उत्थितनिविष्ट—व्युत्सर्ग दोष ३ ६१६ ब।

उत्थितोत्थित—व्युत्सर्ग दोष ३ ६१६ ब।

उत्पत्ति—१ ३५६ ब, उत्पाद १ ३५७ अ, जन्म २ ३१३ ब।

उत्पन्न—व्यन्तर देव—अत्यु १ २६४ ब।

उत्पन्न स्थान सत्त्व—१ ३५६ ब, सत्त्व ४ २७५ अ।

उत्पल—१ ३५६ ब, काल प्रमाण २ २१६ अ, नीलकमल
(नमिनाथ) २ ३७८।

उत्पल (कूट)—पद्म आदि हृदों के कूट—निर्देश ३ ४७४
अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४५४।

उत्पलगुल्मा—सौमनस तथा नन्दन वन की पुष्करिणी—
निर्देश ३.४५३ ब, विस्तार ३.४६०-४६१, नाम
३.४७३ ब अकन ३.४५१, चित्र ३.४५१।

उत्पला—१ ३५६ ब, व्यन्तर वल्लभिका ३.६११ ब, सुमेरु
पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नाम ३.४७३ ब,
विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अक ३.४५१, चित्र
३.४५१।

उत्पलांग—कालप्रमाण २.२१६ अ।

उत्पलोज्ज्वला—१ ३५६ ब, सुमेरु पुष्करिणी—निर्देश
३.४५३ ब, नाम ३.४७३ ब, विस्तार ३.४६०-४६१,
अकन ३.४५१, चित्र ३.४५१।

उत्पात—१ ३५६ ब, ग्रह २.२७४ अ, छेदना २.३०६ ब,
२.३०७ अ।

उत्पातिनी—१ ३५६ ब, विद्या ३.५४४ अ।

उत्पाद—१.३५७ अ, गुण २.२४२ अ, द्रव्य २.४५३ ब,
निर्हेतुक २.५५१ अ, समयलब्धिस्थान ३.४१४ अ,
स्व-पर-निमित्तक १.२२१ ब, पूर्व ४.६८ ब।

उत्पाद अनुच्छेद—१ ३६१ अ।

उत्पादक—कर्ता-कर्म २.२१ अ, कारण-कार्य २.५६ ब।

उत्पादन (दोष)—१ ३५६ ब, आहार १.२८६ ब, वसतिका
३.५२६ अ।

उत्पाद-पूर्व—१ ३५६ ब, श्रुतज्ञान ४.६८ ब।

उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य—१ ३५६ ब, अस्तित्व १.२१२ ब,
द्रव्य २.४५३ ब।

उत्पाद-व्यय-सापेक्ष अशुद्ध-द्रव्याधिक नय—२.५४५ अ।

उत्पादानुच्छेद—१ ३६१ अ, व्युच्छित्ति ३.६१८ ब।

उत्पीलक—अवपीडक १.२०० अ।

उत्प्रेक्षा—१ ३६३ अ।

उत्संज्ञासंज्ञ—१ ३६३ अ।

उत्सरण—१ ३६३ अ, उत्कर्षण १.३५३ ब।

उत्सर्ग—१ ३६३ अ, अपवाद १.१२२ अ, उपयोग
१.४३१ अ, कृतिकर्म २.१३७ अ, तप (व्युत्सर्ग)
३.६१६, समिति ४.३४१ ब।

उत्सर्गपद्धति—पद्धति ३.६ ब।

उत्सर्गमार्ग—अपवाद मार्ग १.१२०-१.२३।

उत्सर्गलिग—लिग ३.४१७ अ।

उत्सर्पिणी—१ ३६३ अ, अवगाहना १.१८०, आयु १.२६४,
आर्यखण्ड १.२७५ अ, काल २.८८, काल परिवर्तन
२.९०, काल का प्रमाण २.२१७ ब, क्षेत्र २.६२, वृद्धि
हानि २.६१, सुख ४.३३१ ब, सिद्धो का अल्पबहुत्व
१.१५३ ब।

उत्साह—१.३६३ अ, तीर्थकर २.३७७।

उत्सेध—१ ३६३ अ।

उत्सेधांगुल—१ ३६३ अ, उपमा प्रमाण २.२१८ अ, क्षेत्र
का प्रमाण २.२१५ ब।

उदंडचर्या—१.४५ अ, अतिथि १.४४ ब।

उदंबरफल—१ ३६३ अ, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब, श्रावक
४.४६६।

उदक—१ १ ३६३ अ, तीर्थकर २.३७७।

उदक—१ ३६३ ब, राक्षस जातीय व्यन्तर देव ३.३६३ ब,
लवणसागर का पर्वत—निर्देश ३.४६२ अ, नाम निर्देश
३.४७४ ब, विस्तार ३.४७६, अकन ३.४६१, वर्ण
३.४७८, इस पर्वत का देव ३.४७४ ब।

उदकवर्ण—१ ३६३ ब, ग्रह २.२७४ अ।

उदकावास—१ ३६३ ब, लवणसागर का पर्वत—निर्देश
३.४६२ अ, नामनिर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३.४७६,
अकन ३.४६१, वर्ण ३.४७८। इस पर्वत का देव
३.४७४ ब।

उदधि—यदुवश १.३३७।

उदधिकुमार—१ ३६३ ब, भावन देव—निर्देश ३.२०८ अ,
अवस्थान २.२०६ ब, ३.६१२-६१४, ३.४७१, भवनो
की सख्या ३.२१० ब, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान
१.१६८ ब, आयु १.२६५। इंद्र - निर्देश ३.२०८ ब,
शक्तिचिह्न आदि ३.२०८ ब, अवस्थान २.२०६ ब।

उदधिकुमार(प्ररूपणा) बन्ध ३.१०२, बन्ध स्थान ३.११३,
उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा
१.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्व स्थान, ४.२६८,
त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत ४.१८८, सख्या
४.६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४,
अन्तर १.१०, भाव २.२३१ ब, अल्पबहुत्व १.१४५।

उदधिरक्ष—राक्षसवश १.३३८ अ।

उदय १ ३६३ ब, आयुर्कर्म १.२६२ ब, ईर्यापथ कर्म
१.३५० अ, उदीरणा १.४०६ ब, १.४१० अ, दशकरण
२.६ अ, गुणस्थान २.६ अ, निमित्त १.३६७, (जीव)
परिणाम २.६७ ब, २.७२ अ, २.७४ अ, यत्नायत्न
२.६७ अ, सक्रमण ४.८६ ब। प्ररूपणा—उदय
१.३७५, १.३८६, उदय-व्युच्छित्ति १.३७५-३.८६,
उदय-व्युच्छित्ति प्रत्यय ३.१२७ ब, उदयस्थान
१.३८७ ब, त्रिसयोगी भग १.४००-४.०८। स्थिति
१.३८६, अनुभाग १.३८६, प्रदेश १.३८६। काल
२.१२२, अन्तर १.२३, अल्पबहुत्व १.१७५-१.७६।

उदयकाल—उदयस्थान १.३६७, कषाय २.३८, काल
२.८१ अ।

उदयचन्द्र—देगीयगण १.३०४ व इतिहास १.३३० अ
१.३४४ अ ।

उदयदेव—१.४०६ अ ।

उदयनाचार्य—१.४०६ अ, एकाल १.४६५ अ, न्यायदर्शन
२.६३४ अ, वैजयिक्त दर्शन २.६१६ व ।

उदयपर्वत—१.४०६ अ, विद्याधर नगरी २.५४५ व ।

उदयप्रभ—तीर्थकर २.३७७ ।

उदय व्युत्पत्ति—१.३७५-३८६, प्रत्यय ३.१२३ व ।

उदयसेन—१.४०६ अ । वाडवागट गद्य—प्रथम १.३०३ व,
इतिहास १.३३१ अ । द्वितीय १.३०३ व ।

उदयसेन मुनि—आगाधर १.२८० व ।

उदयस्थान—१.३६६ अ, उदय १.३८७-४०८, स्थान
४.४५० व ।

उदया—१.४०६ अ ।

उदयादित्य—१.४०६ अ, भोजवज १.३१० अ ।

उदयादित्य (कवि)—इतिहास १.३३१ व ।

उदयाभाव—उदय १.३६६ व ।

उदयाभावी क्षय—धर्म २.१७८ अ ।

उदयावली—अनुरक्षण १.२५ व, १.२६ व, अपकर्षण
१.११४ व, आवली १.२७६ व ।

उदयो—मगधनरेज १.३१० व, १.३१२, १.३१३ ।

उदयोपशमिक—अयोपशम २.१८४ अ, मित्र ३.३०६ व ।

उदरकृमि निर्गमन—आहारनराय १.२६ व ।

उदराग्नि—१.३५ व ।

उदराग्नि प्रशमन वृत्ति—निक्षा १.३०६ व ।

उदार—औदारिक १.४७० अ ।

उदासीन—अनीहित वृत्ति (ध्येय) २.५०० व न्याय विभाग
२.३६६ व ।

उदासीन कारण—कारण २.६५ व, २.७० अ, धर्माधर्म
द्रव्य २.४२६ अ, निमित्त २.६१२ अ ।

उदाहरण—१.४०६ अ, दृष्टान्त, २.४३७ व, न्याय
२.६३३ व, अष्टकर्मों के आठ उदाहरण ३.६१ अ ।

उदितपराक्रम—इक्ष्वाकुवज १.३३५ अ ।

उदीच्य—१.४०६ अ ।

उदीरक—उदीरणा १.४१० अ ।

उदीरणा—१.४०६, आबाधा १.२५० अ, आयुर्कर्म २.६१ अ,
ईर्यापथ कर्म १.३५० अ, उदय १.३६७ अ, गुणस्थान
२.६ अ, दशकरण २.६ । प्ररूपणा—उदीरणा
१.४१० व, १.४११, उदीरणा स्थान १.४१२, त्रिसयोगी
भग १.४०० अ, १.४०६ व, काल १.४१२, अन्तर
१.४१२, अल्पबहुत्व १.४१२ । स्वामित्व प्ररूपणा—

उदीरणा ४.५२६, उदीरणा-स्थान ४.५२१, काल
२.१२१, अन्तर १.२३, अल्पबहुत्व १.१७५ ।

उदीर्ण—१.४१३ अ ।

उदुबरी—मनुष्यलोक ३.२७५ व ।

उद्गम दोष—१.४१३ अ, आहार १.३८६ अ, वसतिका
३.५२८ अ ।

उद्वावण—१.४१३ अ ।

उद्दिष्ट—१.४१३, अ, आहार १.२८७, वसतिका
३.५२८ व ।

उद्दिष्ट त्यागप्रतिमा—१.४१३ व ।

उद्देश १.४१३ व ।

उद्देशिक—१.४१३ व, आहार १.२८७ व, उद्दिष्ट
१.४१३ अ, वसतिका ३.५२८ व ।

उद्देश्य—१.४१३, उद्दिष्ट १.४१३ अ ।

उद्देश्यता—१.४१३ व ।

उद्देश्यतावच्छेदक—१.४१३ व ।

उद्धारक—गक्षसवज १.३३८ अ ।

उद्धार देव—१.४१४ अ, तीर्थकर २.३७७ ।

उद्धारपत्य—१.४१४ अ, उपमाकाल प्रमाण २.२१७ व,
उपमा प्रमाण २.२१८ अ ।

उद्धारसागर—१.४१४ अ, कालप्रमाण २.२१० व ।

उद्धृत १.४१४ अ ।

उदभव—यदुवज १.३३७ ।

उद्भाव—१.४१४ अ ।

उद्भिन्न दोष—१.४१४ अ, आहार १.२६१ अ, उद्दिष्ट
१.४१३ अ, वसतिका ३.५२८ अ ।

उद्भेदिज—२.३३४ अ ।

उद्भ्रान्त—१.४१४ अ, नरक पटल निर्देश २.५७६ व,
विस्तार २.५७६ व, अकन ३.४४१ । नारकी—
अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

उद्यवन—१.४१४ अ ।

उद्यानगृह—वसतिका ३.५२७ व ।

उद्यापन—१.४१४ अ, प्रोषधोपवास ३.१६६ व ।

उद्योत—१.४१४ अ, एकेन्द्रिय १.३६३, विकलेन्द्रिय
१.३६४, पचेन्द्रिय १.३६५ ।

उद्योतकर—२.६३४ अ ।

उद्योत नामकर्म प्रकृति—१.४१४ व । प्ररूपणा—प्रकृति
३.८८, २.५८३ अ, स्थिति ४.४६५, अनुभाग १.६५,
प्रदेश ३.१३६, बध ३.६७, बध स्थान ३.११०, उदय-
१.३७५, उदय की विशेषता १.३७३ अ-ब, उदय
स्थान १.३६०, एकेन्द्रिय के उदयस्थान १.३६३,

विकलेन्द्रिय के उदयस्थान १ ३६४, पचेन्द्रिय के उदय स्थान १ ३६५, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्प-बहुत्व १ १७१ ब।

उद्योतन—१ ४१४ अ।

उद्योतनसूरि—१ ४१४ ब, इतिहास १ ३२६ ब।

उद्वर्तन—३.२८२ अ।

उद्वेग—१ ४१४ ब, सुख-दुःख ४.४३० अ।

उद्वेघ—१ ४१४ ब।

उद्वेलनसंक्रमण—उपशमसम्यक्त्व ४.३६६ अ, प्रदेश अल्प-बहुत्व १ १७४ ब, सक्रमण ४ ८४ अ, सत्त्व व्युच्छिन्ति ४ २८१-२८२। एकेन्द्रियो मे सत्त्व ४ २८२।

उद्वेलना—उपशमसम्यक्त्व ४ ३६८ ब, एकेन्द्रिय मे सत्त्व ४ २८२, सक्रमण ४.८४ ब, ४ ८६ ब।

उद्वेलिम—१ ४१४ ब, निक्षेप २ ६०२ ब।

उनचास—सहनानी २ २१६ ब।

उन्नीस—अवधिज्ञान काण्डक १ १६६ ब।

उन्मग्नजला नदी—४ १५ ब।

उन्मग्ना—१ ४१४ ब, विजयार्ध की गुफाओ मे स्थित नदी—निर्देश ३ ४४८ अ, अंकन ३ ४४८ अ, चक्रवर्ती ३ ४ १५ ब।

उन्मत्त—१ ४१४ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।

उन्मत्तेजला—१.४१४ ब, विभगा नदी—निर्देश ३.४६० अ, नाम ३ ४७४ ब, विस्तार ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने।

उन्मान—१.४१४ ब, प्रमाण ३.१४५ अ, हीनाधिक मानोन्मान ४ ५३८ ब।

उन्मार्ग—अशुभोपयोग १ ४३३ ब।

उन्मिश्रदोष—१.४१४ ब, आहार १.२६१ ब, वसतिका ३.५२६ ब।

उन्मुड—यदुवश १ ३३७।

उन्मुख—नारद ४ २१ अ।

उपकरण—१ ४१४ ब, इन्द्रिय १.३०१ ब, जिनलिंग ३ २६ अ, निक्षेपाधिकरण १.५० अ, परिग्रह ३ २६ अ, १ ४१ अ, श्वेताम्बर ४ ७६ ब, बकुश ३ १८० अ, विवेक ३ ५६७ अ, शुद्धि ४.४१ अ, संयोजनाधिकरण १ ५० अ।

उपकल्कि—२.३१ अ।

उपकार—१.४१४ ब, उपदेश १ ४२५ अ, १ ४२६ ब, द्रव्य षट्क २ ६३ ब, २ ६५ अ, निमित्त २ ६१२ अ,

भेदाभेद ४ ३२४ ब, मिथ्यात्व २ २३ अ, शरीर ४ ८ अ।

उपकारक—शरीर ४ ८ अ।

उपकारी—निमित्त २ ६१२ अ।

उपकार्य-उपकारक संबंध—षट्द्रव्य २ ६३ ब, सम्बन्ध ४ १२६ अ।

उपकेशगच्छ—श्वेताम्बर ४ ७७ ब।

उपक्रम—१ ८१६ ब, आयुष्क १ २५६ अ।

उपगूहन—१ ४१६ ब।

उपग्रह—१ ४१७ ब, उपकार १ ४१४ ब, व्यभिचार (शब्द नय) १ ४१७ ब, २ ५३८ अ।

उपघात—१ ४१७ ब।

उपघात नामकर्म प्रकृति—१ ४१७ ब, असातावेदनीय ३ ५६३ ब, परघात नामकर्म ३ ६५ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६५, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ६७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६६ ब।

उपचरित—१ ४१८ अ, सापेक्षधर्म १ १०६ अ, ४ ३२३ ब।

उपचरित-असद्भूतव्यवहार नय—उपचार १.४१६ अ, १ ४२० अ, १ ४२३ अ, नय २ ५६२ अ।

उपचरित नय—नय २ ५६० ब।

उपचरित स्वभाव—स्वभाव १.४१८ अ, ४.५०६ ब।

उपचार—१.४१८ अ, अतिचार १.४३ ब, अभेदोपचार १ ४२३ ब, कर्त्ता-कर्म २.२१-२४, कार्य-कारण २.६६ अ, धर्मध्यान २.४७६ अ, भेदोपचार (नय) २ ५६० ब, व्यवहार नय २ ५६२ ब।

उपचारकथन—कथन २ २२ अ।

उपचारछल—४ ४२३ ब, छल २.३०६ अ, ४.५०६ ब।

उपचार नय—१.४२३ अ।

उपचार विनय—१ ४२३ ब, विनय ३ ५४६ ब, ३.५५१ ब।

उपचितावयव पद—१ ३ ५ अ।

उपदेश—१.४२३ ब, आदेश १ २४६ अ, उपयोग १.४२६ ब, रुचि सम्पत्त्व ४ ३४८ ब, कथन ३.४६६ ब, सत्त्वस्थाना ४ ३६६ अ, साधु ४.४०६ ब।

उपदेशदर्शनार्थ—आर्य १ २७५ अ।

उपदेशसम्पत्त्वार्थ—आर्य १ २७५ अ, ४.३४८ अ।

उपद्रवण—१.४८ अ।

उपद्रावण कर्म—२.२६ अ।

उपधातु—१.४२६ ब, औदारिक शरीर १.४७१ ब।

उपधान—१४२६ ब।

उपधि—१४२७ अ, अवलोक १४० अ, अपवाद मार्ग ११२२ ब, परिग्रह ३२५ ब, ३२६ अ, माया ३२६६ अ, वचन ३४६७ ब, वाक् १४२७ अ, ३४६७ अ, सल्लेखना ४३६० ब।

उपनदन—नदनवन का खंड ३४५० अ।

उपनय—१४२७ अ, अनुमान अवयव १६८ ब, नय २५५६ अ, न्याय २६३३ ब, ब्रह्मवारी १४२७ ब, ३४८८ अ, स्याद्वाद ४५०० अ।

उपनयाभास—१४२७ ब।

उपनिषद् भाष्य—वेदान्त ३५६५ ब।

उपनीति—१४२७ ब, सस्कार ४१५१ ब, १५२ ब।

उपनीतिक्रिया—सस्कार ४१५१ अ, ४१५२ ब, मन्त्र ३२४७ अ।

उपन्यास—१४२७ ब।

उपपत्तिसमा—१४२७ ब।

उपपाण्डुक—पाण्डुक वन का खण्ड ३४५० ब।

उपपाद—१४२७ ब, जन्म २३१७ अ, लब्धिप्राप्त वैक्रियिक शरीर ३६०३ ब, षट्कालगत वृद्धि हानि २६३, समयलब्धि स्थान ३४१४ अ।

उपपादक्षेत्र—१४२७ ब, क्षेत्र २१६२ अ, २१६७-२०७, २३१७।

उपपादगृह—१४२७ ब, देव-भवनो मे २३५१, ३२१० ब।

उपपादज—जन्म २३१२ ब, २३१७ अ।

उपपादयोग स्थान—योगस्थान ३३८१ ब, ३३८२।

उपपादसभा—चैत्य-चैत्यालय २३०३ अ, स्वर्ग विमान ४५२१ अ।

उपपाशर्वसभा—व्यन्तर देवो के भवन ३६१२ ब।

उपबृंहक—उपगूहन १४१७ ब।

उपबृंहण—१४२८ अ, उपगूहन १४१७ अ।

उपभोग—१४२८ अ, परिग्रह ३२७ ब, भोग ३२३७ ब।

उपभोगपरिभोग—अनुभव १८१ अ, अनर्थदंड १६४ ब, सुख ४४३० अ।

उपभोग-परिभोग-परिमाण व्रत—अनर्थदण्ड १६४ ब, सचित्तत्याग प्रतिमा ४१५८ अ।

उपभोगपरिभोगानर्थक्य—१६४ ब।

उपभोग लोभ—लोभ ३४६२ ब।

उपभोगान्तराय कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३८८, १२७ ब, स्थिति ४४६७, अनुभाग १६४ ब, प्रदेश ३१३७। बध ३६७, बंधस्थान ३११०, उदय

१३७५, उदयस्थान १३८७, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४२६४, त्रिसंयोगी भग १३६६। सक्रणम ४८५ अ, अल्पबहुत्व ११६६ ब।

उपमाकाल—गणित २२१७ ब।

उपमान—१४२८ अ, केवलज्ञान २१५० ब, प्रमाण ३१४४ ब।

उपमान-उपमेय संबंध—मतिज्ञान ३२५६ ब।

उपमा प्रमाण—१४२८ अ, गणित २२१८ अ।

उपमा मान—१४२८ अ।

उपमा सत्य—१४२८ अ, सत्य ४२७१ ब।

उपमिति भवप्रपञ्च कथा—इतिहास १३४२ अ।

उपयुक्तदोष—१४२८ अ।

उपयुक्त नोआगम भाव मगल—२६०५ ब।

उपयोग—१४२८ अ, अनुभव १८४ ब, १८५ अ, १८६ अ, अपवाद मार्ग ११२० ब, आकार १२१८ ब, इन्द्रिय १३०२ ब, केवली २१६५ ब, २१६६ अ, पाप-पुण्य १४३३-४३५ अ, मार्गणा ३२६८ अ, योग ३३७७ अ, शुद्धाशुद्ध तथा शुभाशुभ १८५ अ, १८६ अ, ११०० ब, श्रुतज्ञान ४६२ ब।

उपयोगिता क्रिया—सस्कार ४१५२ ब।

उपरतबध—१४३५ अ, आयुर्कर्म १-२६३ अ-ब, बध ३१७२ अ।

उपराग—अशुद्धोपयोग १४३३ ब।

उपरितन कृष्टि—१४३५ अ, कृष्टि २१४१ अ।

उपरितन स्थिति—१४३५ अ, उपशम १४३८ ब, स्थिति ४४५७ अ।

उपरिम कृष्टि—कृष्टि २१४१ अ।

उपरिमग्रं वेयक—४५१८-५२०।

उपरिम द्वीप—१४३५ अ।

उपलब्धि—१४३५ अ, अनुभव १८२ ब, जीव २३३२ अ, बुद्धि ३१८४ ब, मतिज्ञान ४६२ ब, सम्यग्दर्शन ४३५७ अ, हेतु ४५३६।

उपलब्धिसमा जाति—१४३५ ब।

उपवन भूमि—१४३५ ब, समवसरण ४४३० ब।

उपवर्ष—वेदान्त ३५६५ ब।

उपवर्ष—मीमांसा दर्शन ३३११ अ।

उपवास—१४३५ ब, प्रोषधोपवास ३१६३ अ, ३१६४ ब, शुभोपयोग १४३४ ब, सावद्य कर्म ४४२१ ब।

उपविष्टोत्थित—व्युत्सर्ग ३६१६ ब।

उपविष्टोपविष्ट—व्युत्सर्ग ३६१६ ब।

उपवेल्लन—१.४३५ ब, निक्षेप २.६०२ ब।

उपवेशन—आहारान्तराय १ २६ ब

उपशम—१.४३५ ब, करण (अन्तर) १.२५-२६, करण (दश) २६, अपक श्रेणी ४७२ ब, ४६२ ब, गुण-स्थान २६ अ, यत्नायत्न २६७ अ, सख्या ४६२ ब, सम्यग्दर्शन ४३५१ अ।

उपशमकरण—उपशम १.४३८ ब, निषेक १ ३७१ ब।

उपशमकाल—अल्पबहुत्व १ १६१ अ, काल २८१ अ।

उपशमचारित्र—१.४४२ ब, उपशम १.४३६ ब।

उपशमना—अल्पबहुत्व १ १७५।

उपशमश्रेणी—१.४४२ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ अ, परिहार विशुद्धि ३ ३७ अ, प्रवेशको की सख्या ४६४, बद्धायुष्क १ २६२ ब, मरण ३ २८३ अ, श्रेणी ४७३ अ, समुद्घात ४ ३४३ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३६६ अ।

उपशमश्रेणी (प्ररूपणा)—बध २ १००, बधस्थान ३ ११०, ३ १११, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६२, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७७ ब, सत्त्वस्थान ४.२८६, ४ ३०४, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ अ। सत् ४ १६३, सख्या ४६४, क्षेत्र २ १६७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २ १००, अंतर १ ७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १ १४३।

उपशमसम्यग्दर्शन—उपशम १.४३७-४३६, करणत्रिक २६-१४, देव (अपर्याप्त) २ ४४७ ब, पचलब्धि ३ ४१२ अ, परिहारविशुद्धि ३ ३७ अ, मन पर्यय ३ २६६ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३६६ ब। प्ररूपणा—बध ३ १०७, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८५, उदय स्थान १ ३६३, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७१, ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ २८६ ४ ३०४, त्रिसंयोगी भंग १ ४०८ अ। सत् ४ २५५, सख्या ४.१०८ क्षेत्र २ २०६, स्पर्शन ४ ४६२, काल २ ११७, अंतर १ २०१, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५२, भागाभाग ४ ११४।

उपशमसम्यग्दृष्टि—उपशातकषाय ४ ३१२ ब, जीव ४ ३१२ ब, सख्या ४ ८७ अ।

उपशातकर्म—१.४४२ ब।

उपशातकषाय—१.४४२ ब, अवधिज्ञानी ४ ३१२ ब, आरोह अवरोहण २ २४७ अ, अवरोहण का कारण ४ ७३ अ, उपशम १.४३६ ब, करण (दश) २.६ अ, क्षायिक सम्यग्दृष्टि ४ ३१२ ब, परिणह ३.३४ अ, मनुष्य ४ ३१२ ब, वीतराग छंदस्थ १.४४२ ब, संक्लेश विशुद्धि ४ ७३ अ।

उपशातकषाय (प्ररूपणा)—बध ३ ६८, बधस्थान ३ ११०-१११, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६२ अ, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २८६-३०४, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १.१७४, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ अ। सत् ४ १६४, सख्या ४.६४, क्षेत्र २ १६७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २.१००, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ अ, अंतर १ ७, भाव ३.२२२ ब, अल्पबहुत्व १ १४३।

उपशातद्वय—उपशम १.४४१ अ।

उपशातमोह—कषाय २ ४० ब, काय २.४५ ब, दशकरण २ ६ अ।

उपशामक—१.४४३ अ, अपूर्वकरण १.१२५ अ, कषाय २ ४० ब, काय २ ४५ ब, दशकरण २.६ अ, परिहार विशुद्धि ३ ३७ अ, बधक ३ १७६ अ, बद्धायुष्क १ २६२ ब, मरण ३ २८३ अ, श्रेणी ४.७३ अ, समुद्घात ४ ३४३ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६६ अ।

उपशामक (प्ररूपणा)—बध ३.६७, बधस्थान ३ ११०-१११, उदय १ ३७५, उदयस्थान १.३६२, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२७८ ब, सत्त्वस्थान ४.२८६, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ अ। सत् ४.१६३, सख्या ४.६४ क्षेत्र २ १६७, स्पर्शन ४.४७७, काल २ १००, अंतर १.७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १.१४३।

उपसंयत—१.४४४ ब, समाचार ४.३३६ ब, ३३७ अ।

उपसंपदा—१.४४४ ब, सत्लेखना ४.३६० ब।

उपसम्प्र—१.४४३।

उपसर्ग—१.४४३ ब, अन्तातिशय १ ३७ ब, आहारान्तराय १ २६ अ, केवली २ १५७ अ, तीर्थकर २.३७२ ब, सामायिक ४.४१ ब।

उपसौमनस—सौमनस का खड ३ ४५० अ।

उपस्थ (इन्द्रिय)—१.४३ ब, प्रधानता ४.१३६ अ, समय ४ १३६ अ।

उपस्थापना—१.४४४ ब, प्रायश्चित्त ३ १५८ ब, ३ १६२ अ।

उपांग—शरीर १ १, १ २ अ।

उपात्त—१.४४३ ब, भाकिचन्य धर्म १.२२४ ब।

उपादान—१.४४३ ब, असमर्थता २ ६२ ब, २.६६ ब, २ ७३ ब, काय २.५४ अ, २ ६० अ, २ ६१, २.६२, निमित्त २.६ अ, २ ७२ अ, परतंत्रता २ ६२ ब, २.६६ ब, २ ब, प्रधानता २.६२ अ, स्वतन्त्रता २.६० अ।

उपादान-उपादेय संबंध — कारण-कार्य २७३ अ, सम्बन्ध ४१२६ अ ।

उपादेयबुद्धि — सम्यग्दर्शन ४३५६ ब ।

उपाधि — १४४३ ब, अतिचार १४३ ब, साधु ४४१० ब ।

उपाध्याय — १४४४ अ, ओम् १४६६ ब, गुरु २२५१ ब, देवत्व २४४४ ब, ध्येय २५०१ अ, पूजा ३७७ अ, प्रतिमा २३०१ अ, साधु ४४१० अ ।

उपाय-उपेयभाव — कारण-कार्य २५४ ब, सम्बन्ध ३४३३ ब ।

उपायविचय — १४४४-ब, धर्मध्यान २४७६ अ ।

उपालभ — १४४४ ब ।

उपासकाध्ययन — १४४४ ब, श्रुतज्ञान ४६८ अ ।

उपासना — १४४४ ब, विनय ३५५१ ब ।

उपेक्ष — १४४४ ब ।

उपेक्षा — १४४४ ब, ध्यान २४६५ अ, सामायिक ४५१४ ब ।

उपेक्षा संयम — १.४४४ ब, उत्सर्ग मार्ग १.१२१ अ, शुद्धोपयोग १४३१ अ, १४३३ ब, संयम ४१३७ ब ।

उपेय-उपाय संबंध — कारण-कार्य २५४ ब, सम्बन्ध ४१२६ अ ।

उपोद्धात — १४४४ ब, उपक्रम १४१६ ब ।

उप्पल — संख्या प्रमाण २२१४ ब ।

उभयदूषण — १४४४ ब ।

उभयद्रव्य — १४४४ ब, कृष्टि २१४१ ब ।

उभय प्रायश्चित्त — प्रायश्चित्त ३१५८ अ, ब ।

उभयबध — बन्ध ३१७१ अ ।

उभयबंधी प्रकृति — प्रकृति बंध ३८८ ब ।

उभय मन-वचन-योग — मनोयोग ३२७७ ब, वचनयोग ३४६८ अ । प्ररूपणा-बध ३१०४, बधस्थान ३११३, उदय १३७६, उदयस्थान १३६२ ब, उदीरणा १४११ अ, सत्त्व ४२८३, सत्त्वस्थान ४२६६, ४३०५, त्रिसंयोगी भग १४०६ ब । सत् ४२१३, ४२१४, संख्या ४१०२, क्षेत्र २२०२, स्पर्शन ४४८५, काल २१०८, अन्तर ११२, भाव ३२२० ब, अल्पबहुत्व ११४८ अ ।

उभयमोहिनी — सासादन ४४२४ ब ।

उभयशुद्धि — १४४४ ब ।

उभयसारी ऋद्धि — १४४५ अ, ऋद्धि १४४८-४४९ ब ।

उभयातिचार — प्रायश्चित्त ३१५८ ब ।

उभयानंत — अनंत १.५५ ब ।

उभयानंद — शीतलनाथ २३७८ ।

उभयासंख्यात — १४४५ अ, असंख्यात १२०६ अ ।

उभयोदयबंधी प्रकृति — १३६८ अ, प्रकृतिबंध ३८८ ब, ३८९ ब ।

उमा — तीर्थंकर (महाभद्र) २३६२ ।

उमास्वामी — १४४५ अ, निर्दंग १ परि०/४२४, मूलसध १३२२ ब, नन्दिसध १३१८ ब, देशीयगण १३१६ अ, इतिहाम १३२८ ब, १३४० ब ।

उरग — निर्देश २३६७ ब, आयु १२६३ ।

उराल — औदारिक १४७१ अ ।

उरुकुल गण — १.४४५ ब, द्रविड सध १३२० ब ।

उरु बिल्व — १४४५ ब ।

उर्मिमान — यदुर्वश १३३७ ।

उर्मिमालिनी — १४४५ ब, विर्मगा नदी — निर्देश ३४६० अ, नाम ३४७४ ब, विस्तार ३.४८६, ३.४९०, अंकन ३४४४, ३४६४ के सामने ।

उर्वक — १४४५ ब ।

उलूक — अक्रियावादी १३२ अ, एकान्त मत १४६५ अ, वैशेषिक दर्शन ३६०७ ब, स्वप्न ४.५०५ अ ।

उल्का — सुविधिनाथ २३८२ ।

उल्कापात — अजितनाथ आदि तीर्थंकर २.३८२ ।

उवधि — उपधि अतिचार १.४३ ब ।

उशीनर — १४४५ ब, मनुष्यलोक ३२७५ ब ।

उषित अन्त — भक्ष्याभक्ष्य ३२०२ ब ।

उष्ट्रकूट — १.४४५ ब, कृष्टिकरण २१४१ ब ।

उष्ण — परिषह १४४५ ब, ३.३३ ब, ३.३४ अ । योनि १.४४५ ब, ३.३८७ अ ।

उष्मगर्भकूट — १.४४५ ब, मानुषोत्तर पर्वत — निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अंकन ३४६४ के सामने ।

उष्माहार — १४४५ ब, आहार २६६ अ ।

ऊसर — भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब, श्रावक ४.५० ब ।

ऊर्जयंत — १४४५ नेमिनाथ ब, २३८४ अ ।

ऊर्ध्वक्रम — १४४५ ब, २१७२ अ ।

ऊर्ध्वगच्छ — श्रेढी व्यवहार गणित २.२३२ अ ।

ऊर्ध्वगति — १४४५ ब, गति २२३५ अ, जीव २.३३५ ब, मोक्ष ३३२८ ब ।

ऊर्ध्वगमन — गति २.२३५ अ, जीव २.३३५ ब, मुक्ति ३३२८ ब ।

ऊर्ध्वगुह्य — गुह्यत्व २२५३ ब ।

ऊर्ध्वगौरव धर्म — जीवगमन २.२३५ अ ।

ऊर्ध्वप्रवेयक — एवंगं ४.५१८-५२० ।

ऊर्ध्वचय — श्रेढी व्यवहार गणित २२३२ अ ।

ऊर्ध्वप्रचय — १४४५ ब, क्रम २१७२ अ ।

ऊर्ध्वलोक—१.४४५ ब, क्षेत्र २१६१ ब, स्वर्ग—निर्देश
३४४० ब-४४४ अ, ४५१४, चित्र ४५१५। सिद्ध
(अल्पबहुःव) ११५३ अ।

ऊर्ध्वता सामान्य—क्रम २१७२ अ-ब, सामान्य ४४१२ अ।

ऊर्ध्वसामान्य—क्रम २१७२ अ-ब, सामान्य ४४१२ अ।

ऊर्ध्वपूर्ण तप - कायक्लेश २४७ अ।

ऊर्ध्वश—गुण २.२४१ ब।

ऊह—काल का प्रमाण २.२१६ अ।

ऊर्हंग—काल का प्रमाण २.२१६ अ।

ऊहा—१.४४५ ब।

ऊहापोह—हेतु ४५४० ब।

ऋ

ऋक्षराज—१.४४६ अ, वानर वंश १.३३८ ब।

ऋक्षवान—मनुष्य लोक ३.२७५ ब।

ऋजु—मनःपर्यय ३.२६४ अ।

ऋजुकायकृतार्थज्ञ—मनःपर्यय ३.२६४ ब।

ऋजुकूला—वर्द्धमान २.३८४।

ऋजुगति—उपगद् १.४२७ ब, विग्रह गति ३.५४० ब।

ऋजुत्व—मनःपर्यय ज्ञान ३.२६४ अ।

ऋजुमति—१.४४६ अ, मनःपर्यय ३.२६४ ब।

ऋजुमनस्कृतार्थज्ञ—मनःपर्यय ३.२६४ ब।

ऋजुवाककृतार्थज्ञ—मनःपर्यय ३.२६४ ब।

ऋजुसूत्र नय—१.४४६ अ, उपक्रम १.४१६ ब, उपचार
१.४२३ अ, कषाय २.३६ अ-ब, नय २.५२७ ब,
५.२८ अ, ५.३४ ब, निक्षेप २.५६५ अ-ब, सप्तभंगी
४.३१८ ब, ४.३२३ ब।

ऋजुसूत्राभास—नय २.५३५ अ।

ऋण—१.४४६ अ, गणित २.२२२ ब।

ऋत—१.२७२ ब, वचन १.२०८ अ।

ऋतु—१.४४६ अ, कालप्रमाण २.२१६ ब, परिवर्तन
(तीर्थकर) २.३८२, स्वर्ग पटल ४.५१६।

ऋतु (स्वर्गपटल)—सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश
४.५१६, विस्तार ४.५१६, अंकन ४.५१६ ब। देव—
आयु १.२६६।

ऋतुकाल—स्त्री (विवाह) ३.५६५ ब।

ऋतुविहीन फलोत्पत्ति—अर्हन्तातिशय १.१३७ ब।

ऋद्धि—१.४४६ अ, आर्य १.४५७ अ, १.२७४ ब, कुम्भकुन्द

२.१२७ अ, गणधर २.२१२ अ।

ऋद्धिगौरव (दोष)—१.४४६ अ, गारव (भिक्षा) २.२३६
अ, व्युत्सर्ग ३.६२२ ब।

ऋद्धिप्राप्त आर्य—१.४५७ अ, आर्य १.२७४ ब। ऋद्धि
१.४४७।

ऋद्धिमद—१.४५७ अ, मद ३.२५२ ब।

ऋद्धीश—१.४५७ ब, सौधर्म पटल—निर्देश ४.५१६,
विस्तार ४.५१६, अंकन ४.५१६ ब। देव आयु
१.२६६।

ऋषभ—तीर्थकर ऋषभ का चिह्न २.३७६, तीर्थकर
सीमन्धर का चिह्न २.३६२, स्वर १.४५७ ब,
४.५०८ ब।

ऋषभजयन्ती व्रत—१.२४५ ब।

ऋषभनाथ—१.४५७ ब, अच्युत स्वर्ग १.४१ अ, इक्ष्वाकु
वंश १.३३५ अ, कुरुवंश १.३३५ ब, कुलकर ४.२३,
केशलोच २.१७० अ, पूर्व भव २.३७६-३६१, भरत
चक्री ४.११ ब, ४.१६ ब, भोजवंश १.३३६ ब,
राज्यवंश १.३३५ ब, विद्याधरवंश १.३३८ ब,
सोमवंश १.३३६ ब।

ऋषभशासनजयन्तीव्रत—१.२४५ ब।

ऋषभसेन—ऋषभनाथ २.३८७।

ऋषभानन—तीर्थकर २.३६२।

ऋषि—१.४५७ ब, अनगार १.६२ अ।

ऋषिकेश—१.४५७ ब।

ऋषिदास—१.४५७ ब, अनुत्तरोपपादक १.७० ब।

ऋषिपञ्चमी व्रत—१.४५८ अ।

ऋषिपुत्र—१.४५८ अ, इतिहास १.३२६ अ।

ऋषिमंडल यंत्र—१.४५८ अ, यंत्र ३.३४६।

ऋषिवंश—१.४५८ अ, इतिहास १.३३५ ब, सोमवंश
१.३३६ ब।

ऋध्यमूक—मनुष्यलोक का पर्वत ३.२७५ ब।

ए-औ

ए—एकेंद्रिय की सहनानी २.२१६ अ।

एक—१.४५८ अ, एक अग्र २.४८६ अ, एक अजीव कर्म
२.२६ अ, एक अजीव कषाय २.३५ ब, एक क्षेत्रावधि-
ज्ञान १.१८८ ब, एक क्षेत्र स्पर्श ४.४७५ ब, गणित

२.२१४ ब, गृहीत द्रव्य २.२१६ अ, एक जीवानुयोग द्वार १ १०२ अ, एक जीवकर्म २.२६ अ, एक जीव एक अजीव कर्म २.२६ अ, एक जीव नाना अजीव कर्म २.२६ अ, एक जीव कषाय २ ३५ ब, एक जीव एक अजीव कषाय २ ३५ ब, एक जीव नाना अजीव कषाय २ ३५ ब, एक द्रव्य २.४५६ ब, एक नय २.५२४ अ, एक प्रदेशत्व १ १०६ अ, एक प्रदेशी २ ८३ ब, ४.३२३ ब, एक भक्त उपवास १.४५८ ब, ३ १६४ ब, एक-भुक्ति (साधु का गुण) २.१८६ अ, एक विषयक मतिज्ञान ३ २५५ ब, एक यम २ ३०८ ब, सख्या का मान २ २१४ ब ।

एक अंगधर—मूलसंघ १.३१७ ।

एक-अशग्राही ज्ञान—नय २ ५१४ अ ।

एक अग्र—धर्मध्यान २.४८६ अ ।

एक-अजीव कर्म—२ २६ अ ।

एक-अजीव कषाय—२.३५ ब ।

एक-अनत—१ ४६६ अ, अनन्त १ ५६ अ ।

एक-असंख्यात—१ ४६६ ब, असंख्यात १ २०६ अ ।

एक-आसन विहार—अर्हंत ३ ५७५ ब ।

एक-एकसंगति—१ ४५१ अ ।

एक-कर्वटनिद्रा—२ ६०१ ब, कायक्लेश २.४७ ब ।

एकक्षेत्र—अवधिज्ञान १.१८८ ब, स्पर्श ४.४७५ ब ।

एकगृहभोजी—क्षुल्लक २.१८६ अ ।

एकज्ञान सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५४ ।

एकचारित्र सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ।

एकचूड—विद्याधर वश १ ३३६ अ ।

एकजटि—१ ४५८ अ, ग्रह २.२७४ अ ।

एकजीव—अनुयोगद्वार १ १०२ अ ।

एकजीव एक अजीव कर्म—२ २६ अ ।

एकजीव-एक अजीव कषाय—२.३५ ब ।

एकजीव कर्म—२ २६ अ ।

एकजीव कषाय—२ ३५ ब ।

एक-जीव नाना-अजीव कर्म—२.२६ अ ।

एक जीव नाना अजीव कषाय—२ ३५ ब ।

एकट्ठी—१ ४५८ अ । सख्या २.२१४ ब ।

एकत्व—१ ४५८ अ, अध्यास २.५० ब, अन्यत्व १ ७८ अ, उपचार १ ४२१ अ, ज्ञान २ ५४६ अ, २.५४६, बुद्धि ४ ४११ ब, व्यवहार २.५५८ ब, सापेक्ष धर्म १.१०६ अ, १.१११ अ ४.३२३ ब ।

एकत्वप्रत्यभिज्ञान—१.४५८ अ, प्रत्यभिज्ञान ३.१२५ अ ।

एकत्व भावना—१.४५८ अ, अनुप्रेक्षा १.७४ ब, १ ७६ ब,

भावना ३ २२४ ब ।

एकत्वविक्रिया—१ ४५८ अ, विक्रिया ३ ६०२ अ ।

एकत्ववितर्क अविचार—शुक्लध्यान ४ ३४ अ-ब, ३६ अ, धर्मध्यान २.४८३ ब, प्रतिपत्ति ४.३५ ब, केवली २ १६५ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६७ ।

एकत्वसप्ततिका—इतिहास १.३४३ ब ।

एकत्वस्थिति—४.४३२ ब ।

एकत्वानुप्रेक्षा—१.४५८ अ, १ ७४ ब, १.७६ ब, अन्यत्व १.७६ ब ।

एकदिशात्मक—१.४५८ अ ।

एकदेश—१.४५८ अ । अभिघट दोष (आहार) १.२६० ब, अभिघट दोष (उद्दिष्ट) १.४१३ अ, ज्ञान (नय) २.५१३ ब, जिन २.३२८ ब, त्याग (अपवाद मार्ग) १ १२० ब, न्याय (नय) २ ४५० ब, परित्याग (शुभोपयोग) १.४३३ ब, विरक्त (व्रत) ३ ६२७ ब, शुद्ध निश्चय नय २.५५३ ब, हेत्वाभास १.२१० अ ।

एकद्रव्य—२ ४५६ ब ।

एकनय—२.५२४ अ ।

एकनासा—१ ४५८ ब, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३.४६८ ।

एकपदार्थस्थित्व—सापेक्षधर्म १.१०६ अ ।

एकपर्यायमयत्व—सापेक्ष धर्म १ १०६ अ ।

एकपर्व—१.४५८ ब, विद्या ३ ५४४ अ ।

एकपादतप—कायक्लेश २.४७ अ ।

एकपार्श्वशय्यासन—कायक्लेश २ ४७ ब, निद्रा २.६०६ ब ।

एकप्रदेशत्व—सापेक्ष धर्म १ १०६ अ, ४ ३२३ ब ।

एकप्रदेशी—काल द्रव्य २ ८३ ब ।

एकभक्त—१.४५८ ब, प्रोषधोपवास ३.१६४ ब ।

एकभुक्ति—क्षुल्लक २ १८६ अ ।

एकयम—सामायिक (छेदोपस्थापना) २.३०८ ब ।

एकरात्रिप्रतिमा—१.४५८ ब ।

एकरूपत्व—सापेक्ष धर्म १ १०६ अ ।

एकलठाना—१.४५८ ब ।

एकलविहारी—१.४५८ ब, साधु ४ ४०३ ब ।

एकलव्य—१ ४५८ ब ।

एकविंशति—स्वभाव ४.५०६ ब ।

एकविंशति-गुणस्थान-प्रकरण—१.४५८ ब, इतिहास १.३४१ अ ।

एकविध—१ ४५८ ब, मतिज्ञान ३ २५५ ब ।

एकशैल—१ ४५८ ब, विदेह वक्षार—निर्देश ३.४६० अ,

नाम ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३ ४८५, ३.४८६,
वर्ण ३.४७७, अवन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने।
इस पर्वत का कूट तथा देव ३.४७२ ब।

एकश्रेणिवर्गणा—१ ४५८ ब, अल्पबहुत्व १ १५५।

एकसंख्या—१ ४५८ ब।

एकसंग्रह—सल्लेखना ४.३६० ब।

एकसंस्थान—१.४५८ ब, ग्रह २ २७४ अ।

एक सौ उन्हत्तर—शलाकापुरुष ४ ६ ब।

एकस्थान उपवास—कायक्लेश २ ४७ अ।

एकस्थानीय—अनुभाग १ ६१ ब।

एकस्पर्धक वर्गणा—सहनानी २ २१६ अ।

एक हजार आठ—अर्हन्त के लक्षण १ १३८ अ।

एकांग—नमस्कार २ ५०६ अ।

एकांत—१ ४५६ अ, अनेकान्त १.१०७ अ, ४ ३१७ ब,
आगमार्थ १.२३० ब, आलोचना १ २७८, नय
१ १०७ ब, २ ५१६ ब, निषेध १ २३१ ब, मिथ्यात्व
१ ४६४ अ। विविक्त शय्यासन ३.५६५ ब, सप्तभंगी
४ ३१७ ब, सापेक्ष धर्म १.१०६ अ, ४.३१७ ब।

एकांत स्थान—कृतिकर्म २ १३६ ब, व्युत्सर्ग ३ ६२० ब।

एकांतानुवृद्धि—उपशम १ ४३६ ब, योग १ ५०३ अ,
योगस्थान ३ ३८१ ब, १.४६५ ब।

एकातिक—१ ४६५ ब।

एकाकी—विहार ३ ५७३ ब, साधु ४ ४०६ अ।

एकाग्र—१ ४६५ ब, धर्मध्यान २ २८५ अ, ध्यान
२ ४६५ अ-ब, २ ४६६ ब, प्राणायाम ३ १५६ अ,
मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ, स्वाध्याय ४ ५२४ ब।

एकादश—रुद्र ४ २२ अ, प्रतिमा (श्रावक) ४ ४६ ब, व्रत
(श्रावक) ४ ४७ ब, समयस्थान (श्रावक) ४ ४८ ब।

एकादश अंगधर—मूलसंघ १.३१६, १ ३२२। श्रुतकेवली
४ ५६ अ।

एकान्त—१.४६६ अ, अनंत १ ५५ ब।

एकावली व्रत—१.४६६ अ।

एकासंख्यात—१.४६६ ब, असंख्यात १ २१५ अ।

एकीभावस्तोत्र—१ ४६६ ब, स्तोत्र ४ ४४६ ब, इतिहास
१.३४३ अ।

एकेंद्रिय—१.४६६ ब, अंगोपाग नामकर्म १.३७४ अ,
अवगाहना १ १७६, असंज्ञी ४.१२१ ब, इन्द्रिय
१ ३०६ ब, आयु १.२६३-२६४, काययोग ३ ५८७ अ,
जीव समास २ ३४३, तिर्यञ्च २.३६७, मन ४ १२२ ब,
वेद ३.५८७ ब, संक्लेश-विशुद्धि स्थान अल्पबहुत्व

१ १६०, सहनानी २.२१६ अ, स्थावर ४ ४५४ अ।

एकेंद्रिय (जीव)—प्ररूपणा—बन्ध ३ १०३, बन्धस्थान
३ ११३ उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३६२ ब,
उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान
४ २६६, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत्
४ १६३, मर्या ४ ६६, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८३,
काल २ १०६, अन्तर १ ११, भाव ३ २२० ब,
अल्पबहुत्व १ १४५।

एकेंद्रिय जाति नामकर्म—१ ४६६ ब। प्ररूपणा—प्रकृति
३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ६५,
प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ६७, बन्धस्थान ३.११०,
उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा
१ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८,
सत्त्वस्थान ४ ३०३ त्रिसयोगी भग १ ४०४। सक्रमण
४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६६।

एकोनपंचाशत—रज्जु प्रतर २ २१६ ब।

एकोनविंशति—अवधिज्ञान के काण्डक १ १६६ ब।

एतिकायन—१ ४६६ ब, अज्ञानवादी १ ३८ ब, एकान्त
मिथ्यात्वी १ ४६५ अ।

एर—१ ४६६ ब।

एरा—चक्रवर्ती ४ ११ ब, शान्तिनाथ २ ३८०।

एरिगित्तर गण—१ ४६६ ब, इतिहास १ ३२२ अ।

एलावार्थ—१ ४६६ ब, आचार्य १ २४२ ब, कुन्दकुन्द
२ १२६ ब, १२७ अ, इतिहास १ ३२६ ब।

एलापुत्र व्यास—१ ४६६ ब, एकान्त १.४६५ ब, वैनयिक
३.६०५ अ।

एलेय—१ ४६६ ब, वैनयिक ३ ६०५ अ, हरिवंश
१ ३३६ ब।

एवंभूत नय—१ ४६६ ब, उपक्रम १ ४१६ ब, नय २ ५२८
अ-ब, २.५४० ब, निक्षेप २.५६५ ब, सप्तभंगी
४.२२३ ब।

एवंभूत नयाभास—२.५४२ अ।

एवकार—१.४६६ ब, अपेक्षा १.४६१ अ, एकान्त १.४६०
अ, १.४६२ ब, नय ४.३१७ अ, स्यात् ४.४६६ अ,
४ ५०२ अ, स्याद्वाद ४.५०१ अ।

एशान—१.४६७ ब। स्वर्ग—निर्देश ४.५१४ ब, पटल
इद्रक श्रेणीबद्ध ४ ५१६-५२०, उत्तर विभाग ४.५२०
ब, अवस्थान ४.५१४ ब, अकन ४.५१५, चित्र
४ ५१६ ब। देव—अवगाहना १.१८० ब, अवधिज्ञान
१.१६८, आयु १ २६६, आयु के बन्धयोग्य परिणाम
१.२५८ अ। इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब, परिवार

४५१२-५११, उत्तरेन्द्र ४५११ अ, अवस्थान ४५२० ब, चिह्न आदि ४५११ ब, विमान, नगर व भवन ४५२०-५२१।

एशानदेव (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१६२, संख्या ४.६८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

एषणा—१.४६७ ब, दोष (वसतिका) ३.५२६ ब।

एषणाशुद्धि—१.४६७ ब, आहार १.२८५ ब, भक्ति ३.१६६ अ।

एषणासमिति—१.४६७ ब, समिति ४.३४१ अ।

एसोवसवत—१.४६८ अ।

एसोनवसवत—१.४६८ अ।

ऐन्द्रवस्त—१.४५८ अ, वैनयिक ३.६०५ अ, विनयवादी १.४६५ अ।

ऐन्द्रवज्र—पूजा ३.७४ अ।

ऐन्द्रिय दुःख—सुख ४.४३० ब।

ऐन्द्रिय सुख—सुख ४.४३० ब।

ऐतिह्य—१.४६८ अ, इतिहास १.३०६ अ।

ऐरावत (क्षेत्र)—१.४६८ अ, निर्देश ३.४४६ अ, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, कर्मभूमि ३.२३५ ब, काल विभाग २.६२ अ, २.६३, अवगाहना १.१८०, आयु १.२६३-२६४। सत् प्ररूपणा ४.१८४।

ऐरावत (द्रव्य व कूट)—१.४६८ अ, उत्तरकुश का द्रव्य - निर्देश ३.४५६ ब, नाम ३.४७४ अ, विस्तार ३.४६०-४६१, अंकन ३.४४४, ४.५७, ४.६४४ के सामने। कूट—पथ आदि द्रव्य—निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४५४। शिखरी पर्वत का—निर्देश ३.४६२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४। ऐरावत विजयार्ध का—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४।

ऐरावत (हाथी)—१.४६८ अ।

ऐरावती—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

ऐरेगित्तर गण—द्रविडसंघ १.३२० ब, १.३२२ अ।

ऐलक—१.४६८ ब, क्षुल्लक २.१६० अ।

ऐशान - विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, स्वर्ग तथा उसकी प्ररूपणा—दे० एशान।

ऐश्वर्य मय—१.४६६ अ, मय ३.२५६ ब।

ऐहिक फलानपेक्षा—१.४६६ अ।

ऐहिक सुख—सुख ४.४३१ ब।

ओं—३.७ अ।

ओखली—पचमून २.२६ ब।

ओध—१.४६६ अ, अनुयोगद्वार १.१०२ अ, आदेश १.२५६ अ-ब, आलोचना १.४६६ ब, १.२७६ ब। प्ररूपणा—अनुयोग द्वार १.१०३ ब, प्रत्यय ३.१२७ ब, प्रकृति ३.६७, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३७। बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.१०८, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८८ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्व स्थान ४.२८७, त्रिसंयोगी भग १.३६६-४००। सत् ४.१६१, संख्या ४.६४, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४.४७७, काल २.६६, अन्तर १.७, भाव ३.२१६ ब, ३.२२२ ब, अल्पबहुत्व १.१४३, भागाभाग ४.११५।

ओडय्य देव—इतिहास १.३३२ अ।

ओज—१.४६६ ब, अनुयोगद्वार १.१०२ ब, औदारिक शरीर १.४७२ अ, पद १.१०२ ब।

ओजाहार—१.४६६ ब, आहार १.२८५ अ, आहारक १.२६५ अ।

ओद्वावण—१.४६६ ब।

ओम्—१.१०२ ब, १.४६६ ब, पद ३.४ अ।

ओलगशाला—चैत्यवृक्ष ३.५८० अ, भवनवासी देवों के भवन ३.२१० ब।

ओलिक—१.४७० अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

ओसण्ण मरण—मरण ३.२८० अ।

औड—१.४७० अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

औधिक—समाचार ४.३३६ अ।

औडुलोमि—वेदान्त ३.५६५ ब।

औत्पत्तिकी—ऋद्धि १.४४८, १.४५० अ-ब।

औत्सर्गिक लिंग—३.४१७ अ।

औदयिक—अज्ञान १.३७ अ, असिद्धत्व २.२१८ ब, उदय १.४०८ ब, क्षयोपशम २.१८४ अ, पीदगलिक ३.३१८ ब, मिश्र सम्यक्त्व ३.३१० ब, योग ३.३७८ अ, वेदक सम्यक्त्व २.१८३ ब, सन्निपातिक भाव ४.३१२ ब।

औदारिक—१.४७० अ।

औदारिक काययोग—१.४७२ अ, काययोग २.४६ ब, केवली समुद्घात २.१६७ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३.१०४, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८०, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान

१४१२, सत्त्व ४२८३, सत्त्वस्थान ४२६६, ४३०५, त्रिसयोगी भंग १४०७ अ। सत् ४२१७, सख्या ४१०३, क्षेत्र २२०२, स्पर्शन ४४८५, काल २१०८, अंतर ११३, भाव ३२२० ब, अल्पबहुत्व ११४८।

औदारिक चतुष्क—१३७४ ब।

औदारिक द्विक—उदय १३७४ ब, १३७५ ब।

औदारिक-मिश्र-काययोग—१४७२ अ, काययोग २४६ ब, अवस्थान काल २६६ ब। प्ररूपणा—दे० औदारिक काययोग।

औदारिक शरीर—१४७१ अ अवगाहना का अल्पबहुत्व ११५८, प्रदेशों का अल्पबहुत्व ११५७।

औदारिक शरीर अंगोपांग—अंगोपांग ११ ब।

औदारिक शरीर अंगोपांग नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—दे० आगे औदारिक शरीर नाम कर्म प्रकृति।

औदारिक शरीर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा-प्रकृति ३८८, २५८३ अ, स्थिति ४४६३, अनुभाग १६५, प्रदेश ३१३६। बन्ध ३६६-३६७, बन्धस्थान ३११०, उदय १३७५, उदय की विशेषता १३७३ ब, उदयस्थान १३६०, उदीरणा १४११ अ, उदीरणा स्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४३०३, त्रिसयोगी भंग १४०४। सक्रमण ४८५ अ। अल्प-बहुत्व १.१६६ अ।

औदारिक शरीर-बंध—औदारिक औदारिक, औदारिक कार्मण, औदारिक तैजस, औदारिक तैजस कार्मण ३१७० ब। औदारिक वैक्रियिक ३६०३ अ।

औदारिक शरीर वर्णना—वर्णना ३५१४ अ।

औदार्य चिंतामणि—१४७२ ब, इतिहास १३४६ अ।

औदि ध्यावाहन—पूरन कश्यप ३.८२ अ।

औदेशिक—१४७३ अ, आहार १२८७ ब, उद्दिष्ट १४१३ अ।

औद्र—१४७३ अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

औपदेशिक—१४७३ अ, उद्दिष्ट १४१३ अ।

औपपादिक—१.४७३ अ, जन्म २३१२ ब।

औपमन्यु—१४७३ अ, विनयवादी १४६५ अ वैनयिक ३६०५ अ।

औपशमिक चारित्र—उपशम १४३६ अ, चारित्र २२८५ ब।

औपशमिक भाव—१४७३ अ, अपूर्वकरण ११२५ ब, उपशम १४४२ अ, क्षयोपशम २१८४ अ, पौद्गलिक ३३१८ ब, सन्निपातिक भाव ४३१२ ब।

औपशमिक सम्यक्त्व—सम्यग्दर्शन ४३६६ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३१०८, बन्धस्थान ३११३, उदय १३८५,

उदयस्थान १३६३ ब, उदीरणा १,४११ अ, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४३०२, ४३०६, त्रिसयोगी भंग १४०८ अ। सत् ४२५८, सख्या ४१०६, क्षेत्र २१०६, स्पर्शन ४४६२, काल २११८, अन्तर १२० भाव ३२२२ अ, अल्पबहुत्व ११५२।

औपश्लेषिक आधार—१२४६ अ।

औलूक्य—वैशेषिक आचार्य ३६०७ ब।

औषध—विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३४६० अ, नाम ३४७० ब, विस्तार ३४७६-४८०-४८१, अंकन ३४४४, ३४६४ के सामने, चित्र ३४६० अ।

औषधवाहिनी—१४७३ ब, विभगा नदी—निर्देश ३४६० अ, नाम ३४७४ ब, विस्तार ३४८६-४६०, अंकन ३४४४, ३४६४ के सामने।

औषधि—१४७३ अ, आहार १२६३ अ, उदम्बर फल १३६३ ब, ऋद्धि १४७३ ब, १४४७, १४५५ अ, दान २४२३ अ, २४२५ अ-ब, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०१ अ, मधु ३२६० अ, मंत्र ३२४५ ब, वचन ३४०३ अ।

औषधि—विद्याधर वंश १३३६ अ।

औषधि कल्प—१४७३ ब, इन्द्रनन्दि १२६६ ब।

औस्तुभास - १४७३ ब।

क

कंकलि—मल्लिनाथ २३८४।

कंचन—२१ अ, सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४५१६, विस्तार ४५१६, अंकन ४५१६ ब, देव आयु १२६६।

कंचनकामिनी—सम्यग्दृष्टि ४३७६ अ।

कंचनप्रभा—व्यन्तरेन्द्र-त्रिल्लभिका ३६११ ब।

कंजा - २.१ अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

कंजिक व्रत—२१ अ।

कटकहं तप—२१ अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

कंठस्थ कमल—पदस्थ रुद्रान ३६ ब।

कंडक—२१ अ, औदारिक शरीर १४७२ अ।

कंडरा—२.१ अ, औदारिक शरीर १४७२ अ।

कदक—२.१ अ।

कंदबीज—वनस्पति ३५०२ ब, ३५०६ अ ।

कंदमूल—२१ अ, ३५०२ ब, ३५०६ अ । भक्ष्याभक्ष्य ३.१२४ अ ।

कंदरा—वसतिका ३५२८ अ ।

कंदर्प—२१ अ, तीर्थंकर २३७७, नीच देव—निर्देश २१ अ, २४४५ ब, आयुबन्ध योग्य परिणाम १२५८ अ ।

कंदल—अचेलकत्व १४० ब, मनुष्य लोक ३२७५ ब ।

कस—२१ अ, उग्रमेन १३५२ अ, ग्रह २२७४ अ, तौल का प्रमाण २२१५ अ, यदुवण १३३६ ।

कंस (आचार्य)—मूलमध १३१६, इतिहास १३२८ अ ।

कसकवर्ण—२१ ब, ग्रह २२७४ अ ।

ककुत्थ—इक्ष्वाकु वंश १३३५ ब ।

ककली—तीर्थंकर मल्लिनाथ २३८४ ।

कच्छ—२१ ब, गणधर २, २१३ अ, मनुष्य-लोक ३.२७५ ब ।

कच्छ (कूट)—गजदन्त का कूट व देव—निर्देश ३४७३ अ, विस्तार ३४८३, ३४८५, ३४८६, अंकन ३.४४४, ३४५७ ।

कच्छउड—अण्डर १.२ अ, आवास १.२८० ब, पुलवी ३.७१ ब ।

कच्छ परिगित—२१ ब, व्युत्सर्ग दोष ३६२२ ब ।

कच्छवद—२१ ब ।

कच्छविजय—२१ ब ।

कच्छा—विदेह की नगरी—निर्देश ३४६० अ, नाम ३.४७० ब, विस्तार ३४७६-४८०-४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३४६० अ । वक्षारगिरि का कूट तथा देव ३४७२ ब ।

कच्छावती—विदेह की नगरी—निर्देश ३.४६०, नाम ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६-४८०-४८१ अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने । वक्षारगिरि का कूट तथा देव ३.४७२ ब ।

कछुआ—इन्द्रिय (प्रत्याहार) ३.१३४ अ । मुनिसुव्रतनाथ २.३७६ ।

कज्जलप्रभा—सुमेरु के बनो की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नाम ३.४७३ ब, विस्तार ३४६०-४६१, अंकन ३.४५१, चित्र ३४५१ ।

कज्जला—२.१ ब, सुमेरु के बनो की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नाम ३.४७३ ब, विस्तार ३.४६०-४६१, अंकन ३.४५१, चित्र ३४५१ ।

कज्जलाभा—२.१ ब, सुमेरु के बनो की पुष्करिणी—निर्देश

३.४५३ ब, नाम ३.४७३ ब, विस्तार ३४६०-४६१, अंकन ३.४५१, चित्र ३४५१ ।

कज्जली—२.१ ब, ग्रह २२७४ अ ।

कटक—२.१ ब ।

कटपू—सर्वायुध तीर्थंकर २.३७७ ।

कटुवचन—२१ ब, गुरु २.२५३ अ, सत्य ४२७२ ब, ४२७३ अ, समिति ४३४० ब ।

कटु—२.१ ब ।

कठूमर—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब, श्रावक ४५० ब ।

कठोरवचन—उपदेश १४२५ अ, गुरु २.२५३ अ, सत्य ४२७२ ब, ४२७३ अ, समिति ४३४० ब ।

कडली—२.२६ ब ।

कणभक्ष—एकान्त (कणाद) १४६५ अ, परवाद ३२३ अ, वैशेषिक दर्शन ३६०७ ब, ३६०८ अ ।

कणाद—एकान्त अमर्त्यवादी १४६५ अ, परवाद ३२३ अ, वैशेषिक दर्शन ३६०७ ब, ३६०८ अ ।

कणाद रहस्य—वैशेषिक दर्शन ३६०८ अ ।

कण्व—२१ ब, अज्ञानवादी १३८ ब, एकान्ती १४६५ अ ।

कथचित्—२१ ब, नय २.५२५ अ, स्यात् ४४६६ अ, स्याद्वाद ४४६७ ब, ४५०० ब ।

कथन पद्धति—उपदेश १.४२५ अ ।

कथा—२.२ अ ।

कथाकोष—२.३ ब, इतिहास—बृहत्कथाकोष १३४२ ब, १.३४३ ब, पुण्यास्त्र १.३४५ अ । देवेन्द्रकीर्ति कृत १.३४७ ब, १.३३३ ब ।

कथान—संख्या प्रमाण २.२१४ ब ।

कथा-विचार—इतिहास १३४४ ब ।

कदंब—२४ अ, गन्धर्व २.२११ अ, वासुपूज्यनाथ २.३८३ । नवणसागर का पर्वत—निर्देश ३४७४ ब, विस्तार ३४७८, अंकन ३४६१ ।

कदंबवंश—२४ अ ।

कदलीगृह—भवनवासी देवों के भवनो मे ३.२१० ब ।

कदलीघात—२४ अ, अपवर्तन १११६ ब, आयु १.२६१ अ, मरण ३.२८४ अ ।

कनक—२४ अ, कुलकर ४२५ अ, ग्रह २.२७४ अ, अजितवीर्य तीर्थंकर २.३६२ । व्यन्तरदेव—क्षोद्रवर द्वीप का रक्षक ३.६१४, घृतवरसागर का ३.६१४ ।

कनक (कूट)—२४ अ, सौमनस गजदन्त का—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४५७, ३.४४४ । मानुषोत्तर पर्वत का—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६ अंकन ३.४६४ । कुडलवर पर्वत का—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन

३४६७। रुचकवर पर्वत का ३४७६ अ, विस्तार ३४८७, अंकन ३४६८-४६९।
 कनकचिह्ना—२४ अ रुचकवर के कूट की देवी—निर्देश ३४७६ ब, अंकन ३४६८, ३४६९।
 कनकछवज—२४ अ, कुलकर ४२५ अ।
 कनकनन्दि—२४ अ, नन्दिसघ देशीय गण १३२५।
 इतिहास—प्र १३३० ब, १३४२ ब, द्वि. १३३१ ब।
 कनकपगत्व—कुलकर ४२५ अ।
 कनकपाद—कदर्प तीर्थकर २३७७।
 कनकपाषाण—भव्य ३२१२ अ।
 कनकपुख—कुलकर ४२५ अ।
 कनकपुजधी—विद्याधर वंश १३३९ अ।
 कनकप्रभ—२४ अ, कुमकर ४२५ अ, घृतवर सागर का देव ३६१४। कुडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३४७५ ब, विस्तार ३४८७, अंकन ३४६७।
 कनकमञ्जरी—विद्याधर वंश १३३९ अ।
 कनकमाला—अमुरेन्द्र की अग्रदेवी ३२०९ अ, वैमानिक दक्षिणेन्द्रो की वल्लभिका ४५१३ ब।
 कनकराज—कुलकर ४२५ अ।
 कनकश्री—अमुरेन्द्र की अग्रदेवी ३२०९ अ।
 कनकसंस्थान—ग्रह २२७४ अ।
 कनकसेन—२४ अ, इतिहास १३२९ ब, १३३० ब।
 कनका—२४ अ, रुचकवर पर्वत की देवी—निर्देश ३४७६ अ-ब, अंकन ३४६८-४६९।
 कनकाभ—२४ अ, चक्रवर्ती ४१० अ, क्षौद्रवर द्वीप का देव ३६१४, घृतवर सागर का देव ३६१४।
 कनकामर—इतिहास १३३० ब, २३४२ ब।
 कनकावली वत—२४ अ।
 कनकोज्ज्वल—२४ अ।
 कनिष्क—२४ अ, इतिहास १३१४।
 कन्नौज—२४ ब।
 कन्या अलीक—सत्य ४२७३ ब।
 कपट—आर्जव १२७२ अ।
 कपाटसमुद्घात—२४ ब, केवली २१६६ ब, लेख्या ३४२५ ब, ३४२८ ब।
 कपिकेतु—वानर वंश १३३८ ब।
 कपित्थमुष्टि—२४ ब, व्युत्सर्ग दोष ३६२२ अ।
 कपिल—२४ ब, अक्रियावादी १३२ अ, एकान्त मती १४६५ अ, परवाद ३२३ अ, सांख्यदर्शन ४३९८ ब।
 कपिल—यदुवंश १३३७।
 कपिला—यदुवंश १३३७।

कपिशा—२४ ब।
 कपीवती—२४ ब, मनुष्यलोक ३२७५ ब।
 कपोत लेख्या—दे० कापोत लेख्या।
 कफ—२४ ब, औदारिक शरीर १४७२ अ।
 कमंडलु—अथालन्द चारित्र १४६ अ, अपवाद मार्ग ११२२ ब, निक्षेपाधिकरण १४९ ब, समिति ४३४१ अ, सल्लेखना १४६ अ।
 कमठ—२४ ब।
 कमल—२४ ब, अर्हन्तातिशय ११३७ ब, काल-प्रमाण २२१६ अ, २२१७ अ, तीर्थकर २३६९, २३९१, मन्त्र ३६ अ, स्थापना ३६ अ।
 कमल (द्रहों में)—कुलाचल के द्रहो में—निर्देश ३४८६ ब, पृथिवीकाय ३५७८ ब, गणना ३४४६ अ, विस्तार ३४९१, वर्ण ३४७७, अंकन ३४५१, ३४५४, चित्र ३४५४।
 कमलकीर्ति—काष्ठा सघ १३२७ अ।
 कमलगुलम—चक्रवर्ती ४१० ब।
 कमलप्रभा—व्यन्तरेन्द्र वल्लभिका ५६११ ब।
 कमलबन्धु—इक्ष्वाकु वंश १३३५ ब।
 कमलभद्र—सेनसघ १३२६ अ।
 कमलभव—२४ ब, इतिहास १३३२ ब।
 कमलांग—२४ ब, काल-प्रमाण २२१६ अ, २२१७ अ।
 कमला—व्यन्तरेन्द्र वल्लभिका ३६११ ब।
 कमेकुर—२४ ब, मनुष्यलोक ३२७५ ब।
 करकंडुचरित्र—२४ ब, इतिहास १३३३ ब।
 करण—२४ ब, उपशम १४३७ अ, क्षयोपशम २१८६ अ, क्षायोपशमिक सम्यक्त्व ११८५ अ, निमित्त कारण २६११ अ, शरीर ४६ ब, संयम तथा संयमासंयम २१८५ ब।
 करणकारक—कर्ता कर्म २१७-१८, कर्म २१७ ब, कारक २४८ ब, कारण-कार्य २५६ ब।
 करणविह्वल—अवधिज्ञान ११९१ ब, ११९२ अ-ब।
 करणलब्धि—२६-१४, उपशम १४३८ अ, लब्धि ३४१२ ब, ३४१३ ब, सम्यग्दर्शन ४३६२ ब।
 करणानुयोग—१९९-१०१ अ, स्वाध्याय ४५२३ ब।
 करभवेदिनी—२१४ ब, मनुष्यलोक ३२७५ ब।
 करीरी—२१४ ब, मनुष्यलोक ३२७६ अ।
 करुणा—२१४ ब, अनुकंपा १६९ अ, जीवकरुणा २१५ अ।
 करुणावत्ति—दान २४२२ ब, २४२७ ब।
 करेण किञ्चिद्ग्रहण—आहारान्तराय १२९ ब।
 करोत क्रिया—२१५ ब, चेतना २२९९ अ।

कर्कराज—२.१५ ब, राष्ट्रकूटवश १ ३१५ ब ।

कर्कोटक—२.१५ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, यदुवश १ ३३७ ।

कर्ण—२.१५ ब, कुरुवश १ ३३६ अ ।

कर्णगोभि—२.१५ ब ।

कर्णपार्य—इतिहास १ ३३१ ब ।

कर्णविधि—२.१५ ब ।

कर्णसुवर्ण—२.१५ ब ।

कर्त्तव्य—२.१५ ब, धर्म २ ४७१ ब, श्रावक ४ ५१ अ ।

कर्ता—२.१५ ब, आत्मा १ ४३४ ज्ञान २ २६१ ब, चेतना २ २६८ अ-३००, द्रव्य २ ४५७ अ, सत् ४ १६० अ ।

कर्ताकारक—कर्ता-कर्म २ १६-२४, कर्म २ १७ ब, कारक २ ४८ ब ।

कर्ताबुद्धि—अज्ञानी (चेतना) २ २६६ ब ।

कर्तावाद—२.२४ ब, परमात्मा (ईश्वर) ३ २० ब ।

कर्तृत्व—२.२४ ब, उपकार १ ४१५ अ, कर्ता २ २४ अ, ज्ञान २ २६१ ब ।

कर्तृत्वनय—२.५२३ ब, २.५२४ अ ।

कर्तृसमवायिनी क्रिया—क्रिया २ १७३ अ ।

कर्त्रन्वादि क्रिया—संस्कार ४ १५२ ब ।

कर्नाटक—२.२५ अ ।

कर्बुक—२.२५ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ ।

कर्म—२.२५ अ, ईश्वरत्व ३ २१ ब, ईश्वर-कर्तृत्व ३.२१ ब, गमन ३७३ अ, ज्ञानी २ ६८ अ, नय १ ५५६ ब, नियति-पुरुषार्थ २.६१६ अ, पौद्गलिकत्व ३ ३१७ अ, बन्ध ३ १७३ अ, मिथ्यादृष्टि २ २६७ ब, मूर्तत्व ३ ३१७ अ, यत्न २ ६८ अ, वर्ण-व्यवस्था ३ ५२४ ब, श्रावक ४.५१ ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७७ ब, स्कन्ध ४ ४४७ ब ।

कर्मकांड—इतिहास १ ३३३ ब ।

कर्मकारक—कर्ता-कर्म २ १६-२४, करण कारक २ १७ ब, कारक २ ४८ ब ।

कर्मक्षयव्रत—मिथ्यादृष्टि तथा सम्यग्दृष्टि ३.३०७ अ, हेतु (मोक्षमार्ग) ३ ३३६ अ ।

कर्मक्षयव्रत—२.२६ ब ।

कर्मज्ञान मंत्री—उपयोग १.४३२ अ, ज्ञान २ २६१ ब ।

कर्मचूर व्रत—२.२६ ब ।

कर्मचेतना—चेतना २ २६७ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७६ अ ।

कर्मजस्वभाव—स्वभाव ४.५०६ ब ।

कर्मजा ऋद्धि—१ ४५० अ ।

कर्म तद्ब्यतिरिक्त नोआगम—अनन्त १.५५ ब, द्रव्य-निक्षेप २.६०० ब ।

कर्मत्वं—२.२६ ब ।

कर्मदहन यत्र—३.३५० ।

कर्मनारकी—१ ५७२ अ ।

कर्मनिर्जरा व्रत—२.२६ ब ।

कर्मनोआगम—उपशम १.४३७ ।

कर्मप्रकृति—अनेक रूप से परिणमन ३ ६१ ब, करण दशक २ ५ ब । प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १ ६५, अनुभाग का अल्पबहुत्व १ १६६, प्रदेश ३ १३६ । बन्ध ३६७, बन्धस्थान ३ १०८, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७, आबाधा १.२४६ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २८७ त्रिसंयोगी भग १ ३६६ । मक्रमण ४ ८५ अ, अतर १ २३, अल्पबहुत्व १.१६८ । चूर्णी २ ६३८ अ ।

कर्मप्रकृति (शास्त्र)—इतिहास १.३२६ अ, १.३३२ अ । १ ३४५ अ ।

कर्मप्रकृति टीका—इतिहास १ ३३३ ब ।

कर्मप्रकृतिरहस्य—२.२६ ब, अभयनन्दि १ १२७ अ, इतिहास १ ३४२ ब ।

कर्मप्रकृतिविधान—२.२६ ब ।

कर्मप्रकृतिसंग्रहिणी—इतिहास १ ३४१ अ ।

कर्मप्रवाद—२.२६ ब, श्रुतज्ञान ४ ६६ ब ।

कर्मप्राभूतटीका—२.२६ ब, इतिहास १.३४० अ ।

कर्मफल—उदय १ ३६७ अ, कर्म २ २७ ब, जीव परिणाम २ ७४ अ ।

कर्मफलचेतना—चेतना २ २६७ ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७६ अ, ४ ३७७ ब ।

कर्मबन्ध—उपयोग १ ४३१ ब, जीवकर्म कारण-कार्य सम्बन्ध २ ६७ अ, २ ७० अ, २ ७१ ब, २.७२ अ, २ ७४ अ, बन्ध ३ १७० अ, ३.१७२ ब, ३ १७७ अ, विभाव ३ ५५६ ब, ३ ५६१ अ, शुद्ध परिणाम १.४३४ ब, समयप्रबद्ध ४.३२८ ब ।

कर्मबधक—बन्ध ३.१७६ अ, सख्या तथा भागाभाग ४ ११७ अ ।

कर्मभाव—कारण २ ६७ अ-ब ।

कर्मभूमि—निर्देश ३.२३५ अ, गणना ३.४४५ अ, जीवसमास २ ३४३ अ, मनुष्य ३.२७३ ब, म्लेच्छ ३.३४५ ब, षट्काल व्यवस्था २ ६३ । अवगाहना १.१८०, आयु १ २६१ ब, २६२ अ-२.६३-२६४ ब, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १.२५५ अ-ब, आहार प्रमाण १ २८५ ब, कर्म का उदय १.३७६, १.३७७, कर्म की स्थिति ४ ४६२, वेदभाव ३.५८७ अ, सत

प्ररूपणा ४.१८४-१८५, सम्यक्त्वादि गुण ३ २३५ ब ।
 कर्ममीमांसा—दर्शन २.४०२ ब, ४०३ ब ।
 कर्मयोग—चेतना २ २६८ अ ।
 कर्मवर्गणा—कर्म २ २७ अ-ब, वर्गणा ३ ५१२ ब ।
 कर्मविपाक—उदय १ ३६६ अ, इतिहास १ ३३० अ,
 १ ३४२ अ, १.३४५ ब ।
 कर्मविस्त्रसोपचय—लेख्या ३ ४२५ अ ।
 कर्मव्यक्ति—कर्म २ २६ अ ।
 कर्मव्युच्छित्ति—मोक्ष ३ ३३१ अ ।
 कर्मशक्ति—२ ३० अ ।
 कर्मश्लेष—कषाय २.३५ अ ।
 कर्मसमवायिनी क्रिया—क्रिया २.१७३ अ ।
 कर्मस्कंध—कर्म २ २७ ब ।
 कर्मस्तव—२.३० अ, इतिहास १ ३४१ ब, १ ३४५ अ,
 २.६३७ अ ।
 कर्मस्पर्श—स्पर्श ४ ४७६ अ ।
 कर्माधीन—कारण (यत्न) २ ७१ ब ।
 कर्मर्षि—आर्य १ २७४ ब ।
 कर्मावस्था—कारण (यत्न) २ ६७ अ ।
 कर्माहार—आहार १ २८५ अ, आहारक १ २६५ अ ।
 कर्मोदय—अध्यवसान १ ५३ अ, उदय १ ३६६ अ । कर्म
 जीव का कारण-कार्य भाव—जीव परिणाम २.६७ ब,
 २ ७० अ, २ ७२ अ, २ ७४ अ, मोक्ष २ ७४ ब, मोक्ष-
 मार्ग २ ७४ ब । विभाव (ज्ञानी ३ ५६० ब ।
 कर्मोपाधिनिरपेक्ष-सापेक्ष नय—२.३० अ, शुद्ध द्रव्याधिक
 नय २.५४४ ब, अशुद्ध द्रव्याधिक नय २.५४५ अ,
 २ ५५२ अ ।
 कर्बट—२ ३० अ, निद्रा २ ६०१ ब, बलदेव ४.१७ ब ।
 कर्षण—कषाय २ ३५ अ ।
 कलकल पृथिवी (आठवीं)—नरक २ ५७६ ब ।
 कलघोतनन्दि—देशीयगण १ ३२४ ब, इतिहास १ ३३० अ ।
 कलश—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ, तीर्थकर मल्लिनाथ
 २ ३७६, यापनीय सघी साधु १ ३१६ ब, समयसार
 १ ३४२ अ, स्वप्न ४ ५०४ ब ।
 कलह—२.३० अ ।
 कलहपाहुड—प्राभूत ३.१५६ ब ।
 कला—२.३० अ, कालप्रमाण २.२१७ अ, व्यन्तरेन्द्र
 गणिका ३ ६११ ब, सुखांश ४.४३४ ब ।
 कलिंग—२ ३० अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ-ब, वैदिका-
 भिमत देश ३ ४३१ ब ।
 कलि ओज राशि—ओज १.४६६ ब ।
 कलिकाल—कल्की २.३१ अ, कुन्दकुन्द (सर्वज्ञ) २.१२८ अ,

धर्मध्यान ३ ४६८ अ, प्रव्रज्या ३ १५० अ ।
 कलिकालसर्वज्ञ—कुन्दकुन्द २ १२८ अ ।
 कलिकुडदंडयंत्र—यंत्र ३ ३५० ।
 कलिचतुर्दशी व्रत—२.३० अ ।
 कलुषता—कषाय २ ३५ अ ।
 कलेवर—२ ३० अ, ग्रह २ २७४ अ ।
 कल्की—२ ३० अ, इतिहास १.३११ अ, १ ३१५ अ ।
 कल्प—२ ३१ ब, स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१० अ, पटल
 ४ ५१४ ब, दक्षिण-उत्तर विभाग ४.५२० ब ।
 कल्पकाल—निर्देश २.८८, आर्यखण्ड १ २७५ अ ।
 कल्पदशक—२ ३१ ब, साधु ४ ४०४ ब ।
 कल्पद्रुम—पूजा ३ ७४ अ ।
 कल्पपुर—२ ३१ ब, मनुष्यलोक ३ २७१ अ ।
 कल्पभूमि—२.३१ ब, समवसरण ४.३३० ब ।
 कल्पवासी देव—निर्देश २ ४४५ ब, ४ ५१० ब, चैत्य-
 चैत्यालय मे—२ ३०३ अ, २ ३०४ अ । अवगाहना
 १ १८०, अवधिज्ञान १.१६८ ब, आयु १ २६६-२६८ ।
 प्ररूपणा—बध ३.१०२, बधस्थान ३ ११३, उदय
 १ ३७८, उदय स्थान १.३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ,
 सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४ ३०५, त्रिस-
 योगी भग १.४०६ ब । सत् ४ १६२, संख्या ४ ६८,
 क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर
 १.१०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५ ।
 कल्पवृक्ष—२ ३१ ब, वृक्ष ३.५७८ ब, स्वप्न ४ ५०५ अ ।
 कल्पव्यवहार—२ ३१ ब, श्रुतज्ञान ४ ६६ ब ।
 कल्पशास्त्र—शास्त्र ४ २८ अ, सल्लेखना ४.३६४ ब ।
 कल्पाकल्प—२.३१ ब, श्रुतज्ञान ४ ६६ ब ।
 कल्पातीत विभाग—निर्देश ४ ५१० अ, पटल व विमान
 ४.५१४ ब । देव—अवगाहना १ १८१ अ,
 अवधिज्ञान १ १६८ ब, आयु १.२६८-२६९ । प्ररूपणा
 —बध ३ १०२, बधस्थान ३ ११२, उदय १ ३७८,
 उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व
 ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४ ३०५, त्रिसयोगी
 भग १.४०६ ब । सत् ४ १६२, संख्या ४ ६८, क्षेत्र
 २ २००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर
 १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५ ।
 कल्पोपपन्न देव—निर्देश ४.५१० अ, अवगाहना १ १८०
 अ, अवधिज्ञान १.१६८ ब, आयु १ २६६-२६८ ।
 कल्पव्यवहार—२ ३१ ब, श्रुतज्ञान ४ ६६ ब ।
 कल्प्याकल्प्य—२.३१ ब, श्रुतज्ञान ४.६६ ब ।
 कल्याण—२.३१ ब, श्रुतज्ञान ४.७० अ, यापनीय सघ
 १.३१६ ब ।

कल्याणक—२३१ ब, तीर्थकर २.३७३ अ-ब, सुमेरु पर्वत ३.४५० ब।

कल्याणकव्रत—२३३ अ।

कल्याणकारण—उग्रादित्य १.३५२ अ, इतिहास १.३४२ अ।

कल्याणकीर्ति—इतिहास १.३३३ अ।

कल्याणत्रैलोक्यसार यन्त्र—यन्त्र ३.३५१।

कल्याणमंदिरस्तोत्र—२३३ ब, स्तोत्र ४.४४६ अ, इतिहास १.३४१ अ।

कल्याणमाला—२३३ ब।

कल्याणवाद पूर्व—श्रुतज्ञान ४.६६ अ।

कल्ली—२.३३ ब, मनुष्यलोक ३.२७५।

कल्लोल—छयेय २.५०० अ।

कलेशवणिज्या—अनर्थदण्ड १.६३ अ।

कवच—सल्लेखना ४.३६० ब, ४.३६२ अ, ४.३६६ अ।

कथयव—१.३३ ब, ग्रह २.२७४ अ।

कवल—आहार १.२८५ ब।

कवल चन्द्रायण व्रत—२.३३ ब।

कबलाहार—२.३३ ब, आहार १.२८५ अ, आहारक १.२६५ अ, केवली २.१५६ अ।

कवाटक—२.३३ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

कश्मीर हून वंश १.३११ ब।

कश्यप—राज्यवंश १.३३५ अ।

कषना—कषाय २.३५ अ।

कषाय—२.३३ ब, अध्यवसाय स्थान १.५३ अ-ब, अशुभोपयोग १.४३३ ब, अजीव द्रव्य २.३७ ब, आयु-वध स्थान १.२५६ अ, उपयोग १.४३२ ब, कषाय (जीव द्रव्य) २.३७ अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, जन्म २.३१८ अ, परिग्रह ३.२६ अ, प्रत्यय (अविरति) ३.१२७ अ, प्रत्यय (प्रमाद) ३.१२६ अ, प्रत्यय (उदय व्युच्छिति) ३.१२७-१३०, बध ३.१७५ अ, ३.१७८ ब, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ, मोहनीय ३.३४४ अ, लेश्या ३.४२२ ब, ४.४३७ अ-ब, विभाव ३.५५८ ब, शक्ति २.३८ अ, संक्रमण ४.८६ अ, संयम ४.१२६ ब, ४.१३६ अ, संस्कार ४.१५० अ, सल्लेखना ४.३८२ अ, ४.३८३ अ, ४.३६६ अ, साधु ४.४०८ ब, सामायिक ४.४१५ ब, सासादन ४.५२५ अ, हिंसा १.२२६ अ, २.१७ ब, ४.५३४ अ।

कषायकालक—अल्पबहुत्व १.१६१ अ।

कषायकुशील—कुशील साधु २.१३१ अ, श्रुतकेवली ४.५५ ब।

कषायविग्रह—मोक्षमार्ग ३.३३६ अ, समय ४.१३६ ब, १.१३६ अ, सल्लेखना ४.३८२ अ, ४.३८३ अ,

४.३६६ अ, सामायिक ४.४१५ ब।

कषायपाहुड—२.४१ अ, इतिहास १.३४० अ-ब, टीका १.३४१ ब।

कषायप्रत्यय—अविरति ३.१२७ अ, प्रमाद ३.१२६ अ, उदय व्युच्छिति ३.१२७-१३०।

कषायप्रवृत्ति—लेश्या ३.४२२ ब, ३.४२४ अ, ३.४२४ ब।

कषायप्राभूत—उच्चारणाचार्य १.३५२ अ।

कषायमार्गणा—कषाय २.३५ ब, काल २.६७ अ, प्ररूपणा—बन्ध ३.१०५, बन्धस्थान ३.११३, आयुबन्ध के स्थान १.२५६ अ, उदय १.३८२, उदयस्थान १.३६३ अ, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.१८३, सत्त्व स्थान ४.२८७, ४.३००, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०७ अ। सत् ४.२२८, संख्या ४.१०५, भागाभाग ४.११७, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४.४८८, काल २.११२, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६०-१६१, अतः १.१५, भाव ३.२२१, अल्पबहुत्व १.१४६। स्वामित्व—पच शरीर ४.७, अल्पबहुत्व १.१५६, षट्कर्म ४.२६६।

कषायशक्ति—कषाय २.३८ अ।

कषायसमुद्घात—निर्देश ४.३४३, कषाय २.४० ब, क्षेत्र २.१६७-२०७, सत् ४.३४३, स्पर्शन ४.४७७-४६४।

कसेरू—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

कहाण छप्पय—२.४१ ब।

कांगधुनी—२.४२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

कांचन—द्वीप सागर २.४१ ब, राक्षस वंश १.३३८ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, स्वर्ग पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४.५१६ ब, देव की आयु १.२६६।

कांचन (कूट)—२.४१ ब, रुक्मि पर्वत—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४। रुक्मि पर्वत—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८-४६९। शिखरी पर्वत—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४। सौमनस गजदन्त—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ ३.४५७।

कांचन (गिरि)—२.४१ ब, देव तथा उत्तर कुरु मे स्थित पर्वत—निर्देश ३.४५३ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ४८६, वर्ण ३.४७७, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४५३ अ।

कांचन (देव)—२.४१ ब, कांचनगिरि का देव ३.४५३ अ, ३.६१३ अ।

कांचन (द्वीप, सागर)—२.४१ ब, निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अंकन ३.४४३, जल का रस

३४७० अ, ज्योतिषचक्र २३४८ ब, अधिपति देव ३६१४।

कांचनपुर—२४१ ब। मनुष्यलोक ३२७६ अ।

कांचना (कानना) —रुचकर पर्वत की दिक्कुमारी—
निर्देश ३४७६ अ, अकन ३४६८, ३४६९।

कांचीपुर—२४१ ब।

कांजी आहार—२४१ ब, भक्ष्याभक्ष्य ३२०३ ब, सल्लेखना ४३६३ ब।

कांजी बारस व्रत—२४१ ब।

कांजीर—अनुभाग १६० ब।

कांटा—कायक्लेश २४७ ब।

कांडक—२४१ ब, अपकर्षण १.११७ अ, आबाधा १.२४८ ब, द्रव्य २४१ ब, सक्रमण ४८४ अ।

कांडक आयाम—२४१ ब।

कांडक घात—अनिवृत्तिकरण २१३ ब, अपकर्षण १.११६ ब, अपवर्तन १.११७ ब, अपसरण १.११७ अ, अल्पबहुत्व १.१७६, बन्धापसरण १.११७ अ।

कांडक द्रव्य—२४१ ब।

कांडक सक्रमण—सक्रमण ४८४ अ।

कांडकोत्करण काल—२४२ अ।

कांतमाला—कुलकर ४२३।

कांपिल्य—विमलनाथ २३७६।

कांबोज—२४२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ-ब।

काकंदी—सुविधिनाथ २.३७६।

काक—आहारान्तराय १.२६ अ।

काकतालीय न्याय—२.४२ अ, नियति २६१५ ब।

काकवर्ण—मगधदेश १.३१२।

काकदिपिंडहरण—आहारान्तराय १.२६ अ।

काकावलोकन—२.४२ अ, व्युत्सर्ग ३६२१ ब।

काकिणी—२४२ अ, चक्रवर्ती का रत्न ४१३ अ, ४१५ ब।

काकुस्थ चारित्र—२.४२ अ।

काक्षी—२४२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।

काणभिक्षु—इतिहास १.३२६ ब।

काणोविद्ध—२४२ अ, एकान्त मती १.४६५ अ, क्रिया-
वादी २१७५ ब।

काणह—२४२ अ।

कातन्त्ररूपमाला—इतिहास १३४४ ब।

कानना—२४२ अ, रुचक पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अकन ३४६९।

कान्यकुब्ज—२४२ ब।

कापिष्ठ—यदुवंश १३३७। स्वर्ग—२४२, निर्देश ४५१४ ब, पटल इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४५१८-५२०, उत्तर विभाग ४.५२१ अ, अवस्थान ४५१४ ब, अंकन ४५१५। इन्द्र—निर्देश ४५१० ब, उत्तरेन्द्र ४५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, अवस्थान ४५२० ब, चिह्न आदि ४५११ ब, विमान नगर व भवन ४५२०-५२१।

कापिष्ठ (देव)—अवगाहना ११८० ब, अवधिज्ञान १.१६८ ब, आयु १२६७, आयुबन्ध के योग्य परि-
णाम १२५८ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३.१०२, बन्ध स्थान ३.११३, उदय १३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४१६२, संख्या ४६८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर ११०, भाव ३.२२० ब, अल्प-
बहुत्व १.१४५।

कापोत लेश्या—२४२ ब, लेश्या ३४२३ अ, आयुबन्ध १.२५६ अ। प्ररूपणा—बन्ध ३.१०७, बन्धस्थान ३.११३, उदय १३८४, उदयस्थान १.३६३ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४२८४, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४.३०६, त्रिसयोगी भग १.४०७ ब। सत् ४२४४, संख्या ४१०७, क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४.४६०, काल २.११५, अंतर ११८, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व १.१५१।

काम—२४२ ब, इन्द्रिय १३०६ अ, ध्यान २४६६ अ, पुरुषार्थ ३.७० अ, भोग ३.२३८ अ, विवाह ३५६५ ब, शलाकापुरुष ४.२६ अ, हिंसा ४५३३ ब।

कामकथा—२.३ ब।

कामचर—लौकान्तिक ३.४६३ ब।

कामचांडाली कल्प—इतिहास १३४३ ब।

कामसंज्ञ—विनय ३.५४८ ब।

कामतत्त्व—२४२ ब, काम २.४२ ब।

कामद—शलाकापुरुष ४२६ अ।

कामदेव—गणधर २२१३ अ, प्रतिमा २३०३ ब, नारद ४.२२ ब।

कामना—दे० अभिलाषा, इच्छा, आकांक्षा, राग।

कामपुरुषार्थ—कथा २.३ ब, पुरुषार्थ ३.७० अ।

कामपुण्य—२.४३ अ, विद्याघर नगरी ३.५४५ अ।

कामराज—२.४३ अ।

कामरूप—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

कामरूपित्व ऋद्धि १४४७, १.४५१ ब ।

कामरूप्य—२४३ अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब ।

कामवृष्टि—चक्रवर्ती के रत्न आदि ४१३ अ, ४१५ अ ।

कामा—महत्तरिका ४५१३ ब, गणिका ४५१४ अ ।

कामाग्नि—१२५ ब ।

कामिनिका—महत्तरिका देवी ३५१३ ब ।

कामिनी—गणिका ४.५१४ अ ।

काम्य मंत्र—३२४६ अ ।

काय—२.४३ अ, अस्तिकाय १.२११ अ, भाव २.२५० अ ।

कायकर्म—२.२६ अ ।

कायक्लेश—२४५ ब, श्रावक २४८ अ, सम्यक्त्व व ज्ञान २३६० ब ।

कायक्रिया—गुप्ति २.२५० अ ।

कायक्रोधविवेक—विवेक ३५६७ अ ।

कायगुप्ति—अतिचार २.२५० अ, निश्चय लक्षण ६२४८ ब, व्यवहार लक्षण २२४६ अ ।

कायत्व—अस्तिकाय १.२११ अ-ब ।

कायपरावर्तन—कृतिकर्म १२७६ अ ।

कायप्रतिभा—२३०० ब ।

कायप्रत्याख्यान—३.१३२ अ ।

कायप्राण—२१५३ अ, ३१५४ ब ।

कायबल—ऋद्धि १४४७, १.४५५ अ, पर्याप्ति ३४४ अ, प्राण ३.१५३ अ, ३१५४ ब, योग ३.३८० अ ।

कायमार्गणा—निर्देश २४४ ब, अवगाहना ११७६, आयु १.२६४, जीवसमास २३४३ । प्ररूपणा—बन्ध ३१०४, बन्धस्थान ३११३, उदय १३७६, उदय-स्थान, १.३६२ ब, उदीरणा १४११ अ, सत्त्व ४२८२-२८५, सत्त्वस्थान ४.२१६, ४३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१६६, सख्या ४१००, भागाभाग ४१११-११५५, क्षेत्र २२०१, स्पर्शन ४४८३, काल २१०६, अन्तर ११२, भाव ३२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५ । पञ्चशरीर स्वामित्व ४.७, अल्पबहुत्व ११५६ ।

काययोग—निर्देश २४६ अ, ३३७६ ब, कर्मण काय योग २४४ ब । प्ररूपणा—बन्ध ३.१०४, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८०, उदयस्थान १.३६२ ब । उदी-रणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.२६६-३०५, त्रिसयोगी भग १.४०७ अ । सत् ४.२१४ सख्या ४.१०१, क्षेत्र २.२०२, स्पर्शन ४.४८५, काल २.१०८, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, अन्तर १.१२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४७ ।

कायवन्दना—३४६४ ब, २५०६ अ ।

कायविवेक—भक्तपान, माया, लोभ, वसति, सस्तर वैयावृत्य, शरीर ३५६७ अ ।

कायशुद्धि—भक्ति ३१६६ अ, शुद्धि ४३६ अ ।

कायस्थिति—४४५७ ब ।

कायिक—आश्रव १२८२ ब, विनय ३.५४५ ब, ३५४६ ब ।

कायिकी—क्रिया २.१७४ ब, हिंसा ४५३३ अ ।

कायोत्सर्ग—कृतिकर्म २.१३४ अ, २१३५ अ, गुप्त २.२५० अ, तप २३६१ ब, धर्मध्यान २४८२ ब, प्रतिक्रमण ३११७ ब, भक्ति १२०० ब, व्युत्सर्ग ३.६१६ अ, सामायिक ४४१६ ब ४.४१७ ब ।

कारक—कृतिकर्म २१६-२४, भेदाभेद कारक २.४८-५० ।

कारण—२५१ अ, अनुमान लिखी १६७ ब । अन्तरग २७२ ब, कारण २५४ अ, कार्य २७२ अ, ज्ञान १२६१ ब, न्याय २६३३ अ, परमात्मा ३२० अ, चतुष्टय २.२७८ अ ।

कारण-कार्य-संबन्ध—२५१ अ, अभेद २.५४ अ, उपचार १४२० अ, विभाव ३.५५६ अ ।

कारण-परमतत्त्व—३१६ अ ।

कारण-परमाणु—३.१४ अ ।

कारणपरमात्मा—३१६ अ ।

कारणप्रत्यय—४.३६४ अ ।

कारणविपर्यास—३३५६ ल । सम्यग्ज्ञान २२६४ ब ।

कारण विरुद्ध व अविरुद्ध उपलब्धि—४५३८ ।

कारणशुद्ध जीव—२३३४ अ ।

कारणशुद्ध पर्याय—३४६ ब ।

कारण समयसार—मोक्ष ३.३२५ अ, समयसार ४३२६ अ ।

कारणस्वभावज्ञान—उपयोग १.४३० अ ।

कारणस्वभावदर्शन—उपयोग १४३० अ ।

कारित—२७५ अ ।

कार्तिकेय—२७५ अ, अनुत्तरोपपादक १.७० ब, इतिहास (कुमारस्वामी) १३२८ ब, १३४० ब ।

कार्तिकेयानुप्रेक्षा—२.७५ अ, इतिहास १.३२८ ब, १.३४० ब ।

कार्तिकेयानुप्रेक्षा टीका—इतिहास १.३४७ अ ।

कार्तिकेयानुप्रेक्षा वचनिका—इतिहास १३४८ अ ।

कर्मण काययोग—२७६ अ, आहारक १.२६५ अ, काय २४४ ब, पर्याप्तक २४६ ब । प्ररूपणा—बन्ध ३.१०३, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८१, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८३

सत्त्वस्थान ४२६६, ४३०५, त्रिसगयोगी भग १४०७ अ। सत् ४२२१, सख्या ४.१०३, क्षेत्र २२०२, स्पर्शन ४४८७, काल २.१०८, अन्तर ११३, भाव ३२२० ब, अल्पबहुत्व ११४८।

कर्मण काल—उदयस्थान १३६३-३६७, काल २८१ अ।

कर्मण वर्गणा—वर्गणा ३५१३ अ, ३५१५ ब, ३५१६ अ।

कर्मण शरीर—२७५ ब, अनादि २३६५ अ, अवगाहना २३६५ अ, निरुपभोग २३६५ अ, पौद्गलिक ३३१७ अ, प्रदेश अल्पबहुत्व ११५६, स्वामित्व २३०५ अ।

कर्मण शरीर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३८८, २५८३, स्थिति ४४६३, अनुभाग १६५, प्रदेश ३१३६। बध ३६७, बधस्थान ३११०, उदय १३७५, उदयस्थान १३६०, १३६७, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४३०३, त्रिसयोगी भग १४०४। सक्रमण ४८४ ब, अल्पबहुत्व ११६६।

कर्मण शरीर बध—कर्मण कर्मण, कर्मण तैजस, औदारिक कर्मण, वैक्रियिक कर्मण, आहारक कर्मण ३१७० ब।

कार्य—अनुमान लिंगी १.६८ अ, कारण २७२ अ-ब, निमित्त २७० अ, पर्याय २५४ ब, २५५ अ, वर्ण-व्यवस्था ३५२४ ब, सदसत् १३६२ अ, समय (परमात्मा) ३२० अ।

कार्य-कारण संबंध—अनुमान १६८ अ, उत्पत्ति २५५० ब, उपचार १४२० अ, उपयोग १४३० अ, नय २५५० ब, न्याय २६३३ अ, भेदाभेद २५५ अ। विभाव ३५५६ ब।

कार्यवतुष्टय—३२७८ अ।

कार्यपरमाणु—३१४ अ।

कार्यपरमात्मा—३१६ ब।

कार्य विरुद्ध व अविरुद्ध हेतु—४५३८।

कार्यशुद्ध जीव—२३३४ अ।

कार्यशुद्धपर्याय—३४६ ब।

कार्य-समयसार—४३२६ अ-३३५ अ।

कार्य-समा जाति—२७७ अ।

कार्यस्वभाव—ज्ञानोपयोग १४३० अ, दर्शनीपयोग १४३० अ।

कार्ष्णाजिन—वेदान्त ३५६५ ब।

काल—२७७ अ, अनन्तानुबन्धी का १६१ ब, अन्तरकरण १२६ ब, अन्तर प्ररूपणा १३ ब, १५ अ, उपक्रम १४१६ ब, अध प्रवृत्तकरण २७ ब, अनवधूत

अनशन १६५ ब, अनशन १६५ ब, अनिवृत्तिकरण २१३ अ, अनुयोगद्वार ११०२ अ, अपकर्ष ११७३ अ, अपूर्वकरण २१२ अ, अप्रत्याख्यानावरण का ११२६ ब, अप्राप्त ११२६ ब, अवधि व मन.पर्याय ज्ञान ११८६ ब, ११६७ ब, आगमार्थ १२३४ अ, आवाधा १२४८ अ, आयुबध १२५६ अ, उदय (पच उदय काल) १३६७, उदीरणा १४१२ उपकार २६३ ब, उपशमन ११६१ अ, कषायोदय २३८ ब, काण्डकोत्करण २४२ अ, काल प्रमाण २२१५ ब, कालवाद ३१२ अ, ग्रह २२७४ अ, चक्रवर्ती ४१४ ब, छेदोपस्थापना (देश काल का प्रभाव) २३०६ अ, नारद ४२१ अ, निमित्त २६४ अ, नियतकाल अनशन १६५ ब, नियति २६१६ अ, निर्जरा १७५ ब, ११७४ अ, प्रमाण ३१४५ अ, मरण ६२८२ अ, मृत्ति ३३२७ अ, मोहनीय का ३५४४ अ, यव मध्य ११६१ ब, विद्याधर जाति १३३८ ब, वेदनीय का ३.५६२ ब, सख्या ४६२ अ, सप्तभंगी ४३२० अ, ४३२४ अ-ब, ४३२५ ब, मय्यज्ञान का अग २८२ अ, स्व चतुष्टय २२६७ ब, काल (अनुयोगद्वार)—११०२ अ, २६४ अ, ओष प्ररूपणा २६६, आदेश प्ररूपणा २१०१, उदीरणा १४१२।

काल (अल्पबहुत्व)—११४२ ब, अपकर्ष काल ११७३ अ, उपशमन क्षण ११६१ अ, प्रदेश निर्जरा १.१७४ अ, यवमध्यकाल ११६१ ब।

काल (व्यन्तरेन्द्र)—निर्देश ३६११ अ, सख्या ३६११ अ, परिवार ३६११ ब, आयु १२६४ ब।

काल (षट्काल)—निर्देश २.८८, परावर्तन ३२३५, परावर्तन योग्य २६२, अवगाहना १.१८०, आयु १.२६४ ब, आर्यखण्ड १२७५ अ, द्वीप सागर २६२ ब।

कालक—२१२४ अ, ग्रह २२७४ अ, विद्या १३३६ अ।

कालकूट—२१२४ अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

कालकेतु—२१२४ अ, ग्रह २२७४ अ।

कालकेशपुर—२१२४ अ, विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

कालक्रम—२१७१ ब, २१७२ अ।

कालतोया—२१२४ अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

कालदेश—उपदेश १४२६ अ, छेदोपस्थापना चारित्र पर प्रभाव २३०६ अ।

कालद्रव्य—२८२ ब, अनुभाग १८८ ब, अस्तिकाय १२११ ब, उत्पादादि १३६० ब, १३६२ ब, प्रदेश १२२१ अ, निमित्तता १३६७ अ-३६८ अ।

कालनय—२५२३ ब।

कालनिबन्धन—२.६१० ब।

कालनिमित्तक—कर्मोदय १.३६७ अ, १.३६८ अ।

कालपरिवर्तन—ससार ४१४८ अ।

कालप्रदेश—२१२४ अ।

कालप्रतिक्रमण—३११६ ब।

कालप्रत्याख्यान—३१३२ अ।

कालप्रमाण—२.२१५ ब, ३.१४५, आहार का १२८५ ब,
१२८६ अ, सहनानी २२१६ अ।

कालमंगल—३२४१ अ।

कालमही—२१२४ अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

कालमुखी—२१२४ अ, विद्याधर विद्या ३५४४ अ।

कालयवन—हरिवश १३४० अ।

कालयुति—३३७३ ब।

काललब्धि—नियति २.६१४ ब, सम्यग्दर्शन ४३६२ ब,
४३६३ अ।

कालवर्गणा—३५१२ ब।

कालवाह—२१२४ अ, एकान्त १४६५ अ, परतन्त्रवाद
३१२ अ।

कालव्यभिचार—२५३८ अ।

कालशुद्धि—४३६ ब, सम्यग्ज्ञान का अंग १२२८ अ,
स्वाध्याय ४५२६ अ।

कालश्वपाकज—विद्याधर १३३६ अ।

कालसयोग पद—३५ अ।

कालसंवर—२१२४ अ।

कालसंसार—४१४७ अ।

कालसमय राशि—सहनानी २.२१६ अ।

कालसामायिक—४४१६ अ।

कालस्तव—३२०० ब।

कालस्पर्शन—४४७६ अ।

कालातीत—२६३३ ब।

कालात्पदिष्ट—हेत्वाभास २१२४ अ, २६३३ ब।

कालापेक्षा—व्यतिक्रम ३६२२ अ।

कालासोक—मगधदेश १३११।

कालिंदी—इन्द्रो की ज्येष्ठ देवी ४५१४ अ।

काली—२१२४ ब, तीर्थंकर पृष्पदन्त २३७६, विद्या
३५४४ अ।

कालीघट्टपुरी—२.१२४ ब।

कालीदास—२.१२४ अ।

कालुष्य—२.१२४ ब, कषाय २३५ अ।

कालेयक—२१२४ ब, औदारिक शरीर १.४७२ अ।

कालोद सागर—२.१२४ ब। निर्देश ३.४६३ अ, नाम
निर्देश ३४७० अ, विस्तार ३४७८, अकन ३४४३,
३४६४ के सामने, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष
चक्र २३४८ ब, अधिपतिदेव ३६१४। अन्तर्द्वीपज
मनुष्य निर्देश ३३४६, अवगाहना ११७६ ब, जल-
चर जीव २३७० ब।

कालोद सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३।

कालोल—नरक पटल—निर्देश २१२४ ब, २५७६ ब,
विस्तार २५७६ ब, अवगाहना ११७८, आयु
१.२६३।

काव्यानुशासन—२१२४ ब, इतिहास १.३४४ अ,
१३४५ अ।

काव्यालंकार टीका—२१२४ ब, आशाधर १२६४ ब,
इतिहास १.३४४ अ।

काशमीर—२.१२४ ब, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

काशिका—३.३११ अ।

काशी—२१२४ ब, अकम्पन १३० ब, चक्रवर्ती ४.१० ब,
चन्द्रप्रभ २३७८, मनुष्यलोक ३२७५ अ।

काष्ठा—कालप्रमाण २२१७ अ।

काष्ठ—आसन २१३५ ब, मान कषाय २.३८ अ।

काष्ठकर्म—२.२६ अ, कषाय २.३५ ब, निक्षेप
२५६८ अ।

काष्ठा—२.१२४ ब, काल प्रमाण २२१७ अ।

काष्ठा संघ—२१२४ ब, जैनाभासी १३१६ अ, ब,
१३२० ब, १३२७ अ।

काष्ठी—ग्रह २.२७४ अ।

कासकृत्स्न—३५६५ ब।

किंकर—हरिदेव ४५३० अ।

किञ्चिन्न—चरम देह ३.३२६ ब।

किञ्चिद् ग्रहण—आहारान्तराय १.२६ ब।

किपुरुष (बेब)—व्यन्तरदेव २१२४ ब, २१२५ अ,
निर्देश ३६१० ब, अवगाहना ११८०, अवधिज्ञान
११६८ ब, आयु १२६४ ब, शक्ति आदि ३६१०-
६११, वर्ण व चैत्यालय ३६११ अ, अवस्थान
३६१२-६१४, ३४७१। इन्द्र—निर्देश ३६१६ अ,
सख्या ३६११ अ, परिवार ३६१२ ब।

किपुरुष (बेब)—प्ररूपणा—बध ३१०२, बधस्थान
३.११३, उदय १३७८, उदयस्थान १३६२ ब,
उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४२८२, सत्त्वस्थान
४.२६८, ३०५, त्रिसंयोगी भंग १४०६ ब। सत्
४२८८, संख्या ३६७, क्षेत्र २१६६, स्पर्शन ४.४८१,

काल २१०४, अन्तर ११०, ३२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

किपुरुष (यक्ष)—धर्मनाथ का यक्ष २.३७६।

किपुरुष वर्ष—२१२५ अ, वैदिकाभिमत ३४३१ ब।

किन्नर—व्यन्तर देव २.१२४ ब, २.१२५ अ, निर्देश ३६१० ब, अवगाहना ११८०, अवधिज्ञान ११६८ ब, आयु १२६४ ब, इन्द्र—निर्देश ३६११ अ, संख्या ३.६११ अ, परिवार ३६११ ब, शक्ति आदि ३६१०-६११, वर्ण व चैत्यवृक्ष ३६११ अ, अवस्थान ३६१२-६१४, ३४७१।

किन्नर (देव)—प्ररूपणा—बध ३१०२, बंधस्थान ३११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १३६२ ब, उदीरणा १४११ अ, सत्त्व ४२८२, सत्त्वस्थान ४२६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४१८८, संख्या ४६७, क्षेत्र २१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्प-बहुत्व १.१४५।

किन्नर (यक्ष)—२१२५ अ, अनन्तनाथ का यक्ष २३७६।

किन्नर क्रांत—३६१२ ब।

किन्नर-किन्नर—२१२४ ब।

किन्नरगीत—२१२५ अ, विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

किन्नरप्रभ—किन्नर देवों का नगर ३६१२ ब।

किन्नरमध्य—किन्नर देवों का नगर ३६१२ ब।

किन्नरावर्त—किन्नर देवों का नगर ३६१२ ब।

किन्नरोत्तम—२१२४ ब।

किन्नरोद्गीत—२१२५ अ। विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

किन्नामित—२१२५ अ, विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

किरण—चन्द्र सूर्य आदि की २.३४८ ब।

किरणावली—वैशेषिक दर्शन का ग्रन्थ ३६०७।

किरमजी—लोभ २३८ अ।

किलकिल—२१२५ अ। विद्याधर नगरी २५४५ ब।

किल्बिषक देव—२१२५ अ, आयु बध के याग्य परिणाम १२५८ अ। ज्योतिष देव—निर्देश २३४६ अ, आयु १२६४ ब, भवनवासी—निर्देश २४४५ ब, आयु १२६५। वैमानिक—निर्देश २४४५ ब, आयु १.२६६, १.२७०, देवियाँ ४.५१३। व्यन्तर—निर्देश ३.६११ ब, आयु १.२६४।

किल्बिषी भावना—२.१२५ ब।

किशानसिंह—इतिहास १.३३४ अ, १३४८ अ।

किष्किष् २.१२५ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब, वानर

वंश ३३३८ ब।

किष्किविल—२.१२५ ब, अंतकृत केवली १२ ब।

किष्कु—२.१२५ ब, क्षेत्र का प्रमाण २२१५ अ। वानर-

वंश का निवास पर्वत १३३८ ब।

किष्कुपुर—वानरवंशी नगर १३३८ ब।

कीचक—२१२५ ब।

कीचड—लोभ २३८ अ।

कीर्तन—नमस्कार २.५०६ अ, पूजा ३७५ अ।

कीर्ति—कुरुवंश १३३५ ब, १३३६ अ, शुद्धि ४३६ अ।

कीर्ति (देवी)—२१२५ ब, नीलपर्वत ३४७२ अ, केसरीहृद ३४५३ ब। अवस्थान ३६१४ अ, आयु १२६५ ब, परिवार ३६१२ अ।

कीर्तिकूट—२१२५ ब।

कीर्तिधर—२१२५ ब, इतिहास १३४१ अ। इक्ष्वाकु-वंश १३३५ ब।

कीर्तिधवल—२१२५ ब, राक्षसवंश १३३८ ब।

कीर्तिध्वज—वानरवंश १३३८ ब।

कीर्तिमती—२.१२५ ब, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३४७६ अ, अकन ३४६६।

कीर्तिमान—इक्ष्वाकुवंश १३३५ ब।

कीर्तिवर्मा—२१२५ ब, इतिहास १३३१ अ।

कीर्तिवीर्य—चक्रवर्ती ४११ ब।

कीर्तिषेण या कीर्तिसेन—२१२५ ब, काष्ठा सध १३२७ अ, पुन्नाट संघ १३२७ अ, इतिहास १३२६ ब।

कीलकसंहनन नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३८८, २५८३ अ, स्थिति ४४६५, अनुभाग १६५, प्रदेश ३१३६। बंध ३६७, बंधस्थान ३११०, उदय १३७५, उदयस्थान १३६०, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी मग १४०४। सक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व ११६८।

कुंचित—२१२६ अ, व्युत्सर्ग का दोष ३६२३ अ।

कुंजरावर्त—२१२६ अ, विद्याधर नगरी ३५४५ अ, हरिवंश १३४० अ।

कुंड—२१२६ अ, अग्नि के तीन कुंड १३५ ब, शलाका आदि तीन कुंड १२०६ ब। गंगा आदि नदियों के कुंड—निर्देश ३.४५५ अ, गणना ४४३ अ, विस्तार ३.४६०, अंकन ३.४४४, तटवर्ती द्वीप व कूट ३.४५३ अ।

कुंडल—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६६।

कुडलक—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ,
विस्तार ३.४८७, अकन ३.३६८।

कुडलगिरि—२.१२६ अ।

कुडलपुर—तीर्थकर वर्द्धमान २.३७६।

कुडलवर द्वीप सागर—२.१२६ अ। निर्देश ३.४६६ अ
नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अकन
३.४४३, चित्र ३.४६७। जल का रस ३.४७० अ,
ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।
चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ।

कुडलवर पर्वत—नामनिर्देश ३.४६६ अ, विस्तार ३.४८७,
कूट तथा देवों के नाम ३.४७५ ब, कूटों का विस्तार
३.४८७, वर्ण ३.४७८, चित्र ३.४६७।

कुडला—२.२१६ अ। विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ,
नाम ४.३७० ब, विस्तार ३.४७६-४८१, अकन
३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।

कुंडिनपुर—२.१२६ अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।

कुंतल—२.१२६ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।

कुंती—२.१२६ अ, कुटुम्ब १.३० अ, कुरुवंश १.३३६ अ,
यदुवंग १.३३७।

कुथनाथ—२.१२६ अ, कुरुवंश—तीर्थकर १.३३५ ब,
पूर्वभव २.३७६-३६१।

कुंथु—चक्रवर्ती ४.१० अ, अरनाथ आदि तीर्थकर २.३८७।

कुंथु भक्ति—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब।

कुंथु सेना—अरनाथ २.३८८।

कुंद—२.१२६ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

कुंदकीर्ति—काष्ठा सघ १.३२७ अ।

कुंदकुंद—२.१२६ अ-ब। देशीय गण १.३२४, इतिहास
१.३२८ ब, १.३४० ब, मूलसघ १.३२२ ब।

कुंदा—व्यन्तरेन्द्र वल्लभिका २.६११ ब।

कुंभ—२.१२८ ब, गणधर २.२१२ ब, तीर्थकर मल्लिनाथ
२.३८०, तीर्थकर अरनाथ २.३८७।

कुंभक—२.१२८ ब, प्राणायाम ३.१५५ अ।

कुंभकटक द्वीप—२.१२८ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

कुंभकर्ण—२.१२८ ब, राक्षसवंश १.३३८ ब।

कुंभुज—२.१२८ ब।

कुंबरपान—इतिहास १.३३४ अ।

कुगुरु—२.१२८ ब, विनय ३.५५३ ब, अमूढदृष्टि १.१३३
अ, मूढता ३.३१५ ब।

कुटिल अवलोकन—चैत्य-चैत्यालय २.३०२ ब।

कुटिलता—माया ३.२६६ अ।

कुटीवर—वेदान्त ३.५६५ ब।

कुट्टक—२.१२८ ब।

कुडइ—२.१२८ ब।

कुडव—तौल का प्रमाण २.२१५ अ।

कुड्याश्रित—२.१२८ ब, व्युत्सर्ग दोष ३.६२१ ब।

कुणिक—२.१२८ ब, मगधदेश १.३१० ब, १.३१२।

कुणिम—हरिवंश १.३३६ ब, १.३४० अ।

कुणीयान—२.१२८ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।

कुत्ता—श्वान ४.५०५ अ।

कुत्सा—२.३४४ अ।

कुत्सित—देव ३.५५३ ब, धर्म ३.५५३ ब, लिग ३.५५३ ब।

कुथित—३.२०२ ब।

कुथुमि—२.१२६ अ, अज्ञानवादी १.३८ ब, एकान्ती
१.४६५ अ।

कुवेव—२.१२६ अ, अमूढदृष्टि १.१३३ अ, निन्दा
२.५८८ ब, मूढता ३.३१५ ब, विनय ३.५५३ अ।

कुधर्म—२.१२६ अ, अमूढदृष्टि १.१३३ अ।

कुधर्माकांक्षा—२.५८५ ब।

कुध्यान—२.४६७ अ।

कुनाल—मगधदेश १.३१० ब, १.३१३। शान्तिनाथ
२.३६१।

कुपात्र—पात्र २.५२ ब, दान २.४२६ अ।

कुप्य—२.१२६ अ।

कुबेर—२.१२६ अ। अरनाथ का यक्ष २.३७६, लोकपाल
देव ३.४६१ ब, स्वर्गलोक में ४.५१३ अ, मध्यलोक
में ३.६१३ अ, सुमेरु पर्वत के वनो में ३.४५० अ-ब,
ऋद्धि शक्ति आदि ४.५१३ अ, आयु १.२६६।

कुबेरकान्त—४.१५ अ।

कुबेरदत्त—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब।

कुब्जक-संस्थान नामकर्म—प्रकृति ३.८८, २.५८३, स्थिति
४.४६४, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध
३.६८, बन्धस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदय-
स्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२७८,
सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४। संक्रमण
४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

कुब्जा—२.१२६ अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ, अजितनाथ
तीर्थकर २.३८८।

कुभानु—हरिवंश १.३४० अ।

कुभाषा—दिव्यध्वनि २.४३२ ब, भाषा ३.२२६ ब।

कुभोगभूमि—निर्देश ३.२७३, अवगाहना १.१८०, आयु
१.२६३, १.२६४, आयु के बन्धयोग्य परिणाम
१.२५६ ब, षट्काल व्यवस्था २.६३, सम्यक्त्व आदि

गुण ३.२३६ । वैदिक अभिमत भूगोल ३ ४३१ ब ।

कुमत—विनय ३ ५५३ ब ।

कुमतिज्ञान—प्ररूपणा—बन्ध ३ १०५, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३६३, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४.३००, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०७ अ । सत ४ २३४, सख्या ४ १०५, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २ ११३, अन्तर १ १५, भाव ३ २२१ अ, अल्पबहुत्व १ १५० ।

कुमानुष—निर्देश ३.३४६, आयु बन्धयोग्य परिणाम १ २५६ ब, पाप ३ ५४ अ ।

कुमानुष द्वीप—निर्देश ३ ३४६ अ-ब, ३ ४६२ ब, ३ ४६३ ब, विस्तार ३ ४७६, अकन ३.४४४, ३ ४६१, ३ ४६४ के सामने ।

कुमार—२.१२६ अ, भवनवासी देव ३ २०८ अ, श्रेयासनाथ का यक्ष २ ३७६ ।

कुमारगुप्त—२.१२६ ब, गुप्तवंश १ ३११ अ-ब, १ ३१५ ।

कुमारनन्दि—२ १२८ अ-१२६ अ, नन्दिसंघ १ ३२३ अ, इतिहास १ ३२८ ब, १ ३२६ अ-ब, १ ३४१ ब ।

कुमारश्रमण—वासुपूज्य आदि तीर्थकर २ ३८६ ।

कुमारसेन—२ १२६ अ, काष्ठा संघ १.३२१ अ, १.३२७ अ, पचस्तूप सघ १ ३२६ ब, सेन सघ १ ३२६ अ, इतिहास १ ३२६ ब, १ ३३० अ ।

कुमारस्वामी (कार्तिकेय)—२ ७५ अ, इतिहास १ ३२८ ब, १ ३४० ब, २.१२६ अ ।

कुमारिल भट्ट—२ १२६ ब, मीमासा दर्शन ३ ३११ अ ।

कुमारी—४ ४५० अ ।

कुमार्ग—अमूढदृष्टि १ १३२ ब, ध्यान २.४६७ अ ।

कुमुद—२ १२६ ब, कालप्रमाण २ २१६ अ, २ २१७ अ, सख्याप्रमाण २ २१४ ब, आरण इन्द्र का यान ४ ५११ ब, लोकपाल ३ ४६१ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

कुमुद (पर्वत तथा कूट)—देवकुरु का दिग्गजेन्द्र—निर्देश ३ ४७१ ब, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५-४८६, अंकन ३ ४४४ । रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६८-४६९ ।

कुमुदप्रभा—२ १२६ ब, सुमेरु की पुष्करिणी निर्देश ३.४५३ ब, नाम ३.४७३ ब, विस्तार, ३.४६०-४६१, अंकन ३.४५१, चित्र ३.४५१ ।

कुमुदवती—२ १२६ ब ।—

कुमुदशैल—२ १२६ ब ।

कुमुदांग—२ १२६ ब, कालप्रमाण २ २१६ अ, २.२१७ अ, संख्या प्रमाण २.२१४ ब ।

कुमुदा—२ १२६ ब । विदेहक्षेत्र—निर्देश ३ ४६० अ, नाम ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७६-४८०-४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ । सुमेरु की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नाम ३ ४७३ ब, विस्तार ३ ४६०-४६१, अंकन ३.४५१, चित्र ३ ४५१ । नन्दीश्वर द्वीप की बापी ३ ४६३ अ, नाम ३.४७५ ब, विस्तार ३.४६१, अंकन ३ ४६५ ।

कुमुदेंदु—इतिहास १ ३३२ ब ।

कुरल काव्य—२ १२६ ब ।

कुरला—अपवाद मार्ग १ १२१ ब ।

कुरु—२.१२६ ब, कुरुवश १ ३३५ ब, १.३३६ अ, कुन्थुनाथ धर्मनाथ २.३८०, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

कुरुक्षेत्र—उत्तरकुरु ३.४४५ अ ।

कुरुचंद्र—कुरुवश १.३३५ ब, १.३३६ अ ।

कुरुजांगल देश—मनुष्यलोक ३ २७५ अ ।

कुरुपांचाल—वैदिकाभिमत ३ ४३३ अ ।

कुरुवश—२ १२६ ब, ऐतिहासिक राजवश १ ३१० ब, पौराणिक राजवश १.३३५ अ-ब ।

कुर्युधर—२ १२६ ब ।

कुल—२.१३० अ, प्रब्रज्या ३.१५० अ भिक्षा ३ २३१ ब, वर्ण-व्यवस्था ३ ५२० ब ।

कुलकर—२ १३० ब, शलाकापुरुष ४.१३३ अ, ४ २५ अ ।

कुलकीर्ति—कुरुवश १.३३५ ब ।

कुलकुंड पार्श्वनाथ विधान—२.१३० ब ।

कुलक्रिया—श्रावक ४.५० अ ।

कुलचंद्र—२.१३० ब, कुरुवश १.३३६ अ, नन्दिसंघ देशीय गण १ ३२५ ।

कुलचर्या क्रिया—सस्कार ४ १५१ ब, ४ १५२ ब ।

कुलटा—४.४५० ब ।

कुलदेवता—श्वेताम्बर ४ ७७ अ ।

कुलधर—२.१३० ब, शलाकापुरुष ४.२५ अ ।

कुलपर्वत—चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ ।

कुलपुत्र—तीर्थकर २.३७७ ।

कुलभद्र—२.१३० ब, इतिहास १.३३० ब, १.३४२ ब ।

कुलभूषण—२.१३० ब, देशीय गण १.३२५, इतिहास १.३३१ अ । अग्निप्रभ देव १ ३६ ब ।

कुलमद—३.२५६ ब ।

कुलयंत्र—३ ३५१ ।

कुलविद्या—३ ५४४ अ ।

कुलसुत—२.१३० ब, तीर्थकर २ ३७७ ।

कुलाचल—पर्वत—निर्देश ३ ४४६ ब, ३.४६२ ब, ३ ४६३ ब, गणना ३ ४४५ अ, विस्तार ३.४८२, ३ ४८६, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७ ।

कुलावधि—३ १६६ अ ।

कुलिग—मूढता ३.३१५ ब, विजय ३ ५५३ अ ।

कुलोत्तुग चोल—२ १३० ब ।

कुवलयमाला—२.१३० ब, उद्योतन सूरि १.४१४ ब ।

कुविचार—अशुभोपयोग १ ४३३ ब ।

कुश—२ १३० ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

कुशद्यवेश—मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

कुशपुर—२ १३० ब ।

कुशलमूला निर्जरा—१ ७५ ब, २ ६२२ ब ।

कुशवर द्वीप सागर—नामनिर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३.४७८, जल का रस ३ ४७० अ, अधिपति देव ३. ६१४, ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब, अकन ३ ४४३ ।

कुशसेन—४ १० ब ।

कुशाग्रपुर—मनुष्यलोक ३ २७५ अ, मुनिसुव्रतनाथ २ ३७६, बलदेव ४ १८ अ ।

कुशान वश—२.१३० ब, इतिहास १ ३१० ब, १ ३१४ ।

कुशास्त्र—विनय ३.५५३ ब, सम्यग्ज्ञान २ २६५ ब ।

कुशील—हिंसा ४.५३२ ब ।

कुशीलसगति—२ १३१ अ, सगति ४ ११६ अ-ब ।

कुशील साधु—२ १३१ अ, श्रुतकेवली ४ ५५ ब, सगति ४ ११६ अ-ब, साधु ४ ८०८ अ-ब ।

कुश्रुतज्ञान—प्ररूपणा—वध ३ १०५, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३६३, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ ३००, ४ ३०५, त्रिसयोगी भाग १.४०७ अ । सत् ४ २३३, सख्या ४ १०६, क्षेत्र २ २०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २ ११३, अन्तर १ १५, भाव ३ २२१ अ, अल्पवहुत्व १.१५० ।

कुश्रुति—अशुभोपयोग १.४३३ ब ।

कुष्मांड—२ १३१ अ, पिशाच जातीय व्यन्तर देव—निर्देश ३ ५८ ब, आयु १ २६४ ब ।

कुष्मांड गणमाता—विद्या ३.५४४ अ ।

कुसंगति—अशुभोपयोग १.४३३ ब, ४ ११८ ब ।

कुसंसर्ग—संगति ४ ११८ ब ।

कुसुम—२.१३१ अ ।

कुसुमवती—३.२७५ ब, ३.२७६ अ ।

कुहां—२ १३१ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

कूट—२.१३१ अ-ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

कूट—कुण्डलवर पर्वत—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३ ४८७ अकन ३.४६७ । कुलाचल पर्वत—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४ । गंगा कुण्ड आदि—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४८४, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन २ ४५७ । गजदन्त पर्वत—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४, ३.४४७ । जम्बू शात्मली वृक्षस्थल—निर्देश ३.४५८ ब, अकन ३.४५६ । पद्मादि हृद—निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३ ४५४ । मानुषोत्तर पर्वत—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अकन ३ ४६४ । रुचकवर पर्वत—निर्देश ३ ४७६ अ-ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६८-४-६६ । विजयार्ध—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ । सुमेरु पर्वत के वन—निर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३.४५१ ।

कूट सातंगपुर—२ १३१ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब ।

कूटलेख क्रिया—२.१७४ ब ।

कूटस्थ अलोक—४.२७३ ब ।

कूटाचल—मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

कूर्च—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ ।

कूर्म—इन्द्रिय प्रत्याहार ३.१३४ अ, मुनिसुव्रतनाथ २.३७६ ।

कूर्मचक्र यंत्र—३.३५१ ।

कूर्मोन्नत योनि—३.३८७ अ ।

कूष्माण्डी देवी—नेमिनाथ २ ३७६ ।

कृत—२.१३१ ब ।

कृतक—२.१३१ ब ।

कृतकृत्य—२.१३१ ब, पुरुषार्थ ३ ७० ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब ।

कृतकृत्य छद्मस्थ—२.३०५ ब ।

कृतकृत्यवेदक—जन्म २ १३४ ब, दर्शनमोह क्षपण २.१७६ अ, मरण ३ २८३ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३७० ब, ४.३७२ अ ।

कृतनाश हेत्वाभास—२.१३१ ब ।

कृतमाल—२.१३१ ब, विजयार्ध का देव ३.४७१ ब ।

कृतमाला—२.१३१ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

कृतवर्मा—विमलनाथ २.३८० ।

कृतसूय—सर्वायुध तीर्थकर २ ३७७ ।

कृतांतवक्र—२ १३१ ब ।

कृति—२ १३२ अ, कर्म २ २७ अ, गणित २ २२३ अ ।

कृतिकर्म—२ १३२ अ, २ १३३ ब, कर्म २ २६ अ-ब,
२ २७ अ, श्रुतज्ञान ४ ६६ ब ।

कृतिकार्य—२.१४० अ, क्षयि २ १७६ अ ।

कृतिधारा—गणित २ २२६ अ ।

कृतिमातृकधारा—गणित २ २२६ अ ।

कृतिमूल—२ १४० अ, गणित २.२२३ अ ।

कृत्—२ १३१ ब ।

कृत्तिका—२.१४० अ, नक्षत्र २ २०३ अ ।

कृत्स्न—२.१४० अ ।

कृपा—अनुकम्पा १ ६६ अ ।

कृमिनिर्गमन—आहारान्तराय १.२६ ब ।

कृश—उपकार १ ४१५ अ, सल्लेखना ४ ३८२ अ ।

कृशीकरण—कायवर्ण २ ४७ अ ।

कृषि—कर्मयि १.२७५ अ, व्यवसाय २ १४० अ ।

कृष्टि—२ १४० अ ।

कृष्टिकरण—२.१४० अ, कालावधि का अल्पबहुत्व
१ १६१ अ, स्पर्धक ४ ४७३ ब ।

कृष्टिवेदन—२.१४२ अ ।

कृष्ट्यन्तर—२ १४१ अ ।

कृष्ण—२.१४३ अ, उग्रसेन १ ३५२ अ, नारायण ४ १८
अ, तीर्थकर निर्मन २ ३७७, तीर्थकर नेमिनाथ
१ ३३६ ब, २ ३६१, यदुवश १.३३७ । राष्ट्रकूट
वश १.३१ अ, हरिदेव ४ ५३० अ ।

कृष्णगंगा—२ १४३ अ ।

कृष्णगिरि—मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

कृष्णदास—२ १४३ ब, इतिहास १ ३३४ ब, १.३४७ ब ।

कृष्णपंचमी व्रत—२.१४३ ब ।

कृष्णपक्ष—लवणसागर ३.४६० ब ।

कृष्णप्रभ—३ ४६१ ब ।

कृष्णमती—२ १४३ ब, तीर्थकर २ ३७७ ।

कृष्णराज—२ १४३ ब, राष्ट्रकूट वंश १.३१५ ब ।

कृष्णलेश्या—आयुबंध १ २५६ अ, लेश्या ३.४२२ ब ।

प्ररूपणा—बन्ध ३ १०७, बन्धस्थान ३ ११३, उदय
१.३८४, उदयस्थान १ ३६३ ब, उदीरणा १.४११
अ, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४.३०६,
त्रिसयोगी भंग १.४३८ । सत् ४.२४२, सख्या
४.१०७, क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४ ४६०, काल
२.११५, अन्तर १.१८, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व
१.१५१ ।

कृष्णवर्णा—मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

कृष्णवर्मा—२.१४३ ब ।

कृष्णा—असुरेन्द्र की अग्रदेवी ३ २०६ अ ।

कंदवर्ती वृत्त—२ १४३ ब ।

केंद्रित—चित्तवृत्ति १ ४६६ अ ।

के—उ० अनन्त की सहनानी २.२१६ अ ।

केकय—२ १४३ ब ।

केकयी—२.१४३ ब रघुवंश १ ३३८ अ ।

केतवा—२ १४३ ब, मनुष्यलोक ३ २७६ अ ।

केतु—२ १४३ ब, ग्रह २ २७४ अ, ज्योतिष लोक—निर्देश
२.३४८ अ, इन्द्र २ ३४५ ब, सूर्यग्रहण २ ३५१ अ ।

विमान—आकार २.३४८, विस्तार २ ३५१ ब, रग
व वाहक देव २ ३४८ अ, चित्र २ ३४८ ।

केतुभद्र—२.१४३ ब ।

केतुमती—२.१४३ ब, व्यन्तरेन्द्र वल्लभिका ३.६११ ब ।

केतुमाल—२.१४३ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

केतुमाला—विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

केरल—२ १४४ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

के० मू० १—केवलज्ञान का प्रथम मूल २.२१६ अ ।

के० मू० २—केवलज्ञान का द्वि० मूल २.२१६ अ ।

केवल—२ १४४ अ ।

केवलज्ञान—२.१४४ अ, आत्मानुभव १ ८३ अ-ब, उपक्रम
१.४१६ ब, ऋद्धि १ ४४८, कालावधि का अल्पबहुत्व
१ १६० ब, गति-अगति २.३२२ अ, गुणस्थान
२.२६१, ज्ञान २ २६० ब, छद्मस्थ २.२५६ ब, दर्शन
२.४१३ ब, मतिज्ञान २ २५६ ब-२६०, मोक्ष
३ ३२६ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ, विकल्प ३ ५३८ ब,
श्रुतज्ञान ४ ६३ अ, सहनानी २.२१६ अ । शिद्धी का
अल्पबहुत्व १ १५४ अ, सुख ४ ४३२ अ ।

केवलज्ञान (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०६, बन्धस्थान
३ ११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १.३६३ अ,
उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान
४.३००, ४ ३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०७ अ । सत्
४.२३६, सख्या ४ १०६, क्षेत्र २ २०४, स्पर्शन
४.४८८, काल २ ११३, अन्तर १.१५, भाव ३ २२१
अ, अल्पबहुत्व १.१५० ।

केवलज्ञानातिशय—अर्हन्त १.१३७ ब ।

केवलज्ञानावरण—ज्ञानावरण २ २७१ ब, सर्वधाती
अनुभाग १ ६२ ब । प्ररूपणा—प्रकृति २ २७० ब,
३.८८, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १ ६४ ब, प्रदेश
३.१३६ । बन्ध ३.६७ बन्धस्थान ३.१०६, उदय
१.३७५, उदयस्थान १.३८७ ब, १ ३६६, १ ३६७,

उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २६४, त्रिसयोगी भग १ ३६६, सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८।

केवलज्ञानी—दिव्यध्वनि २.४३० ब।

केवलदर्शन—कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६० ब, दर्शनोपयोग २.४१३ अ, मोक्ष ३ ३२६ अ। प्ररूपणा-बन्ध ३ १०६, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३८४, उदयस्थान १ ३६३ अ, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ ३०१, ४ ३०६, त्रिसयोगी भग १ ४०७ ब। सत् ४ २४२, सख्या ४.१०७, क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४.४६०, काल २ ११५, अन्तर १.१७, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५१।

केवलदर्शनावरण—२ ४२० अ। प्ररूपणा—प्रकृति २ ४२०, ३ ८८, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ६४ ब, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३ ६७, बन्धस्थान ३ १०६, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २६४, त्रिसयोगी भग १ ३६६। सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६८।

केवललब्धि—नव लब्धि ३ ४१२ अ।

केवलव्यतिरेकी—४.५४० ब।

केवलान्वयी—४ ५४० अ।

केवलिभुक्ति प्रकरण—इतिहास १ ३४२ अ।

केवली—२.१५५ अ, अनुभव (श्रुतज्ञानी) १ ८३ अ, अर्हन्त (सयोगी अयोगी) १ १३८ अ, अवर्णवाद १ २०६ अ, इतिहास १ ३१६, नामकर्म उदयस्थान १ ३६६-३६७, तीर्थकर सध २ ३८६, निगोद ३.५०५ ब, बन्ध ३ १७६ अ, मोक्ष ३ ३२८ ब।

केवलीसमुद्घात—२ १६६ अ, ४ ३४३, अनुभागबन्ध ४ ४६६, उदयस्थान (नामकर्म) १ ३६३ ब, १ ३६६-३६७, क्षेत्रप्ररूपणा २ १६७-२०७, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १ १७४, सत्त्व ४ ३४३, स्थिति बन्ध ४ ३४३, स्पर्शन प्ररूपणा ४ ४७७-४६४।

केश—२.१६६ ब, ग्रह २.२७४ अ।

केशरिन—यदुवश १.३३७।

केशलोच—२ १६६ ब, कायक्लेश २.४७ ब, क्षुल्लक २.१८६ अ, तप २.३६३ ब, परिषह ३ ३४ ब, स्वाध्याय ४.५२६ अ।

केशव—२ १७० ब।

केशवचन्द्र—नन्दिसध १ ३२३ ब।

केशवराज—इतिहास १.३३२ अ।

केशववर्णी—२.१७० ब, इतिहास १.३३२ ब, १.३४५ ब।

केशवसेन—२.१७० ब, इतिहास १ ३३४ अ।

केशवाणिज्य—खरकर्म ४ ४२१ ब।

केशाग्र—२ १७० ब।

केशवापक्रिया—संस्कार ४ १५१ अ।

केसरिसेन—अजितनाथ २.३८७।

केसरी हृद—२ १७० ब। नील पर्वत का हृद—निर्देश ३.४४६ ब, विस्तार ३ ४६०-४६१, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४५४।

कैकय—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

कैकेयी—बलदेव ४ १८ ब।

कैटभ—२ १७० ब।

कैप्सियन—उत्तरकुरु १ ३५६ अ।

कैरल—२ १४४ अ।

कैलाश पर्वत—२.१७० ब, ऋषभ २ ३८५, मनुष्यलोक ३.२७५ ब, विद्याधर नगरी २.५४५ ब।

कैलिवष—नीच जातीय देव २ ४४५ ब।

कोकण—२.१७० ब।

को—कोटि २ २१८ ब।

कोका—२ १७० ब।

कोकिल—शतारेन्द्र का यान ४.५११ ब।

कोकिल पचमी व्रत—२.१७० ब।

को० को०—कोडाकोडी २ २१८ ब।

कोट—२ १७१ अ।

कोटर—३.५२८ अ।

कोटि—संख्या प्रमाण २ २१४ ब, सहनानी २ २१८ ब। ५ कोटि या ६ कोटि शुद्ध आहार १ १२१ अ।

कोटिप्पकोटि—संख्या प्रमाण २ २१४ ब।

कोटिवीर—४.८० अ।

कोटिशिला—२.१७१ अ, ४.२० अ।

कोटि सहित—३.१३१ ब।

कोटेश्वर—२.१७१ अ, इतिहास १.३३३ अ।

कोडा कोडी—संख्या ४ ६२ अ, सहनानी २ २१८ ब।

कोत्कल—२.१७१ अ।

कोप्पण—२ १७६ अ।

कोरय्य—२ २१० ब।

कोलाहल—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

कोश—२ १७१ अ, क्षेत्र प्रमाण २.२१५ अ।

कोशल—मनुष्यलोक ३.२७५ अ-ब।

कोशनी—बलदेव ४.१८ ब।

कोष्ठबुद्धि—ऋद्धि १.४४८, १.४४६ अ, गणधर २ २१२ ब।

कोष्ठा—२.१७१ अ, धारणा २ ४६१ अ।

कोसल—२ १७१ अ ।

कोसियारुख—३ ५३१ अ ।

कौडकुण्डपुर—२ १२६ अ-ब ।

कौडिन्य—४ ८० अ ।

कौटुकल—२ १७५ ब, क्रियावादी एकान्ती १ ४६५ अ ।

कौटुक्य—२ १७१ अ ।

कौमार देव—कुमार २ १२६ ब, सैद्धान्तिक १ ३२५ ।

कौमार सप्तमी व्रत—२.१७१ अ ।

कौमुदी—नारायण ४ १६ ब । बलदेव ४ १८ अ ।

कौरव—२ १७१ अ ।

कौशल देश—मनुष्यलोक ३ २७५ अ-ब ।

कौशांबी—२.१७१ व, नारायण ४.१८ ब, नमिनाथ २ ३७८, पद्मप्रभ २ ३७६ ।

कौशिक—२ १७१ ब, एकान्ती १ ४६५ अ, क्रियावादी २ १७५ ब, विद्याधर ३ ५४४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब, विद्याधर वश १ ३३६ अ ।

कौशिकी—२ १७१ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, विद्या १.३३६ अ ।

कौस्तुभ—२ १७१ ब, नारायण ४ १६ ब । लवण सागर का पर्वत—निर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४७६, वर्ण ३ ४७८, अवस्थान ३ ४६२ अ, अंकन ३ ४६१ ।

कौस्तुभाभास—२ १७१ ब । लवण सागर का पर्वत—निर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३.४७६, वर्ण ३ ४७८, अवस्थान ३ ४६२ अ, अंकन ३ ४६१ ।

कतु—२ १७१ ब, पूजा ३ ७४ अ ।

क्रम—२ १७१ ब, अनेकान्त १ १०५ ब, निर्वाण ३ ३६६ ब, मुक्ति २ ४८४ अ, योगवर्गणा ३ ३८३ ब ।

क्रमकरण—२ १७३ अ, अपकर्षक १ ११६ अ, उपशम १ ४४० ब-४४१ अ, क्षय २ १८० अ ।

क्रमण—२ १७३ अ, मानुषोत्तर के कूट का देव—३ ४७५ अ, अंकन ३ ४६४ ।

क्रमप्रवृत्त—गुण २.२४२ ब, द्रव्य २.४५४ अ ।

क्रमबद्ध नियति २ ६१३ अ ।

क्रमभाव—अङ्गिनाभाव १ २०२ ब ।

क्रमभावी—द्रव्य (पर्याय) २.४५४ अ, पर्याय ३.४५ ब, ३.४७ अ ।

क्रमभू—गुण २ २४२ ब ।

क्रमवर्तित्व—२.१७२ अ ।

क्रमवर्ती—२ १७२ ब, ध्येय (पर्याय) २.५०० अ, विकल्प ३ ५३८ व ।

क्रमानेकान्त—२ १७२ ब ।

क्रियमाण—२ २६८ अ ।

क्रियांतर निवृत्ति—मोक्षमार्ग ३.३३६ ब ।

क्रिया—कर्ता-कर्म २ १७ अ, काल २.८३ अ, क्रिया २ १७३ अ-१७४ अ, ज्ञान २ २६८ अ, पर्याय ३.४७ अ, पुष्पार्थ २ ६१६ अ, शुक्लध्यान ४ ३५ अ, श्रावक ४ ५१ ब, ४ ५२, सावय ४ ४२१, हिंसा ४.५३२ अ ।

क्रियाऋद्धि—२.१७५ अ, ऋद्धि १ ४४७, १.४५१ ब ।

क्रियाकर्म—कर्म २ २६ अ-ब, कृतिकर्म २.१३३ ब, क्षेत्र-प्ररूपणा २.२०८, नित्य-नैमित्तिक (सामायिक) ४ ४१५ ब, भाव ३ २२३, संख्या ४.११६, सत् ४ २६६ अ ।

क्रियाकलाप—२ १७५ अ, आशाधर १.२८० ब, इतिहास १ ३४४ अ, टीका १ ३४३ अ ।

क्रियाकोश—२ १७५ अ, इतिहास १.३४८ अ ।

क्रियाधिकरणी—हिंसा ४ ५३२ अ ।

क्रियानय—२ ५२३ ब, ज्ञाननय २ २६६ ब, विज्ञानवाद ३ ५४० अ ।

क्रियानिमित्तक—उत्पाद १ ३६२ ब, नाम २ ५८२ ब ।

क्रियानिरोध—चारित्र २.८८३ ब, मोक्षमार्ग ३.३३६ ब ।

क्रियान्तर निवृत्ति—मोक्षमार्ग ३.३३६ ब ।

क्रियामंत्र—३ २४६ ब ।

क्रियावती शक्ति—२ १७३ ब ।

क्रियावाची—२ ५८२ ब ।

क्रियावाद—२ १७५ अ ।

क्रियावान—काल २.८६ अ, द्रव्य २ ४५६ अ ।

क्रियाविशाल—२.१७५ ब, श्रुतज्ञान ४ ६६ अ ।

क्रियाशक्ति—२ १७३ ब ।

क्रियाहीन ज्ञान—३.३३३ ब ।

क्रीडापर्वत—२ १७५ ब ।

क्रीडाशाला—ज्योतिष देवों के प्रासादों में २.३५१ ।

कीर्तदोष—२ १७५ ब, आहार १ २६० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ ।

क्रूर—यदुवश १ ३३७ ।

क्रोध—२ १७५ ब, कषाय २ ३५ ब, २ ३६ अ, क्षमा २.१७७ अ, जीव २ ३७ अ, दोष ३ ५२६ ब, द्वेष २.३६ अ, शक्ति २ ३८ अ, हिंसा ४.५३३ ब । प्ररूपणा—बध्न ३ १०५, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८२, उदयस्थान १.३६३ अ, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ ३००, ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०७ अ । सत् ४ २२८, स-या ४ १०५, ४ ११७, क्षेत्र २ २०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २.११२, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६०-१६१ अ.

अन्तर ११५, भाव ३२२१ अ, ३२२३, अल्पबहुत्व ४.१५३, भागाभाग ४.११७ ।

क्रोधकांडक—२.४२ अ ।

क्रोधकर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४४, स्थिति ४.४६१, अनुभाग १.६४ ब; प्रदेश ३.१३६ । बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.१०६, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८६, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६५, त्रिसंयोगी भग १.४०१ ब । संक्रमण ४.८५ अ, अल्प-बहुत्व १.१६८ ।

क्रोधशक्ति—कषाय २.३८ अ ।

क्रोधाग्नि—१.३५ ब ।

क्रोधी—आहार दोष १.२६१ अ, सन्निपातिक भाव ४.३१२ ब ।

क्रौंच—२.१७६ अ । ब्रह्मोत्तर यान ४.५११ ब ।

क्रौंचवर द्वीप सागर—नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, जल का रस ३.४७० अ, अधिपति देव ३.६१४, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अंकन ३.४४३ ।

बिलश्यमान—२.१७६ अ ।

बलेश—२.१७६ अ, २.४७० अ ।

बवाथतोय—२.१७६ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ ।

क्षण—प्रतिबुद्धता ३.११६ ब ।

क्षणभंगसिद्धि—अर्चट १.१३४ ब ।

क्षणभेद या अभेद—उत्पादादि १.३६० ।

क्षणयोगनिद्रा—२.६१० अ ।

क्षणलवप्रतिबुद्धता—३.११६ ब ।

क्षणिक—उपादान १.४४३ ब ।

क्षणिकत्व—उत्पादादि १.३५८ ब ।

क्षतौजा—मगधदेश १.३१२ ।

क्षत्रवती—२.१७६ अ, मनुष्यलोक (नदी) ३.२७५ ब ।

क्षत्रिय—२.१७६ अ, जयदेव तीर्थकर २.३७७, श्रुतधर १.३१६, इतिहास १.३२८ अ ।

क्षत्रिय वंश—३.५२३ ब ।

क्षत्रिय वर्ण—३.५२३ ब, ३.५२४ अ ।

क्षपक—२.१७६ अ, अपवाद मार्ग १.१२१ ब, अपूर्वकरण १.१२५ अ, अवपीडक १.२०० अ, आचार्य (सल्लेखना) ४.३६१ अ, आराधना १.२७१ ब, सल्लेखना ४.३८३ ब, ४.३८८ अ-३.६१ अ-३.६२ अ-ब ।

क्षपकश्रेणी—४.७२ ब, ४.७३ अ, आबाधा १.२५० अ, उषशम ४.६२ ब, करण दशक २.६ अ, कषाय २.४० ब, काय २.४५ ब, बन्धक ३.१७६ अ, समुद्घात ४.३४३ अ ।

क्षपकश्रेणी (प्ररूपणा)—बन्ध ३.६७, बन्धक ३.१७६ अ, बन्धस्थान ३.११०-१.१११, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६२ अ, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२७८-२.७६, सत्त्वस्थान ४.६८६, ४.३०४, त्रिसंयोगीभग १.४०६ अ । सत्त्व ४.१६३, सख्या ४.६४ ब, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४.४७७, काल २.१००, काला-वधिका अल्पबहुत्व १.१६१, अन्तर १.७, भाव ३.२२२ ब, अल्पबहुत्व १.१४३ ।

क्षपण—२.१७६ ब, चारित्रमोह (अन्तरकरण) १.२६ ब ।

क्षपण काल—अल्पबहुत्व १.१६१ अ ।

क्षपणसार—२.१७६ ब, इतिहास १.३४२ ब, टीका १.३४४ ब, १.३४८ अ ।

क्षपणा—४.३६० ब, ४.३६२ अ ।

क्षपित कर्माशिक—२.१७६ ब ।

क्षमण—४.३६० ब ।

क्षमणा—४.३६० ब ।

क्षमा—२.१७७ अ, क्षमणा ४.३६१ अ, शुभोपयोग १.४३४ ब, समय ४.१३६ ब ।

क्षमा-धर्म—२.१७७ अ ।

क्षमावणी व्रत—२.१७८ अ ।

क्षमा-श्रमण—२.१७८ अ, देवधि १.३२६ अ ।

क्षय—२.१७८ अ, विसंयोजना ३.५७१ ब ।

क्षयदेश—२.१७८ अ ।

क्षयोपशम—२.१८१ ब, करण चिह्न (अवधिज्ञान १.१६२ अ-ब, त्रिकरण २.१८५ अ, भवप्रत्यय अवधिज्ञान १.१६३ अ, लब्धि ३.४१२ अ, सम्यक्त्व २.१८५ अ, ४.३७० ब ।

क्षांति—२.१८६ अ ।

क्षायिक चारित्र—२.२८५ ब ।

क्षायिकदान—२.४२३ अ ।

क्षायिक भाव—अपूर्वकरण, १.१२५ ब, औदयिकत्व १.४०८ ब, केवली २.१५८ अ, क्षय २.१८१ अ, सन्निपातिक भाव ४.३१२ ब ।

क्षायिक भोग व उपभोग—३.२३७ ब ।

क्षायिक लब्धि—३.४११ ब ।

क्षायिक लाभ—३.४११ अ ।

क्षायिक वीर्य—३.५७७ अ ।

क्षायिकसम्यक्त्व—४.३६६ ब, ४.३७२ अ, अढाई द्वीप २.३६६ ब, अनन्तानुबन्धी विसंयोजना १.४३६ ब, तिर्यक् २.३६८ ब, भवतन्त्रिक देव २.४४६ अ । प्ररूपणा—बन्ध ३.१०७, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८६, उदयस्थान १.३६३ ब, उदीरणा १.४११ अ,

संक्रमण ४.८७ अ, सत्त्व ४ ३७८, २८४, सत्त्वस्थान ४ २८६, ३०१, ३०६ त्रिसंयोगी भंग १.४०८ अ। सत् ४ २५५, सख्या ४.१०८, क्षेत्र २.२०६, स्पर्शन ४ ४६२, काल २.११८, अन्तर १ २०, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व १.१५२।

सायिक सम्यग्दृष्टि—अप्रशस्त वेद ३.५८८ अ, उपशान्त कषाय ४ ३१२ ब, क्षीण कषाय ४.३१२ ब, दर्शमोह क्षपणा २ १७६ ब, संक्रमण ४ ८७ अ, सयतासंयत २.३६८ ब।

सायोपशमिक भाव—अज्ञान १ ३७ अ, अज्ञानी २ २६६ ब, गुणस्थान ३ २०६ अ, चारित्र २ २८५ ब, पौद्गलिकत्व ३ ३१८ ब, योग ३.३७७ ब, सयम ४ १३१ ब, सयमासयम ४ १३५ अ, सन्निपातिक भाव ४ ३१२ ब।

सायोपशमिक सम्यक्त्व—४.३६६ ब, ४ ३७० ब, २ १८४ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०७, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १.३८५, उदयस्थान १.३६३, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४ ३०६, त्रिसंयोगी भंग १.४०८ अ। सत् ४.२५७, सख्या ४.१०६, क्षेत्र २.२०६, स्पर्शन ४.४६२, काल २.११८, अन्तर १.२०, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १.१५२।

क्षारराशि—२.१८६ ब, ग्रह २.२७४ अ।

क्षितिशयन—२.१८६ ब, निद्रा २.६०६ ब।

क्षितिसार—४.१५ अ।

क्षिप्रमतिज्ञान—मतिज्ञान ३.२५६ अ।

क्षिप्रमतिज्ञानावरण—१ ४४६ ब।

क्षीणकषाय—२ १८६ ब, आरोहण २.२४७ अ, करण दशक २.६ अ, परिषह ३.३४ अ, बन्धक ३.१७६ अ, वीतराग २ १८६ ब, वीतराग छद्मस्थ २.१८६ ब, सन्निपातिक भाव ४ ३१२ ब, समुद्धात ४.३४३ अ।

क्षीणमोह—करण दशक २.६ अ, कषाय २.४० ब, काय २ ४५ ब, परिषह ३ ३४ अ, बन्धक २ १७६ अ, सन्निपातिक भाव ४ ३१२ ब, समुद्धात ४ ३४३ अ।

क्षीणमोह (प्ररूपणा)—बन्ध ३ ६८, बन्धस्थान ३ ११०-१११, बन्धक ३ १७६ अ, उदय १ ३७५, उदय-स्थान १.३६२ अ, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२७६, सत्त्वस्थान ४ २८६, २६६, ३०४, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ अ। प्रदेशनिर्जरा का अल्पबहुत्व १ १७४। सत् ४ १६४, सख्या ४.६४, क्षेत्र २ १६७, स्पर्शन ४.४७७, काल २ १००, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१ अ, अन्तर १.७, भाव ३.२२२ ब, अल्प-बहुत्व १.१४३।

क्षीरकदंब—२ १८७ ब।

क्षीरफल—उदम्बर १ ३६३ ब।

क्षीररस—२ १८७ ब, ग्रह २.२७४ अ।

क्षीरवर द्वीप सागर—२.१८७ ब, नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, जल का रस ३ ४७० अ, अधिपति देव ३.६१४, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अंकन ३.४४३।

क्षीरसावी ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १ ४५६ ब।

क्षीरोदधि—नामनिर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, जल का रस ३ ४७० अ, अधिपति देव ३ ६१४, ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब, अंक ३ ४४३। वैदिकाभिमत ३.४३१ ब।

क्षीरोदा—२.१८७ ब, विभगा नदी—निर्देश ३.४६० अ, नाम ३.४७४ ब, विस्तार ३ ४८६, अंकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने।

क्षुद्रध्वजा—चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ।

क्षुद्रभव—२ १८७ ब, आयु १.२६४, कालावधि का अल्प-बहुत्व १ १६१ अ।

क्षुद्रहिमवान्—पद्म आदिद्रहो का कूट—निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४५४।

क्षुधा—२.१८७ ब, परिषह ३ ३३ ब, ३.३४ अ।

क्षुल्लक—२ १८८ अ, स्पर्श्य शूद्र ३ ५२५ ब।

क्षुल्लक दीक्षा—स्पृश्य शूद्र ३ ५२५ ब।

क्षुल्लक भव—३.२०७ ब।

क्षेत्र—२.१६० अ, अनुयोगद्वार १ १०२ अ, अन्तर १ ३ ब, अवधिज्ञान १ १८८ ब, १.१६६ अ, आगमार्थ १ २३४ अ, उपक्रम १ ४१६ ब, कर्मोदय १ ३६७ अ, कायोत्सर्ग ३ ६२० ब, गणना ४ ६२ ब, निमित्त २ ६४ अ, प्रमाण २ २५ अ, ३ १४५ अ, प्ररूपणा २ १६७, बध ३ ८६ ब, मुक्ति ३ ३२६ ब, वसतिका ३ ५२७ अ, सप्तमगी ४ ३२० अ, स्वन्वतुष्टय २ २७७ ब।

क्षेत्र (भौगोलिक)—चातुर्द्विपिक भूगोल ३ ४३७ अ, बौद्धाभिमत भूगोल ३ ४३४ अ, वैदिकाभिमत ३ ४३१ ब। जैनाभिमत—निर्देश ३ ४४६ अ, विस्तार ३ ४७६-४८०-४ ८१, अंकन ३ ४४४, ४६४ के सामने। जैनाभिमत विदेह के ३२ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नाम २ ४७० ब, विस्तार ३.४७६-४८०, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४५० अ।

क्षेत्र—भरतादि क्षेत्रों की चूल्का, गणित २ २३३ अ।

क्षेत्राद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५६ ब।

क्षेत्रज्ञ — २२०६ अ, जीव २१६१ ब, २.३३३ अ-ब ।
 क्षेत्रधर्म — मगध देश १.३१२ ।
 क्षेत्रनिवन्धन — २६१० ब ।
 क्षेत्रपरिवर्तन — ४१४७ ब ।
 क्षेत्रपाल — मूढता ३.३१५ ब ।
 क्षेत्रप्रत्याख्यान — ३१३२ अ ।
 क्षेत्रप्रदेश — २२०६ अ ।
 क्षेत्रप्रमाण — २२०६ अ, २.२१५ अ, ३.१४५ अ, क्षेत्र की अपेक्षा गणना ४६२ ब ।
 क्षेत्रप्रयोग — २२०६ अ ।
 क्षेत्रप्ररूपणा — २१६७, स्पर्शन ४.४७४ ब ।
 क्षेत्रफल — २.२०६ अ । गणित — सामान्य विधि २२३२ ब, चतुरस्र २२३२ ब, घनुषाकार २२३३ अ, बेलनाकार २.२३४ अ, मृदगाकार २.२३४ अ, वलयाकार २२३३ ब, वृत्ताकार २.२३२ ब, शखाकार २२३४ अ ।
 क्षेत्रभवानुगामी — अवधिज्ञान १.१८८ ब ।
 क्षेत्रभवानुगामी — अवधिज्ञान १.१८८ ब ।
 क्षेत्रमगल — ३२४१ अ ।
 क्षेत्रमिति — २२०६ अ ।
 क्षेत्रयुति — ३३७३ ब ।
 क्षेत्रलोक — २.१६२ अ ।
 क्षेत्रवर्गणा — ३५१२ ब ।
 क्षेत्रवान — २२०६ अ, द्रव्य २.४५६ ब ।
 क्षेत्रशुद्धि — ज्ञान १२२८ अ, शुद्धि ४३६ ब, स्वाध्याय ४.५२६ अ ।
 क्षेत्रसयोग पद — ३५ अ ।
 क्षेत्रससार — ४.१४७ अ ।
 क्षेत्रसमास बृ० — इतिहास १३४१ अ ।
 क्षेत्र सामायिक — ४.४१६ अ ।
 क्षेत्रस्तव — ३२०० ब ।
 क्षेत्रस्पर्शन — ४.४७६ अ ।
 क्षेत्रादिग्रन्थ — २२७३ अ ।
 क्षेत्रानुगम — ११०२ ब, २.१६१ अ ।
 क्षेत्रार्य — आर्य १.२७५ अ ।
 क्षेत्रोपसयत — ४.३३७ अ ।
 क्षेत्र — २२०६ अ ।
 क्षेत्रंकर — २२०६ अ, कुलकर ४२३, ग्रह २२७४ अ, लौकान्तिक देव ३४६३ ब, विद्याधर नगरी ३५४५ अ ।
 क्षेत्रधर — २.२०६ अ, कुलकर ४.२३, इतिहास १३३१ अ ।

क्षेम — २२०६ अ, ग्रह २.२७४ अ ।
 क्षेमकीर्ति — २.२०६ अ, काष्ठा सघ १.३२७ अ, १.३३१ अ, १.३३३ ब ।
 क्षेमचंद्र — २.२०६ ब, इतिहास १३३३ ब ।
 क्षेमचरी — विद्याधर नगरी ३५४५ अ ।
 क्षेमपुर — २.२०६ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।
 क्षेमपुरी — २२०६ ब, विदेह नगरी — निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६-४८०-४८१, अंकन ३.४४४, ३४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ । तीर्थंकर अरनाथ २.३७८ ।
 क्षेमा — २२०६ ब, बलदेव ४१६ ब, विदेह नगरी — निर्देश ३४६० अ, नामनिर्देश ३४७० ब, विस्तार ३.४७६-४८१, अंकन ३.४४४, ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ ।
 क्षेमैर्कीर्ति — नन्दिसंघ १.३२३ ब ।
 क्षोभ — २.२०६ ब, अनुभव १.८५ ब ।
 क्षौद्रवर द्वीप सागर — नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३४७८, जल का रस ३४७० अ, अधिपति देव ३.६१४, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अंकन ३.४४३ ।
 क्ष्वेलौषधऋद्धि — ऋद्धि १.४४७, १.४५५ अ ।

ख

खड — २.२०६ ब, अधःप्रवृत्तिकरण २८ अ, २.१० अ, भेद ३२३७ अ ।
 खंडकल्पना — अभिभागी प्रतिच्छेद २२४१ अ, आकाश १२२१ अ ।
 खंडदेव — मीमांसदाशन ३.३११ अ ।
 खंडनखंडखाद्य — वेदान्त ३५६५ ब ।
 खंडप्रपात — २२०६ ब, चक्रवर्ती ४.१५ ब, विजयार्ध पर्वत की गुफा — निर्देश ३.४४८ अ, ३.४५५ अ-ब, ३४६२ ब, विस्तार ३.४८२, अंकन ३.४४४, विदेहस्थ विजयार्ध की गुफा में — निर्देश ३४६० अ, विस्तार ३४८२, अंकन ३४६० अ । विजयार्ध पर्वतों के कूट — निर्देश ३४७१ ब, विस्तार ३.४८३, वर्ण ३४७७, अंकन ३४४४, ३४४८ ।
 खंडशलाका — २.२०६ ब ।
 खडिका — २२०६ ब, विद्याधर नगरी ३५४५ ब ।
 खंडित — २२०६ ब, गणित २.२२३ अ ।

खंडोत्कीर्ण काल—अन्तरकरण १ २६ ब ।

ख—२ २०६ ब, अतन्त की सहनानी २.२२१ अ ।

१६ ख—पुद्गल राशि २.२१६ अ ।

१६ ख ख—कालसमयराशि २.२१६ अ ।

१६ ख ख ख—आकाशप्रदेशराशि २ २१६ अ ।

खगपुर—बलदेव ४.१७ अ, ४ १८ अ ।

खचर—२.२०६ ब, विद्याधर ३.५४४ ब, ३.४४८ अ ।

खटोलना गीत—इतिहास १ ३४७ ब ।

खड—२.२०६ ब । नरक पटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

खडखड—२.२०६ ब । नरक पटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अंकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १ २६३ ।

खडा—२.२०६ ब । नरक पटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३ ।

खडिका—२ २०६ ब । नरक पटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

खड्ग—२.२०६ ब, चक्रवर्ती ४ १३ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ, विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नाम निर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७६-४८१, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ ।

खड्गपुरी—२ २०६ ब, विदेहनगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७६-४८१, अकन ३ ४४४, ३.४६० अ, ३ ४६४ के सामने ।

खड्गसेन—२ २०६ ब, इतिहास १.३३४ अ ।

खड्गा—२.२०६ ब, विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७६-४८१, अकन ३ ४४४, ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ ।

खदिरसार—२ २०६ ब ।

खरकर्म—२ २०६ ब, सावद्य ४.४२१ ब ।

खरतरगच्छ—श्वेताम्बर गच्छ ४.७७ ब ।

खरवूषण—२.२१० अ ।

खरभाग—२.२१० अ, भावन लोक—निर्देश ३ ३८६ ब, १६ पटल ३.३८६ ब, विस्तार ३.३८६ ब, अंकन ३.२१० अ, ३ ३८६, ३.४३६, ३ ४४१, चित्र ३ २१० अ । भावन लोक ३.२०६ ब, भवनो की सख्या ३.२१०, तेज-अपकायिक जीव २ ४५ ब ।

खर्बट—चक्रवर्ती ४ १३ ब ।

खलीनित—२.२१० अ, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२१ ब ।

खांड—शुभ अनुभाग १ ६० ब ।

खांसना—कायक्लेश २ ४७ ब ।

खातिका—२ २१० अ, समवसरण ४ ३३० ब ।

खाद्य—२ २१० अ, आहार १ २८५ अ ।

खारवेल—२ २१० अ ।

खारी—२ २१० अ, तौल का प्रमाण २ २१५ अ ।

खुजली—कायक्लेश २ ४७ ब ।

खुरपा—माया कषाय २ ३८ अ ।

खुशालचंद—२ २१० अ, इतिहास १ ३३४ अ ।

खेचर जीव—अवगाहना १ १७६, आयु १ २६३, इन्द्रिय १ ३०६ ब, जीवसमाप्त २ ३४३, नभचर २ ३६७ ।

खेचरानंद—वानरवश १ ३३८ ब ।

खेट—२ २१० अ, चक्रवर्ती ४ १३ ब ।

खेटक—बलदेव ४ १७ ब ।

खेद—२ २१० अ ।

खेलमल्लक—श्वेताम्बर ४ ८० अ ।

खोह—वसतिका ३ ५२८ अ ।

ख्यातिपूजा लाभ—अनाकाक्ष अनशन १ ६५-६६, उपदेश १ ४२४ ब, तप २ ३५८ ब, २ ३६० अ, धर्म २ ४७६ अ, ध्याता २ ४६३ अ, राग ३ ३६६ ब, ३ ३६७ अ, वाद ३ ५३३ अ, विनय ३.५५२ ब, विवेक ३ ५६६ अ, सल्लेखना ४ ३८३ अ, साधु ४ ४०५ अ, स्वाध्याय ४.५२३ ।

ग

गंग—इतिहास—मूलसंघ १ ३१६ ।

गङ्गकीर्ति—नन्दिसंघ १ ३२३ ब ।

गङ्गदेव—२.२१० अ, इतिहास १.३२८ अ, कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ, नारायण ४.१८ अ, मूल संघ १ ३१६ ।

गङ्गराज—२ २१० अ ।

गंगा—२ २१० अ, चक्रवर्ती ४ १५ ब, तीर्थकर २ ३६२ । नदी—निर्देश ३ ४५५ अ, विदेहस्थ नदी—निर्देश ३.४६० अ, विस्तार ३.४८६, जल का रंग ३.४७८

अकन ३४४४, ३४६४ के सामने, चित्र ३४४७।
 बौद्धाभिमत ३४३४ अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब,
 स्नान ४४२ ब, ४४७१ ब।
गंगाकुंड—२२१०, निर्देश ३४५५ अ, विस्तार ३४८३,
 ४६०, अकन ३४४४, ४४७, इसकी देवी ३४७२ अ।
गंगाकूट—२२१० अ, नदी कुण्ड में स्थित—निर्देश
 ३४५५ अ, विस्तार ३४८४, वर्ण ३४७७, अकन
 ३४४७। हिमवान पर्वत पर—निर्देश ३४७२ अ,
 विस्तार ३४८३, अकन ३४४४।
गंगातट—नारायण ४.२० अ।
गंगादास—इतिहास १३३४ अ।
गंगादेवी—२२१० अ।
गंगास्नान—४४२ ब, ४४७१ ब।
गंडरादित्य—३२१० ब।
गडविमुक्त देव—२२१० ब, नन्दिसघ, देशीयगण १३२५,
 इतिहास १३३१ ब, १३३२ अ।
गंध—१२१० ब, आहारान्तराय १२८ ब, ईर्यापथ कर्म
 १३४६ ब, गुण २२१० ब, निक्षेप २६०२ ब,
 पूजा ३७८ ब, व्यन्तर देव २२११ अ।
गंधअष्टमी व्रत—२२११ अ।
गंधकुटी—२२११ अ, समवसरण ४३३१ ब, ४३३४ ब।
गंधकूट—२२११ अ, शिखरी पर्वत—निर्देश ३४७२ ब,
 विस्तार ३४८३, अकन ३४४४।
गंधदेव—नन्दीश्वर द्वीप तथा क्षौद्रवर का रक्षक देव
 ३६१४, आयु १२६४ ब।
गंधमादन—२२११ अ, यदुवश १३३७, विद्याधर नगरी
 ३५४६ अ।
गंधमादन (कूट)—गजदन्त—निर्देश ३४७३ अ, विस्तार
 ३४८३, अकन ३४४४, ३४५७।
गंधमादन(पर्वत)—२.२११ अ। गजदन्त—निर्देश ३.४५६
 ब, नाम निर्देश ३४७१ अ, विस्तार ३४८२, ३४८५-
 ४८६, वर्ण ३४७७, अकन ३४४४, ४५७, ४६४ के
 सामने। चित्र ३४५२ ब, इसके कूट व देव ३.४७२।
 नाभिगिरि—निर्देश ३४५२ ब, विस्तार ३४८३,
 ४८५-४८६, वर्ण ३४७७, नामनिर्देश ३४७१ अ,
 अंकन ३४४, ३४६४ के समाने, चित्र ३४५२ ब।
गंधमालिनी—२२११ अ। गजदन्त कूट—निर्देश ३४७३
 अ, विस्तार ३४८३, अकन ३४४४, ३४५७। विदेह
 क्षेत्र—निर्देश ३४६०, नामनिर्देश ३४७० ब,
 विस्तार ३४७६-४८०-४८१, अंकन ३४४४,
 ४६४ के समाने, चित्र ३४६० अ। वक्षार का कूट

तथा देवी, ३४७२ ब।

गंधमाली—२२११ अ।

गंधयंत्र ३३५२।

गंधर्व—२२११ अ, कुन्धुनाथ का यक्ष २३७६, गुफा
 २२११ अ, विद्याधर ३५४४ अ, सुमेरु के वन में
 देव भवन—निर्देश ३४५० अ, अकन ३४५१। शक
 वश १३१४।

गंधर्वदेव—व्यन्तर देव—निर्देश ३६१० ब, अवगाहना
 १.१८०, अवधिज्ञान ११६८ ब, आयु १.२६४ ब।
 इन्द्र की शक्ति आदि ३६१०-६११, वर्ण व चैत्यवृक्ष
 ३६११ अ, अवस्थान ३६१२-६१४, ३४७१।

गंधर्वदेव (प्ररूपणा)—बध ३१०२, बधस्थान ३११३,
 उदय १.३७८, उदयस्थान १३६२ ब, उदीरणा
 १४११ अ, सत्त्व ४२८२, सत्त्वस्थान ४२६८,
 ३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१८८,
 सख्या ४६७, क्षेत्र २१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल
 २.१०४, अन्तर ११०, भाव ३.२२० अ, अल्पवहुत्व
 १.१४५।

गंधर्वनगर—अभिनन्दन नाथ २३८२, विद्याधर नगरी
 ३५४५ ब।

गंधर्वपुर—२२११ अ, विद्याधर नगरी ३५४५ ब,

गंधर्व विवाह—३५६५ ब।

गंधर्वसेन—२२११ अ, शक वश १३१४।

गंधवती—नाभिगिरि—निर्देश ३.४५२ ब, नाम निर्देश
 ३४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३४८५-४८६, वर्ण
 ३४७७, अकन ३४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र
 ३४५२ अ।

गंधवती (कूट)—शिखरी पर्वत का—निर्देश ३४७२ ब,
 विस्तार ३४८३, अकन ३४४४।

गंधवान—२२११ ब, नाभिगिरि—निर्देश ३४५२ ब,
 नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३४८५-
 ४८६, वर्ण ३४७७, अकन ३४४४, ४६४ के सामने,
 चित्र ३४५२ ब।

गंधव्यास—गजदन्त का कूट—निर्देश ३.४७३ अ, विस्तार
 ३४८३, अकन ३४४४, ३४५७।

गंधसमृद्ध—२२११ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

गंधहस्ती महाभाष्य—२.२११ ब, इतिहास १.३४० ब।

गंधा—२.२११ ब। विदेहस्थ देश—निर्देश ३.४६० अ,
 नामनिर्देश ३.४७०, विस्तार ३.४७६-४८०, ४८१,
 अंकन ३४४४, चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का
 कूट तथा देवी—निर्देश ३४७२ ब, विस्तार ३४८२,
 ३.४८५-४८६, अकन ३.४४४।

गधारी — कुरुवश १.३३६ अ ।

गंधिला — २ २११ ब । विदेहस्थ देश—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४८६, ३ ४८०, ३ ४८१, अकन ३ ४४४, चित्र ३ ४६० अ । वक्षार-गिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, अकन ३ ४४४ ।

गंधोदक वृष्टि—अर्हन्तातिशय १ १३७ ब ।

गंभीर — २ २११ ब, चैत्य-चैत्यालय ३ २६३ अ, यदुवश १ ३३७ ।

गंभीर भालिनी — २ २११ ब, विभगा नदी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४८६-४६०, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने ।

गंभीरा — २ २११ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

गंभीरावर्त — चक्रवर्ती ४ १५ ब ।

गगनखंड — ज्योतिषचक्र २ ३५० ।

गगनचरी — २ २११ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ ।

गगननंदन — २ २११ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

गगनमंडल — २ २११ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

गगनवल्लभ — २ २११ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

गगनानंद — वानरवश १ ३३८ ब ।

गच्छ — २ २११ ब, गणित २ २२६ ब, २ २३० अ, जैता-भासी सघ १ ३१६ अ, श्वेताम्बर ४ ७७ ब ।

गच्छपद — २ २११ ब ।

गच्छ प्रतिबद्ध — सल्लेखना १ ४६ अ ।

गच्छ विनिर्गति — सल्लेखना १ ४६ अ ।

गज — २ २११ ब, एकान्त १ ४६३ ब, क्षेत्रप्रमाण २ २१५ ब, चक्रवर्ती ४ १३ अ, तीर्थकर अजितनाथ २ ३७६, सौधमेन्द्र व ईशानेन्द्र यान ४ ५११ ब । स्वर्ग पटल — निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अकन ४ ५१६ ब, देव की आयु १ २६७ ।

गजकुमार — २ २११ ब ।

गजदंत — २ २११ ब, गजदन्त पर्वत—निर्देश ३ ४५६ ब, नामनिर्देश ३ ४७१ ब, गणना ३ ४४५ अ, विस्तार ३ ४८२, ४८५-४८६, वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४४४, ४५७, ४६४ के सामने, चित्र ३ ४५२ ब ।

गजपुर — २ २११ ब, मनुष्यलोक ३ २७६ अ ।

गजवती — २ २११ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, ३ २७६ अ ।

गजवाहन — कुरुवश १ ३३६ अ ।

गजस्नान — सम्यग्दृष्टि ४ ३७७ ब ।

गजाधर लाल — २ २११ ब, इतिहास १ ३३४ ब ।

गड्डी — २ २१२ अ ।

गण — २ २१२ अ, सघ ४ १२४ अ ।

गणग्रहणक्रिया — संस्कार ४ १५२ ब ।

गणधर — २ २१२ अ, अग्निकुण्ड १ ३५ ब, इन्द्रभूति १ २६६ ब, तीर्थकर सघ २ ३८६, मोक्ष ३ ३२८ ब ।

गणधरकीर्ति — इतिहास १ ३३१ ब ।

गणधरवल्लयंत्र — ३ ३५२ ।

गणना — २ २१३ अ, प्रमाण ३ १४४ ब-१४५ अ ।

गणनान्त — २ २१३ अ, अनन्त १ ५५ ब ।

गणना प्रमाण — ३ १४४ ब-१४५ अ, २ २१४ ब ।

गणना संख्यात — असख्यात १ २०६ अ ।

गणपोषण काल — २ ८० ब ।

गणिका — व्यन्तरेन्द्र—निर्देश ३ ६११ ब, भवन-विस्तार ३ ६१५ । स्वर्गेन्द्र—निर्देश ४ ५१४ अ ।

गणित — २ २१३ अ ।

गणितज्ञ — २ २३४ अ ।

गणितशास्त्र — २ २३४ अ ।

गणितसारसंग्रह — २ २३४ अ, इतिहास १ ३२६ ब, १ ३३० अ, १ ३४२ अ ।

गणी — २ २३४ अ ।

गणोपग्रहण क्रिया — संस्कार ४ १५१ ब ।

गतभ्रम — राक्षसवश १ ३३८ अ ।

गति — २ २२४ अ, काल द्रव्य २ ८४ ब, धर्म द्रव्य २ ४८८ ब, २ ४६०, परिस्पन्दन ३ ३७६ अ ।

गति-अगति (सामान्य) — तिर्यच—कर्मभूमि भोगभूमि २ ३१६, पर्याप्तापर्याप्ति २ ३२०, पृथिवी आदि पच स्थावर विकलत्रय २ ३२०, सजी असजी २ ३१६, सरीसृप व पक्षी २ ३१६, देवगति व नरकगति—२ ३२० । मनुष्यगति—कर्मभूमि भोगभूमि २ ३१६, दश व चतुर्दश पूर्वी २ ३१६, साधु परिव्राजक व तापस २ ३१६, स्त्री पुरुष २ ३१६ । षट्लेश्या व षट् सस्थान २ ३२१ ।

गति-अगति (गुण प्राप्ति)—तिर्यचगति कर्मभूमिज भोग-भूमिज २ ३२२, देवगति २ ३२२, नरकगति २ ३२२, मनुष्यगति २ ३२२ । पचज्ञान-प्राप्ति २ ३२२, तीर्थकरत्व मोक्ष व शलाकापुरुषत्व २ ३२२, सयम-सयमासयम व सम्यक्त्व २ ३२२ ।

गति-अगति (गुणस्थानप्राप्ति) — चतुर्गति सामान्य २ ३१८, मिथ्यादृष्टि से प्रमत्तसयत २ ३१८-३२० ।

गति-अगति चूलिका—जन्म २ ३१८ ब ।

गति द्विक—३ ६६ ब ।

गति नामकर्म प्रकृति—२ २३६ ब, आयुर्कर्म १ २५४ अ ।

१ २६२ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६२, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३ ६५ अ, ३ ६७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदय की विशेषता १ ३७२ ब, १ ३७३ ब, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्प-बहुत्व १ १६८।

गतिप्रायोग्यानुपूर्वी—१ २४७ अ।

गति-भ्रमण काल—इन्द्रियमार्गणा २ ६५ अ।

गतिमार्गणा—२ २३४ अ, अवगाहना १ १७८, १ १८०, आयु १ २६२ अ, कषाय २ ३८ अ, २ ४० अ, मार्गणता ४ ६० अ, मोक्ष ३ ३२७ ब, सिद्धो का अल्पबहुत्व १ १५३।

गतिमार्गणा (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १००, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२. सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४ ३०५, त्रिसयोगी स्थान भग १ ४०६ ब, आयुर्कर्म विषयक त्रिसयोगी स्थान १ ४०१। सत् ४ १६५, सख्या ४ ६५, क्षेत्र २ १६४, २ १६७, स्पर्शन ४ ४७६, काल २ ८३ अ, २ १०१, अन्तर १ ५, १ ८, भाव ३ २२० अ, अल्प-बहुत्व १ १४३ ब, भागाभाग ४ ११०। पञ्चशरीर स्वामित्व ४ ७, इसका अल्पबहुत्व १ १५६।

गदा—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

गद्यकथाकोष—२ ३ ब, इतिहास १ ३४२ ब।

गद्यचिन्तामणि—२ २३८ अ, इतिहास १ ३४१ ब।

गमन—गति २ २३५ अ, चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब धर्म द्रव्य २ ४८६ अ, विग्रहगति १ २४७ ब।

गमनहेतुत्व—धर्म द्रव्य २ ४८८ ब।

गमनागमन तप—कायक्लेश २ ४७ अ।

गया—बुद्ध गया (उरु बिल्ब) १ ४४५ ब।

गरिमा—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५१ अ।

गरिष्ठ रस—३ ३६३ अ।

गरुड—२ २३८ अ, तीर्थकर शान्तिनाथ का यक्ष २ ३७६, ध्यान २ ४६६ अ। सहस्रारेन्द्र तथा आनतेन्द्र का यान ४ ५११ ब। सानत्कुमार स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अकन ४ ५१५, देवायु १ २६७।

गरुडध्वज—२ २३८ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

गरुडपञ्चमीव्रत—२.२३८ अ।

गरुडेन्द्र—२ २३८ अ।

गर्गषि—इतिहास १ ३३० अ, १ ३४२ अ, २ ६३६ ब।

गर्तपूर्ण वृत्ति—२ २३८ अ, भिक्षा ३ २२६ ब।

गर्दतोय—२ २३८ अ, लौकान्तिक ३ ४६३ ब।

गर्दनिल्ल—२ २३८ अ, शकवश १ ३१४।

गर्भ—२ २३८ ब, ब्रह्मचर्य ३ १६३ अ।

गर्भकल्याणक—२ १३६ अ, कल्याणक २ ३२ अ।

गर्भगृह—भवनवासी देवों के भवनो मे ३ २१० ब।

गर्भज—जन्म २ ३१२ ब, २ ३१४, जीवसमाप्त २ ३४३, तिर्यंच २ ३६७ मनुष्य अल्पबहुत्व १ १४६।

गर्भसंचार—४ ७६ ब।

गर्भाधान क्रिया—मन्त्र ३ २४६ ब, संस्कार ४ १५१ अ।

गर्भान्वयक्रिया—संस्कार ४ १५० ब।

गर्व—मानकषाय ३ २६४ ब।

गर्हण—२ २३८ ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७८ ब।

गर्हा—२ २३८ ब, विषकुम्भ १ ४३४ अ, समिति ४ ४४२ अ, सम्यग्दर्शन ४.३५१ अ।

गर्हित वचन—वचन ३ ४६७ ब।

गलसेन—तीर्थकर २ ३६२।

गलितावशेष—२ २३८ ब, गुणश्रेणीसंक्रमण ४ ८६ अ।

गवेषणा—२ २३८ ब, ऊहा १ ४४५ ब।

गव्यूति—२ २३८ ब।

गांगेय—२ २३८ ब, कुरुवश १ ३३६ अ।

गांधर्व विवाह—३ १६१ ब।

गांधार—२ २३८ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ, यदुवश १ ३३७, विद्याधर वश १ ३३६ अ, विद्या ३ ५४४ अ, स्वर ४ ५०८ ब।

गाधार (कूट)—शिखरी पर्वत का—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४।

गांधारी—२ २३६ अ, विद्या ३.५४४ अ, विमलनाथ की यक्षिणी २ ३७६, हरिवश १ ३४० अ।

गाय—श्रोता ४ ७४ ब।

गारव—२ २३६ अ, विनय ३ ५५३ ब।

गारुड तत्त्व—२ २३८ अ।

गारुडी विद्या—२ ४६६ अ।

गार्ग्य—२ २३६ अ, १ ३२ अ, अक्रियावादी १ ४६५ अ।

गार्हपत्य—अग्नि १ ३५ ब।

गिरि—यदुवश १ ३३७, हरिवंश १ ३३६ ब।

गिरिकूट—२ २३६ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

गिरिकूटक—चक्रवर्ती ४ १५ अ।

गिरिनदन—वानरवश १ ३३८ ब।

गिरिनार—२ २३६ अ, नेमिनाथ २.३८४, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

गिरिवज्र—२ २३६ अ ।

गिरिशिखर—२ २३६ अ, विद्याधर लोक ३ ५४६ अ, वसतिका ३ ५२८ अ ।

गीतरति—२ २३६ अ, गन्धर्व जातीय व्यन्तरेन्द्र—निर्देश २ २२६ अ, ३ ६११ अ, सख्या ३ ६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, आयु १ २६४ ब ।

गीतरस—२ २३६ अ, गन्धर्व जातीय व्यन्तरेन्द्र—निर्देश २ २११ अ, ३ ६११ अ, सख्या ३ ६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, आयु १ २६४ ब ।

गीतवीतराग—इतिहास १ ३४७ अ ।

गुंजाफल—२ २३६ अ, तौल का प्रमाण २ २१५ अ ।

गुड—शुभ अनुभाग १ ६० ब ।

गुण—२ २३६ अ, २ २४० अ, अचेतन २ २४४ ब, अनन्त २ २४४ अ, अन्यदृष्टिप्रशसा १ ११२, अनुजीवी, २ २४३ ब, अमूर्त २ २४४ ब, अर्हन्त १ १३७ अ, अविभाग प्रतिच्छेद १ २०३ अ, २ २४१ अ, आचार्य १ २४२ अ, उत्सादादि १ ३६१ ब, उपचार १ ४१६-४२१, उपशम १ ४३७ अ, उपाधगय १ ४४४ अ, कारण कार्य २ ५५ ब, चेतन २ २४४ ब, जीव २ ३३७ अ, धर्म २ ३३७ अ, परद्रव्य ४ ३२१ ब, पर्याय ४ ३२१ ब, पुद्गल ३ ६७ ब, प्रतिजीवी २ २४३ ब, भाव ३ २१७ ब, मूर्त २ २४४ ब, वर्णव्यवस्था ३ ५२४ ब, सदसत् १ ३६१ ब, स्वद्रव्य ४ ३२१ ब, स्वभाव ४ ५०७ ब ।

गुणक—२ २४४ ब, गणित २ २२२ ब ।

गुणकार—२ २४४ ब, अनुयोगद्वार १ १०२ ब, गणित २ २२२ ब, २ २२४ अ ।

गुणकीर्ति—२ २४४ ब, द्राविड सव १ ३२० ब, नन्दिसंघ १ ३२३ ब, १ ३२४ अ, इतिहास १ ३३० ब, १ ३३३ ब ।

गुणगुह—नमस्कार २ ५०५ ब ।

गुणचंद्र—नन्दिसंघ १ ३२३ ब, देशीय गण १ ३२४ ब, इतिहास १ ३३३ ब, १ ३४७ अ ।

गुणत्व—२ २४४ ब ।

गुणदोष—सल्लेखना ४ ३६० ब ।

गुणधर—२ २४४ ब, यदुवंश १ ३३६ । मूलसंघ १.३१७ ब, १ ३२२ ब, गुणधर संघ १ परि०/३१, इतिहास १ ३२८ अ, १ ३४० अ, १ परि०/२१-२, १ परि०/३.१-२ ।

गुणधरकीर्ति—इतिहास १.३३१ ब ।

गुणनन्दि—२ २४४ ब, नन्दिसंघ १ ३२३ अ, १.३२४ ब, देशीयगण १ ३२४ ब, इतिहास १ ३२६ अ, १ ३३० अ ।

गुणन—२.२४५ अ, गणित २ २२२ ब, २.२२६ ब ।

गुणनिमित्तक नाम—२ ५८२ ब ।

गुणपरावर्तन—२ ६६ अ ।

गुणपर्याय—पर्याय ३ ४६ ब, ३ ४८ अ ।

गुणपर्याय आरोप—उपचार १.४२१ अ ।

गुणप्रत्यय—अवधिज्ञान १ १७८ ब, १.१६२-१६६, करण चिन्ह १.१६१ ब ।

गुणप्रत्यासत्ति—४ १४१ अ ।

गुणभद्र—२ २४५ अ, उत्तरपुराण १ ३५६ अ, पंचस्तूप सघ १ ३२६ ब, सेनसघ १.३२६ ब, इतिहास प्र० १ ३३० अ, १ ३४२ अ, द्वि० १ ३३२ अ, १.३४४ ब, तृ० १ ३३३ अ ।

गुणयोग—३ ३७६ अ ।

गुणवती—२.२४५ अ ।

गुणवर्म—२ २४५ अ, इतिहास १.३३२, १.३४५ अ ।

गुणव्रत—२.२४५ ।

गुणश्रेणी—गणित २ २२८ ब, सक्रमण ४ ८८ ब ।

गुणश्रेणी आयाम—सक्रमण ४ ८६ अ ।

गुणश्रेणी निक्षेपण—सक्रमण ४.८६ ब ।

गुणश्रेणी निर्जरा—अनिवृत्तिकरण २ १४ ब, प्रदेश निर्जरा अल्पबहुत्व १ १७४ अ, व्यवहारचारित्र २ २६१ अ, सक्रमण ४ ८६ अ ।

गुणश्रेणीशीर्ष—सक्रमण ४ ८६ अ ।

गुणसंक्रमण—४ ८४ अ, ४ ८८ अ, प्रदेशनिर्जरा का अल्प-बहुत्व १ १७४ ब ।

गुणसमुदाय—द्रव्य २ ४५३ ब ।

गुणसेन—२ २४५ ब, काष्ठा संघ १.३२७ अ, लाडवागड सघ १ ३२७ ब, सेन सघ १ ३२६ अ, इतिहास १ ३३१ अ-ब ।

गुणस्थान—२ २४५ ब, २ ३१८ ब, अनिवृत्तिकरण १.६७ अ, अन्तरकरण १ ५ अ, आत्मानुभव १.८४-८६ अ, आद्य चार गुणस्थान ४.४२४ ब, आर्य ३.२६७ ब, आरोहण अवरोहण क्रम २ २४७, आर्तस्थान १ २७४ अ, इन्द्रिय मार्गणा १ ३०७ अ, ईर्यापथ कर्म उपयोग १ ४३४ अ, उपशम श्रेणी १.४४२ अ, १ ३४६ अ, उपशान्तकषाय १ ४४२ ब, करण दशक २ ६ अ, कषाय २.४० ब, काय मार्गणा २.४५ अ, काल २.६६

अ, क्षयक श्रेणी ४७२ ब, गोत्र ३५२२ ब छेदोपस्था-
पना चारित्र ३३६ ब, तिर्यञ्च २३६८ अ, त्रस २.३६८
ब, दर्शन मार्गणा २४१६ ब, दशकरण २६ अ, देव
गति २४४७ अ, धर्मध्यान १८५ अ-ब, २४८१ ब,
नरकगति २.५०४ ब, परिषह ३३४ अ, बद्धायुष्क
१.२६२ अ, भव्यत्व मार्गणा ३२१२ ब, भोगभूमि
३२३५ ब, मरण ३.२८२ ब, मिथ्या नय ३३०७ ब,
म्लेच्छ ३३४६ ब, ३३४७ अ, यथाख्यातचारित्र
३३७० ब, योगमार्गणा ३३७६ अ, रौद्रध्यान ३४०८
ब, लेश्यामार्गणा ३४२७ अ, वेदमार्गणा ३५८८
अ, शुक्लध्यान ४३६ अ, सज्ञा ४१२१ ब, सज्ञी
मार्गणा ४१२२ ब, सामान्य २३१८ ब, सूक्ष्मक्रिया
प्रतिपाती ध्यान ४३६ ब, सासादन ४४२४ ब, स्थान
४.४५२ ब ।

गुणहानि—२२४७ ब, उदय १३७१ अ-ब । गणित—
निर्देश २२३१ अ-ब, द्रव्य २.२३२ अ, चय
२२३२ अ, मध्यधन २.२३२ अ, अनुकृष्टि चय
२२३२ अ ।

गुणांश—२२४१ ब, मिश्र गुणस्थान ३.२१० अ ।

गुणा—२२४७ ब ।

गुणाधिक—२.२४७ ब, सगति ३११६ अ ।

गुणानुराग—शुभोपयोग १.४३४ ब, सगति ४.११६ अ ।

गुणारोपण—प्रतिष्ठा विधान ३१२० ब ।

गुणाधिक नय—२२४७ ब, नय २५१५ ब

गुणित—२२४७ ब, गणित २२२२ ब ।

गुणित कर्माधिक—२१७६ ब ।

गुणित क्षपित घोलमान—२१७७ अ ।

गुणितेश—२२४७ ब, सप्तभगी ४३२४ अ-ब, ४३२५ ब ।

गुणीनय—२५२३ ब ।

गुणोत्तर श्रेणी—२२४७ ब ।

गुणोपचार—१४२१ ब ।

गुण्य—२२४७ ब, गणित २.२२२ ब ।

गुप्तफल—गणधर २२१३ अ ।

गुप्तयज्ञ—गणधर २२१२ ब ।

गुप्तवश—इतिहास १३११ अ-ब, १३१५ ।

गुप्तसंघ—१३१७ ब ।

गुप्तसवत्—१.३०६ ब, १३१० अ ।

गुप्ति—२.२४८ अ, अहिंसा व्रत भावना १२१६ अ, चारित्र
२२६४ ब, शुभोपयोग १४३३ अ, १४३४ ब, सयम
४.१३८ ब, सामायिक चारित्र ४.४२० अ, सूक्ष्मसाम्पराय
चारित्र ४.४४१ ब ।

गुप्तिऋद्धि—२२५१ ब, पुन्नाट संघ १३२७ अ, इतिहास
१३२८ अ ।

गुप्तिगुप्त—२२५१ ब, मूलसंघ १ परि०/२३, ७-६,
नन्दि संघ १३२३ अ, १ परि०/४२, भद्रबाहु ३२०५
ब, इतिहास १३२८ ब ।

गुप्तिमान्—धर्मनाथ २.३७८ ।

गुप्तिवान्—सामायिक ४४१५ ब ।

गुप्तिश्रुति—२२५१ ब, पुन्नाट संघ १.३२७ अ, इतिहास
१३२८ अ ।

गुफा—गजदन्त पर्वत ३.४५३ अ, भरत एरावत विजयार्ध
पर्वत—निर्देश ३.४१८ अ, गणना ३.४५ अ, विस्तार
३.४८२, अकन ३.४५८ । विदेह विजयार्ध—निर्देश
३.४६० अ, अकन ३.४६० अ । सुमेरु पर्वत के वन
३.४५० अ । वसतिका ३.५२७ ब ।

गुमानी राम—२२५१ ब, इतिहास १३३४ ब ।

गुरु—२२५१ ब, अर्हन्त २.२५१ ब, आचार्य २.२५१ ब,
आत्मा २.२५२ ब, आलोचना १२७८ अ, उपाध्याय
२.२५१ ब, निर्यापक २.६१४ ब, मिथ्यादृष्टि ३.४६६
ब, विनय ३.५५१ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५६ अ, साधु
२२५१ ब ।

गुरुडांक—इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ ।

गुरुतत्त्वविनिश्चय—२.२५३ ब ।

गुरुत्व—२२५३ ब ।

गुरुत्वगति—२.२३५ अ ।

गुरुपरम्परा—आगम १.२२८ अ, इतिहास १.३१६-
३१७ ।

गुरुपूजन क्रिया—संस्कार ४.१५२ अ ।

गुरुपूजा—शुभोपयोग १४३४ ब ।

गुरुमत—मीमांसक ३३११ अ ।

गुरुमूढता—३३१५ ब ।

गुरुवन्दना—३४६५ ब ।

गुरुसाक्षी—व्रत ३६२६ अ ।

गुरुस्थानाभ्युपगमन क्रिया—संस्कार ४.१५१ ब ।

गुर्जर नरेन्द्र—२२५३ ब ।

गुल्म—२२५३ ब । सेना ४.४४४ अ ।

गुहिलराज—२.२५३ ब ।

गुह्य—समयसार ४३२६ अ ।

गुह्यक—२२५४ अ । वर्द्धमान का यक्ष २.३७८ ।

गूगा—भाषा समिति ४४३० ब ।

गुड क्षुल्लक—२१६० अ ।

गुडदंत—कुलकर ४.२५ ।

गूढब्रह्मचारी—३.१६४ ब ।

गृह्यता—आहार १ २८८ ब ।

गृह्यपिच्छ—२.२५४ अ, कुन्दकुन्द २ १२६ब-१२७ अ, मूलसघ १.३२२ ब, नन्दिसंघ १ ३२४ अ, देशीय गण १.३२४ ब, इतिहास १ ३२८ ब ।

गृह्यपृष्ठ—मरण ३.२८२ अ ।

गृह्य—लोभ ३.४६२ ब ।

गृह्य—२ २५४ अ ।

गृह्यकर्म—कर्म २ २६ अ, निक्षेप २ ५६८ अ ।

गृह्यकूटक—चक्रवर्ती ४ १५ अ ।

गृह्यक्षोभ—राक्षसवश १ ३३८ ब ।

गृह्यपाग-क्रिया—सस्कार ४ १५१ ब, ४ १५२ ब ।

गृह्यपति—२ २५४ अ, अकम्पन १ ३० ब, चक्रवर्ती ४ १३ अ ।

गृह्यस्थ—आत्मानुभव १ ८५-८६ अ । कायक्लेश तप २ ४८ अ ।

गृह्यस्थ आश्रम—१.२८१ अ, वर्ण व्यवस्था ३ ५२४ ब ।

गृह्यस्थधर्म—उपदेश १.४२४ ब, धर्म २ ४७३ अ, प्रत्या-
ख्यान ३ १३२ ब, व्रत ३.६२८ अ, श्रावक ४.४८ ब ।

गृह्यस्थाचार्य—आचार्य १.२४२ ब ।

गृह्यस्थापित दोष—वसतिका ३.५२८ ब ।

गृहीतग्रहण—ईहा ज्ञान १ ३५१ अ ।

गृहीत द्रव्य—सहनानी २ २१६ अ ।

गृहीतमिध्यात्व—३ १७८ ब ।

गृहीता—स्त्री ४ ४५० ब ।

गृहीतिता क्रिया—सस्कार ४ १५१ ब, ४ १५२ ब ।

गोंडा—श्रेयासनाथ २ ३७६ ।

गो—तीर्थंकर चन्द्रानन २ ३६२ ।

गो अलीक—सत्य ४ २७३ ब ।

गोकुलेश—वैशेषिक दर्शन ३ ६०६ अ ।

गोक्षीर फेन—२ २५४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ ।

गोचरी प्रतिक्रमण—व्युत्सर्ग ३ ६२१ अ ।

गोचरी वृत्ति—भिक्षा ३ २२६ ब ।

गोणसेन—२.२५४ अ, द्राविड सघ १ ३२० ब ।

गोतमी पुत्र—इतिहास १ ३१४ ।

गोत्र—वर्ण व्यवस्था ३ ५२० ब ।

गोत्रकर्म प्रकृति—प्ररूपणा ३ ८८, ३ ५२० ब, स्थिति ४.४६७, अनुभाग १ ६५, अनुभाग का अलवहुत्व १ १६७ अ, प्रदेश ३ १३७ । बन्ध ३ ६३ ब, ३.६७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदय के निमित्त १.३६७ ब, उदय की विशेषता १.३७३ ब, आवाधा १ २४६ अ, उदयस्थान १ ३८७ उदीरणा १ ४११

अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्व-
स्थान ४.२६४, त्रिसयोगी भंग १ ३६६ । संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८ ।

गोदावरी—२.२५४ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, ३ २७६ अ ।

गोदोहन आसन—कायक्लेश २ ४७ ब ।

गोपसेन—२ २५४ अ, लाडबागड़ सघ १ ३२७ ब, इतिहास १ ३३० ब ।

गोपुच्छ—काष्ठा सघ १ ३२० ब, योगवर्गणा ३.३८३ ब ।

गोपुच्छक—२.२५४ अ । जैनाभासी सघ १ ३१६ अ ।

गोपुच्छा—२ २५४ अ, कृष्टि २.१४२ अ, २ १४३ अ ।

गोपुर—२ २५४ अ, चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब, व्यन्तरो के नगरो मे ३ ६१२ ब ।

गोप्य संघ—२ २५४ अ, जैनाभासी सघ १ ३१६ अ, याप-
नीय सघ १.३१६ ब ।

गोमती—२.२५४ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

गोमूत्र—माया कपाय २ ३८ अ ।

गोमूत्रिका गति—विग्रहगति ३.५४० ब ।

गोमेदक—रत्नप्रभा पृथिवी ३ ३६१ अ ।

गोमेध—२ २५४ ब, नमिनाथ का यक्ष २ ३७६ ।

गोम्मट—२ २७६ ब ।

गोम्मटसार—२ २५४ अ, २.२८० अ, इतिहास १ ३३० ब, १ ३४२ ब । टीका—अभयचन्द्र व अभयनन्दि १ १२७ अ, इतिहास १ ३३२ ब, १ ३३३ ब, १ ३३४ ब, १ ३४५ अ-ब, १.३४६ ब, १ ३४८ अ ।

गोम्मटसार पूजा—२.२५४ ब, इतिहास १ ३४८ अ ।

गोम्मटेश्वर—२.२८० अ ।

गोरस—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ अ, रस ३ ३६२ ब ।

गोलाचार्य—२ २५४ ब, देशीय गण १.३२४ ब, इतिहास १ ३३० अ, नन्दिसघ १ ३२४ ब ।

गोवदन—२.२५४ ब, ऋषभदेव का यक्ष २.३७६ ।

गोवर्द्धन—२.२५४ ब, मूलसघ १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ ।

गोवर्द्धनदास—२.२५४ ब, इतिहास १ ३३४ अ ।

गोविंद—२.२५४ ब । राष्ट्रकूट वश—द्वि० १.३१५ ब, तृ० १ ३१५ ब, चतु० १.३१५ ब । वेदान्ताचार्य ३ ५६५ ब । इतिहास १ ३३१ ब ।

गोशय्यासन तप—कायक्लेश २.४७ ब ।

गोशाल—२ २५४ ब, पूर्णकश्यप ३ ८२ अ ।

गोशीर्ष—२.२५५ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

गोसर्ग काल—२.२५५ अ ।

गौड—२ २५५ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

गौडपाद—२ २५५ अ, वेदान्ताचार्य ३ ५६५ ब, साख्याचार्य ४ ३६८ ब ।

गौडिया—वैष्णव दर्शन ३ ६०६ अ ।

गौण—२ २५५ अ, अनर्पित १ ६४ ब, मुख्य १ २३२ अ, सुख ४ ४३१ अ, स्याद्वाद ४ ४६६ अ ।

गौणसेन—इतिहास १.३३० ब ।

गौण्यनामपद—उपक्रम १ ४१६ ब, उपशम १ ४३७ अ, पद ३ ५ अ ।

गौतम—२ २५५ अ, अन्धकवृष्णि १ ३० अ, असत्कार्य-वादी १ ४६५ अ, गुणधर—मूलसंघ १.३१६, इतिहास १ ३२८ अ । यदुवंश १ ३३७, श्वेताम्बर ४.७८ अ, ऋषि २ ६३४ अ ।

गौतमद्वीप—लवण तथा कालोद सागर—निर्देश ३ ४६२ ब, ४६३ अ, विस्तार ३ ४७६, ३ ४६३ अ, अकन ३ ४४४ ३.४६१, ३.४६४ के सामने ।

गौरव—अतिचार १ ४३ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ ब, गारव २ २३६ अ ।

गौरिक - विद्या ३ ५४४ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, विद्याधर वंश १ ३३६ अ ।

गौरिकूट—२ २५५ अ ।

गौरी—२ २५५ अ, वासुपूज्यनाथ की यक्षिणी २.३७६, विद्या ३ ५४४ अ, १ ३३६ अ ।

गौरीकूट—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ ।

गौरीविद्या—विद्याधर वंश १ ३३६ अ ।

ग्यारह—अंगधर १ ३१६, १ ३२३, ४ ५६ अ, देशव्रत ४ ४७ ब, नारद ४ २२ अ, प्रतिमा ४ ४६ ब, श्रावक-स्थान ४ ४४८ ब-४६ ब, सगम-स्थान ४ ४८ ब ।

ग्रंथ—२ २७३ अ, अध्यात्मग्रंथ ३ ८ ब, परिग्रह ३ २८ अ, व्युत्सर्ग ३ ६२१ अ ।

ग्रंथकर्ता—गणधर २ २१२ ब ।

ग्रंथसम—२ २७४ अ, निक्षेप २ ६०२ अ ।

ग्रंथि—२ २७४ अ, साधु ४ ४०६ ब ।

ग्रंथिम—२.२७४ अ, निक्षेप २ ६०२ अ ।

ग्रह—२ २७४ अ, ज्योतिष देव—निर्देश २ ३४५ ब, २ ३४८ अ, इन्द्र का नाम-निर्देश २ ३४५ ब, भद्र २ २७४ अ, किरण तथा शक्ति २ ३४८ अ, परिवार २.३४६ अ, अवस्थान २ ३४६ ब, विमान-संख्या २ ३४८ अ, विमान विस्तार २ ३५१, अकन २ ३४८ । चार क्षेत्र (गतिविधि) २ ३४६-३५० । वीथियाँ २ ३४६ ब । अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १६८, आयु १.२६६ । ज्योतिषलोक २.३४६ ब ।

ग्रह (प्ररूपणा) — बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४ ३०५, त्रिसं-योगी भंग १ ४०६ ब । सत् ४ १८८, सख्या ४ ६७, क्षेत्र २ १६६, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

ग्रहण—२ २७४ अ, आहारान्तराय १ २६ ब, चन्द्रग्रहण २.३५१ अ, सूर्यग्रहण २ ३५१ अ ।

ग्रहण—अतीतग्रहणत्याग ३.३०५ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब ।

ग्रहणकाल—काल २ ८१ अ ।

ग्रहणप्रायोग्य वर्गणा—३.५१३ ब ।

ग्रहण विधि—व्रत ३ ६२५ ब ।

ग्रहावती—२ २७४ अ ।

ग्राम—२ २७४ ब ।

ग्रामदाह—आहारान्तराय १ २६ ब ।

ग्राम—२ २७४ ब, आहार प्रमाण १ २८६ अ ।

ग्राहवती—विभगा नदी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४८६-४९०, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने ।

ग्राह्य—२ २७४ ब ।

ग्राह्य-ग्राहक भाव—आगम १ २३३ अ, नय २ ५५० अ, सम्बन्ध ४ १२६ अ ।

ग्राह्यवर्गणा—३ ५१३ ब ।

ग्रीवाधोनयन—व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ ।

ग्रीवावनमन—२ २७४ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ ।

ग्रीवोन्नमन—२ २७४ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ ।

ग्रीवोर्ध्व नयन—व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ ।

ग्रैवेयक देव—निर्देश ४ ५१४ ब, अवगाहना १ १८० ब, अवधिज्ञान १ १६८ ब, आयु १ २६८, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १.२५८ ब । प्ररूपणा—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४ १६२, सख्या ४ ६८, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

ग्रैवेयक स्वर्ग—२ २७४ ब, निर्देश ४.५१० अ, ४.५१४ ब, पटल इद्रक व श्रेणीबद्ध ४ ५१८, ४ ५२०, अकन ४ ५१५, कल्पातीत ४.५१० अ, ४.५१४ ब, चक्रवर्ती ४.१० ब ।

ग्लान—२.२७४ ब ।

ग्लानि—२.२७४ ब, जुगुप्सा २.३४४ अ, निर्विचिकित्सा २.६२६ ब ।

घ

घंटा—पूजा ३.७८ ब ।

घ—घनागुल की सहनानी २.२१६ ब ।

घटस्थानोपयोगी यन्त्र—यन्त्र ३.३५२ ।

घटा—२.२७४ ब, नरक पटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन ३.४३८ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

घटिका—२.२७४ ब, काल-प्रमाण २.२१७ अ ।

घडी—२.२७४ ब, काल-प्रमाण २.२१७ अ ।

घन—२.२७४ ब, गणित २.२२३ अ, २.२२४ अ, शब्द ४.३ अ ।

घनधारा—२.२७४ ब, गणित २.२२६ अ ।

घनफल—२.२७४ ब, गणित २.२३२ ब ।

घनमातृक धारा—गणित २.२२६ अ ।

घनमूल—२.२७४ ब, गणित २.२२३ अ, २.२२४ अ ।

घनरथ—कुन्थुनाथ २.३७८ ।

घनरव—अरहनाथ २.३७८ ।

घनलोक—२.२७५ अ, क्षेत्रप्रमाण २.२१५ ब, सहनानी २.२१६ ब ।

घनवात—२.२७५ अ, ३.५३२ अ, लोक ३.४४० अ, अकन ३.४३६ ।

घनांगुल—क्षेत्रप्रमाण २.२१५ ब, सहनानी २.२१६ ब ।

घनाकार—२.२७५ अ ।

घनाघन—२.२७५ अ, गणित २.२२६ अ ।

घनोदधि—३.५३२ अ, लोक ३.४४० अ, अकन ३.४३६ ।

घम्मा—२.२७५ अ । प्रथम नरक—निर्देश २.५७६ अ, २.५७८-५७९, विस्तार २.५७६, २.५७८, अकन ३.४४१, चित्र ३.३८६ । नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधि ज्ञान १.१६८ अ, आयु १.२६३ ।

घम्मा नरक (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१००, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१६८,

सख्या ४.६५, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४.४७६, काल २.१०१, अन्तर १.८, भाव ३.२२० अ, अपबहुत्व १.१४४ ।

घर—३.२३१ ब ।

घाट—नरक पटल निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१६८ अ, आयु १.२६३ ।

घाटा—२.२७५ अ । नरक पटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.७८, अवधिज्ञान १.१६८ अ, आयु १.२६३ ।

घात—नरक पटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१६८ अ, आयु १.२६३ ।

घात—२.२७५ अ, अववर्तना १.११६ ब, आयु १.२६२ अ, काण्डक १.११६ ब, गणित २.२२२ ब, सावद्य ४.४२२ अ, हिंसा ४.५३२ अ ।

घातकृष्टि—२.१४२ अ ।

घातांक—२.२७५ अ, गणित २.२२३ ब ।

घातायुष्क—आयुबध १.२६२ अ, भवनवासी देव १.२६५, गन्तर देव १.२६४. ब, ज्योतिषी देव १.२६६, वैमानिक देव १.२६६ मिथ्यादृष्टि ३.३०३ अ ।

घाती—२.२७५ अ, अनुभाग १.६० ब ।

घाती कर्मप्रकृति—अनुभाग १.६० ।

घुटुक—२.२७५ अ, कुरुवश १.३३६ अ ।

घुना अन्न—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ अ ।

घृतवर द्वीप सागर—२.२७५ अ, निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८ अकन ३.४४३ । अधिपतिदेव ३.६१४, जल का रस २.४८७ अ, ज्योतिष चक्र २.३४८ ब ।

घृणा—२.२७५ अ, निर्विचिकित्सा २.६२६ ब ।

घोटकपाद—२.२७५ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२१ ब ।

घोटमान—रोगस्थान ३.३८२ अ, क्षपित कर्मांशिक २.१७७ अ ।

घोड़ा—मगल—३.२४४ अ, स्वप्न ४.५०५ अ ।

घोर गुण—ऋद्धि १.४४७, १.४५४ अ ।

घोर तप—ऋद्धि १.४४७, १.४५३ ब ।

घोर पराक्रम—ऋद्धि १.४४७, १.४५४ अ ।

घोर ब्रह्मचर्य—ऋद्धि १.४४७, १.४५४ अ ।

घोलमान—२.२७५ अ, क्षपित कर्मांशिक २.१७७ अ, योग-स्थान ३.३८२ ।

घोष—२.२७५ अ, शब्द ४.३ अ । स्तनिक कुमारैन्द्र

निर्देश ३ २०८ ब, परिवार ३ २०९ अ, निवास ३ २०९ ब, अवगाहना १ १८० अ, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १ २६५।

घोषसम—निक्षेप २ ६०२ अ।

घोषसेन—नारायण ४ १८ ब।

घोषा—मुविधिनाथ सघ की आयिका २ ३८८।

घोषार्या—मुविधिनाथ सघ की आयिका २ ३८८।

घनत—२.२७५ ब, गणित २ २२२।

घ्राण—अवगाहना का अल्पबहुत्व १.१५७, आहारान्तराय १ २८ ब, इन्द्रिय १ ३०२ अ, ज्ञान की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १५७।

च

चंगदेव—हरिदेव ४ ५३० अ।

चंचत् (चचु)—२ २७५ ब, सौधर्म स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४.५१६, अंकन ४ ५१९ ब। देवायु १ २६६।

चचल—सौधर्म स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४ ५१६, अंकन ४.५१९ ब। देवायु १.२६६।

चड—२ २७५ ब, राक्षसवश १.३३८ अ।

चंडवेग—चक्रवर्ती ४ १५ अ।

चंडवेगा—२.२७५ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब, ३.२७६ अ।

चंडशासन—२ २७५ ब, प्रतिनारायण ४ २० ब।

चंडिका—मूढता ३ ३१५ ब।

चंव—२.२७५ ब।

चदन—पूजा ३ ७८ ब, चित्रा पृथिवी ३.३९१ अ।

चदन कथा—२ २७५ ब, इतिहास १.३४६ ब।

चदनछट्ठी कहा—इतिहास १.३४४ ब।

चदनषट्ठी व्रत—२ २७५ ब।

चंदना—२.२७५ ब, वर्द्धमान २ ३८८।

चंदनाचारित्र—इतिहास १.३४६ ब।

चंदप्पहचरिउ—इतिहास १ ३४३ ब, १ ३४४ ब।

चंद्र—२ २७५ ब, अरुणवर द्वीप का रक्षक देव ३.६१४, यदुवश १ २३६, १ ३३७, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, विद्याधर वश १.३३९ अ।

चंद्र (स्वर्ग पटल)—२.२७५ ब, सौधर्म स्वर्ग का पटल—

निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अंकन ४.५१९, देव आयु १ २६६।

चंद्रांषि महत्तर—इतिहास १ ३३० अ, २ ६४० अ।

चंद्रकान्त—यदुवश १ ३३७।

चंद्रकीर्ति—२ २७५ ब, नन्दिसंध देशीय गण १ ३२४ ब। इतिहास १ ३३९ अ, १ ३३३ ब, १ ३४७ ब। नन्दि-सघ भट्टारक १ ३२३ ब।

चंद्रकूट—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ। विस्तार ३ ४८७, अंकन ३.४६८, ३ ४६९। वक्षार-गिरि का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४।

चंद्रगिरि—२ २७६ अ। वक्षारगिरि—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५-४८६, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७।

चंद्रगुप्त—२ २७६ अ, गुप्तवंश १ ३१५, मौर्यवंश १ ३१० ब, १ ३१३, जैनत्व १ ३१० ब।

चंद्रग्रहण—२ २७४ अ, ज्योतिष लोक २ ३५१ अ।

चंद्रचिह्न—कुरुवशी राजा १ ३३६ अ, तीर्थंकर चन्द्रप्रभ २ ३७९, तीर्थंकर स्वयंप्रभ का चिह्न २ ३९२।

चंद्रचूड—विद्याधर वंश १.३३९ अ।

चंद्रचूल—२ २१३ अ।

चंद्रदेव—देव—अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १ २६६। इन्द्र—निर्देश २ ३४५ ब, शक्ति आदि २ ३४८, अवस्थान २ ३४६ ब, परिवार २ ३४६ अ, विमान सख्या २ ३४८ अ।

चंद्रदेव (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १८८, संख्या ४ ९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

चंद्रद्रुह—२ २७६ अ, उत्तरकुरु का द्रुह—निर्देश ३ ४५६ ब, नामनिर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४९०, ३ ४९१, अंकन ३ ४४४, ३ ४५७।

चंद्रद्वीप—लवणसागर मे स्थित—निर्देश ३ ४६२ ब, विस्तार ३ ४७९, अंकन ३.४६१।

चंद्रधर—कुलकर ४ २५ ब।

चंद्रनंदि—२ २७६ अ, इतिहास १ ३२८ अ, १ ३२९ ब।

चंद्रनखा—२.२७६ अ, राक्षसवश १ ३३८ ब।

चंद्रपर्वत—२.२७६ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।
 चंद्रपुर—२.२७६ अ, तीर्थकर चंद्रप्रभ २.३७६,
 विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, ३.५४६ अ।
 चंद्रप्रज्ञप्ति—२.२७६ ब, अमितगति १.१३२ अ। इतिहास
 १.३४१ अ, १.३४३ अ। श्रुतज्ञान ४.६८ ब।
 चंद्रप्रभ—२.२७६ ब, इतिहास १.३३१ ब।
 चंद्रप्रभु—२.२७६ ब, तीर्थकर २.३७६-३६१।
 चंद्रप्रभचरित—२.२७६ ब, इतिहास १.३४२ ब,
 १.३४६ ब।
 चंद्रप्रभसूरि—इतिहास १.३४४ अ।
 चंद्रबाहु—तीर्थकर २.३६२।
 चंद्रभ—इतिहास १.३३४ अ।
 चंद्रभागा—२.२७६ ब।
 चंद्रमा—निर्देश २.३४५ ब, विशेष दे० आगे चन्द्रविमान।
 चंद्रमाल—ऋक्षारगिरि—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश
 ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६,
 अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७। इस
 पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार
 ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४।
 चंद्ररथ—विद्याधर वंश १.३३६ अ।
 चंद्रवंश—१.३३६ ब, इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ, ऋषिवंश
 १.३३५ ब, सूर्यवंश १.३३६ ब।
 चंद्रवर्मा—यदुवंश १.३३७।
 चंद्रविमान—निर्देश २.३४५, विस्तार २.३५१, किरणे
 तथा वाहक देव २.३४८ अ, अकन २.३४८, चित्र
 २.३४८। वलय २.३४८, चार क्षेत्र २.३४६ अ,
 वीथियाँ २.३४६ ब, गतिविधि २.३५० अ, गगन-
 खण्ड २.३५० अ, चन्द्रग्रहण २.२७४ अ, २.३५१।
 आधुनिक मत ३.४३६ अ, बौद्धाभिमत ३.४३४ ब।
 वैदिकाभिमत ३.४३३। कुलकरो के काल में दर्शन
 ४.२५ ब, स्वप्न ४.५०४ ब।
 चंद्रशेखर—२.२७६ ब, विद्याधर वंश १.३३६ अ।
 चंद्रसेन—२.२७६ ब, पचस्नूप संघ १.३२६ ब, इतिहास
 १.३२६ ब।
 चंद्रानन—तीर्थकर २.३६२।
 चंद्राभ—२.२७६ ब, कुलकर ४.२३, यदुवंश १.३३७,
 लौकान्तिक देव ३.४६२ ब, विद्याधर नगरी
 ३.५४५ अ।
 चंद्राभा—चंद्रमा की अप्रदेवी २.३४६ अ।
 चंद्रावर्त—राक्षसवंश १.३३८ अ।
 चंद्रोदय—२.२७६ ब, इतिहास १.३४२ अ।

चपक वन—तीर्थकर मुनिसुव्रतनाथ २.३८३, नन्दीश्वर
 द्वीप में ३.४६६ अ, भवनवासी देवों के नगरी में
 ३.२१० ब, व्यन्तर देवों के नगरी में ३.६१२ ब।
 चपा—२.२७६ ब, तीर्थकर वासुपूज्यनाथ २.३७६, २.३८५,
 विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।
 चंपापुर—तीर्थकर मुनिसुव्रतनाथ २.३७८, तीर्थकर वासु-
 पूज्यनाथ २.३७६, २.३८५।
 चवर—चैत्य-चैत्यालय २.३०२ अ। रुचकवर पर्वत की
 दिक्कुमारियाँ—निर्देश ३.४६६ ब, अकन ३.४६८,
 ३.४६९।
 चकवा—तीर्थकर सुमतिनाथ २.३७६।
 चकार—एकान्त १.४६१ अ, राक्षसवंश १.३३८ अ।
 चक्र—२.२७६ ब, कीली २.८२ ब, चक्रवर्ती ४.१३ अ।
 पदस्थ ध्यान के योग्य षट्चक्र ३.६ ब। स्वर्ग पटल—
 निर्देश ४.५१७, विस्तार ४.५१७, अकन ४.५१५,
 देव आयु १.२६७।
 चक्रक—२.२७६ ब।
 चक्रधर—कुलकर ४.२५ ब।
 चक्रधर्मा—विद्याधर वंश १.३३६ अ।
 चक्रध्वज—विद्याधर वंश १.३३६ अ।
 चक्रपुर—२.२७६ ब, नारायण ४.१८ अ, ४.२० ब, प्रति-
 नारायण ४.२० ब, बलदेव ४.१७ अ, मनुष्यलोक
 ३.२७६ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।
 चक्रपुरी—२.२७६ ब, विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ,
 नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०,
 ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र
 ३.४६० अ।
 चक्रमल—लोभ कषाय २.३८ अ।
 चक्रलाभक्रिया—संस्कार ४.१५२ अ।
 चक्रवर्ती—२.२७६ ब, तीर्थकर अर-शान्ति-कुन्धुनाथ
 २.३८६, २.३६१, शलाकापुरुष ४.१० अ-ब।
 चक्रवर्ती की माता—स्वप्न ४.५०४ ब।
 चक्रवाक—शुक्रेन्द्र का यान ४.५११ ब।
 चक्रवान—२.२७६ ब।
 चक्रवाल—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।
 चक्राभिषेक क्रिया—संस्कार ४.१५२ अ।
 चक्रायुध—२.२७७ अ, तीर्थकर शान्तिनाथ ३.२७५,
 विद्याधर वंश १.३३६ अ।
 चक्री—राजा ३.४०० ब।
 चक्रेश्वरी—२.२७७ अ, ऋषभदेव की यक्षिणी २.३७६।
 चक्षु—मानुषोत्तर पर्वत का देव ३.६१४।

चक्षु इन्द्रिय—२ २७७ अ, अप्राप्यकारी १.३०३ अ, अवगाहना का अल्पबहुत्व १ १५८ ब, आहारान्तराय १ २८ ब, इन्द्रिय १ ३०२ अ, ज्ञान की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६० ब, ज्ञानार्थक १ ३०६ ब, पर्यायाधिक नय २ ५४१ ब, २ ५४६ ब, सूक्ष्म ग्रहण ४ ४३६ ब ।

चक्षुदर्शन—कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६० ब, दर्शनोपयोग २ ४१३ अ । प्ररूपणा—बन्ध ३.१०६, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३६३ अ, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ ३०१, ४ ३०६, त्रिसंयोगी भग १.४०७ ब । सत् ४ २३६, संख्या ४.१०७, क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४ ४८६, काल २ ११५, अन्तर १ १७, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५१ ।

चक्षुदर्शनावरण—२.४२० अ । प्ररूपणा—प्रकृति २ ४२०, ३ ८८, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ६१ ब, १ ६४ ब, प्रदेश ३ १३६ । बन्ध ३ ६८, बन्धस्थान ३ १०८, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३८७ ब, उदीरणा १.४११, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.२८७, त्रिसंयोगी भग १.३६६ । सत्क्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८ ।

चक्षुमित्र—शक वश १.३१४ ।

चक्षुष्मान—२.२७७ अ, कुलकर ४.२३, पुष्करार्ध का रक्षक देव ३ ६१४ ।

चतुः—२ २८० अ, अनुभाग स्थान १ ६०-६१, अनुयोग १.६६ ब, ४ ५२३ ब, असंख्यातासंख्यात की सहनानी २.२१६ अ, आवश्यक २ ११ अ, २.१२ ब, २ १४ अ, आश्रम १.२८१ अ, ३ ५२४ ब, कषाय २.३५ ब, कृति की सहनानी २.२८० अ, गति २.२३६ ब, जल्प के अग २.३२६ अ, प्रतरागुल की सहनानी २ २१६ ब, युक्तासंख्यात की सहनानी २.२१६ अ, वर्ण (वर्णव्यवस्था) ३.५२३ ब, ३ ५२४ अ, शिरोनति २ २६ अ, २ २७७ ब, २.५०६ ब, सघ २.३१ ब ।

चतुरङ्क—२.२७७ अ ।

चतुरङ्ग—२.५०६ अ ।

चतुरस्र—क्षेत्रफल २.२३२ ब ।

चतुरावश्यक—अधःप्रवृत्तकरण २.११ अ, अनिवृत्तिकरण २.१४ अ, अपूर्वकरण २.१२ ब ।

चतुराश्रम—१.२८१ अ, ३.५२४ ब ।

चतुरिन्द्रिय जातिनाम कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६ । बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.११०, उदय

१.३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०४, सत्क्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६६ अ ।

चतुरिन्द्रिय (जीव)—२.२७७ अ, २.३३३ ब, अवगाहना १.१७६, इन्द्रिय १.३०६-३०७, आयु १ २६३-२६४, जीवसमास २ ३४३, त्रस २.३६८, सक्लेश-विशुद्धि स्थानो का अल्पबहुत्व १.१६० । प्ररूपणा—बन्ध ३ १०३, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २६६, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१६६, संख्या ४.६६, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४.४८३, काल २.१०६, अन्तर १.११, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

चतुर्गति—आयुबंध १ २६२ अ, कषाय २ ३८ अ, २ ४० अ, निगोद ३ १८३, सिद्ध (अल्पबहुत्व) १.१५३ ।

चतुर्गति-निगोद—वनस्पति ३ ५०३ ब ।

चतुर्ज्ञान-सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५४ अ ।

चतुर्थकाल—२ ६२, वीर निर्वाण १ ३०६ अ ।

चतुर्थच्छेद—२ २७७ अ, गणित २ २२५ अ ।

चतुर्थ-भक्त—२.२७७ अ, अनशन १ ६५ ब, कायक्लेश २ ४७ अ, प्रोषधोपवास ३ १६४ ब ।

चतुर्दश—२ २७७ अ, गुणस्थान २ २४६, जीवसमास २.३४१, पूर्व ४ ६८ ब, पूर्वधर ४ ५५ अ, मलदोष १ २८६ ब, मार्गणा ३ २६७ अ, रत्न ४ १३ ।

चतुर्दश पूर्व—श्रुतज्ञान ४ ६८ ब ।

चतुर्दश पूर्वधर—मूल सघ १.३१६, शुक्लध्यान ४ ३६ अ, श्रुतकेवली ४ ५५ अ ।

चतुर्दश पूर्वत्व—ऋद्धि १ ४४८, श्रुतकेवली ४.५५ अ ।

चतुर्दशी क्रिया—कृतिकर्म २ १३८ ब ।

चतुर्दशी व्रत—२ २७७ ब ।

चतुर्दिक मुखदर्शन—अर्हतातिशय १.१३७ ब ।

चतुर्द्वीप—२ २७७ ब ।

चतुर्दोष—आहार के संयोजनादोष १ २६२ अ ।

चतुर्थभुक्त—अनशन १ ६५ ब, कायक्लेश २ ४७ अ, प्रोषधोपवास ३ १६४ ब ।

चतुर्दश मुणस्थान—मनुष्यणी ३ ५८१ ब ।

चतुर्भुज—२ २७७ ब, इतिहास १ ३३४ अ ।

चतुर्भुज समलम्ब—२ २७७ ब ।

चतुर्मास—२ २७७ ब ।

चतुर्मासिक प्रतिक्रमण—३.११६ अ, ३.६२१ अ ।

चतुर्मुख—२ २७७ ब, इक्ष्वाकुवश १ ३३५ ब, कलिकवश १ ३११ अ, १ ३१५ अ, २ ३० ब, नारद ४ २१ अ, पूजा ३ ७४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ ।

चतुर्मुख देव—२ २७७ ब, इतिहास १ ३२६ ब ।

चतुर्मुखी—२.२७७ ब ।

चतुर्विंशति—२ २७७ ब, कामदेव ४ २२ ब, तीर्थकर ४ १ ब, २ ३७६, प्राकृतिक स्थान ४ २७६ अ ।

चतुर्विंशति पूजाविधान—इतिहास १ ३४८ अ ।

चतुर्विंशति मंडल यंत्र—३ ३५३ ।

चतुर्विंशतिसिद्धि काव्य—इतिहास १.३४७ ब ।

चतुर्विंशतिस्तव—भक्ति ३.२०० अ, श्रुतज्ञान ४ ६६ ब ।

चतुर्विध उदय—१.३८६ ।

चतुर्विध सध—उपकार १ ४१६ अ ।

चतुश्चारित्रसिद्धि—अल्पबहुत्व १ १५३ ब ।

चतु षष्ठि—चमर १ १३७ ब ।

चतु षष्ठि स्थानीय अल्पबहुत्व—१ १६६ अ ।

चतुष्टय—२ २७७ ब, अर्हन्त १ १३७ ब, विरोधी धर्म युग्म १ १०८ ब ।

चतुष्पाद—ग्रह २ २७४ अ, पथ-निर्देश २ ३६७, आयु १ २६३ ।

चतुस्त्रिंशत्—अतिशय १ १३७ ब, २.३०४ ब, बधापसरण १ ११५ अ ।

चमकदशमी व्रत—२ २७८ ब ।

चमत्कार—२.२७८ ब, प्रभावना ३.१३६ ब ।

चमर—२.२७८ ब । असुरेन्द्र—निर्देश ३ २०८ अ, परिवार ३ २०६ अ, अवस्थान ३ २०६ ब, आयु १ २६५ । अर्हन्त प्रतिहार्य (चौसठ चमर) १.१३७ ब, तीर्थकर सुमति व पद्मप्रभ २ ३८७, मंगल द्रव्य ३.२४४ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

चमरेंद्र—२.२७८ ब । असुरेन्द्र—निर्देश ३ २०८ अ, परिवार ३ २०६ अ, अवस्थान ३.२०६ ब, आयु १ २६५ ।

चमू—२ २७८ ब, सेना ४ ४४४ अ ।

चय—२ २७८ ब, उदय १ ३७१ अ, गणित २ २२६ ब, २ २३० अ ।

चयधन—गणित २ २२६ ब, २ २३० ब ।

चर ज्योतिष-लोक—निर्देश २ ३४६, गतिविधि २.३५० अ, वीथियाँ २ ३४६ ब, चार क्षेत्र २ ३४६ अ, गगनखण्ड २ ३५० अ ।

चरण—चारण ऋद्धि १.४५१ ब, चारित्र २.२८३ ब ।

चरणसार—२.२७८ ब, इतिहास १ ३४३ ब ।

चरणानुयोग—अनुयोग १ ६६-१०१ ब, स्वाध्याय ४.५२३ ब ।

चरम—हरिवंश १.३३६ ब ।

चरमदेह—मोक्ष (किंचिदून आकार) ३ ३२६ ब ।

चरमशरीरी—अवधिज्ञान १ १६५ अ, आयु-अपवर्तन १ २६१ अ, मरण (अकाल मृत्यु) ३ २८४ ब ।

चरमावली—१ ४४१ ब ।

चरमोत्तम देह—२ २७८ ब, अवधिज्ञान १ १६५ अ, आयु-अपवर्तन १ २६१ अ, मरण (अकाल मृत्यु) ३ २८४ ब, मोक्ष (किंचिदून आकार) ३ ३२१ ब ।

चरविमान—ज्योतिष विमान—निर्देश २ ३४६ ब, गगन-खण्ड २ ३५० अ, गतिविधि २.३५० अ, चार क्षेत्र २ ३४६ अ ।

चरु—पूजा ३ ७८ ब ।

चर्चा—२ २७६ अ । नरक पटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४३८ । नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १ १६८ अ, आयु १ २६३ ।

चर्विका—२ २७६ अ ।

चर्म—२ २७६ अ, औदारिक शरीर १ ४७१ ब, चक्रवर्ती का रत्न ४ १३ अ, ४ १५ ब ।

चर्मज—वस्त्र ३ ५३१ अ ।

चर्मण्वती—२ २७६ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

चर्मनिक्षिप्त—भक्ष्याभक्ष्य ३ २६३ ब ।

चर्मरत्न—चक्रवर्ती ४ १३ अ, ४ १५ ब ।

चर्या—२ २७६ अ ।

चर्या परिषद्—२ २७६ अ, परिषद् ३ ३३ ब, ३ ३४ अ ।

चर्याश्रावक—४ ४८ ब ।

चल—२.२७६ ब, जीवप्रदेश १ ३०२ ब, २ ३३६ अ, सम्यग्दर्शन का दोष ४ ३७० ब ।

चलनी—४ ७४ ब ।

चलप्रदेश—इन्द्रिय १.३०२ ब, जीव २.३३६ अ ।

चलप्रभ—वरुण देव का यान ४ ५१३ अ ।

चलबिम्ब-प्रतिष्ठा—कृतिकर्म २.१३६ अ, प्रतिष्ठा ३.१२० ब ।

चलशव—साधु-निन्दा २ ५८१ अ ।

चलशील—२ २७६ ब ।

चल-संख्या—२ २७६ ब ।

चलाचल—जीवप्रदेश २.३३६ अ ।

चलित—परमाणु ३ १६ अ, रस २ २६ ब, ३.२०३ ब, स्कन्ध ३ १६ अ ।

चलितरस—कर्म (पचसून) २ २६ ब, भक्ष्याभक्ष्य ३ २०२ ब ।

चलितस्कंध—परमाणु ३.१६ अ ।

चलितदीप—व्युत्सर्ग ३६२३ अ।

चलितपि—२२७६ ब, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

चांडाल—आहारान्तराय ११२६ अ। कित्विष देव २२१५ अ, भिक्षा ३२३२ ब, स्पर्श १२६ ब।

चांदराय—२.२७६ ब।

चाक की कील—काल २८२ ब।

चाक्षुष—सूक्ष्म ४४३६ अ, स्कन्ध ४४४७ अ।

चाक्षुष स्कन्ध—४४४७ अ।

चाणक्य—मगधदेश १३१० ब।

चातुर्दीपिक भूगोल—निर्देश ३४३७ अ।

चातुर्मास—२.२७७ ब।

चातुर्मासिक प्रतिक्रमण—३११६ अ, ३.६२१ अ।

चाप—२.२७६ ब।

चामत्कारिक—२२७८ ब, ३१३६ ब।

चामर—पद्मप्रभ २३८७।

चामुंड—राक्षसवंश १३३८ अ।

चामुंडराय—२२७६ ब, २२८० अ, इतिहास १३३० ब, १३४३ अ।

चामुंडराय पुराण—२२८० अ, इतिहास १३४३ अ।
३.५२४ ब, कषाय २३५ ब, कृति की सहनानी २२८० अ, गति २२३६ ब, जल्य के अंग २३२६ अ, प्रतरागुल की सहनानी २२१६ ब, युक्ता-सख्यात की सहनानी २२१६ अ, वर्ण (वर्ण व्यवस्था) ३.५२३ ब, ३.५२४ अ, शिरोनति २.२६ अ, २२७७ ब, २.५०६ ब, सत्र २.३१ ब।

चार—२.२८० अ, अनुभाग स्थान १.६०-६३, अनुयोग १६६ अ, ४.५२३ ब, असख्यातासख्यात की सहनानी २२१६ अ, आवश्यक २११ अ, २१२ ब, २१४ अ, आश्रम १२८१ अ।

चारण क्षेत्र—२२८० अ, ज्योतिष लोक २३४६ अ।

चारण—नाभिगिरि का रक्षक देव ३४७१ अ, ३.६१३ अ।

चारण ऋद्धि—१.४४७, १.४५० ब, १.४५१ ब।

चारणकूट व गुफा—२२८० अ।

चारणा—श्रेयासनाथ २३८८।

चारित्र—२.२८० अ, अनन्तानुबंधी १६० ब, अनुप्रेक्षा १७८ ब, अपवाद मार्ग १.१२० ब, अभ्यास ११३१ ब, अल्पबहुत्व १.१६०, अवधिज्ञान १.१६४ अ, १.१६५ अ, आत्मा ३३३७ अ, उत्सर्गमार्ग ११२० ब, उद्योत १.४१४ अ, उपदेश १.४२६ ब, उपयोग (शुभ या शुद्ध) १.४३० ब, १.४३२ अ, १.४३३ अ, १.४३४ ब, उपशम १.४३६ अ, करणत्रिक २.६-१४, करणलब्धि

३.४१४ अ, कषाय १.४३२ ब, ३.५५८ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, चरण १.४५१ ब, तप २.३५१ ब, त्याग २.२८३ अ, त्रिकरण २.६-१४, भोगभूमि ३.२३६ अ, मनुष्यणी ३.५८६ ब, मोक्ष ३.३२७ ब, मोक्षमार्ग (आत्मा) ३.३३७ अ, मोहनीय कर्म ३.३४३ ब, ३.३४४ अ, योग (उपयोग) १.४३२ अ, लब्धि (करण) ३.४१४ अ, विभाव (कषाय) ३.५५८ ब, शुभ भाव (अनुप्रेक्षा) १७८ ब, शुभोपयोग १.४३४ ब, श्रद्धान ४.४३ ब, समय ४.१३७ अ, ४.१३८ ब, सम्यक्त्व ४.३५४ अ, साधु ४.४०७ अ, स्वरूपाचरण १.८५ अ।

चारित्रपंडित—३.२८१ अ।

चारित्रपाहुड—२२६४ अ, इतिहास १.३४० ब।

चारित्रबाल—३.२८१ अ।

चारित्रभक्ति—इतिहास १.३४० ब।

चारित्रभूषण—२२६४ अ, इतिहास १.३२६ ब।

चारित्रमोहनीय कर्म—निर्देश ३.३४३ ब, उदय की विशेषता १.३७२ अ-ब, १.३७३ ब, उपशम १.२६ अ, १.४४० अ, उपशम काल की अवधि का अल्पबहुत्व १.१६१, क्षपण १.२६ ब, २.१७६ ब, क्षपणकाल की अवधि का अल्पबहुत्व १.१६१, चारित्र २.२६४ अ।

चारित्रमोहनीय कर्म (प्ररूपणा)—प्रकृति ३८८, ३.३४३ ब, स्थिति ४.४६१, अनुभाग १.६४ ब, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.१०६, उदय १.३७५, उदय के निमित्त १.३६७ ब, उदय की विशेषता १.३७२ अ-ब, १.३७३ ब, उदयस्थान १.३८६, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६५, त्रिसंयोगी भंग १.४०१ ब। सक्रमण ४.८६ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

चारित्रमोह उपशमक—अन्तरकरण १.२६ अ, उपशम १.४४० अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १.१७४, मरण ३.२८३ अ, समुद्धात ४.३४३ अ, सम्यग्दर्शन ४.३७६ अ।

चारित्रमोह क्षपक—क्षपणा १.२६, अ-ब, २.१७६ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १.१७४।

चारित्रवाद—एकान्त १.४६५ ब।

चारित्रविनय—३.५४८ ब, ३.५५० ब।

चारित्रदृष्टि—विनय ३.५५२ ब।

चारित्रशुद्धि—शुद्धि ४.४० ब।

चारित्रशुद्धि व्रत—२.२६४ ब।

चारित्रसार—२२६४ ब, इतिहास १.३४३ अ।

चारित्रसिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३।
 चारित्राचरण—मिथ्यादृष्टि ३.३०३ ब।
 चारित्राचार—२.२८६ ब, आचार १.२४० ब, विजय ३.५५० ब।
 चारित्राराधना—आराधना १.२७१ ब, चारित्र २.२८६ अ।
 चारित्रार्थ—१.२७५ अ।
 चारु—कुरुवश १.३३५ ब।
 चारुकीर्ति—नन्दिसष १.३२३ ब, इतिहास १.३३३ ब, १.३४७ अ।
 चारुकृष्ण—यदुवश १.३३७।
 चारुदत्त—२.२६४ ब, यदुवश १.३३७, सम्भवनाथ २.३८७।
 चारुदत्त चरित्र—२.२६४ ब, इतिहास १.३४६ अ।
 चारुपद्म—कुरुवश १.३३५ ब।
 चारुपाद—विमलनाथ २.३७७।
 चारुरूप—कुरुवश १.३३५ ब।
 चारुसेन—सम्भवनाथ २.३८७।
 चार्वाक—२.२६४ ब, एकान्त १.४६५ ब, जीव २.३३६ ब, परवाद ३.२३ अ।
 चालनी—श्रोता १.४२५ ब।
 चालिसिध—२.२६५ अ।
 चालुक्य जयसिंह—२.२६५ अ।
 चालुक्य वंश—अरिकेसरी १.१३४ अ।
 चित—चक्रवर्ती ४.१० अ।
 चितवन—वासुपुज्यनाथ २.३८२।
 चिता—२.२६५ अ, एकाग्रता १.४६६ अ, धर्मध्यान २.४८२ अ, २.४८४ ब, मन.पर्याय ज्ञान ३.२६२ अ, शुक्लध्यान ४.३३ अ।
 चितागति—२.२६५ ब, राक्षस वश १.३३८ अ।
 चिताजननी—चक्रवर्ती ४.१३ अ, ४.१५ अ।
 चितानिरोध—२.४६५ ब।
 चितामणि—मूलसष १.३२२ ब।
 चितामणि यत्र—३.३५३।
 चितारक्ष—शान्तिनाथ २.३७८।
 चिकित्सादोष—२.२६५ ब, आहार १.२६१ अ, वसतिका ३.५२६ ब।
 चितिकर्म—२.२६५ ब।
 चितुकर्म—२.२६५ ब, कर्म २.२६ ब, कृतिकर्म २.१३३ ब।
 चित्त—२.२६५ ब, अध्यवसान १.५२ अ, परद्रव्य ३.१२ अ।
 चित्तनिरोध—उपयोग (शुद्ध) १.४३१ अ, एकाग्रता १.४६६ अ, ध्यान २.४६५ अ-ब, सामायिक ४.४१५ ब।

चित्तप्रसाद—उपयोग (शुभ) १.४३३ अ, १.४३४ ब।
 चित्तविकार—३.२१७ ब।
 चित्तवृत्ति—एकाग्रता १.४६६ अ, ध्यान २.४६५ अ-ब, सामायिक ४.४१५ ब।
 चित्तरक्ष—धर्मनाथ २.३७८।
 चित्प्रकाश—२.२६५ ब, दर्शनोपयोग २.४०६ ब।
 चित्र—२.२६५ ब, नमिनाथ ३.३८४, यमकगिरि का रक्षक देव ३.४५३ अ, सुमेरु के वन में कुबेर भवन—निर्देश ३.४५० अ, अकन ३.४५१।
 चित्रक—सुमेरु के वनों में कूट—निर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४५१।
 चित्रकर्म—कर्म २.२६ अ, कषाय २.३५ ब, निक्षेप २.५६८ अ।
 चित्रकारपुर—२.२६५ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।
 चित्रकूट—२.२६५ ब, यमकगिरि—निर्देश ३.४५३ अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, वर्ण ३.४७७, अकन ३.४४४, ३.४५७, ४६४ के सामने, चित्र ३.४५३ अ। वक्षार पर्वत—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७६, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४, ४६४ के सामने। इस पर्वत का कूट तथा देव ३.४७२ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।
 चित्रगुप्त—२.२६६ अ, तीर्थकर २.३७७।
 चित्रगुप्ता—२.२६६ अ, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अकन ३.४६८।
 चित्रगुप्ति—तीर्थकर २.३७७।
 चित्रगृह—भवनवासी देव—भवनों में ३.२१० ब।
 चित्रप्रभा—सौधर्म स्वर्ग पटल—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४.५१७, अकन ४.५१६ ब। देवायु ४.२७८।
 चित्रभवन—२.२६६ अ।
 चित्रमती—चक्रवर्ती ४.११ ब।
 चित्ररथ—कुरुवश १.३३५ ब।
 चित्रलाचरण—४.१२६ ब।
 चित्रवती—२.२६६ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
 चित्रवसु—हरिवश १.३४० अ।
 चित्रघाहन—कुलकर ४.२५ अ।
 चित्रविचित्र—कुरुवश १.३३५ ब।
 चित्रांगदा—२.२६६ अ।
 चित्रा—२.२६६ अ, त्वष्टानक्षत्र २.५०४ ब, पद्मप्रभ २.३८०, रुचकवर पर्वत की देवी—निर्देश ३.४७६ ब, अकन ३.४६६।

चित्रा पृथिवी—मध्यलोक ३४४२ अ, रत्नप्रभा—
निर्देश ३३८६ ब, विस्तार ३३६० अ, वैचित्र्य
३३८६ ब, अकन ३३८६ ब, ३४३६, ३४४१,
चित्र ३२१० अ ।

चित्मुखार्थ—वेदान्त ३५६५ ब ।

चित्मुखी—वेदान्त ३५६५ ब ।

चिदानंद—अनुभव १८५ ब ।

चिद्विलास—२२६६ अ । इतिहास १३४७ ब ।

चिरकाल स्थायी—पर्याय ३४८ अ ।

चिलात—२२६६ अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब ।

चिलातपुत्र—२२६६ अ, अनुत्तरोपपदक १७० ब ।

चिह्न—२२६६ अ, प्रतिमा ३७८ अ, मातंग विद्याधर
१३३६ ब, विद्याधर १३३६ अ, वृत्तिपरिसख्यान
३५८० अ, स्वप्न ४५०४ अ ।

चिह्न (निमित्त ज्ञान)—२६१३ अ, ऋद्धि १४४८ ।

चुगलखोर—३८५ अ ।

चुलुलित—२२६६ अ ।

चूडादेवी—चक्रवर्ती ४११ ब ।

चूडामणि—२२६६ अ, चक्रवर्ती ४१३ अ, ४१५ अ,
विद्याधर नगरी ३५४५ ब, ३५४६ अ, विद्याधर
वग १३३६ अ, मूल सद्य १३२२ ब, इतिहास
(तुम्बूलाचार्य) १३४७ ब ।

चूर्ण—२२६६ अ, आहार का दोष १२६१ ब, निक्षेप
२६०२ ब, भेद ३२३७ अ ।

चूर्णसूत्र—कषायपाहुड २४१ अ ।

चूर्णसूत्रवृत्ति—उच्चारणाचार्य १३५२ अ ।

चूर्ण—२२६६ अ, कर्मप्रकृति १३४१ अ, कषायपाहुड
१३४० अ, मनुष्यलोक ३२७६ अ, शतक १३४१
अ, सप्ततिका १३४२ अ, २ परि-१ ।

चूर्णिका—भेद ३२३७ अ ।

चूर्णोपजीवन—२२६६ अ ।

चूला—चक्रवर्ती ४११ ब ।

चूलिक—सुमेरु ४४३७ अ ।

चूलिकांग—कालप्रमाण २२१६ ब ।

चूलिका—२२६६ अ, कालप्रमाण २२१६ ब, गणित
(क्षेत्रफल विधि) २२३३ अ, श्रुतज्ञान ४६७ ब ।

सुमेरु—निर्देश ३४४८ ब, विस्तार ३४८३, ३४८५
३४८६, अकन ३४५० ब, चित्र ३४४६, चार
चैत्यालय ३४५० ब, पाण्डुक आदि चार शिलार्ध
३४५० ब ।

चूलित—काल प्रमाण २२१६ अ ।

चूलितांग—काल प्रमाण २२१६ अ ।

चूली—कर्म (पञ्चसून) २२६ ब ।

चेटक—२२६६ ब ।

चेटी—स्त्री ४४५० ब ।

चेतन—२२६६ ब, गुण २२४४ ब, द्रव्य २४५५ ब,
भाव ३२१७ ब, सापेक्ष धर्म ४३२३ ब ।

चेतनपुद्गल धमाल—इतिहास १३४७ अ ।

चेतना—२२६६ ब, अनुभव १८२ अ, उपलब्धि १४४५
अ, ज्ञान १८२ अ, जीव २३३२ अ ।

चेदि—२३०० अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब, ३२७६ अ ।

चेर—२३०० अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब ।

चेलना—२३०० अ ।

चेली-चेली—परिग्रह ३२५ ब ।

चेष्टा—२३०० अ ।

चैतन्य—अनेकांत (सापेक्ष धर्म) ११०६ अ, जीव (प्राण)
२३३२ अ, जीवत्व २३४० ब, मोक्षमार्ग (दर्शन)
३३३८ अ ।

चैतन्यप्राणरक्षा—अहिंसा १२१७ ब ।

चैतन्यानुविधायी—उपयोग १४२६ अ ।

चैत्य—अवर्णवाद १२०१ अ ।

चैत्यगृह—२३०२ ब ।

चैत्यचैत्यालय—२३०० अ ।

चैत्यप्रासादभूमि—२३०४ ब, समवसरण ४३३० ब ।

चैत्यभक्ति—३७८ अ ।

चैत्यभूमि—२३०३ अ ।

चैत्यवन्दना—३४६५ ब ।

चैत्यवासी—४७७ ब ।

चैत्यवृक्ष—२३०३ अ, भावनलोक ३२०८ ब, वृक्ष
३५८१ अ, वैमानिक लोक ४५२१ अ । व्यन्तर
लोक ३६११ अ, समवसरण ४३३४ अ ।

चैत्यालय—२३०२ ब, कुण्डलवर पर्वत ३४६६ अ,
३४६७, त्रिभुवन-चूडामणि ३४५८ अ, नन्दीश्वर
द्वीप ३४६५, ३४६६ अ, पद्म आदि द्रव्य ३४५४,
३४७४ अ, मानुषोत्तर पर्वत ३४६३ ब, ३४६४,
रुचकवर पर्वत ३४६६, ३४६८, ३४६९, सिद्धायत
—निर्देश ३४७१ ब, जम्बूद्वीप में गणना ३४४५
ब, अकन ३४४४, ३४४७, ३४६२, ३४६४,
३४६६ । सुमेरु पर्वत पर ३४५०, ३४५१ ।

चैत्र—नमिनाथ २३८३ ।

चैत्रोद्धान—नमिनाथ २३८३ ।

चोरकया—२३ ब

चोरी—अस्तेय १ २१३-२१५, श्रावक ४.५० ब, स्तेन-
प्रयोग ४.४४६ अ, हिंसा १ २१७ अ, ४ ५३२ ब ।
चोल—२ ३०४ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।
चौइन्द्रिय—३ १५३ अ ।
चौका विधान—आहारशुद्धि १ २८५ अ, १ २८७ ब ।
चौतीस—अतिशय १.१३७ ब, अतिशय व्रत २ ३०४ ब,
बन्धापसरण १ ११५ अ ।
चौथा काल—२ ३१७ अ ।
चौदह—२ २७७ अ, गुणस्थान २.२४६, जीवसमास
२ ३४१, पूर्व ४.६८ ब, पूर्वधर ४ ५४ अ, मलदोष
१ २८६ ब, मार्गणा ३.२६७ अ, रत्न (चक्रवर्ती)
४ १३-१४ ।
चौबीस—२ २७७ ब, कामदेव ४ २२ ब, तीर्थकर ४ ६ ब,
२ ३७७, प्रकृति सत्त्वस्थान ४ २७६ अ ।
चौबीसी पूजा—इतिहास १ ३४८ अ ।
चौर्यानिंद—३ ४०८ अ ।
चौल क्रिया—मन्त्र ३ २४७ अ ।
चौसठ—चमर १ १३७ ब, अल्पबहुत्व के स्थान १ १६६
अ, १ १६८, १ १६९ ब, १ १७० अ ।
ज्यवन कल्प—२ ३०५ अ ।
ज्यावित शरीर—निक्षेप २.६०० अ ।
ज्युतशरीर—निक्षेप २ ६०० अ ।
ज्युति—मरण ३ २८२ अ ।

छ

छंदन—समाचार ४ ३३६ ब, ४ ३३७ अ ।
छंदबद्ध चिट्ठी—२ ३०५ अ ।
छंदशतक—२ ३०५ अ, १.३४८ अ ।
छंदशास्त्र—२ ३०५, १ ३४० अ, १ ३४७ अ ।
छंदानुशासन—इतिहास १.३४५ अ ।
छंदोबिंदु—इतिहास १ ३४३ अ ।
छक्कमुवएस—इतिहास १ ३४४ ब ।
छठा अनुव्रत—रात्रिभोजन त्याग ३.४०३ अ ।
छत्तीस—आचार्य के गुण १.२४२ अ ।
छत्र—२.३०५ अ, चक्रवर्ती ४.१३ अ, ४.१५ ब, चैत्य
चैत्यालय २.३०२ अ, पूजा ३ ७८ ब, प्रातिहार्य

१ १३७ ब, रत्न ४ १३ अ, ४ १५ ब, रुचक पर्वत
की दिक्कुमारी ३ ४६६, ३.४६८-४६९ ।
छत्रचूडामणि—२ ३०५ अ, इतिहास १ ३४१ ब ।
छत्रत्रय—प्रातिहार्य १ १३७ ब ।
छत्रपति—२ ३०५ अ, इतिहास १ ३३४ ब ।
छत्रपुर—वर्द्धमान प्रभु २ ३७८ ।
छत्रसेन—सेन सघ १ ३२६ अ, ब, इतिहास १ ३३४ अ ।
छद्म—२ ३०५ अ ।
छद्मस्थ—२ ३०५ अ, आगम १.२३७ ब, आत्मानुभव
१ ८४-८६ अ, गुणस्थान २ २४६ ब, प्रामाण्य
१ १४३ अ, बन्धक ३ १७६ अ, शुद्धाशुद्ध ज्ञान
१ ८६ ब ।
छद्मस्थविहित वस्तु—गुरु २ २५३ ब ।
छद्मस्थ वीतराग—उपशान्त कषाय १ ४४२ ब, क्षीणकषाय
२ १८६ ब ।
छन्ता—जल-गालन २ ३२५ ब ।
छब्बीस—प्रकृतिसत्त्व ४ ८७ ब, ४ २७६ अ ।
छयालीस—अर्हन्त के गुण १ १३७ अ, आहार के दोष
१ २८७ अ, १ २८९ अ, वसतिका के दोष ३ ५२८ अ ।
छदि—आहारान्तराय १ २९ अ ।
छल—२ ३०५ ब, अनेकान्त १ १०५ ब, न्याय २ ६३३ अ
माया ३ २९६ अ, वाद-विवाद ३.५३३ अ, विद्या
३ ५४३ अ ।
छलना—जल-गालन २ ३२५ ब ।
छलनी—श्रोता १ ४२५ ब ।
छह—अनायतन १ २५१ अ, आवश्यक कर्म (श्रावक)
४.५१ ब, आवश्यक कर्म (साधु) १ २७९ ब, आहार
१ २८५ अ, कर्त्तव्य (श्रावक) ४.५१ ब, कर्म (असि,
मसि आदि) ४.२४, ४.४२० ब, कारक २ ४८, खड
४.८१ अ, घनागुल की सहनानी २ २१९ ब, दर्शन
(एकान्त मत) १.४६५ अ, द्रव्य २ ४५५ ब, पर्याप्ति
३ ४०, रस ३ ३६३ अ, हानि-वृद्धि ४.८१ अ ।
छह्हाला—इतिहास १ ३४८ अ ।
छहारदशमी व्रत—२.३०६ अ ।
छांग—कुन्थुनाय २ ३७९ ।
छाया—२.३०६ अ ।
छायाराहित्य—अर्हन्तातिशय १.१३७ ब ।
छायावत्—मोक्ष ३.३२९ ब ।
छाया-श्याल्य टीका—योगदर्शन ३.३८४ अ ।
छाया-संक्रामिणी—विद्या ३.५४४ अ ।
छिद्र (घटछिद्र) श्रोता ४ ७४ ब ।

छिन्नगति—२ २३५ अ।

छिन्न निमित्त ज्ञान—२.६१३ अ, ऋद्धि १ ४४८।

छीक—कायक्लेश २ ४७ ब।

छुआछूत—२ ३०६ अ।

छे छे—सूच्यागुल की अर्द्धच्छेद राशि २ २१६ ब।

छे छे^१—प्रतरांगुल की अर्द्धच्छेद राशि २ २१६ ब।

छे छे^२—घनांगुल की अर्द्धच्छेद राशि २ २१६ ब।

छे छे छे^१—जगत्प्रतर की अर्द्धच्छेद राशि २ २१६ ब।

छे छे छे^२—घनलोक की अर्द्धच्छेद राशि २ २१६ ब, जगत्
श्रेणी की अर्द्धच्छेद राशि २ २१६ ब।

छेब—२ ३०६ अ, अहिंसा व्रतातिचार १.२१६ अ, गणित
प्रक्रिया २ २२३ ब, पर्याय ३ ४५ ब, प्रायश्चित्त ३.१६१
अ, व्रतभग १ २१६ ब, हिंसा ४ ५३३ ब।

छेदगणित—२.३०६ ब।

छेदना—२ ३०६ ब।

छेदपिंड—इतिहास १.३४३ अ।

छेदप्रायश्चित्त—२ ३०७ अ, आहार १.२८६ ब।

छेद-भागाहार—अनुयोगद्वार १ १०२ ब

छेदविधि—२ ३०७ अ, छेदोपस्थापना २ ३०७ ब।

छेदोपस्थापक—२ ३०७ अ।

छेदोपस्थापना (चारित्र्य)—२ ३०७ ब, निर्यापक २.६२५ ब,
परिहारविणुद्धि ३ ३६ ब, भाव ४ १३२ अ, लब्धि-
स्थान अल्पबहुत्व १ १६०, सिद्धो का अल्पबहुत्व
१ १५३। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०६, बन्धस्थान ३ ११३
उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३६३, उदीरणा १ ४११
सत्त्व ४ २८३, मोहस्थितिसत्त्व ४.३०६ अ, सत्त्वस्थान
४ ३०१, ४ ३०६ त्रिसयोगी भग १.४०७ ब। सत्
४.२३७, संख्या ४ १०६, क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन
४ ४८६, काल २ ११४, अन्तर १ १६, भाव ३ २२१
ब, अल्पबहुत्व १ १५१।

ज

जंगम-प्रतिमा—२ ३०० अ-ब।

जघा-चारण ऋद्धि—१.४४७, १.४५१ ब।

जंघु—२ ३०६ ब, जीव २.३३३ अ-ब।

जंबूद्वीपपण्णति—२.३०६ ब, इतिहास १.३४२ ब।

जंबूद्वीप संघायणी—२ ३०६ ब, इतिहास १ ३४१ अ।

जंबूद्वीप—२ ३०६ ब। चातुर्द्वीपिक—निर्देश ३.४३७ अ,
अकन ३ ४३७ ब। बौद्धाभिमत - निर्देश ३ ४३४ ब,
अकन ३ ४३५। वैदिकाभिमत—निर्देश ३ ४३१ ब,
अकन ३ ४३२।

जंबूद्वीप (जैनाभिमत)—निर्देश ३ ४४४ अ, नामनिर्देश
३.४७० अ, विस्तार ३ ४४२ अ, ३.४७८, अकन
३ ४४३, चित्र ३ ४४४, ज्योतिष चक्र २ ३४८, अधि-
पति देव ३ ६१४। इस क्षेत्र के पर्वत नदी आदि—
निर्देश ३ ४४४ ब, गणना ३.४४५।

जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति—२ ३०६ ब, अमितगति १.१३६ अ,
इतिहास १ ३४१ अ, १ ३४३ अ, श्रुतज्ञान ४ ६८ ब।

जंबूद्वीपसमास—२ ३१० अ, इतिहास १ ३४० ब।

जंबूद्वीपसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ अ।

जंबूमती—२ ३१० अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

जंबूवृक्ष—२.३१० अ, निर्देश ३ ४५८-४५९, विस्तार
३ ४५८ अ, वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४४४, ३.४५७,
चित्र ३ ४५८ अ, देव प्रासादो का विस्तार ३ ६१५।
बौद्धाभिमत ३ ४३४ ब, वैदिकाभिमत ३ ४४१ ब।

जंबूवृक्ष—विमलनाथ २ ३८३, वृक्ष ३ ५७८ ब।

जंबूवृक्षस्थल—निर्देश ३ ४५८ अ, विस्तार ३.४५८ अ,
अकन ३ ४५५, चित्र ३ ४५८, ३ ४५९।

जंबूशंकुपुर—२ ३१० अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

जंबूसामिचारित—इतिहास १ ३४३ ब।

जंबूस्वामी—२.३१० अ, मूलसघ १ ३१६, इतिहास
१ ३२८ अ, श्वेतान्तर ४ ७८ अ।

जंबूस्वामीचरित्र—२ ३१० अ, इतिहास १.३४३ ब,
१ ३४५ ब, १ ३४७ अ।

जंभाई—कायक्लेश २ ४७ ब।

ज—जगश्रेणी २ २१६ ब, जघन्य २.२१८ ब।

ज—जघन्य को आदि लेकर अन्य भी २ २१८ ब।

ज^२—जगत्प्रतर, लोकप्रतर २ २१६ ब।

ज^३—घनलोक २ २१६ ब।

ज. जु अ—जघन्य युक्तानन्त २ २१६ अ।

ज. जु अ^१—उत्तम परीतानन्त, २ २१६ ब।

ज. जु अ ब—जघन्य अनन्तानन्त २ २१६ अ।

जगच्चंद्र सूरि—इतिहास १ ३३२ अ।

जगजीवन—२ ३१० अ, इतिहास १ ३३४ अ।

जगती—निर्देश ३.४४४ ब, ३ ४६२ ब, ३.४६३ ब, विस्तार
३ ४८४, वर्ण ३ ७७, अकन ३.४४४, ३.४६४ के
सामने।

जगत्तुंग—२.३१० अ, राष्ट्रकूट वंश १.३१५ ब।

जगत्—२ ३१० अ ।

जगत्कीर्ति—काष्ठासव १ ३२७ अ, नन्दिसव १.३२३ ब ।

जगत्कुसुम—२ ३१० अ, रुक्मवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६६ ।

जगत्-घन—२ ३१० अ, क्षेत्रप्रमाण २ २१५ ब ।

जगत्प्रतर—२ ३१० अ, क्षेत्रप्रमाण २ २१५ ब, सहनानी २ २१६ ब ।

जगत्श्रेणी—२ ३१० अ, क्षेत्रप्रमाण २ २१५ ब, सहनानी २ २१६ ब ।

जगत्सुंदरी प्रयोगमाला—२ ३१० अ, इतिहास १ ३४५ अ ।

जगत्स्रष्टा—कर्म २ २८ अ ।

जगदीश भट्टाचार्य—वैशेषिक दर्शन ३ ६०७ ब ।

जगदेकमल्ल—२.३१० अ ।

जगन्नाथ—इतिहास १ ३३४ अ, १ ३४७ ब ।

जगमोहन दास—२ ३१० अ, इतिहास १ ३३४ ब ।

ज० ज्ञा०—जघन्य ज्ञान २ २१८ ब ।

जघन्य-अंतरात्मा—१ २७ अ-ब ।

जघन्य अजघन्य—प्ररूपणाएँ ३ ११४ ।

जघन्य अनन्तानन्त—प्रमाण १ ५६ ब, २ २१४ ब, २ २१८ ब, सहनानी २ २१६ अ ।

जघन्य अनुभाग—१ ८६ अ ।

जघन्य अंतरात्मा—१ २७ अ-ब ।

जघन्य अवगाहना—सख्या ४ ६४ ब ।

जघन्य असख्यात—प्रमाण १ २०५ ब, सहनानी २ २१६ अ ।

जघन्य असख्येयासंख्येय—२ २१८ अ ।

जघन्य आराधना—सल्लेखना ४ ३८७ ब ।

जघन्य कषायांश—बंध ३ १७५ ब ।

जघन्य कृष्टि—२ १४३ अ ।

जघन्यगुण—गुण २ २४१ अ-ब, स्कन्ध ४ ४४८ अ ।

जघन्य ज्ञान—बंध ३ १७५ ब, सहनानी २ २१८ अ ।

जघन्य धर्मध्यान—२ ४७६ अ ।

जघन्य नक्षत्र—सल्लेखना ४ ३६७ ब ।

जघन्य निर्वृत्त्यपर्याप्ति—३ ४२ अ ।

जघन्य पद—अनुयोग १ १०२ ब, १ १०३ ब ।

जघन्य परमाणु—३ १४ अ ।

जघन्य परीतानन्त—प्रमाण १ ५६ अ, २ २१४ ब, सहनानी २ २१६ अ ।

जघन्य परीतासंख्यात—प्रमाण १.२०६ अ, २.२१४ ब, सहनानी २.२१६ अ ।

जघन्य पात्र—३ ५२ ब ।

जघन्य प्रोषधोपवास—३ १६४ ब ।

जघन्य भाव—बंध ३ १७५ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७७ अ ।

जघन्य युक्तानन्त—उपमाकाल २ २१८ अ, प्रमाण १ ५६ ब, २ २१४ ब, सहनानी २ २१६ अ ।

जघन्य युक्तासंख्यात—उपमाकाल २ २१८ अ, प्रमाण १.२०६ ब, २ २१५ ब, सहनानी २ २१६ अ ।

जघन्य योगस्थान—३ ३८१ अ ।

जघन्यलब्धि—३ ४१५ अ ।

जघन्य वर्ग—३ ५११ ब ।

जघन्य वर्गेणा—सहनानी २ २१६ अ ।

जघन्य विभक्ति—अनुयोगद्वार १ १०३ ब ।

जघन्य संख्यात—उपमा प्रमाण २ २१४ अ, ४ ६२ अ ।

जघन्य स्थितिबंध—४ ४५८ ब ।

जघन्य स्थितिसत्त्व—४ २७६ ब, सम्यग्मिथ्यादृष्टि ४ २७७ अ ।

जघन्य स्पर्धक—४ ४७२ ब ।

जटामुकुट—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब ।

जटायु—२ ३१० ब ।

जटासिंहनदि—२ ३१० ब, इतिहास १ ३२६ ब ।

जटिल—२.३१० ब ।

जठराग्नि—अग्नि १ ३५ ब ।

जड़—२.३१० ब, २ ३३२ ब ।

जतुर्कर्ण—२.३१० ब, एकान्ती १ ४६५ ब, विनयवादी ३ ६०५ अ ।

जनक—२.३१० ब, उग्रसेन १.३५२ अ, हरिवंश १ ३४० अ ।

जनकपुरी—२.३१० ब ।

जननाशौच—४.४४२ ब ।

जनपद—२ ३१० ब ।

जनपद सत्य—४.२७१ ब ।

जनसंसर्ग—४ ११८ अ ।

जनादन—इतिहास १ ३३४ ब ।

जन्माचार्य—२ ३१० ब, १ ३३२ अ ।

जन्म—२ ३१० ब, २ ३१२ अ, योनि ३.३८८ अ, वर्ण-व्यवस्था ३ ५२५ अ ।

जन्मकल्याणक—२ ३२ अ ।

जन्मकल्याणक-वन्दना—२ १३६ अ ।

जन्मदत्त—४.२५ अ ।

जन्मभूमि—नारकियो का जन्मस्थान—निर्देश २ ५७७ अ, रचना २ ५७७ अ, विस्तार २.५७७ अ ।

जन्मसाहित्य—मोक्ष ३ ३२६ अ ।

जन्मशाला—भवनवासी देवभवन ३ २१० ब ।

जन्मसंस्कार क्रियामंत्र—मंत्र ३ २४६ ब ।

जन्मसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ अ ।

जन्मांध—एकान्त १ ४६३ ब ।

जन्मातिशय—अर्हन्त १ १३७ ब ।

जन्माभिषेक—सुमेरु पर चार शिलाये ३ ४५० ब ।

जन्मेजय—२ ३२३ अ, कुरुवश १ ३१० ब ।

जन्मजनक भाव—१ २३३ अ ।

जलु—इक्ष्वाकु वश १ ३३५ अ ।

जप—ध्यान २ ४८३ ब ।

जमाली—श्वेताम्बर ४ ७६ ब ।

जयंत (कूट)—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन २ ४६८ ।

जयंत (द्वार)—जम्बूद्वीप की जगती का द्वार—निर्देश ३ ४४४ ब, विस्तार ३ ४८४, अंकन ३ ४४४ के सामने, इसका रक्षक देव ३ ६१३ ।

जयत (नगरी)—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ ।

जयंत (स्वर्ग)—२ ३२३ अ, अनुनर स्वर्ग—निर्देश ४ ५१६ अ, अंकन ४ ५१५, ५१७ । देव—निर्देश ४ ५१० ब, आयु के बन्धयोग्य परिणाम १ २५८ ब । चक्रवर्ती ४ १० ब ।

जयंतभट्ट—२ ३२३ अ ।

जयंता—विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७६-४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६६ अ । नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३ ४६३ अ, नामनिर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४६१, अंकन ३ ४६५ । रुचकवर पर्वतवासिनी देवी—निर्देश ३ ४७६ अ-ब, अंकन ३ ४६८, ३ ४६९ ।

जयंतिकी—२ ३२३ अ ।

जयंती—२ ३२३ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ, विद्या ३ ५४४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ । विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७६-४८०-४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ ।

जय—२ ३२३ अ, आचार्य १ ३१६, गणधर २ २१३ अ, चक्रवर्ती ४ १० अ, तीर्थकर २ ३७७, मूलसघ १ ३१६, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ, ३ ५४६ अ, विमल-अनन्त नाथ २ ३८७ ।

जयकीर्ति—२ ३२३ अ, काष्ठासंघ १ ३२७ अ, तीर्थकर २ ३७७ ।

जयकुमार—२ ३२३ अ, अकम्पन १ ३० ब, कुरुवश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ ।

जयचद छाबड़ा—२ ३२३ अ, इतिहास १ ३३४ ब, १ ३४८ अ ।

जयतिलक सूरि—इतिहास १ ३३२ ब ।

जयदेव—तीर्थकर २ ३७७ ।

जयद्रथ—२ ३२३ ब ।

जयधवला—२ ३२३ ब, इतिहास १ ३४१ ब ।

जयनदि—२ ३२३ ब, नन्दिसघ १ ३२३ अ, इतिहास १ ३२६ अ ।

जयनाथ—तीर्थकर २ ३७७ ।

जयपराजय—न्याय २ ६३४ ब, वितण्डा ३ ५४३ अ ।

जयपाल—२ ३२३ ब, मूलसंघ १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ ।

जयपुर—२ ३२३ ब, मनुष्यलोक ३ २७६ अ ।

जयपुरी—२ ३२३ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ ।

जयबाहु—२ ३२३ ब, मूलसघ १ ३१६ ।

जयमित्र—२ ३२३ ब, सप्तऋषि ४ ३१३ अ ।

जयमित्रहल—इतिहास १ ३३३ अ, १ ३४५ ब ।

जयराज—कुरुवश १ ३३५ ब ।

जयरामा—सुविधिनाथ २ ३८० ।

जयराशि—२ ३२३ ब, इतिहास १ ३२६ ब ।

जयवती—बलदेव ४ १७ ब ।

जयवन्ती—बलदेव ४ १७ ब ।

जयवराह—२ ३२३ ब ।

जयवर्मा—२ ३२३ ब ।

जयवान्—२ ३२३ ब ।

जयविलास—२ ३२३ ब, इतिहास १ ३४७ ब ।

जयश्यामा—अनन्तनाथ विमलनाथ २ ३८० ।

जयसागर—इतिहास १ ३३४ अ ।

जयसिंह—२ ३२३ ब, भोजवश १ ३१० अ ।

जयसेन (आचार्य)—२ ३२४ अ, मूलसघ १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ । काष्ठासघ १ ३२७ अ । पचस्तूपसघ—निर्देश १ ३२६ ब, इतिहास १ ३२६ ब । पुन्नाट सघ—निर्देश १ ३२७ अ, इतिहास १ ३२६ ब । लाडबागड सघ—निर्देश १ ३२७ ब, इतिहास १ ३३१ अ, १ ३४३ अ । पचम—इतिहास १ ३३१ ब । षष्ठम—इतिहास १ ३३१ ब । सप्तम—इतिहास १ ३४४ अ ।

जयसेन (राजा)—चक्रवर्ती २ ३६१, ४ १० अ, यदुवंश १ ३३७ ।

जयसेना—उत्तरेन्द्र की ज्येष्ठा देवी ४ ५१४ अ ।

जया—२.३२४ अ, अरनाथ की यक्षिणी २.३७६, विद्या ३ ५४४ अ ।

जयावती—वासुपूज्यनाथ २.३८० ।

जयावह—२.३२४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब, ३ ५४६ अ ।

जया वाचना—३ ५३१ ब ।

जरत्कुमार—२.३२४ अ, यदुवश १.३३७ ।

जरा—२ ३२४ ब, यदुवश १ ३३७ ।

जरापल्ली पार्श्वनाथ—२ ३२४ ब ।

जरापल्ली पार्श्वनाथ स्तोत्र—४ ४४६ ब ।

जरायु—२.३२४ ब ।

जरासंध—२ ३२४ ब, हरिवंश १.३४० अ, प्रतिनारायण ४.२० अ, नेमिनाथ २ ३६१, कुटुम्ब १ ११६ अ ।

जल—२ ३२४ ब, अर्हन्तातिशय (निर्मल सुगन्धित जल-वृष्टि) १ १३७ ब, नक्षत्र (पूर्वाषाढ) २ ५०४ ब, पूजा ३ ७८ ब, मण्डल (अपमंडल) २ ३२४ ब, ३ ४३४, वर्ण (लेख्या) ३ ४२५ अ, विहार ३ ५७६ ब ।

जलकांत—उदधिकुमारेन्द्र—निर्देश ३ २०८ अ, परिवार ३ २०६ अ, अवस्थान ३ २०६ ब, आयु १ २६५ ।

जलकायिक (जीव)—निर्देश २ ४४, २ ३२४ । अप्रतिष्ठित शरीर ३ ५०६ अ, अवगाहना १ १७६, अवस्थान २ ४६ अ, आयु १ २६४, जीवसमास २ ३४३, वर्ण ३ ४२५ अ, स्थावर ४ ४५४ ब ।

जलकायिक (मार्गणा)—प्ररूपणा—बध ३ १०४, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २०२, सत्त्वस्थान ४ २६६, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब । सत् ४ २०२, सख्या ४ १००, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४ ४८३, काल २ १०६, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

जलकेतु—२ ३२५ अ, ग्रह २ २७४ अ ।

जलगता चूलिका—२ ३२५ अ, श्रुतज्ञान ४ ७६ अ ।

जलगति—२ ३२५ अ, विद्या ३ ५४४ अ ।

जलगालन—२ ३२५ अ-ब, श्रावक ४ ५० ब ।

जलचर—२ ३६७, अत्रगहना १ १७६, आयु १.२६३, इन्द्रिय १ ३०६ ब, जीवसमास २ ३४३ ।

जलचारण—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५२ ब ।

जलधि—यदुवश १.३३७ ।

जलपथ—२ ३२६ अ ।

जलप्रभ—उदधिकुमारेन्द्र—निर्देश ३.२०८ अ, अवस्थान ३ २०६ ब, परिवार ३ २०६ अ, आयु १ २६५ ।

जलमंडल—धारणा २ ३२४ ब, लोक ३.४३४ अ ।

जलमंडल यंत्र—३ ३५३ ।

जलरेखा—क्रोध कषाय २.३८ अ ।

जलादिवासन यंत्र—३ ३५३ ।

जलावर्त—२.३२६ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ ।

जलाशय—स्नान ४ ४७१ ब ।

जलौषधऋद्धि—१ ४४७, १ ४५५ अ ।

जल्प—२ ३२६ अ, २.६३३ अ, २ ६३३ ब, वाद ३ ५३३ ब ।

जल्पनिर्णय—२.३२६ ब, इतिहास १ ३२६ ब, १ ३४१ ब ।

जल्पवितंडा—वाद ३ ५४२ ब ।

जल्हिगले—इतिहास १.३३२ ब ।

जसहरचरिउ—इतिहास १ ३३० ब, १ ३४२ ब, ।

जह्नु—इक्ष्वाकु वंश १ ३३५ अ ।

जांबूनद—सुमेरु परिधि ३ ४४६ ब ।

जांबूनदा—२.३२६ ब, विद्या ३ ५४४ अ ।

जागृति—ज्ञानी ४ ३७८ अ, निद्रा २ ६०६ अ ।

जातकतिलक—इतिहास १ ३४२ ।

जाति—२ ३२६ ब, आकृति १ २२५ अ, कुल २.१३० अ, न्याय २ ३२७ ब, २ ६३३ अ, वर्णव्यवस्था ३ ५२४ ब, ३ ५२५ ब, विद्या ३ ५४३ अ, विवाद ३ ५३३ अ, शुक्लध्यान ३ ५३४ ब ।

जाति नामकर्म प्रकृति—२ ३२६ ब । प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३ १३६ । बध ३ ६५ अ, ३ ६८, बधस्थान ३ १११, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०४ । सक्रमण ४ ८५, अल्पबहुत्व १ १६८, १ १७६ ।

जातिपदगत भग—३ १६७ अ ।

जातिमंत्र—३ २४६ अ ।

जातिमद—३ २५६ ब ।

जातिदाचक नाम—२ ५८२ ब ।

जातिविद्या—३ ५४४ अ ।

जातिस्मरण—सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति मे निमित्त ४.३६३ अ, सुमति-पद्मप्रभ आदि तीर्थकर २ ३८२ ।

जात्यंतर—अनुगम १ ७० ब, सामान्य ४ ४१२ ब ।

जात्यंतर ज्ञान—मिश्र गुणस्थान ३ ३०८ अ-ब ।

जात्यंतर भाव—अनेकान्त १ १०५ अ ।

जात्यंतर श्रद्धान—मिश्र गुणस्थान ३ ३०७ ब ।

जात्यार्य—आर्य १ २७५ अ ।

जानूपरि व्यतिक्रम—आहारान्तराय १.२६ अ ।

जान्वधःपरामर्श—आहारान्तराय १.२६ अ ।

जाप—पदस्थध्यान ३५ ब, पूजा ३.७५ अ, व्युत्सर्ग ३.६२० ब, सामायिक ४४१७ अ ।

जामन—(दही का जामन) भक्ष्याभक्ष्य ३२०३ अ ।

जाल—२३२८ अ, औदारिक शरीर १.४७२ अ ।

जालंधर—२३२८ अ ।

जिज्ञासा—२३२८ अ, ऊहा १.४४५ ब ।

जिगयत्तकहा—इतिहास १३४४ ब ।

जिणरत्ति कहा—इतिहास १३४६ अ ।

जिणरत्तिविहाणकहा—इतिहास १३४५ अ ।

जित—निक्षेप २६०१ ब ।

जितकषाय—२३२८ अ ।

जितदड—२३२८ अ, पुन्नाट सघ १३२७ अ ।

जितनाभि—नारद ४२२ अ ।

जितमोह—२३२८ अ ।

जितशत्रु—२३२८ अ, इक्ष्वाकुवश १३३५ अ । अजितनाथ २३८०, २३६१, नारद ४२२ अ, यदुवश १३३७, रुद्र (अजितनाथ का) २.३६१ ।

जितारि—यदुवश १३३७ ।

जितेन्द्रिय—२३२८ अ ।

जिन—२३२८ ब ।

जिनकल्प—२३२६ अ, २.१३६ ब, श्वेताम्बर ४७८ ब, ४७६ अ-ब ।

जिनकूट—पद्म आदि द्रव्यो के कूट—निर्देश ३४७४ अ, विस्तार ३४८३, अंकन ३४४४ ।

जिनगुणसपत्ति व्रत—२३२६ अ ।

जिनगुणस्तुति—पात्रकेसरी स्तोत्र, इतिहास १३४१ अ ।

जिनचतुर्विंशति स्तोत्र—इतिहास १३४६ अ ।

जिनचंद्र—२३२६ अ, कुन्दकुन्द के गुरु २१२६ ब, २१२८ अ, मूलसंघ १३२२ ब, नन्दिसंघ १३२३ अ, १३२४ अ, १ परि०/२३, १ परि०/४३, इतिहास १३३८ ब, १.३३१ ब, १३३२ ब, १३३३ अ, १३४६ अ । श्वेताम्बर ४.७७ अ-ब ।

जिनदत्तचरित—२३२६ ब, इतिहास १३४२ अ ।

जिनदत्ता—इक्ष्वाक्रेन्द्रो की वल्लभिका ४५१३ ब ।

जिनदास—२३२६ ब, इतिहास १३३२ ब, १३३४ ब ।

जिनदासी—उत्तरेन्द्रो की वल्लभिका देवी ४५१३ ब ।

जिनदीक्षी—प्रव्रज्या ३१४६ ब, भरत चक्रवर्ती ३४१६ अ ।

जिननंदि—२३२६ ब, इतिहास १३२८ अ ।

जिनपालित—२.३२६ ब ।

जिनपुर—भवनवासी देवो के नगरों में जिनचैत्यालय २.३०३ ब, व्यन्तर देवो के नगरों में जिनचैत्यालय ३.६१२ ब ।

जिनपूजा पुरन्दर व्रत—२३२६ ब ।

जिनर्षिब—पूजा ३७७ अ, सामायिक ४४१७ अ ।

जिनर्षिब दर्शन—४३६३ अ ।

जिनभद्रगणी—२३२६ ब, इतिहास १.३२६ अ, १३४१ अ ।

जिनभवन—चैत्यालयों में रति-कामदेव की मूर्ति २३०३ ब भवन ३२१० ब ।

जिनभास्कर—राक्षसवश १३३८ अ ।

जिनमहिमा दर्शन—सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति में निमित्त ४३६३ अ ।

जिनमुखावलोकन व्रत—२३२६ ब ।

जिनमुद्रा—२१३५ अ, कृतिकर्म ३३१३ ब ।

जिनयज्ञ कल्प—इतिहास १३४४ ब ।

जिनयज्ञ काव्य—आशाधर १२८१ अ ।

जिनराज—इतिहास १३३३ ब ।

जिनरात्रि व्रत—२३३० अ ।

जिनरूपता क्रिया—संस्कार ४.१५१ ब, ४१५२ ब ।

जिनवचन—स्वाध्याय ४.५२५ अ ।

जिनवन्दना—पूजा ३७६ ब ।

जिनवर—२३३० अ ।

जिनवर वृषभ—२.३३० अ ।

जिनवल्लभ गणी—इतिहास १३३१ अ, १३४३ ब ।

जिनशतक—इतिहास १३३४ ब ।

जिनशतक स्तोत्र—४.४४६ ब ।

जिनशासन—आगम १२२७ ब ।

जिनसंहिता—२३३० अ ।

जिनसहस्रनाम—२३३० अ ।

जिनसहस्रनाम स्तोत्र—आशाधर १२८१ अ, स्तोत्र ४.४४६ ब ।

जिनघागर—२३३० अ, इतिहास १३३४ ब, १३४७ ब ।

जिनसेन—२२३० अ, उत्तरपुगण १३५६ अ । इतिहास—कवि १३३४ ब, द्रविड सघ १.३२० अ, पंचस्तूप सघ १३२६ ब, पुन्नाट सघ १.३२७ अ, इतिहास १.३३० अ, १.३४१ ब, १३४२ अ, भट्टारक १३२६ ब, सेन सघ १३१८ ब, १.३२६ ब ।

जिनस्तुति शतक—२.३३० अ, स्तोत्र ४.४४६ अ ।

जिनायतन—प्रत्येक पर्वत पर स्थित—निर्देश ३४७१-

४७३, विस्तार ३४८३, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चैत्य-चैत्यालय २.३०४ अ ।

जिनालय वन्दना—पूजा ३७६ ब ।

जिनेन्द्रबुद्धि—२.३३० अ, मूलसंघ १.३२२ ब, पूज्यपाद ३८२ अ, नन्दिसंघ (देवनन्दि) १.३२३ अ, इतिहास १३२६ अ ।

जिवानी—२२३० ब, जलगालन २.३२५ ब ।

जिह्व—नरक पटल—निर्देश २.५७१ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३४४१ । नारकी—अवगाहना ११७८, अवधिज्ञान ११६८, आयु १.२६३ ।

जिह्वक—नरक पटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३४४१ । नारकी—अवगाहना ११७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६३ ।

जिह्वा—२३३० ब, आहारान्तराय १.२८ ब, इन्द्रिय १३०२ अ, प्रदेश तथा अवगाहना का अल्पबहुत्व ११५७, रस ज्ञान की कालावधि का अल्पबहुत्व ११६०, संयम (प्रधानता) ४.१३६ अ ।

जिह्वा—नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३४४१, नारकी—अवगाहना ११७८, अवधिज्ञान ११६८, आयु १.२६३ ।

जिह्विक—२३३० ब । नरक पटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३४४१, नारकी—अवगाहना ११७८, अवधिज्ञान ११६८, आयु १.२६३ ।

जीतशास्त्र—४.३६४ ब ।

जीतहार—न्याय २.६३४ ब, वितण्डा ३.५४५ अ ।

जीमूत—चक्रवर्ती ४१५ अ ।

जीरापत्नी प्रार्थनाथ स्तोत्र—इतिहास १३४५ ब ।

जीवंधर—२३३० ब, ब्रह्म जीवंधर १३३३ अ ।

जीवंधर चम्पू—२३३० ब । इतिहास १३४२ अ ।

जीवंधरचरित्र—२३३० ब । इतिहास १३४१ ब ।

जीवंधरपुराण—२३३० ब । इतिहास १३४७ ब ।

जीवंधर (ब्रह्म) —इतिहास १३३३ अ ।

जीवंधर शतपदी—२३३० ब ।

जीव—२३३० ब, अजीव १.४१ ब, अप्रतिघाती १२२३ ब, अवगाहना ११७७-११८०, अवस्थान १२२२ ब, आयु १२६३, आहारक १२६४ ब, उपकार २६३ ब, उपादेयता (तत्त्व) २३५५ ब, कर्मसंयोग (कारण कार्य) २६७ अ, २७० अ, २७१ ब, २७२ अ, २७४ अ, काय २४४ ब, गति (गमन) २२३५ अ, ब, गुण २२४४ अ, जन्म २३१२ ब, पुद्गल संयोग ३३७३ ब, ३५६१ अ, पुद्गल मोक्ष ३३२२ ब, प्रासुक ३१६२ अ, भावकर्म २२८ ब, मूर्तबन्ध ३१७३ अ, लोकाकाशमे अवस्थान १२२२ ब, विग्रह गति १२४७ अ-ब, ३५४१ अ, विभाव ३५५६ ब, ३५६१ अ, शरीराकार १४७१ ब, शुद्ध २३३८ अ, श्रेष्ठता २३५५ ब, सकोच-विस्तार-शक्ति २४६ ब, २३३८ ब, स्वभाव २१५ अ, (कृष्णा) ४५०६ ब, भाव आस्रव १२८२ अ, तत्त्व २३५३ ब ।

जीव (प्ररूपणा)

विषय	बंध	बंधस्थान	उदय	उदयस्थान	उदीरणा	सत्त्व	सत्त्वस्थान	त्रिसंयोगी	सक्रमण
ओघ प्ररूपणा	३.६७	३१०८	१३७५	१३८८	१.४११अ	४२७८	४२८७	१४००	४८७
आदेश प्ररूपणा	३.१००	३११३	१३७६	१.१६२	१.४११	४२८१	४२८८	१४०६	४.८७
गतिमार्गणा	३.१००	३११३	१३७६	१३६२	१.४११	४२८१	४२८८	१४०६	४८७
१. इन्द्रिय	३.१०३	३११३	१३७८	१३६२	१.४११	४२८२	४२८६	१४०६	४८७
२. काय	३.१०४	३११३	१३७६	१३६२	१.४११	४२८२	४२८६	१४०६	४८७
३. योग	३.१०४	३.११३	१३७६	१३६२	१.४११	४२८३	४२८६	१४०६	४८७
४. वेद	३.१०५	३.११३	१३८१	१३६२	१.४११	४२८३	४३००	१४०७	४८७
५. कषाय	३.१०५	३.११३	१.३८२	१.३६३	१.४११	४२८३	४३००	१४०७	४८७
६. ज्ञान	३.१०५	३.११३	१३८३	१.३६३	१.४११	४.२८३	४३००	१४०७	४८७
७. संयम	३.१०६	३.११३	१३८३	१.३६३	१.४११	४.२८३	४३०१	१४०७	४८७
८. दर्शन	३.१०६	३.११३	१.३८३	१.३६३	१.४११	४२८४	४३०१	१४०७	४८७
९. लेश्या	३.१०७	३.११३	१३८४	१३६३	१.४११	४२८४	४३०१	१४०७	४.८७
१०. भव्यत्व	३.१०७	३.११३	१३८४	१.३६३	१.४११	४.२८४	४३०२	१४०८	४८७
११. सम्यक्त्व	३.१०७	३.११३	१.३८५	१.३६३	१.४११	४२८४	४.३०२	१४०८	४८७
१२. सज्जित्व	३.१०८	३.११३	१.३८५	१३६३	१.४११	४.२८४	४३०२	१४४८	४८७
१३. आहारकत्व	३.१०८	३.११३	१३८६	१३६३	१.४११	४.२८४	४३०३	१४०८	४८७

	विषय	सत्	सख्या	क्षेत्र	स्पर्शन	काल	अन्तर	भाव	अल्पबहुत्व	भागाभाग
	ओष प्ररूपणा	४ १६१	४ ६४	२ १६७	४ ४७७	२.६६	१ ७	३ २१६	१ १४२	४ ११५
	आदेश प्ररूपणा	४.१६५	४ ६५	२ १६७	४.४७६	२.१०१	१ ८	३ २२०	१ १४२	४ ११०
१	गतिमार्गणा	४ १६५	४ ६५	२ १६७	४ ४७६	२ १०१	१ ८	३ २२०	१ १४३	४ ११०
२	इन्द्रिय "	४.१६३	४ ६६	२ २००	४ ४८३	२.१०६	१ ११	३ २२०	१ १४५	४ ११०
३.	काय "	४ १६६	४ १०१	२ २०१	४ ४८३	२ १०६	१ १२	३ २२०	१ १४५	४ १११
४.	योग "	४ २११	४ १०२	२ २०२	४ ४८५	२ १०७	१ १२	३ २२१	१.१४७	४ १११
५	वेद "	४ २२२	४ १०४	२.२०३	४ ४८७	२ १११	१ १४	३ २२१	१ १४८	४ ११२
६.	कषाय "	४ २२८	४ १०५	२ २०४	४ ४८८	२ ११२	१ १५	३ २२१	१ १४९	४.११२
७	ज्ञान "	४ २३३	४ १०५	२ २०४	४ ४८८	२ ११३	१ १५	३ २२१	१ १५०	४ ११३
८.	सयम "	४ २३६	४ १०६	२ २०५	४ ४८९	२ ११४	१ १६	३ २२१	१ १५०	४.११३
९.	दर्शन "	४ २३९	४ १०७	२ २०५	४.४९०	२ ११५	१ १७	३ २२१	१ १५१	४ ११३
१०.	लेश्या "	४ २४२	४ १०७	२ २०५	४ ४९०	२ ११५	१ १८	३ २२१	१ १५१	४ ११३
११	भव्यत्व "	४ २५४	४ १०८	२ २०६	४ ४९२	२ ११७	१ २०	३ २२१	१ १५२	४ ११४
१२	सम्यक्त्व "	४ २५५	४ १०९	२ २०६	४ ४९२	२ ११७	१ २०	३ २२१	१.१५२	४ ११४
१३.	सज्जित्व "	४ २६०	४ ११०	२.२०७	४ ४९३	२.११८	१ २१	३ २२२	१ १५२	४ ११४
१४.	आहारकत्व "	४ २६३	४ ११०	२ २०७	४ ४९३	२ ११८	१ २१	३ २२२	१ १५२	४ ११४

जीव-अनुभाग — १ ८८ अ ।

जीवकचिन्तामणि — इतिहास १.३४१ ब ।

जीवकर्म—२ २७ अ-ब ।

जीवकषाय—२ ३७ अ ।

जीवक्रोध—३ ३७ अ ।

जीवगति (गमन)—ऊर्ध्व २.२३५ अ-ब, दिगन्तर २ २३५ ब, विभावगति २ २३५ ब, विग्रहगति १ २४७ ब, ३ ५४१ अ ।

जीवघात—हिंसा ४ ५३४ अ ।

जीवतत्त्वप्रदीपिका—२ ३४० ब ।

जीवत्व—२ ३४० ब ।

जीवद्यशा—२ ३४१ अ ।

जीवन—२.३४१ अ ।

जीवनलोभ—३ ४६२ ब ।

जीवन्धर — २ ३३० ब, ब्रह्म जीवन्धर १ ३३३ अ ।

जीवन्धरचम्पू—२ ३३० ब, इतिहास १ ३४२ अ ।

जीवन्धरचरित्र—२ ३३० ब, इतिहास १.३४१ ब ।

जीवन्धरपुराण—२ ३३० ब, इतिहास १.३४७ ब ।

जीवन्धर ब्रह्म—इतिहास १ ३३३ अ ।

जीवन्धर शतपदी — २ ३३० ब ।

जीवन्मुक्त—अनुप्रक्षा १ ७८ अ, मोक्ष ३ ३२३, सम्यग्दृष्टि ४ ३७६ ब ।

जीवन्मुक्तिविवेक—३ ५६५ ब ।

जीवपरिणाम — अनुभागोदय २ ६७ ब, २ ७२ अ, कर्मोदय

२ ७२ अ, मोक्षमार्ग २ ६८ अ ।

जीवपुद्गल—मोक्ष ३.३२२ ब, यति (सयोग) २ ३७३ ब, विभाग ३ ५६१ अ ।

जीवप्रदेश—इन्द्रिय १ ३०२ ब, योग ३.३८३ ब, संकोच-विस्तार २ ४६ ब, २ ३३८ ब, समुद्घात ३ ५६१ अ ।

जीवबंध—३ १७० ब, उपशम १ ४४२ अ ।

जीवमोक्ष—३ ३२२ ब ।

जीवयुति—३ ३७३ ब ।

जीवरक्षा—हिंसा ४ ५३४ ब ।

जीवराशि—सख्या प्रमाण ४ ६४, मोक्ष ३ ३३१ ब ।

जीवविचय—धर्मध्यान २ ४८० अ ।

जीवविपाकी प्रकृति—अनुभाग १ ६० ब, प्रकृतिबंध ३ ८६ ब ।

जीवसंपात—आहारान्तराय १ २६ अ ।

जीवसंस्थान—विग्रह गति १.२४७ अ ।

जीवसमास—२.३४१ ब, काय २ ४४ ब, मार्गणा ३ २६८ अ, योग ३ ३७६ ब । योगस्थान ३.३८२ अ ।

जीवसमुदाहार अनुयोगद्वार १ १०२ ब ।

जीवसिद्धि—२ ३४३ ब, इतिहास १.३४० अ ।

जीवा—२ ३४३ ब, गणित २ २३३ अ ।

जीवाराम—२ ३४२ ब ।

जीवाधिकरण—१ ४६ अ ।

जीविका — २.३४३ ब ।

जीवित—जीवन २ ३४१ अ ।

जीवितपूर्व—२.३३४ ब।

जीवितावधिक प्रत्याख्यान—३.१३३ अ।

जुगुप्सा—२.३४४ अ, कषाय २.३५ ब, निर्विचिकित्सा २.६२६ ब, रागद्वेष (कषाय) २.३६ अ, सूतक ४.४४२ अ, हिंसा ४.५३३ ब।

जुगुप्सा कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४४, स्थिति ४.४६१, स्थितिसत्त्व ४.३०८, स्थिति-स्थान अल्पबहुत्व १.१६५ ब, अनुभाग १.६४ ब, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.१०६, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८६ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्व-स्थान ४.२६६, त्रिसंयोगी भंग १.४०१ ब। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

जुगुप्सा वेदनीय—३.३४४ ब।

जू—२.३४४ अ, क्षेत्रप्रमाण २.२१५ अ।

जैतुगिदेव—२.३४४ अ। भोजवंश १.३१० अ।

जैन—२.३४४ अ, चन्द्रगुप्त १.३१० ब।

जैनतर्क—२.३४४ ब, इतिहास १.३४७ ब।

जैनतर्कवातिक—२.३४४ ब, इतिहास १.३४३ अ।

जैनवंश—२.३४४ ब, एकान्त १.४६५ अ।

जैनशतक—२.३४४ ब, इतिहास १.३४७ ब।

जैनश्रावक—ब्राह्मण ३.१६५ ब।

जैनसंगीति—अहंदली १.१३८ ब।

जैनसंघ—इतिहास १.३१८ अ, कल्की २.३१ ब।

जैनाभासी संघ—१.३१६ अ, एकान्त १.४६५।

जैनाभिमत भूगोल—निर्देश ३.४३१ अ।

जैनेन्द्र व्याकरण—इतिहास १.३४० ब।

जैबलि प्रवाहण—कुरुवंश १.३१० ब।

जैमिनी—२.३४५ अ, अज्ञान मिथ्यात्व १.३७ अ, अज्ञान-वादी १.३८ ब, एकान्त १.४६५ ब, परवाद ३.२३ अ, मीमांसक १.४६५ ब, ३.३११ अ, वेदान्त ३.५१५ ब।

जौक—श्रोता १.४२५ ब, ४.७४ ब।

जोगपरिवत्तीए—२.६५ ब।

जोगाविभाग पडिच्छेदा—३.३८३ ब।

जोड़—२.३४५ अ।

जोणीपाट्ट—इतिहास १.३४० अ।

जोधराज गोबी—२.३४५ अ, इतिहास १.३३४ अ, १.३४६ ब।

जोनशाह—२.३४५ अ।

ज—२.२५५ अ, जीव २.२३३ अ।

ज्ञप्तिक्रिया—अध्यवसान १.५२ ब, कर्ता-कर्म २.१८ ब, चेतना २.२६६ अ।

ज्ञप्ति-परिवर्तन—कर्म २.२६ अ।

ज्ञात—२.२५५।

ज्ञाता—अकर्ता २.२६६ अ।

ज्ञातृकयांग—२.२५५ अ।

ज्ञातृत्व—३.३३६ ब।

ज्ञातृधर्मकया—४.६८ अ।

ज्ञान—२.२५५ अ, अधिगमज १.५१ ब, अनुभव १.८१-८६, अभ्यास १.१३१ ब, आगमज्ञान १.२२८ अ, आत्मा ३.३३७ अ, उपयोग १.४२६ ब—१.४३१ ब, उपलब्धि १.४३५ अ, कषाय १.४३२ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, क्रिया २.६८ अ, क्रिया नय ३.५४० अ, गति-अगति २.३२२ अ, चारित्र २.२८६ अ-ब, तप २.३६० ब, दर्शन २.४०६ ब, धर्म २.४६६ ब, ध्यान २.४६५ ब, २.४६६ ब, ध्येय २.५०० अ, निश्चय व्यवहार २.२७० ब, निसर्गज १.५१ ब, प्रज्ञा १.८७ अ, प्रज्ञाश्रमण १.४५० ब, प्रत्याख्यान ३.१३२ ब, प्रमाण २.२५८ ब, २.५२६ अ, ३.१४१ ब, बुद्धि ३.१८४ ब, मिथ्या (अज्ञान) १.३७ अ, मिथ्यात्व २.२६४ ब, मिश्रज्ञान ३.३०८ अ, मोक्षमार्ग ३.३२८ अ-ब, ३.३३३ ब, ३.३३७ अ, ३.३३८ ब, योग १.४३२ ब, राग ३.३६५ अ, विशुद्धि ३.५७० अ, शुद्धाशुद्ध उपयोग १.४३२ अ, १.४३४, श्रुतकेवली ४.५५ ब, श्रुतज्ञान १.२२६ ब, ४.५६ ब, सम्यग्ज्ञान २.२६२ अ, २.२६५ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५३ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७५ ब, ४.३७६ ब। सविकल्प ३.५३७ ब, सविशेष १.२१६ अ, साकार १.२१६ अ, सिद्धों का अल्पबहुत्व १.१५४, सुख ४.४३२ अ, स्वसंवेदन १.८१-८७ अ।

ज्ञान (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०५, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८३, उदयस्थान १.३६३, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८३, ४.२८६, सत्त्वस्थान ४.३००, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०७। सत् ४.२३३, संख्या ४.१०५, भागाभाग ४.११३, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४.४८८, काल २.११३, अन्तर १.१५, भाव ३.२२१, अल्प-बहुत्व १.१५०। पंचशरीरस्वामित्व—निर्देश ४.७, अल्पबहुत्व १.१५६। षट्कर्म-स्वामित्व ४.२६६।

ज्ञानकल्याणक—कल्याणक २.३२ ब ।

ज्ञानकल्याणक बन्धना—कृतिकर्म २ १३६ अ ।

ज्ञानकीर्ति—इतिहास १ ३३४ अ, १.३४७ ब ।

ज्ञानक्रिया—कर्ता-कर्म २.१८ ब, चेतना २ २६८ अ ।

ज्ञानज्ञेय नय—अद्वैतवाद १.४७ ब ।

ज्ञानचन्द्र—२ २७० अ, इतिहास १ ३३४ अ ।

ज्ञानचक्षु—इन्द्रिय १ ३०६ ब ।

ज्ञानचेतना—अनुभव १ ८२ अ, उपलब्धि १ ४३५ अ, चेतना २.२६७-२६८, सम्यग्दर्शन ४.३५३ ब, ४ ३६१ ब, ४ ३७६ अ, सम्यग्दृष्टि ४.३७७ ब ।

ज्ञानदर्शनचारित्र (एकत्व)—चारित्र २ २८३ ब ।

ज्ञानदान—उपदेश १.४२५ ब, दान ४.४२३ अ-ब ।

ज्ञानदीपक—२ २७० अ ।

ज्ञानदीपिका—२.२७० अ, आशाधर १.२८१ अ, इतिहास १.३४४ अ ।

ज्ञाननंदि—नदिसंघ १ ३२३ ब ।

ज्ञाननय—२ ५१४ ब, २.५२० ब, २.५२३ ब, २ ५२६ ब, २ ५४३ अ, चेतना (क्रिया नय) २ २६६ ब ।

ज्ञानपंचमी—२.२७० अ ।

ज्ञानपंडित—३.२८१ अ ।

ज्ञानपञ्चोसी व्रत—२.२७० अ ।

ज्ञानपर्याय—३.३३६ ब ।

ज्ञानप्रवाद—२ २७० अ, श्रुतज्ञान ४.६८ ब ।

ज्ञानबाल—३.२८१ अ ।

ज्ञानभूषण—२ २७० अ, नन्दिसंघ १.३२४ अ, भट्टारक १.३२४ अ, इतिहास १ ३३३ अ, १ ३३३ ब, १.३४६ अ, १ ३४७ अ ।

ज्ञानमती—२.२७० अ, तीर्थकर २.३७७ ।

ज्ञानमद—३ २५६ ब ।

ज्ञानमार्गणा—(दे० ज्ञानप्ररूपणा) ।

ज्ञानमीमांसा—दर्शन (सम्प्रदाय) २ ४०२ ब, २.४०३ अ ।

ज्ञानमूढ (साधु)—निन्दा २.५८६ अ ।

ज्ञानयोग—२.२६८ अ ।

ज्ञानविनय—विनय ३.५४८ ब, ३.५५० ब ।

ज्ञानवृद्ध—विनय ३.५५२ ब, सगति ४.११६ अ ।

ज्ञानशक्ति—२.२७० अ ।

ज्ञानशल्य—४ २६ ब ।

ज्ञानशुद्धि—४.४० ब ।

ज्ञानसंस्कार—४ १४६ ।

ज्ञानसमय—निश्चयज्ञान २.२६६ अ, समय ४ ३२८ अ ।

ज्ञानसागर—२ २७० ब, इतिहास १ ३३४ अ ।

ज्ञानसार—२ २७० ब, इतिहास १ ३४२ ब, १ ३४३ ब ।

ज्ञानसूर्योदय नाटक—इतिहास १ ३४७ अ ।

ज्ञानाकार—अनेकान्त १.१०६ ब, आत्मा (मोक्षमार्ग) ३.३३६ अ, केवलज्ञान २ १५३ ब ।

ज्ञानाचरण—मिथ्यादृष्टि ३ ३०३ ब ।

ज्ञानाचार—आचार १.२४० अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०३ ब, विनय ३ ५५० ब ।

ज्ञानातिशय—अर्हन्त १ १३७ ब ।

ज्ञानाराधना—आराधना—१ २७१ ब ।

ज्ञानार्णव—२ २७० ब, इतिहास १ ३४३ अ, टीका १ ३४६ ब, वचनिका १ ३४८ अ ।

ज्ञानावरण—२.२७० ब, २ २७२ अ, मोहनीय ३.३४२ अ, वर्गणा ३.५१७ अ । प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २.२७० ब, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ६४, ब, अनुभाग का अल्पबहुत्व १ १६६ अ, प्रदेश ३ १३६ ब । बन्ध ३ ६३, ३.६७, बन्धस्थान ३.१०६, उदय १ ३७५, उदयस्थान २.३८७ ब, उदय के निमित्त १.३६७ ब, आबाधा १ २४६ अ, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.२६४, त्रिसयोगी भग १.३६६ । संक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६८ ब ।

ज्ञानी—२.२७३ अ, आत्मानुभव १.८४ ब, कर्म (अकिंचित्कर) २.६८ अ, कर्मोदय ३ ५६० ब, चेतना (अकर्ता) २.२६८ ब, २ २६६ अ, जीव (नाम-विवक्षा) २ ३३३ अ, तप २.३६० ब, तीर्थकर २.२७३ अ, निर्जरा २.६२३ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३७ अ, विभाव ३.५६० ब, सम्यग्ज्ञान २.२६५ अ, सम्यग्दृष्टि ४ ३७५ ब, ४ ३७६ अ-ब, हिंसा ४.५३५ अ ।

ज्ञानेश्वर—२.२७३ अ, तीर्थकर २.३७७ ।

ज्ञानोद्योतन—१.४१४ अ ।

ज्ञानोपकरण—१.१२२ ब, समिति ४.३४१ अ ।

ज्ञानोपयोग—(दे० ज्ञान), अल्पबहुत्व १.१६० ।

ज्ञायक—२.२७३ अ ।

ज्ञायक नोआगम द्रव्य—अन्तर १.३ ब ।

ज्ञायक शरीर—निक्षेप ६ ५६६ अ-ब, २.६०० ब ।

ज्ञायक-शरीर-आगम—उपशम १.४३७ अ ।

ज्ञायक-शरीर-नोआगम—अनन्त १.५५ ब ।

ज्ञायक शरीर भूत-भावी — उपशम १ ४३७ अ ।

ज्ञेय—२ २७३ अ ।

ज्ञेय-ज्ञायक-संबंध—४ १२६ अ ।

ज्ञेय तत्त्व—मोक्षमार्ग ३ ३३६ ब ।

ज्ञेयाकार—अनेकान्त १ १०६ ब, केवलज्ञान २ १५३ ब,

मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

ज्ञेयाकार परिणमन—केवलज्ञान २ १५३ ब ।

ज्ञेयार्थ (परिणमन)—२ २७३ अ, परिणाम ३ ३० अ ।

ज्यामिति—२ ३४५ अ ।

ज्येष्ठ—२.३४५ अ, किन्नरदेव २ १२४ ब ।

ज्येष्ठ-जिनवर व्रत—२ ३४५ अ ।

ज्येष्ठ-स्थितिकल्प—२ ३४५ अ ।

ज्येष्ठा—२ ३४५ अ, नक्षत्र २ ५०४ ब, तीर्थंकर २ ३८१ ।

ज्योति—३ ३४५ अ ।

ज्योतिरस—३ ३६१ अ ।

ज्योतिर्ज्ञान विधि—इतिहास १.३४२ अ ।

ज्योतिषकरड—२ ३४५ ब, इतिहास १ ३४१ अ ।

ज्योतिषचारण ऋद्धि—१ ४४७, १.४५३ अ ।

ज्योतिष देव—२ ४४५ ब, निर्देश २ ३४५ ब, शक्ति आदि २ ३४५ ब, अवस्थान २ ३४६ ब । अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १ २६६ । इन्द्र—निर्देश २ ३४५ ब, देवी २ ३४६ अ, विमान २ ३५१ ब । आयुबन्ध के योग्य परिणाम १.२५७ अ, १ २५८ अ, काल २ ८७ अ, चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ ब, लेश्या ३.४२५ ब ।

ज्योतिष देव—प्ररूपणा—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब । सत् ४.१८७, सख्या ४ ६७, क्षेत्र २.१८६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १ १०, भाव २ २३१ अ, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

ज्योतिषलोक—२ ३४६ अ ।

ज्योतिष-विद्या—२ ३५१ ब ।

ज्योतिष्माण—ग्रह २.२७४ अ ।

ज्वलन—यदुवंश १ ३३७ ।

ज्वाला—तीर्थंकर प्ररूपणा २.३६२ ।

ज्वालामालिनी—विद्या ३ ५४४ अ, शीतलनाथ की यक्षिणी २ ३७६ ।

ज्वालामालिनी कल्प—२ ३५१ ब, इतिहास १.३४२ ब ।

ज्वालिनीकल्प—२.३५१ ब, इतिहास १ ३४३ ब ।

झ

झंझावात—२ ३५२ अ, वायु ३ १३४ ब ।

झरन उदय १ ३६६ ब ।

झल्लरी (मृदंग)—नरकलोक की जन्मभूमि का आकार २ ५७७ अ, वैराग्य (लोक का आकार) ३ ६०७ ब ।

झष—२ ३५२ अ । नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अंकन ३ ४४१ । नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १६८, आयु १ २६३ ।

झषक—नरक पटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अंकन ३ ४४१ । नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १ २६३ ।

झषका—नरकपटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अंकन ३ ४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १ २६३ ।

झांझ—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ ।

झारी—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी द्वारा अवधूत ३ ४६६ ब, अंकन ३ ४६८-४६९ ।

झालर—नरकलोक की जन्मभूमि का आकार २ ५७७ अ ।

झावदशमी व्रत—२ ३५२ अ ।

झूठ—श्रावक ४ ५० ब ।

ट-ण

टंक—२ ३५२ अ, वेदान्त ३ ५६५ ब ।

टंकण—२ ३५२ अ ।

टंकणद्वीप—मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

टंकोत्कीर्ण—२ ३५२ अ, केवलज्ञान २.१४६ ब ।

टडाणा गीत—इतिहास १ ३४७ अ ।

टिप्पणी—२ ३५२ अ ।

टीका—२ ३५२ अ ।

टोडरमल—२ ३५२ अ । इतिहास १.३३४ ब, १.३४८ अ ।

ठकाप्पा (कवि)—इतिहास १.३३४ ब ।

डंडा—२ ३५२ अ ।

डाँस — श्रोता ४.७४ ब ।
 डामर — पार्श्वनाथ २ ३७८ ।
 ड्योढ गुणहानि—गणित २ २३१ ब, उदय १ ३७१ अ ।
 ढड्डा—इतिहास १.३३१ अ, १ ३४३ अ ।
 ढूँढियापंथ—निन्दा २.५८८ ब, श्वेताम्बर ४ ८० ब ।
 णमोकार मंत्र २ ३५२ ब, मंत्र ३.२४७ अ ।
 णमोकार यत्र — ३.३५३ ।
 णायकुमारचरित—इतिहास १ ३४२ ब ।
 णिक्खोदिम—निक्षेप २ ६०२ ब ।
 णेमिणाहचरित—इतिहास १ ३४४ ब, १ ३४५ अ-ब ।

त

तंदुल—सिक्थ ४ १२८ अ ।
 तनुचारण ऋद्धि—१ ४४७, १.४५२ ब ।
 तत्र — मन्त्र ३.२४५ अ ।
 तंत्ररत्न—मीमांसा दर्शन ३ ३११ अ ।
 तंत्रवार्तिक — मीमांसा दर्शन ३ ३११ अ ।
 तंत्रवार्तिक टीका—मीमांसा दर्शन ३.३११ अ ।
 तंत्रसिद्धांत—२ ३५२ ब ।
 तक्षशिला—२ ३५२ ब ।
 तट—राक्षसवंश १ ३३८ अ ।
 तटछेदना—२ ३०६ ब, २ ३०७ अ ।
 तडित्प्रभ—देवकुरु का हृद—निर्देश ३ ४५६ ब, नाम-
 निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अकन
 ३ ४४४, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने ।
 तडिद—चन्द्रप्रभ, मल्लिनाथ २.३८२ ।
 तंदुल—सिक्थ ४ १२८ अ ।
 ततक—२.३५२ ब ।
 तत्—२ ३५२ ब, उपचार १.४२० ब, शब्द ४ ३ अ, सापेक्ष
 धर्म १.१०६ अ, १.१११ अ-ब, ४ ३२३ ब ।
 तत्त्व—२ ३५२ ब, अतीत नय पक्ष २ ५१८ अ, अवक्तव्य
 १.२२८ ब, अश्रद्धान (मिथ्यादृष्टि) ३ ३०० अ,
 नय पक्षातीत २.५१८ अ, परमभाव ३.१३ अ,
 मिथ्यादृष्टि ३ ३०२ ब, श्रद्धान (सम्यग्दर्शन) ४.३५६
 अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ, समयसार ४.३२६ अ ।
 तत्त्व — नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८०

अ, अकन ३ ४४१ । नारकी—अवगाहना १ १७८,
 अवधिज्ञान १.१६८, आयु १ २६३ ।
 तत्त्वकर्तृत्व—३ ३०५ ब ।
 तत्त्वज्ञानतरंगिनी—२ ३५६ अ, इतिहास १.३४६ अ ।
 तत्त्वज्ञानी २ २७३ अ ।
 तत्त्वचित्तन — शुभोपयोग १ ४३४ ब ।
 तत्त्वत्रयप्रकाशिका — २ ३५६ अ, इतिहास १ ३४६ ब ।
 तत्त्वदीपिका—२ ३५६ अ, इतिहास १ ३४३ ब ।
 तत्त्वनिर्णय—२ ३५६ अ, इतिहास १ ३४६ ब ।
 तत्त्वप्रकाशिका—२ ३५६ अ, इतिहास १ ३४१ अ ।
 तत्त्वप्रदीपिका २ ३५६ अ, अमृतचन्द्र १ १३३ अ,
 इतिहास १ ३४२ ।
 तत्त्ववती धारणा — २ ३५६ अ, पिण्डस्थ-ठ्यान ३ ५८ अ ।
 तत्त्वविचार—मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ अ ।
 तत्त्ववैशारदी—३ ३८४ अ ।
 तत्त्वशक्ति — २ ३५६ ब ।
 तत्त्वश्रद्धान—अनुभव १.८२ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०२ ब,
 ३ ३०५ अ, सम्यग्दर्शन ३ ३३६ ब, ४.३५४ अ,
 ४ ३५६ अ-ब, ४ ३५७ ब, साधु ४.४०६ ब ।
 तत्त्वसंतति—१ ८२ ब ।
 तत्त्वसमास—४.३६८ ब ।
 तत्त्वसमीक्षा—३ ५६५ ब ।
 तत्त्वसार—२ ३५६ ब, इतिहास १ ३४२ ब ।
 तत्त्वातीत—१ ८२ ब ।
 तत्त्वानुशासन — २ ३५६ ब, इतिहास १.३४० ब,
 १ ३४३ ब ।
 तत्त्वार्थ—२.३५३ ब ।
 तत्त्वार्थबोध—२.३५६ ब, इतिहास १.३४८ अ ।
 तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—इतिहास १.३४६ अ ।
 तत्त्वार्थराजवार्तिक—अकलंक १.३१ अ ।
 तत्त्वार्थवृत्ति—इतिहास १ ३४२ ब, १ ३४६ ब ।
 तत्त्वार्थश्रद्धान—अनुभाव १ ८२ ब, मिथ्यादृष्टि ३.३०२
 ब, ३ ३०५ अ, सम्यग्दर्शन ४.३४६ ब, ४.३५४ अ,
 ४ ३५६ अ-ब, ४ ३५७ ब, साधु ४.४०६ ब ।
 तत्त्वार्थसार—२.३५६ ब; अमृतचन्द्र १ १३३ अ, इतिहास
 १ ३४२ अ ।
 तत्त्वार्थसार दीपक—२.३५६ ब, इतिहास १ ३४५ ब ।
 तत्त्वार्थसूत्र—२ ३५६ ब, इतिहास १ ३४० ब ।
 तत्त्वार्थसूत्र लघु—इतिहास १.३४१ ब ।
 तत्त्वार्थसूत्रटीका—अभयनन्दि १ १२७ अ, इतिहास
 १ ३३३ ब ।

तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—इतिहास १.३३२ ब, १.३४४ अ,
१.३४५ अ ।

तत्त्वार्थसूत्र वृत्तिपद—इतिहास १.३४२ ब ।

तत्त्वार्थाधिगम भाष्य—इतिहास १.३४० ब, टीका
१.३२६ ब ।

तत्त्वोपलब्धि—आत्मानुभव १ ८२ ब ।

तत्परिणत-नोआगमभाव मंगल—२ ६०६ अ ।

तत्प्रतियोगी—प्रत्यभिज्ञान ३.१२५ अ ।

तत्प्रदोष—२ ३५७ अ ।

तत्प्रमाण—प्रमाण ३ १४४ ब ।

तत्सेवी—आलोचना १.२७८ अ ।

तथाकार—समाचार ४ ३३६ ब ।

तथाविधत्व—२ ३५७ अ ।

तदभाव—१.१२८ ब ।

तदाहुतादान—२.३५७ अ, अस्तेय १.२१३ ब ।

तदिद्विधालोचन—ब्रह्मचर्य ३.१८६ अ ।

तदुभय उपक्रम—१ ४१६ ब ।

तदुभय प्रत्ययिक अजीवबन्ध—३ १७२ अ ।

तदुभय प्रत्ययिक जीवबन्ध—३.१७२ अ ।

तदुभय प्रतिक्रमण—३.११६ ब ।

तदुभय प्रायश्चित्त—३.११७ अ, ३.१६० ब ।

तदुभय वक्तव्यता—३.४६६ अ ।

तदुभयसारी ऋद्धि—१.४४८, १.४४९ ब ।

तदुभयाधिकरण—१.४६ अ ।

तद्भव भरण—३ २८० अ ।

तद्भवस्थ केवली—२.१५७ अ ।

तद्भाव—सामान्य ४ ४१२ ब ।

तद्भाव तदुपचार—१.४२० ब ।

तद्विलक्षण—प्रत्यभिज्ञान ३ १२४ ब ।

तद्व्यतिरिक्त आगम उपशम १ ४३७ अ ।

तद्व्यतिरिक्त नोआगम—अनन्त १ ५५ ब, विक्षेप २.५६६
ब ।

तद्व्यतिरिक्त नोआगम द्रव्य—अन्तर १.३ ब, कषाय
२ ३५ ब, काल २.८१ ब, दोष २.४६३ अ, निक्षेप
२.६०० ब, बन्धक ३ १७६ अ, संयम ३.४१४ ब,
सल्लेखना ३ ७६ अ ।

तनक—२ ३५७ अ । नरकपटल—निर्देश २ ५७६ ब,
विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३ ४४१ । नारकी—
अवगाहना १ १७८; अवधिज्ञान १.१६८; आयु
१.२६३ ।

तनुवात—३ ५३२ अ, ३.४४० अ, अंकन ३.४३६ ।

तत्तुचारण ऋद्धि—१.४४७; १.४५२ ब ।

तप—२.३५७ अ अनशन १.६५ अ, कुलकर ४.२५ अ,
क्षुल्लक २ २८६ अ, चारित्र २.२८६ अ, ध्याता
२.४६३ अ, निर्जरा २ ६२३ अ, प्रायश्चित्त ३ १६१ अ,
मिथ्यादृष्टि ३ ३०३ ब, शुभोपयोग १ ४३३ अ, संवर
२ ३६२ अ, सम्यक्त्व २ ३६० ब ।

तप-उद्योतन—१ ४१४ अ ।

तपऋद्धि—१.४४७, १ ४५३ ब ।

तपकर्म—निर्देश २.२६ अ-ब; सत् ४ २६६ अ, संख्या
४.११६ ब, क्षेत्र २.२०८, भाव ३ २२३ ।

तपकल्याणक—२ ३२ अ, आहारक शरीर १ २६६ ब ।
कृतिकर्म २ १३६ अ ।

तपकल्याणक बन्दना—कृतिकर्म २ १३६ अ ।

तपगुरु—नमस्कार २ ५०५ ब ।

तपन—२ ३६४ अ, इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ । नरक पटल—
निर्देश २ ५७६ ब, विस्तार २ ५७६ ब, अंकन ३.४४१,
नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १६८,
आयु १ २६३ ।

तपन (कूट)—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ,
विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६८ । विद्युत्प्रभ गजदन्त
का कूट—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन
३ ४४४, ३ ४५७ ।

तपनतापि—२ ३६४ अ, आकाशोपपन्न देव २ ४४५ ब ।

तपनीय—२ ३६४ अ, सौधर्म स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१६,
विस्तार ४ ५१६, अंकन ४ ५१६ ब । देव-आयु
१ २६६ ।

तपनीय (कूट)—मानुषोत्तर पर्वत का—निर्देश ३.४७५ अ,
विस्तार ३ ४८६ अंकन ३.४६४ ।

तपनीयमयी—सुमेरु की परिधि ३ ४४६ ब ।

तपप्रायश्चित्त—२.३६४ अ ।

तपभावना—३ २२४ ब ।

तपमद—३.२५६ ब ।

तपविद्या—३ ५४४ अ ।

तपविनय—३ ५४८ ब ।

तपशुद्धि—४ ४० ब ।

तपस्वी—२ ३६४ अ ।

तपागच्छ—श्वेताम्बर ४ ७७ ब ।

तपश्चरण—मिथ्यादृष्टि ३.३०३ ब ।

तपाचार—१ २४० ब ।

तपाराधना—१.२७१ ब ।

तपित—२ ३६४ अ, नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब,

विस्तार २५७६ ब, अंकन ३.४४१। नारकी—
अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१६५, आयु
१.२६३।

तपोद्योत—१.४१४ अ।

तपोनिधिव्रत—२.३६४ अ।

तपोवृद्ध—संगति ४.११६ अ।

तपोशुद्धिव्रत—२.३६४ ब।

तप्त—२.३६४ ब, नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार
२.५७६ ब, अंकन ३.४३६, ३.४४१। नारकी—
अवगाहना १.१७८; अवधिज्ञान १.१६८, आयु
१.२६३। वैदिकाभिमत नरक ३.४३३।

तप्त-ऋद्धि—१.४४७; १.४५४ ब।

तप्तजला—२.३६४ ब, विभंगा नदी—निर्देश ३.४६० अ,
नामनिर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३.४८६, ३.४६०,
अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने।

तप्त प्रभा—२.३६४ ब। नरक पृथिवी—निर्देश २.५७६
अ, विस्तार २.५७६, २.५७८, अंकन ३.४४१, पटलो
के नाम २.५८० अ, नारकी—अवगाहना १.१७८,
अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६३। वैदिकाभिमत
नरक 'तप्त' ३.४३३।

तप्तःप्रभा (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१००, बन्धस्थान ३.११३,
उदय १.३७६, उदयस्थान १.३६२ ब; उदीरणा
१.४११ अ, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४.२६८,
४.३०५, त्रिसयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४.१७०
सख्या ४.६५, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४.४७६, काल
२.१०१, अन्तर १.८, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व
१.१४४।

तप्त—२.३६४ ब। नरकपटल—निर्देश २.५८० अ,
विस्तार २.५८० अ, अंकन ३.४४१। नारकी—
अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१६८; अंकन
३.४४१। वैदिकाभिमत नरक ३.४३३।

तप्तक—२.३६४ ब। नरकपटल—निर्देश २.५८० अ,
विस्तार २.५८० अ, अंकन ३.४४१। नारकी—अव-
गाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६३।

तप्तका—२.३६५ अ। नरकपटल—निर्देश २.५८० अ,
विस्तार २.५८० अ, अंकन ३.४४१। नारकी—अव-
गाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६३।

तप्तकी—नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८०
अ, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८,
अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६३।

तप्तता—२.३६५ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

तमालपत्र—कर्मसंयोग २.७१ ब।

तमिल वेद—२.३६५ ब।

तमिस्र—२.३६५ अ। नरकपटल—निर्देश २.५८० अ,
विस्तार २.५८० अ, अंकन ३.४४१।

तमिस्रा—२.३६५ अ, चक्रवर्ती द्वारा गुफा का भंग
४.१५ ब।

तमो—२.३६५ अ। नरकपटल—निर्देश २.५८० अ,
विस्तार २.५८० अ, अंकन ३.४४१। नारकी—
अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु
१.२६३।

तमोरदशमी व्रत—२.३६५ अ।

तरक—नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६
ब, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८,
अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६३।

तरुण—वृद्ध ३.५८१ अ।

तरुणसंसर्ग—संगति ४.११८ ब।

तरेप्पन—श्रावक की क्रियाये ४.५१ ब।

तरेप्पन क्रिया व्रत—२.४०१ अ।

तरेसठ—श्लाकापुरुष ४.६ ब।

तरेसठ श्लाकापुरुष चरित्र—२.४०१ अ।

तर्क—२.३६५ अ, अनुभव (प्रामाण्य) १.८२ ब, अविना-
भाव १.२०२ ब, आगम (प्रामाण्य) १.२३६ अ, ऊहा
१.४४५ ब, न्याय २.६३३ अ-ब, पद्धति (अभिप्राय)
३.६ ब, मतिज्ञान ३.२५४ ब, स्वभाव ४.५०७ अ।

तर्ककौमुदी—३.६०८ अ।

तर्कविरुद्ध—आगम (अप्रामाण्य) १.२३६ ब।

तर्कसंगति—आगम (प्रामाण्य) १.२३६ अ।

तर्कसंग्रह—वैशेषिक दर्शन ३.६०८ अ।

तर्कालीत—अनुभव १.८१ ब, आगम १.२३७ ब।

तर्कामृत—वैशेषिक दर्शन ३.६०८ अ।

तर्जित—२.३६५ ब। व्युत्सर्ग का द्वेष ३.६२३ अ।

तलवर—२.३६५ ब। सम्यग्दृष्टि (तस्कर) ४.३७८ ब।

तस्कर—सम्यग्दृष्टि ४.३७८ ब।

तात्पर्यवृत्ति—२.३६५ ब, अभयनन्दि १.१२७ अ, इतिहास
१.३४४ अ।

तादात्म्य संबंध—२.३६५ ब, समवाय ४.३३४ अ।

ताप—२.३६५ ब, सुख (तृष्णादुःख) ४.४३० अ।

तापन—२.३६५ ब। नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब,
विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३.४४१। नारकी—
अवगाहना १.१७८; अवधिज्ञान १.१६८ आयु
१.२६३।

तापस—२.३६५ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ, विनयवादी
एकान्ती १.४६५ ब।

तापी—२.३६५ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।

तामस दान—२.४२३ अ।

तामिल वेद—२.३६५ ब।

ताम्रलिप्ति—२.३६५ ब।

ताम्रा—२.३६५ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

तार—२.३६५ ब। नरकपटल—निर्देश २.५८० अ,
विस्तार २.५८० अ, अकन ३.४४१। नारकी—
अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु
१.२६३।

तारक—२.२६६ अ, पिशाच व्यन्तर देव ३.५८ ब, प्रति-
नारायण ४.२० अ, वासुपूज्यनाथ २.३६१।

तारणस्वामी—इतिहास १.३३३ अ।

तारा—चक्रवर्ती ४.११ ब, व्यन्तरेन्द्र वल्लभिका ३.६११
ब। नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार
२.५८० अ, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना
१.१७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६३।

तारा (ज्योतिष देव)—देव—अवगाहना १.१८०, अवधि-
ज्ञान १.१६८, आयु १.२६६। इन्द्र—निर्देश २.३४६
ब, किरणे तथा शक्ति आदि २.३४८। प्ररूपणा—
बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८,
उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा
स्थान १.४१२ सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८,
४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१८८,
संख्या ४.६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल
२.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व
१.१४५।

तारा (ज्योतिषविमान)—२.३६६ अ, निर्देश २.३४६ ब,
विस्तार २.३५१ ब, आकार २.३४८, किरणें तथा
वाहक देव २.३४८ अ, अकन २.३४८, चित्र
२.३४८। अवस्थान २.३४७ ब, संख्या २.३४८ अ-ब,
वीथियाँ २.३४६ ब, चार क्षेत्र तथा गतिविधि
२.३४६-३.५०, अंकन २.३४६। वैदिकाभिमत सप्त
ऋषि व ध्रुव तारे ३.४३३।

तारादेवी—अकलक भट्ट १.३१ अ।

ताल—२.३६६ अ।

तालप्रलंब—२.३६६ अ, अचेलकत्व १.३६ ब।

तालाब—स्वप्न ४.५०५ अ।

तिर्गिछ—२.३६६ अ। निषधपर्वत का हृद—निर्देश

३.४४६ ब, ३.४६३ ब, विस्तार ३.४६०, ३.४६१,
अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६१।

तिसिणदा—२.३६६ अ, अतिचार १.४३ ब।

तिथि—चन्द्रमा २.३५१ अ।

तिर्मिगिल—संमूर्च्छिम ४.१२७ ब।

तिर्मिगुह्य (कूट)—विजयार्ध पर्वतों पर स्थिति—निर्देश
३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अकन
३.४४४, वर्ण ३.४७७।

तिर्मि (गुफा)—२.३६६ अ। विजयार्धपर्वत की गुफा—
भरत ऐरावत में—निर्देश ३.४४८ अ, ३.४५५ अ-ब,
विस्तार ३.४८२, अकन ३.४४८। विदेह क्षेत्रों में
निर्देश ३.४६० अ, विस्तार ३.४८२, अकन ३.४६०
अ। धातुक व पुष्करार्धद्वीपों में—निर्देश ३.४६२ ब,
विस्तार ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४६४ के सामने।

तिर्मि (नरक)—नरकपटल—निर्देश २.५८० अ,
विस्तार २.५८० अ, अकन ३.४४१। नारकी—
अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु
१.२६३।

तिर्मि (नरक)—नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार
२.५८० अ, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना
१.१७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६३।

तिरस्कारिणी—२.३६६ अ, विद्या ३.५४४ अ।

तिरुत्तकतेवर—२.३६६ अ, इतिहास १.३२६ अ,
१.३४१ ब।

तिरोधान—कर्मोदय २.७१ ब।

तिर्यंचगति (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०१, आयुबन्ध १.२६५
ब, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान
१.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान
१.४१२, सत्त्व ४.२८१, उद्वेलना युवत में सत्त्व
४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी
भग १.४०६ ब। सत् ४.१७०, संख्या ४.६५, क्षेत्र
२.१६८, स्पर्शन ४.७६, काल २.१०१, अन्तर १.८,
भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४।

तिर्यंचगति नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८,
२.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश
३.१३६। बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.११०, उदय
१.३७६, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ,
उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, उद्वेलना युक्त
में सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भग
१.४०४। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६६।

तिर्यंच (जीव)—२.३६७ अ, अवगाहना १.१७६, अवधि-
ज्ञान १.१६४ ब, आयु १.२६३, आयुबन्ध के योग्य

परिणाम १.२५५ अ, कषाय २.३८ ब, गति-अगति २.३१६ अ, २.३२२ अ, जीव २.३३३ ब, दु.ख २.४३५ अ, देवगति में जन्म २.३१६ अ, लेश्या ३.४२६ अ, वैक्रियिक शरीर ३.६०३ अ।

तिर्यच (पंचेन्द्रिय)—दे० पंचेन्द्रिय।

तिर्यचलोक—२.३७० अ।

तिर्यचलोक सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३।

तिर्यचायु कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, १.२५३, स्थिति ४.४६२, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३७। बन्ध ३.६७, १.१६५ ब, बन्धस्थान ३.१०८, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, उद्वेलनायुक्त मे सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४। सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६६।

तिर्यचिनी—योनिमति तिर्यच २.३६७, ३.३८८ अ, वेद ३.५८५ ब। प्ररूपणा—बध ३.१०१, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१७०, सख्या ४.६५, क्षेत्र २.१६८, स्पर्शन ४.४७६, काल २.१०१, अन्तर १.८, भाव ३.२२०, अ, अल्पबहुत्व १.१४४।

तिर्यक्—३.६६ ब।

तिर्यक् आयत चतुरस्र—२.३७१ अ।

तिर्यक् गच्छ—२.३७१ अ, गणित २.२३२ अ।

तिर्यक् चतुष्टय—१.३७४ ब।

तिर्यक् द्विक—१.३७४ ब।

तिर्यक् प्रचय—२.१७२ अ।

तिर्यक् प्रतर—२.३७१ अ।

तिर्यक् लोक—२.३७० अ।

तिर्यक् लोकसिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३।

तिर्यक् सामान्य—अभेद १.१३१ अ, क्रम २.१७२ अ-ब, सामान्य ४.४१२ अ।

तिर्यक् सूर्यतप—कायक्लेण २.४७ अ।

तिर्यगा—निन्दनीय साधु २.५८६ अ।

तिर्यगेकादश—१.३७४ ब।

तिर्यगति—(दे० ऊपर तिर्यचगति तथा तिर्यचगति नाम-कर्म)।

तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी—आनुपूर्वी १.२४७ अ, नामकर्म २.५८३ ब।

तिर्यगित्रिक—१.३७४ ब।

तिर्यग्योनि—निन्दनीय साधु २.५८६ अ।

तिर्यग्वणिज्या—अनर्थदण्ड १.६३ ब।

तिल—२.३७१ अ, ग्रह २.२७४ अ।

तिलक—२.३७१ अ, कुन्धुनाथ २.३८३, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

तिलका—विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

तिलपुच्छ—२.३७१ अ, ग्रह २.२७४ अ।

तिल्लोपपणत्ति—२.३७१ अ, इतिहास १.३४० ब।

तीन—२.३७१ अ, अग्नि १.३५ अ, करण २.६ ब, काल २.१४६ ब, गुप्ति २.२४८ ब, नति २.१३३ ब, योग ३.३७५ अ, रत्नत्रय ३.३३५ ब, लिग ३.४१६ ब, लोक ३.४४० ब, ३.५७ ब, वर्ग २.४०० ब, विशुद्धि (सम्यग्दर्शन) ४.३६३ अ, वेद ३.५८३ ब, शुद्धि ४.३६ अ-ब। सहनानी—सिद्ध जीवराशि २.२१६ अ।

तीन-चौबीसी व्रत—२.३७१ अ।

तीन सौ तेतालीस—रज्जूधन की सहनानी २.२१६ ब।

तीर्थकर्ण—२.३७१ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।

तीर्थकर—२.३७१ ब, अग्नि १.३५ ब, अभिषेक ३.४५० ब, अल्पबहुत्व १.१५३, अवधिज्ञान १.१६४ अ, आहारक ४.२७५ ब, उच्चगोत्र ३.५२१ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ, चारित्र २.२६१ अ, जन्मक्रिया (कृतिकर्म) २.१३८ ब, तप २.३६१ ब, निगोद ३.५०५ ब, पिटारे (सुधर्मा सभा) ४.४४५ ब, भरत चक्रवर्ती २.२६१ अ, माता (स्वप्न) ४.५०४ अ, मोक्ष ३.३२८ ब, रत्न-वृष्टि २.३२ ब, विदेह ४.३३१ ब, श्रेणिप्रवेश सख्या ४.६४ अ, सत्त्व ४.२७५ ब, स्त्री ३.५६० अ।

तीर्थकर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३, उच्चगोत्र ३.५२१ ब, स्थिति ४.४५६ अ, ४.४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६, बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.१११, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३६४ ब, उदयस्थान १.३६०, १.३६६, १.३६७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४। अल्पबहुत्व १.१५३, १.१६८।

तीर्थकर बेला व्रत—२.३६३ अ।

तीर्थकर भवित—इतिहास १.३४० ब।

तीर्थकर व्रत—२.३६३ अ।

तीर्थ—२.३६३ अ, महावीर १.२ ब, १.७१ ब।

तीर्थकाल—मोक्ष ३.३२७ अ।

तीर्थदर्शन—सम्यग्दर्शन ४.३६४ ब।

तीर्थयात्रा—श्रावक ४.५२ अ।

तीर्थविहार—उपकार १.४१६ अ।

तीर्थव्युच्छेद—आगम १ २२६ ब ।

तीर्थस्नान—शौच ४४३ अ, स्नान ४४७१ ब ।

तीव्र—२ ३६३ ब, कषाय २ ३६ अ, २ ३६ अ, परिणाम (उदीरणा) १.४१० अ, ३ ३२ अ ।

तीसरी भूमिका—अमृतकुम्भ (चेतना) २ २८६ अ, चारित्र २ २८८ ब, चेतना २ २८६ अ, धर्म २ ४६८ ब ।

तीसिय—२ ३६३ ब ।

तुंगवरक—मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

तुबर—२ ३६३ ब, गन्धर्वदेव २.२११ अ, श्रेयासनाथ २ ३८३ ।

तुबुरव—२ ३६३ ब, गन्धर्वदेव २ २११ अ, सुमतिनाथ का यक्ष २.३७६ ।

तुबुलूर—२.३६३ ब ।

तुबूलाचार्य—इतिहास १.३४७ ब ।

तुच्छाभाव—अनुभव १ ८२ अ ।

तुषटीका—मीमांसा दर्शन ३ ३११ अ ।

तुष्क—२ ३६३ ब ।

तुर्किस्तान—उत्तरकुरु १ ३५६ अ ।

तुलसीदास—२ ३६३ ब ।

तुला—२ ३६३ ब, तौल का प्रमाण २ २१५ अ ।

तुलिंग—२ ३६३ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ ।

तुल्य—२ ३६३ ब ।

तुल्यबल-विरोध—विरोध ३ ५६५ अ ।

तुषित—२.३६३ ब, लौकान्तिक ३.४६३ ब ।

तूर्यंग—२.३६३ ब, कलवृक्ष ३.५७८ अ ।

तूष्णीक—२ ३६३ ब, कारण ३ ५८ ब ।

तूणफल—२ ३६४ अ ।

तूणमय आसन—कृतिकर्म २.१३५ ब ।

तूणसंस्तर—४ १५३ ब ।

तूणस्पर्श—२ ३६४ अ, परिषह ३.३३ ब, ३ ३४ अ ।

तृतीय गुण—गुणांश २ २४१ अ ।

तृतीय भूमिका—अमृतकुम्भ २ २८६ अ, उपयोग १ ४३४ अ, चारित्र २.२८८ ब, चेतना २ २८६ अ, धर्म २.४६८ ब ।

तृतीयमूल—गणित २.२२३ अ ।

तृषा-- क्षुधा २.१८७ ब, परिषह ३.३३ ब, ३.३४ अ, पिपासा ३.५८ ब ।

तूष्णा—ताप ४४३० अ, परिषह ३.२६ अ, ३ २६ ब, राग ३ ३६५ अ-ब, ३ ३६८ अ, शरीर ४.८ अ, सुख (ताप) ४.४३० अ ।

तूष्णा-वशीकरण—राग ३.३६८ अ ।

तदु—श्रेयासनाथ २ ३८३ ।

तेईस—वर्गणा ३ ५१३ अ ।

तेईस वर्गणा—निर्देश ३ ५१३ अ, अल्पबहुत्व १ १५५ ।

तेईस सिंह—स्वप्न ४ ५०५ अ ।

तेज—२ ३६४ अ, जीव २ ३३३ ब, तैजस २ ३६४ ब । लोक मे अवस्थान २ ४५ ब, २ ४६ अ, वनस्पति ३ ५०५ ब, वैक्रियिक ३ ६०२ ब ।

तेजकायिक—अग्नि १ ३५, १ ३६ ब, अवगाहना १ १७६, आयु १ २६४, काय २ ४४, जीवसमास २ ३४३, वनस्पति ३ ५०५ ब, वैक्रियिक शरीर ३ ६०२ ब, स्थावर ४ ४५३ । प्ररूपणा—बन्ध ३ १०४, बन्ध-स्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदय की विशेषता १ ३७३ ब, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ ३००, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब । सत् ४ २०३, सख्या ४ १०१, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४ ४८३, काल २.१०६, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

तेजपाल (कवि)—इतिहास १ ३३३ अ, १ ३४६ अ ।

तेजसेन—यदुवश १ ३३७ ।

तेजस्वी—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ ।

तेजांग—कल्पवृक्ष ३ ५७८ अ ।

तेजोहराशि—ओज १ ४६६ ब, गणधर २ २१३ अ ।

तेतीस—त्रायस्त्रिंश देव २ ३६६ ब, सागर (आयु) १ २६३, १ २६६ ।

तेरह—क्रिया (साधु) ४ ४०४ ब, चारित्र के अग २ २८२ अ । ससारी जीवराशि की सहनानो २.२१६ अ ।

तेरहपथ—श्वेताम्बर ४ ८० ब ।

तेला व्रत—२.३६४ अ ।

तैजस-द्रव्य-वर्गणा—३ ५१३ अ, ३ ५१५ ब, ३ ५१६ अ ।

तैजस-शरीर—२ ३६४ अ, प्रदेशो का अल्पबहुत्व १ २५७ ।

तैजस-शरीर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ६७, प्रदेश ३ १३६, प्रदेशो का अल्पबहुत्व १ १६३ । बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भग १.४०४ । सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १.१४८, १ १६८ ।

तैजस-शरीर-बंध—औदारिक तैजस, वैक्रियिक तैजस, आहारक तैजस, तैजस तैजस, तैजस कार्मण ३ १७० ब ।

तैजस समुद्धात—२ ३६५ ब, ४.३४३, क्षेत्र २ १६७-
२०७, परिहारविशुद्धि ३ ३७ अ, सत्त्व ४ ३४३,
स्पर्शन ४ ४७७-४६४।

तैलिल—२ ३६६ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

तैरश्चिक—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

तैलमर्दन—अपवाद मार्ग १ १२१ ब।

तैला—२ ३६६ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

तैलपदेव—२ ३६६ ब।

तोता—शुक्रेन्द्र का यान ४ ५११ ब, श्रोता ४ ४५२ ब।

तोयधरा—२ ३६६ ब, सुमेरु के वनो की दिक्कुमारी—
निर्देश ३ ४७३ ब, अकन ३ ४५१।

तोय—राक्षसवश १ ३३८ अ।

तोरण—२ ३६६ ब।

तोरणद्वार—समवसरण ४ ३३० ब।

तोरणाचार्य—२ ३६६ ब।

तोरमाण—२ ३६६ ब, हूनवश १ ३११ ब, १ ३१५ अ।

तोलामुलितेवर—इतिहास १ ३२६ अ।

तौल—द्रव्यप्रमाण २ २१५ अ।

त्यक्त—आहार का दोष १ २६२ अ।

त्यक्तज्ञायक शरीर—२ ५६६ अ, उपशम १ ४३७ अ।

त्यक्तदोष—आहार १ २६२ अ।

त्यक्तशरीर २ ६०० अ।

त्यक्तावास—अस्तेय १ २१४ अ।

त्याग—२ ३६६ ब, अतीत-त्याग ३.३०५ ब, अपवाद
मार्ग (एकदेश-त्याग) १ १२० ब, उत्सर्ग मार्ग (पूर्ण
त्याग) १ १२० ब, आहारान्तराय १ २८-२९, चारित्र
२ ३८३ अ, दान २ ४२२ ब, परिग्रह-परिमाण
३ ६२८ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब, वासुपुज्यनाथ
आदि तीर्थंकर २ ३८६। व्युत्सर्ग ३ ६२४ ब।

त्यागधर्म—२ ३६७ अ, व्युत्सर्ग तप ३.६२४ अ, शौच
४ ४३ अ।

त्रयात्मक द्रव्य—उत्पाद-व्यय-धौव्य १.३६१ ब।

त्रयोदश चारित्र के अग २ २८२ अ, साधु की क्रियाएँ
४ ४०४ ब। ससारी जीवराशि की सहनानी
२ २१६ अ।

त्रयोविंशति वर्गणा ३ ५१३ अ।

त्रसकाय—२ ३६८ अ, अवगाहना १ १७६, काय २ ४४,
जीव २ ३३३ ब, जीवसमास २.३४३, प्राण ३.१५३
अ, स्थावर (अग्निवायु) ४.४५४ ब। प्ररूपणा—
बन्ध ३ १०४, बन्धस्थान ३.११३, उदय १ ३७६,
उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व

४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २६६, ४.३०५, त्रिसंयोगी
भंग १ ४०६ ब। सत् ४ २१०, सख्या ४ ६६, क्षेत्र
२ २०१, स्पर्शन ४ ४८४, काल २ १०६, अन्तर १ १२,
भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

त्रसचतुष्क—१ ३७४ ब।

त्रसत्त्व—स्थावर ४ ४५४ ब।

त्रसदशक—१ ३७४ ब।

त्रसनामकर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३,
स्थिति ४ ४६६, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३ १३६।
बन्ध ३ ६७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदय-
स्थान १.३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान
१ ४१२ ब, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३ त्रिस-
योगी भग १ ४०४। सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व
१.१६८।

त्रसनाडी—२ ३६६ ब।

त्रसरेणु (त्रदरेणु)—२ ३६१ ब, क्षेत्रप्रमाण २ २१५ अ।

त्रसलोक—२ ३६६ अ।

त्रसित—२ ३६६ ब। नरकपटल—निर्देश २ ५७८ ब,
विस्तार २ ५७६ ब, अकन ३ ४४१। नारकी—
अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु
१.२६३।

त्रस्त २ ३६६ ब, ग्रह २ २७४ अ। नरकपटल—निर्देश
२ ५७८ ब, विस्तार २ ५७६ ब, अकन ३ ४४१।
नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१६८,
आयु १ २६३।

त्रायस्त्रिंश—२ ३६६ ब, भवनवासी—भावन लोक मे
३.२०६ अ, जम्बू शाल्मली-वृक्ष स्थल ३ ४५८,
३.४५६, पद्म आदि ह्रदो मे ३ ४५३-४५४, श्री आदि
देवियों के परिवार मे ३ ६१२ अ, आयु १ २६५,
वैमानिक—स्वर्गों मे ४.५१२, सुमेरु पर्वत की पुष्क-
रिणियों मे ३ ४५०-४५१, आयु १ २६६। इनकी
देवियाँ ४ ५१२, आयु १ २७०।

त्रायस्त्रिंश—बौद्धाभिमत स्वर्ग ३.४३५।

त्रि—२ ३७१ अ, अग्नि १.३५ अ, वरण २ ६ ब, काल
२ १४८ ब, गुप्ति २ २४८ ब, नति २ १३३ ब, योग
३ ३७५ ब, रत्नमय ३.३३३ अ, लिग ३.४१६ ब,
लोक ३ ४४० ब, ३ ५७ ब, कर्म २ ४०० ब, विशुद्धि
(सम्यग्दर्शन) ४ ३६३ अ, वेद ३.५८३ ब, शुद्धि
४.३६ अ-ब। सहनानी—सिद्ध जीवराशि २ २१६ अ,
अपर्याप्त जीवराशि २ २१६ अ।

त्रिकच्छेद—२.४०० अ, गणित २ २२५ अ।

त्रिकरण—२४०० अ, २.६ व, दर्शनमोहक्षपण २.१७६ अ।

त्रिकालिग—२४०० अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

त्रिकाल—२४०० अ।

त्रिकालज्ञता—२४०० अ, अवधिज्ञान १ १६७, केवलज्ञान २ १४८ ब, २ १४९ ब, २ १५१ ब, मनःपर्ययज्ञान ३ २६३ अ, श्रुतज्ञान ४.६० ब।

त्रिकाल वंदना—३ ४६५ अ।

त्रिकाल सामायिक—४ ४१७ ब।

त्रिकाली पर्याय—२.४५४ अ, २ ४५५ अ।

त्रिकूट—मनुष्यलोक ३ २७५ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ। विदेह वक्षार—निर्देश ३ ४६० अ, नाम-निर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने। पर्वत का कूट तथा देव ३ ४७२ ब।

त्रिकृति—२४०० अ, कर्म २ २६ अ, कृतिकर्म २ १३३ ब, वदना ३ ४६५ अ।

त्रिकोणरचना—उदय १ ३६६, १ ३७१ अ, स्थिति ४ ४५८ अ।

त्रिखंड—२४०० अ।

त्रिखंडाधिपति—३ ४०० ब।

त्रिगर्त—२.४०० अ। मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

त्रिगुणसार व्रत—२.४०० अ।

त्रिगुप्ति—अनन्तनाथ २ ३७८, गुप्ति २ २४८ अ।

त्रिगुप्तिगुप्त—२.२४८ अ।

त्रिचारित्रसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३।

त्रिचूड विद्याधरवश १.३३६ अ।

त्रिजट—राक्षसवश १.३३८ अ।

त्रिज्ञानसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५४।

त्रिज्या—२४०० अ।

त्रिदशजय—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ।

त्रिधाकरण—मिथ्यात्व १ ४३८ ब।

त्रिपंचाशत—श्रावक की त्रेपन क्रियाएँ ४ ५१ ब।

त्रिपर्वा—२४०० अ। विद्या ३ ५४४ अ।

त्रिपातिनी—२.४०० अ, विद्या ३.५४४ अ।

त्रिपुर—२४०० अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

त्रिपृष्ठ—२.४०० अ, नारायण ४.१८ अ, शलाकापुरुष ४ २६ अ, श्रेयांसनाथ २ ३६१।

त्रिप्रदक्षिणा—कर्म २.२६ अ।

त्रिवार सामायिक—४ ४१८ अ।

त्रिभंगीसार—२.४०० अ, इतिहास १.३४५ अ।

त्रिभुवनकीर्ति—काष्ठासंघ १.३२७ अ, नंदिसंघ १.३२४ अ।

त्रिभुवनचंद्र—काष्ठासंघ १ ३२७ अ।

त्रिभुवनचूडामणि—२४०० अ, देवकुरु व उत्तरकुरु के चैत्यालय—निर्देश ३ ४५८ अ, अकन ३ ४५७।

त्रिभुवनस्वयंभू—इतिहास १ ३३० अ।

त्रिमुख—२४०० अ, सभवननाथ का यक्ष २ ३७६।

त्रिलक्षण कदर्थन—२४०० अ। इतिहास १ ३४१ अ।

त्रिलक्षणत्व—उत्पादादि १ ३६१ ब, परिणाम ३.३२ ब, सापेक्षधर्म १ १०६ अ।

त्रिलोक—ओम् १.४७० अ, लोक ३ ४४० ब।

त्रिलोकगुरु—गुरु २.२५१ ब।

त्रिलोकतीज व्रत—२.४०० ब।

त्रिलोकांबिदुसार—२४०० ब।

त्रिलोकमडन—२.४०० ब।

त्रिलोकध्यात—केवलीसमुद्घात २ १६६ ब।

त्रिलोकसार—२.४०० ब, इतिहास १ ३४२ ब।

त्रिलोकसार टीका—इतिहास १ ३४२ अ।

त्रिलोकसार व्रत—२.४०० ब।

त्रिलोकीय—नेमिनाथ २.३७८।

त्रिवर्ग—२.४०० ब।

त्रिवर्गगतवाद—एकान्त १ ४६५ ब।

त्रिवर्ग महेन्द्र-मातलि जल्प—२४०० ब, इतिहास १ ३४२ ब।

त्रिवर्गवाद—२४०० ब।

त्रिवर्ण—प्रव्रज्या २ १४६ ब, वर्णव्यवस्था ३ ५२३ ब, ३ ५२४ ब।

त्रिवर्णाचार—२४०० ब, इतिहास १ ३४७ ब।

त्रिवलित—२४०१ अ, व्युत्सर्ग का दोष ३.६२३ अ।

त्रिविध—प्रतिक्रमण ३ २१६ अ।

त्रिवेदसिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३।

त्रिशिरा—२४०१ अ, कुण्डलवर पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७५ ब, अकन ३ ४६७। रुचकवर पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७६ ब, अकन ३ ४६८।

त्रिषष्ठि—शलाकापुरुष ४.६ ब।

त्रिषष्ठिशलाकापुरुष चरित्र—२४०१ अ।

त्रिषष्ठिस्मृतिशास्त्र—आशाधर १ २८१ अ, इतिहास १.३४४ ब, १ ३४५ अ।

त्रिसंयोगीस्थान प्ररूपणा—उदय १ ४००-४०८, आयु १.४०१, नामकर्म १ ४०४ मूलोत्तरप्रकृति १ ४००, मोहनीय १.४०१ ब, नामकर्म ओष १.४०५ ब, नाम-कर्म आदेश १ ४०६ ब।

त्रिस्थानी—अनुभाग १ ६१ ब।

त्रीड्रिय—२४०१ अ, अवगाहना १.१७६, आयु १२६३-२६४, इन्द्रिय १३०६, १३०७ अ, जीव—२३३३ ब, जीवसमास २३४३. प्राण ३१५३ अ, सक्लेण-विशुद्धिस्थान (अल्पबहुत्व) ११६०, त्रस २३६८।

त्रीड्रिय-जानिनामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा प्रकृति ३८८, २५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १६५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.११०. उदय १३७५, उदयस्थान १३६०, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४३०३ त्रिसयोगी भग १४०४ ब, अक्रमण—४८४ ब, अल्पबहुत्व ११६८।

त्रीड्रिय जीव—प्ररूपणा—बध ३१०३, बधस्थान ३११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १३६२ ब, उदीरणा १४११ अ, सत्त्व ४.२८२, उद्वेलनायुक्त सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४२६६, ४३०५, त्रिसयोगी भग १४०६ ब। सत् ४.१६५, सख्या ४६६, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८३, काल २.१०६, अन्तर १११, भाव ३२२० ब, अल्पबहुत्व ११४५।

त्रुटरेणु—क्षेत्रप्रमाण २.२१५ अ।

त्रुटित—२४०१ अ, कालप्रमाण २२१६ अ, २.२१७ अ।

त्रुटितांग—कालप्रमाण २२१६ अ, २२१७ अ।

त्रेपनक्रियान्नत—२४०१ अ।

त्रैकाल्ययोगी—२४०१ अ, नन्दिसंघ देशीय गण १३२४ ब, इतिहास १३३० अ।

त्रैराशिक २४०१ अ, अनुपात १७१ अ, गणित २२२८ अ।

त्रैराशिकवाद—२४०१ अ, एकान्त १४६४ ब, १४६५ अ-ब।

त्रैलिंग—२४०१ अ।

त्रैलोक्य दीपक—इतिहास १३४५ अ।

त्रैविद्यदेव—२४०१ अ, नन्दिसंघ १३२५।

त्रैविद्य विश्वेश्वर—द्रविडसंघ १३२० अ।

त्र्यंग नमस्कार—२५०१ अ।

त्वक्स्पर्श—४.४७६ अ।

त्वचा—२४०१ ब, औदारिक शरीर १४७२ अ।

त्वण्टा—चित्रा नक्षत्र २.५०४ ब।

थ

थलचर—निर्देश २३६७, अवगाहना ११७६, आयु १.२६३, इन्द्रिय १:३०६ ब, जीवसमास २३४३।

थावर प्रतिमा—२३०० ब।

थिउक्क—सक्रमण ४६१ अ।

थियानसान पर्वत—उत्तरकुव १३५६ अ।

थूकना—कायक्लेश २४७ ब।

थोस्साभिदंडक—ददना ३४६५ ब।

द

दड—२४०१ ब, क्षेत्रप्रमाण २२१५ अ, योग ३३७५ ब, रत्न (चक्रवर्ती) ४१३ अ, समय ४१३६ ब।

दड-दंडी संबंध—द्रव्य २४६० अ, सबध ४१२६ अ।

दडनायक—नन्दिसंघ १३२५।

दंडपति—२.४०१ ब।

दंडभूत सहस्रक—२.४०१ ब, विद्या ३.५४४ अ।

दडरत्न—चक्रवर्ती ४१५ ब।

दड-समुद्घात—२१६६ ब।

दडाध्यक्षण—२४०१ ब, विद्या ३.५४४ अ।

दंडासन तप—कायक्लेश तप २४७ ब।

दंत—अनगार १६२ अ।

दंतकर्म—कर्म २२६ अ, निक्षेप २५६१ ब।

दंतवाणिज्य—सावद्य ४४२१ ब।

दंशमशक-परिषह—२४०१ ब, परिषह ३३३ ब, ३३४ अ।

दंसण-कहरयण-करंडु—इतिहास १३४३ ब।

दक—लवणसागर का पर्वत—निर्देश ३४६२ अ, नाम-निर्देश ३४७४ ब, विस्तार ३.४७६, वर्ण ३.४७८, अंकन ३४६१।

दकवास—लवणसागर का पर्वत—निर्देश ३.४६२ अ, नाम-निर्देश ३४७४ ब, विस्तार ३.४७६, वर्ण ३.४७८, अंकन ३४६१।

दक्ष—२४०२ अ, हरिवंश १३३६ ब, १३४० अ।

दक्षिण—अग्नि १३५ ब, अयन २६१ ब, २.३५१। इन्द्र (दे० इन्द्र)।

दक्षिणकल्प—स्वर्गपटलो का दक्षिण भाग ४५२० ब।

दक्षिणप्रतिपत्ति—२४०२ अ।

दक्षिणाग्नि—१.३५।

दक्षिणायन—२६१ ब, उत्पत्ति २३५१।

दक्षिणार्ध—विजयार्ध कूट तथा देव—निर्देश ३४७१ ब,
विस्तार ३४८३, वर्ण ३४७७, अकन ३४४४।

दक्षिणेश—व्यन्तर देव ३६११ अ, स्वर्ग ४५११ अ।

दत्त—२.४०२ अ, चन्द्रप्रभ २३८७, नारायण ४.१८ अ।

दत्तक—चन्द्रप्रभ २३८७।

दत्तावधान बुद्धि—श्रद्धान ४४३ ब।

दक्षिणार्ध—धर्मनाथ २.३८३।

दक्षिमुख—२.४०२ अ, नन्दीश्वर द्वीप का पर्वत—निर्देश
३४६६ अ, विस्तार ३४८७, वर्ण ३४७८, अकन
३४६५।

दमवर—बलदेव ४१६ ब।

दमितारि—२४०२ अ।

दया—अनुकम्पा १.६६ अ, करुणा २१५ अ, हिंसा
४५३५ अ।

दयादत्ति—२.४२२ ब।

दयापाल—द्रविडसच १.३२० अ।

दयाभाव—२१४ ब।

दयार्द्र—१६६ अ।

दयालु—२१५ अ।

दयावती—तीर्थकर चन्द्रानन २३६२।

दयासागर (कवि)—१३३४ ब।

दयासागरसूरि—२४०२ ब, इतिहास १३४६ अ।

दर्प—२४०२ ब।

दर्पण—चैत्य-चैत्यालय २३०२ अ, मगल ३२४४ अ।
रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी द्वारा अवधूत—निर्देश
३४६६ ब, अकन ३४६८, ३४६९। शान्तिनाथ
२३८२।

दर्पणतुल्य भूमि—अर्हन्तातिथय १.१३७ ब।

दर्शक—मगधदेश १३१२।

दर्शन (उपयोग)—आकार १.२१६ अ, उपयोग १४२६-
४३० ब, कालावधि का अल्पबहुत्व ११६०, दर्शन
२४०५ ब, २४०६ अ, निर्विकल्प ३५३७ ब, मति-
ज्ञान ३२५१ अ, विशुद्धि ३५७० अ। प्ररूपणा—बध
३१०६, बधस्थान ३.११३, उदय १३८३, उदय-
स्थान १३६३, उदीरणा १४११ अ, सत्त्व ४२८४,
सत्त्वस्थान ४३०१, ४३०६, त्रिसयोगी भग
१४०७। सत् ४.२३६, सख्य ४.१०७, क्षेत्र २२०५,
स्पर्शन ४४६०, काल २.११५, अन्तर १.१७, भाव
३२२१ ब, अल्पबहुत्व ११५१, भागाभाग ४११३।

दर्शन (चाक्षुष ज्ञान)—आहारान्तराय १२८ ब, १२६ अ।

दर्शन (नाम)—मध्यलोकवासी एक व्यन्तर ३६१४ अ।

दर्शन (सांप्रदायिक सिद्धांत)—आध्यात्मिक अर्थ २४०५

ब, उद्योत १.४१४ अ, एकान्त १.४६४ ब, वैदिक
आदि २.४०२ ब, २४०३ अ।

दर्शन (सम्यग्दर्शन)—अदर्शन परिषद् १.४६ ब, उद्योत
१४१४ अ, कषाय १४३२ ब, मोक्षमार्ग ४.३४६
ब, योग १४३२ ब, श्रद्धा १.४६ ब, ४३४६ ब।

दर्शनकथा—२४१७ अ, इतिहास १३४८ अ।

दर्शनक्रिया—२१७४ ब।

दर्शन-ज्ञान-चारित्र्य—आत्मा ३३३६ ब, मोक्षमार्ग ३.३३३
अ, रत्नत्रय ३.३३५ ब।

दर्शन-चतुष्क—१.३७४ ब।

दर्शनपंडित—३.२८१ अ।

दर्शनपाहुड—२४१७ अ, इतिहास १३४० ब, वचनिका
१३४८ अ।

दर्शनप्रतिमा—२.४१७ अ।

दर्शन-बाल—३२८१ अ।

दर्शनमोह—उपशम—निर्देश १४३७ ब, १.४३६ ब,
कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, प्रदेशनिर्जरा का
अल्पबहुत्व १.१७४, समुच्छिर्मों में अभाव ४१२७ ब।
क्षपण—निर्देश २१७८ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व
११६१, प्रदेशनिर्जरा का अल्पबहुत्व ११७४,
प्रस्थापक ४.३७३ अ।

दर्शनमोहनीयकर्म—३३४२ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३८८,
३३४२, स्थिति ४४६१, अनुभाग १६४ ब, प्रदेश
३१३७। बध ३६७, बंधस्थान ३.११०, उदय
१३७५, उदयनिमित्त १.३६७ ब, उदय की विशेषता
१३७२ अ, १.३७३ ब, उदयस्थान १३८६, उदीरणा
१४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४.२७८,
सत्त्वस्थान ४२६५, त्रिसयोगी भग १.४०१ ब।
संक्रमण ४८६ अ, अल्पबहुत्व ११६८।

दर्शनवाद—एकान्त १४६५ ब, श्रद्धान ४४६ अ।

दर्शनविनाय—३५४८ ब, ३५५० ब।

दर्शनविशुद्धि—२४१८ ब।

दर्शनविशुद्धि व्रत—२४१६ ब।

दर्शनशुद्धि (शास्त्र)—२.४१६ ब।

दर्शनश्रावक—२.४१७ अ।

दर्शनसार—२४१६ ब, इतिहास १.३४२ ब।

दर्शनाचरण—मिथ्यादृष्टि ३.३०३ ब।

दर्शनाचार—१२४० अ, मिथ्यादृष्टि ३.३०३ ब, विनय
३.५५० ब।

दर्शनाराधना—१.२७१ ब।

दर्शनार्थ—१२७४ ब।

दर्शनावरण—२४१६ ब, आस्रव (ज्ञानावरण) २२७१ ब, ज्ञानावरण २२७१ ब, २.२७२ अ, सम्यग्दर्शन ४३४६ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३८८, ३६२ ब, २.४२०, स्थिति ४४६०, अनुभाग १६४ ब, अनुभाग का अल्पबहुत्व १.१६६ अ, प्रदेश ३.१३६। बंध ३६७, बंधस्थान ३१०८, उदय १३७५, उदय के निमित्त १३६७ ब, उदयस्थान १३८७ ब, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६४, त्रिसंयोगी भग १.३६६। सक्रमण ४८४ ब, अल्पबहुत्व ११६८।

दल—२४२० ब, गणित २२२५ अ।

दश—२२१४ ब, आहार के दोष १२६१ ब, कल्प (साधु) २३१ ब, ४४०४ ब, करण २५ ब, द्वार (प्राणायाम) ३१५५ ब, धर्म २४७६ अ, पूर्वधर ४३६ अ, प्राण ३.१५२ ब, विकार (काम) २४२ ब, स्थान (ध्यान) २४६८ अ, स्थितिकल्प (साधु) २३१ ब, ४.४०४ ब।

दश—गणना प्रमाण २२१४ ब, $\sqrt{10}$ २.२१६ ब।

दश-अशन दोष—आहार १.२६१ ब।

दश करण—२५ ब।

दश द्वार—प्राणायाम ३१५५ ब।

दश धर्म—२४७६ अ।

दश पर्व—२.४२० ब, विद्या ३.५४४ अ।

दशपुर—२४२० ब।

दशपूर्वित्व ऋद्धि—१४४८।

दशपूर्वी—इतिहास (मूलसब) १.३१६, शुक्लध्यान ४३६ अ-ब, श्रुतकेवली ४५५ अ।

दश प्राण—३.१५२ ब।

दशभक्ति—२४२० ब, इतिहास १.३४० ब।

दशम द्वार—प्राणायाम २१५५ ब।

दशम भवत—२.४२० ब।

दशमलव—२४२० ब।

दशम शब्द—३.१६४ ब।

दशमान—२४२० ब।

दश मिनिमानी व्रत—२.४२० ब।

दशरथ २४२१ अ, धर्मनाथ २.३७७, पंचस्तूपी आचार्य १३२६ ब, १३३० अ, बलदेव ४१७ अ, ४.१८ अ, यदुवंश १३३७, रघुवंश १३३८ अ।

दशलक्षण व्रत—२४२१ अ।

दशलाक्षणिक धर्म चक्रोद्धार यत्र—३.३५४।

दशवर्ष—काल का प्रमाण २२१६ अ।

दशवर्षसहस्र—काल का प्रमाण २२१६ अ।

देश विकार—काम २.४२ ब।

दशवैकालिक—२४२१ अ, श्रुतज्ञान ४६६ ब।

दशशतसहस्र—गणना प्रमाण २२१४ ब।

दशसहस्र—गणना प्रमाण २२१४ ब।

दशस्थान—ध्यान २४६८ अ।

दशस्थितिकल्प—कल्प २३१ ब, साधु ४.४०४ ब।

दशानन—प्रतिनारायण ४.२० अ, राक्षसवश १३३८ ब।

दशार्ण—२४२१ अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

दशार्णक—२.४२१ अ, मनुष्यलोक ३२७५ अ।

दशार्ण—मनुष्यलोक ३२७५ ब।

दशेरुक—मनुष्यलोक ३२७५ अ।

दशोक्त—२४२१ अ।

दस—२२१४ ब, आहार के अशन (दोष १२६१ ब, कल्प (साधु) २३१ ब, ४४०५ ब, करण २५ ब, द्वार (प्राणायाम) ३१५५ ब, धर्म २४७६ अ, पूर्वधर ४.३६ अ, प्राण ३१५२ ब, विकार (काम) २.४२ ब, स्थान (ध्यान) २४६८ अ स्थितिकल्प (साधु) २.३१ ब, ४४०४ ब।

दही—भक्ष्याभक्ष्य ३२०३ अ।

दांडीक—२४२१ अ, मनुष्यलोक ३२७५ अ।

दांत—२४२१ अ, औदारिक शरीर १.४७२ ब।

दाता—२४२१ अ, आहार १२६२ अ।

दातार—आहार १२६२ अ।

दातार दोष—आहार १२६२ अ, उद्दिष्ट १.४१३ अ।

दातृ—२.४२१ अ।

दान—२४२१ अ, त्याग २३६७ ब, दान २.४२७ ब, भोजन २४२३ ब, शुभोपयोग १४३४ ब।

दानकथा—२४२८ ब, इतिहास १३४८ अ।

दानवीर्य—सुपाश्वनाथ २३६१।

दानांतराय—१२७ ब।

दानांतराय कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३८८, १.२७, स्थिति ४४६७, अनुभाग १६४ ब, प्रदेश ३१३७। बंध ३६७, बंधस्थान ३१०८, ३१०६, उदय १३७५, उदयस्थान १३८७, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६४, त्रिसंयोगी भग १.३६६। संक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व ११६८।

दामर्नदि—२.४२८ ब, देशीय गण १३२४ ब, इतिहास १.३३० ब, १.३४२ ब।

दामर—पार्श्वनाथ २३७८।

दामोदर (कवि)—इतिहास १.३३२ अ, १.३४५ अ।

दामोदर (ब्रह्म)—इतिहास १.३३३ ब, १.३४४ अ।

दायक दोष—२.४२८ ब, आहार १.२६१ ब, वसतिका ३.५२६ ब, सूतक ४.४४२ ब, ४.४४३ अ।

दारिका—३.१६२ अ।

दाह—अनुभाग शक्ति १.६१ ब, १.६३ ब, १.६४ अ, मान कषाय २.३८ अ, यदुवंश १.३३७।

दारुक—यदुवंश १.३३७।

दारुवेणि—२.४२८ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।

दार्शनिक श्रावक—दर्शन प्रतिमा २.४१७ ब, श्रावक ४.४६ ब।

दासत्व—वात्सल्य ३.५३२ ब।

दासी—२.४२८ ब, ब्रह्मचर्य ३.१६२ अ, स्त्री ४.४५० ब।

दिक्—२.४२८ ब।

दिक् इंद्र—१.२६६ अ।

दिवकुमार (देव)—२.४२८ ब। भवनवासी देव—निर्देश ३.२१० ब, नाम निर्देश ३.२०८ अ, अवगहना १.१८०, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६५, अवस्थान ३.२०६ ब, ३.४७१, ३.६१२, ३.६१४। इंद्र—निर्देश ३.२०८ अ, शक्ति आदि ३.२०८ ब, परिवार ३.२०६ अ।

दिवकुमार देव—प्ररूपणा—बन्ध ३.१०२ बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४.१८८, संख्या ४.६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२३१ अ, अल्प-बहुत्व १.१४५।

दिवकुमारी—२.४२८ ब, मध्यलोक में अवस्थान ३.६१४ अ, रुचकवर पर्वत पर—निर्देश ३.४६६ ब, नाम ३.४७६ अ, अंकन ३.४६८, ३.४६६। सुमेरु पर्वत पर—निर्देश ३.४५० अ, नाम ३.४७३ ब, अंकन ३.४५१।

दिक् वास—२.४२८ ब, ३.४७४ ब।

दिक् स्वस्तिक—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६६।

दिगंतरिक्षित—२.४२८ ब, लौकान्तिक ३.४६३ ब।

दिगंतर गति—जीव की २.२३५ ब।

दिगंबर—२.४२८ ब, अचलकत्व १.३६ ब, चैत्य चैत्यालय (प्रतिमा) २.३०१ ब, श्वेतांबर ४.७८ अ, ४.७६ अ, ४.८० अ।

दिगंबर संघ—जैन १.३१५ ब, १.३१८ अ, जैनाभासी १.३१६ अ।

दिगवलोकन—व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ।

दिगिन्द्र—इन्द्र १.२६६ अ।

दिगजेंद्र—२.४२८ ब, मध्यलोकवासी देव ३.६१३ ब, देवकुरु उत्तरकुरु के पर्वत—निर्देश ३.४४५ अ, ३.४५६ ब, नामनिर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८७, वर्ण ३.४७७, गणना ३.४४५ अ, अंकन ३.४४४, ३.४५७, ३.४६४ के सामने। रुचकवर पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४६६ ब, ३.४७१, अंकन ३.४६८, ३.४६६।

दिग्नाग—२.४२८ ब।

दिग्घट चौरासी—२.४२६ अ, इतिहास १.३४७ ब।

दिग्वसतिका—चक्रवर्ती ४.१५ अ।

दिग्वास—श्वेताम्बर ४.७८ अ।

दिग्वासी देव—व्यन्तर देव—आयु १.२६४ ब।

दिग्विजय—२.४२६ अ, चक्रवर्ती ४.१५ ब, नारायण ४.२० अ।

दिग्ब्रत—२.४२६ अ, देशव्रत २.४५१ अ।

दिन—२.४२६ ब, कालप्रमाण २.२१६ अ, उत्पत्ति का कारण सूर्य की गति २.३५१ अ, रात्रिभोज (दिवा-मैथुन त्याग) ३.४०३ अ।

दिनकर—हस्त नक्षत्र २.५०४ ब।

दिनप्रतिमा—कायवर्ण २.४८ अ।

दिवस—कालप्रमाण २.२१६ अ, उत्पत्ति का कारण सूर्य की गति २.३५१ अ, मैथुनत्याग ३.४०३ अ।

दिवाकरनंदि—२.४२६ ब, देशीय गण १.३२४ ब।

दिवाकर सेन—२.४३० अ, सेनसघ १.३२६ अ, इतिहास १.३२८ ब, १.३२६ अ।

दिवा-भोजन—रात्रि-भोजन ३.४०२ ब।

दिवा-मैथुन-त्याग—रात्रि भोजन ३.४०३ अ।

दिव्य—अनुदिश स्वर्ग का विमान—निर्देश ४.५१६ अ, अंकन ४.५१५, ४.५१७ देव की आयु १.२६६।

दिव्यकला—मोक्षमार्ग ३.३३६ अ।

दिव्यतिलक—२.४३० अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

दिग्धवनि—२.४३० अ, अर्हन्तातिशय १.१३७ ब, ओम् १.४६६ ब, आगम १.२२८ ब, श्रुतकेवली (प्रतिपाद्य) ४.५६ अ।

दिव्यपाद—तीर्थकर ३.३७७।

दिव्ययोजन—२.४३३ ब, क्षेत्रप्रमाण २.२१५ ब।

दिव्यवाद—तीर्थकर २.३७७।

दिव्या—जाति २.३२६ ब।

दिव्यौषध—२.४३३ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

दिश-संस्थित — २४३३ ब, ग्रह २२७४ अ ।

दिशांजय क्रिया—संस्कार ४१५२ अ ।

दिशा—२४३३ ब, कृतिकर्म २१३६ ब, सल्लेखना ४३६० ब ।

दिशामंत्य—२४३४ अ, सुमेरु का नाम ४४३७ अ ।

दिशामादि — २४३४ अ, सुमेरु का नाम ४४३७ अ ।

दिशामुत्तर—२४३४ अ, सुमेरु का नाम ४४३७ अ ।

दीक्षा—प्रव्रज्या ३१४६, भरत चक्रवर्ती ३४१६ अ, संस्कार ४१५२ अ ।

दीक्षाकाल—२८० ब ।

दीक्षागुरु—२२५३ अ ।

दीक्षाद्यक्रिया—संस्कार ४१५१ ब, ४१५२ ब ।

दीक्षाचार्य—आचार्य १२४२ ब ।

दीक्षान्वय क्रिया—संस्कार ४१५२ अ ।

दीक्षाविधि—कृतिकर्म २१३८ ब ।

दीतिदेवी—२४३४ अ, पुनर्वसु नक्षत्र २५०४ ब, विद्याधर वंश १३३६ अ ।

दीप—चैत्य-चैत्यालय २३०२ अ, पूजा ३७८ ब ।

दीपचंद शाह—२४३४ अ, इतिहास १३३४ ब, १३४७ ब ।

दीपदशमी व्रत—२४३४ अ ।

दीपन—हरिवंश १३४० अ ।

दीपमालिका व्रत—२४३४ अ ।

दीपसेन—२४३४ अ, पुन्नाट संघ १३२७ अ ।

दीपांग—२४३४ अ, कल्पवृक्ष ३५७८ अ ।

दीप्त ऋद्धि—१४४७, १४५४ ब ।

दीप्ति—इक्ष्वाकुवंश १३३५ ब ।

दीर्घ अक्षर—१३३ अ ।

दीर्घदत्त—कुलकर ४२५ अ ।

दीर्घबाहु—हरिवंश १३४० अ ।

दुःख—२४३४ ब, इन्द्रियज सुख ४४३० अ, देवगति २४४६ अ, धर्म २४७० अ, नरक २५७२ अ, नैयायिक दर्शन २६३३ ब, परिग्रह ३२६ अ, पुण्य ३६२ अ, वेदनीय कर्म ३५६४ अ, सुखाभाव ४४३२ ब, ४४३३ अ ।

दुःखमा काल—६० दुषमा काल ।

दुःखहरण व्रत—२४३६ अ ।

दुःपक्व आहार—२४३६ अ, भोगोपभोग ३२३६ अ ।

दुःप्रणिधान—२४३६ ब, प्रणिधान ३११५ ब, स्मृत्यनुप-स्थान ४४६५ ब ।

दुःप्रमाण—भित्तिदृष्टि ३३०५ अ ।

दुःशासन—२४३६ अ ।

दुःश्रुति—२४३६ अ, अनर्थदण्ड १६४ अ ।

दुःस्वर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८ अ, २५८३, स्थिति ४.४६६, अनुभाग १६५ ब, प्रदेश ३१३६, बन्ध ३.६६, ३.६७, बन्धस्थान ३१११, उदय १३७४, १३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४.२७८ सत्त्व-स्थान ४३०३, त्रिसयोगी भग १४०४ । संक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व ११६८ ।

दुग्ध—भक्ष्याभक्ष्य ३२०३ अ, दुग्धरसी व्रत २.४३६ ब ।

दुन्दुभक (दुन्दुभि)—ग्रह २२७४ अ ।

दुन्दुभीनाद—प्रातिहार्य ११३७ ब ।

दुराग्रही श्रोता—उपदेश १४२६ अ ।

दुर्गधा—२४३६ ब ।

दुर्ग—२४३६. मनुष्यलोक ३२७५ अ-ब, विद्याधर नगरी ३५४६ अ ।

दुर्गादेव—इतिहास १३३१ अ, १.३४३ ब ।

दुर्गाटवी—२४३६ ब ।

दुर्ग्रह—राक्षसवंश १३३८ अ ।

दुर्जन—संगति ४११८ अ ।

दुर्जर—२४३६ ब, मनुष्यलोक ३२७५ ब, व्युत्सर्ग का दोष ३६२३ अ ।

दुर्वर्श—यदुवंश १३३७ ।

दुर्वर्—२४३६ ब, यदुवंश १३३६, विद्याधर नगरी ३५४६ अ ।

दुर्नय—३.३०५ अ ।

दुर्भग-नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.६६, २५८३, स्थिति ४४६६ । अनुभाग १६५ ब, प्रदेश ३१३६ । बन्ध ३.६६ अ, ३.६७, बन्धस्थान ३११०, उदय १३७५, उदयस्थान १३६०, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्व-स्थान ४३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४ । संक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व ११६८ ।

दुर्भाषा—३२२६ ब ।

दुर्भिक्ष—भद्रबाहु स्वामी १. परि०/२.१-३ ।

दुर्मुख—२४३६ ब, नारद ४२१ अ । यदुवंश १.३३७ ।

दुर्योधन—२४३६ ब, कुरुवंश १.३३६ अ ।

दुर्लभसेन—सेनसंघ १.३२६ अ ।

दुर्विनीत—२.४३६ ब ।

दुःशासन—२.४३६ अ ।

दुःश्रुति—२४३६ अ, अनर्थदण्ड १.६४ अ ।

दुषमा काल—२.४३६ अ-ब, उपमा काल २२१७ ब, निदेश २८८, परिचय २६३, कुछ विशेषताएँ २६२

प्रमाण २.६०। अवगाहना १.१८०, अवसर्पिणी २.८६, आयु १.२६४, आर्यखण्ड १.२७५ अ, उत्सर्पिणी २.६०, कर्मभूमि ३.२३५, कल्कि २.३१ अ, क्षेत्र २.६२, दर्शनमोह क्षणणा २.१७८ ब, धर्मध्यान २.४८४ ब।

दुषमा-दुषमा काल—उपमा काल २.२१७ ब, निर्देश २.८८, परिचय २.६३, प्रमाण २.६०। अवगाहना १.१८०, अवसर्पिणी २.६०, आयु १.२६४, आर्यखण्ड १.२७५ अ, उत्सर्पिणी २.६०, कर्मभूमि ३.२३५, क्षेत्र २.६२, दर्शनमोह क्षणणा २.१७८ ब।

दुषमा-सुषमा काल—उपमा काल २.२१ ब, निर्देश २.८८, परिचय २.६३, कुछ विशेषताएँ २.६२, प्रमाण २.६०। अवगाहना १.१८०, अवसर्पिणी २.८६, आयु १.२६४, आर्यखण्ड १.२७५ अ, उत्सर्पिणी २.६०, कर्मभूमि ३.२३५, क्षेत्र २.६२, चरमशरीरी तथा तीर्थकरो आदि का जन्म २.६२, २.३१७ अ, ३.२३५, विदेह ३.५४३ ब, विद्याधर लोक ३.२३५।

दुष्ट-प्रमृष्ट निक्षेप—१.५० अ।

दुष्पक्व आहार—२.४३६ ब, भोगोपभोग ३.२३६ अ।

दुष्पूर—यदुवंश १.३३७।

दुष्प्रणिधान—२.४३६ ब, प्रणिधान ३.११५ अ, स्मृत्यनुपस्थान ४.४६५ ब।

दुष्प्रमाण—मिथ्यादृष्टि ३.३०५ अ।

दुष्प्रयुक्त निक्षेप—१.५० अ।

दुस्स्वर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.६६ अ, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.१११, उदय १.३७४, १.३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भंग १.४०४। सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

दूत—२.४३६ ब।

दूतकर्म—वसतिका का दोष ३.५२६ अ।

दूध—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ अ।

दूरघ्राणत्व ऋद्धि—१.४५० अ।

दूरदर्शित्व ऋद्धि—१.४५० अ।

दूरभव्य—३.२११ ब।

दूरवर्ती—४.४५ अ।

दूरश्रवणत्व ऋद्धि—१.४५० अ।

दूरस्पर्शत्व ऋद्धि—१.४५० अ।

दूराच्छ्रवण ऋद्धि—१.४४८, १.४५० अ।

दूरात्स्पर्श ऋद्धि—१.४४८, १.४५० अ।

दूराद्घ्राण ऋद्धि—१.४४८, १.४५० अ।

दूरादास्वादन ऋद्धि—१.४४८, १.४५० अ।

दूरादर्शन ऋद्धि—१.४४८, १.४५० अ।

दूरापकृष्टि—२.४३७ अ।

दूरार्थ—२.४३७ अ।

दूरास्वादित्व ऋद्धि—१.४५० अ।

दूषण—उभय १.४४४ ब।

दूष्य क्षेत्र—२.४३७ अ।

दृढचर्याक्रिया—सस्कार ४.१५२ ब।

दृढनेमि—यदुवंश १.३३७।

दृढमुष्टि—यदुवंश १.३३७।

दृढरथ—२.४३७ अ, गणधर २.२१२ ब, विद्याधर वंश १.३३६ अ, शान्तिनाथ २.३७८, शीतलनाथ २.३८०, हरिवंश १.३४० अ।

दृढराज्य—सम्भवनाथ २.३८०।

दृढव्रत—यदुवंश १.३३७।

दृश्यकर्म—२.४३७ अ।

दृश्यमान द्रव्य—२.४३७ अ, कृष्टि २.१४१ ब।

दृष्ट—२.४३७ अ।

दृष्टांत—२.४३७ अ-ब, अनुमानावयव १.६८ ब, न्याय २.६३३ अ-ब, षट्लेश्या ३.४२६ अ।

दृष्टि—आहारान्तराय १.२८ ब, चैत्य-चैत्यालय (प्रतिमा) २.३०१ अ, मिथ्यादृष्टि (रुचि) ३.३०२ ब, रुचि ३.४०४ ब।

दृष्टिनिर्विष ऋद्धि—१.४४७ १.४५५ ब।

दृष्टिप्रवाद—२.४४० अ, श्रुतज्ञान ४.६८ अ।

दृष्टिभेद—२.४४० अ।

दृष्टिवाद—श्रुतज्ञान ४.६७ अ, ४.६८ अ।

दृष्टिचिषऋद्धि—१.४४७, १.४५६ अ।

दृष्टिशक्ति—२.४४३ अ।

देय—२.४४३ अ, गणित २.२२३ ब।

देयकर्म—२.४४३ अ।

देयद्रव्य—२.४४३ अ।

देव—२.४४३ अ, २.४४४ अ, पूजा (शास्त्र व प्रतिमा) ३.७७ अ-ब। देवगति (दे० आगे)।

देव—मूलसंघ १.३१६।

देवऋद्धि—२.४४६ अ।

देव ऋद्धिदर्शन—सम्यक्त्वोत्पत्तिका कारण ४.३६३ अ, ब।

देवकृत अतिशय—अर्हन्त १.१३७ ब।

देवकी—नारायण ४.१८ ब, यदुवंश १.३३६, १.३३७।

देवकीर्ति—२.४४६ अ, देशीय गण १.३२५, इतिहास द्वि० १.३३० ब, तृ. १.३३१ ब, चतु. १.३३२ अ, द्वाविड संघ १.३२० ब।

देवकुरु—२.४४६ अ-ब। लोकविभाग—निर्देश ३.४५६

ब, ३.४६२ ब, ३.४६३ अ, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, गणना ३.४४५ अ, अंकन ३.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने (चित्र ३७), चित्र ३.४५७। उत्तम भोगभूमि—निर्देश ३.२३५ ब, अवगाहना १.१८०, आयु तिर्यच १.२६३, आयुमनुष्य १.२६४, काल विभाग २.६२ ब, सुषमा-सुषमा काल २.६३।

देवकुरु (द्रहकूट आदि)—देवकुरु का द्रह—निर्देश ३.४५६ ब, नामनिर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अंकन ३.४४४ के सामने, ३.४५७, ३.४६४ सामने। गजदन्त के कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ के ब, ३.४७३ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४, ३.४५७।

देवकूट—२.४४६ ब।

देवगति (देवसामान्य)—२.४४५ अ, अकालमृत्यु ३.२८४ अ, अनीक १.६८ ब, अवगाहना १.१८० अ, अवधि-ज्ञान १.१६४ अ, १.१६८, अवर्णवाद १.२०१ अ, १.२१० ब, आत्मरक्ष १.२४३ ब, आयु १.२६५, आयुबन्ध १.२६२ अ, आयु का अपकर्ष काल १.२५६ ब, उद्योत प्रकृति १.३७३ ब, कषाय २.३८ अ, कषाय की कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, कल्याणक २.३२ ब, काल (केवल सुषमा-सुषमा) २.६३, गति अगति (मर कर कहाँ जन्मे) २.३२२ अ, जीव २.३३३ ब, दुख २.४३५ अ, पञ्चकल्याणक २.३२ ब, ब्राह्मण ३.१६५ अ, मरण ३.२८४ अ, लिङ्ग ३.५८७ अ, लेश्या (द्रव्य) ३.४२५ ब, लेश्या (भाव) ३.४२८ ब, लोकपाल ३.४६१ अ, वनस्पति ३.५०६ अ, वेदभाव ३.५८७ अ, वैक्रियिक ३.६०२ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५६ अ।

देवगति (चतुर्निकाय) —

विषय	भवनवासी	व्यन्तर	ज्योतिषी	वैमानिक
कोशखण्ड सं०	खण्ड ३	खण्ड ३	खण्ड २	खण्ड ४
निर्देश	२०७ ब	६१० ब	३४५ ब	५१० अ
भेद	२०८ अ	"	"	५१० ब
शक्ति आदि	२०८ ब	६१०-६११	"	५११
निवास	[२०६ ६१३ ४४२]	[६१२ अ ४४२]	३४६ ब	५१४ ब
विमान	—	—	—	५११ ब
अवगाहना	१.१८०	१.१८०	१.१८०	१.१८०
आयु	१.२६५	१.२६४	१.२६६	१.२६६
इन्द्र—				
निर्देश	२०८— २१०	६११ अ	३४५ ब	५१० ब
परिवार	२०६ अ	६११ ब	३४६ अ	५१२
देवियाँ	"	"	"	"

देवगति (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उद्योतप्रकृति का उदय १.३७३ ब,

उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, उद्वेलनायुक्त सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब। सत्त्व ४.१८५, संख्या ४.६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.६, १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

देवगति-नामकर्म-प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.१११, उदय १.३७५, उद्योत प्रकृति का उदय १.३७३ ब, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, उद्वेलनायुक्त सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भग १.४०४। सत्त्वमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी—नामनिर्देश २.५८३ ब, लक्षण १.२४७ अ। प्ररूपणा—दे० गति नामकर्म प्ररूपणा।

देवगर्भ—हरिवंश १.३४० अ।

देवचंद्र—२.४४६ ब, मन्त्रवादी—देशीयगण १.३२५, इतिहास १.३३१ ब। पण्डित आशाधर १.२८० ब।

देवचतुष्क—१.३७४ ब।

देवच्छद—चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ।

देवजी—२.४४६ ब।

देवता—२.४४६ ब, व्रत की साक्षी ३.६२६ अ, अग्नि १.३५ ब।

देवत्रिक—१.३७४ ब।

देवत्व—ईर्यापिथ कर्म १.३५० ब।

देवदत्त—यदुवंश १.३३७, हरिवंश १.३४० अ। भट्टारक इतिहास १.३३० ब।

देवदारु—पार्श्वनाथ २.३८३।

देवदेव—तीर्थकर २.३७७।

देवद्विक—१.३७४ ब।

देवद्विज—३.१६५ अ।

देवनंद—यदुवंश १.३३७।

देवनंदि—२.४४६ ब, नन्दिसंघ १.३२३ अ, द्रविडसंघ १.३२० अ, इतिहास १.३२६ अ, १.३२६ ब।

देवपाल—२.४४६ ब, तीर्थकर २.३७७, भोजवंश १.३१० अ, यदुवंश १.३३७।

देवपुत्र—तीर्थकर २.३७७।

देवपूजा—शुभोपयोग १.४३४ ब। (वि० दे० पूजा)।

देवभद्र—भट्टारक १.२८० ब।

देवभवन—चैत्य-चैत्यालय २.३०३ ब।

देवभाव—गणधर २.२१२ ब।

देवमन्त्री — पुष्प नक्षत्र २५०४ ब ।

देवमाल — २४४६ ब । चक्षार-गिरि—निर्देश ३४६० अ,
नामनिर्देश ३४७१ अ, विस्तार ३४८२, ३४८५,
३४८६, वर्ण ३४७७, अंकन ३४४४, ३४६४ के
सामने । इस पर्वत का कूट तथा देव ३४७२ ब ।

देवमूढता — अमूढदृष्टि ११३२ ब, मूढता ३३१५ अ,
३३१५ ब सम्यग्दर्शन ४३६१ ब ।

देवयज्ञ — ३३६६ ब ।

देवयश — २३६२ ।

देवरमण — भद्रशाल वन का भाग—निर्देश ३४५० अ,
विस्तार ३४८८, अंकन ३४४४, ३४५७, ३४६४ के
सामने (चित्र स० ३७) ।

देवरम्या — चक्रवर्ती ४१५ अ ।

देवराज — तीर्थकर २३६२ ।

देवराय — २४४६ ब ।

देवद्विगणी क्षमाश्रमण — खेताम्बराचार्य ४७८ अ, इतिहास
१३२६ अ ।

देवर्षि — ऋषि १४५७ ब, लौकान्तिक ३४६३ अ ।

देवल — साख्यदर्शन ४३६८ ब ।

देवलोक — २४४६ ब, धर्म (क्लेश का कारण) २४७० अ ।

देववदना — कृतिकर्म २१३७ ब, वदना ३४६५ ब ।

देववर (द्वीप, सागर) — २४४६ ब, नामनिर्देश ३४७० अ,
विस्तार ३४७८, जल का रस ३४७० अ, अंकन
३४४३, ज्योतिष चक्र २३४८ ब, अधिपति देव
३६१४ ।

देवविमान — २४४० अ, स्वप्न ४५०४ ब ।

देवशर्मा — २२१२ ब ।

देवसंघ — १३१६ अ ।

देवसत्य — २२१२ ब ।

देवसमिति — स्वर्गपटल—निर्देश ४५१८, विस्तार ४५१८,
अंकन ४५१५, देव-आयु १२६७ ।

देवसुत — २४५० अ, तीर्थकर २३७७ ।

देवसेन — २४५० अ, सजात तीर्थकर २३६२, यदुवंश
१३३६, हरिवंश १३४० अ ।

देवसेन — प्रथम — पंचस्तूप सघ १३२६ ब, इतिहास १३३०
अ, १३४३ अ । द्वितीय — माथुरसंघ १३२७ ब,
इतिहास १३३० अ, १३४२ ब । तृतीय — सेनसंघ
१३२६ अ, इतिहास १३३१ अ ।

देवागम स्तोत्र — ४४४६ अ ।

देवाग्नि — २२१२ ब ।

देवायु कर्मप्रकृति — प्ररूपणा—प्रकृति ३८८, १२५३,

स्थिति ४४६२, अनुभाग १६५, प्रदेश ३१३६ ।
बन्ध ३६७, बन्धस्थान ३१०८, उदय १३७५, उदय-
स्थान १३८७, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान
१४१२, सत्त्व ४२७८, तत्त्वस्थान ४२६४, नि-सयोगी
भग १४०१ । अल्पबहुत्व ११६८, विस्तार ३४८७,
३४८८, अंकन ३४४४, ३४६४ के सामने ।

देवी — मध्यलोक में आवास ३६१४, उदय प्ररूपणा
१३७८, अल्पबहुत्व ११४४ अ, ११४७ अ ।
परिवार — अनीक १६८ ब, आत्मरक्ष १२४३ ब ।
इन्द्रो की प्रधान देवियाँ —

विषय	भवनवासी	वन्तर	ज्योतिषी	वैमानिक
कोश खण्ड →	खण्ड ३	खण्ड ३	खण्ड २	खण्ड ४
नाम निर्देश	२०६ अ	६११ ब	३४६ अ	५१३ ब
विक्रिया	२०६ अ			५१२
सख्या	२०६ अ	६११ ब	३४६ अ	५१२-५१३
परिवार	२०६ ब	६१२ अ	३४६ अ	५१२
विकास	६१२ अ	६१४	३४६ अ	५१३
आयु	१२६५	१२६४	१२६६	१२६६

नोट — वैमानिक देवियाँ सौधर्म ऐशान में ही होती हैं
४५१४ अ ।

देवीदयाल — इतिहास १३४८ ।

देवीदास — २४५० अ ।

देवेन्द्रकीर्ति — २४५० अ । प्रथम — नन्दिसंघ १३२३ ब,
१३२४ अ, इतिहास १३३३ अ, १३४७ ब । द्वितीय—
इतिहास १३३३ ब । तृतीय—काष्ठासंघ १३२७ अ,
इतिहास १३३४ ब, भट्टारक १३३२ ब ।

देवेन्द्रमुनि — सेनसंघ १३२६ अ, इतिहास १३३२ अ ।

देवेन्द्र सूरि — इतिहास १३३२ ब, १३४५ अ ।

देवेन्द्र सैद्धांतिक — २४५० अ, देशीयगण १३२४ ब,
इतिहास १३३० ब ।

देश — २४५० ब, आहार दोष, १२६० ब, अतिचार
१४२ ब, १४३ ब, स्कन्ध ४४४६ अ ।

देशकरण — उपशम १४३७ अ ।

देशकाल — आगमार्थ १२३४ अ, उपदेश १४२६ अ ।

देशक्रम — २१७१ ब, २१७२ अ ।

देशघाती प्रकृति — निर्देश १६१-६३, उदय १३७१ ब,
अल्पबहुत्व ११७१ अ ।

देशघाती स्पर्धक — ४४७३ अ, चारित्रमोह क्षाणा २१८०
अ ।

देशजिन — ३७७ अ ।

देशत्याग—गुणोपयोग १ ४३३ ब ।

देशना—३ ४१३ अ ।

देशनालब्धि—३ ४१३ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६२ ब ।

देशप्रकृति विपरिणमना—३ ५५५ ब ।

देशप्रत्यक्ष—३ १२२ ब ।

देशप्रत्यासत्ति—४.१४१ अ ।

देशभूषण—२ ४५० ब, अग्निप्रभदेव १ ३६ ब, नन्दिसर्व १ ३२३ ब ।

देशविरत—४ १३४ अ । प्ररूपणा - बन्ध ३ ६७, बन्धस्थान ३ ११०-१११, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६२ अ, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७८ सत्त्वस्थान ४.२८८, ४ २६६, ४ ३०४, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ अ । सत् ४ १६२, सख्या ४ ६४, क्षेत्र २ १६७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २ ६६, अन्तर १ ७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १ १४३ । वि० दे० सयतासयत ।

देशव्रत—२ ४५० ब, व्रत ३ ६२८ अ ।

देशव्रती—दे० सयतासयत ।

देशसयत—काय २ ४५ ब । वि० दे० सयतासयत ।

देशसंयम—२ ३७३ ब । वि० दे० सयतासयत ।

देशसत्य—४ २७१ ब ।

देशस्पर्श—४ ४७५ ब ।

देशांश—गुण २ २४१ ब ।

देशातिचार—देशव्रत २ ४५१ अ ।

देशात्मवाद—बहिरात्मा ३ १८१ ब ।

देशावकाशिक व्रत—देशव्रत २ ४५१ अ ।

देशावधि—१ १८७ ब, १ १६८-१६९ करण चिह्न १.१५१ ब, गुणप्रत्यय १ १६३ ब, भवप्रत्यय १ १६३ ब, विषय १.१६८-१६९ । शब्दकोष ४.४ ब ।

देशी नाममाला—इतिहास १ ३४४ अ ।

देशीय गण—२.४५१ ब, मूलसघ १ ३२२ अ, नन्दिसघ १.३१६ अ, पट्टावली १.३२४ ब ।

देशोपशम—सम्यग्दर्शन ४.३६८ ब ।

देह—२.४५१ ब, पिडस्थ ध्यान ३ ५८ ब, विशेष देखिए—शरीर ।

देहदेवालय—पूजा ३.७७ ब ।

देहप्रमाणत्व शक्ति—शक्ति ४.६ ब ।

देहरहितता—मोक्ष ३.३३० अ ।

दैत्य—विद्या ३.५४४ अ ।

दैव—नियति २.६१६ ब, २.६१६ अ ।

दैवनय—२ ५२३ ब ।

दैववाद—एकान्त—१.४६३ ब, नियति २.६१६ ब ।

दैवसिक—आलोचना १ २७६ ब, प्रतिक्रमण—कृतिकर्म २.१३७ ब, व्युत्सर्ग ३ ६२६ अ ।

दैवी मीमांसा—दर्शन २ ४०२ ब ।

दो—२ ४५१ ब । सहनानी—जघन्य असख्यात, जघन्य सख्यात, जघन्य युक्तासख्यात; उत्कृष्ट परीतासख्यात तथा पर्याप्त २ २६६ अ । सूक्ष्मगुल २ २१६ ब ।

दोगुणहानि—गणित २.२३१ ब ।

दोषांतिक पाहुड—पाहुड ३.१५६ ब ।

दोड्डय (कवि)—इतिहास १ ३३३ अ-ब, १ ३४६ ब ।

दोलायित—२.४५१ ब, व्युत्सर्गदोष ३.६२२ ब ।

दोष—२.४५१ ब, अष्टादशदोष १ १३७ अ, आप्त १.२४८ अ, आहार १.२८७ अ, १.२८६ अ, उभय १ ४४४ ब, चल २ २७६ ब, देव (मिथ्यादृष्टि) ३.३०४ अ, द्वेष २ ४६३ अ, न्याय २ ६३३ ब, सम्यग्दर्शन (चल) २.२७६ ब ।

दो सौ छप्पन—सहनानी—उत्कृष्ट असख्यातासख्यात, जघन्य परीतान्त; ध्रुव राशि २ २१६ अ ।

दोहापाहुड—२ ४५२ ब, इतिहास १ २४१ अ, १.३४३ अ ।

दौर्भाग्य—सुभग-दुर्भग ४.४३६ अ ।

दौलतराम—२.४५१ ब, इतिहास—१.३३४ अ, १ ३४८ अ, द्वितीय १.३३४ ब, १.३४८ अ ।

द्यानतराय—२ ४५१ ब, इतिहास १ ३३४ अ ।

द्युतकीडा—२ ४५१ ब ।

द्युति—२ ४५१ ब, सूर्य की अग्निदेवी २ ३४६ अ ।

द्युतिलक—विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

द्युतिश्रुति—सूर्य की अग्निदेवी २.३४६ अ ।

द्योत्यद्योतक भाव—सम्बन्ध ४.१२६ अ ।

द्रमिल—२ ४५२ अ ।

द्रविडदेश—२.४५२ अ ।

द्रविड संघ—२ ४५२ अ, जैनाभासी सघ १ ४६५, इतिहास १ ३२० अ-ब ।

द्रविडाचार्य—वेदान्त ३ ५६५ ब ।

द्रव्य—२.४५२ अ, अनन्त गुण २.२४४ अ, अल्पबहुत्व १.१४२, अवधिज्ञान के विषय १ १६७ ब, अवस्थान १.२२३ अ, १.२२४ अ, अविभागी अश (क्षेत्र का प्रमाण) २.२१५ अ, उपकार्य-उपकारक भाव २.६३ ब, उत्पादादि १.३६१, उपचार (गुण-पर्याय आरोप) १.४२१ अ, कर्मोदय के निर्मातृ १.३६७ ब, कारण-काय भाव २ ५४ ब, २.५५ ब, २ ६३ ब, दानोप-योगी २.४२७ अ, पर-चतुष्टय २.२७८ अ, ४.३१६ अ, भेदाभेद (कारक) २ ५० ब, लोकाकाश में १.२२४ अ, विकल्पातीत ४.३२० अ, सदसत् १.३६१ ब,

सम्यग्दर्शन के निमित्त ४.३६२ ब, सामान्य विशेष
४.३२२ ब, ४.३२३ अ, स्व-चतुष्टय २ २७७, ब,
२ २७८ अ, ४ ३१६ अ, स्वतन्त्रता २.६० अ,
२ ७३ अ, स्वभाव ४.५०६ ब ।

द्रव्य-अनंत—१ ५५ ब ।

द्रव्य-अनुयोग—१ ६६ ब-१०१ ब, स्वाध्याय ४ ५२३ ब ।

द्रव्य-अंतर—१ ३ ब ।

द्रव्य-अप्रतिक्रमण—३ ११७ अ ।

द्रव्य-अप्रत्याख्यान—१ १२६ अ ।

द्रव्य-अवसन्न—१.२०१ ब ।

द्रव्य-आरोप—१ ४१६ ब—१ ४२१ ब ।

द्रव्य-आस्रव—१ १८२ ब ।

द्रव्य-इंद्रिय—१ ३०१ ब, १ ३०५ ब, केवली २ १६२ अ ।

द्रव्य-उदय—१ ३६५ ब ।

द्रव्य-उपक्रम—१ ४१६ ब ।

द्रव्य-उपचार—१ ४१६ ब-१ ४२१ ब, पर्यायारोप १ ४२१
अ-ब ।

द्रव्य-उपशम—१.४३७ अ ।

द्रव्य कर्म—२.२६ अ, २ २७ अ-ब, २ २८ ब, भावकर्म
२ २७ अ, षट्द्रव्य २ २८ ब, उदय १ ३६५ ब ।

द्रव्य-कषाय—२ ३५ ब, २ ३७ अ ।

द्रव्य-क्रीत (दोष)—आहार १ २६० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ ।

द्रव्य-छेदना—२ ३०६ ब ।

द्रव्यत्व—२.४६१ अ ।

द्रव्य-तीर्थ—२ ३६३ ब ।

द्रव्य-दोष—आहार १ २६० ब ।

द्रव्य-ध्येय—२ ५०० अ ।

द्रव्य-नपुंसक—२ ५०५ ब ।

द्रव्य-नमस्कार—२ ५०६ ब ।

द्रव्य-नय—२ ५१४ ब, २ ५२१ ब, निक्षेप नय २ ५२३ अ,
सप्तभगी नय २ ५२२ ब ।

द्रव्य-निक्षेप—द्रव्य २ ५६६ अ, भाव २ ६०६ अ ।

द्रव्य-निबंधन—२ ६१० ब ।

द्रव्य-निमित्त—२ ६४ अ ।

द्रव्य-निमित्तक—कर्मोदय १ ३६७ अ, नाम २ ५८२ ब,
सम्यग्दर्शन ४.३६३ ब ।

द्रव्य-निर्जरा—२.६२२ अ-ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७७ अ ।

द्रव्य-निर्विचिकित्सा—२.६२६ ब ।

द्रव्य-परमाणु—ध्येय २ ५०१ ब, परमाणु ३ १४ ब, शुक्ल-
ध्यान ४ ३३ ब ।

द्रव्य-परिवर्तन—ससार ४ १४७ ब ।

द्रव्य-पर्याय—३ ४६ अ ।

द्रव्य-पर्याय-आरोप—उपचार १.४२१ अ ।

द्रव्य पुण्य—३ ६० अ ।

द्रव्य-पुरुष—३ ६६ ब ।

द्रव्य-पूजा—३.७४ ब, ३ ८० अ ।

द्रव्य-प्रतिक्रमण—३.११६ ब ।

द्रव्य-प्रत्याख्यान—३ १३२ अ ।

द्रव्य-प्रमाण—अनुयोग २ १०२ अ, प्रमाण ३.१६६ अ ।

द्रव्य-प्राण—३ १५२ ब ।

द्रव्य-बंध—बध ३ १७१ अ, ३ १७२ अ, स्कध ४ ४४७ ब ।

द्रव्य-मन—अनुभव १ ८१ ब, मन ३ २७० अ, मन.पर्यय
३.२६७ ब, मूर्त ३ ३१८ अ ।

द्रव्य-मल-२ २६६ अ ।

द्रव्य-मोक्ष—३ ३२२ ब ।

द्रव्य-मोह—३ ३४० अ ।

द्रव्य-युति—३ ३७३ ब ।

द्रव्य-योग—३ ३७५ ब ।

द्रव्य-विद्य—चारित्र २ २६१ ब, धर्म २ ४७० अ, लिग
३ ४१६ ब, ३ ४२०, विनय ३ ५५३ ब, वेदभाव
३.५८३ ब, साधु ४ ४०७ ब ।

द्रव्य-लेश्या—द्रव्य ३ ४२२ ब, भाव ३ ४२५ अ, ३ ४२६
अ, वर्ण नाम कर्मोदय ३ ४२६ ब ।

द्रव्य-वचन—मूर्त ३ ३१७ ब ।

द्रव्यवाद—साध्यदर्शन एकान्त १ ४६५ ब ।

द्रव्यविचिकित्सा—निर्विचिकित्सा २ ६२६ ब ।

द्रव्य-शल्य—४ २६ ब ।

द्रव्यशुद्धि—अतिचार (ज्ञान) १ २२८ अ, शुद्धि ४ ३६ ब,
स्वाध्याय ४ ५२६ अ ।

द्रव्यश्रुत—४ ५६ ब, अक्षर १ २२८ अ, आगम (ज्ञान)
१.२२६ ब, आगम (सूत्र) १ २३८ ब, आत्मा १ २४४
अ, गौणता (ध्याता) २ ४६२ ब, गौणता (श्रुतज्ञान)
४ ६१ अ, ग्रन्थ २.२७३ अ, श्रुतकेवली ४ ५६ अ,
स्वाध्याय ४ ५२५ अ ।

द्रव्यसंग्रह—२ ४६१ ब, इतिहास १ ३४३ ब, टीका
१ ४४३ ब । वचनिका १ ३४८ अ । वृत्ति १.३४३ ब ।

द्रव्य-संयोगपद—शरीर ३.५ अ ।

द्रव्य-संवर—४ १४१ ब ।

द्रव्य-संसार—४ १४७ अ ।

द्रव्य-सत्लेखना—४ ३८२ ब ।

द्रव्य-सामायिक—४ ४१५ ब ।

द्रव्य-सूत्र—यज्ञोपवीत ३.३६६ ब ।

द्रव्य-स्त्री—४४५० अ।

द्रव्यस्तव—भक्ति ३.२०० ब।

द्रव्यस्पर्श—४४७५ ब।

द्रव्य-स्वभाव—तत्त्व २३५३ अ, परमाणु ३१३ अ।

द्रव्यांश—उत्पाद-व्यय-धौव्य १.३६१ ब।

द्रव्यानंत—१५५ ब।

द्रव्यानुयोग—अनुयोगद्वार १६६ ब-१०१ ब, स्वाध्याय ४.५२३ ब।

द्रव्यारोप—उपचार १४१६ ब-१४२१ ब।

द्रव्यार्थता—कर्म २.२६ ब।

द्रव्याधिक—निर्देश २.५१४ ब, २.५१५ अ, २.५४२ अ, ऋजुसूत्र २.५३४ ब, एकान्त (चक्षु) १४६२ ब, द्रव्य २.४६१ ब, निक्षेप २.५६३ ब, निश्चय २.५५४ ब, पर्यायाधिक २.५३५ ब, सम्यक्मिथ्या २.५२६ ब, स्याद्वाद ४.४६८ अ।

द्रव्याश्रय—द्रव्य २.४६० अ।

द्रव्येन्द्रिय—१३०१ ब, १३०५ ब, केवली २१६२ अ।

द्रव्योदय—उदय १३६५ ब।

द्रव्योपचार—उपचार १४२१ अ, पर्यायारोप १४२१ ब।

द्रव्योपशम—१.४३७ अ।

द्रह—२.४६१ ब, ह्रद ४.५३८ अ, देवकुरु उत्तरकुरु—निर्देश ३.४५६ ब, नामनिर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अंकन ३.४४४, ३.४५७. ३.४६४ के सामने। वर्षधर पर्वत पर—निर्देश ३.४४६ ब, ३.४५३ ब, ३.४६३ अ-ब, विस्तार ३.४६०-४६१, गणना ३.४४५ अ, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने इनके कूट ३.४७४ अ।

द्रहवती—२.४६१ ब, विभंगा नदी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३.४६६-४६०, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने।

द्रुमसेन—नारायण ४१८ ब।

द्रोण—२.४६१ ब, तौल का प्रमाण २.२१५ अ।

द्रोणमुख—२.४६१ ब, चक्रवर्ती ४१३ ब, बलदेव ४१७ ब।

द्रोणाचार्य—२.४६१ ब।

द्रोपदी—२.४६२ अ।

द्रुह—२.४६२ अ।

द्रुह्यंग नमस्कार—२.५०६ अ।

द्रुत्रिशतिका—२.४६२ अ, इतिहास १३४१ अ, १३४३ अ, १३४४ अ।

द्रावश—अंग (श्रुतज्ञान) ४.६७ ब, अनुप्रेक्षा १७६ अ,

आयतन (बौद्ध) १२५१ अ, आवर्त (कृत्तिकर्म) १२७६ अ, २१३३ ब, चक्रवर्ती ४१० ब, तप २.३५६ अ, भावना १७८ ब, भिक्षु प्रतिमा ४.३६२ ब।

द्वादशवर्षी दुभिक्ष—१ परि०/२१-३।

द्वादशांग—आगम १.२२८ ब, आत्मा १.२४४ अ, गणधर से उत्पत्ति २२१२ ब, श्रुतकेवली ४.५६ अ, श्रुतज्ञान ४.६७ अ-ब।

द्वादशांगपूजा—इतिहास १३४७ अ।

द्वादशानुप्रेक्षा—शुभोपयोग १४३४ ब।

द्वादशी व्रत—२.४६२ अ।

द्वापुरी—नारायण ४१८ अ।

द्वार—जगती के द्वार—निर्देश ३.४४४ ब, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने।

द्वारवंग—२.४६२ अ।

द्वारावती—नारायण ४१८ अ, नेमिनाथ २.३७६, बलदेव ४१७ अ।

द्विकावली व्रत—२.४६२ अ।

द्विगुण क्रम—२.४६२ अ।

द्विज्ञानसिद्ध—अल्पबहुत्व १.५५४।

द्विचत्वारिंशत—बादल सख्या की सहनानी २.२१८ ब।

द्विचरम देह—चरम २.२७८ ब।

द्विचरम देही—लौकान्तिक आदि देव ४.५१० ब।

द्विचरमावली—उपशम १.४४१ ब।

द्विचारित्रसिद्ध—अल्पबहुत्व १.५५३।

द्विचूड—विद्याधर वंश १.३३६ अ।

द्विज—ब्राह्मण ३.१६५ अ, वर्णव्यवस्था ३.५२३ अ-ब, सस्कार ४.१५३ अ।

द्विजपति—हरिदेव ४.५३० अ।

द्वितीयगुण—गुणांश २.२४१ अ।

द्वितीय-गुण-हानि—गणित २.२३१ ब।

द्वितीय मूल—गणित २.२२३ अ।

द्वितीय वर्ग—गणित २.२२३ अ।

द्वितीय स्थिति—अन्तरकरण १.२५ अ, १.२६ अ, गुण-श्रेणी सक्रमण ४.८६ ब, स्थिति ४.४५७ अ।

द्वितीयावली—आवली १.२७६ ब।

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व—२.४६२ ब, अन्तरकरण १.२५ ब, उपशम १.४३६ अ, करणत्रिक २.६-१४, श्रेणी ४.७४ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६६ ब, सासादन ४.४२६ अ। प्ररूपणा—बंध ३.१०८, बधस्थान ३.११२, उदय १.३८५, उदयस्थान १.३८७, १.३८६, १.३६२, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान

४.२८६, ४.२८६, त्रिसंयोगी भंग १४००। सत् ४१५८, संख्या ४१०६, क्षेत्र २.२०६, स्पर्शन ४.४६३, काल २.११८, अन्तर १.४ अ, अल्पबहुत्व १.१४३।

द्विबल—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब।

द्विपर्व—२.४६२ ब, विद्या ३.५४४ अ।

द्विपुण्ड्र—२.४६२ ब, नारायण ४१८ अ, वासुपूज्यनाथ २.३६१, भावि शलाकापुरुष ४२६ अ।

द्विरवरथ—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब।

द्विरूप—घनधारा, घनाघनधारा, वर्गधारा २.२२६ अ।

द्विविस्तारात्मक—२.४६२ ब।

द्विशत षट्पञ्चाशत—उत्कृष्ट असख्यातासंख्यात की सहनानी २.२१६ अ, जघन्य परीतान्त की सहनानी २.२१६ अ, ध्रुवराशि की सहनानी २.२१६ अ।

द्विसंधान महाकाव्य—इतिहास १.३४२ अ।

द्विस्थानीय—अनुभाग १.६१ ब।

द्विद्विज्य जाति नाम कर्म—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६, बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा-स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भंग १.४०६। सक्रमण ४.८४ ब, अल्प-बहुत्व १.१६८।

द्विद्विज्य जीव—अवगाहना १.१७६, आयु १.२६३, १.२६४, इन्द्रिय १.३०६ ब, जीव २.३३३ ब, जीवसमास २.३४३, त्रस २.३६८, प्राण ३.१५४ अ, संक्लेश विशुद्धि स्थानों का अल्पबहुत्व १.१६०। प्ररूपणा—बन्ध ३.१०३, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६६, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४.१६५, संख्या ४.६६, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८३, काल २.१०६, अन्तर १.११, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५।

द्वीप—२.४६२ ब, कुरुवंश १.३३५ ब, गणित (परिधि, सूची, व्यास तथा क्षेत्रफल) २.२३३ ब, चक्रवर्ती का वैभव ४.१३ अ, चातुर्वर्षिक भूगोल ३.४३७ अ, बलदेव का वैभव ४.१८ अ, बौद्धाभिमत ३.४३४ ब, वैदिकाभिमत ३.४३१ ब।

द्वीप—जीनाभिमत द्वीप सागर—नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, संख्या ३.४४२ अ, अंकन ३.४४३।

गंगा आदि कुण्डों में स्थित—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४८४, वर्ण ३.४७७, अंकन ३.४४७। लवण सागर में स्थित—निर्देश ३.४६२ अ, विस्तार ३.४७६, अंकन ३.४६१।

द्वीपकुमार—२.४६२ ब, भवनवासी देव—निर्देश ३.२१० ब, नामनिर्देश ३.२०८ अ, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १.१६८, अवस्थान ३.२०६ ब, ३.६१२-६१४, ३.४७१, आयु १.२६५। इन्द्र—निर्देश ३.२०८ अ, शक्ति आदि ३.२०८ ब, परिवार ३.२०६ अ।

द्वीपकुमार प्ररूपणा—बध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२, उदीरणा १.४११, अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४.१८८, संख्या ४.६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४ अन्तर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

द्वीपवाह—राक्षसवश १.३३८ अ।

द्वीपसागरप्रज्ञप्ति—२.४६२ ब, श्रुतज्ञान ४.६८।

द्वीपसिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३।

द्वीपायन—कुरुवंश १.३३५ ब, तीर्थकर २.३७७।

द्वेष—२.४६२, अतीत द्वेष ३.३१८ ब, अशुभोपयोग १.४३३ ब, उपयोग १.४३३ अ, प्रत्यय ३.१२६ अ, कषाय २.३६ अ, त्याग ३.३६७ ब, मूर्त ३.३१८ ब; राग ३.३६५ अ, ३.३६७ ब, विभाव ३.५५८ ब, सत्त्व ४.५२८, सम्यग्दृष्टि ४.३५१ ब, हिंसा १.२१६ अ, १.२१७ ब।

द्वेषिकी क्रिया—हिंसा ४.५३२ अ।

द्वेषोदय—सम्यग्दर्शन ४.३५१ ब।

द्वैत—२.४६३ अ, द्रव्य २.४५८ ब।

द्वैतदर्शन—वेदान्त ३.५६६ अ।

द्वैतनय—अद्वैतनय १.४७ अ, नय २.५२३ अ।

द्वैतपक्ष—द्रव्य २.४५८ अ।

द्वैतवाद—वेदान्त ३.५६६ अ।

द्वैताद्वैत—वेदान्त ३.५६७ अ।

द्वैताद्वैत नय—अद्वैतनय १.४७ अ।

द्वैताद्वैतवाद—वेदान्त ३.५६८ ब।

द्वीपायन—२.४६३ अ, तीर्थकर २.३७७।

द्वयधर्मगुणहानि—उदय १.३७१, गणित २.२३१ ब।

द्विचाश्रय महाकाव्य—२.४६३ ब, इतिहास १.३४४ अ।

ध

धणकुमारचरित—इतिहास १.३४५ ब १.

धन—२.४६३ ब, गणित २.२२२ ब, पदधन-सर्वधन आदि २.२२६ ब, दान २.४२४ अ ।

धनकुमारचरित्र—२.४६४ अ, इतिहास १.३४४ ब, १.३४६ अ ।

धनंजय—२.४६३ ब, कवि—इतिहास १.३२६ ब, १.३४२ अ, यदुवश १.३३७, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, ३.५४६ अ, विद्याधरवश १.३३६ अ ।

धनंजय निघण्टु—इतिहास १.३४२ अ ।

धनद—लोकपाल कुबेर ३.४६१ ब ।

धनद-कलश-व्रत—२.४६३ ब ।

धनदेव—२.४६३ ब ।

धनपति—२.४६३ ब, अरहनाथ २.३७८ ।

धनपाल—२.४६३ ब, कवि—इतिहास १.३३० अ, १.३४२ अ । द्वितीय—इतिहास १.३३२ ब, १.३४५ ब, यक्ष ३.३६६ अ ।

धनपालक—गणधर २.२१३ अ ।

धनप्रभ—राक्षसवश १.३३८ ब ।

धनमित्र—नारायण ४.१८ अ ।

धनराशि—२.४६३ ब ।

धनानन्द—२.४५३ ब, नन्दवश १.३१० ब, १.३१३ ।

धनिष्ठा—२.४६३ ब, तीर्थकर २.३८५, वसु नक्षत्र २.५०४ ब ।

धनुष—२.४६३ ब, क्षेत्रप्रमाण २.२१५ अ, जीव, प्राण आदि का क्षेत्रफल २.२३३ अ ।

धनुषपृष्ठ—२.४६४ अ, क्षेत्रफल आदि २.२३३ अ ।

धन्य—२.४६४ अ, अनुत्तरोपपादिक १.७० ब ।

धन्यकुमारचरित्र—२.४६४ अ, इतिहास १.३४४ ब, १.३४६ अ ।

धम्मपरिखला—इतिहास १.३४३ अ, १.३४६ ब ।

धम्मरसायण—२.४६४ अ, इतिहास १.३४२ ब ।

धर—यदुर्विश १.३३६ ।

धरण—२.४६४ अ, तौल का प्रमाण २.२१५ अ, पद्मप्रभ-नाथ २.३८० ।

धरणा—शीतलनाथ २.३८८ ।

धरणानन्द—नागकुमारेन्द्र—निर्देश ३.२०८ अ, आयु १.२६५, परिवार ३.२०६ अ, निवास ३.२०६ ब ।

धरणी—२.४६४ अ, धारणा २.४६१ अ, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ ।

धरणीतिलक—२.४६४ अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ ।

धरणीधर—२.४६४ अ ।

धरणीवराह—२.४६४ अ, महीपाल ३.२६२ ब ।

धरणेन्द्र—२.४६४ अ, विद्याधरवश १.३३८ ब ।

धरसेन—२.४६४ अ । मूलसंघ १.३१७, १ परि०/२१, २, ७, ८, १ परि०/१० । मूलसंघ विभाजन १.३२२ ब । इतिहास १.३२८ ब, १.३४० अ । पुन्नाट संघ—१.३२७ अ, इतिहास १.३२६ अ । सेनसंघ—१.३२६ अ, इतिहास १.३३२ ब, १.३४५ अ ।

धराधर—२.४६४ अ, विद्याधर नगरी ३.५६३ अ ।

धर्म (नाम)—बलदेव ४.१६ अ, वासुपूज्य श्रेयासनाथ २.३८७, विमलनाथ २.३६१; श्रुतकेवली १.३१६ ।

धर्म (न्याय)—पक्ष ३.३ अ ।

धर्म (पुरुषार्थ)—२.४६४ अ, अनुकंपा १.६६ ब, अनुभव १.८५ ब, अभिप्राय मिथ्यादृष्टि ३.३०६ ब, अवर्ण-वाद १.२०१ अ, उपदेश १.४२४ अ, उपयोग १.४३४ अ, १.४३५ अ, करुणा २.१५ अ, कल्कि २.३१ अ, गुप्ति २.२५० ब, चारित्र २.२८५ ब, २.२८६ अ, चिदानन्द १.८५ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०१ अ, निश्चय १.८५ ब, २.४७१ अ, पुण्य १.४३५ ब, मिथ्यादृष्टि ३.३०३ अ, ३.३०४ अ, ३.३०५ अ, वैराग्य (मिथ्या-दृष्टि) ३.३०३ अ, व्यवहार २.४७१ अ, शुभोपयोग १.४३५ अ, श्रावक ४.५१ अ, समिति २.२५० ब, सम्यग्दर्शन ४.३५६ अ, सुख ४.४३१ ब ।

धर्म (स्वभाव)—अनन्त २.२४४ ब, अनेकात १.१०८ ब-१११, एकान्त १.४६० ब, १.४६२ ब, १.४६३ अ, गुण २.२४० अ, २.२४४ ब, २.३३७ अ, जीव २.३३७ अ, सप्तभगी (सर्वथा) ४.३२५ अ, सापेक्ष १.१०६, ४.३२२ ब, ४.४६८ ब, स्याद्वाद ४.४६८ ब, स्वभाव ४.५०६ अ-ब, ४.५०७ ब ।

धर्म-अनुप्रेक्षा—१.७५ अ, १.७६ ब ।

धर्मकथा—उपयोग १.४२६ ब, कथा २.२ अ ।

धर्मकीर्ति—२.४७६ अ, नन्दिसंघ १.३३३ ब, इतिहास १.३३३ ब । बौद्धाचार्य—इतिहास १.३२६ अ ।

धर्मचन्द्र—२.४७६ अ, नन्दिसंघ भट्टारक १.३३४ अ, १.३२३ ब, इतिहास १.३३४ ब ।

धर्मचक्र—२.४७६ ब, समवसरण ४.३३१ अ ।

धर्मचक्र व्रत—२.४७६ ब ।

धर्मदत्तचरित्र—२.४७६ ब, इतिहास १.३४६ अ ।

धर्मद्रव्य—अनुभाग १.८८ अ, उत्पादादि १.३६२ ब, उप-

कार २.६३ ब, २.६५ अ, काल २.८५ अ, द्रव्य २.४८७ ब ।

धर्मधर—२.४७६ ब, इतिहास १.३३३ अ, १.३४६ अ ।

धर्मध्यान—२.४७६ ब, अनुप्रेक्षा १.७६ अ, अनुभव १.८५ अ-ब, अनुभव (गुणस्थान) १.८५ ब, ध्याता २.४६२ अ, २.४६३ अ, प्रतिक्रमण ३.११७ ब, बाह्य धर्म-ध्यान २.४८१ अ, शुभोपयोग १.४३१ ब ।

धर्मनदि—नन्दिसप्त भट्टारक १.३२३ ब ।

धर्मनाथ—२.४८७ अ, पूर्वभव आदि २.३७६-३६१, वज्र २.३७६ ।

धर्मपत्नी—स्त्री ४.४५० ब ।

धर्मपरीक्षा—२.४८७ अ, अमितगति १.१३२ अ, इतिहास १.३४३ अ, १.३४४ अ ।

धर्मपाल—२.४८७ अ ।

धर्मपुरुषार्थ—३.७० अ, (विशेष दे० धर्म) ।

धर्मभूषण—२.४८७ अ । इतिहास—प्रथम १.३३२ ब, द्वितीय १.३३२ ब, १.३४५ ब, तृतीय १.३३२ ब ।

धर्ममूढता—मूढता ३.३१५ ब ।

धर्मयुगल—अनेकान्त १.१०६ अ ।

धर्मरत्नाकर—२.४८७ अ, इतिहास १.३४३ अ ।

धर्मरसिक—इतिहास १.३४७ ब ।

धर्मरत्न—चक्रवर्ती ४.१० अ ।

धर्मविलास—२.४८७ अ ।

धर्मवीर्य—पद्मप्रभनाथ २.३६१ ।

धर्मशर्माभ्युदय—२.४८७ अ, इतिहास १.३४३ अ ।

धर्मश्रवण—सम्यग्दर्शन का निमित्त ४.३६३ अ ।

धर्मश्री—सम्भवनाथ २.३८८ ।

धर्मसंग्रह—२.४८७ अ, इतिहास १.३४६ अ ।

धर्मसागर—इतिहास १.३३४ ब ।

धर्मसूरि—२.४८७ अ ।

धर्मसेन—२.४८७ अ, मूलसप्त १.३१६, लाडबागड सप्त १.३२७ ब । इतिहास—प्रथम १.३२८ अ, १.३२६ ब, द्वितीय १.३३० अ ।

धर्माकर दत्त—२.४८७ ब, अर्चट १.१३४ ब ।

धर्माधर्म (द्रव्य)—२.४८७ ब ।

धर्मानुप्रेक्षा—१.७५ अ, १.७६ ब ।

धर्मानुराग—शुभोपयोग १.४३४ अ, १.४३५ अ, राग ३.३६५ अ ।

धर्माभूत—२.४६० ब, इतिहास १.३४४ अ ।

धर्मार्थ—सम्भवनाथ २.३८८ ।

धर्मास्तिकाथ—दे० धर्मद्रव्य ।

धर्मोत्तर—२.४६० ब ।

धर्मोपदेश—उपदेश १.४२४ अ, उपयोग १.४३० अ ।

धर्मोपदेशपीयूषवर्षा श्रावकाचार—इतिहास १.३४६ ब ।

धर्मोपदेष्टा—वक्ता ३.४६६ ब ।

धर्म्य—धर्मध्यान २.४७८ अ ।

धव—पार्श्वनाथ २.३८३ ।

धवल (कवि)—२.४६१ अ, इतिहास १.३४३ ब ।

धवल रुधिर—अर्हन्त १.१३७ ब ।

धवल सेठ—२.४६१ अ ।

धवला—२.४६१ अ, इतिहास १.३४१ ब ।

धवलाचार्य—२.४६१ अ, इतिहास १.३३१ अ ।

घातकीखंड—२.४६१ अ । निर्देश ३.४६२ ब, नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अकन ३.४४३, चित्र (सं० ३७) ३.४६४, ज्योतिष चक्र २.३४८, अधिपति देव ३.६१४ । द्वितीय घातकीखण्ड ३.४७० अ । वैदिकाभिमत ३.४३२ ब ।

घातकीखंडसिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३ ।

घातकी वृक्ष—३.५७८ ब, निर्देश ३.४६३ अ, विस्तार ३.४५८ अ, वर्ण ३.४७७, अकन ३.४६३ ।

धातु—२.४६१ अ, औदारिक शरीर १.४७१ ब ।

धात्री दोष—२.४६१ अ, आहार १.२६१ अ, वर्णिका ३.५२६ अ ।

धान्यमाष फल—तौल का प्रमाण २.२१५ अ ।

धान्यपुर—चक्रवर्ती ४.१० ब ।

धान्यरस—रस ३.३६२ ब ।

धायदोष—आहार १.२६१ अ, वसतिका ३.५२६ अ ।

धारण—कुरुवश १.३३५ ब, यदुवश १.३३७, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ ।

धारणा—२.४६१ अ, आग्नेयी आदि १.३६ अ, ईहा ज्ञान १.३५१ ब, उपयोग १.४३४ अ, ज्ञानत्व १.३५१ ब, ध्यान २.४६६ अ, ध्रुवज्ञान ३.२५८ ब, प्रौढधोपवास ३.१६३ ब, मतिज्ञान ३.२५३ अ, ३.२५८ ब, विषकुम्भ १.४३४ अ ।

धारणा (नाम)—श्रेयासनाथ २.३८८, सुमेरु पर्वत के वनो मे देव भवन—निर्देश ३.४५० अ, अकन ३.४५१ ।

धारणावरणी कर्म—ऋद्धि १.४४६ अ ।

धारणी—२.४६१ ब, विद्या ३.५४४ अ ।

धारा—२.४६१ ब, गणित २.२२६ अ ।

धारागृह—चक्रवर्ती ४.१५ अ ।

धाराचारण ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५३ अ ।

धारा नगरी—२.४६१ ब ।

धारावाहिक ज्ञान—श्रुतज्ञान ४.५६ ब ।
 धारिणी—२.४६१ ब, कुलकर ४.२३, विद्या ३.५४४ अ ।
 धार्मिक क्रिया—क्रिया २ १७३ अ ।
 धीमान्—यदुवश १ ३३७ ।
 धीर—२ ४६१ ब, मल्लिनाथ २ ३७८, यदुवश १ ३३७
 धूतरथ—कुरुवश १.३३५ ब ।
 धूप—पूजा ३ ७८ ब ।
 धूपघट—समवसरण ४ ३३० ब, ४.४३१ अ ।
 धूपदशमी व्रत—२ ४६१ ब ।
 धूपनी—चैत्यालय २ ३०२ अ ।
 धूम—ग्रह २.२७४ अ ।
 धूमकेतु—२ ४६१ ब, ग्रह २ २७४ अ ।
 धूमचारणकृद्धि—१ ४५२ ब ।
 धूमदोष—२ ४६२ अ, आहार १.२६२ अ, वसतिका
 ३ ५३० अ ।
 धूमप्रभा—२ ४६२ अ । पंचम नरक पृथिवी—निर्देश
 २.५७६ अ, पटल २ ५७६, इन्द्रक श्रेणीबद्ध २ ५७८,
 ५८०, विस्तार २.५७६, २ ५७८, अंकन ३.४५७ ।
 नारकी - अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १ १६८ अ,
 आयु १.२६३ ।
 धूमप्रभा—प्ररूपणा—बन्ध ३.१००, बन्धस्थान ३ ११३,
 उदय १ ३७६, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा
 १.४११ अ, सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४ २६८,
 ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०६ ब । सत् ४ १७०,
 सख्या ४.६५, क्षेत्र २ १६७, स्पर्शन ४.४७६, काल
 २ १०१, अन्तर १ ८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व
 १.१४४ ।
 धूलिरेखा—क्रोध २ ३८ अ ।
 धूलिशाल—२.४६२ अ, शीतलनाथ २.३८४, समवसरण
 ४ ३३० ब ।
 धृत—कुरुवंश १ ३३५ ब, निषध पर्वत का कूट तथा देव -
 निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ ।
 धृततेज—कुरुवंश १.३३५ ब ।
 धृतधर्मा—कुरुवंश १ ३३५ ब ।
 धृतपद्म—कुरुवंश १ ३३५ ब ।
 धृतमान—कुरुवंश १.३३५ ब ।
 धृतयश—कुरुवंश १ ३३५ ब ।
 धृतराज—कुरुवंश १.३३६ अ ।
 धृतराष्ट्र—२.४६२ अ, कुरुवंश १.३३६ अ-ब ।
 धृतवीर्य—कुरुवंश १.३३५ ब ।
 धृतव्यास—कुरुवंश १ ३३५ ब ।

धृतिकूट—निषध पर्वत—निर्देश ३ ४७२, विस्तार ३ ४८३,
 अंकन ३ ४४४ । रुचकवर पर्वत—निर्देश ३ ४७६ अ,
 विस्तार ३.४८७, अंकन ३ ४६६ ।
 धृतिक्रिया—संस्कार ४ १५१ अ ।
 धृतिक्रिया मन्त्र—मन्त्र ४ २४६ ब ।
 धृतिकर—कुरुवंश १ ३३५ ब, १.३३६ अ ।
 धृतिक्लेश—कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ ।
 धृतिदृष्टि—कुरुवंश १ ३३५ ब ।
 धृतिदेव—कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ ।
 धृतिदेवी—२ ४६२ अ, तिगिच्छ हृदवासिनी—निर्देश
 ३ ४५३ ब, अवस्थान ३ ६१४ अ, भवन-विस्तार
 ३ ६१५, परिवार ३ ६१२ अ, आयु १ २६५ । निषध
 पर्वतवासिनी ३ ४५३ ब । रुचकपर्वतवासिनी ३.४७६
 अ, अंकन ३ ४६६ ।
 धृतिभावना—३ २२४ ब ।
 धृतिमित्र—कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ ।
 धृतिषेण—२.४६२ अ, मूलसव १ ३१६, इतिहास
 १ ३२८ अ ।
 धृतेन्द्र—कुरुवंश १ ३३५ ब ।
 धृतोदय—कुरुवंश १ ३३५ ब ।
 धैर्या—२ ४६२ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ ।
 धैवत—स्वर ४ ५०८ ब ।
 ध्याता—२ ४६२ अ ।
 ध्यान—२ ४६४ अ, अनुभव १ ८५ ब, अभ्यास १ १३१
 ब, आत्मा ३ ७ ब, उपयोग १ ४३१ अ, एकाग्र
 १ ४६५ ब, कृतिकर्म २ १३६ अ, केवली २ १६५ अ,
 चिन्तानिरोध १ ४६५ ब, धर्म-ध्यान २ ४८१ अ,
 ध्याता २.४६३ अ, निश्चय १ ८५ ब, पदस्थ ३.६ ब,
 ३ ७ ब, पूजा ३.७५ अ, प्रशस्त ३ १५१ ब, प्राणायाम
 ३ १५५ ब, ३ १५६ अ, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब, भावना
 २.३४६ ब, योग ३ ३७५ अ, वर्णमातृका ३.६ ब,
 शुभोपयोग १ ४ ३१ अ, संहनन ४ १५५ ब, सल्लेखना
 ४.३६० ब, ४ ३६२ अ, सामायिक ४ ४१७ ब ।
 ध्यानशुद्धि—४ ४० ब ।
 ध्यानस्तव (शास्त्र)—इतिहास १ ३४५ अ ।
 ध्यानस्थ—योग ३.३८० अ ।
 ध्यानस्थ पुरुष—केवली २ १५५ अ ।
 ध्येय—तत्त्व २ ३५३ अ, ध्यान २ ४६६ ब, पदस्थ ध्यान
 ३ ५ ब, ३.६ ब, परम भाव ३ १३ अ, परमेष्ठी
 ३.३०६ ब, भाव ३ ३०६ ब, मिथ्यादृष्टि ३.३०६ ब
 मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब, समयसार ४ ३२६ अ, सामायिक
 ४.४१७ अ, शुद्धोपयोग १ ४३१ अ ।

ध्रुव—अनुभाग १.८१ अ, उत्पादादि १.३५८ अ, ध्येय २.५०२ ब, पर्याय (उत्पादादि) १.३६२ अ, प्ररूपणा—३.११४, मतिज्ञान ३.२५८ अ, यदुवंश १.३३७, स्थान ४.४५३ अ।

ध्रुवपद—१.१०२ ब, १.१०३ ब।

ध्रुवबन्धी प्रकृति—३.८८ अ, ३.९१ अ, ३.९२ अ।

ध्रुवराज—२.५०३ अ, अकालवर्ष १.३१ अ।

ध्रुवराशि—सहनानी २.२१९ अ।

ध्रुवशून्य वर्गणा—३.५१३ अ-ब।

ध्रुवसेन—२.५०३ अ, इतिहास १.३२८ अ।

ध्रुवस्कंध वर्गणा—३.५१३ अ, ब, ३.५१५ ब, ३.५१६ अ।

ध्रुवोदयी प्रकृति—उदय १.३६६ ब, १.३७४ ब।

ध्रौव्य—अस्तित्व १.२१२ ब, उत्पादादि १.३५८ अ, पर्याय (उत्पादादि) १.३६१ ब।

ध्वजभूमि—२.५०३ अ, चैत्य-चैत्यालय २.३०३, समवसरण ४.३३० ब।

ध्वजमाल—विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

ध्वजा—चैत्य-चैत्यालय २.३०२ अ, २.३०३ अ।

ध्वनि—ओम् (ऊँकार) १.४६६ ब, स्फोट ४.४६५ अ।

ध्वान—२.५०३ अ।

न

नंद—२.५०३ अ, तीर्थंकर २.३७७, नमिनाथ व वर्द्धमान २.३७८, शान्तिनाथ २.३८३, साख्यदर्शन ४.३६८ ब। मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ अ, अकन ३.४६४।

नंदन—२.५०३ अ, अनुत्तरोपपादक १.७० ब, गणधर २.२१२ ब, चक्रवर्ती ४.१० ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ, तीर्थंकर २.३७७, नन्दन वन का खण्ड ३.४५० अ, यदुवंश १.३३७, वर्द्धमान २.३७८, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

नंदन (कूट)—रुचकवर पर्वत का कूट - निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६९। सुमेरु पर्वत के वन का कूट निर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४५१।

नंदन (देव)—मानुषोत्तर पर्वत के कूट का—निर्देश ३.४७५ अ, अकन ३.४६४।

नंदन (स्वर्गपटल)—सौधर्म स्वर्ग का पटल - निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४.५१६ ब। देव-आयु १.२६६।

नंदनपुर—प्रतिनारायण ४.२० ब।

नंदनवन—चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ, सुमेरु पर्वत का वन—निर्देश ३.४५० अ, विस्तार ३.४८८, अकन ३.४४४, ३.४५७, ३.४६४ के सामने। (चित्र सं. ३७), चित्र ३.४५१।

नदपुरी—बलदेव ४.१६ ब।

नंदवश—२.५०३ अ, इतिहास १.३१३।

नंदवती—नंदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३ ब, नामनिर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४६१, अकन ३.४६५। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अकन ३.४६८।

नंदसप्तमी व्रत—२.५०३ अ।

नन्दा—२.५०३ ब, इन्द्रों की वल्लभिका देवी ४.५१३ ब। नन्दीश्वर द्वीप की वापी ३.४६३ ब, नामनिर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४६१, अकन ३.४६५। मनुष्यलोक ३.२७५ ब। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अकन ३.४६८, ३.४६९। वाचना ३.५३१ ब, शीतलनाथ २.३८०।

नन्दावती—२.५०३ ब।

नदि—२.५०३ ब, मूलसंघ १.३१६। नन्दीश्वर द्वीप का सागर का रक्षक देव ३.६१४।

नदि-अन्वय—त्रिविडसंघ १.३२० ब।

नदिघोषा—२.५०३ ब, नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३ ब, नामनिर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४६१, अकन ३.४६५।

नदितट गच्छ—काष्ठासंघ १.३२१ अ, जैनाभासी संघ १.४६५ अ।

नदितटग्राम - काष्ठासंघ १.३२१ अ।

नंदिन—भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ।

नंदिनी—२.५०३ ब, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ, व्यन्तरेन्द्र वल्लभिका ३.६११ ब।

नंदिप्रभ—२.५०३ ब, नन्दीश्वर द्वीप सागर का रक्षक देव ३.६१४।

नंदिभूति—भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ।

नंदिभूतिक—भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ।

नंदिमित्र—२.५०३ ब, आचार्य—मूलसंघ १.३१६, इतिहास १.३२८ अ, गणधर २.२१३ अ, बलदेव २.३९१, ४.१६ अ, भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ।

नदिवर्द्धन—२.५०३ ब, मगधदेश १.३१० ब, १ ३१२, १ ३१३ ।

नदिवर्द्धना—२ ५०३ ब, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३.४६६ ।

नदिवृक्ष—नन्दि सघ १. परि०/२.६, १ परि०/४.१ ।

नदिषेण—२ ५०३ ब, अच्युत १ ४१ अ, तीर्थकर वन्दप्रभु तथा सुपाश्वर्चनाथ २.३७८, पुस्ताटसधी आचार्य १ ३२७ अ, बलदेव ४.१६ अ, शालाकापुरुष ४.२६ अ ।

नदिषेणा—रुचक पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६८ ।

नदिसंघ—२.५०३ ब, इतिहास १.३१८ ब, मूलसंघ १ ३२२ ब, १, परि०/२ ३, माघनन्दि १. परि०/२.६, विशेष परिचय १ ३१८ ब, १ परि०/२ १, ३, ५, ७, १. परि०/४.१, २ । देशीय गण १ ३२४ ब, १ ३२५, बलात्कार गण १.३२३ अ, ब ।

नदि—गणधर २.२१३ अ, भावि शालाकापुरुष ४.२६ अ, मल्लिनाथ २ ३६१, शान्तिनाथ २.३८४ ।

नदीश्वर कथा—२ ५०३ ब ।

नदीश्वर द्वीप—२.५०४ अ, चैत्यचैत्यालय २.३०३ अ, निर्देश ३.४६३ ब, नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अंकन ३ ४४३, चित्र ३.४६५, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४ ।

नदीश्वरपंक्ति व्रत—२ ५०४ अ ।

नदीश्वर पूजा—३ ७५ ब ।

नदीश्वर सागर—२ ५०४ अ, नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३ ४७८ जल का रस ३ ४७० अ, अंकन ३.४४३, ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३ ६१४ ।

नदीसूत्र—२ ५०४ अ ।

नदीोत्तर—मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अंकन ३ ४६४ । रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३.४६८, ३.४६६ ।

नदीोत्तरा—२ ५०४ अ । नदीश्वर द्वीप की बापी—निर्देश ३.४६३ ब, नामनिर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३.४६१ । अंकन ३ ४६५ । रुचकवर पर्वत के कूट की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६८, ३ ४६६ ।

नद्यावर्त—चक्रवर्ती ४१५ अ, शान्तिनाथ २ ३८३, सुपाश्वर्चनाथ २ ३७६ ।

नद्यावर्त—२ ५०४ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ ब, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३.४६६ । सौधर्म

स्वर्ग का पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४.५१७, अंकन ४.५१६ ब, देव-आयु १ २६७ ।

नकुल—२.५०४ अ, कुसुवश १ ३३६ अ ।

नक्षत्रा—२.५०४ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

नक्षत्र—२ ५०४ अ, मूलसघ १ ३१६, इतिहास १.३२८ अ ।

नक्षत्र (ज्योतिषलोक)—निर्देश २ ३४६ ब, २.३५० ब, विमानों का विस्तार २ ३५१, किरणें तथा बाहक देव २ ३४७, गगनखड २ ३५० ब, वीथियाँ २ ३४६, गतिविधि २.३५० ब, चार क्षेत्र २ ३४६ अ, अंकन २ ३४८, २८ भेद २ ५०४ ब, उत्कृष्ट नक्षत्र (सल्लेखना) ४ ३६७ ब, वैदिकाभिमत ३.४३३ ।

नक्षत्र (ज्योतिषदेव)—नामनिर्देश २ ३४५ ब, २८ भेद २ ५०४ ब, इन्द्र नामनिर्देश २.३४५ ब, किरणें तथा शक्ति २.३४७, अवस्थान २.३४६ ब, परिवार २.३४६ अ, विमान सख्या २ ३४८ अ । देव—अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १ १६८, आयु १.२६६ । नक्षत्रदेव (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११, अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब । सत् ४ १८८, संख्या ४ ६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४ ४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

नक्षत्रदम—राक्षसवंश १ ३३८ ब ।

नक्षत्रमासा व्रत—२ ५०५ अ ।

नख—औदारिक शरीर १.४७२ अ ।

नख समानता—अर्हतातिशय १ १३७ ब ।

नग—यदुवंश १ ३३७ ।

नगनत्व—अचेलकत्व १ ४० ब, निर्ग्रथ २ ६२१ ब, लिंग ३.४१७ अ, ३.४१६ अ, परिषह १ ३६ ब, ३ ३३ ब, ३ ३४ अ, साधु ४.४०८ अ, ४.४०६ अ ।

नगर—२.५०५ अ । भवनवासी देवों के—निर्देश ३.२०७ ब ३ २१० अ । व्यन्तर देवों के—निर्देश ३.६१२ ब, बनावट ३ ६१२ ब, विस्तार ३ ६१५ अ, सख्या ३ ६१२ ब, विजयदेव की नगरी ३.६१२ ब । ज्योतिष देवों की—निर्देश २ ३५१ । वैमानिक देवों की—निर्देश ४.५२१ ब, विस्तार ४ ५२१ ब । लवणसागर में ३ ४६२, अंकन ३.४६१ ।

नगरनायिका—ब्रह्मचर्य ३ १६२ अ ।

नगरी—चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ, प्रत्येक महाक्षेत्र की राजधानी—निर्देश ३.४४६ अ, अंकन ३.४४४,

३४४७। विदेह क्षेत्रों की राजधानी—निर्देश ३४६०
अ, नामनिर्देश ३४७० ब, अकन ३४४४, ३४६०,
३४६४ के सामने (चि. स. ३७)।

नघुष—२.५०५ अ, इक्ष्वाकुवंश १३३५ ब।

नति—नमस्कार २.५०६ अ।

नतित्रय—कर्म २२६ अ, कृतिकर्म २.१३३ ब, सामायिक
४४१६ ब।

नथमल विलाल (कवि)—इतिहास १३३४ ब।

नदी—२.५०५ अ, चातुर्द्वीपिक भूगोल में ३४३७ ब, बौद्धा-
भिमत ३.४३४ ब, विहार काल में नदी का उल्लेखन
३५७४ ब। 'जैनाभिमत भूगोल के अनुसार प्रत्येक
क्षेत्र की महानदी, विदेह की महानदी तथा विभंगा
नदी—निर्देश ३४५५ अ, ३४६० अ, विभंगा नाम-
निर्देश ३४७४ ब, विस्तार ४४८६, ३४६०, अकन
३४४४, ३४४७, ३४६४ के सामने जल का वर्ण
३४७८, गणना ३४४५ ब।

नदीस्रोतन्याय—२.५०५ अ।

नन्नराज—२.५०५ अ।

नपुंसकवेद—२.५०५ अ, आहारक काययोग १२६७ ब,
कषाय २.३५ ब, नरकगति ३.५८६ ब, पुरुषवेद
३.५८६ अ, राग कषाय २३६ अ, सगति ४.११६ ब,
कालावधि का अल्पबहुत्व ११६१ ब।

नपुंसक-वेद-कर्मप्रकृति—निर्देश ३३४४ ब। प्ररूपणा—
प्रकृति ३८८, ३.३४४ अ, स्थिति ४.४६१, स्थिति
सत्त्व ४.३०८, स्थितिसत्त्व का अल्पबहुत्व ११६५ ब,
अनुभाग १६५ अ, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३६७, बन्ध-
स्थान ३१०६, उदय १.३७५, उदय की विशेषता
१३७३ ब, उदयस्थान १३८६, उदीरणा १.४११ अ,
उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान
४२६५, त्रिसयोगी भग १.४०१ ब। सक्रमण ४८५ अ,
अल्पबहुत्व ११६८।

नपुंसक-वेद-मार्गणा—प्ररूपणा—बन्ध ३.१०५, बन्धस्थान
३११३, उदय १.३८२, उदय की विशेषता १३७३ ब,
उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व
४.२८३, सत्त्वस्थान ४.३००, ४३०५, त्रिसयोगी भग
१४०७ अ, सत्त्व ४.२२६, सख्या ४.६४ ब, ४.१०४,
क्षेत्र २.२०३, स्पर्शन ४४८७, काल २.१११, अन्तर
१.१४, भाव ३२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४६।

नपुंसक-वेद-सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३ ब।

नभःसेन—शकवश १३१४, नरवाहन २.५८०, ब।

नभ—२.५०५ ब, ग्रह २२७४ अ, निमित्त ज्ञान २.६१२ ब।
नभचर जीव—निर्देश २३६७, अवगाहना १.१७६, आयु
१.२६३, इन्द्रिय १.३०६ ब, जीव समास २.३४३।

नभसेन—हरिवश १३४०, अ।

नभस्तिलक—२.५०५ ब, विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

नमस्कार—२.५०५ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०१ ब, मत्र
३२४८ अ, विनय ३५५२ अ, ३५५४ अ, शुभोप-
योग १.४३३ अ।

नमस्क्रिया—२.५०६ ब।

नमि—२.५०७ अ, अन्तकृत केवली १२ ब, उग्रवंश
१३३५ ब, गणधर २.२१३ अ, भोजवश १३३६ ब,
विद्याधरवश १३३८ ब, १३३६ अ।

नमिनाथ—२.५०७ ब।

नमिष—२.५०७ ब।

नमुचि—२.५०७ ब।

नमोऽस्तु—विनय ३५४६ अ।

नय—२.५०७ ब, अनुभव १.८१ ब, १८३ ब, अनेकान्त
११०६-१०८ ब, आगम १२३४ अ, १.२३७ ब,
उपक्रम १४१६ ब, उपचार १.४२३ अ, एकान्त
११०७ ब, निक्षेप २.५६२ अ, २.५६३ ब, पक्ष निषेध
१८१ ब, १८२ अ-ब, २.५१८ अ, प्रतिपक्ष का संग्रह
१२३७ ब, मिथ्यादृष्टि ३३१६ अ, लोप ४.४६६ अ,
शब्द प्रामाण्य १२३४ अ, सप्तभंगी ४.३१५ ब,
सम्यग्दृष्टि ४३७८ अ, स्याद्वाद ४.४६६ अ।

नयकीर्ति—२.५७० अ, नन्दिसंघ देशीय गण १३२४ ब,
इतिहास १.३३१ ब।

नयचक्र—२.५७० अ, इतिहास—द्वादशार १३२६ अ,
१३४० अ, लघु १३४२ ब।

नयदृष्टि—सम्यग्दर्शन ४.३५८ ब।

नयनदि—२.५७० अ, नन्दिसंघ १.३२३ ब, देशीयगण
१.३२५, इतिहास १.३३१ अ, १.३४३ ब।

नयनमुख (कवि)—२.५७० अ, इतिहास १.३३४ ब।

नयनोन्मीलनयंत्र—३.३५४।

नयप्रमाण—प्रमाण ३.१४५ अ।

नयवाद—एकान्त १४६५ अ, परतन्त्रवाद ३.१२ अ,
श्रुतज्ञान ४.६० अ।

नयविधि—श्रुतज्ञान, ४.६० अ।

नयविवरण—२.५७० अ, इतिहास १.३४१ ब।

नयसेन—२.५७० अ, काष्ठासंघ १.३२७ अ, इतिहास
१.३३१ ब, १३४४ अ।

नयांतरविधि—श्रुतज्ञान ४.६० अ।

नयाधिपति—निश्चय नय २.५५६ अ ।

नयार्थ—आगमार्थ १ २३० अ, कर्तकर्म २.२४ ब ।

नयुत—काल का प्रमाण २.२१६ अ ।

नयुतांग—काल का प्रमाण २ २१६ अ ।

नर—२ ५७० अ ।

नरकगति—निर्देश २ ५७१ ब, २ ५७२ अ, अधःकर्म १ ४८ ब, अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १ १६४, १ १६८ अ, अमुरकुमार १ २१० ब, आयु १ २६३, आयुबन्ध १ २६२ अ, आयुबन्ध के अपकर्ष काल १ २५६ ब, ईर्यापथ कर्म १ ३४६ अ, कषाय २ ३८ अ, क्रोधादि की कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, गति (जन्म-मरण तथा गुणप्राप्ति) २.३१३ अ, २.३१६ ब, २ ३२१ ब, २.३२२ अ, गुणस्थान २ ५७४ ब, तीर्थ-कर प्रकृति २.३७६ ब, दुख २.४३४ ब, २ ५७२ अ, भवधारण सीमा २ ३२१ ब, मृत्यु अकाल ३.२८४ अ, लेश्या ३ ४२८ ब, वनस्पति ३ ५०६ अ, शरीर २ ५७३ ब, ३ ६०२ ब, सम्यक्त्व २.५७१ ब ।

नरकगति (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१००, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदयसत्त्व १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब । सत् ४ १६५, सख्या ४.६५, क्षेत्र २ १६७, स्पशंन ४.४७६, काल २.१०१, अन्तर १ ६, १ ८, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४ ।

नरकगति नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३ १३६ । बन्ध ३ ६७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, उद्वेलना युक्त मे सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिस-योगी भग १ ४०४ । संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८ ।

नरकगत्यानुपूर्वी नामकर्म प्रकृति—आनुपूर्वी १.२४७ अ, प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३.१३६ । बन्ध ३.६७, बन्ध स्थान ३ ११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४ । संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८ ।

नरकचतुष्क—१ ३७४ ब ।

नरकत्रिक—१.३७४ ब ।

नरकद्विक—१.३७४ ब ।

नरकप्रस्तर—निर्देश २.५७६ ब, नामनिर्देश २ ५७६ अ, विस्तार २ ५७६ ब, अंकन ३.४४१ ।

नरकबिल—इन्द्रक श्रेणी वद्ध प्रकीर्णक २ ५७८-५७९, चित्र ३ ४४१ ।

नरकमुख—२ ५८० अ । नारद ४ २१ अ ।

नरकलोक—निर्देश २ ५७६ अ, अंकन ३ ४३६, चित्र ३.४४१ ।

नरकलोक सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३ ।

नरकांता कुंड—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३.४६०, अंकन ३ ४४७ ।

नरकांता कूट—२ ५८० अ, नरकान्ता कुंड में स्थित—निर्देश ३ ४५६ अ, विस्तार ३ ४८४, वर्ण ३ ४७७, अंकन ३.४४४, नील पर्वत का—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४४४ । रुक्मि पर्वत का—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ ।

नरकांता देवी—२ ५८० अ । नरकान्ता नदी के कुण्ड की देवी ३.४५५ अ, नील पर्वत के कूट की देवी ३.४७२ अ, रुक्मि पर्वत के कूट की देवी ३ ४७२ ब ।

नरकांता नदी—२ ५८० अ, रम्य क्षेत्र की महानदी—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४८६, ३ ४६०, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, जल का वर्ण ३ ४७८ ।

नरकायु कर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, १ २५३, स्थिति ४ ४६२, प्रदेश ३.१३६ । बन्ध ३ ६७, बन्ध योग्य परिणाम १ २५४ ब, बन्धस्थान ३ १०८, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्व स्थान ४ २६४, त्रिसयोगी भग १ ४०१ । अल्पबहुत्व १.१६८ ।

नरकैन्द्रक—निर्देश २ ५७६ ब, नाम निर्देश २.५७६-५८०, विस्तार २ ५७८-५८०, अंकन ३.४४१, संख्या २.५७८-५८० ।

नरगीत—२ ५८० अ, विद्याधर ३.५४५ अ ।

नरचंद्र—नन्दिसघ १ ३२३ ब ।

नरतगति—२ ५७१ ब, विशेष दे० नरक गति ।

नरगीत—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

नरदेव—प्रतिनारायण ४.२० ब । यदुवश १.३३७ ।

नरधर्मा—भोजवश १.३१० अ ।

नरपति—२.५८० ब, चक्रवर्ती ४.१० अ, यदुवश १ ३३६ ।

नरमद—२.५८० ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ ।

नरवक्त्र—नारद ४.२१ अ ।

नरवर्मा—२.५८० ब ।

नरवाहन—२.५८० ब, शकवंश १.३२० ब, १.३१४ ।

नर-वृषभ—२.५८० ब ।

नरसेन—२.५८० ब । इतिहास १.३३२ ब, १.३४५ अ ।

नरहरि—कुरुवंश १.३३५ ब ।

नरेंद्रकीर्ति—नन्दिसघ १.३२३ ब ।

नरेंद्रसेन—२.५८० ब, सेनसंघ १.३२६ ब, लाडबागड सघ १.३२७ ब । इतिहास १.३३१ ब, १.३४३ ब ।

द्वितीय १.३३४ ब, १.३४८ अ ।

नर्मदा—२.५८० अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

नल—२.५८० ब । वानरवंश १.३३८ ब ।

नलकूबर—२.५८० ब ।

नलगच्छ—आशाधर १.२८० ब ।

नलदियार—२.५८० ब ।

नलिन—२.५८१ अ, कालप्रमाण २.२१६ अ, २.२१७ अ, भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ । विदेह क्षेत्र ३.४७० ब । रुक्मवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६८, ३.४६९ । सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४.५१६ ब, देव आयु १.२६६ ।

नलिन कूट—वक्षार पर्वत—निर्देश ३.४६० अ, नाम निर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७ । इस पर्वत का कूट तथा देव ३.४७२ ब ।

नलिनगुल्म—तीर्थकर श्रेयाननाथ तथा विमलनाथ २.३७८ ।

नलिनगुल्मा—सुमेरु के बनो की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नामनिर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अकन ३.४५१, चित्र ३.४५१ ।

नलिनध्वज—भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ ।

नलिनपुल—भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ ।

नलिनपुगव—भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ ।

नलिनप्रभ—२.५८१ अ, भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ, श्रेयासनाथ २.३७८ ।

नलिनराज—भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ ।

नलिनांग—२.५८१ अ, कालप्रमाण २.२१६ अ, २.२१७ अ ।

नलिना—२.५८१ अ, सुमेरु के बनो की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नामनिर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अकन ३.४५१, चित्र ३.४५१ ।

नलिनावर्त—२.५८१ अ । वक्षारगिरि—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४, वर्ण ३.४७७ ।

इस पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४ ।

नलिनी—२.५८१ अ, पुष्करिणी—निर्देश ३.४५० ब, ३.४५३ ब, नामनिर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अकन ३.४५१ चित्र ३.४५० ब । विदेहक्षेत्र—३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने चित्र ३.४६० अ । वक्षारगिरि का कूट तथा देव ३.४७२ ब ।

नव—असख्यात लोक की सहनानी २.२१६ अ, अनुदिश ४.५१० अ, केवललब्धि ३.४१२ अ, कोटिगुद्ध आहार १.१२१ अ, १.२१२ ब, (नव) कोटिगुद्ध ब्रह्मचर्य ३.१८६ ब, ग्रैवेयक ४.५१० अ, तत्त्व ३.३३७ अ, ४.३५६ ब, देवता २.४४४ ब, नारद ४.२१ अ, नारायण ४.१८ अ । निधि—चक्रवर्ती ३.१४ ब, समवसरण ४.३३० ब, ४.३३१ अ । पदार्थ ३.८ अ, ३.२१८ अ, ४.३६० अ, पूर्वधर ४.३६ अ-ब, प्रतिनारायण ४.२० अ, बलदेव ४.१६ अ । स्पर्धक शलाका की सहनानी २.२१६ अ ।

नव अनुदिश—स्वर्ग—निर्देश ४.५१० अ, इन्द्रक श्रेणी-बद्ध ४.५१८, ४.५२०, कल्पातीत ४.५१० अ, अह-मिन्द्र ४.५१० अ, अकन ४.५१५, चित्र ४.५१७ । देव—निर्देश २.४४५ ब, अवगाहना १.२८१ ब, अवधिज्ञान १.१६८ ब आयु १.२६६, आयु बन्ध के योग्य परिणाम १.२५८ ब, सम्यक्त्व २.४४८ अ ।

नव अनुदिश (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्याग ४.२६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१६२, सख्या ४.६८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

नवक प्रबद्ध—उपशम १.४४१ अ, समयप्रबद्ध ४.३२८ ब ।

नवक समयप्रबद्ध—४.३२८ ब, उपशम १.४४१ अ ।

नवकारमंत्र—३.२४७ अ ।

नवकार व्रत—२.५८१ अ ।

नवकार श्रावकाचार—२.६३१ अ, इतिहास १.२४१ अ ।

नवकेवल-लब्धि—लब्धि ३.४१२ अ ।

नवकोटिशुद्ध—आहार १.१२१ अ, १.२८६ ब, १.२९२ ब, ब्रह्मचर्य ३.१८६ ब।

नवग्रहवेयक—स्वर्ग—निर्देश ४.५१० अ, पटल ४.५१८, इन्द्रक श्रेणीवद्ध ४.५१८, ४.५२०, कल्पातीत ४.५१० अ, अहमिन्द्र ४.५१० अ, अंकन ४.५१५। देव—निर्देश २.४४५ ब, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १.१८८ ब, आयु १.२६८, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १.२५८ ब।

नवग्रहवेयक (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१९२, संख्या ४.९८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५।

नवतत्त्व—मोक्षमार्ग ३.३३७ अ, सम्यग्दर्शन ४.३५६ ब, ४.३६० अ।

नवदेवता—२.४४४ ब, कृतिकर्म २.१३४ अ।

नवधा-त्याग—२.५८१ अ, त्याग २.२९६ अ।

नवधाभक्ति—२.५८१ अ, आहार १.२८६ ब, भक्ति ३.१९६ अ।

नवनद—मगधदेश इतिहास १.३१३।

नवनारद—४.२१ अ।

नवनारायण—४.१८ अ।

नवनिधि—चक्रवर्ती ४.१४ ब, समवसरण ४.३३० ब, ४.३३१ अ।

नवनीत—२.५८१ अ, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब।

नवपदार्थ—पद्धति ३.८ अ, भाव ३.२१८ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६० अ।

नवपूर्वधर—शुक्लध्यान ४.३६ अ-ब।

नवप्रतिनारायण—४.२० अ।

नव बलदेव—४.१६ अ।

नवमिका—२.५८१ ब, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३.४६६।

नवमी—रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३.४६८। वैमानिक इन्द्र की देवी ४.५१३ ब, व्यन्तरेद्र की वल्लभिका ३.६११ ब।

नवराष्ट्र—२.५८१ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।

नवविधि व्रत—२.५८१ अ।

नवीन-अवस्थाप्राप्ति—उत्पाद १.३५७ अ।

नवीन-पर्यायप्राप्ति—उत्पाद १.३५७ अ।

नव्यन्याय—न्याय २.६३४ अ।

नष्ट—२.५८१ ब, आगम १.२२६ अ, अक्ष संचार-गणित-प्रक्रिया २.२२६ अ-ब, २.२२७ अ।

नहुत—संख्याप्रमाण २.२१४ ब।

नहुष—२.५८१ ब।

नाग—२.५८१ ब, आचार्य १.३१६, तीर्थंकर सुविधिनाथ व चन्द्रप्रभ २.३८३, २.३८७। मनुष्यलोक ३.२७५ ब, लोकपाल ३.४६१ ब। स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४.५१७, अंकन ४.५१५, देव-आयु १.२६७।

नागकुमार (देव)—२.५८१ ब, भवनवासी देव—निर्देश ३.२०८ अ, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १.१८८ ब, अवस्थान ३.२०६ ब, ३.४७१, ३.६१२-६१४, आयु १.२६५, इन्द्र ३.२०८ अ, शक्तिचिह्न आदि ३.२०८ ब, भवन ४.५०४ ब।

नागकुमार (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८ उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१८८, संख्या ४.९७, क्षेत्र २.१९६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

नागकुमार काव्य—इतिहास १.३४३ ब।

नागकुमारचरित्र—इतिहास १.३४६ अ-ब।

नागगिरि—२.५८१ ब, वक्षारगिरि—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७। इस पर्वत का कूट तथा देव ३.४७२ ब।

नागचद्र—२.५८१ ब, नन्दिसघ १.३२३ ब, इतिहास १.३३१ ब।

नागवत्त—२.५८१ ब।

नागदास—मगधदेश १.३१० ब, १.३१२।

नागदेव—२.५८१ ब, हरिदेव ४.५३० अ। कवि—इतिहास १.३३२ ब।

नागनंदि—२.५८१ ब।

नागन्य—अचेलकत्व १.३६ ब, परिषह ३.३३ ब, ३.३४ अ।

नागपुर—२.५८१ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।

नागप्रिय—३.२७५ ब।

नागभट्ट—२.५८१ ब।

नागमाल—वक्षारगिरि—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८१, ३.४८५, ३.४८६।

अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७।

नागरमण—भद्रशाल वन का खण्ड—निर्देश ३.४५० अ, विस्तार ३.४८८, अंकन ३.४४४, ३.४५७, ३.४६४ के सामने।

नागवर—२.५८१ ब, षष्ठ द्वीप सागर—निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अंकन ३.४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।

नागवर्म (कवि)—इतिहास १.३३० ब, १.३४३ अ, द्वितीय १.३३१ ब।

नागश्री—२.५८१ ब।

नागसेन—२.५८२ अ, मूलसघ १.३१६, इतिहास—प्रथम १.३२८ अ। द्वितीय १.३३१ अ।

नागहस्ती—२.५८२ अ, मूलसघ १.३२२ ब, १ परि०/२.१, १ परि०/३.१, ३, पुन्नाट सघ १.३२७ अ। इतिहास १.३२८ ब।

नागार्जुन—२.५८२ अ।

नागोजी भट्ट—३.३८४ अ।

नागौर—आशाधर १.२८० ब।

नाटक—पूजा ३.८१ अ।

नाटक समयसार—इतिहास १.३३४ अ, टीका १.३३४ ब।

नाट्यशाला—समवसरण ४.३३० ब।

नाडी—२.५८२ अ, उच्छ्वास १.३५२ ब, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ अ।

नाथ—वर्द्धमान २.३८०, २.३८३।

नाथवंश—१.३३५ अ, १.३३६ ब।

नाथग्रह—भवनवासी देवों के भवनो मे ३.२१० ब।

नाना-अजीव—कर्म २.२६ अ, कषाय २.३५ ब।

नाना-गुणहानि—गणित २.२३१ ब।

नाना-जीव—अनुयोगद्वार १.१०२ अ, कर्म २.२६ अ, कषाय २.३५ ब।

नाना-जीव एक-अजीव—कर्म २.२६ अ, कषाय २.३५ ब।

नानाजीव नानाअजीव—कर्म २.२६ अ, कषाय २.३५ ब।

नानाश्रेणी—प्रदेश अल्पबहुत्व १.१५५ ब, वर्गणा अल्पबहुत्व १.१५५ ब।

नाभांत—२.५८२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

नाभिकमल—पदस्थ ध्यान ३.६ ब।

नाभिकीर्ति—नन्दिसंघ १.३२३ ब।

नाभिगिरि—क्षेत्रों के मध्यवर्ती गोल पर्वत—निर्देश ३.४५२ ब, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने चित्र ३.४५२ ब, वर्ण ३.४७७।

नाभिराज—२.५८२ अ, ऋषभनाथ २.३८०, कुलकर ४.२३।

नाभ्यघोनिर्गमन—आहारान्तराय १.२६ अ।

नाम—२.५८२ अ।

नाम-अग्रायणीपूर्व—श्रुतज्ञान १.६७ ब।

नाम-अनन्त—१.५५ ब।

नाम-अंतर—१.३ ब।

नाम-उपक्रम—१.४१६ ब।

नाम-उपशम—१.४३७ अ।

नाम-कर्म—२.५८३ अ, कर्म २.२६ अ।

नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३ अ, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, अनुभाग का अल्प-बहुत्व १.१६६ ब, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.६८, बध संबंधी नियम ३.६३, ३.६५ अ, बन्धस्थान ३.११० अ, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३७२ ब, १.३७३, उदय के निमित्त १.३६७ ब, आबाधा १.२५६ ब, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा-स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भग १.४०४-४०८। सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

नामकर्म-क्रिया—संस्कार ४.१५१ अ, मन्त्र ३.२४७ अ।

नाम-कषाय—२.३५ ब।

नाम-काल—२.८१ ब।

नाम-छेदना—२.३०६ ब।

नामधेय—२.५०० अ।

नामनय—२.५२२ ब।

नामनिक्षेप—२.५८४ ब, द्रव्याधिक नय २.५६४ अ, स्थापना निक्षेप २.५६८ ब।

नामनिबंधन—२.५८२ अ।

नामपद—उपक्रम १.४१६ ब, पद ३.५ अ।

नामप्रतिक्रमण—३.११६ ब।

नामप्रत्याख्यान—३.१३२ अ।

नाममंगल—३.२४१ अ।

नाममाला—२.५८५ अ, इतिहास १.३४७ ब।

नामसत्य—४.२७१ ब।

नामसम—२.६०२ अ।

नामस्तव—भक्ति ३.२०० अ।

नारक—जीव २.३३३ ब, नरक गति २.५७१ ब, विशेष दे. नरक गति। नरक पटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३.४४१।

नारकी—नरक गति २.५७१ ब। विशेष दे. नरक गति।

नारत—नरक गति २.५७१ ब। विशेष दे. नरक गति।

नारद—२५८५ अ, गति-अगति २.३२१ ब, तीर्थकर २.३७७, यदुवश १.३३७, शलाकापुरुष ४.२१ अ ।

नारसिंह—२५८५ अ ।

नाराचसंहनन कर्मप्रकृति—प्रहणा—प्रकृति ३.८८, २५८३, स्थिति ४४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६ ।
बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा-स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भंग १.४०४ । अल्पबहुत्व १.१६८ ।

नारायण—२५८५ अ, अज्ञानवादी १.३८ ब, १.४६५ ब, कुन्थुनाथ २.३६१, कुरुवश १.३३५ ब, गति-अगति २.३२१ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ, शलाकापुरुष ४.१८ अ ।

नारायण की माता—स्वप्न ४.५०४ ब ।

नारी—२५८५ अ, कुण्ड—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४६०, अंकन ३.४४७ । देवी—नारीकुण्डवासिनी ३.४५५ अ, नीलपर्वतवासिनी ३.४७२ अ, रुक्मि-पर्वतवासिनी ३.४७२ ब । नदी—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३.४८६, ३.४६०, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, जल का वर्ण ३.४७८ । स्त्री ४.४५० अ ।

नारीकूट—नारीकुण्ड में स्थित—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.४४७, वर्ण ३.४७७ । नील पर्वत का—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ । रुक्मि पर्वत का—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ ।

नालिका—२५८५ अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, मनुष्य-लोक ३.२७५ ब ।

नाली—२५८५ अ, काल का प्रमाण २.२१२ अ ।

नाश—व्यय १.३५७ ब, १.३५८ ब ।

नासाग्र—कृतिकर्म २.१३४ ब, चैत्यप्रतिमा २.३०१ अ, ध्यान २.४६८ अ ।

नासारिक—२.५८५ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ ।

नास्ति भग—४.३१८ ब ।

नास्तिक—एकान्त १.४६५ ब, चार्वाक २.२६४ ब ।

नास्तिक्य—२.५८५ ब, नय २.५२२ ब, मिथ्यादर्शन ३.३०० अ ।

नास्तित्व—२.५८५ ब, अनेकान्त (सापेक्ष धर्म) १.१०६ अ, नय २.५२२ ब, सप्तभग ४.३१८ ब, सापेक्ष धर्म १.१०६ अ, स्याद्वाद ४.५०० ब, स्वभाव ४.५०६ अ, २.५८५ ब ।

निकल—ध्यान ३.३३६ अ, परमात्मा ३.२० अ ।

निकषाय—२.५८५ ब, तीर्थकर २.३७७ ।

निकक्षित—२.५८५ ब, २.५८६ अ, १.६६ अ, अनशन १.६५ ब, १.६६ अ, उपदेश १.४२४ ब, तप २.३५८ ब, २.३६० अ, राग २.३६७ अ ।

निकक्षित—करण २.६, गुणस्थान २.६ अ ।

निकक्षित—२.५८६ अ, सम्यग्दृष्टि ४.३७८ ब ।

निकक्षित—व्रती ३.६२६ अ ।

निकक्षित अष्टमी व्रत—२.५८७ अ ।

निकक्षित—२.५८७ अ ।

निकक्षित—२.५८७ ब ।

निकक्षित—२.५८७ ब, सल्लेखना ४.३६६ ब ।

निकक्षित भावना क्रिया—संस्कार ४.१५१ ब ।

निकक्षित आत्मक तैजस शरीर—२.५८७ ब, २.३६५ ब ।

निकक्षित ज्ञान—२.५८७ ब, मतिज्ञान ३.२५६ अ, ३.२५७ ब ।

निकक्षित—२.५८७ ब, शुभोपयोग १.४३४ अ, सम्यग्दृष्टि ४.३७८ ब ।

निकक्षित—२.५८७ ब, आहारान्तराय १.२६ ब, शुभोपयोग १.४३४ अ, विषकुम्भ १.४३४ अ, सम्यग्दर्शन ४.३५१ ब, स्त्री ४.४५१ अ ।

निकक्षित—अनुभाग १.६० ब ।

निकक्षित—२.५८६ अ ।

निकक्षित—वेदान्त ३.५६८ ब, वैष्णव ३.६०६ अ ।

निकक्षित—नाभिगिरि—निर्देश ३.४५२ ब, नाम निर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४५२ ब, वर्ण ३.४७७ ।

निकक्षित—२.५८६ अ, ध्यान ३.३३६ अ, परमात्मा ३.२० अ ।

निकक्षित—२.५८६ अ, करण २.६ ।

निकक्षित—२.५८६ ब ।

निकक्षित—२.५८६ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

निकक्षित—२.५८६ ब, माया ३.२६६ अ, वचन ३.४६७ ब ।

निकक्षित—२.५८६ ब, आहार दोष १.२६१ ब, वसतिका दोष ३.५२६ ब ।

निकक्षित—२.५८६ ब, अधिकरण १.४६ अ-ब, १.५० अ, अन्तर १.३ ब, अर्पकषण १.११३ ब, आवली १.२७६ अ, उत्कर्षण १.३५३-३.५५, नय २.५२२ ब ।

निकक्षित—अन्तरकरण १.२५ अ, १.२६ अ-ब ।

निकक्षित—१.४६ अ-ब, १.५० अ ।

निकक्षित—आगम १.२३० अ ।

निखंडित—प्रत्याख्यान ३.१३१ ब।

निगमन—२.६०६ ब, अनुमानावयव १.१०१ अ, न्याय २.६३३ ब।

निगमनाभास—२.६०६ ब।

निगूढतर्क—२.६०६ ब।

निगोद—२.६०६ ब, निर्देश ३.५०३-५०५, ३.५०८-५१०, अप्रतिघाती १.२२३ ब, अवगाहना १.१७८, क्षीण कषायी का शरीर २.१८७ अ, जन्म २.३१७ ब, जीव समास २.३४२, देव शरीर २.४४६ अ, नारकी शरीर २.५७३ ब, मरण ३.२८०, मोक्ष २.३१७ ब ३.३२५ अ, वनस्पति ३.५०३ ब, ३.५०५, ३.५०६ ब, ३.५०८ अ, ३.५१० अ, वेदना ३.५६१ अ।

निग्रह—२.६०६ ब, उपकार १.४१५ ब, गुप्ति २.२५० ब।

निग्रहस्थान—२.६०६ ब, अज्ञान १.३८ अ, न्याय २.६३४ ब, ३.६३५ अ, प्रयोज्य २.६३४ ब, वितण्डा ३.५४३ अ।

निघट्ट—२.६०७ अ।

निचली कृष्टि—२.१४१ अ।

निज—अनुकम्पा १.६६ अ, उपकार १.४१४ ब, १.४१५, अहिंसा १.२१६ ब, तत्त्व ३.१२ ब।

निजगणानुपस्थापना—परिहार प्रायश्चित्त ३.३५ ब।

निजात्मज्ञान विमुखता—मिथ्याज्ञान २.२६३ अ।

निजात्माष्टक—२.६०७ अ।

निजाष्टक—२.६०७ अ, इतिहास १.३४१ अ।

नित्य—२.६०७ अ, आगम १.२३८ ब, उपादान १.४४३ ब, द्रव्य २.४५६ ब, पदार्थप्राप्ति (मोक्षमार्ग) ३.३३६ अ, व्युत्सर्ग ३.६२३ ब, सापेक्षधर्म १.१०६ अ, ४.३२३ ब, मरण ३.२८० अ।

नित्यक्रिया—२.१३८ अ।

नित्यत्व—उत्पादादि १.३५८ अ-ब, सापेक्षधर्म १.१०६ अ, १.१११ अ, ब, ४.३२३ ब, स्याद्वाद ४.४६८ अ।

नित्यनय—२.५२३ अ।

नित्यनिगोद—निर्देश ३.५०३, जीवसमास २.३४२।

नित्यमह—पूजा ३.७४ अ।

नित्यमहोद्योत—२.६०७ ब, इतिहास १.३४४ ब।

नित्यरसी व्रत—२.६०७ ब।

नित्यवाद—एकान्त १.४६५ ब।

नित्यवाहिनी—२.६०७ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

नित्यसमाजाति—२.३०८ अ।

नित्यानंद—मोक्षमार्ग ३.३३६ अ।

नित्यानित्य—उत्पादादि १.३६१ ब।

नित्यालोक—२.६०८ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८, ३.४६९।

नित्योद्योत—२.६०८ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८, ३.४६९। विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

नित्योद्योतिनी—विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

निदर्शन—२.६०८ अ।

निदाघ—२.६०८ अ। नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८ अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६३।

निदान—२.६०८ अ, आर्तध्यान १.२७४ अ, नारायण ४.२० ब, मिथ्यादृष्टि ३.३०६ अ, शल्य ४.२६ ब।

निद्रा—२.६०८ ब, कृतिकर्म (साधु) २.१३७ ब।

निद्रा कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.४२०, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.१०६, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६४, त्रिसंयोगी भंग १.३६६। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

निद्राद्विक—१.३७४ ब।

निद्रा-निद्रा—२.६०८ ब, दर्शनावरण २.४२० ब।

निद्रा-निद्रा-कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.४२०, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.१०६, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३७३ ब, उदयस्थान १.३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६४ त्रिसंयोगी भंग १.३६६। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

निद्रापंचक—१.३७४ ब।

निधत्त—२.५८६ अ, दसकरण २.६, गुणस्थान २.६ अ।

निधि—२.६१० अ, गणित सहनानी २.२१८ ब, चक्रवर्ती ४.१२ अ, ४.१४ ब।

निधुरा—२.६१० अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

निन्नहुत—संख्याप्रमाण २.२१४ अ।

निबंधन—२.६१० ब।

निबद्धमंगल—३.२४१ ब।

निसंत्रण—समाचार ४.३३६ ब, ४.३३७ अ।

निमग्ना—२.६१० ब, विजयार्ध की गुफा में नदी—निर्देश ३.४४८ अ, अंकन ३.४४८ अ।

निमित्त—२.६१० ब, अकिंचित्कर २.६६ ब, उपादान २.६६ अ, २.७२ अ, कर्ता-कर्म २.२० ब, २.२३ ब,

कल्पना २७३ अ । कारण-कार्य २५५ ब, २६० ब, २६१ ब, २६२ ब, २६४ ब, २६६ ब, २६७ अ, २७० अ, २७२ अ, २७४ अ, गौणता २६५ अ, २६६ ब, द्रव्य-क्षेत्रादि २६४ अ, प्रधानता २६७ ब, २७३ अ-ब, वस्तु स्वतन्त्रता २७३ अ, विभाव २७४ ब ।

निमित्तक उत्पाद — आकाश १.२२१ ब ।

निमित्त कारण — २६१० ब ।

निमित्त ज्ञान — २६१२ ब, ऋद्धि १४४८ ।

निमित्त दोष — आहार १.२६१ ब, ३५२६ अ ।

निमित्त-नैमित्तिक संबंध — कारण-कार्य संबंध २.५५ ब, २.६० ब, २.६१ ब, २.६२ ब, २.६४ ब, २.६६ ब, २.६७ अ, २.७० अ, २.७२ अ, २.७४ अ, सम्बन्ध ४.१२६ अ ।

निमित्तवाद — एकान्त १४६५ ब ।

निमित्तशास्त्र — शास्त्र ४.२८ अ, इतिहास १.३२६ अ ।

निमिष विद्याधर नगरी ३५४५ ब ।

निमेष — २६१३ अ, उत्पत्ति २८७ अ, काल का प्रमाण २.२१६ ब, २.२१७ अ ।

नियतकाल अनशन — १६५ ब ।

नियतकाल सामायिक — ४४१६ ब ।

नियत प्रदेशत्व — २.६१३ अ ।

नियत वृत्ति — २६१३ अ ।

नियति — २६१३ अ ।

नियति नय — २.५२३ अ ।

नियतिवाद — २६१४ अ, नामनिर्देश ३.१२ अ, एकान्त १.४६५ अ-ब, सम्यग् मिथ्या २६१४ अ, पुरुषार्थ समन्वय २.६१८ अ ।

नियम — २६२० अ, तप २३५६ अ, भोगोपभोग ३२३६ अ ।

नियमसार — २६२० ब, इतिहास १३४० ब ।

नियमसार टीका — इतिहास १३४४ अ ।

नियमित सान्द्र — २६३० ब ।

नियुत — २६२० ब, कालप्रमाण २२१६ अ, २२१७ ब ।

नियुतांग — २६२० ब, कालप्रमाण २२१६ अ ।

नियोग — अनुयोग ११०१ ब ।

निरंजन — मोक्षमार्ग ३३३५ ब ।

निरंतर — २.६३० ब ।

निरंतरबंधी प्रकृति — ३.८८ ब, ३.९० ब, ३.९२ ब, नियम ३.९३-९४, त्रिसंयोगी प्ररूपणा १.३६६ ।

निरंतरसिद्ध — अल्पबहुत्व ११५३ ।

निरंतरस्थिति — ४४५७ अ ।

निरंश — परमाणु ३१८ ब ।

निरतगति — २.५७१ ब, विशेष दे० नरकगति ।

निरतिचार — २६२० ब, सामायिक ४४१८ अ ।

निरतिचारता — १४२ ब ।

निरनुबंधा — २६२२ ब, निर्जरा अनुप्रेक्षा १७७ अ ।

निरनुयोज्यानुप्रेक्षण — २६२१ अ ।

निरन्वय — २.६२१ अ ।

निरपराध — अपराध १११६, विभाव ३५५६ अ ।

निरपेक्ष — एकान्त १४६२-४६३, स्याद्वाद ४४६८ अ, ४४६९ अ, स्वभाव ४.५०७ अ ।

निरपेक्ष नय — नय २५२० अ, २५२५ ब ।

निरब्बुद्ध — सख्या प्रमाण २२१४ ब ।

निरय — २६२१ अ । नरकपटल — निर्देश २५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अकन ३४४१ । नारकी — अव-गाहना ११७८, आयु १२६३ ।

निरयगति — २५७२ अ । विशेष दे० नरक गति ।

निरर्थक — २६२१ अ ।

निरवद्यक्रिया — योग ३.३७५ अ ।

निरवयव — आकाश १२२१ ब, द्रव्य २४५६ अ, परमाणु ३१६ ब ।

निराकांक्ष — २.६२१ अ, २५८५ ब, तप २३५८ ब, २३६० अ ।

निराकांक्ष अनशन — १६५ ब ।

निराकार उपयोग — आकार १२१६ ब ।

निराकुलता — सुख ४४३१ अ ।

निरागार — अनगार १६२ अ, सयम ४.१३७ अ ।

निराभरण — चैत्य (प्रतिमा) २३०२ ब ।

निरायुध — चैत्य (प्रतिमा) २.३०२ ब ।

निरालंब ध्यान — शुक्लध्यान ४३३ अ ।

निरावरण — कायक्लेश २.४६ ब ।

निराशा — राग (नैराश्य) ३३६८ अ ।

निरालंब — सम्यग्दृष्टि ४३७६ ब, ४३७६ ब ।

निराहारता — अर्हन्त १.१३७ ब ।

निरीह — पुण्य ३६६ ब ।

निरुद्ध-अविचार-भक्त-प्रत्याख्यान — सल्लेखना ४.३८८ ब, ४.३८९ अ ।

निरुपक्रम आयुष्य — आयु १२५६, १.२६० अ ।

निरुपभोग — तैजस शरीर २३६५ अ ।

निरूपणा — २६२१ अ, प्ररूपणा ३.१४७ अ ।

निरोध — २६२१ अ, एकाग्रचित्तानिरोध १४६६ अ, ध्यान २४६५ ब ।

निर्गमन—२.६२१ अ ।

निर्ग्रन्थ—२.६२१ अ, पेरिग्रह ३ २६ ब, लिङ्ग ३ ४२० अ, श्रुतकैवली ४.५५ ब, श्वे. ४ ७८ अ, साधु ४.४०६ अ, ४.४०८ ब, ४.४०९ अ-ब ।

निर्ग्रन्थ-श्वेतपट-महाश्रमण संघ - श्वेताम्बर ४ ७८ अ ।

निर्जर पंचमी व्रत—२ ६२१ ब ।

निर्जरा—२.६२१ ब, २ ६२३ अ, अल्पबहुत्व १ १४१ ब, अविपाक १ ७५ ब, ईर्यापथ कर्म १ ३४६ ब, उदय १ ३६६ ब, गुणश्रेणी अल्पबहुत्व १ १७४ अ, चारित्र २ २८६ अ, २.२९० अ, तप २ ३६२ अ, २ ३६३ अ, २ ६२३ अ, धर्म (व्यवहार) २.४७५ अ, धर्मध्यान २ ४८३ ब, २ ४८५ ब, प्रदेश निर्जरा अल्पबहुत्व १.१७४ अ, व्यवहार धर्म २.४७५ अ, शुभोपयोग २ २९० अ, सम्यग्दर्शन ४ ३५३ ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७५ ब, ४ ३७७ अ, सविपाक १.७५ ब ।

निर्जरा अनुप्रेक्षा—१ ७५ ब, १.७८ अ, १ ७६ ब, सविपाक अविपाक १ ७५ ब ।

निर्णय—२ ६२४ अ, आगमार्थ १ २३२, ब, न्याय २ ६३३ अ, ब ।

निर्दंड—२ ६२४ अ ।

निर्दुख—२.६२४ अ, ग्रह २ २७४ ।

निर्देश—२ ६२४ अ, अनुयोगद्वार १ १०२ अ, आगम (उद्देश्य) १.२३२ अ ।

निर्दोष—२ ६२४ ब ।

निर्द्वंद्व—२.६२४ ब ।

निर्धूम अग्नि—स्वप्न ४.५०४ ब ।

निर्नामिक—२ ६२४ ब ।

निनिमेष दृष्टि—अर्हन्त १ १३७ ब ।

निर्भरानंद—अनुभव १ ८५ अ ।

निर्मत्र—ग्रह २ २७४ अ ।

निर्मम—२ ६२४ ब ।

निर्मल—२.६२४ ब, गणधर २ २१२ ब, तीर्थकर २ ३७७, विगद ३ ५६७ ब, स्वरूप ३.३३५ ब ।

निर्मल आकाश—अर्हन्तातिशय १ १३७ ब ।

निर्मल जल—अर्हन्तातिशय १.१३७ ब ।

निर्मल शरीर—अर्हन्तातिशय १ १३७ ब ।

निर्माण नामकर्म प्रकृति—२ ६२४ ब, आनुपूर्वी नामकर्म १ २४७ अ । प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, २.६२४ ब, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३ १३६ । बध ३.६७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११ अ,

उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भंग १.४०४, संक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६८ ।

निर्माणरज—२ ६२५ अ ।

निर्माणरजस्—लौकान्तिक देव ३ ४६३ ब ।

निर्मात्य द्रव्य—२ ६२५ अ, पूजा ३ ८० अ ।

निर्मूढ—२ ६२५ अ ।

निर्मोह—साधु ४ ४०६ अ ।

निर्यापक—२ ६२५ अ, गुरु २.२५२ अ, सल्लेखना ४.३८५ ब, ४.३९० ब, ४.३९३ ब ।

निर्युक्ति—आवश्यक १ २७६ ब ।

निलेपन—२.६२५ ब ।

निलोभ—शौच ४ ४३ ब ।

निर्वर्ग—२ ६२५ ब ।

निर्वज्जशांवला—२.६२६ अ, विद्या ३ ५४४ अ ।

निर्वर्गण—२ ६२५ ब ।

निर्वर्गणा कांडक—२.६२६ अ, अधःप्रवृत्तकरण २ ८ ब, २ १० अ ।

निर्वर्तना—अधिकरण १ ४६ ब ।

निर्वस्त्र—अचेलकत्व १ ४० ब, निर्जरा २ ६२१ ब, लिङ्ग ३ ४१७ अ, ३.४१६ अ, परिषह ३ ३३ ब, ३ ३४ अ, साधु ४.४०८, अ, ४ ४०९ अ ।

निर्वर्त्यकर्म—कर्ता २.१७ अ ।

निर्वहण—२ ६२६ अ ।

निर्वाण—२ ६२६ अ, तीर्थकर २ ३७७ ।

निर्वाणकल्याणक—कल्याणक २ ३२ ब ।

निर्वाणकल्याणक वन्दना—कृतिकर्म २ १३६ अ ।

निर्वाणभक्ति—भक्ति ३ १६८ ब, शास्त्र इतिहास १.३४० ब, राक्षसवश १ ३३८ अ ।

निर्वाणभूमि—व्युत्सर्ग ३ ६२१ अ ।

निर्वाणसंपत्ति यंत्र—३ ३५५ ।

निर्वाण सबत्—इतिहास १ ३०६ अ, १.३१० अ, १ ३१६ ।

निर्विकल्प—विकल्प ३ ५३७ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३६२ अ ।

निर्विकल्पता—गुण २ २४२ ब, निश्चय नय २.५५४ ब ।

निर्विकल्प ध्यान—पदस्थ ध्यान ३ ८ ब । मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

निर्विकल्प समाधि—ज्ञान २.२७० अ ।

निर्विकल्प सुख—४.४३१ ब, ४.४३२ ब ।

निर्विकृति आहार—२ ६२६ अ, कायक्लेश २.४७ अ, सल्लेखना ४ ३६२ ब ।

निर्विचिकित्सा—२.६२६ ब ।

निविद्या—२ ६२६ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

निर्वृत्ति—२ ६२७ ब, अक्षर १ ३२ ब, इन्द्रिय १ ३०१ ब, भक्ति ३ १६८ ब, विद्या ३ ५४४ अ ।

निर्वृत्ति अक्षर—१ ३२ ब ।

निर्वृत्ति इन्द्रिय—१ ३०१ ब ।

निर्वृत्ति भक्ति—३ १६८ ब ।

निर्वेगिनी कथा—कथा २ ३ अ ।

निर्वेजनी कथा—कथा २ ३ अ ।

निर्वेद—२ ६२७ ब, उपयोग १ ४३३ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३५१ अ ।

निर्वेदिनी कथा—उपदेश १ ४२५ अ, १ ४२६ अ, कथा २ ३ अ ।

निर्वर—सामायिक ४ ४१६ ब ।

निर्व्याकुल चित्त—मुख ४ ४३३ ब ।

निलय—२ ६२७ ब, ग्रह २ २७४ अ ।

निवास—भवनवासी देव ३ २१० अ, ३ ६१३ । व्यन्तरदेव—निर्देश ३ ६१२ अ, विस्तार ३ ६१५ अ, बनावट ३ ६१२ ब, सख्या ३ ६१२ ब । श्रावक ४.५० अ, साधु (मासैकवास) ३ २६६ ब ।

निवृत्ति—२ ६२७ ब, अनिवृत्तिकरण १ ६७ ब, उपयोग १ ४३४ अ, चारित्र २ २८५ अ, राग ३ ३६८ अ, विष १ ४३४ अ, संवर ४.१४३ ब ।

निवृत्त्यपर्याप्त—जीव २ ३३३ ब, जीवसमाप्त २ ३४३, पर्याप्त ३ ४१ ब, ३ ४२ अ ।

निशिभोजन कथा—२ ६२७ ब, इतिहास १.३४८ अ ।

निशुंभ—२.६२७ ब, तीर्थकर धर्मनाथ २ ३६१, प्रति-नरियण ४.२० अ ।

निश्चय—२ ६२८ अ, ग्रह २ २७४ अ ।

निश्चय-अनशन—अनशन १ ६५ अ ।

निश्चय-अनुप्रेक्षा—अनुप्रेक्षा १ ७२-७८ ।

निश्चय-अमूढदृष्टि—अमूढ दृष्टि १.१३२ ब ।

निश्चय-अहिंसा—अहिंसा १ २१६ अ ।

निश्चय-आचार—३० निश्चयाचार ।

निश्चय-आराधना—मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

निश्चय-आलोचना—आलोचना १.२७६ ब ।

निश्चय-उपगूहन—उपगूहन १.४१७ अ ।

निश्चय-कर्तृकर्म—२ १६, २ २३ ब ।

निश्चयकाल—काल २ ८२ ब ।

निश्चयक्षमा—२ १७७ अ ।

निश्चयगुप्ति—२ २४८ अ, ब ।

निश्चयगुह—२.२५२ अ ।

निश्चयज्ञान—आचार १.२४० अ, ज्ञान २.२५६ अ, २.२६६ ब,

सम्यग्ज्ञान २.२६७ अ, स्वसंवेदन २ २६२ ब ।

निश्चयचारित्र—आचार १ ३४० ब, चारित्र २ २८३ अ, २ २८८ ब, (रत्नत्रय) २ २८६, २ २६१ अ ।

निश्चय-तप—आचार १.२४१ अ ।

निश्चय-दर्शन—आचार १ २४० अ ।

निश्चय-धर्म—अनुभव १ ८५ ब, २ ४६६ ब, २ ४६८ ब, २.४७५ ।

निश्चय-ध्यान—अनुभव १ ८५ ब, धर्मध्यान २.४७६ अ, २ ४८५ अ, २ ४८६ अ ।

निश्चय-नय—२.६२८ अ, उत्सर्ग मार्ग १.१२१ अ, नय २ ५१४ ब, २.५१५ अ, निश्चय-नय २ ५५२ अ, सम्यक् नय २ ५२३ ब, प्रत्याख्यान ३ १३१ ब, प्रायश्चित्त ३.१५७ ब, शुद्धोपयोग १ ४३१ अ ।

निश्चय-निमित्त—२ ७३ अ ।

निश्चय-निर्विचिकित्सा—२.६२७ अ ।

निश्चय-पचाशत—इतिहास १ ३४३ ब ।

निश्चय-पूजा—३ ७५ अ ।

निश्चय-प्रतिक्रमण—३.११५ ब, ३.११६ अ ।

निश्चय-प्रभावना—३.१३६ अ ।

निश्चय-प्राण—अहिंसा १ २१७ ब, प्राण ३ १५२ ब, ३ १५४ अ ।

निश्चय-प्रोषधोपवास—३ १६३ अ ।

निश्चय-ब्रह्मचर्य—३ १८८ ब ।

निश्चय-भक्ति—३ १६७ ब, ३ १६६ ब ।

निश्चय-भोक्ता-भोग्यभाव—३.२३८ अ ।

निश्चय-मोक्षमार्ग—३ ३३५ अ, ब, ३.३३६ अ, ३.३३८ ब, ३ ३३६ अ ।

निश्चय-रक्षा—अहिंसा १ २१७ ब ।

निश्चय-रत्नत्रय—उपयोग १ ४३४ ब, चारित्र २ २६६ अ, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब, संवर ४ १४३ ब ।

निश्चय-वदना—३ ४६४ ब ।

निश्चय-वात्सल्य—३ ५३२ ब ।

निश्चय-विनय—३ ५४८ अ ।

निश्चय-वीर्य—आचार १ २४१ अ ।

निश्चय-व्रत—चारित्र २ २६२ अ, व्रत ३.६२५ अ ।

निश्चय-श्रुतकेवली—४ ५५ ब ।

निश्चय-षडावश्यक—मोक्षमार्ग ३.३३६ अ ।

निश्चय-संयम—४ १३७ अ ।

निश्चय-संवर—४ १४२ ब ।

निश्चय-समिति—४.३३६ अ, ४ ३४२ अ ।

निश्चय-सम्यग्दर्शन—आचार १.२४० अ, सम्यग्दर्शन ४ ३५६ अ-ब ।

निश्चय-साधु—४४०६ अ ।

निश्चय-स्तवन—३ १६६ ब ।

निश्चय-स्थितीकरण—४.४७० अ ।

निश्चय-स्वाध्याय—४.५२३ अ ।

निश्चय-हिसक—१.२१६ अ ।

निश्चय-हिंसा—४ ५३२ अ, ब ।

निश्चयाचार—ज्ञानाचार १ २४० ब, चारित्राचार १.२४० ब, तपाचार १.२४१ अ, दर्शनाचार १.२४० अ, वीर्याचार १.२४१ अ ।

निश्चयावलबी—४४०६ अ ।

निश्चल—२ ६२८ अ, ग्रह २ २७४ अ ।

निश्चल चित्त—सामायिक ४४१५ ब ।

निश्चित विपक्षवृत्ति—व्यभिचार ३ ६१६ ब ।

निषण्ण-निषण्ण-व्युत्सर्ग—३ ६२० अ ।

निषद्य—सल्लेखना ४ ३६६ ब ।

निषद्यका—कृतिकर्म २ १३६ अ ।

निषद्या-क्रिया—मन्त्र ३ २४७ अ, सस्कार ४.१५१ अ ।

निषद्यापरिषह—२.६२८ अ, चर्या २.२७६ अ, परिषह ३.३३ ब, ३.३४ अ ।

निषद्य—निषद्य कूट का रक्षक देव २ ६२८ ब, यदुवश १.३३७ ।

निषद्यकूट—२.६२८ ब । तिगिष्ठ द्रह का—निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३ ४५४ । निषद्य पर्वत का—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३.४८२, ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४ । सुमेर के वनो मे—निर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४ ।

निषद्यद्रह—२ ६२८ ब । दक्कुह उत्तरकुह—निर्देश ३ ४५६ ब, नाम निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४६०, ३ ४६१, अकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने (चित्र सं० ३७) ।

निषद्यपर्वत—२ ६२८ अ, निर्देश २ ४४६, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७ ।

निषाद—२ ६२८ ब, स्वर ४ ५०८ ब ।

निषिधत—२.६२८ ब ।

निषिद्धिका—२ ६२८ ब, श्रुतज्ञान ४.६६ ब ।

निषिधिका—२ ६२८ ब, सल्लेखना ४.३६७ अ ।

निषेक—२.६२८ ब । रचना—उदय १.३६८-३७१, स्थिति ४.४५८ अ । अपकर्षण १.२६ ब, उदय १.३६६ अ ।

समयप्रबद्ध का अल्पबहुत्व १.१७१ अ, स्थितिबन्ध

का अल्पबहुत्व १.१६५ ब ।

निषेकहार—२ ६२६ अ, गणित २.२३० ब ।

निषेध—२ ६२६ अ, अनेकान्त १ १०६ अ, गौणता ४.४६६ ब, निर्वेद २ ६२७ ब, सप्तभगी ४.३१८ ब, ४.३१६ ब, सापेक्ष धर्म १ १०६ अ, ४ ३१८ ब, स्याद्वाद ४ ४६८ अ, ४.४६६ ब, ४ ५०० ब ।

निषेधसाधक हेतु—४ ५४० ब ।

निषेधिका—समाचार ४ ३३६ ब, ४.३३७ अ ।

निष्कंप—यदुवश १.३३७ ।

निष्कल—ध्यान ३ ३३६ अ, परमात्मा ३ २० अ ।

निष्कषाय—२ ५८५ ब, तीर्थकर २ ३७७ ।

निष्काक्षित—२.५८५ ब, २ ५८६ अ, तप २ ३५७ ब, २.३६० अ, शास्त्रश्रवण ४.७५ ब ।

निष्काक्षित अनशन—१.६५ ब, १ ६६ अ ।

निष्काम—(दे० निष्काक्षित) ।

निष्कुट क्षेत्र—क्षेत्र २ १६२ ब, विग्रहगति ३.५४१ ब ।

निष्कांति क्रिया—सस्कार ४.१५२ अ ।

निष्क्रिय परमाणु—३.१५ ब ।

निष्क्रियत्व शक्ति—२ ६२६ अ ।

निष्ठीवन—आहारान्तराय १.२६ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ ।

निष्ठुर—समिति ४ ३४० अ ।

निष्पत्ति—२ ६२६ अ ।

निष्पन्न योगी—धर्मध्यान २ ४६४ अ, योगी ३ ३८६ अ ।

निष्परिग्रह—अचेलकत्व १ ४० अ, ब, अहिंसा १ २१७ अ, चारित्र २ २६४ ब ।

निष्पाप—तीर्थकर २ ३७७ ।

निष्पिच्छ संघ—२ ६२६ अ, जैनाभासी सघ १.३१६ अ, इतिहास १ ३२१ ब ।

निसर्ग—२ ६२६ अ, अधिगम १ ५० ब ।

निसर्ग क्रिया—क्रिया २ १७४ ब ।

निसर्गज—२ ६२६ ब, अधिकरण १ ४६ अ-ब, १ ५० अ, ज्ञान १ ५१ ब, सम्यग्दर्शन १ ५० ब ।

निसर्गाधिकरण—१ ४६ अ-ब, १ ५० अ ।

निसर्ही—असर्ही १ २०६ अ, साधु ४.४०४ ब ।

निसीधिका—असर्ही १ २०६ अ ।

निस्तरण—२.६१६ ब ।

निहत शत्रु—हरिवंश १ ३४० अ ।

निहार—तीर्थकर २.३७३ ब, देवगति २.४४६ अ ।

नीच—२.६२६ ब ।

नीचकुल—वर्णव्यवस्था ३.५२० ब ।

नीचगोत्र—वर्णव्यवस्था ३.५२० ब।

नीचगोत्र कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.५२०;
स्थिति ४.४६७, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३७। बध
३.६७, बधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान
१.३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२,
सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६८, त्रिसंयोगी भग
१.३६६। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

नीचत्व—मार्दव ३.२६८ ब।

नीचदेव—आयुबन्ध के योग्य परिणाम १.२५७ ब।

नीचपद से उद्धार—धर्म २.४६६ ब।

नीचैवृत्ति—२.६२६ ब।

नीचोपपाद देव—व्यन्तरजातीय देव—आयु १.२६४ ब।

नीति—नय २.५१३ ब।

नीतिक्रिया—न्याय २.६३१ अ।

नीतिवाक्यामृत—२.६२६ ब, इतिहास १.३४२ ब।

नीतिसार—२.६२६ ब, इन्द्र नन्दि १.२६६ ब, इतिहास
१.३४२ अ।

नीरस-आहार—आहार १.२८८ अ।

नीरा—मनुष्यलोक (नदी) ३.२७६ अ।

नील—२.६२६ ब, ग्रह २.२७४ अ। दिग्गजेन्द्र पर्वत—
निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६,
अंकन ३.४४४। द्रह—निर्देश ३.४५६ ब, नामनिर्देश
३.४७४ अ, विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अंकन ३.४४४,
३.४५७ ३.४६४ के सामने। वर्षधर पर्वत—निर्देश
३.४४६ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६,
अंकन ३.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने (चित्र
सं ३७), वर्ण ३.४७७।

नील (कूट)—उत्तरकुरु व देवकुरु का कूट—निर्देश
३.४७४ अ, अंकन ३.४५७। केसरी द्रह का—निर्देश
३.४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४५४। नील
पर्वत का—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३,
अंकन ३.४४४। रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३.४७६
ब, विस्तार ३.४८७।

नील (नाम)—मुनिसुव्रतनाथ २.३८३, वानरवश १.३३८
ब।

नीलकंठ भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ।

नीलकुमारी—मध्यलोकवासिनी देवी ३.६१४।

नीलयशा—शुद्धवंश १.३३७।

नीललेश्या—निर्देश ३.४२३ अ, प्ररूपणा—बन्ध ३.१०७,
बन्धस्थान ३.११३, आयुबन्ध के स्थान १.२५६-अ,
उदय १.३५४, उदयस्थान १.३६३ ब, उदीरणा

१.४११ अ, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४.३०६,
त्रिसंयोगी भग १.४०७ ब। सत् ४.२४४, संख्या
४.१०७ क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४.४६०, काल २.११५,
अन्तर १.१८, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व १.१५१।

नीलांजना—ऋषभदेव २.३८२।

नीलाभास—ग्रह २.२७४ अ।

नीलोत्पला—उत्तरेन्द्रो की वल्लभिका ४.५१३ ब।

नीलोद्यान—मुनिसुव्रतनाथ २.३८३।

नीहार—तीर्थकर २.३७३ ब। देवगति २.४४६।

नीहारप्रायोपगमन—सल्लेखता ४.३६० अ।

नृत्यगान—पूजा ३.८० ब।

नृत्यमण्डप—चैत्यालय २.३०३ अ।

नृत्यमाल—२.६२६ ब, विजयार्धखण्ड प्रपातकूट का देव
३.४७१ ब।

नृपतुग—२.६२६ ब।

नृपदत्त—२.६२६ ब, यदुवंश १.३३७।

नृपनदि—२.६३० अ।

नेत्र (चक्षु इन्द्रिय)—२.२७७, अप्राप्यकारी १.३०३ अ,
अवगाहना का अल्पबहुत्व १.१५८, आहारान्तराय
१.२८ ब, इन्द्रिय १.३०२ अ, ज्ञान की कालावधि का
अल्पबहुत्व १.१६०, जानार्थक १.३०६ ब, पर्यायाधिक
नय २.५४२ ब, २.५४६ ब, सूक्ष्मग्रहण ४.४३६ ब।

नेत्रोन्मीलन—२.६३० अ प्रतिष्ठा विधान ३.१२० ब।

नेमिचंद्र—२.६३० अ, अभयनन्दि १.१२७ अ, इन्द्रनन्दि
१.२६६ ब, नन्दिसघ १.३२३ अ, देशीय गण १.३२५,
इतिहास १.३२६ अ। इतिहास—द्वितीय १.३३० ब,
१.३४२ ब, १.३४३ ब। तृतीय १.३३१ अ, १.३४३
ब। चतुर्थ १.३३२ अ, १.३४४ ब। पंचम १.३३२
अ, १.३४६ ब। षष्ठ १.३३२ ब। सप्तम १.३३३
ब।

नेमिचंद्र भट्टारक—काष्ठासघ १.३२७ अ, नन्दिसघ
१.३२४ अ।

नेमिचंद्र श्वेतांबर—१.३३१ अ, १.३४३ ब।

नेमिचंद्रिका—२.६३० अ।

नेमिदत्त—२.६३० अ, नन्दिसघ १.३२४ अ, इतिहास
१.३३३ ब, १.३४६ ब।

नेमिदेव—२.६३० अ, इतिहास १.३३० अ।

नेमिनंदि—नन्दिसघ भट्टारक १.३२३ ब।

नेमिनाथ—२.६३० अ, हरिवंश १.३४० अ, कुटुम्ब १.३०
ब, पूर्वभव १.१२२ ब, २.३७६-३६१, राजुल
(भोजवंश) १.३३६ ब।

नेमिनाथपुराण—२.६३० ब, इतिहास १ ३४७ अ ।

नेमिनाथ बारहमासा—इतिहास १.३४७ अ ।

नेमिनाथ वसत—इतिहास १ ३४७ अ ।

नेमिनिर्वाण काव्य—२ ६३० ब, इतिहास १ ३४३ ब ।

नेमिप्रभु—तीर्थकर २ ३६२ ।

नेमिषेण—२ ६३० ब माथुर सघ १ ३२७ ब । सेनसघ १ ३२६ अ-ब, इतिहास १ ३३० ब ।

नैर्ऋति—२ ६३० ब, नक्षत्र २.५०४ ब ।

नैगमनय—२ ५२७ ब, उपक्रम १ ४१६ ब, उपचार १.४२३ अ, नय २ ५२८ ब, निक्षेप २ ५६५ अ, रागद्वेष २ ३६ अ-ब ।

नैगमाभास—नय २ ५३१ ब ।

नैपाल—२ ६३० ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

नैपीरियन लॉग—अर्धच्छेद प्रक्रिया गणित २ २२५ अ ।

नैमित्तिक—निमित्त-नैमित्तिक भाव—दे० निमित्त ।

नैमित्तिक उत्पाद—उत्पाद-व्यय १ ३६२ ब ।

नैमित्तिक क्रिया—कृतिकर्म २ १३८ अ ।

नैमित्तिक दुःख—दुःख २ ४३४ ब ।

नैमित्तिक व्युत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३ ६२३ ब ।

नैमिष—विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

नैमिष—२ ३६० ब ।

नैयायिक दर्शन—एकान्त १.४६५ अ-ब । जीवविषयक मत २ ३३६ ब, दर्शन २ ४०३ अ ।

नैवेद्य—पूजा ३ ७८ ब ।

नैषध—२ ६३० ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

नैष्कर्म्य—वेदान्त ३ ५६५ ब ।

नैष्ठिक ब्रह्मचारी—३ १६४ ब ।

नैष्ठिक श्रावक—२ ६३० ब, श्रावक ४ ४८ ब, ४ ५० अ ।

नैसर्गिक मिथ्यात्व—एकान्त १ ४६४ अ, मिथ्यादर्शन ३.३०० ब, ३.३०१ अ ।

नैसर्ग—२ ६३० ब, चक्रवर्ती ४ १४ ब ।

नो—२ ६३० ब ।

नोआगम—२ ६३० ब, आगम १ २२८ अ, क्षेत्र २.१६२ ब, निक्षेप २.५६६ अ, २ ६०५ ब ।

नोआगम द्रव्य—अनन्त १ ५५ ब, अन्तर १ ३ ब, उपशम १.४३७ अ, काल २ ८१ ब, निक्षेप २ ५६६ ब, सामायिक ४ ४१६ अ ।

नो-आगम द्रव्य भाव—अनन्त १ ५५ ब, अन्तर १.३ ब, उपशम १.४३७ अ, कर्म २.२६ अ, काल २.८१ ब, जीव २.६०५ ब, पाहुड ३ १५६ ब, बधक ३ १७६ अ,

भाव ३ २१८ ब, योग ३ ३७६ अ, वर्गणा ३ ५१३ अ, सामयिक ४ ४१६ अ ।

नो-इन्द्रिय प्रणिधान—प्रणिधान ३ ११५ अ ।

नो-ओम्—ओम् १ ४७० अ ।

नो-ओम् नो-विशिष्ट—अनुयोग द्वार १ १०२ ब ।

नोकर्म—आबाधा १ २५० ब, कर्म २ २७ ब, २ २८ अ, बन्ध ३ १७० अ, ३ १७६ अ, भाव २ २७ अ, सक्रमण (गुणश्रेणी) ४ ६० ब, स्कन्ध ४ ४४७ ब ।

नोकर्म आहार—आहार १ २८५ अ, आहारक १ २६५ अ, केवली २ १५६ अ ।

नोकर्म तद्व्यतिरिक्त—निक्षेप २.५६६ ब, २.६०० ब, मगल ३ २४१ अ ।

नोकर्म नारकी—२ ५७२ अ ।

नोकर्म नोआगम—उपशम १ ४३७ अ ।

नोकर्म वर्गणा—कर्म २ २७ अ, वर्गणा ३ ५१२ ब ।

नोकर्महार—आहार १ २८५ अ, आहारक १ २६५ अ, केवली २ १५६ अ, केवलीसमुद्घात २ १५६ अ ।

नोकषाय—२ ६३१ अ, कषाय २ ३५ ब, २ ३६ अ, बन्ध काल का अल्पबहुत्व १ १६१, सक्रमण ४.८६ अ, स्थितिसत्त्व स्थानो का अल्पबहुत्व १ १६५ ब ।

नोक्षेत्र—क्षेत्र २ १६१ अ, २.१६२ अ

नोगौण्य नाम—उपशम १ ४३७ अ ।

नोगौण्यपद—उपक्रम २.४१६ ब, पद ३ ५ अ ।

नोजीव—२ ३३३ ब' २.३३४ अ ।

नोत्वचा—२ ४०१ ब ।

नोविशिष्ट—ओम् १ ४७० अ ।

नोससार—अनुप्रेक्षा १ ७८ अ, ससार ४ १४६ ब ।

नोसर्वविभक्ति—अनुयोग द्वार १ १०३ ब ।

नौ—अनुदिश ४ ५१० अ, केवलबन्धि ३ ४१२ अ, कोटि शुद्ध आहार १ १२१ अ, १ २१२ ब, कोटिशुद्ध ब्रह्मचर्य ३ १८६ ब, ग्रैवेयक ४.५१० अ, तत्त्व २ ३५३ ब, ४ ३५६ ब, देवता २ ४४४ ब, नारद ४ २१ अ, नारायण ४.१८ अ, निधि—चक्रवर्ती ४ १४ ब, समवसरण ४ ३३१ अ । पदार्थ ३ ८ अ, ३.२१८ अ, ४.३६० अ, पूर्वधर ४ ३६ अ-ब, प्रति-नारायण ४ २० अ, बलदेव ४.१६ अ, सहनानी २ २१६ अ ।

नौका—बिहार (आरोहण) ३ ५७४ ब ।

नौकार मन्त्र—३.२४७ अ ।

नौकार श्रावकाचार—२ ६३१ अ, इतिहास १ ३४१ अ ।

न्यग्रोधवृक्ष—ऋषभनाथ २.३८४, चैत्य-चैत्यालय २ २०३-३०४, पृथिवीस्वरूप ३ ५७८ ब ।

न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थान नामकर्म—प्ररूपणा—प्रकृति ३८८,

२.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३१३६। बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४३०३ त्रिसयोगी भग १४०४ अ, सक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व ११६८।

न्याय—२.६३१ अ, श्रुतज्ञान ४६० अ।

न्यायकंदली—त्रैशेषिक दर्शन ३६०७ ब, इतिहास १३३० ब।

न्यायकणिका—२६३५ अ।

न्यायकुमुदचक्रिका—२६३५ अ, इतिहास १३४३ अ।

न्यायचूलिका—२६३५ ब, अकलक १३१ अ, इतिहास १३४१ ब।

न्यायदीपावली—वेदान्त ३.५६५ ब।

न्यायदीपिका—२६३५ ब, इतिहास १३४४ ब, १३४५ ब।

न्यायभागमतसमुच्चय—२.६३५ ब।

न्यायभकरद—वेदान्त ३.५६५ ब।

न्यायमालाविस्तर—मीमांसा दर्शन ३३११ अ।

न्यायरत्नमाला—मीमांसा दर्शन ३३११ अ।

न्यायरत्नाकर—मीमांसा दर्शन ३३११ अ।

न्यायविनिश्चय—२.६३५ ब, अकलंक १३१ अ, इतिहास १३४१ ब।

न्यायविनिश्चयविवरण—इतिहास १३४३ अ।

न्यायसुधा—मीमांसा दर्शन ३३११ अ।

न्यायसूर्यावली—इतिहास १३४४ ब।

न्यायाभास—२६३१ ब।

न्यास—निक्षेप २.५६० ब।

न्यासापहार—२६३५ ब।

न्यासालाप—सत्य ४२७३ ब।

न्यून—२६३५ ब, गणित २२२२ ब, व्युत्सर्ग दोष ३६२२ अ।

न्योनदशमी व्रत—२६३५ ब।

प

पं - पंचेन्द्रिय की सहनानी २२१६ अ।

पंकजगंधा—महत्तरिका देवी ४.५१३ ब।

पंकजगुल्मा—वासुपूज्यनाथ २३७८।

पंकप्रभा—३१ अ। चतुर्थ नरक—निर्देश २५७६ अ, विस्तार २५७६, ५७८, अकन ३४४१, पटल २५८०, इन्द्रक श्रेणीबद्ध २.५७८, ५८०। नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान ११६८, आयु १२६३। प्ररूपणा बन्ध ३१०१, बन्धस्थान ३११३, उदय १३७६, उदयस्थान १३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४२८१, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४३०५, त्रिसयोगी भग १४०६ ब। सत् ४१००, सख्या ४६५, क्षेत्र २१६७, स्पर्शन ४४७६, काल २१०१, अन्तर १८, भाव ३२२० अ, अल्प-बहुत्व ११४४।

पंकभाग—३१ अ, भावनलोक—निर्देश ३३८६ ब, ३.२०६ ब, विस्तार ३३८६ ब, अकन ३२१० अ, ३३६०, ३.४३६, ३४४१। भवनो की सख्या ३२१०, अप् तथा तेज कायिक जीव २४५ ब।

पंकावती—३१ अ। विभगा नदी निर्देश ३४६० अ, नामनिर्देश ३४७४ ब, विस्तार ३४८६, ३४६०, अकन ३४४४, ३४६४ (चित्र स० ३७)।

पक्विक्रिया—क्रिया २१७५ अ।

पंशुश्रीश्राविका—कल्की २३१ ब।

पंच—अग्नि १३५ ब, अतिचार ३६२६ ब, अनुत्तर विमान ४.५१४ ब, अनुमानावयव १६८ ब, अस्तिकाय १२११ अ, आवार १२४० अ, इन्द्रिय १३०१ ब, उदम्बर १३६३ अ, कल्याणक २३२ अ, क्षायिक लब्धि ३४११ ब, ज्ञान २२५६ ब, चूलिका (श्रुतज्ञान) ४६६ अ, नमस्कार मन्त्र ३२४७ अ, परमेष्ठी ३२३ अ, परिवर्तन (ससार) ४१४७ अ, पाप ४४१७ ब, भाव ३२१८ ब, भावना ३.२२४ ब, मेरु (पूजा) ३.७५ ब, यम (महाव्रत) ३.६२७ ब, लब्धि ३.४१२ अ, व्रत ३६२७ ब, शरीर ४६ अ, समिति ४.३३६ अ, सूना २.२६ ब।

पंच-अग्नि—३२ अ, अग्नि १३५ ब, तय २.३५६ ब।

पंच-अतिचार—व्रत ३.६२६ ब।

पंच-अनुत्तर विमान—स्वर्ग ४.५१४ ब, प्ररूपणा दे. अनुत्तरदेव।

पंच-अनुदिश विमान—स्वर्ग ४.५१४ ब, प्ररूपणा दे. अनुदिश देव।

पंच-अनुमानावयव—अनुमान १.६८ ब।

पंच-अस्तिकाय—३२ अ, अस्तिकाय १.२११ अ।

पंच-आचार—दे. पचाचार।

पंच-इन्द्रिय — इन्द्रिय १ ३०१ ब, सहनानी २ २१६ अ ।

पंच-उदुंबर फल — उदुंबर १ ३६३ अ, भक्ष्यानक्षय ३ २०३ ब, श्रावक ४ ५० ब ।

पंच-उदय काल — उदय १ ३६३ ।

पंचकल्याणक — अर्हन्त १.१३८ ब कल्याणक २ ३२ अ ।

पंचकल्याणक वदना — कृतिकर्म २ १३६ अ ।

पंचकोटि शुद्ध आहार — अपवाद मार्ग १ १२१ अ ।

पंचक्षायिक लब्धि — मोक्ष ३.३२६ अ, लब्धि ३ ४११ ब ।

पंचगुरुभक्ति — इतिहास १ ३४० ब ।

पंचज्ञान — अदर्शन परिषद् १ ४६ ब, ज्ञान २ २५७ ब ।

पंचचारित्रसिद्ध — अल्पबहुत्व १ १५३ ब ।

पंचचूलिका — श्रुतज्ञान ४ ६६ अ ।

पंचदश — उत्कृष्ट असंख्यात की सहनानी २ २१६ अ ।

पंचधारणा — धारणा २ ४६१ ब, पिण्डस्थ ध्यान ३ ५८ अ ।

पंचमद — ३.१ अ ।

पंचनमस्कार मंत्र — मन्त्र ३ २४७ अ, सामायिक ४ ४१७ ब ।

पंचनमस्कारमन्त्रमाहात्म्य — ३ १ अ ।

पंचनिद्रा दर्शन २ ४१२ अ ।

पंचपद — वेदान्त ३.५६५ ब ।

पंचपरमेष्ठी — ओम् १.४६६ ब, चैत्य (प्रतिमा) २ ३०१ अ, ध्येय २ ५०१ अ, परमेष्ठी ३ २३ अ, व्रत ३.६२६ अ, सामायिक ४.४१७ अ ।

पंचपरिवर्तन — ससार ४.१४७ अ ।

पंचपाप — सामायिक ४.४१७ ब ।

पंचपौरिया व्रत — ३.१ अ ।

पंचभाव — भाव ३ २१८ ब ।

पंचभावना — ब्रह्मचर्य ३.१६० ब, भावना ३.२२४ ब, व्रत ३.६२६ ब ।

पंचमकाल — अवधिज्ञान १ १८६ ब, कल्कि २ ३१ अ, काल (दुःखमा) २ ६२, धर्मध्यान २ ४८४ ब, प्रव्रज्या ३.१५० अ, मन पर्यय ज्ञान १ १८६ ब ।

पंचमस्वर — स्वर ४ ५०८ ब ।

पंचमी व्रत — ३ १ ब ।

पंचमुष्ठी — ३ १ ब, नमस्कार २ ५०६ अ ।

पंचमेव - पूजा ३ ७५ ब ।

पंच यम — छेदोपस्थापना २ ३०८ ब, व्रत ३.६२७ ब ।

पंचरात्र — वैष्णव दर्शन ३.६०६ अ ।

पंचलब्धि — उपशम १.४३८ अ, लब्धि ३.४११ ब, ३.४१२ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६२ ब, ४.३६६ ब ।

पंचवर्ण — ३.१ ब, ग्रह २ २७४ अ ।

पंचविंशति — उपाध्याय के गुण १ ४४४ अ, सम्यग्दर्शन के दोष ४.३५१ अ ।

पंचविंशति कल्याण भावना व्रत — ३ १ ब ।

पंचविंशतिका — १ ३३१ अ १ ३४३ ब ।

पंचविंशिका - इतिहास १ ३३४ ब ।

पंचव्रत — व्रत (अणु तथा महा) ३ ६२७ ब ।

पंचशती — वेदान्त ३ ५६५ ब ।

पंचशरीर — अल्पबहुत्व १ १४२ अ, १ १५८, शरीर ४.६ अ ।

पंचशिख — साध्यदर्शन ४ ३६८ ब ।

पंचशिखरी — ३.१ ब ।

पंचशिरा — ३ १ ब, कुण्डलवर पर्वत के कूट का देव — निर्देश ३ ४७५ ब, अकन ३ ४६७ ।

पंचश्रुतज्ञान व्रत — ३ १ ब ।

पंचषष्ठि — पण्डुटी की सहनानी २ २१८ ब ।

पंचसंग्रह — ३ १ ब, अमितगति १ १३२ अ । इतिहास — प्रथम १ ३४१ अ, द्वितीय १ ३४३ अ, तृतीय १.३४३ अ, व ।

पंचसंग्रह टीका — इतिहास १ ३४६ अ ।

पंचसंग्रह वृत्ति — इतिहास २ ३४२ ब ।

पंचसमवाय — नियति २ ६१६ अ ।

पंचसमिति — समिति ४ ३३६ अ ।

पंचसूनदोष — कर्म २ २६ ब ।

पंचस्तूपसंघ — १ ३१७ ब, १ ३२६ ब ।

पंचांक — ३ २ अ ।

पंचांग — नमस्कार २ ५०६ अ ।

पंचाग्नि — ३ २ अ, अग्नि १ ३५ ब, तप २.३५६ ब ।

पंचाग्नितप — तप २ ३५६ ब ।

पंचाचार — आचार १ २४० अ, चारित्र २ २६१ अ, दीक्षा धारण २ २६१ अ, मिथ्यादृष्टि ३.३१३ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

पंचातिचार — व्रत ३ ६२६ ब ।

पंचाध्यायी — ३ २ अ, इतिहास १ ३४७ अ ।

पंचामृत अभिषेक — पूजा ३.७६ अ ।

पंचास्तिकाय — ३ २ अ, अस्तिकाय १.२११ अ ।

पंचास्तिकाय (शास्त्र) — ३ २ अ, इतिहास १.३४० अ ।

पंचास्तिकाय टीका — अमृतचन्द्र १.१३३ अ । इतिहास १ ३३४ अ, १ ३४२ अ, ब, १ ३४४ अ ।

पंचास्तिकायप्रदीप — इतिहास १ ३४२ ब ।

पञ्चीकृत विचार — वेदान्त ३.५६७ अ ।

पंचेन्द्रिय (जीव) — १ ३०६, अवगाहना १.१७६, आयु १ २६३, १.२६४, इन्द्रिय १ ३०७ अ, केवली २ १६२ अ, व, जीव २ ३३३ ब, जीवसमास २ ३४३, तिर्यच २ ३६७, त्रस २ ३६८ मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ, सक्लेश विगुद्धि स्थान का अल्पबहुत्व १ १६० अ ।

पंचेन्द्रिय जातिनाम कर्म — प्ररूपणा — प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३ १३६ । बन्ध ३ ६६ ब, ३ ६७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदस्थान १ ३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०४, सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६६ ।

पंचेन्द्रिय जीव — प्ररूपणा — बन्ध ३.१०१, बन्ध स्थान ३ ११३; उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २६६, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब । सत् ४.१६७, सख्या ४ ६६, क्षेत्र २.१००, स्पर्शन ४ ४८३, काल २.१०६, अन्तर १ ११, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

पंचेन्द्रियत्व — केवली २ १६२ अ, ब ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच — प्ररूपणा — बन्ध ३.१०१, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब । सत् ४.१७२, सख्या ४ ६५, क्षेत्र २.१६८, स्पर्शन ४.४७६, काल २.१०१, अन्तर १ ८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

पंजाब — मगधदेश १ ३१० ब ।

पजिका — ३.२ अ ।

पंडित — ३.२ ब ।

पंडितपंडितमरण — मरण ३ २८० ब ।

पंडितमरण — मरण ३ २८० ब, सल्लेखना ४ ३६२ ब ।

पंद्रह — उत्कृष्ट असख्यात की सहनानी २ २१६ अ ।

पंप — ३ २ ब ।

पउमचरिउ — इतिहास १ ३४० ब, द्वितीय १ ३४१ ब, कवि रङ्गू वाला तृतीय १.३४५ ब ।

पकोटि — सख्या प्रमाण २.२१४ ब ।

पक्वाश्य — औदारिक शरीर १.४७२ अ ।

पक्ष — ३ २ ब, काल का प्रमाण २.२१६ अ, ब, वाद ३.५३३ अ, श्रावक ४.४८ अ ।

पक्षपात — ३ ३ ब, एकान्त १ ४६३ ब, नय २.५१८ अ, २.५२४ ब, मिथ्यादृष्टि (श्रद्धान) ४.४६ अ, श्रद्धान

४ ४६ अ, श्रोता १ ४२६ अ, सम्यग्दृष्टि ४ ३७७ ब ।

पक्षपाती श्रोता — उपदेश १ ४२६ अ ।

पक्षाभास — ३ ३ अ ।

पक्षेप — ३ ३ ब ।

पञ्चीस — उपाध्याय के गुण १ ४४४ अ, सम्यग्दर्शन के दोष ४ ३५१ अ ।

पञ्जुणचरिउ — १ ३४४ ब ।

पटच्चर — ३ ३ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ ।

पटदेवी — भवनवासी इन्द्र की ३.२०६ अ ।

पटल — ३.३ ब, प्रस्तर २ ५७६ ब । नरकपटल — निर्देश ३ ५७६ ब, नामनिर्देश २ ५७६ अ, विस्तार २.५७६ अ, अकन ३ ४४१ । स्वर्गपटल — निर्देश ४ ५१४ ब, नामनिर्देश ४ ५१६ अ, विस्तार ४.५१६ अ, अकन ४ ५१५ दक्षिण-उत्तर विभाग ४ ५१४ ब ।

पट्टक शाला — सल्लेखना ४ ३६४ अ ।

पट्टन — चक्रवर्ती ४.१३ ब ।

पणट्ठी — ३ ३ ब, सख्याप्रमाण २.२१४ ब, सहनानी २ २१८ ब ।

पण्य भवन — ३ ३ ब ।

पण्हसवण — ३ ३ ब ।

पर्तजलि — योगदर्शन ३ ३८४ अ ।

पतक्षड — सुपास्त्रनाथ श्रेयास्तनाथ २ ३८२ ।

पतन — आहारान्तराय १ २६ अ ।

पताका — पूजा ३ ७६ अ ।

पति — स्त्री ४.४५१ ब, ४ ४५२ अ ।

पतिव्रत — स्त्री ४ ४५१ ब ।

पत्तन — ३ ३ ब, बलदेव ४.१७ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

पत्ति — ३ ३ ब, सेसा ४ ४४४ अ ।

पत्रचारण ऋद्धि — १.४५३ अ ।

पत्रजाति वनस्पति — ३ ३ ब, मक्ष्याभक्ष्य ३ २०४ ब ।

पत्रपरीक्षा — ३ ३ ब, इतिहास १.३४१ ब ।

पत्रसमूह — स्वप्न ४ ५०५ अ ।

पद — ३ ३ ब, आगम (श्रुतज्ञान) १.२२८ ब ।

पदगतभंग — ३.१६७ अ ।

पदज्ञान — श्रुतज्ञान ४.६५ अ ।

पदधन — ३ ५ ब, गणित २ २२६ ब ।

पदनिक्षेप — ३ ४ ब ।

पदमीमांसा — अनुयोग १.१०२ ब ।

पदविभागी — आलोचना १.२७७ अ, समाचार ४.३३६ ब ।

पदसमाप्ति — श्रुतज्ञान ४.६५ अ ।

पदसाहित्य — इतिहास १.३४७ ब ।

पदस्थ ध्यान—३५ ब।

पदानुसारी ऋद्धि—१४४८, १४४९ ब, गणधर २.२१२ ब।

पदार्थ—३८ अ, गुण २२४४ ब, द्रव्य २४६० अ, प्रमाण ३१४२ अ।

पदार्थ श्रद्धान—मिथ्यादर्शन ३३०० अ, मिथ्यादृष्टि ३३०२ ब, सम्यग्दर्शन ४३५६ अ।

पदुम—सख्याप्रमाण २२१४ ब।

पद्धति—३८ अ, उपदेश १४२५ अ।

पद्धतिटीका—इतिहास १.३४० ब।

पद्म—३९ ब, काल का प्रमाण २.२१६ अ, २.२१७ अ, कुरुवंश १३३५ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ, ४१४ ब, तीर्थकर २३६१, तीर्थकर चन्द्रप्रभ व पुष्पदन्त २३७८, बलदेव ४१६ अ, भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ, यदुवंश १३३७, रघुवंश १३३८ अ।

पद्म (कूट)—कुण्डलवर पर्वत का—निर्देश ३४७५ ब, विस्तार ३४८७, अकन ३.४६७। रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३४७३ अ, विस्तार ३.४८७, अकन ३४६८-३४६९। विद्युत्प्रभ गजदन्तका—निर्देश ३४७३ अ, विस्तार ३४८७, अक ३४६८, ३४६९। विद्युत्प्रभ गजदन्त का—निर्देश ३४७३ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३४४४ के सामने, ३४५७।

पद्म (क्षेत्र)—विदेह का क्षेत्र—निर्देश ३४६० अ, नाम-निर्देश ३४७० ब, विस्तार ३४७९, ३४८०, ३४८१, अकन ३४४४, ३४६४ के सामने, चित्र ३४६० अ।

पद्म (देव)—कुण्डलवर के कूट का ३४७५ ब, नाभिगिरि का ३४७१ अ, पुष्करार्ध द्वीप का ३६१४।

पद्म (ब्रह्म)—हिमवान पर्वत पर स्थित—निर्देश ३४४६ ब, ३४५३ ब, विस्तार ३४६०, ३४६१, अकन ३.४४४, ३४६४ के सामने, चित्र ३४५४।

पद्म (नाभिगिरि)—रम्यक क्षेत्र का—निर्देश ३४५२ ब, नाम निर्देश ३४७१ अ, विस्तार ३४८३, ३४८५ अकन ३४४४, ३४६४ के सामने चित्र ३४५२ ब, वर्ण ३४७७।

पद्म (स्वर्ण)—प्राणतेन्द्र का यान ४५११ ब। स्वर्ण-पटल—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४५१७, अकन ४५१९ ब, देवआयु १२६७।

पद्मक—यदुवंश १.३३७।

पद्मकावती—विदेह का क्षेत्र—निर्देश ३४६० अ, नाम निर्देश ३४७० ब, विस्तार ३४७९, ३४८०-४८१, अकन ३४४४, ३४६४ के सामने, चित्र ३४६० अ। विजयवान वक्षार का कूट तथा देव ३.४७२ ब।

पद्मकीर्ति—३.९ ब, नन्दि सघ १.३२३ ब, इतिहास १३३१ अ, १.३४२ ब, १३४३ ब।

पद्मकूट—३९ ब, विदेह वक्षार गिरि—निर्देश ३४६० अ, नाम निर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३४८२, ३४८५, ३.४८६, अकन ३४४४ के सामने, ३४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ, वर्ण ३४७७। इस पर्वत का कूट तथा देव ३४७२ ब।

पद्मगंधा—वैमानिक गणिका ४५१४ अ।

पद्मगुल्म—३९ ब, शीतलनाथ २३७८।

पद्मगुल्मा—सुमेरु के वनो की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नाम निर्देश ३४७४ अ, विस्तार ३४६०, ३४६१ अकन ३४५१, चित्र ३४५१।

पद्मदेव—३१० अ, कुरुवंश १३३५ ब।

पद्मनन्दि—३१० अ। प्रथम—नन्दिसघ १३२३ अ, देशीयगण १३२४ ब, कुन्दकुन्द ३१२७ ब, इतिहास १३२८ ब। द्वितीय—(आबिद्धकरण पद्मनन्दि)देशीय गण १३२४ ब, १३२५, इतिहास १३३० अ। तृतीय—काष्ठासघ १.३२७ अ, इतिहास १३३० ब। चतुर्थ—नन्दिसघ देशीयगण १३२५, इतिहास १३३० ब, १३४२ ब। पंचम—इतिहास १३३१ अ, १३४३ ब। अष्टम—(पद्मनन्दि लघु) नन्दिसघ भट्टारक १.३२३ ब, इतिहास १३३२ ब। नवम्—नन्दिसघ भट्टारक १३२४ अ, इतिहास १३३२ ब, १३४५ ब।

पद्मनन्दि पंचविंशतिका—३१० ब, इतिहास १.३३१ अ, १३४३ ब।

पद्मनन्दि सैद्धांतिक—आबिद्धकरण पद्मनन्दि—देशीयगण १३२५।

पद्मनाभ (कवि)—३१० ब, इतिहास १.३३३ अ-ब, १३४५ ब।

पद्मनाभ—३१० ब, कुरुवंश १३३६ अ, चक्रवर्ती ४११ ब, चन्द्रप्रभ २३७८।

पद्मनाभचरित्र—३१० ब, इतिहास १३४६ ब।

पद्मनिभ—विद्याधरवंश १३३९ अ।

पद्मपाद—वेदान्त ३५६५ ब।

पद्मपुंख—भावि शलाकापुरुष ४२५ अ।

पद्मपुंगव—भावि शलाकापुरुष ४२५ अ।

पद्मपुराण—३१० ब, इतिहास १३३३ ब।

पद्मप्रभ—३१० ब, तीर्थकर २.३७८-३६१, भावि शलाका-पुरुष ४२५ अ।

पद्मप्रभ मल्लधारी देव—३.१० ब, इतिहास १.३३१ ब, १३४४ अ।

पद्ममाल — ३१० ब, कुरुवंश १३३५ अ। स्वर्गपटल — निर्देश ४५१७, विस्तार ४५१७, अकन ४५१६ ब, देव आयु १२६७।

पद्ममालिनी — व्यतरेन्द्र गणिका ३६११ ब।

पद्ममाती — विद्याधर वंश १३३६ अ।

पद्मरथ — ३१० ब, अनन्तनाथ २३७८ ब, कुम्भवंश १३३५ ब, १३३६ अ, चक्रवर्ती ४११, धर्मनाथ २३७८, वज्रधर २३६२, विद्याधरवंश १३३६ अ।

पद्मरागमयी — सुमेरु की परिधि ३४४६ अ-ब।

पद्मराज — भावि शलाकापुरुष ४२५ अ।

पद्मलेश्या — ३४२३ ब, आयुर्वन्त्र १२५६ अ।

प्ररूपणा — बन्ध ३१०७, बन्धस्थान ३११३, उदय १३८४, उदयस्थान, १३१३ ब, सत्त्व ४२८४, सत्त्वस्थान ४३०१, ४३०६, त्रिष्योगी भग १४०७ ब। सत् ४२४६, सख्या ४१०८, क्षेत्र २२०६, स्पर्शन ४४६०, काल २११६, अन्तर ११८, भाव ३२२१ ब, अल्पबह्व ११५१।

पद्मवत् — विदेहस्थ क्षेत्र — निर्देश ३४६० अ, नाम निर्देश ३४७० ब, विस्तार ३४७६, ३४८०, ३४८१, अकन ३४४४, ३४६४, के सामने (चित्र न० ३७) चित्र ३४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देव ३४७२ ब।

पद्मवान् — ३११ अ, रम्यक क्षेत्र का नाभिगिरि — निर्देश ३४५२ ब, नामनिर्देश ३४७६ अ, विस्तार ३४८३, ३४८५, ३४८६, अकन ३४४४, ३४६४, (चित्र स० ३७) चित्र ३४५२ ब, वर्ण ३४७७।

पद्मश्री — चमरेन्द्र की अग्रदेवी ३२०६ अ।

पद्मसिंह — ३११ अ, इतिहास १३३१ अ।

पद्मसुन्दर — इतिहास १३३३ ब।

पद्मसेन — ३११ अ, पचस्तूप सघ १३२६ ब, पुन्नाटसघ १३२७ अ, इतिहास १३३० अ, विमलनाथ २३७८।

पद्महृद — ३११ अ।

पद्मांग — ३११ अ, काल का प्रमाण २२१६ अ, २२१७ अ।

पद्मा — ३११ अ, चमरेन्द्र की अग्रदेवी ३२०६ अ। वैमानिक इन्द्रो की ज्येष्ठ देवी ४५१३ ब, ४५१४ अ, वैमानिक इन्द्रो की वल्लभिका ४५१३ ब, व्यन्तरेन्द्र की वल्लभिका ३६११ ब, विमलनाथ २३८८। रुचक-वर पर्वत की दिक्कुमारी — निर्देश ३४७६ अ, अकन ३४६८ सुमेरु के वनो की पुष्करिणी — निर्देश ३४५३ ब, नामनिर्देश ३४७३ ब, विस्तार ३४६०, ३४६१,

अकन ३४५१, चित्र ३४५१।

पद्माल — ३११ अ, विद्याधर नगरी ३५४५ ब।

पद्मावत — ३११ अ।

पद्मावती — ३११ अ, पार्श्वनाथ २३७८, मुनिसुव्रतनाथ २३८०। यदुवंश १३३७। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी — निर्देश ३४७६ अ, अकन ३४६६। विदेह की नगरी — निर्देश ३४६० अ, नामनिर्देश ३४७० ब, विस्तार ३४७६, ३४८०, ३४८१, अकन ३४४४, ३४६४ (चित्र स० ३७), चित्र ३४६० अ।

पद्मावती कल्प — ३११ अ, इतिहास (भैरव पद्मावती कल्प) १३४३ ब।

पद्मासन — आसन १२८१ अ, व्रतिकर्म २१३५ ब, विमलनाथ अनन्तनाथ २३७८।

पद्मोत्तर — ३११ अ, उत्तरकुह दिग्गजेन्द्र — निर्देश ३४७१ ब, विस्तार ३४८३, ३४८५, ३४८६, अकन ३४४४। कुडलवर पर्वत का कूट तथा देव — निर्देश ३४७५ ब, अकन ३४६७। रुचकवर पर्वत का दिग्गजेन्द्र — निर्देश ३४७६ अ।

पद्मोत्तर (नाम) — वानरवशी विद्याधर १३३८ ब, वासु-पूज्यनाथ तथा श्रेयासनाथ २३७८।

पद्म — साधु का स्थितकल्प ४४०४ ब।

पद्मसा — ३११ अ, मनुष्यलोक (नदी) ३२७५ ब।

पद्मग — विद्या ३५४४ अ।

पद्मालाल — ३११ अ, इतिहास १३३४ ब।

पद्मभार — वसतिका (शिक्षागृह) ३५२८ अ।

परपरा — ३११ ब, आगम १२२८ अ, १२३५ ब। आग-मार्थ १२३० ब, उत्तर प्रतिपत्ति १३५६ अ।

परंपरा-आगत — आगम की प्रामाणिकता १२३५ ब।

परपरा-आगम — १२२८ अ, १२३५ ब।

परपरा-गुरु — १३२२-३२७।

परपरा-बध — ३१७१ ब।

परपरा-मुक्ति — धर्मध्यान २४८६ ब।

परपरा-मोक्ष का कारण — उपयोग १४३२ अ, चारित्र २२६१ अ, धर्म २४७५ ब, धर्मध्यान २४८४ अ-ब, २४८६, ब, मोक्षमार्ग ३३३६ ब, सप्तार ४१५० अ, स्वाध्याय ४३२४ अ।

परपरा-लब्धि — श्रुतज्ञान ४६० अ।

परपराहेतु — स्वाध्याय ४५२४ अ।

परंपरोपनिधा — अनुयोगद्वार ११०२ ब, श्रेणी ४७२ अ।

पर — ३११ ब, परत्वापरत्व ३१२ अ, परम ३१२ ब, ३१३ अ, सम्यग्दर्शन (स्व-पर विभाग) ४३४६ ब, सापेक्षधर्म ११०६ अ।

पर-अहिंसा—अहिंसा १ २१६ ब ।

पर-आकार—सप्तभंगी ४.३२२ अ ।

पर-उपकार—उपकार १ ४१४ ब, १.४१५, उपदेश १.४२५ अ, १ ४२६ ब, कर्त-कर्म २ २३ अ ।

पर-काल—काल २ ८० अ, चतुष्टय २ २७८ अ, सप्तभंगी ४.३२२ अ ।

पर-कृति—३ ११ ब ।

पर क्षेत्र—क्षेत्र २ १६१ ब, २.१६२ अ, चतुष्टय २.२७८ अ, ससार ४ १४७ अ, ४ १४८ अ, सप्तभंगी ४ ३२१ ब ।

परगण चर्या सल्लेखना ४.३६० ब, ४.३६१ अ ।

परगणानुपस्थापन—परिहार प्रायश्चित्त ३ ३५ ब ।

पर-निरपेक्ष—स्वभाव ४ ५०७ अ ।

पर-ग्राम-अभिघट्ट दोष—आहार १ २६० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ ।

परघात नामकर्म प्रकृति—३ ११ ब, प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४.४६५, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३.१३७, बन्ध ३ ६७, बधस्थान ३.१११, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४, सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६६ ब ।

पर-चतुष्टय—सप्तभंगी ४ ३१७ ब, ४ ३१६ ब, ४ ३२१ ब ।

पर-चारित्र—चारित्र २.२८२ ब, २ २८३ अ ।

परतत्रता—कारण-कार्य २ ६२ ब, २.७१ ब, २.७३ ब, कर्मोदय २.७१ ब ।

परतत्रवाद—३ १२ अ ।

परतत्रविवक्षा—स्याद्वाद ४ ४६८ अ ।

परत्व—काल २ ८३ अ, पर ३.११ ब, परत्वापरत्व ३ १२ अ ।

परत्वापरत्व—३ १२ अ ।

परदेश-अभिघट्ट दोष—आहार १.२६० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ ।

परद्रव्य—३.१२ अ, चतुष्टय २ २७८ अ, सप्तभंगी ४ ३२१ ब ।

परद्रव्य-ग्राहक नय—नय २ ५४५ ब ।

परद्रव्य-रत—मिथ्यादृष्टि ३ ३०२ ब ।

परद्रव्य-विरत—उपदेश १.४२४ अ ।

पर-निंदा—निंदा २.५८७ ब ।

पर-निमित्तक उत्पाद—आकाश १.२२१ ब, उत्पाद १.३५७ ब ।

पर-पक्षदूषक—हेतु ४ ५४१ अ ।

पर-पर्याय—पर्याय ३.४६ ब ।

पर-पुरुष—ब्रह्मचर्य ३ १६२ ब ।

परप्रकाशक—ज्ञान २ २५८ ब, दर्शन २.४०६ अ ।

पर-प्रत्यय उत्पाद—आकाश १ २२१ ब, उत्पाद १.३५७ ब ।

पर-प्रशंसा—निंदा २ ५८८ अ ।

पर-ब्रह्म—मोक्ष ३ ३२५ अ ।

पर-भविक प्रत्यय—प्रकृतिबध ३ ८८ ब, ३ ६० अ ।

पर-भाव—चतुष्टय २.२७८ अ, भाव ३ २१८ ब, ससार ४ १४७ अ, सप्तभंगी ४ ३२२ ब, सापेक्ष धर्म १ १०६ ब ।

परम—३ १२ ब, तत्त्व २ ३५३ अ, समयसार ४.३२६ अ ।

परम अद्वैत—३.१३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

परम एकत्व—३.१३ अ, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ ।

परमऋषि—१ ४५७ ब ।

परम गुरु—गुरु २.२५१ ब ।

परम ज्ञान—मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

परम ज्योति—३.१३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

परम तत्त्व—३ १३ अ, परम ३.१२ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

परम तत्त्वज्ञान—३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब ।

परम धर्मध्यान—मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

परम ध्यान—३.१३ अ, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ ।

परम निजस्वरूप—मोक्षमार्ग ३.३३५ ब ।

परम निरुद्धमरण—सल्लेखना ४.३८६ अ ।

परम-परम—तत्त्व २ ३५३ अ ।

परम ब्रह्म—३ १३ अ, ओम् १.४६६ ब, ब्रह्म ३ १८८ अ, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब ।

परमभाव-ग्राहक नय—नय २ ५४५ ब ।

परमभेदज्ञान—३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

परम विष्णु—३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब ।

परम वीतरागता—३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

परम समता—३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ ।

परमसमरसो भाव—३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

परम समाधि—३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

परम सुख—सुख ४.४३२ ब ।

परम स्वभाव—सुख ४.४२६ अ ।

परम स्वरूप—३.१३ अ ।

परम स्वाध्याय—मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

परम स्वास्थ्य—३.१३ अ, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ ।

- परमहंस — ३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब, वेदात ३.५६५ ब ।
- परमा — जाति २ २२६ ब ।
- परमागम नेत्र — अनुप्रेक्षा १.७८ अ ।
- परमागमसार — इतिहास १.३४५ ब ।
- परमा जाति — जाति २ ३२६ ब ।
- परमाणु — ३ १३ अ, आकाश मे अवस्थान १ २२३ अ, क्षेत्रप्रमाण २.२१५ अ, मूर्त ३.३१६ ब, वर्गणा ३ ५१५ अ स्कन्ध ४४४६ अ ।
- परमात्म ज्ञान — ३ १८ ब ।
- परमात्म तत्त्व — ३ १८ ब, तत्त्व २ ३५३ ब ।
- परमात्मदर्शन — ३ १८ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब ।
- परमात्मप्रकाश — ३ १८ ब, इतिहास १ ३४१ अ ।
- परमात्म भावना — ३ १८ ब, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ ।
- परमात्मराजस्तोत्र — इतिहास १.३४५ ब ।
- परमात्मस्वरूप — ३.१८ ब मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब ।
- परमात्मा — ३.१६ अ, आत्मा १ २४४ ब, ज्ञानावरण २ २७० ब, जीव २.३३३ ब, छेय २.५०१ ब, भव्य ३ २१३ अ ।
- परमाध्यात्मतरंगिनी — ३ २२ अ, अमृतचन्द्र १ १३३ अ, इतिहास १ ३४६ ब ।
- परमानन्द — ३ २२ ब, अनुभव १ ८५ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ ब ।
- परमानन्दविलास — ३ २२ ब, इतिहास १.३४८ अ ।
- परमानन्द सूरि — इतिहास १ ३३१ ब ।
- परमार्थ — ३ २२ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।
- परमार्थ गीत — इतिहास १ ३४७ ब ।
- परमार्थ तत्त्व — ३ २२ ब, तत्त्व २.३५३ अ ।
- परमार्थ दोहा शतक — इतिहास १ ३४७ ब ।
- परमार्थ बाह्य — ३.२२ ब ।
- परमार्थ सत्य - उपदेश १.४२४ अ ।
- परमावगाढ दर्शनार्थ — आर्थ १ २७५ अ, ४.३४८ अ ।
- परमावगाढ रुचि — सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब ।
- परमावगाढ सम्यक्त्वार्थ — १ २७५ अ ।
- परमावगाढ सम्यग्दर्शन — ४.३४६ अ ।
- परमावधि — निर्देश १.१८७ ब, गुणप्रत्यय १ १६३ ब । देशावधि १ १६३ ब, विषय १ १६६ अ ।
- परमावस्था — मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब ।
- परमुख उदय — उदय १ ३६६ अ, १.३६७ अ, १.३७१ ब ।
- परमेश्वर — ३.२२ ब, तीर्थकर २ ३७७ ।
- परमेश्वर तत्त्व — ३ २२ ब ।
- परमेष्ठी — ३ २२ ब, अनुभव १.८३ अ, ओम् १ ४६६ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०१ अ ।
- परमेष्ठी (कवि) — ३.२२ ब, इतिहास १ ३३० अ, १ ३४२ अ ।
- परमेष्ठीगुण व्रत — ३.२३ अ ।
- परमेष्ठीप्रकाशसार — इतिहास १.३४६ ब ।
- परमेष्ठीसहाय — इतिहास १ ३३४ ब ।
- परमोपेक्षा संयम — चारित्र २ २८५ अ, २ २६२ ब, शुद्धोप-योग १.४३१ अ, १ ४३३ ब ।
- परमौदारिक शरीर — अर्हत १ १३८ अ, केवली २ १५८ ब ।
- पर-रक्षा — अहिंसा १ २१६ ब ।
- पर-रूप से उदय — उदय १ ३६६ ब ।
- परलोक — ३ २३ अ, नि काक्षित २ ५८५ ब, भय ३ २०६ अ, मोक्ष ३ ३२४ ब ।
- परलोक-भय — भय ३ २०६ अ ।
- परवश-अतिचार — अतिचार १ ४३ ब ।
- पर-वात्सल्य — उपकार १.४१५ ब ।
- पर वाद — ३ २३ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ ।
- पर व्यपदेश — ३ २३ ब ।
- परशुराम — ३ २३ ब ।
- पर-सग्रह नय — नय २.५३४ अ-ब ।
- पर-संग्रहाभास — ३ ५३४ ब ।
- पर-संयोगी भग — भग ३ १६७ अ ।
- पर-समय — ३ २३ ब, एकान्त १ ४६५ अ, चारित्र २.२८२ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०३ ब, ३ ३०४ अ, समय ४.३२८ अ ।
- पर-समय उपक्रम — उपक्रम १.४१६ ब ।
- पर-सामान्य — सामान्य ४ ४१२ अ ।
- परस्त्री — स्त्री ४ ४५० ब, ४ ४५२ अ ।
- परस्त्री-त्याग — ब्रह्मचर्य ३ १८६ ब, ३.१६२ अ, ३ १६३ ब ।
- परस्थान-अल्पबहुत्व — १ १४६, १ १५४, १.१५५, १.१५७, १ १६२, १ १६६, १.१७२ ।
- परस्थान-गोपुच्छा — २.२५४ अ ।
- परस्थान-भागाभाग — ४ ११५ ।
- परस्थान-संक्रमण — ४.८४ अ ।
- परस्थान-सन्निकर्ष — ४ ३१२ अ ।
- परस्पर-परिहार-विरोध — विरोध ३ ५६५ अ ।
- परहिंसा — अहिंसा १ २१६ ब, हिंसा ४ ५३३ अ ।
- परहित — उपदेश १ ४२५ अ, हित ४.५३७ अ ।
- पराभोधि — नारायण ४.१८ ।
- परा — ३, २३ ब ।

पराजय — ३२३ ब ।

परात्मा — ३.२३, सप्तभगी ४३२१ ब ।

परामर्शन — स्मृत्यन्तराधान ४४६५ ब ।

परार्थप्रमाण — प्रमाण ३.१४१ अ ।

परार्थाधिगम — १५० ब ।

परार्थानुमान — १.६७ अ-६८ ब ।

परावर्त — ३२३ ब ।

परावर्तन — कृतिकर्म (आवर्त) १.२७६ अ, संसार (परिवर्तन) ४१४७ अ ।

पराशर — ३२३ ब, कुरुवश १३३५ ब, १३३६ अ ।

परिजा — ३२३ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

परिकर्म — ३२३ ब, श्रुतज्ञान ४.६८ ब ।

परिकर्म (शास्त्र) — इतिहास १३४० ब ।

परिकर्माष्टक — ३२३ ब, गणित २.२२२ अ ।

परिगणित — ३२३ ब ।

परिगृहीता — ३.२३ ब ।

परिग्रह — ३२३ ब, अचेलकत्व १.४० अ-ब, अपवाद मार्ग ११२२ ब, उपधि १.४२७ अ, सज्ञा ४.१२०, ४.१२१ अ, हिंसा १.२१७ अ, ४.५३२ ब ।

परिग्रह-त्याग — अचेलकत्व १.४० अ-ब, अहिंसा १.२१७ अ, चारित्र २.२६४ अ, परिमाण ३.२६ अ, ३.२७ ।

परिग्रह-त्याग-अणुव्रत — परिग्रह ३.२६ अ, ३.२७ ।

परिग्रह-त्याग-प्रतिमा — परिग्रह ३.२६ अ, ३.२७ ।

परिग्रह-त्याग-महाव्रत — परिग्रह ३.२६ अ ।

परिग्रह-त्याग व्रत — परिग्रह ३.२६ अ, व्युत्सर्ग ३.६२४ अ ।

परिग्रह-भाव — राग ३.३६६ ब ।

परिचारक — ३३० अ, सल्लेखना ४.३६२ अ, ४.३६४ ब ।

परिचित — निक्षेप २.६०२ अ ।

परिच्छेद — अनुयोग १.१०२ अ, ज्ञानावरण २.२७० ब ।

परिणमन — ३३० अ, ३३१ अ, (अलोकाकाश) २.८५ ब, उत्पादादि १.३५८ अ, १.३६१ ब, १.३६२ ब, कर्ता-कर्म २.१६ ब, २.१८ अ, २.१६ अ-ब, २.२१ अ ।
कारणकार्य — निमित्त २.६८ अ, योग्यता २.६१ अ, स्वतंत्रता २.६० अ-ब, २.६६ ब, काल २.८५ अ, गुण २.२४१ ब, द्रव्य २.४६० ब, धर्म-अधर्म द्रव्य २.४८६ ब, भाव ३.२१७ ब, ३.२७७ ब, वस्तु ३.५३० ब ।

परिणाम (परिणमन) — ३३० ब, उपादान १.४४३ ब, कर्ता-कर्म २.१६ ब, २.१८ अ, २.१६ अ-ब, २.२१ अ, कारण-कार्य २.५५ अ, काल २.७६ अ, २.८२ अ, २.८३ अ, पर्याय ३.३१ अ, ३.४५ ब ।

परिणाम परिणामक शक्ति — ३.३० ब ।

परिणाम भाव — ३३० ब, अध्यवसान १.५२ अ, अन्त-राय कर्म के बन्धयोग्य १.२८ अ, आयुकर्म के बन्ध-योग्य १.२५४ अ, उदीरणा १.४१० अ । उपयोग — १.४२६ अ, कर्मबन्ध १.४३४ ब, समय १.४३४ अ, स्वभाव-विभाव १.४२६ ब । करण — २.५ ब, अध-प्रवृत्तकरण २.८-११, अनिवृत्तिकरण २.१३-१४, अपूर्वकरण २.१२ अ, २.१३ अ, करणत्रिक २.७ अ, २.१४ अ, त्याग २.३६६ ब, पारिणामिक ३.५४ ब, प्रकृतिबन्ध ३.८८ ब, ३.९० अ, प्रायश्चित्त ३.१६० अ, बन्ध ३.१७५ अ, भाव ३.२१७ ब, योगस्थान ३.३८२ अ, सल्लेखना ४.३६० ब ।

परिणाम-योगस्थान — ३.३८२ अ ।

परिणाम-शक्ति — ३.३२ ब ।

परिणाम-शुद्धि — उदयाभाव १.३६६ ब ।

परिणामी — ३.३२ ब, कर्ता-कर्म २.१८ अ, गुण २.२४१ ब, द्रव्य २.४५६ ब, समयसार ४.३२६ अ ।

परितापन — अध कर्म १.४८ अ ।

परितापन कर्म — कर्म २.२६ अ ।

परिदावन — ३.३२ ब ।

परिदेवन — ३.३२ ब ।

परिधि — ३.३३ अ । गणित — क्षेत्रफल २.२३२ ब, वलय २.२३३ ब, वृत्त २.२३२ ब । सुमेरु की परिधियाँ ३.४४६ अ ।

परिनिवृत्ति क्रिया — संस्कार ४.१५३ अ ।

परिनिष्क्रमण — आहारक शरीर १.२६६ ब ।

परिपट्ट — व्युत्सर्ग दोष ३.५२६ अ ।

परिपीडित — ३.३३ अ, वसति का दोष ३.६२२ ब ।

परिभोग — भोग-परिभोग ३.२३७ ब ।

परिभ्रमण — योग ३.३७५ अ, योग (जीवप्रदेश) ३.३७५ अ, संसार ४.१४६ ब ।

परिमल्ल (कवि) — इतिहास १.३४७ ब ।

परिमह — ३.३३ अ ।

परिमाण — ३.३३ अ ।

परिमाणगत प्रत्यय — ३.१३१ ब ।

परिमाणहीन — ३.३३ अ ।

परिमित — ३.३३ अ, सत्य ४.२७० ब ।

परियात्रा — मनुष्यलोक (पर्वत) ३.२७५ ब ।

परिवर्त — ३.३३ अ, आहार दोष १.२६० ब, उद्दिष्ट दोष १.४१३ अ ।

परिवर्तन — ३.३३ अ, आर्यखण्ड १.२७५ अ, उत्पादादि १.३६१ ब, कर्म २.२६ अ, गणित २.२२६ अ-ब, संसार ४.१४६ ब ।

परिवर्तना—३ ३३ अ, उपयोग १ ४२६ ब ।

परिवर्तमान परिणाम—परिणाम ३ ३१ ब ।

परिवार-देवी—वैमानिक इन्द्र आदि की—आयु १ २७० ।

परिवार-मंडप—समवसरण ४ ३३० अ ।

परिशातन कृति—३ ३३ अ ।

परिशेष-न्याय—३ ३३ अ ।

परिषह—३ ३३ अ, कायक्लेश २ ४८ अ, केवली २.१६० ब, ध्यान २.४६३ ब, सामायिक ४.४१७ अ ।

परिषह-जय—३.३३ ब ।

परिसर्प—तिर्यच निर्देश २.३६७ ब, आयु १.२६३ ।

परिस्पंद—३.३५ अ, त्रिया २.१७३ अ, योग ३ ३७६ अ ।

परिस्पदन—उत्पादादि (धर्म आदि द्रव्य) १ ३६२ ब ।
गति २ २३५ अ । जीवप्रदेश २ ३३६ ब, योग ३.३७५ अ ।

परिस्पंदात्मक क्रिया—३.४७ अ ।

परिहार—३ ३५ अ, उपयोग (विषकुभ) १ ४३४ अ,
परिहारविशुद्धि ३.३६ अ ।

परिहार प्रायश्चित्त—३ ३५ अ ।

परिहार-विशुद्धिसंयम—३ ३६ अ, छेदोपस्थापना २.३०८ अ,
लब्धिस्थान का अल्पबहुत्व १.१६०, वेदभाव ३ ५८८ ब,
सिद्धी का अल्पबहुत्व १ १५३ । प्ररूपणा—बन्ध ३.१०६,
बन्धस्थान ३ ११३ । उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३६३,
उदीरणा १.४११, सत्त्व ४.२८३ । मोह-स्थितिसत्त्व ४.३०६ अ,
सत्त्वस्थान ४.३०१, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०७ । सत् ४.२३८,
सख्या ४.१०६, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४ ४८६, काल २.११४,
अन्तर १.१६, भाव ३ २२१ अ, अल्पबहुत्व १.१५१ ।

परिहास—समिति ४ ३४० अ ।

परीक्षा—३ ३८ अ, उपदेश १.४२५ ब, ऊहा १ ४४५ ब,
निक्षेप २ ५६२ अ, न्याय २ ६३४ ब, विचय ३ ५४१ ब,
विनय ३ ५५४ अ, श्रद्धान ४ ४४ अ, सल्लेखना ४.३६० ब ।

परीक्षामुख—३.३८ अ, इतिहास १ ३४३ अ ।

परीक्षित—३.३८ अ, कुरुवश १.३१० ब ।

परीत—३.३८ अ, अनन्त व असख्यात २.२१४ ब । वर्गणा ३.५१४ ब ।

परीतवर्गणा—३ ५१४ ब ।

परीतानत—१ ५५ अ ।

परीतासंख्यात—१ २०६ अ ।

परीलेखा—३.३८ अ ।

परुषवचन—असत्य १.२०८ अ ।

परोक्ष—३ ३८ ब, अनुभव १.८३ ब, १ ८७ अ, अवधि-
मन पर्यय १.१६० ब, प्रमाण ३ १४१ ब, मति-श्रुत १ ८३ ब,
४ ६३ ब, श्रुतज्ञान ४ ६३ ब, स्वाध्याय ४.५२४ अ ।

परोक्षज्ञान—देशतः (प्रमाण) ३ १४१ ब ।

परोक्षविनय—विनय ३ ५४६ ब ।

परोक्षाभास—३ ३६ अ ।

परोदय—३ ३६ ब, उदय १ ३६६ अ, १ ३६७ अ, १ ३७१ ब ।

परोदयबंधी प्रकृति—१ ३६८ अ, बन्ध उदय सयोगी प्ररूपणा १ ३६६ ।

परोपकार—उपकार १.४१५ अ-ब, उपदेश १.४२५ अ,
१ ४२६ ब, कर्ता-कर्म २ २३ अ ।

परोपघात—हिंसा ४ ५३३ अ ।

परोपदेशनिमित्तक मिथ्यादर्शन—मिथ्यादर्शन ३ ३०० ब,
३ ३०१ अ ।

परोपरोधाकरण—अस्तेयव्रत १ २१४ अ ।

पर्यकासन—आसन १ २८१ ब, कायक्लेश २.४७ ब । कृति-
कर्म २.१३४ ब, २ १३५ अ-ब ।

पर्यकासन तप—कायक्लेश २ ४७ ब ।

पर्यनुयोज्योपेक्षण निग्रहस्थान—३.३६ ब ।

पर्यवसन्न—३ ३६ ब ।

पर्याप्त(जीव)—अकालमृत्यु ३ २८५ अ, आयु १.२६३,
आहारक १.२६५ अ, आहारक काय योग १ २६८ अ,
काय २.४४, काययोग २ ४६ ब, केवली समुद्धात २ १६८ अ,
जीव २ ३३३ ब, जीवसमास २.३४३, तिर्यच २ ३६७,
निगोद (वनस्पति) ३.५०६ अ, ३ ५१०, पर्याप्ति ३ ४० ब,
प्राण ३ १५३ ब, मनुष्य ३ २७३, मरण ३ २८५ अ,
मार्गणा ३ २६८ अ, मिश्रगुण-स्थान ३.३०८ ब, सहनानी २ २१६ अ ।

पर्याप्ति—३ ३६ ब, निगोद (वनस्पति) ३.५०६ अ,
३ ५१०, योग (मन) ३.३८० अ ।

पर्याप्तिकाल—नामकर्म उदयस्थान १.३६३-३६७ ।

पर्याप्तिनाम-कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २ ५८३,
स्थिति ४.४६६, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६, बध ३ ६६,
३ ६७, बधस्थान ३ ११० उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०,
१ ३६७, उदीरणा १ ४११, उदीरणा-स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७६,
सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भंग १ ४०४, सक्रमण ४.८५ अ,
अल्पबहुत्व १ १६७ अ ।

पर्याय—३४४ ब, ३४५ ब। उपचार—गुणारोप १४२१
ब, द्रव्यारोप १४२१ अ, पर्यायारोप १४१६-४२१।
उत्पादादि—१३५८ अ, १३६० ब, १३६१ अ-ब,
१३६२ अ, उत्पाद १३५७, ध्रौव्य १३५८ अ,
१३६२ अ, व्यय १३५७ ब, सदसत् १३५७ ब, कारण
कार्य २५४ ब, २५५ अ, काल २७६ अ, भाव
३२१७ ब, सप्तभगी ४३२१ ब, ४३२२ ब।

पर्याय-ज्ञान—अक्षर १३२ ब, श्रुतज्ञान ४६४ ब,
४६५ ब।

पर्याय-नय—नय २५२३ अ।

पर्यायवत्त्व—३.५० ब।

पर्यायवाची शब्द—शब्दमय २५३६ ब, २५४० अ।

पर्यायवान्—द्रव्य २४५४ अ।

पर्यायसमास—श्रुतज्ञान ४६५ ब।

पर्यायसमास ज्ञान—श्रुतज्ञान ४६५ अ।

पर्यायांश—उत्पादादि १३६१ ब।

पर्यायाधिक—नय २५१४ ब, २५१५ अ, २५२६ ब,
निक्षेप २५६३ ब।

पर्यायाधिक चक्षु—एकान्त १४६२ ब।

पर्यायाधिक नय—नय २५४६ अ, २५५१ अ, २५५६
अ, पर्याय ३.५० ब, (व्यवहार) नय २५५६ अ,
स्याद्वाद ४.४६८ अ।

पर्यायोपचार—उपचार १४२१ अ-ब।

पर्युदास अभाव—अभाव ११२८ अ ब।

पर्व—३.५० ब।

पर्वत (नाम)—नारायण ४१८, विद्या ३५४४ अ। विद्या-
धर वश १.३३६ अ।

पर्वत—३.५० ब, क्षेत्रफल २२३३ अ, अन्यमत मान्य
—आधुनिक ३४३६ अ। चातुर्द्वीपिक भूगोल ३.४३७
ब, चित्र ३४३७ ब। बौद्धाभिमत ३४३४ अ, चित्र
३४३५। वैदिकाभिमत ३४३१ ब, चित्र ३४३२।

पर्वत (जैनमत मान्य)—काचनगिरि ३४५३ अ, ४५६ ब,
गजदन्त ३४५२ ब, ३४५६ ब, दिग्गजेन्द्र ३४५३
अ, ३.४५६ अ, नाभिगिरि ३४४६ अ, यमकगिरि
३.४५३ अ, ३४५६ ब, वक्षारगिरि ३.४६० अ,
वर्षधर ३४४६ ब, विजयार्थ ३४४८ अ, वृषभगिरि
३४४६ अ। लवणसागरमे स्थित—निर्देश ३.४६२
अ, नामनिर्देश ३४७४ ब, विस्तार ३४७६, अकन
३४६१, वर्ण ३.४७७, ३४७८।

पर्वत-गुफा—वसतिका ३.५२७ ब।

पर्वबीज—वनस्पति ३.५०२ ब, ३.५०६ अ।

पर्वोपवास—क्षुल्लक २१८६ अ।

पल—३.५० ब, काल का प्रमाण २२१७ अ, तौल का
प्रमाण २२१५ अ।

पलाय-मरण—मरण ३.२८१ ब।

पलाशगिरि—३.५० ब।

पलिकुंचन—३.५० ब।

पल्यंकासन—आसन १२८१ ब, कायक्लेश २.४७ ब,
कृतिकर्म २.१३४ ब, २१३५ अ-ब।

पल्यंकासन तप—कायक्लेश २.४७ ब।

पल्य—३.५० ब, उपमाकाल प्रमाण २.२१७ ब।

पल्लव—३.५० ब।

पल्लव-विधान व्रत—३.५० ब।

पवनजय—३.५१ अ, अंजना १२ अ, चक्रवर्ती ४१३ अ,
४१५ ब।

पवन—राक्षसवश १.३३८ अ, वायु ३.५३४ ब।

पवनदूत—इतिहास १३४७ अ।

पवाइज्जमाण—३.५१ अ।

पशु—३.५१ अ, सगति ४.११६ ब।

पशुकदन—नेमिनाथ २३८२।

पश्चात्-आनुपूर्वी—आनुपूर्वी १२४६ ब।

पश्चात् स्तुति दोष—३.५१ अ, आहार १.२६१ ब,
वसतिका ३.५२६ ब।

पश्चात्ताप—प्रायश्चित्त ३.१५६ अ।

पश्चिमा—विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

पश्यंती—भाषा ३.२२७ ब।

पाँच—अग्नि १३५ ब, अतिचार ३६२६ ब, अनुत्तर-
विमान १.५१० अ, ४.५१४ ब, अनुमानावयव १६८
ब, अस्तिकाय १२११ अ, आचार १२४० अ,
इन्द्रिय १३०१ ब, उदम्बर फल १३६३ अ,
कल्याणक २३२ अ, क्षायिकलब्धि ३.४११ ब,
ज्ञान २.२५६ ब, चूलिका (श्रुतज्ञान) ४६६
अ, नमस्कारमन्त्र ३.२४७ अ, परमेष्ठी ३.२३ अ,
परिवर्तन (ससार) ४.१४७ अ, पाप ४.४१७ ब,
भाव ३.२१८ ब, भावना ३.२२४ ब, मेरु (पूजा)
३.७५ ब, यम (महाव्रत) ३.६२७ ब, लब्धि ३.४१२
अ, व्रत ३.६२७ ब, शरीर ४६ अ, समिति ४.३३६
अ, सुनादोष २.२६ ब।

पाँचजन्य शंख—नारायण ४१६ ब।

पाँचाल—३.५१ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ-ब।

पांडव—३.५१ अ।

पांडवपुराण—३.५१ ब, इतिहास—द्वितीय १३४६ अ,
तृतीय १३४७ अ।

पांडु—३.५१ ब, कुरुवंश १३३६ अ, चक्रवर्ती ४.१४ ब,

विद्या ३५४४ अ । श्रुनकेवली (मूलसध) १.३१६,
इतिहास १ ३२८ अ, विद्याधरवश १ ३३७ ।
पाण्डुकबला शिला—३५१ ब, पाण्डुकवन मे स्थित—निर्देश
३ ४५० ब, अकन ३ ४५० ब, वर्ण ३ ४७७ ।
पाण्डुक—३५१ ब, कुण्डलवर पर्वत का देव—निर्देश
३ ४७५ ब, अकन ३ ४६७ पाण्डुकवन का लोकपाल
भवन ३.४५० ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब, मातंग
वश १ ३३६ ब ।
पाण्डुकवन—३.५१ ब, चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ अ, सुमेरु,
पर्वत—निर्देश ३ ४५० अ, विस्तार ३ ४८८, अकन
३ ४४६, चित्र ३ ४५० ब । पाण्डुक वन का भाग
३ ४५० ब ।
पाण्डुक शिला—पाण्डुक वन मे स्थित—निर्देश ३ ४५० ब,
विस्तार ३ ४८४, अकन ३.४५० ब, वर्ण ३.४७७ ।
पाण्डुकी विद्या—विद्याधर वश १ ३३६ अ ।
पाण्डुकेय—विद्याधर वश १.३३६ अ ।
पाण्डुर—३.५१ ब, कुण्डलवर पर्वत का देव—निर्देश ३ ४७५
ब, अकन ३ ४६७ ।
पाण्डुशिला—३ ५१ ब, पाण्डुवन मे स्थित—निर्देश ३ ४५०
ब, विस्तार ३.४८४, अकन ३.४५० ब, वर्ण ३ ४७७ ।
पाण्ड्य—३.५२ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।
पाण्ड्य वाटक—३.५२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।
पांशुतापि—३ ५२ अ, देव आकाशोपपन्न २ ४४५ ब ।
पांशुमूल—३ ५२ अ, विद्या ३ ५४४ अ, विद्याधर नगरी
३ ५४५ अ ।
पांशुमूलिक—विद्याधरवश १.३३६ अ ।
पांशुमूलिक विद्या—विद्याधरवश १ ३३६ अ ।
पाकर फल—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब ।
पाक्षिक आलोचना—आलोचना १ २७६ ब ।
पाक्षिक प्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३ ११६ अ, व्युत्सर्ग ३ ६२१
अ ।
पाक्षिक श्रावक—दर्शनप्रतिमा २ ४१८ अ, श्रावक ४ ४८
अ, ४ ४६ ब ।
पाखडी—मूढता ३ ३१५ ब ।
पाटला—तीर्थकर वासुपूज्यनाथ २.३८३ ।
पाटलिका—चैत्यचैत्यालय २ ३०२ अ ।
पाटलीपुत्र—३.५२ अ, इतिहास १ ३१० ब ।
पाणिपात्र—आहार १ २८६ अ, क्षुल्लक २ १८६ अ ।
पाणितः जंतुवध—आहारान्तराय १ २६ अ ।
पाणितः पिडपतन—आहारान्तराय १ २६ अ ।
पाणिमुक्ता गति—विग्रहगति ३.५४० ब ।

पातंजल भाष्यवार्तिक—साख्यदर्शन ४ ३६८ ब ।
पातक—सूतक ४ ४४२ ब ।
पाताल—३.५२ अ, तीर्थकर विमलनाथ का यक्ष २ ३७६,
यदुवश १.३३७ । लवणसागर मे स्थित—निर्देश
३ ४६० ब, नामनिर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३ ४७६,
अकन ३ ४६१, चित्र ३ ४६२ अ ।
पात्र—३ ५२ अ, अचेलकत्व १ ४० ब, पाणिपात्राहारी
क्षुल्लक २.१८६ अ, पाणिपात्राहारी साधु १.२८६
अ, श्वेताम्बर ४ ७६ ब ।
पात्र-अपात्र—उपदेश १ ४२५ ब, दान ३ ५२ अ, श्रावक
धर्म ४.४६ अ, श्रोता ४ ७५ अ ।
पात्रकेसरी—३ ५२ ब, मूलसध १ ३२२ ब । इतिहास—
१ ३२६ अ, १ ३४१ अ ।
पात्रकेसरीस्तोत्र—३.५३ अ, इतिहास १ ३४१ अ ।
पात्रग्रहण—अचेलकत्व १.४० ब, श्वेताम्बर ४ ७६ ब ।
पात्रत्व-अधिकार—ब्राह्मण ३.१६६ अ ।
पात्रदत्ति—दान २ ४२२ ब ।
पात्रदान—दान २.४२४ अ ।
पात्रदोष—आहार १ २६२ अ, उद्दिष्ट १ ४१३ अ ।
पात्रो—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ ।
पाद—३ ५३ अ, क्षेत्र का प्रमाण २ २१५ अ, वर्गमूल
२ २२३ अ ।
पादतप—कायक्लेश २ ४७ अ ।
पावपीठ—अर्हन्तातिशय १ १३७ ब ।
पादानुसारी ऋद्धि—ऋद्धि १.४४६ ब, गणधर २.२१२ ब ।
पादुकार—३.५३ अ ।
पादेन किंचित् ग्रहण—आहारान्तराय १ २६ ब ।
पादोपगमन—सल्लेखना ४ ३८७ अ ।
पाद्यस्थितिकल्प—३ ५३ अ ।
पान—३ ५३ अ, आहार १ २८५ अ ।
पानक—३ ५३ अ ।
पानकाहार—सल्लेखना ४ ३६३ ब ।
पानदशमी व्रत—३.५३ ब ।
पानभोजन—अहिंसा १ २१६ अ ।
पानी छानना—जल-गालन २ ३२५ अ-ब, श्रावक ४.५०
ब ।
पाप—३.५३ ब, अन्तरंग भाव ३ ६० ब, उपयोग १ ४३४
अ, चारित्र २.२८३ अ, चारित्र मोहनीय ३ ३४३ ब,
धर्म २ ४७० ब, पुज्य ३.६० ब, ३ ६१ अ, ३ ६४ अ,
प्रकृति ३ ८६ अ-ब, मिथ्यादर्शन ३ ३०१ अ ।
पाप-आस्रव—३.५३ ब ।

पापकर्मसंगता—व्युत्सर्ग ३ ६२२ अ ।

पापक्रिया-निरोध—चारण ऋद्धि १.४५१ ब ।

पापजीव—जीव २ ३३३ ब, २.३३४ अ, निन्दा (साधु) २ ५८६ अ ।

पापप्रकृति—अनुभाग १.६० ब, प्रकृति ३ ८६ अ, ३.६१ अ ।

पापभीरु—आगम १.२३७ अ, आचार्य १ २३२ अ, सत्लेखना ४ ३६१ ब ।

पापभीरुता—एकान्त १ ४६३ ब ।

पापमोहितमति—निन्दा (साधु) २ ५८६ अ ।

पापश्रमण—निन्दा (साधु) २ ५८६ अ ।

पापसवर—सवर ४ १४३ ब ।

पापसूत्र—यज्ञोपवीत ३.३७० अ ।

पापानुबंधी पुण्य—पुण्य ३ ६४ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०६ अ ।

पापालव—३ ५३ ब ।

पापी—धर्म २ ४६८ अ, मिथ्यादर्शन ३ ३०१ अ ।

पापोपदेश—अनर्थदण्ड १ ६३ अ ।

पामिच्छ—३ ५४ ब, वसति का दोष ३ ५२६ अ ।

पामीर—३ ५४ ब ।

पारचिक-परिहार-प्रायश्चित्त—परिहार-प्रायश्चित्त ३ ३५ ब, प्रायश्चित्त ३ १६१ ब ।

पारणा—प्रांषधोपवास ३.१६३ अ ।

पारपरिमित—३.५४ ब ।

पारमार्थिक—प्रत्यक्ष ३ १२३ अ ।

पारमार्थिक ध्यान—ध्यान २.४६७ अ ।

पारमार्थिक प्रत्यक्ष—प्रत्यक्ष ३ १२२ ब ।

पारमार्थिक सुख—सुख ४.४३० ब ।

पारलौकिक भय—भय ३.२०६ ब ।

पारा—३ ५४ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, ३.२७६ अ ।

पारामृष्य—३ ५४ ब ।

पाराशर—३ ५४ ब, एकान्ती १ ४६५ ब, विनयवादी ३.६०५ अ ।

पारिग्राहिकी क्रिया—क्रिया २ १७४ ब ।

पारिणामिक—३ ५४ ब ।

पारिणामिक गति—२ २३५ अ ।

परिणामिक परमाणु—स्कन्ध ४ ४४८ ब ।

पारिणामिक भाव—३ ५५ अ । उत्पादादिक १.३५८ अ, गुण २ २४१ ब, २ २४२ ब, द्येय २ ५०१ ब, परम ३ १२ ब, भव्य ३.२१४ अ, भाव ३ २१६ अ, मोक्ष-मार्ग ३ ३३५ ब, ३.३३७ ब, ३ ३३८ अ, योग ३.३७७ ब, सन्निपातिक भाव ४ ३१२ ब, सासादन ४.४२४ अ ।

पारिणामिक स्वभाव—उत्पादादि (धौव्य) १.३५८ अ ।

पारिणामिकी ऋद्धि—१ ४४८, १ ४५० अ ।

पारितापिकी—हिंसा ४.५३२ अ ।

पारितापिकी क्रिया—क्रिया २ १७४ ब ।

पारियात्र—३ ५६ अ ।

पारिव्राज्य क्रिया—संस्कार ४ १५३ अ ।

पारिषद—३.५६ अ ।

पारिषददेव—ज्योतिषीदेव—२ ३४६ अ । भवनवासी देव—निर्देश ३.२०६ अ, जम्बू-शात्मली वृक्षस्थल ३ ४५८-४५९, पद आदि ह्रद ३ ४५३-४५४, श्री ह्री आदि देवियो का परिवार ३ ६१२ अ, आयु १ २६५ । वैमानिक देव—स्वर्गों में ४ ५१२, सुमेरु पर्वत की पुष्करिणी ३ ४५०-४५१, आयु १ २६६ । इनकी देवियाँ—निर्देश ४ ५१३, आयु १ २७०, व्यन्तर देवों के ३ ६११ ब ।

पार्थसारथि मिश्र—मीमांसादर्शन ३ ३११ अ ।

पार्थिवी धारणा—पृथिवी ३ ८४ ब ।

पार्वतेय—मातंग-वश १ ३३६ ब, विद्याधरवंश १ ३३६ अ ।

पार्श्व—३ ५६ ब, नेमिनाथ का यक्ष २ ३७६ ।

पार्श्वकृष्टि—कृष्टि २ १४१ अ ।

पार्श्वचंद्र गच्छ—श्वेताबर ४ ७७ ब ।

पार्श्वदेव—इतिहास १ ३३२ अ, १ ३४४ ब ।

पार्श्वनाथ—३ ५६ ब, तीर्थकर २ ३७६-३६१ ।

पार्श्वनाथ प्रतिमा (फण)—पूजा ३ ७८ अ ।

पार्श्वनाथ काव्य पत्रिका—३ ५६ ब, इतिहास १ ३४६ ब ।

पार्श्वनाथचरित्र—इतिहास १ ३४३ ब ।

पार्श्वनाथ पुराण—१ ३३२ अ, १ ३३३ ब, १.३४५ ब, १ ३४७ ब ।

पार्श्वनाथ स्तोत्र—इतिहास १ ३४४ अ ।

पार्श्वपंडित—३ ५६ ब, इतिहास १ ३३२ अ ।

पार्श्वपुराण—३ ५६ ब । इतिहास १ ३४२ ब, १ ३४७ अ-ब ।

पार्श्वशय्याशन तप कायक्लेश २.४७ ब ।

पार्श्वस्थ (साधु)—३ ५६ ब, विनय ३ ५५३ अ, साधु ४ ४०८ अ ।

पार्श्वाम्युदय—३ ५७ अ, इतिहास १ ३४२ अ ।

पालंब—३.५७ अ, अतकृत्केवली १.२ ब ।

पालक—३ ५७ अ, मगधवश १ ३१० ब ।

पालिकुंचन—अतिचार १ ४४ अ ।

पाल्यकीर्ति—इतिहास १ ३३० अ, १.३४२ अ ।

पावापुरी—वर्द्धमान तीर्थकर २ ३८५।
पाविल—तीर्थकर २ ३७७।
पाषाण—रत्नप्रभा (१६वीं पृथिवी) ३.३६१ अ, श्रोता ४ ७४ ब।
पासणाहचरिउ—इतिहास १.३३१ अ-ब, १ ३३३ अ, १ ३४६ अ।
पासपुराण—इतिहास १.३४६ अ।
पाहुड—३ ५७ अ, इतिहास १ ३४० ब।
 कुदकुद २.१२८ अ, प्राभूत ३ १५६ ब।
पाहुडदोहा—इतिहास १.३३३ अ, १ ३४६ ब।
पाहुडिक—३ ५७ अ, वृत्तसर्ग दोष ३ ५२८ ब।
पिगल—३ ५७ अ, चक्रवर्ती ४ १४ ब, यदुवंश १ ३३७।
पिगल (शास्त्र)—इतिहास १ ३४७ अ।
पिजरा—३ ५७ अ।
पिड—३.५७ ब।
पिडपद भंग—भग ३ १६७ अ।
पिडप्रकृति—नामकर्म २ ५८४ अ।
पिडशुद्धि—आहार १ २८७ अ, १ २८६ अ।
पिडस्थ-ध्यान—३ ५७ ब।
पिच्छ—सल्लेखना ४.३६२ अ।
पिच्छिका—३ ५८ अ, अथालन्दचारित्र १ ४६ अ, अधिकरण १ ४६ ब, अपवादमार्ग १ १२२ ब, क्षुल्लक (वस्त्र की) २ १८८ ब, विहार ३.५७४ ब। समिति ४ ३३६ ब, ४ ३४० अ, ४ ३४१ अ-ब, ४.३४२ अ, सल्लेखना ४ ३६२ अ, ४ ३६७ अ।
पिच्छिका निक्षेप—अधिकरण १.४६ ब, समिति ४ ३४० अ।
पिटारे—तीर्थकर देव के वस्त्राभरण वाले—सुधर्म सभा ४.४४५ ब, स्वर्ग ४.५२१ अ।
पिठरपाक—३ ५८ ब, वैशेषिक दर्शन ३.६०८ ब।
पिता—मघा नक्षत्र २ ५०४ ब।
पितृकायिक—३.५८ ब, आकाशोपपन्न देव २.४४५ ब।
पितृघाती कुल—मगध वंश १ ३१० ब।
पित्त—३ ५८ ब, औदारिक शरीर १ ४७२ अ।
पिपासा—३ ५८ ब, क्षुधा २.१८७ ब, परिषह ३ ३३ ब, ३ ३४ अ।
पिलखन फल—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब।
पिशाच—३.५८ ब, वृत्तसर्ग ३ ६२२ अ।
पिशाच देव—३ ५८ ब। निर्देश ३ ६१० ब, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १.१६८ ब, आयु १.२६४ ब।
 इन्द्र—निर्देश ३ ६११ अ, शक्ति आदि ३.६१०-६११, वर्ण व चैत्यवृक्ष ३ ६११ अ, अवस्थान ३ ६१२-६१४।

पिशाच देव—प्ररूपणा—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदोरणा १.४११ अ, मत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.१८८, संख्या ४ ६७, क्षेत्र २ १६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २ १०४, अन्तर १.१०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५।
पिशुलि—३ ५६ अ।
पिष्टाक—स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४.५१७, अंकन ४ ५१६ ब। देव आयु १.२६७।
पिहित दोष—३ ५६ अ, आहार १.२६१ ब, वसतिका ३ ५२६ ब।
पिहितास्रव—३.५६ अ, पदप्रभ सुपाश्वर्नाथ २ ३७८।
पीठी (पिच्छिका)—३ ५८ अ, अथालन्दचारित्र १ ४६, अधिकरण १.४६ ब, अपवादमार्ग १ १२२ ब, क्षुल्लक (वस्त्र की) २ १८८ ब, विहार ३ ५७४ ब। समिति ४ ३३६ ब, ४ ३४० अ, ४ ३४१ अ-ब, ४.३४२ अ, सल्लेखना ४.३६२ अ, ४ ३६७ अ।
पीठ—३ ५६ अ, कृतिकर्म २.१३५ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ, यदुवंश १.३३७, रुद्र ४ २२ अ, शान्तिनाथ का रुद्र २.३६१।
पीठयत्र—३ ३५५।
पीतलेख्या—निर्देश ३ ४२३ ब, प्ररूपणा—बन्ध ३ १०७ आयु बन्ध १ २५६ अ, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३८४, उदयस्थान १ ३६३ ब, सत्त्व ४.२८४ सत्त्व-स्थान ४ ३०१, ४ ३०६, त्रिसंयोगी भग १ ४०७ ब। सत् ४ २४६, संख्या ४.१०८, क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४ ४६०, काल २.११५, अन्तर १ १८, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५१।
पीपल—तीर्थकर अनन्तनाथ २ ३८३, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब।
पीलुपाक—वैशेषिक दर्शन ३.६०८ ब।
पुंजस्थल—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ ब।
पुंडरीक—३ ५६ अ, तीर्थकर २ ३६१, तीर्थकर विमलनाथ का रुद्र २ ३६१, पुष्करार्ध का रक्षक देव ३.६१४, रुद्र ४ २२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ, श्रुतज्ञान ४.६१ ब, संख्या का प्रमाण २.२१४ ब। ह्रद—निर्देश ३ ५६ अ, ३.४४६ ब, ३ ४५३ ब, विस्तार ३ ४६० ३ ४६१, अंकन ३ ४४४ (चित्र सं. १३), ३.४६४ (चित्र सं. ३७), चित्र ३ ४५४।
पुंडरीकिनी (देवी तथा वापी)—३ ५६ अ, नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३, नामनिर्देश ३.४७५ ब,

विस्तार ३४६१, अंकन ३४६५। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३४७६ अ, अंकन ३४६८, ३४६९। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३४७२ ब, विस्तार ३४८२, ३४८५, ३४८६, अंकन ३४४४।

पुंडरीकनी नगरी—३५६ अ, चक्रवर्ती ४१० ब, तीर्थकर ऋषभदेव तथा शान्तिनाथ २३७८, तीर्थकर चन्द्रानन आदि विदेहस्थ २३१२, बलदेव, ४१६ ब। विदेह नगरी—निर्देश ३४६० अ, नामनिर्देश ३४७० ब, विस्तार ३४७६, ३४८०, ३४८१, अंकन ३४४४, ३४६४ (चित्र नं.३७), ३४६० अ।

पुंड्र—३५६ अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

पुंड्रवर्धन—३५६ अ, अर्हद्वली ११३८ ब।

पुंवेद—मोहनीय ३३४४ ब, विशेष दे० पुरुषवेद।

पुण्य (तत्त्व)—३५६ अ, उपयोग १४३२ अ, १४३३ अ, १४३४ अ-ब, १४३५ अ, चारित्र २२८३ अ, तत्त्व २३५४ ब, धर्म २४७४ ब, धर्मध्यान २४८३ ब, मिथ्यादृष्टि ३३०६ अ, शुभोपयोग १४३३ अ, १४३४ अ।

पुण्य (नाम)—क्षौद्रवर द्वीप का रक्षक देव ३६१४।

पुण्य-आस्रव—पुण्य ३६० ब।

पुण्यकर्म—पुण्यकर्म ३६० अ।

पुण्यचंद्र—विद्याधरवश १३३६ अ।

पुण्यजीव—जीव २३३३ ब, २३३४ अ, पुण्य ३६० अ।

पुण्यप्रकृति—निर्देश—३८६ ब, ३६१ अ, अनुभाग १६० ब, अनुभाग काण्डक घात १११७ ब।

पुण्यप्रभ—३६६ ब, क्षौद्रवर द्वीप का देव ३६१४।

पुण्यमूर्ति—तीर्थकर २३७७।

पुण्ययज्ञ क्रिया - सस्कार ४१५२ ब।

पुण्यानुबंधी पुण्य—पुण्य ३६४ अ, मिथ्यादृष्टि ३३०६ अ।

पुण्यास्रवकथाकोष—३६६ ब, इतिहास १३४५ अ।

पुतली—नरक में लोहे की पुतली २५७२ ब।

पुद्गल—३६७ अ, अनुभाग १८८ ब, अल्पबहुत्व ११४२ ब, अवस्थान (लोकाकाश) १२२३ ब, अस्तिकाय १२११ ब, आकाश में अवस्थान १२२३ ब, उपकार (कारण) २६३ ब, कर्म (क्रिया) २२८ ब, कारण-कार्य २६३ ब, गति (स्वभाव-विभाव) २२३५ ब, जीव २३३३ ब, परमाणु ३१५ अ, विभाव ३५६१ अ, विभावगति २२३५ ब, स्कन्ध ४४४७ ब, ४४४८ अ, स्वभाव ४५०६ ब, स्वभाव गति २२३५ ब।

पुद्गल-अनुभाग—१.८८ ब।

पुद्गल-अस्तिकाय—१२११ ब।

पुद्गलक्षेप—३६८ ब।

पुद्गल-परमाणु—परमाणु ३१५ अ।

पुद्गलबन्ध—स्कन्ध ४४४७ ब।

पुद्गलमोक्ष—मोक्ष ३३२२ ब।

पुद्गलयुति—युति ३३७३ ब।

पुद्गलराशि—गणित (सहजानी) २२१६ अ।

पुद्गलविपाकी प्रकृति—प्रकृतिबन्ध ३८६ ब।

पुद्गलसघात—अवगाहना १२२३ ब।

पुद्गलस्कन्ध—४४४६ अ।

पुद्गलानुभाग—१८८ ब।

पुद्गलास्तिकाय—१२११ ब।

पुनरुक्त निग्रहस्थान—३६८ ब।

पुनर्भव की सीमा—नरकाति २३२१।

पुनर्वसु—अभिनन्दननाथ २३८०, तीर्थकर २३८१, निति नक्षत्र २५०४ ब, नारायण ४१८ अ।

पुन्नाग—३६८ ब, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

पुन्नाट ३६६ अ।

पुन्नाटसंघ—इतिहास १३२६ ब।

पुमान—३६६ अ, जीव २३३३ अ।

पुरजय—विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

पुरंधर—इक्ष्वाकुवश १३३५ ब।

पुराकल्प—३६६ अ।

पुराण—३६६ अ।

पुराणसंग्रह—३६६ अ।

पुराणसार—३६६ अ, इतिहास १३४६ ब।

पुराणसारसंग्रह—इतिहास १३३१ अ, १३४२ ब, १३४३ अ, १३४५ ब।

पुरिमताल—ऋषभनाथ २३८४।

पुरु—३६६ अ, औदारिक शरीर १४७१ अ, किंपुरुष २१२५ अ, विद्याधर नगरी ३५४६ अ।

पुरुवश—३६६ अ।

पुरुदेव—किंपुरुष २१२५ अ।

पुरुदेवचंपू—इतिहास १३४५ अ।

पुरुवा—३६६ अ।

पुरुष—३६६ अ, किंपुरुष जातीय व्यन्तर देव २१२५ अ, जीव २३३३ अ, पुरुषार्थ के अर्थ में २६१६ अ, ३.१२ अ, मनुष्यलोक ३२७५ अ, शुल्कध्यान ४३३ अ।

पुरुषतत्त्व—३६६ ब।

पुरुषदत्ता—३६६ ब, विद्या ३५४४ अ, सुपार्श्वनाथ की शक्तिणी २३७६।

पुरुषदर्शिनी—व्यन्तरेद्र की गणिका ३६११ व ।

पुरुषपुडरीक अनतनाथ २३६१, नारायण ४१८ अ ।

पुरुषपुर—३७० अ ।

पुरुषप्रभ—३७० अ, किपुष २१२५ अ ।

पुरुषर्षभ—बजदेव ४१६ अ ।

पुरुषवाद—एकान्त १४६५ अ परतत्रवाद ३१२ अ, नियतिवाद २६१६ अ, साख्यदर्शन १४६५ व ।

पुरुषवेद कमप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३८८, ३३४४ अ, स्थिति ४४६२, अनुभाग १६१ व, १६५, प्रदेश २१३६। बध ३६३, ३६४, ३६५ अ, ३६६ व, ३६७, बन्ध की कालावधि का अल्पबहुत्व ११६१ व, बन्धस्थान ३१०६, उदय १.३७४, ४६४ व, उदय की विशेषता १३७३ अ, उदयस्थान १३८६, उदीरणा १४११, उदीरणा-स्थान १४१२ सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४२६६, स्थानिसत्त्व स्थान का अल्पबहुत्व ११६५ व, त्रिसयोगी भग १४०१ व । सक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व ११६८ व ।

पुरुषवेद (मार्गणा)—कषाय २.३५ व, नपुसकवेद ३५८६ अ, मनुष्य ३५८६ अ, राग कषाय २३६ अ, वेद ३५८३ व, ३५८६ । प्ररूपणा—बन्ध ३१०५, बन्ध की कालावधि का अल्पबहुत्व ११६१ व, बन्धस्थान ३११३, उदय १३८१, उदयस्थान १३६२ व, सत्त्व ४२८३, सत्त्वस्थान ४३००, त्रिसयोगी भग १.४०७ अ । सत् ४.२२४, संख्या ४६४, ४६६, ४१०४, क्षेत्र २२०३, स्पर्शन ४४८७, काल २१११, अन्तर ११४, भाव ३२२१ अ, अल्पबहुत्व ११४६ ।

पुरुषवेद सिद्ध—अल्पबहुत्व ११५३ व ।

पुरुष-व्यभिचार—शब्दनय २५३६ व ।

पुरुषसिंह—३.७० अ, धर्मनाथ २३६१, नारायण ४१२ अ ।

पुरुषाकांता—व्यन्तरेद्र की गणिका ३६११ व ।

पुरुषाकार—मोक्ष ३.३२६ व ।

पुरुषाकार नय—नय २५२३ व ।

पुरुषाद्वैत—अद्वैतवाद १४७ अ ।

पुरुषार्थ—३७० अ, करणलब्धि ३४१३ व, दैव २६१७ अ, नियति २६१८ अ ।

पुरुषार्थ नय—३७१ व ।

पुरुषार्थवाद—३७१ व, एकात १४६५ अ-ब. दैववाद २६१७ अ, नियतिवाद २६१८ अ, परतत्रवाद ३१२ अ ।

पुरुषार्थसिद्ध्युपाय—३७१ व, अमृतचद्र १.१३३ अ, इतिहास १३४२ अ ।

पुरुषोत्तम—३.७१ व, किपुरुष २१२५ अ, तीर्थकर अनन्त नाथ व विमलनाथ २३६१, नारायण ४१८ अ ।

पुरुहूत—विद्याधरवंश १३३६ अ ।

पुरोत्तम—३७१ व, विद्याधर नगरी ३५४५ अ ।

पुरोहित—३७१ व, चक्रवर्ती ४१३ अ ।

पुलवी—३७१ व, वनस्पाति ३.५०६, ३.५०६, व ३.५१० अ ।

पुलस्त्य—विद्याधरवंश १३३६ अ ।

पुनाक—३७२ अ, श्रुतकेवली ४५५ व, साधु ४.४०८ व ।

पुलोम—हरिवंश १३३६ व, १३४० अ ।

प्लुत अक्षर—१.३३ अ ।

पुष्कर ३७२ अ ।

पुष्करद्वीप—३७२ अ, निर्देश ३४६३ व, नामनिर्देश ३४७०, विस्तार ३४७८ अकन ३४४३, चित्र ३४६४, ज्योतिष चक्र २.२४८, अधिपतिदेव ३६१४। तीर्थकर पुष्पादत, वासुपूज्य, शीतल तथा श्रेयासनाथ २३७८ । वैदिकाभिमत ३.०३१ व ।

पुष्करद्वीप सिद्ध—अल्पबहुत्व ११५३ अ ।

पुष्करवृक्ष—निर्देश ३४६३ व, पृथिवीकायिक (वृक्ष) ३५७८ व, विस्तार ३४५८ अ, अकन ३४६४ के सामने, वर्ण ३४७७ ।

पुष्करवर सागर—निर्देश ३४७० अ, विस्तार ३४७८, अकन ३४४३, ज्योतिष चक्र २३४८, अधिपति देव ३.६१४, जल कारस ३४७० अ ।

पुष्करावती—चक्रवर्ती ४.१५ अ ।

पुष्करावर्त—३७२ अ ।

पुष्करिणी—जम्बू शालमली वृक्षस्थलो मे—निर्देश ३४५८ व, अकन ३४५६ । सुमेरु के वनो मे—निर्देश ३.४५३ व, नामनिर्देश ३४७३ व । विस्तार ३४६० ३४६१, अकन ३४५०, ३४५१, चित्र ३४५१ ।

पुष्कल—३७२ अ ।

पुष्कला—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३४७० व, विस्तार ३४७६, ३४८०, ३४८१, अकन ३.४४४, २४६४ (चित्र स ३७), चित्र ३४६० अ । वक्षार पर्वत का कूट तथा देव ३४७२ व ।

पुष्कलावती—३७२ अ, विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० व, विस्तार ३४७६, ३.४८० ३.४८१, अकन ३४४४, ३४६४ (चित्र ३७), चित्र ३.४६० अ । वक्षार गिरिका कूट तथा देव ३४७२ व ।

पुष्कलावर्त—३.७२ अ ।

पुष्प—३७२ अ, तीर्थकर सुविधिनाथ २३८३, पूजा ३७८ ब, भक्ष्याभक्ष्य ३२०४ ब।

पुष्पक—३७२ अ, तीर्थकर सुविधि २३८३, ईशान इन्द्र का यात ४५११ ब।

पुष्पक विमान—३७२ अ। स्वर्गपटल—निर्देश ४५१८, विस्तार ४५१८, अंकन ४५१५, देव आयु १२६८।

पुष्पगधी व्यन्तरेद्र की वल्लभिका ३६११ ब।

पुष्पगिरि—मनुष्यलोक ३२७५ ब।

पुष्पचारण ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५३ अ।

पुष्पचूड—विद्याधर नगरी ३५४५ ब, ३५४६ अ।

पुष्पचूल—३७२ ब, विद्याधर नगरी ३५४५ ब।

पुष्पदंत—३७२ ब, क्षीरवर द्वीप का देव ३६१४, लोकपाल ३४६१ ब।

पुष्पदंत (आचार्य)—मूलसंघ १३१७, १३२२ ब, १ परि०/२२, कालावधि १. परि०/२७-८, विशेष विचार १ परि०/२११। इतिहास १३२८ ब।

पुष्पदंत (कवि)—इतिहास १३३० ब, १३४२ ब।

पुष्पदंत पुराण—३.७२ ब, इतिहास १३४५ अ।

पुष्पदंता—तीर्थकर मुनिसुव्रतनाथ २३८८।

पुष्पदत्त—तीर्थकर २३६१।

पुष्पनंदि—३७२ ब।

पुष्पप्रकीर्णक विमान—विमान ३५६३ अ।

पुष्पमाल—३.७२ ब, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ।

पुष्पमाला—३७२ ब, सुमेरु के वनो की दिक्कुमारी—निर्देश ३४७३ ब, अंकन ३४५१।

पुष्पवती—व्यन्तरेद्र की वल्लभिका ३.६११ ब।

पुष्पवती स्त्री—स्त्री ४.४४३ अ।

पुष्पवृष्टि—प्रातिहार्य ११३७ ब।

पुष्पसेन—३७२ ब, मूलसंघ १३२२ ब, इतिहास १३२६ ब।

पुष्पांजली—३.७३ अ, तीर्थकर २३७७।

पुष्पांजली व्रत—३.७३ अ।

पुष्य—३७३ अ, तीर्थकर २.३८१, नक्षत्र २५०४ ब।

पुष्यमित्र—३७३ अ, शकवश १.३१० ब, १३१४।

पूजन—पूजा ३.८० ब।

पूजा—३.७३ अ, ३७४ अ, क्षुल्लक २१६० अ, चैत्य-चैत्यालय २३०१ अ, पुण्य (उपयोग) १४३५ अ, शुभोपयोग १४३४ अ, सावद्य ४४२१ ब।

पूजाकर्म—कर्म २.२६ ब, कृतिकर्म २१३३ ब।

पूजाकल्प—अभयनन्दि १.१२७ अ, इन्द्रनन्दि १.२६६ ब,

पूजाख्याति प्रतिष्ठा—अनाकाक्ष अनशन १.६६ अ, उपदेश

१.४२४ ब। तप २३५८ ब, २३६० अ, धर्म २४७६ अ, ध्याता २४६३ अ, राग ३.३६६ ब, ३३६७ अ, वाद ३.५३३ अ, विनय ३.५५२ ब। विवेक ३.५६६ अ, सल्लेखना ४३८३ अ, साधु ४४०५ अ, स्वाध्याय ४५२३ अ।

पूजा-पाठ—पूजा ३.८१ ब।

पूजायंत्र—३.३५६।

पूजामद—मद ३.२५६ ब।

पूजाराध्य क्रिया—सस्कार ४१५२ अ।

पूजार्ह—राक्षसवंश १३३८ अ।

पूज्य—विनय ३.५५२ ब, ३.५५३ ब।

पूज्यपाद—३.८१ ब, इतिहास १३२६ अ, १.३४० ब।

पूति—३.८२ अ, आहार का दोष १२६० ब, उद्दिष्ट दोष १.४१३ अ।

पूतिक—३.८२ अ, वसति का दोष ३.५२८ ब।

पूतिकर्म—कर्म २२६ ब।

पूरक—३.८२ अ, प्राणायाम ३१५५ अ।

पूरण—३.८२ अ, एकांत मत (मस्करीमत) १४६५ ब, गदुवश १३३७।

पूरणकरण—अन्तरकरण १२७ अ।

पूरणकाल—काल २.८१ अ।

पूरणगलन—परमाणु ३१५ अ, पुद्गल ३६७ अ।

पूरनकश्यप—३.८२ अ, एकान्तमती १४६५ ब।

पूरिम—निक्षेप ३.६०२ ब।

पूर्ण—३.८२ ब। असुरेद्र—निर्देश ३.२०८ अ, परिवार ३.२०६ अ, अवस्थान ३.२०६ ब। आयु १२६५। क्षीरवर द्वीप का रक्षक देव ३.६१४।

पूर्ण-अल्प उपचार—उपचार १.४२० ब।

पूर्णकलश मंगल—मंगल ३.२४४ अ।

पूर्णघन—३.८२ ब, राक्षसवश १३.८ अ, विद्याधरणवश १.३३६ ब।

पूर्णचंद्र—भावि शलाकापुरुष ४.२५ ब, विद्याधरवश १३३६ अ।

पूर्णप्रभ—३.८२ ब।

पूर्णबुद्धि—तीर्थकर २.३७७।

पूर्णभद्र (कूट)—३.८२ ब, गजदंत का—निर्देश ३.४७२, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४५७। विजयार्ध का—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ (चिह्न ब० १३)।

पूर्णभद्र (देव)—३.८२ ब, ३.८३ अ, क्षीरवर द्वीप का देव ३.६१४, गजदंत के कूट का देव ३.४७३ अ, यक्ष देव ३.३६६ अ, विजयार्ध के कूट का देव ३.४७१ ब।

व्यन्तरेद्र—निर्देश ३६११ अ, परिवार ३.६११ ब, संख्या ३६११ अ, आयु १२६४ ब।

पूणीक—३८३ अ।

पूणिमा—३८३ अ, उत्पत्ति का कारण चन्द्रमा की गति २३५१ अ, लवणसागर मे जवार ३४६० ब।

पूर्व—३८३ अ, कालप्रमाण २२१६ अ, २२१७ अ, श्रुतज्ञान ४६० अ, ४६४ ब।

पूर्वकृष्टि—कृष्टि २१४१ अ।

पूर्वक्षण उपादान कारण २.५५ अ।

पूर्वगत—३८३ अ, श्रुतज्ञान ४.६७ ब।

पूर्वचर हेतु—कारण-कार्य २५६ ब।

पूर्व-जिनचेत्य-क्रिया—कृतिकर्म २१३८ ब।

पूर्वतालका—तीर्थकर ऋषभदेव २.३८४।

पूर्वदत्ता—तीर्थकर मुनिमुव्रतनाथ २३८८।

पूर्वदिशा—३८३ अ, कृतिकर्म २१३६ ब, केवली २.१६७ अ-ब, दिशा २४३४ अ, व्युत्सर्ग ३६२० ब, सल्लेखना ४३८६ ब, सामायिक ४४१६ ब।

पूर्वधर—तीर्थकरो के सघ मे २३८६, मूलसघ १३१६।

पूर्वपर्याय-स्याग—उत्पादादि १३५७ ब।

पूर्वप्रज्ञापन नय नय २५२१ ब, २.५२२ अ।

पूर्वभाव-प्रज्ञापन नय - नय २५२१ ब, २.५२२ अ।

पूर्वमीमांसा—दर्शन २४०२ ब, मीमांसा दर्शन ३३११ अ।

पूर्वमुख—कृतिकर्म २१३६ ब, केवली २.१६७ अ-ब, व्युत्सर्ग ३६२० ब, सल्लेखना ४३८६ ब, सामायिक ४४१६ ब।

पूर्ववत् अनुमान—अनुमान १६७ ब।

पूर्वविद्—३८३ अ, तीर्थकरो के सघ मे २३८६। मूलसघ १३१७।

पूर्वविदेह—३८३ अ, विदेहक्षेत्र का पूर्वभाग—निर्देश ३४४६ ब, १६ क्षेत्र निर्देश ३४६० अ, ३४७० ब, विस्तार ३४७६, ३४८०, ३४८१, अकन ३४४४, ३४६४ (चित्र स. ३७)।

पूर्वविदेह (कूट)—निषध पर्वत—निर्देश ३४७२ अ, अकन ३४४४, गजदन्त पर्वत—निर्देश ३४७२ ब, अकन ३४४४ (चित्र स. १३)।

पूर्वसमास—श्रुतज्ञान ४.६४ ब।

पूर्वस्तुति—३८३ अ, आहार का दोष १२६१ अ, वसति का का दोष ३.५२६ ब।

पूर्वस्थिति—उपशम १४३८ ब।

पूर्वस्पर्शक—कृष्टि २.१४० ब, २.१४१ ब, सूक्ष्मसाम्पराय ४.४४१ ब, स्पर्शक ४.४७३।

पूर्वाग—३८३ अ, काल-प्रमाण २२१६ अ, २२१७ अ।

पूर्वातिपूर्व—श्रुतज्ञान ४६० अ।

पूर्वानुपूर्वी—आनुपूर्वी १२४६ ब।

पूर्वापर अविरोध—आगम १२३६ अ।

पूर्वापर विरोध—अगम १२३७ अ।

पूर्वापर संबंध—आगम १२३० ब, सम्बन्ध ४१२६ अ।

पूर्वाफाल्गुनी—नक्षत्र २५०४ ब।

पूर्वाभाद्रपद—३८३ अ, तीर्थकर २३८१, नक्षत्र २५०४ ब।

पूर्वाभिमुख—कृतिकर्म २.१३६ ब, केवल २१६७ अ-ब, व्युत्सर्ग ३६२० ब, सल्लेखना ४३८६ ब, सामायिक ४४१६ ब।

पूर्वाषाढ—३८३ अ, तीर्थकर शीतलनाथ २.३८०, नक्षत्र २५०४ ब।

पूषमाडी—३८३ अ।

पूषा—नक्षत्र (अधिपति देव) २५०४ ब।

पृच्छना—३८३ अ, उपयोग १४२६ ब।

पृच्छा—सल्लेखना ४३६० ब।

पृच्छा विधि—३८३ ब, श्रुतज्ञान ४६० अ।

पृतना—३८३ ब, सेना ४४४४ अ।

पृथक्त्व—३८३ ब, शुक्लध्यान ४३३ ब।

पृथक्त्वविक्रिया—वैक्रियिक ३६०२ अ।

पृथक्त्ववितर्क—शुक्लध्यान (प्रतिपाती) ४३५ ब।

पृथक्त्व-वितर्क-वीचार—उपयोग १४३१ अ, १.४३२ अ, कालावधि का अल्पबहुत्व ११६१ अ, धर्मध्यान २४८३ अ, शुक्लध्यान ४३३ अ, ४३६ अ।

पृथक्त्व व्यवहार—नय २५५८ ब।

पृथिवी—३.८३ ब, (गुण) ३.६८ अ, जीव २३३३ ब, पुद्गल ३६८ अ, स्थावर ४४५४ ब, स्वप्न (पृथिवी ग्रसन) ४५०४ ब।

पृथिवी (नरक)—३.८३ ब, अष्टम पृथिवी १५७६ ब, कलकल २५७६ ब। नरक—निर्देश २५७६ अ, पटल निर्देश २५७६, विस्तार २५७६, २.५७८, अकन ३.४४१। वातवलयो के साथ स्पर्श २.५७६ ब।

पृथिवी (नाम)—रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३४७६ अ, अंकन ३४६८, ३४६९। नारायण ४१८ ब।

पृथिवी अलीक—सत्य ४.२७३ ब।

पृथिवीकाय—३८४ अ। प्ररूपणा—बन्ध ३१०४, बन्ध-स्थान ३११३. उदय १३७६. उदयस्थान १३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४२८२, सत्त्वस्थान ४.२६६, ४.३०५ त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत्

४ २००, सख्या ४ १००, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४.४८३, काल २ १०६, अन्तर १ १२ भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

पृथिवीकायिक जीव—३ ८३ ब, ३ ८४ अ, अवगाहना १ १७६, आयु १ २६४, जीव २ ३३३ ब, जीवसमास २.३४३ काय २ ४४, वनस्पति ३ ५०६ अ, स्थावर ४ ४५३-४५४।

पृथिवीकायिक—वृक्ष—रुमल ३ ३७८ ब। चैत्यवृक्ष ३ ५७६ ब।

पृथिवी कोंगणि—३ ८५ अ।

पृथिवी-जीव—३ ८४ अ।

पृथिवीनाथ—कुरुवश १ ३३६ अ।

पृथिवीपाल—३ ८५ अ।

पृथिवीपुर—चक्रवर्ती ४ १० ब, प्रतिनारायण ४ २० ब।

पृथिवीपुरी—बलदेव ४ १६ ब।

पृथिवीमडल—३.८४ ब।

पृथिवीरेखा—क्रोध २ ३८ अ।

पृथिवीरैणा—तीर्थकर सुपार्श्वनाथ २ ३८०।

पृथिवीसिंह—३ ८५ अ।

पृथु—३.८५ अ, कुरुवश १.३३५ ब, १.३३६ अ, यदुवश १.३३७।

पृष्ठ—धनुष पृष्ठ निकालने की विधि गणित २ २३३ अ।

पृष्ठक—३ ८५ अ। स्वर्ग पटल—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४ ५१७, अकन ४ ५१६ ब, देव आयु १ २६७।

पेज्ज—सुख ४.४३० ब।

पेय—३ ८५ अ।

पेशि—३ ८५ अ, औदारिक शरीर १ ४७२ अ।

पैसठ—पणट्ठी की सहनानी २ २१८ ब।

पैप्पलाद—३ ८५ अ, अज्ञानवादी १ ३८ ब, एकाती १' ४६५ ब।

पैशून्य—३ ८५ अ।

पोत—३ ८५ अ।

पोतकर्म—कर्म २.२६ अ, निक्षेप २ ५६८ अ।

पोदन—३ ८५ ब। ३ २७६ अ।

पोदनपुर—नारायण ४ १८ ब, बलदेव ४ १७।

पोन्न—३ ८५ ब, इतिहास १.३३० ब।

पोण्ड्र—मनुष्यलोक ३ २७५ अ, यदुवश १ ३३७, वैदिकाभिमत देश ३.४३२ अ।

पौर—३.८५ ब।

पौराणिक राजवंश—इतिहास १ ३३५ अ।

पौरुषवाद—एकान्त १.४६५ अ-ब, दैववाद २.६१७ अ,

नियतिवाद २.६१८ अ, परस्त्रवाद ३.१२ अ।

पौरुषेय—३ ८५ ब, आगम १ २३८ अ।

पौलोम—हरिवंश १ ३३६ ब।

पौलोमपुर—३ ८५ ब, ३ २७६ अ।

पौष्टिक आहार—१ २८८ अ।

प्र—प्रतरागुल की सहनानी २.२१६ ब।

प्रकरण—अनुयोगद्वार १ १०२ अ।

प्रकरणसम—न्याय २.६३३ ब।

प्रकरणसम जाति ३.८५ ब।

प्रकरणसम हेत्वाभास—३.८५ ब।

प्रकर्षिणी—विद्या ३.५४४ अ।

प्रकाम—भावि शलाकापुरुष ४ २६ अ।

प्रकार—३.८५ ब।

प्रकाश—३ ८६ अ, सल्लेखना ४.३८६ अ।

प्रकाशन—सल्लेखना ४ ३६० ब।

प्रकाशवृत्ति—दर्शन २ ४०६ ब।

प्रकाशशक्ति—३.८६ अ।

प्रकाश्य-प्रकाशक भाव—आगम १.२३३ ब, मबध ४.१२६ अ।

प्रकीर्णक—३ ८६ अ। नरकबिल—निर्देश २ ५७६ ब, विस्तार २ ५७८ ब, अकन ३ ४४१। सख्या २ ५७८ अ। स्वर्ग विमान—निर्देश ३ ५६३ अ, अकन ४ ५१७, संज्ञा ४ ५२० अ।

प्रकीर्णक तारे—३ ८६ अ। ज्योतिषदेव प्ररूपणा—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदय-स्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १८८, संख्या ४.१७, क्षेत्र ३ १६६, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०६, अन्तर १ १०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

प्रकीर्णक देव—३.८६ अ, ज्योतिष—निर्देश २ ३४६ अ, आयु १ २६६ ब, भावन—निर्देश ३.२०६ अ, आयु १ २६५, वैमानिक—निर्देश ४ ५१३, देवियो की गणना ४ ५३, देव आयु १ २६६, देवी आयु १.२७०, व्यन्तर—निर्देश ३ ६११ ब, आयु १ २६४ ब।

प्रकुब्जा—तीर्थकर अजितनाथ २.३८८।

प्रकुर्वी—३ ८६ अ।

प्रकृति—३.८६ अ, गुण २ २४० अ।

प्रकृति-उदय—१.३६५ ब।

प्रकृति-द्युति—यदुवंश १ ३३७।

प्रकृतिबंध—३.८६ अ, ३ ८७ ब, ईर्यापथ कर्म १.३५० ब,

करण दशक २५ ब, देश व सर्वघाती १.६०-६४,
बध ३.६७, बन्धस्थान ३.१०८, त्रिसयोगी भग
१.४०४, सक्रमण ४.८४ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

प्रकृतिबंध वेदना—अल्पबहुत्व १.१७६।

प्रकृतिवाद—एकान्त 'साध्य दर्शन' १.४६५ ब।

प्रकृति-विपरिणमना—विपर्यय ३.५५५ अ-ब।

प्रक्रम—उपक्रम १.४१६ ब।

प्रक्रिया—३.११४ अ।

प्रक्षेपक—३.११४ अ।

प्रख्यात—नारायण ४.१८ ब।

प्रख्यात कीर्ति—नन्दिसघ १.३२३ ब, १.३२४ अ।

प्रगणना—३.११४ अ।

प्रज्ञप्ति—३.११४ अ, तीर्थकर सम्भवनाथ की यक्षिणी
२.३७६, विद्या ३.५४४ अ।

प्रज्ञा—३.११४ अ, अनुभव १.८७ अ, परिपह ३.३३ ब।

प्रज्ञाकर गुप्त—३.११४ अ।

प्रज्ञापना—प्ररूपणा ३.१४७ अ।

प्रज्ञापनी—भाषा ३.२२७ अ।

प्रज्ञापनीय—आगम १.२२८ ब, श्रुतकेवली ४.५६ अ।

प्रज्ञापरिषह—३.११४ अ, परिषह ३.३३ ब, ३.३४
अ ब।

प्रज्ञाभाव छेदना—छेदना २.३०६ ब, २.३०७ अ।

प्रज्ञाश्रमण ऋद्धि—ऋद्धि १.४४८, १.४५० अ-ब।

प्रचय—३.११४ ब, पर्याप्ति ३.४४ अ।

प्रचला—निद्रा २.६०८ ब।

प्रचला (कर्मप्रकृति)—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.४२०
अ, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १.६४ ब, प्रदेश ३.१३६।
बध ३.६७, बन्धस्थान ३.१०६, उदय १.३७५,
उदयस्थान १.३८७ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा
स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७६, सत्त्वस्थान ४.२८४,
त्रिसयोगी भग १.३६६, सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व
१.१६८ ब।

प्रचला-प्रचला—निद्रा २.६०८ ब।

प्रचलाप्रचला (कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८
२.४२०, स्थिति ४.४६० अनुभाग १.६४ ब, प्रदेश
३.१३६। बध ३.६७, बन्धस्थान ३.१०६, उदय
१.३७५, उदय की विशेषता १.३७३ ब, उदयस्थान
१.३८७ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान
१.४१२, सत्त्व ४.२७६ सत्त्वस्थान ४.२८६, त्रिसयोगी
भग १.३६६, सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

प्रच्छन्न—३.११४ ब, आलोचना १-२७७ ब।

प्रच्युति—उत्पादादि (व्यय) १.३५८ अ।

प्रज्ञापति—गणधर २.२१३ अ, बलदेव ४.१७ अ, नारायण
४.१८ अ, रोहिणी नक्षत्र का देवता २.५०४ ब।

प्रज्ञापाल—३.११४ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ, बलदेव
४.१६ ब।

प्रज्ञावती—तीर्थकर मल्लिनाथ २.३८०।

प्रज्वलित—३.११४ ब। नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब।

विस्तार २.५७६ ब, अकन ३.४४१, नारकी—

अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।

प्रणय—३.११५ अ।

प्रणव—पदस्थ ह्यान ३.७ अ-ब।

प्रणाम—नमस्कार २.५०६ अ। कृतिकर्म २.१३३ ब,
सामायिक ४.४१६ ब।

प्रणाली—हिमवान पर गंगाद्वार ३.४५५ अ।

प्रणिधान—३.११५ अ, उपयोग १.४२६ अ, योग ३.३७५
अ।

प्रणिधि—३.११५ अ, माया ३.२६६ ब।

प्रणियोग—योग ३.३७५ अ।

प्रतर—३.११५ अ, भेद ३.२३७ अ। रज्जू, लोक व तिर्यक्
प्रतर ३.११५ अ।

प्रतरसमुद्घात २.१६६ ब।

प्रतरांगुल—क्षेत्रप्रमाण २.२१५ ब, सहनानी २.२१६ ब।

प्रतरात्मक आकाश—३.११५ अ।

प्रताप—इक्ष्वाकुवश १.३३५ ब।

प्रतापवान्—इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ।

प्रतापसेन काण्ठासघ १.३२७ अ।

प्रतिकुंचन—३.११५ अ, माया ३.२६६ ब।

प्रतिक्रमण—३.११५ अ, उपयोग १.४३४ अ, कृतिकर्म
२.१३७ ब, २.१३६ ब, चारित्र २.२८८ ब, प्रतिक्रमण
(प्रायश्चित्त) ३.११७ अ, विषकुम्भ (उपयोग) १.४३४
अ, श्रुतज्ञान ४.६६ ब, समय (उपयोग) १.४३४ अ,
प्रायश्चित्त ३.१६० ब।

प्रतिज्ञा—३.११८ ब, अनुमानमयव १.६८ ब, न्याय
२.६३३ ब।

प्रतिज्ञांतर—३.११८ अ।

प्रतिज्ञाविरोध-निग्रहस्थान—३.११८ ब।

प्रतिज्ञासंन्यास निग्रहस्थान—३.११८ ब।

प्रतिज्ञा-हानि निग्रहस्थान—३.११६ अ।

प्रतिग्रह—भक्ति ३.११६ अ।

प्रतिघकर्म—अनुयोग १.१०२ अ

प्रतिघात—३.११६ अ, कर्मोदय २.७१ ब, सूक्ष्म ४.४३८
अ, ४.४३६ अ-ब।

प्रतिघात कर्म — अनुयोग १ १०२ अ ।

प्रतिघाती — ३ ११६ अ ।

प्रतिचद्र — वानरवश १.३३८ ।

प्रतिच्छन्न — ३.११६ अ, भूत ३ २३४ अ ।

प्रतिजीवी गुण — द्रव्य २ २४३ ब ।

प्रतित्रय — न्याय २ ६३३ ब, सिद्धान्त ४ ४२७ ब ।

प्रतिदृष्टांत समाजाति — ३ ११६ अ ।

प्रतिनारायण — गति-अगति (जन्म) २ ३२१ ब, चक्रवर्ती ४ १० अ, जन्म (गति-अगति) २.३२१ ब, शलाका-पुरुष ४ २० ब ।

प्रतिनीत — ३ ११६ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ ब ।

प्रतिपक्ष — अनेकान्त १.१०८ ब, आगम १ २३७ ब, पक्ष ३ ३ अ, वाद ३ ५३३ अ ।

प्रतिपक्षपद — उपक्रम १ ४१६ ब, पद ३.५ अ ।

प्रतिपत्ति — श्रुतज्ञान ४ ६४ ब ।

प्रतिपत्तिसमास — श्रुतज्ञान ४ ६४ ब ।

प्रतिपद्यमान — लब्धि ३.४१४ अ ।

प्रतिपात — ३ ११६ ब ।

प्रतिपातस्थान — लब्धि ३ ४१४ ब ।

प्रतिपाती — ३.११६ ब, अवधिज्ञान १ १८८ ब, १ १६३ ब, मरण ३.२६७ ब, शुक्लध्यान ४ ३४ अ, ४ ३५ ब ।

प्रतिपादन — आगम १ २३२ ब ।

प्रतिपाद्य — आगम १ २२८ ब ।

प्रतिपृच्छा — समाचार ४ ३३६ ब, ४.३३७ अ ।

प्रतिबंध — ३ ११६ ब ।

प्रतिबधक — कारण २ ७१ अ ।

प्रतिबध्य — ३ ११६ ब ।

प्रतिबध्य-प्रतिबधक — विरोध ३.५६४ ब, सबध ४.१२६ अ ।

प्रतिबल — वानरवश १ ३३८ ब ।

प्रतिबिंब — पूजा ३.७७ ब ।

प्रतिबिंबवत् — केवलज्ञान २.१४६ ब, २ १५४ अ ।

प्रतिबुद्धता — ३ ११६ ब ।

प्रतिबोध — ३ ११६ ब ।

प्रतिबोध चिन्तामणि — इतिहास १.३४७ अ ।

प्रतिभग्न — ३ ११६ ब ।

प्रतिभा — ३.१२० अ ।

प्रतिभाग — ३ १२० अ ।

प्रतिभा संस्कारारोपण पूजा — इन्द्रनदि १.२६६ ब ।

प्रतिभासाद्वैत — द्रव्य २.४५८ अ ।

प्रतिभूत — ३ १२० अ, भूत ३ २३४ अ

प्रतिमन्यु — इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ ब ।

प्रतिमा — ३.१२० अ, चैत्य-चैत्यालय २.३०० अ, दिगंबर २ ३०१ ब, परिग्रह ३.२७ अ, पूजा ३.७७ अ-ब, श्रावक ४ ४८ अ ।

प्रतिमान — प्रमाण ३.१४५ अ ।

प्रतिमा-योग — सल्लेखना ३ ३६३ अ ।

प्रतिमायोगी मुनिक्रिया — कृतिकर्म २.१३६ अ ।

प्रतिमा-योग्य — श्रावक ४ ५२ ब ।

प्रतिमा-स्थान — कायक्लेश तप २ ४६ ब ।

प्रतियोगी — ३ १२० अ ।

प्रतिरूप — ३ १२० अ, भूत जातीय देव ३ २३४ अ, व्यन्त-रेन्द्र — निर्देश ३ ६११ अ, सख्या ३ ६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, आयु १.२६४ ब ।

प्रतिरूपक — ३ १२० अ ।

प्रतिरूपक व्यवहार — अस्तेय १ २१३ ब ।

प्रतिलेखन — अयालन्दचारित्र १ ४६ अ, सल्लेखना ४ ३६० ब ।

प्रतिलोम क्रम — ३ १२० अ ।

प्रतिविपलाश — ३ १२० अ ।

प्रतिविपला — ३ १२० अ, कालप्रमाण २.२१७ अ ।

प्रतिशलाका — सध्या ४.६२ अ ।

प्रतिशलाका कुंड — असध्यात १ २०६ ब ।

प्रतिश्रवण — अनुमति १ ६६ अ ।

प्रतिश्रुति — ३ १२० अ, कुलकर ४ २३ ।

प्रतिषेध — अनेकान्त १ १०६ अ, सकलादेश ४ १५७ अ, सप्तभगी ४ ३१६ ब । स्याद्वाद ४ ४६६ अ । हेतु ४ ५३६ अ ।

प्रतिषेधरूप हेतु — ४ ५३६ अ ।

प्रतिष्ठा — ३ १२० अ, धारणा २ ४६१ अ, कीर्ति-प्रतिष्ठा दे० पूजा-ख्याति प्रतिष्ठा ।

प्रतिष्ठाचार्य — आचार्य १ २४२ ब ।

प्रतिष्ठातिलक — ३ १२० ब, इतिहास १ ३४३ ब ।

प्रतिष्ठापन-समिति — समिति ४ ३४१ ब ।

प्रतिष्ठापना-शुद्धि — समिति ४ ३४२ अ ।

प्रतिष्ठा-पाठ — ३ १२० ब, आशाधर १ २८१ अ, इन्द्रनदि १ २६६ ब ।

प्रतिष्ठा-विधान — ३.१२० ब ।

प्रतिष्ठासारसग्रह — इतिहास १ ३४३ ब ।

प्रतिष्ठित — ३.१२० ब, कुरुवश १ ३३५ ब ।

प्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पति — निर्देश ३.५०२-५०७, जीव-समास २.३४३ । प्ररूपणा — बन्ध ३.१०४, बन्धस्थान ३.११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १.३६२ ब,

उदीरणा १४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४२६६, ४३०५, त्रिसयोगी भग १४०६ ब। सत् ४.२०६, सख्या ४.१०१, क्षेत्र २.२०१, स्पर्शन ४४८४, काल २१०७, अन्तर ११२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व ११४६।

प्रतिसर—कुरुवश १३३५ ब।

प्रतिसरण—३१२० ब, उपयोग (विषकुम्भ) १४३४ अ।

प्रतिसारी ऋद्धि—१४४८, १.४४६ ब।

प्रतिसेवना—श्रुतकेवली ४.५५ ब, साधु ४४०८ ब।

प्रतिसेवना-काल—काल २८१ ब।

प्रतिसेवना-कुशील—कुशील २१३१ अ, श्रुतकेवली ४.५५ ब, साधु ४४०८ ब।

प्रतिसेवा—अनुमति १६६ अ।

प्रतिसूर्य—३१२० ब।

प्रतिसूर्यतप—कायक्लेश २४७ अ।

प्रतिहरण—३१२१ अ।

प्रतीद्र—इन्द्र १२६६ अ, ज्योतिषदेव—निर्देश २.३४५ ब, आयु १२६६। भवनवासी देव—निर्देश ३२०६ अ, आयु १२६५, वैमानिक देव—निर्देश ४.५१२, देवियो की गणना ४५१३ आयु १२६६, व्यन्तर—निर्देश ३६११ ब, आयु १२६४ ब।

प्रतीक—३१२१ अ।

प्रतीच्छना—३.१२१ अ, उपयोग १.४२६ ब।

प्रतीच्य—३.१२१ अ।

प्रतीति—३१२१ अ, उपदेश १४२६ ब, सम्यग्दर्शन ४३५० ब।

प्रतीत्य सत्य—सत्य ४.२७१ ब।

प्रत्यक्—३१२१ अ।

प्रत्यक्ष—३१२१ अ, अनुभव १८१-८७, अवधिज्ञान ११६० अ-ब, परोक्ष अनुभव १८७ अ, मतिज्ञान—अनुभव १८३ ब, मन पर्यय ज्ञान (अवधिज्ञान) ११६० अ, श्रुतज्ञान (अनुभव) १८३ ब, स्वसवेदन (अनुभव) १८१-८७, स्वाध्याय ४५२४ अ।

प्रत्यक्षज्ञान—प्रमाण ३१४१ ब, सम्यग्दर्शन ४३५२ अ।

प्रत्यक्षज्ञानी—आगम प्रामाण्य १२३५ ब।

प्रत्यक्षबाधित—बाधित ३१८२ ब।

प्रत्यक्ष विनय—विनय ३५४६ ब।

प्रत्यक्ष हेतु—स्वाध्याय ४५२४ अ।

प्रत्यक्षाभास—प्रत्यक्ष ३१२३ अ।

प्रत्यनीक—३१२४ अ, कारण (कर्मोदय) २.७१ ब।

प्रत्यभिज्ञान—३.१२४ ब, मतिज्ञान ३२५४ अ-ब, स्मृति (मतिज्ञान) ३.२५४ अ।

प्रत्यभिज्ञानाभास—प्रत्यभिज्ञान ३१२५ अ।

प्रत्यय—३१२५ अ, ३१२६ अ, आकाश १२२१ ब उदय व्युच्छित्ति ३१२६-१.२६, प्रत्ययस्थान ३१२६ १३०, उपयोग (अशुभ) १४३३ ब, निमित्त २६१० ब, पर-प्रत्यय उत्पाद १.२२१ ब, मोक्षमार्ग ३३३५ अ, मोहनीय ३३४२ ब, सम्यग्दर्शन ४३५० ब, स्व प्रत्यय उत्पाद १२२१ ब।

प्रत्ययकषाय—२.३५ ब, २.३६ अ, २३७ अ-ब, समुत्पत्तिक कषाय २३७ ब।

प्रत्यय निबधन नाम—नाम २५८२ ब।

प्रत्यय मल—मल ३.२८८ ब।

प्रत्यय स्थान—प्रत्यय ३१२६ ब।

प्रत्यवेक्षण—३१३१ अ, स्मृत्यतराधान ४४६५ ब।

प्रत्याख्यात सेवना—आहारातराय १२६ अ।

प्रत्याख्यान—३१३१ अ, कृतिकर्म २१३६ ब, प्रतिक्रमण ३११८ अ, मोक्षमार्ग ३३३७ अ, (सम्यग्दर्शन) ३१३२ ब, सल्लेखना ४.३६० ब, ४३६३ अ।

प्रत्याख्यान-कषाय—कषाय २३५ ब, २३८ अ, २३६ अ।

प्रत्याख्यान-चतुष्क—उदय १३७४ ब।

प्रत्याख्यान-धारण—कृतिकर्म २१३६ ब।

प्रत्याख्यान-प्रवाद—श्रुतज्ञान ४.६६ अ।

प्रत्याख्यानावरण कर्मप्रकृति—३१३३ अ, सर्वधाती १.६३ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३८८, ३३४४ अ, स्थिति ४४६१, अनुभाग १६४ ब, प्रवेश ३१३६। बध ३६७, बन्धस्थान ३.१०६, उदय १३७५, उदयस्थान १३८६, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२ सत्त्व ४२७८. सत्त्वस्थान ४२६६, स्थितिसत्त्व स्थानो का अल्पबहुत्व ११६५ ब, त्रिसंयोगी भग १४०१ ब, संक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

प्रत्याख्यानावरण चतुष्क—१.३७४ ब।

प्रत्याख्यानी भाषा—भाषा ३.२२७ अ।

प्रत्यागाल—आगाल १२३६ ब।

प्रत्यामुंडा—३.१३३ अ।

प्रत्यावली—अन्तरकरण १२५ ब, आवली १.२७६ ब।

प्रत्यास—३.१३३ ब।

प्रत्यासत्ति—३.१३३ ब।

प्रत्याहार—३१३४ अ, प्राणायाम ३.१५५ अ।

प्रत्युत्पन्न नय सिद्ध—अल्पबहुत्व ११५३ ब।

प्रत्युत्पन्न भाव प्रज्ञापन नय—नय २५२२ अ।

प्रत्युपकार—उपकार १.४१५ अ।

प्रत्युषकाल—३.१३४ अ।

प्रत्येक पद—भंग ३.१६७ अ।

प्रत्येकबुद्ध—बुद्ध ३.१८४ अ, अल्पबहुत्व १.१५४ अ, संख्या ४.६४ अ ।

प्रत्येकबुद्ध वचन—आगम १.२३६ अ ।

प्रत्येकबुद्ध ऋद्धि—ऋद्धि १.४४८ ।

प्रत्येक भग—भग ३.१६७ अ ।

प्रत्येकवनस्पति काय—काय-निर्देश २.४४, वनस्पति-निर्देश ३.५०२-५०७, अवगाहना १.१७६, आयु १.२६४, जीवसमाम २.३४३ । प्ररूपणा—बन्ध ३.१०४, बन्ध-स्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६६, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.२०७, संख्या ४.१०१, क्षेत्र २.२०१, स्पर्शन ४.४८४, काल २.१०६, अंतर १.१२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४६ ।

प्रत्येकशरीर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा - प्रकृति ३.८८, २.५८३, ३.५०३ अ, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६ । बन्ध ३.६३, बन्धस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ ब, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भग १.४०४, सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६७ अ ।

प्रत्येकशरीर वर्गणा—वनस्पति ३.५०३ अ, वर्गणा ३.५१३ अ, ३.५१४ अ, ३.५१५ ब, ३.५१६ अ, ३.५१७ ब, ३.५१८ अ ।

प्रथम—श्रेढी व्यवहार गणित २.२२६ ब, २.२३० ब ।

प्रथमकोट—समवसरण ४.३३० ब ।

प्रथम गुणहानि—श्रेढी-व्यवहार गणित २.२३१ ब, २.२३२ अ ।

प्रथम तीर्थ—समवसरण ४.३३१ ब ।

प्रथम धन—श्रेढी व्यवहार गणित २.२२६ ब ।

प्रथम मूल—गणित (वर्गमूल) २.२२३ अ ।

प्रथम सम्यक्त्व—पर्याप्ति ३.४४ ब ।

प्रथम स्थिति—अन्तरकरण १.२५ अ-ब, १.२६ अ ।

प्रथमानुयोग—३.१३४ अ, अनुयोग १.६६-१.०१ अ, आगम १.२३६ ब, श्रुतज्ञान ४.६८ ब, स्वाध्याय ४.५२३ ब ।

प्रथमोपशम सम्यक्त्व—अन्तरकरण १.२५ अ, उपशम १.४३७ ब, १.४३८ अ, तीर्थकर २.३७६ ब, परिहारविशुद्धि ४.३७ अ, मरण ३.२८३ अ, सम्पूर्ण ४.१२७ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६६ ब, सासादन ४.४२५

प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन—प्ररूपणा - बन्ध ३.१०८, बन्ध-स्थान ३.११३, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६३,

उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४.३०२, ४.३०६, त्रिसंयोगी भग १.४०८ अ । सत् ४.२५८, संख्या ४.१०६, क्षेत्र २.२०६, स्पर्शन ४.४६३, काल २.११८, अंतर १.४ अ, १.२०, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व १.१५२ ।

प्रथु—हरिवश १.३४० अ ।

प्रवक्षिणा—३.१३४ अ, कर्म २.२६ अ, वंदना ३.४६५ ब ।

प्रदुकार दोष—वसतिका ३.५२८ ब ।

प्रदुष्ट—३.१३४ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२३ अ ।

प्रदेश—३.१३४ अ-ब, अणु १.४२ अ, अस्तिकाय १.२११ अ, १.२१२ अ, आकाश (अखण्डत्व) १.२२१ अ, आकाश (अवगाह) १.२२४ अ, आकाश (लोकाकाश) १.२२२ अ, इन्द्रिय १.३०२ ब, औदारिक शरीर १.४७१ ब, काय २.४४ अ, २.४६ ब, कालद्रव्य (अस्तिकाय) १.२१२ अ, जीव २.३३६ अ-ब, द्रव्य २.४५८ अ, २.४६० धर्म-अधर्म द्रव्य २.४८७ ब, परमाणु ३.१७ अ, ३.१८ अ, पर्याय ३.४७ अ, पुद्गल ३.६७ ब, प्रदेशभ्रमण २.३३६ ब, रुचक प्रदेश २.३३६ अ, ३.४४० ब, शरीर ४.६ अ, संकोच-विस्तार (काय) २.४६ ब, सत्त्व ४.२७६ ब, सप्तभंगी (सापेक्ष धर्म) ४.३२३ अ, सूक्ष्म बादर ४.४४० अ, स्कन्ध ४.४४६ अ ।

प्रदेश उदय—१.३६५ ब, १.३८६ ।

प्रदेशघात—अपकर्षण १.११७ ब, क्षपित कर्मांशिक २.१७७ अ ।

प्रदेश-छेदना—छेदना २.३०६ ब, २.३०७ अ ।

प्रदेशत्व—३.१३८ अ, द्रव्य २.४५८ ब ।

प्रदेश-तिर्जरा—अल्पबहुत्व १.१७४ अ ।

प्रदेश-परिस्पद—काय २.४६ ब, क्रिया २.१७३ ब, योग ३.३७५ अ ।

प्रदेश-बंध—३.१३५ अ, ३.१३६, अनुभाग बन्ध १.६० ब, अनिवृत्तिकरण २.१३ ब, अल्पबहुत्व १.१७१, १.१७३, अ, १.१७६, शरीरबद्ध प्रदेशो का अल्पबहुत्व १.१५७, स्थितिबन्ध ४.४५८ अ ।

प्रदेशत्व—३.१३८ अ, द्रव्य (आकाश) २.४५८ ब ।

प्रदेशविपरिणमना—विपरिणमना ३.५५५ ब ।

प्रदेश-विरच—३.१३८ अ ।

प्रदेश-सक्रमण—संक्रमण ४.८५ ब, संक्रमण का अल्पबहुत्व १.१७४ ब ।

प्रदेशाग्र—अन्तरकरण १.२५ ब ।

प्रदेशापचय—ओम् १.४७० अ ।

प्रदेशार्थता—कर्म २.२६ ब ।

प्रदेशीयना—परमाणु ३ १५ अ।

प्रबोध—३ १३८ अ, अतिचार १ ४४ अ।

प्रबुद्ध—३ १३८ अ, यदुवश १ ३३७।

प्रबुद्धचरित्र—३ १३८ ब। इतिहास—प्रथम १ ३४२ ब, द्वितीय १ ३४६ अ।

प्रद्योत—इतिहास (मगध देश) १ ३१० ब, १ ३१२।

प्रद्योतवंश—इतिहास (मगध देश) १ ३१२।

प्रधान—कारण २ ७३ ब।

प्रधानवाद—एकात (सांख्यदर्शन) १ ४६५ ब।

प्रबधनकाल—काल २ ८१ अ।

प्रबोध—कारण (लब्धि) २ ५६ अ।

प्रभंकर—३ १३८ ब। स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अंकन ४ ५१६ ब, देव-आयु १ २६७।

प्रभंकरा—चन्द्र-सूर्य की पट्टदेवी २ ३४६ अ। नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३ ४६३ अ, नामनिर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४६१, अंकन ३ ४६५। विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७६, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।

प्रभजन—३ १३८ ब, वायुकुमारेन्द्र—निर्देश ३ २०८ ब, परिवार ३ २०६ अ, अवस्थान ३ २०६ ब, आयु १ २६५। विद्याधर वश १ ३३६ अ।

प्रभंजन (कूट)—मानुषोत्तर पर्वत का—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४८६, अंकन ३ ४६४।

प्रभ—३ १३८ ब, स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अंकन ४ ५१६ ब, देव-आयु १ २६७।

प्रभवा—नारायण (पटरानी) ४ १८।

प्रभा—३ १३८ ब, तैजस शरीर ३ ३६४ ब।

प्रभाकर भट्ट—३ १३८ ब, एकान्ती १ ४६५ ब, मीमांसा दर्शन ३ ३११ अ।

प्रभाकर मत—मीमांसादर्शन ३ ३११ अ।

प्रभाकर मिश्र—मीमांसा दर्शन ३ ३११ अ।

प्रभाकरी—चक्रवर्ती ४ ११ ब। विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७६, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६०।

प्रभाचंद्र—३ १३८ ब। प्रथम—नन्दिसंघ १ ३२३ अ, १ ३२४ अ, देशीयगण १ ३२५, इतिहास १ ३२६ अ, द्वितीय—इतिहास १ ३२६ अ। तृतीय—इतिहास १ ३२६ ब, १ ३४२ अ। चतुर्थ—इतिहास १ ३३० ब। पंचम—देशीयगण इतिहास १ ३३० ब, १ ३४२

ब, १ ३४३ अ-ब। षष्ठ—इतिहास १ ३३१ ब, १ ३३२ अ। सप्तम—नन्दिसंघ १ ३२३ ब, इतिहास १ ३३२ अ। अष्टम—नन्दिसंघ १ ३२३ ब, इतिहास १ ३३२ ब। नवम—इतिहास १ ३३२ ब, दशम—इतिहास १ ३३३ अ। एकादश दश—इतिहास १ ३३३ ब। द्वादश—इतिहास १ ३३३ ब।

प्रभादेव—तीर्थंकर २ ३७७।

प्रभामंडल—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब, प्रातिहार्य १ १३७ ब।

प्रभाव—३ १३६ अ।

प्रभावती—३ १३६ अ, कुलकर ४ २३, तीर्थंकर मल्लिनाथ २ ३८०, बलदेव ४ १८ ब, यदुवश १ ३३७, वैमानिक इन्द्र की ज्योष्ठा देवी ४ ५१४ अ।

प्रभावना—३ १३६ अ।

प्रभावना अग—सम्यग्दर्शन ४ ३५६ अ।

प्रभास (स्वर्ग)—३ १४० अ, अनुदिश स्वर्ग का श्रेणी-बद्ध—निर्देश ४ ५१६ ब, अंकन ४ ५१५, ४ ५१७, देव-आयु १ २६६।

प्रभासदेव—३ १४० अ, घातकीखण्ड का देव ३ ६१४, नाभिगिरि का देव ३ ४७१ अ, ३ ६१३ ब, नारायण ४ २० अ। गणधर २ २१३ अ, चक्रवर्ती ४ १५ ब।

प्रभासद्वीप—लवणोद व कालोद सागर मे—निर्देश ३ ४५५ ब, ३ ४६२ ब, विस्तार ३ ४६२ ब, ३ ४७८, अंकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६१, ३ ४६४ के सामने। सिन्धु नदी का प्रवेशतीर्थ ३ ४५५ ब, सीतोदा नदी मे स्थित ३ ४६० ब।

प्रभु—३ १४० अ, इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ।

प्रभुत्वेशक्ति—३ १४० अ।

प्रभूत तेज—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ।

प्रभोदय—तीर्थंकर २ ३७७।

प्रमत्त—अहिंसा १ २१६ अ, धर्मध्यान २ ४८२ अ।

प्रमत्तयोग—हिंसा ४ ५३५ ब।

प्रमत्तसंयत—आरोहण-अवरोहण २ २४७, आर्तध्यान १ २७४ अ, आहारक काययोग १ २६७ ब, करण दशक २ ६ अ, कषाय २ ४० ब, काय २ ४५ ब, गुण-स्थान २ २४६ ब, गुणस्थान-परिवर्तन (प्रमत्त-अप्रमत्त) ४ ३७० अ, निगोद वनस्पति ३ ५०६ अ, परिषह ३ ३४, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १ १७४ अ, प्रदेशनिर्जरा की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १७४ ब, सद्यत ४ १२६ ब, ४ १३१ अ, समुदघात ४ ३४३। प्रमत्तसंयत—रूपणा—बंध ३ ६७, बधस्थान ३ १०८, ३ १०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६२ अ, उदी-

रणा १४११ अ, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२८८, ४३०४, त्रिसयोगी भग १४०६ अ। सत् ४१६२, सख्या ४.६४, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४४७७, काल २६६, अतर १७, भाव ३२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४३।

प्रमद—भावि शलाकापुरुष ४२६ अ।

प्रमदा—वेद ३.५८६ अ, स्त्री ४.४५० अ।

प्रमाकरण—प्रमाण ३१४४ अ।

प्रमाण—३१४० अ, अनुभव प्रधान १८२ अ, अनुमान ११०० ब, अनेकान्त १.१०६, अवग्रह १.१८२ ब, आगम (दे आगे), ईहा १.३५१ अ, ११८२ ब, उपचार १.४२२ अ, ज्ञान २२५८ ब, नय २५१६ अ-ब, २५२६, निक्षेप २५६२ अ, नैगम नय २.५३२ ब, न्याय २६३३ अ, मिथ्यादृष्टि ३३०५ अ, श्रुतज्ञान ४.६७ ब, सकलादेशी (नय) २५१७ अ, ४१५६ ब, सप्तभंगी ४३१५ ब, स्यात् ४.३१७ अ।

प्रमाण (अनुयोग)—१.१०२ ब, आहार तथा आहारकाल १.२८५ ब, १२८६ अ, उपक्रम १.४१६ ब, श्रुतज्ञान ४.६७ ब, समवसरण ४.३३१ ब।

प्रमाण (आगम)—१.२३४ ब, अर्थ व शब्द संबंध १२३३ अ, आचार्य-वचन १२३७ अ, आप्तवचन १२३५ ब, छद्मस्थ ज्ञान १.२३७ ब, जिनवचन १.२३८ अ, तर्कसंगत १२३६ अ, परम्परा से आगत १२३५ ब, पूर्वापर अविरोध १२३६ अ, पौरुषेय १२३८ अ, प्रत्यक्ष ज्ञानी १,२३५ ब, वचन-वक्ता संबंध १२३४ ब, वाच्य-वाचक संबंध १२३३ अ, वीतराग वचन १.२३५ अ, शब्द-अर्थ संबंध १२३४ अ, सूत्र वचन १.२३२ ब, सूत्र-अविरोध वचन १.२३८ अ, सूत्रसम वचन १.२३५ ब।

प्रमाण (ज्ञान)—नयसापेक्ष २५२६ अ, प्रमाण ३१४१ ब, प्रमेयत्व २२५८ ब, स्वपर-प्रकाशक २.२५८ ब।

प्रमाणक देव—व्यन्तरजातीय देव—आयु १२६४ ब।

प्रमाणदोष—आहार का दोष १.२६२ अ।

प्रमाणद्वय सिद्धि—अर्चट १.१३४ ब।

प्रमाणनय-तत्त्वालकार—३.१४५ ब, इतिहास १.३४४ अ।

प्रमाणनिर्णय—इतिहास १.३४३ अ।

प्रमाणनिर्माण—निर्माण २.६२५ अ।

प्रमाणपद—पद ३.४ ब, ३.५ अ, श्रुतज्ञान ४.६५ अ।

प्रमाणपद-उपक्रम—उपक्रम १.४१६ ब।

प्रमाण-परीक्षा—३.१४५ ब, इतिहास १.३४१ ब।

प्रमाण-प्रमेयकलिका—इतिहास १३४८ अ।

प्रमाणमीमांसा—३१४५ ब, इतिहास १३४१ ब, १३४३ ब।

प्रमाण-योजन—२१४५ ब, क्षेत्र प्रमाण २.२१५ ब।

प्रमाण-राशि—३.१४५ ब।

प्रमाण-विस्तार—३१४५ ब।

प्रमाणसंग्रह—३.१४५ ब, अकलक १३१ अ, इतिहास १.३४१ ब।

प्रमाणसंग्रहालकार—इतिहास १.३४२ ब।

प्रमाणांगुल—३१४५ ब, उपमा प्रमाण २२१८ अ, क्षेत्र प्रमाण २.३१५ अ।

प्रमाणातिरेक दोष—वसतिका ३५२६ ब।

प्रमाणाभास—प्रमाण ३.१४१ ब, ११४२ अ।

प्रमाता—३.१४५ ब, प्रमाण ३.१४३ अ।

प्रमाद—३१४५ ब, अतिचार १.४४ अ, अशुभोपयोग १.४३३ ब, दोष प्रस्तार २.२२६ ब, समिति ४.३४२ अ। हिंसा—निर्देश १.२१६ अ, १२१७ अ, ४.५३२ ब, रहितता ४५३३ ब।

प्रमादचरित—अनर्थदण्ड १.६३ ब।

प्रमादप्रत्यय—३१२६ अ, अविरति ३१२६ ब, उदय ३१२७-१३०, कषाय २१२६ अ।

प्रमादयोग—हिंसा ४.५३२ अ-ब।

प्रमा-प्रमेय—इतिहास १३४४ ब।

प्रमार्जन—विहार ३५७४ ब, समिति ४.३३६ ब।

प्रमार्जित—३.१६६ ब।

प्रमिति—३.१४६ ब।

प्रमृशा—३१४६ ब, मनुष्यलोक (नदी) ३२७५ ब।

प्रमेय—३१४६ ब, ज्ञान २.२५८ ब, न्याय २.६३३ अ, प्रमाण ३१४३ ब।

प्रमेय उपक्रम—उपक्रम १४१६ ब।

प्रमेयकमलमार्तंड—३१४६ ब, इतिहास १३४३ अ।

प्रमेयत्व—३.१४६ ब।

प्रमेयरत्नकोश—३१४६ ब, इतिहास १३४४ अ।

प्रमेयरत्नाकर—११४६ ब, आशाधर १,२८१ अ, इतिहास १:३४४ अ।

प्रमेयरत्नालकार—इतिहास १.३४७ अ।

प्रमेयाकार—प्रमाण २.१५३ ब।

प्रमोद—३१४६ ब, राक्षसवंश १.३३८ अ।

प्रयत्—हिंसा ४.५३५ ब।

प्रयुत—कालप्रमाण २२१६ अ।

प्रयुतांग—कालप्रमाण २.२१६ अ।

प्रयोग—३.१४६ ब, उदय १.३६५ ब ।

प्रयोगकर्म—कर्म २.२६ अ-ब । सत् ४.२६६, सख्या ४.११६ ब, क्षेत्र २.२०८, भाव ३.२२३ ।

प्रयोग क्रिया—क्रिया २.१७४ ब ।

प्रयोगगति—गति २.२३५ अ ।

प्रयोगज परिणाम—परिणाम ३.३१ ब ।

प्रयोजन—३.१४६ ब, न्यायदर्शन २.६३३ अ-ब ।

प्रयोज्यता—३.१४६ ब ।

प्ररूपणा—३.१४७ अ, अनुयोगद्वार १.१०२ अ, १.१०३ ब ।

प्ररोहण—कार्मण २.७५ ब ।

प्रलंब—३.१४७ अ, ग्रह २.२७४ अ, तालप्रलंब न्याय २.३६६ अ ।

प्रलय—३.१४७ अ, वैशेषिक दर्शन ३.६०८ अ ।

प्रवक—३.१४७ ब ।

प्रवचन—३.१४७ ब, उपदेश १.४२४ अ, पिशाच जातीय व्यन्तर देव ३.५८ ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ ।

प्रवचन-प्रभावना—प्रभावना ३.१३६ ब ।

प्रवचन-भक्ति—भक्ति ३.१६८ ब ।

प्रवचन-वात्सल्य—वात्सल्य ३.५३२ ब ।

प्रवचन-सन्निकर्ष—३.१४८ अ, श्रुतज्ञान ४.६० अ ।

प्रवचनसार—३.१४८ अ, इतिहास १.३४० ब ।

प्रवचनसार टीका—अमृतचन्द्र १.१३३ अ ।

प्रवचनसारोद्धार—३.१४८ अ, इतिहास १.३४२ ब, १.३४३ ब ।

प्रवचनाद्धा—३.१४८ ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ ।

प्रवचनार्थ—३.१४८ ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ ।

प्रवचनी—३.१४८ ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ ।

प्रवचनीय—३.१४८ ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ ।

प्रवरवाद—३.१४८ ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ ।

प्रवर्तक (साधु)—३.१४८ ब, निर्यापक २.६२५ ब ।

प्रवाद—३.१४८ ब ।

प्रवाल—३.१४८ ब, रत्नप्रभा की चित्रापृथिवी ३.३६१ अ, मानुषोत्तर पर्वत का कूट-निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अकन ३.४६४ ।

प्रवाह क्रम—क्रम २.१७१ ब ।

प्रवाहण जंबलि—३.१४८ ब, कुरुवंश १.३१० ब ।

प्रविचार—३.१४६ अ, देवगति २.४४६ ब ।

प्रविष्ट—३.१४६ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ ब ।

प्रवृत्ति—३.१४६ अ, गुप्ति २.२५० ब, न्याय २.६३३ ब, राग ३.३६८ अ ।

प्रवृद्धावेग—चक्रवर्ती ४.१३ अ ।

प्रवेणी—३.१४६ अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ ।

प्रवज्या—३.१४६ अ, म्लेच्छ ३.३४७ अ ।

प्रशंसा—३.१५१ अ, अन्यदृष्टिप्रशंसा १.११२ अ, स्त्री ४.४५१ अ ।

प्रशम—३.१५१ अ, उपेक्षा १.४४४ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५१ अ, ४.३५२ अ, ४.३५३ अ, सुख ४.४२६ ब, ४.४३२ अ ।

प्रशमाभास—प्रशम ३.१५१ अ ।

प्रशस्त—३.१५१ ब, उपयोग १.४३३ अ, उपशम १.४३७ अ, धर्मध्यान २.४७८ अ, ध्यान २.४६६ अ, निदान २.६०८ अ, प्राभृत ३.१५६ ब, मोह ३.३४० ब, राग ३.३६५ अ, वेद्य ३.५६२ अ, सत्य ४.२७२ ब ।

प्रशस्तपाद—३.१५१ ब ।

प्रशस्तपाद भाष्य—वैशेषिक दर्शन ३.६०७ ब ।

प्रशस्त विहायोगति नामकर्म प्रकृति—विहायोगति ३.५७३ ब । प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३ अ, स्थिति ४.४६६, अनुभाग १.६५ ब, प्रदेश ३.१३६ । बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदय-स्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिस-योगी भग १.४०४ । सक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६६ अ ।

प्रशांतता क्रिया—संस्कार ४.१५२ ब ।

प्रशांति—कुरुवंश १.३३५ ब ।

प्रशांति क्रिया—संस्कार ४.१५१ ब ।

प्रश्न—३.१५१ ब, स्वभाव ४.५०७ अ ।

प्रश्नकीर्ति—तीर्थंकर २.३७७ ।

प्रश्नकुशल साधु—३.१५१ ब ।

प्रश्नभाषा—भाषा ३.२२७ अ ।

प्रश्नव्याकरण—३.१५१ ब, श्रुतज्ञान ४.६८ अ ।

प्रश्नोत्तरमाला—अमोघवर्ष १.१३३ ब ।

प्रश्नोत्तर श्रावकाचार—३.१५१ ब, इतिहास १.३४५ ब ।

प्रष्ठक—स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१७ ब, विस्तार ४.५१७, अकन ४.५१६ ब, देव-आयु १.२६७ ।

प्रसंख्यान—एकाग्रचित्तानिरोध १.४६६ अ ।

प्रसंग—३.१५१ ब ।

प्रसंगसमा जाति—३.१५१ ब ।

प्रसज्य अभाव—अभाव १.१२८ अ-ब ।

प्रसाद—दान २.४२३ ब ।

प्रसारितबाहु तप—कायक्लेश २.४७ अ ।

प्रसेनजित्—३.१५१ ब, कुलकर ४.२३, यदुवंश १.३३७ ।

प्रस्तर—३ १५२ अ। नरकपटल—निर्देश २ ५७६ ब,
नामनिर्देश २ ५७६ अ, विस्तार २ ५७६ अ, अकन
३ ४४१। स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१४ ब, नामनिर्देश
४ ५१६, विस्तार ४ ५१६, अकन ४ ५१५।

प्रस्तार—३ १५२ अ, अक्षसचार गणित २ २२६ अ-ब।

प्रस्ताव—३ १५२ अ।

प्रस्थ—३ १५२ अ, औदारिक शरीर १ ४७२ अ, तौल का
प्रमाण २ २१५ अ।

प्रस्थापक—३ १५२ अ।

प्रस्रवण—आहारान्तगाय १ २६ अ।

प्रहरण—तीर्थकर २ ३६१, प्रतिनारायण ४ २०।

प्रहरा—३ १५२ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।

प्रहसित—३ १५२ अ, मातगवश १ ३३६ ब।

प्रहार—आहारान्तगाय १ २६ ब।

प्रहारसक्रामिणी विद्या—३ १५२ अ, विद्या ३ ५४४ अ।

प्रह्लाद—३ १५२ अ, प्रतिनारायण ४ २०।

प्राक्—३ १५२ अ।

प्राकाम्य ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५१ अ, १ ४५२ ब।

प्राकार—३ १५२ अ।

प्राकृत सख्या—३ १५२ अ।

प्रागभाव—अभाव १ १२७ ब-१२६ अ।

प्राज्योतिष—मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

प्राच्य—३ १५२ अ।

प्राण—३ १५२ अ, अयोगकेवली २ १६४ अ, कालप्रमाण
२ २१६ अ, पर्याप्ति ३ ४३ ब, मार्गणा ३ २६८ अ,
समुद्घातकेवली २ १६४ अ, सयोगकेवली २ १६४ अ,
हिंसा ४ ५३६ अ।

प्राण असयम—असयम १ २०७ ब।

प्राणघात—हिंसा ४ ५३६ अ।

प्राणघातिकी हिंसा—हिंसा ४ ५३२ अ।

प्राणत—३ १५४ ब, नारायण ४ १८ ब।

प्राणत (देव)—३ १५४ ब, अद्वाहना १ १८१ अ, अवधि-
ज्ञान १ १६८ ब, आयु १ २६८, आयुबन्ध के योग्य
परिणाम १ २५८ ब, इन्द्र—निर्देश ४ ५१० ब, उत्तरेद्र
४ ५११ अ, परिवार ४ ५१२-५१३, चिह्न आदि
४ ५११ ब, अवस्थान ४ ५२० ब, विमान नगर व
भवन ४ ५२०-५२१।

प्राणत (देव)—रूपणा—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान
३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३६२ ब,
उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वरथान
४ २६८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत्

४ १६२, सख्या ४ ६८, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८१,
काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३ २२० अ, अल्प-
बहुत्व १ १४५।

प्राणत (स्वर्ग)—३ १५४ ब, निर्देश ४ ५१४ ब, पटल
४ ५१८, विभाग ४ ५२० ब, विस्तार ४ ५१८, अव-
स्थान ४ ५१४ ब, अकन ४ ५१५, इन्द्रक श्रेणीबद्ध
४ ५१८, ४ ५२०।

प्राणपीडन—हिंसा ४ ५३२ अ।

प्राणरक्षा—अहिंसा १ २१७ ब।

प्राणवाद—३ १५४ ब।

प्राणव्यपरोप—अहिंसा १ २१७ ब।

प्राणव्यपरोपण—हिंसा ४ ५३२ अ।

प्राणि-संयम—संयम ४ १३८ अ।

प्राणातिपात—३ १५४ ब, प्रत्यय ३ १२६ अ।

प्राणातिपातिकी क्रिया—क्रिया २ १७४ ब।

प्राणापान पर्याप्ति—उच्छ्वास १ ३५२ ब।

प्राणायाम—३ १५४ ब, ध्यान २ ४६६ अ, मडल ३ १५५
अ।

प्राणावाय पूर्व—श्रुतज्ञान ४ ६६ अ।

प्राणि संयम—संयम ४ १३८ अ।

प्राणी—जीव २ ३३३ अ-ब।

प्राणु—कालप्रमाण २ २१६ अ।

प्रातर—३ १५६ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

प्रातिक देव—व्यन्तर जातीय देव—आयु १ २६४ ब।

प्रातिहार्य—अर्हन्त १ १३७ ब, चैत्यचैत्यालय २ ३०३ अ।

प्रात्ययिकी क्रिया—क्रिया २ १७४ ब।

प्राथमिक—३ १५६ अ।

प्रादुर्भाव—उत्पाद १ ३६० ब।

प्रादुष्कार—३ १५६ अ, आहार दोष १ २६० ब, उद्दिष्ट
१ ४१३ अ, वसतिका दोष ३ ५२८ ब।

प्रादुष्कृत—वसतिका दोष ३ ५२८ ब।

प्रादोषिक काल—३ १५६ अ।

प्रादोषिकी क्रिया—क्रिया २ १७४ ब।

प्राधान्य पद—उपक्रम १ ४१६ ब, पद ३ ५ अ।

प्राप्ति-ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५१ अ।

प्राप्तिसमा जाति—३ १५६ अ।

प्राप्य कर्म—कर्म २ १७ अ।

प्राप्यकारी—इन्द्रिय १ ३०३-३०४।

प्राभूत—३ १५६ ब, श्रुतज्ञान ४ ६४ ब।

प्राभूत दोष—आहार १ २६० ब उद्दिष्ट १ ४१३ अ।

प्राभूतप्राभूत—श्रुतज्ञान ४ ६४ ब।

प्राभृतप्राभृत समास—श्रुतज्ञान ४.६४ ब।
 प्राभृत समास—श्रुतज्ञान ४.६४ ब।
 प्रामाण्य—३.१५७ अ, प्रमाण ३.१४३ अ।
 प्रामाण्य भंग—इतिहास १.३४१ ब।
 प्रामुख्य दोष—३.१५७ अ, आहार १.२६० ब। उद्दिष्ट १.४१३ अ।
 प्रायश्चित्त—३.१५७ अ, प्रायश्चित्त ३.१५८ ब। भक्ष्या-
 भक्ष्य ३.२०१ ब, व्युत्सर्ग ३.६२३ अ, व्रत ३.६२६ अ,
 सल्लेखना ४.३६१ ब।
 प्रायश्चित्त विधान—इन्द्रनन्दि १.२६६ ब।
 प्रायश्चित्त शास्त्र—थोता (पात्रापात्र) ४.७५ ब।
 प्रायोगिक बध—बध ३.१६६ ब।
 प्रायोगिकी क्रिया—क्रिया २.१७३ ब।
 प्रायोग्य लब्धि—नियति २.६१५ अ, लब्धि ३.४१२ ब।
 प्रायोग्यानुपूर्वी—आनुपूर्वी १.२४७ अ।
 प्रायोपगमन—सल्लेखना ४.३८६ ब।
 प्रायोपगमन मरण—सल्लेखना ४.३८६ ब।
 प्रारंभ क्रिया—क्रिया २.१७४ ब।
 प्रारब्ध योगी—ध्याता २.४६४ अ, योगी ३.३८६ अ।
 प्रावचन—३.१६२ अ, श्रुतज्ञान ४.६० अ।
 प्राविष्कृत—३.१६२ अ।
 प्रासाद—३.१६२ अ, ज्योतिषी देवो के २.३५१, भवन-
 वासी देवो के ३.२१० ब, मध्यलोकवासी देवो के ३.६१५, व्यन्तर देवो के ३.६१२ ब।
 प्रासुक—३.१६२ अ, आहार (उद्दिष्ट) १.४१३ ब। जल २.३२५ अ, वनस्पति या सचित्त पदार्थ ४.१५८ ब।
 प्रासुक परित्याग—त्याग २.३६७ ब।
 प्रासुक विहारी—विहार ३.५७४ अ।
 प्रास्थाल—३.१६२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।
 प्रिय—३.१६२ अ, धातकीखण्ड का रक्षक देव ३.६१४, सुख ४.४३० ब।
 प्रियकारिणी—३.१६२ ब, तीर्थंकर वर्द्धमान २.३८०।
 प्रियकर—हरिदेव ४.५३० अ।
 प्रियंगु—तीर्थंकर सुमति व पद्मप्रभ २.३८३।
 प्रियंगु सुदरी—यदुवश १.३३७।
 प्रियदर्शन—३.१६२ ब, धातकीखण्ड का रक्षक देव ३.४६३ अ, ३.६१४, महोरग जातीय व्यन्तर देव ३.२६३ अ, लवण सागर का रक्षक देव ३.६१४, सुमेरु का अपर नाम ४.४३७ अ।
 प्रियदर्शना—व्यन्तरेन्द्र वल्लभिका ३.६११ ब।
 प्रियमित्र—३.१६२ ब, नारायण ४.१८ अ।

प्रियोद्भव क्रिया—मन्त्र ३.२४६ ब, संस्कार ४.१५१ अ।
 प्रीतिकर—३.१६२ ब, कुरुवश १.३३५ ब, लान्तवेन्द्र का यान ४.५११ ब। स्वर्ग (प्रैवेयक) पटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८, अकन ४.५१५, देव-आयु १.२६८।

प्रीति—वात्सल्य ३.५३२ अ।
 प्रीति-क्रिया—मन्त्र ३.२४६ ब, संस्कार ४.१५१ अ।
 प्रेत—सल्लेखना ४.३६६ ब।
 प्रेत्य भाव—३.१६२ ब, न्यायदर्शन २.६३३ ब।
 प्रेम—३.१६२ ब, राग ३.३६७ ब, वात्सल्य ३.५३२ अ, ३.५३३ अ, श्रद्धा ४.४६ अ।
 प्रेमक—तीर्थंकर २.३७७।
 प्रेमानुराग—राग ३.३६५ अ।
 प्रेरक—कारण २.६४ अ, २.६५ अ, (धर्मादि द्रव्य) २.६५ अ, निमित्त २.६४ अ, २.६१२ अ।
 प्रेक्ष्य प्रयोग—३.१६२ ब।
 प्रोक्षण विधि—३.१६२ ब।
 प्रोषध—प्रोषधोपवास ३.१६३ अ।
 प्रोषध प्रतिमा—प्रोषधोपवास ३.१६५ अ।
 प्रोषधोपवास—३.१६२ ब, अनशन १.६५ ब, कुल्लक २.१८६ अ।
 प्रोषधोपवास प्रतिमा—प्रोषधोपवास ३.१६४ ब।
 प्रोष्ठिल—३.१६७ अ, मूल सध १.३१६, इतिहास १.३२८ अ, तीर्थंकर २.३७७।
 प्रोष्ठिल—तीर्थंकर २.३७७, तीर्थंकर वर्द्धमान २.३७८।
 प्लक्ष—तीर्थंकर शीतलनाथ २.३८३।
 प्लक्षणकूला—शिखरी पर्वत का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४ के सामने।
 प्लुत—अक्षर १.३३ अ।

फ

फण—(पार्श्वनाथ प्रतिमा) पूजा ३.७८ अ।
 फल—३.१६७ अ, कर्म २.२७ ब, कारण (जीव के परिणाम) २.७४ अ, न्याय २.६३३ ब, पूजा ३.७८ ब, प्रमाण ३.१४२ अ, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब, राग ३.३६७ अ, सल्लेखना ४.३६० ब।

फलकमय सस्तर—संस्तर ४ १५३ ब ।

फलचारण ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५३ अ ।

फलत्याग—अनशन १.६६ अ, उपदेश १ ४२४ ब, तप २ ३५८ ब, २ ३६० अ, नि काक्षित २.५८५ ब, २ ५८६ अ, राग ३.३६७ अ ।

फलदशमी व्रत—३.१६७ अ ।

फलदान—उदय १ ३६६ अ-ब, १ ३६७ अ । उदीर्ण १.४१३ अ ।

फलरस—रस ३ ३६२ ब ।

फलराशि—३ १६७ अ ।

फलाकांक्षा—अनशन १.६६ अ, उपदेश १ ४२४ ब, तप २.३५८ ब, २.३६० अ, नि काक्षित २ ५८५ ब, २ ५८६ अ, राग ३ ३६७ अ ।

फलेच्छा—दे. फलाकांक्षा ।

फालि—अपकर्षण १ ११७ अ, काण्डक २ ४१ ब ।

फालिसंक्रमण—संक्रमण ४ ८४ अ ।

फाहियान—३.१६७ अ ।

फिलिप्स—३ १६७ अ ।

फुसी—कायक्लेश २ ४७ ब ।

फूई—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब, ३ २०३ अ ।

फूलदशमी व्रत—३ १६७ अ ।

फेनमालिनी—३.१६७ अ, विभगा नदी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४८६, ३.४९०, अकन ३ ४४४ (चित्र १३), ३.४६४ के सामने (चित्र ३७) ।

फोड़ा—कायक्लेश २ ४७ ब ।

फ्रेच लाग—गणित २ २२५ अ ।

ब

बंग—३ १६७ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

बगाल—मगधदेश १ ३१० ब ।

बंदर—तीर्थकर अभिनंदननाथ २ ३७६ ।

बंध—३.१६७ ब, अहिंसा व्रत १.२१६ अ ।

बंध (कर्मबंध)—३.१६८ ब, अध्यवसान (परिग्रह) ३ २८ ब, अन्तर १.२३, अल्पबहुत्व १.१६४ ब, १.१७५, आस्रव १ २८३ ब, ईर्यापथ कर्म १.३४६ ब, उदय

१ ३६८ अ-ब, उपयोग १ ४३२ अ, एकसमयिक स्थिति ४.४५५ ब, करण दशक २ ६, गति व आयु बन्ध मे अन्तर १ २५४ अ, गुणस्थान (करण दशक) २ ६, परिग्रह ३ २८ ब, युति ३ ३७३ ब, रागादि ३ १७४, रागाश(उपयोग) १ ४३२ अ, व्यवहारचारित्र्य २.२६० अ, व्यवहार धर्म २ ४७४ ब, शुक्लध्यान ४ ३४ अ, सक्रान्ति ४ ३८ अ ।

बंध (प्ररूपणा)—प्रकृति ३ ८८ अ, स्थिति ४ ४५७ ब, ४ ४६०, अनुभाग १ ८८-९०, १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३६, बन्ध ३ ६७, अन्तराय कर्म १ २८ अ, आयुकर्म १ २५४ अ, १ २६२ ब, बन्धस्थान ३ १०८, उदय १ ३६८ अ, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७६, सत्त्वस्थान ४ २८७, त्रिसंयोगी भग १ ३६६-४०८, संक्रमण ४ ८४ अ, अल्पबहुत्व १ १६४-१७६ ।

बंध-अपसरण—अपकर्षण १ ११५ अ, १ ११७ अ, काण्डक २ ४२ अ, क्षय २ १७६ ब, २ १८० अ ।

बंध-उदय-सत्त्व त्रिभंगी—इतिहास १ ३४४ ब ।

बंधक ३ १७८ ब ।

बंधन-नामकर्म-प्रकृति—३ १७६ अ, प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३७, बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १.३७४, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०४, संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १७१ ब ।

बंधन-बद्धत्व—३ १७६ ब ।

बंधनीय—वेदना ३.५६० ब ।

बंधपरिणाम—आयुबन्ध योग्य १.२५४ अ, मोहनीय बन्ध योग्य ३ ३४४ अ ।

बंधयोग्य प्रकृति—३ ६० अ ।

बंध-विधान—३.१७६ ब ।

बंध-वेदना—अल्पबहुत्व १ १७६ ।

बंध-सम्पत्तिक—अनुभाग सत्कर्म स्थान १ ८६ ब, सत्त्व का अल्पबहुत्व १ १६५ ब ।

बंधस्थान—३ १७६ ब, अनुभाग १ ८६ ब, आयु १ २५६ अ, प्रकृतिबन्ध ३ १०८, स्थितिबन्ध अल्पबहुत्व १.१६४ ब ।

बंधस्पर्श—स्पर्श ४.४७६ अ ।

बंधस्वामित्व—इतिहास १ ३४१ अ, १ ३४५ अ ।

बंधहेतु—उदय (मोहज भाव) १ ४०८ ब, बन्ध ३ १७५ अ ।

बधापसरण—अपकर्षण १.११५ अ, १.११७ अ, काण्डक २.४२ अ, क्षय २.१७६ ब, २.१८० अ ।

बधाभाव गति—गति २.२३५ अ ।

बधावली—आवली १.२७६ अ, उपशम १.४४१ ब ।

बधुमति—यदुवंश १.३३७ ।

बधुवर्मा—इतिहास १.३३२ अ ।

बधुसेन—यदुवंश १.३३७ ब ।

बधुसेना—तीर्थकर मल्लिनाथ २.३८८ ।

बधोत्सरण—उत्कर्षण १.३५३ ब ।

बध्यबधक भाव—कारक २.५० अ ।

बकरा—स्वप्न ४.५०५ अ ।

बकुल—तीर्थकर नेमिनाथ २.३८३ ।

बकुश—३.१७६ ब, श्रुतकेवली ४.५५ ब ।

बगुला—श्रोता ४.७४ ब ।

बघेरवाल—आशाधर १.२८० ब ।

बड़—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब ।

बड़वामुख—लवणसागर का पाताल—निर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३.४७८, अकन ३.४६१, चित्र ३.४६२ अ ।

बड़ानगर—३.१८० अ ।

बयला—उपकार १.४१५ अ ।

बद्ध—३.१८० अ, कारण २.५६ ब ।

बद्धायुष्क—अकालमृत्यु (मरण) ३.२८४ अ, आयुबन्ध १.२६२ अ, गुणस्थान आयु १.२६२ ब । जन्म २.३१३-३.१४, बन्ध-उदय सत्त्व (उदय) १.४०० अ, मरण ३.२८४ अ, सम्यग्दर्शन (आयु) १.२६२ ब ।

बद्धयमान आयु—अपवर्तन १.२६१ अ, आयु १.२५३ ब ।

बध—३.१८० अ ।

बधपरिषह—३.१८० अ ।

बध्य-घातक विरोध—३.१८०, कर्म-जीव २.६७ ब, विरोध ३.५६४ ब, सम्बन्ध ४.१२६ अ ।

बध्य-बन्धक भाव—नय २.५५० ब ।

बध्यमान कर्म—३.१८० ब ।

बनवारीलाल—३.१८० ब ।

बनारस—तीर्थकर पार्श्वनाथ २.३७६, नारायण ४.१८ अ, प्रतिनारायण ४.२०, बलदेव ४.१७ अ ।

बनारसीदास—३.१८० ब, इतिहास १.३३४ अ, १.३४७ ब ।

बनारसौबिलास—३.१८० ब, इतिहास १.३४७ ब ।

बंवर—तीर्थकर अमिनंदननाथ २.३७६ ।

बप्पदेव—३.१८० ब, इतिहास १.३२८ ब, १.३४० अ ।

बप्पदेवि—देशीय गण १.३२५ ।

बप्रिल्ला—तीर्थकर नमिनाथ २.३८० ।

बयालीस—बादल की सहनानी २.२१८ ब ।

बरड़—गन्धमादन २.२११ अ ।

बल—३.१८१ अ, इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ, कालकृत हानि-वृद्धि २.६३, गणधर २.२१३ अ, तीर्थकर. सुपाश्वर्-नाथ २.३८७, बलदेव ४.१६, भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ, रुद्र ४.२२ अ, रघुवश १.३३८ अ ।

बलऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५४ ब ।

बलचंद्र—३.१८१ अ ।

बलदत्त—तीर्थकर सुपाश्वर्नाथ २.३८७ ।

बलदेव—३.१८१ अ, गति-अगति (जन्म) २.३२१ ब, यदु-वश १.३३७, शलाकापुरुष ४.१६ अ ।

बलदेव (आचार्य)—सूरि ३.१८१ अ, इतिहास—१.३२८ अ । पुन्नाट सघ १.३२७ अ, इतिहास १.३२६ ब ।

बलभद्र—३.१८१ अ, चक्रवर्ती ४.१० अ, प्रतिनारायण ४.२० ब । सुमेरु पर्वत का कूट व देव—निर्देश ३.४५० अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४५१ । स्वर्ग-पटल—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४.५१७, अकन ४.५१५, देव-आयु १.२६७ ।

बलमद—मद ३.२५६ ब ।

बलमित्र—३.१८१ अ ।

बलवत्ता—कारण (कर्म) २.७१ अ-ब ।

बलवान्—कारण २.७१ ब ।

बलहृदचरिउ—इतिहास १.३४५ ब ।

बला (देवी)—गजदत्त कूट की—निर्देश ३.४७३ अ, ३.६१४, आयु १.२६५ ब, पद्महृद की—निर्देश ३.४५५ अ, ३.६१४ । वैमानिक इंद्रों की ४.५१३ ब ।

बलाकपिच्छ—३.१८१ अ, मूलसंघ १.३२२ ब, देशीयगण १.३२४ ब, इतिहास १.३२८ ब ।

बलाकामरण—मरण ३.२८१ ब ।

बलात्कार गण—३.१८१ अ, मूलसंघ १.३२३ अ, १.३२४ अ । नन्दिसघ १. परि०/२.३, १. परि०/४.२, १.३१८ ब ।

बलाघानहेतु—कारण २.७१ ब, निमित्त २.६११ ब ।

बलाघायक हेतु—निमित्त २.६१२ अ ।

बलि—३.१८१ अ, अकम्पनाचार्य १.३० ब, तीर्थकर मल्लि-नाथ २.३६१, सुपाश्वर्नाथ २.३८७, पूजा ३.७८ ब, प्रतिनारायण ४.२० अ, यदुवंश १.३३७ ।

बलिदत्त—तीर्थकर सुपाश्वर्नाथ २.३८७ ।

बलिदोष—आहार १.२६० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ, वसतिका ३.५२८ ब ।

बलीद्र—३ १८१ ब, प्रतिनारायण ४.२० अ ।

बल्लभ संप्रदाय—वैष्णव ३ ६०६ अ ।

बल्लभीपुर—श्वेताम्बर ४.७७ अ ।

बल्लाकदेव—३ १८१ ब ।

बसंततिलक—इक्ष्वाकु १ ३३५ ब ।

बहल—३ १८१ ब ।

बहिरंगछेद—अहिंसा १.२१६ ब, छेद २ ३०६ ब, हिंसा ४ ५३३ ब ।

बहिरंग धर्मछपान—नरक २ ४७८ ब ।

बहिरंग शुद्धि—परिग्रह ३ २६ अ ।

बहिरंग हिंसा—४.५३६ अ ।

बहिरात्मा—३ १८१ ब, अन्तरात्मा १ २७ अ, आत्मा १ २४४ ब, गुरु २ २५२ अ, जीव २ ३३३ ब, भव्य ३ २१३ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब, ३ ३०६ अ, शक्ति-व्यक्ति ३ २१३ अ, सम्यग्ज्ञान २.२६७ ब ।

बहिर्चित्प्रकाश—दर्शन २ ४०६ ब ।

बहिर्मुखचित्प्रकाश—दर्शन २.४०७ अ ।

बहिर्गति क्रिया—मन्त्र ३ २४७ अ, संस्कार ४ १५१ अ, सूक्त ४ ४४२ ब ।

बहिस्तत्त्व—तत्त्व २ ३५३ ब ।

बहु—३ १८२ अ, मतिज्ञान ३ २५४ ब ।

बहुकेतु—३ १८२ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ ।

बहुजन आलोचना—आलोचना १ २७७ ब ।

बहुजन-पृच्छा आलोचना—आलोचना १.२७७ ब ।

बहुजन ससक्त प्रवेश—भिक्षा ३ २३१ अ ।

बहुपुत्रा—व्यन्तरेद्र बल्लभिका ३ ६११ ब ।

बहुप्रवेशी—काय २ ४४ अ ।

बहु मतिज्ञानावरण—ऋद्धि १ ४४६ ब ।

बहुमान—३ १८२ अ ।

बहुमुख—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

बहुमुखी—३ १८२ अ ।

बहुरूपा—व्यन्तरेद्र बल्लभिका ३ ६११ ब ।

बहुरूपिणी—३ १८२ अ, तीर्थकर नमिनाथ २.३७६ ।

बहुल—रत्नप्रभा ३ ३६१ अ ।

बहुलप्रभ—तीर्थकर २ ३७७ ।

बहुवज्रा—३ १८२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

बहुविध—३.१८२ अ, मतिज्ञान ३ २५४ ब ।

बहुविध मतिज्ञानावरण—ऋद्धि १ ४४६ ब ।

बहुश्रुत—३ १८२ ब, संस्कार ४ १५० अ ।

बहुश्रुत भक्ति—भक्ति ३ १६८ ब ।

बहुवक—वेदान्त ३ ५६५ ब ।

बह्वक्—तीर्थकर नमिनाथ २.३८३ अ ।

बा—बादर की सहनानी २ २१६ अ ।

बाकी—३ १८२ ब ।

बागडगच्छ—एकात (जैनाभासी सघ) १ ४६५ अ, काष्ठा सघ १ ३२१ ब, १ ३२२ अ ।

बाण—३ १८२ ब ।

बाणभट्ट—३ १८२ ब ।

बाणमुक्त—मनुष्यलोक ३ २७५ अ ।

बाणा—३ १८२ ब । मनुष्यलोक ३ २७६ अ ।

बादर - सहनानी २ २१६ अ ।

बादर आलोचना—आलोचना १ २७७ ब ।

बादर कषाय—गुणस्थान २ २४६ ब ।

बादर-कायिक जीव—अवगाहना (सूक्ष्म) ४ ४३६ ब, आयु १ २६४, काय २.४४, जीव २ ३३३ ब, जीवसमाप्त २ ३४३ । सूक्ष्म ४ ४३६ अ-ब । प्ररूपणा—बन्ध ३ १०४, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६ उदय-स्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २६६, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब । सत ४ २०१-२०६, सख्या ४.१०१, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४ ४८४, काल २ १०६, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४६ ।

बादरकृष्टि—२ १४० ब ।

बादर क्षेत्रफन—गणित २ २३२ ब ।

बादर दोष—आहार १ २६० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ ।

बादर नामकर्म प्रकृति—सूक्ष्म ४ ४४० ब । प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, ४ ४४० ब, स्थिति ४ ४६६, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३ १३६, बन्ध ३ ६७, बन्ध-स्थान १ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०४, सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६७ अ ।

बादर-निगोद—वनस्पति ३ ५०५, ३ ५०८ ।

बादर-निगोद-वर्गणा—वनस्पति ३.५०५ ब वर्गणा ३ ५१३ अ, ३ ५१५-३ ५१८ ।

बादर परिधि—गणित २ २३२ ब ।

बादर-प्राभृत दोष—आहार १ २६० ब ।

बादर-वनस्पति—वनस्पति ३ ५०४ ।

बादर-बादर-स्कंध—स्कंध ४ ४४६ ब ।

बादर युग्मराशि—ओज १ ४६६ ब ।

बादर सांपराय—अनिवृत्तिकरण १ ६७ ब ।

बादर सांपरायिक बंधक—बन्धक ३ १७६ अ ।

बादर स्कंध—स्कंध ४.४४६ ब ।

बादरायण—३ १८२ ब, अज्ञानवादी १ ३७ अ, १.३८ ब,
एकातवादी १ ४६५ ब, वेदान्त ३.५६५ ब ।

बादरि—वेदात ३ ५६५ ब ।

बादाल—३ १८२ ब, सख्याप्रमाण २.२१४ ब, सहनानी
२ २१८ ब ।

बाधक—कारण (कर्मादय) २.७१ ब ।

बाधारहित—सुख ४ ४३२ अ ।

बाधित—३ १८२ ब ।

बाध्य-बाधक भाव—संबंध ४ १२६ अ ।

बानमुक्त—३ १८२ ब ।

बानर—३ १८२ ब, स्वप्न ४ ५०५ अ ।

बारस-अणुवेक्खा—३ १८२ ब, इतिहास १.३४० ब ।

बारह—अग (श्रुतज्ञान) ४ ६७ ब, अनुप्रेक्षा १ ७६ अ,
आयतन (बौद्ध) १ २५१ अ । आवर्त (कृतिकर्म)
१.२७६ अ, २ १३३ ब, चक्रवर्ती ४ १० ब, तप
२.३५६ अ, जीवसमाम २ ३४१, भावना (अनुप्रेक्षा)
१ ७८ ब, भिक्षाप्रतिमा (सल्लेखना) ४.३६२ ब, श्रुत-
ज्ञान के अग ४ ६७ ब ।

बारह-तप व्रत—३ १८२ ब ।

बारह बिजोरा—३.१८३ अ ।

बारहदशमी व्रत—३.१८३ अ ।

बाल—३ १८३ अ, औदारिक शरीर १.४७२ अ ।

बालकन्या—मगल ३.२४४ ब ।

बालक्रिया—क्रिया २.१७५ अ ।

बालचद्र—३ १८३ अ, भावि शलाकापुरुष ४ २५ अ ।
काष्ठासव १ ३२७ अ, इतिहास १.३२६ ब ।

बालचंद्र सैद्धांतिक—इतिहास १.३३१ ब, १.३३२ अ ।

बालचद्रा—यदुवश १.३३७ ।

बालचरण—ज्ञान २.२६७ ब, निदा (साधु) २ ५८६ अ ।

बालचारित्र—चारित्र २.२८८ अ, २ २८६ अ ।

बालतप—तप २.३५६ ब ।

बालनंदि—३ १८३ अ, देशीय गग १.३२५, इतिहास
१.३३१ अ ।

बालपडितमरण—मरण ३ २८० ब ।

बाल बालमरण—मरण ३ २८० ब ।

बालमरण—मरण ३.२८० ब ।

बालव्रत—चारित्र २ २८६ अ, तप २.३५६ ब ।

बालश्रुत—ज्ञान २ २६७ ब, चारित्र २ २८८ अ, निन्दा
(साधु) २.५८६ अ ।

बालाग्र—३.१८३ अ ।

बालाचार्य—आचार्य १.२४३ अ, दिशा २.४३३ ब ।

बालादित्य—३.१८३ अ ।

बालिशत—३.१८३ अ ।

बाली—३ १८३ अ, वानरवश १.३३८ ब ।

बालुक—सौत्रमोद का यान ४ ५११ ब ।

बालुकाप्रभा—३ १८३ ब, तृतीय नरक पृथिवी—निर्देश
२.५७६ अ, पटल २ ५७६, इंद्र श्रेणीबद्ध बिल २ ५७८,
२ ५७६, विस्तार २ ५७६, २ ५७८, अकन ३ ४४१ ।
नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १ १६८
अ, आयु १ २६३ ।

बालुकाप्रभा (प्ररूपणा)—बध ३.१०१, बधस्थान ३ ११३,
उदय १ ३७६, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा
१ ४११ अ, सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४.२६८
४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब । सत् ४ १७१,
सख्या ४ ६५, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४ ४७६, काल
२ १०१, अन्तर १ ८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्वं
१.१४४ ।

बालेद्र—विद्याधरवंश १.३३६ अ ।

बाल्लीक—मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

बासन—कर्म (पंचसूत्र) २ २६ ब ।

बासी भोजन—३ १८३ ब, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब ।

बाहु तीर्थकर २ ३६२ ।

बाहुतप—कायक्लेश २ ४७ अ ।

बाहुबलिचरित—इतिहास १ ३४५ ब ।

बाहुबली—३ १८३ ब, इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ, काम
देव ४ २२ ब, पूजा (प्रतिमा) ३.७८ अ, शल्य ४.२६
ब, सोमवश १.३३६ ब ।

बाहुबली (कवि)—इतिहास १ ३३३ ब ।

बाहुल्य—३ १८३ ब ।

बाह्य—३ १८३ ब ।

बाह्य अनर्थदंड—आखेट १.२२५ अ ।

बाह्य उपधि—उपधि १.४२७ अ, व्युत्सर्ग ३.६२३ ब ।

बाह्य करण—निमित्त २ ६११ ब ।

बाह्य कारण—कारण-कार्य २.७२ ब ।

बाह्य चिह्न—धर्मध्यान २.४७८ ब ।

बाह्य तप.कर्म—कर्म २ २६ अ ।

बाह्य तप—तप २.३५६ अ, २.३६१ ब ।

बाह्य त्याग—परिग्रह ३ २७ ब, ३ २६ ब ।

बाह्य द्रव्यमल—मल ३.२८८ अ ।

बाह्य धर्मध्यान—२ ४७६ अ, २ ४८१ अ ।

बाह्य नास्तिक्य—नास्तिक्य २ ५८५ ब ।

बाह्य परिग्रह—उपधि १.४२७ अ, ग्रथ २.२७३ ब ।
परिग्रह ३.२८ अ ।

बाह्य पारिषद—पारिषद ३.५६ अ ।

बाह्य प्रत्यय—कषाय २ ३५ ब, प्रत्यय ३.१२५ ब ।

बाह्य प्रमेय—प्रमाण ३ १४४ अ ।

बाह्य प्राण—हिंसा ४ ५३२ ब ।

बाह्य वर्गणा—वर्गणा ३.५१६ ब ।

बाह्य व्यास—गणित २ २३३ ब ।

बाह्य व्युत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३.६२३ ब ।

बाह्य शास्त्र—शास्त्र ४ २८ अ ।

बाह्य शुक्लध्यान—शुक्लध्यान ४.३२ ब ।

बाह्य सल्लेखना—सल्लेखना ४.३८२ अ ।

बाह्य सूची—गणित २.२३३ ब ।

बाह्य हिंसा—हिंसा ४ ५३५ अ ।

बाह्य हेतु—कारण २ ५४ अ, २ ७२ ब ।

बाह्योपधि व्युत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३.६२३ ब ।

बिंदु—संख्या प्रमाण २ २१४ ब ।

बिंदुसार—३.१८३ ब, मगधदेश—इतिहास १ ३१० ब, १.३१३ ।

बिंब—३.१८३ ब ।

बिंबसार—३ १८४ अ, मगधदेश—इतिहास १.३१० ब, १.३१२ ।

बिंबोष्ठ—विद्याधर वंश १ ३३६ अ ।

बिल—३ १८४ अ । नरक—निर्देश २ ५७६ ब, श्रेणी ४ ७२ ब, संख्या २.५७८-५७९, विस्तार २.५७८-५७९, अवस्थान २.५७६, अकन ३.४४१ ।

बीज—३ १८४ अ, अग्नि १ ३६ अ ।

बीजगणित—३.१८४ अ ।

बीजचारण ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १.४५३ अ ।

बीजदर्शनार्थ—आर्य १ २७५ अ ।

बीजना—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ ।

बीजपद—अर्थ १ १३५ अ, पद ३.४ अ, पद्धति ३.८ ब ।

बीजबुद्धि ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४८ अ-ब, १.४४९ अ, गणधर २ २१२ ब ।

बीजमान—प्रमाण ३ १४५ अ ।

बीजरुचि—सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब ।

बीजरुद्ध—वनस्पति ३.५०३ अ, ३.५०६ अ ।

बीजसम्यक्त्वार्थ—आर्य १ २७५ अ ।

बीज-सम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब ।

बीजा—३.१८४ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

बीजाक्षर—अक्षर १ ३३ अ, दिव्यध्वनि २.४३२ ब ।

बीयी—३ १८४ अ, समवसरण ४.३३० ब ।

बीधा अन्न—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ अ ।

बीस—आयुबध-स्थान १ २५६ अ, प्ररूपणा ३ १४७ अ, मार्गणा (२० प्ररूपणा) ३ २६८ अ ।

बीसिय—३ १८४ अ ।

बुद्ध ३ १८४ अ, ग्रह २ २७४ अ, मगधदेश—इतिहास १ ३१० ब, वीर सवत् १ परि०/१ ।

बुद्ध गया—उरुबित्त्व १ ४४५ ब ।

बुद्धगुप्त—३ १८४ अ ।

बुद्धस्वामी—३.१८४ अ, इतिहास १.३२६ ब ।

बुद्धि—३ १८४ अ, अध्यवसान १ ५२ अ, अनुगताकार (अन्वय) १.११२ ब, न्याय २ ६३३ ब, संस्कार ४.१५० अ ।

बुद्धि ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७-४५० ।

बुद्धिकीर्ति—३ १८४ ब ।

बुद्धिकूट—३.१८४ ब, रुक्मिपर्वत का—निर्देश ३ ४७२, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४ के सामने ।

बुद्धिदेवी—३ १८४ ब, भवनवासिनी—निर्देश ३.६१२ अ, परिवार ३.६१२ अ, भवनविस्तार ३.६१५, आयु १.२६५ ब, हृद-निवासिनी—निर्देश ३.४५३ ब, परिवार ३ ६१२ अ, रुक्मि पर्वत के कूट की—निर्देश ३.४७२ ब, अकन ३.४४४ के सामने ।

बुद्धिल—मूलसघ १.३१६ ।

बुद्धिलिंग—१ १८४ ब, मूलसघ १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ ।

बुद्धिवीर्य—तीर्थंकर पुष्पदत्त २.३६१ ।

बुद्धिसागर—चक्रवर्ती ४ १३ अ, ४.१५ अ ।

बुद्धेशभवनव्याख्यान—३ १८४ ब, इतिहास १.३४१ ब ।

बुध—३ १८४ ब । ज्योतिष ग्रह—निर्देश २.३४८ अ, विस्तार २ ३५१ ब, आकार २ ३४७, किरणे तथा वाहक देव २ ३४७, चित्र २ ३४७, देव आयु १.२६६ ब । आधुनिक मत ३ ४३६ अ, वैदिक मत ३ ४३२ ब ।

बुधजन—३ १८४ ब, इतिहास १ ३३४ ब, १.३४८ अ ।

बुधजनविलास ३ १८४ ब, इतिहास १ ३४८ अ ।

बुधजन सतसई—३ १८४ ब, इतिहास १.३४८ अ ।

बुभुक्षा काल—भिक्षा ३ २२८ ब ।

बुलाकीदास—३ १८४ ब, इतिहास १.३३४ अ ।

बुचिमय्यंगुल—गण्डविमुक्त देव २ २१० ब ।

बूचोराज—३.१८४ ब, इतिहास १.३३१ ब, १.३३३ ब, १.३४७ अ ।

बृहती—मीमांसादर्शन ३ ३११ अ ।

बृहत्कथा—३.१८४ ब ।

बृहत्कथाकोष—कथाकोष २ ३ ब, इतिहास १ ३४२ अ ।

बृहत्कथासरितसागर—कथाकोष २ ३ ब ।

बृहत्कांत—राक्षसवश १ ३३८ अ ।

बृहत्कीर्ति—राक्षसवश १ ३३८ अ ।

बृहत्केतु—कुरुवंश १.३३६ अ ।

बृहत्क्षेत्रसमास—३ १८४ ब, इतिहास १ ३४१ अ ।

बृहत्चूर्ण—१.३४१ ब, २ परि०/१ ।

बृहत्त्रयम्—३ १८४ ब, अकलंक १ ३१ अ, इतिहास १ ३४१ ब ।

बृहत्शतक चूर्णी—इतिहास १ ३४१ ब, २ परि०/१ ।

बृहत्सग्रहिणी सूत्र—३ १८५ अ, इतिहास १ ३४१ अ ।

बृहत्सघायणी सुक्त इतिहास १ ३४१ अ ।

बृहत्सर्वज्ञसिद्धि—३ १८५ अ, अनन्तकीर्ति १.५० ब, इतिहास १ ३३० अ, १ ३४२ अ ।

बृहद्गति—राक्षसवश १ ३३८ अ ।

बृहद्गृह ३ १८५ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ ।

बृहद्बल—३ १८५ अ ।

बृहद्वर्य—यदुवंश १ ३३७, हरिवंश १ ३४० अ ।

बृहद्वसु—हरिवंश १ ३४० अ ।

बृहस्पति—३.१८५ अ, ग्रह—निर्देश २ ३४८ अ, नाम-निर्देश २ २७४ अ, विमान का आकार २.३४७, विमान का विस्तार २ ३५१ ब, विमान का चित्र २ ३४७, किरणे तथा वाहक देव २.३४७ । आधुनिक मत ३ ४३६ अ, वैदिक अभिमत ३ ४३२ ब । देव-आयु १.२६६ अ, इन्द्र २ ३४५ ब ।

बेलंधर—३ १८५ अ ।

बेल—तीर्थकर शीतलनाथ २ ३८३ अ ।

बेलड़ी—३ १८५ अ ।

बेलन—३.१८५ अ ।

बेलनाकार—३.१८५ अ, गणित २ २३४ अ ।

बेला व्रत—३.१८५ अ ।

बेल—तीर्थकर ऋषभनाथ २.३७६, तीर्थकर सीमन्धर तथा सूरिप्रभ २ ३६२, स्वप्न ४ ५०४ अ, ४ ५०५ अ ।

बोद्धनाराय—३.१८५ अ ।

बोध पाहुडा—३ १८५ अ, इतिहास १.३४० ब ।

बोधाग्रन—३.१८५ अ, वेदात्त ३.५६५ ब ।

बोधि—३ १८५ अ ।

बोधितबुद्ध—३ १८५ अ, सख्या ४.६४ अ, अल्पबहुत्व १ १५४ अ ।

बोधिदुर्लभ—अनुप्रेक्षा १.७५ ब, १.८० अ ।

बोधिसमाधियत्र—यत्र ३ ३५६ ।

बौद्धदर्शन—३ १८५ अ, आयतन १ २५१ अ, इतिहास (मगध देश) १ ३१० ब, एकांत १ ४६५ अ-ब, जीव २ ३३६ ब, द्रव्य २.४५८ अ, भूगोल ३ ४३४ अ ।

बौद्धायन—मीमांसादर्शन ३ ३११ अ ।

ब्रह्म—३ १८८ अ, ओम् १.४६६ ब, जीव २ ३३६ अ । तीर्थकर पुष्पदंतनाथ कायक्ष २ ३७६ ।

ब्रह्म (देव)—अवगाहना १ १८० ब, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६७, आयुवध के योग्य परिणाम १ २५८ ब । निर्देश ४.५१० ब, दक्षिणोद्व ४ ५११ अ, चित्त आदि ४ ५११ ब, परिवार ४ ५१२-५१३, अवस्थान ४ ५२० ब, विमान, भवन व नगर ४ ५२१ ।

ब्रह्म (देव)—प्ररूपणा—बध ३ १०२, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४ १६२, सख्या ४ ६८, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

ब्रह्म (स्वर्ग)—निर्देश ४.५१४ ब, पटल ४.५१८ इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४ ५१८, ४.५२०, दक्षिण विभाग ४ ५२१ अ, अवस्थान ४ ५१४ ब, ४ ५२० ब, अंकन ४ ५१५ । बौद्धाभिमत ३ ४३५ । ब्रह्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४.५१५ । देव-आयु १ २६७ ।

ब्रह्म (स्वर्ग)—चक्रवर्ती ४ १० ब, नारायण ४ १८ ब । बलदेव ४.१६ ब, ४ १७ अ, ४ १८ ब ।

ब्रह्मचर्य—३ १८८ अ, अहिंसा १ २१७ अ, चारित्र्यशुद्धि-व्रत २ २६४ ब ।

ब्रह्मचर्य आश्रम—आश्रम १.२८१ अ, वर्णव्यवस्था ३ ५२४ ब ।

ब्रह्मचर्य आश्रमी—ब्रह्मचर्य ३.१६४ अ ।

ब्रह्मचर्य तप-श्रद्धा—३.१६४ अ ।

ब्रह्मचर्य प्रतिमा—ब्रह्मचर्य ३ १६० अ ।

ब्रह्मचारी—३ १६४ अ, आश्रम १.२८१ अ ।

ब्रह्मवत्—३ १६४ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ, तीर्थकर २.३६१ ।

ब्रह्मदेव—३.१६४ ब, इतिहास १.३३१ ब, १.३४३ ब ।

ब्रह्मनदि—नन्दिसघ भट्टारक १ ३२३ ब ।
 ब्रह्मभूति—नारायण (पिता) ४ १८ अ ।
 ब्रह्ममीमांसा—मीमांसादर्शन ३ ३११ अ ।
 ब्रह्मरथ—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ ब, चक्रवर्ती ४.११ ब ।
 ब्रह्मराक्षस—३ १६४ ब, राक्षस ३ ३६३ ब ।
 ब्रह्मरुचि—रुद्र ४ २२ अ ।
 ब्रह्मर्षि—ऋषि १.४५७ ब ।
 ब्रह्मलोक—लौकान्तिक देव ३ ४६४ अ ।
 ब्रह्मवाद—अद्वैतवाद १ ४६५ ब ।
 ब्रह्मविद्या—३ १६४ ब, इतिहास १.३४४ अ ।
 ब्रह्मविलास—इतिहास १ ३४७ ब ।
 ब्रह्मसंप्रदाय—वैष्णव दर्शन ३.६०६ अ ।
 ब्रह्मसाधारण—इतिहास १ ३३३ अ ।
 ब्रह्मसिद्धि—वेदान्त ३ ५६५ ब ।
 ब्रह्मसूत्र—वेदान्त ३ ५६५ ब ।
 ब्रह्मसेन—३.१६४ ब, काष्ठा संघ १ ३२७ अ, लाडबागड
 सघ १ ३२७ ब, सेनसघ १ ३२६ अ ।
 ब्रह्महृद—३ १६४ ब ।
 ब्रह्महृदय—स्वर्गपटल निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८,
 अंकन ४ ५१५, देव-आयु १ २६७ ।
 ब्रह्मा—चक्रवर्ती ४ ११ ब, नक्षत्र २ ५०४ ब, निन्दा २ ५८८
 ब ।
 ब्रह्माद्वैत—अद्वैतवाद १ ४७ ब । नय २ ४५८ अ, वेदान्त
 ३ ५६६ अ ।
 ब्रह्मेश्वर—३ १६४ ब, शीतलनाथ का यक्ष २ ३७६ ।
 ब्रह्मोत्तर (देव)—३ १६४ ब । अयगाहना १ १८० ब,
 अवधिज्ञान १ १६८, आयु १ २६७, आयुबन्ध के योग्य
 परिणाम १ २५८ ब । इन्द्र—निर्देश ४ ५१० ब,
 उत्तरेन्द्र ४ ५११ अ, चिह्न आदि ४ ५११ ब,
 परिवार ४ ५१२-५१३, अवस्थान ४ ५२० ब, विमान
 व नगर ४.५२०-५२१ ।
 ब्रह्मोत्तर (देव)—प्ररूपणा—बध ३ १०२, बधस्थान
 ३ ११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १ ३६२ ब,
 उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.४८२, सत्त्वस्थान
 ४ २६८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब । सत्
 ४ १६२, सख्या ४.६८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४ ४८१,
 काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३ २२० ब, अल्प-
 बहुत्व १ १४५ ।
 ब्रह्मोत्तर (पटल)—स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार
 ४.५१८, अंकन ४ ५१५, देव-आयु १ २६७ ।
 ब्रह्मोत्तर (स्वर्ग)—निर्देश ४.५१४ ब, पटल ४.५१८,

इन्द्रक श्रेणीबद्ध ४ ५१८-५२०, उत्तर विभाग ४ ५२१
 अ, अवस्थान ४.५१४ ब, अंकन ४.५१५ ब ।
 ब्रात—कुरुवग १ ३३५ ब ।
 ब्राह्मण—३.१६५ अ, यज्ञोपवीत ३ ३७० अ, वर्ण-व्यवस्था
 ३ ५२३ ब, ३ ५२४ अ ।
 ब्राह्मी—३ १६६ ब, तीर्थंकर ऋषभदेव २ ३८८, तीर्थंकर
 पाश्र्वनाथ २ ३८० ।

भ

भग—३ १६६ ब, अधर १ ३३ अ, आयुकर्म के त्रिसयोगी
 भग १ २६२, गणित २ २२८ अ, पर्याय ३.४५ ब,
 प्रत्यय ३ १२६ ब, प्रत्ययस्थान ३ १२६ ब, बन्ध-उदय
 सत्त्व के त्रिसयोगी भग १ ४०१, मनुष्यलोक ३.२७५
 ब ।
 भंगविचय—अनुयोगद्वार १ १०३ अ ।
 भंगविधि—भग ३ १६६ ब, श्रुतज्ञान ४ ६० अ ।
 भंडारदशमी व्रत—३ १६७ अ ।
 भक्त—३ १६७ अ ।
 भक्तकथा—कथा २ ३ ब ।
 भक्तपान संयोजना—अधिकरण १.४६ अ ।
 भक्तप्रत्याख्यान—सल्लेखना ४ ३८५-३८७ ब ।
 भक्तामर कथा—३ १६७ अ, इतिहास १ ३४७ ब, १ ३४८
 अ ।
 भक्तामर स्तोत्र—३ १६७ अ, इतिहास १.३४१ ब । स्तोत्र
 ४ ४४६ ब ।
 भक्ति—३ १६७ अ, पूजा ३ ७५ अ, ३ ७६ अ ब,
 (प्रतिमा) ३ ७७ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५१ अ ।
 भक्ति (नवधा)—आहार १ २८६ ब ।
 भक्षण—पूजा (पूजा किये बिना भोजन करना) ३ ७५ ब ।
 भक्ष्य नैवेद्य—पूजा ३.८० अ ।
 भक्ष्याभक्ष्य—३.२०० ब ।
 भग—परमात्मा ३.२० ब, नक्षत्र २.५०४ ब ।
 भगवत्—गणधर २ २१३ अ ।
 भगदेव—गणधर २ २१३ अ ।
 भगफलु—गणधर २.२१३ अ ।
 भगलि—तीर्थंकर २ ३७७ ।

भगवती आराधना—३ २०४ ब, अमितगति १ १३२ अ, इतिहास १ ३४० अ ।

भगवती आराधना टीका—आशाधर १.२८१ अ ।

भगवतीदास—३ २०५ अ, इतिहास १.३३४ अ, १.३४७ ब ।

भगवान्—केवली २ १५८ ब, परमात्मा ३ २० ब ।

भगीरथ—३ २०५ अ ।

भग्नघट श्रोता—उपदेश १.४२५ ब ।

भट्ट अकलंक—१ ३१ अ, ३.२०५ अ, इतिहास १.३३४ अ, १ ३४१ ब, १ ३४७ ब ।

भट्ट चार्वाक—जीव २.३३६ ब ।

भट्ट प्रभाकर—मीमांसक एकांती १.४६५ ब ।

भट्ट भास्कर—३ २०५ अ ।

भट्ट वोसरि—इतिहास १.३३० ब, १.३४२ ब ।

भट्टाकलंक—१.३३४ अ । देखिए भट्टाकलंक ।

भट्टारक—३.२०५ अ ।

भदत—३.२०५ अ, अनगर १.६२ अ ।

भदेय—मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

भद्र—३ २०५ अ, इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ, नन्दीश्वर सागर का रक्षक देव ३ ६१४, बलदेव ४.१६ अ, ४.१७ अ, ४ १८, मनुष्यलोक ३ २७५ ब । रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३.४६६ । हरिवश १.३४० अ ।

भद्रक—३ २०५ अ, यक्ष ३.३६६ अ ।

भद्रकाली—३ २०५ अ, विद्या ३ ५४४ अ ।

भद्रपुर—३ २०५ अ, तीर्थंकर शीतलनाथ २ ३७६, मनुष्यलोक ३ २७६ अ ।

भद्रबल—गणधर २ २१३ अ ।

भद्रबाहु—३ २०५ अ । प्रथम—मूलसंघ १.३१६, १ परि०/२ १, २, ७, नन्दिसंघ १. परि०/४.२, काल विचार १. परि०/२-३ । इतिहास १.३२८ अ, श्वेताम्बर ४ ७७ अ, ४.७८ अ । द्वितीय—मूलसंघ १.३१६, १ परि०/२ १, २, ३, ७, नन्दिसंघ १ ३२३ अ । इतिहास १ ३२८ अ, श्वेताम्बर ४.७७ अ, ४.७८ अ ।

भद्रबाहु गणी—३.२०५ ब ।

भद्रबाहुचरित—३ २०५ ब, इतिहास १ ३४६ ब ।

भद्रमित्र—३.२०५ ब ।

भद्रमुख—चक्रवर्ती ४.१३ अ, ४.१५ अ ।

भद्रलपुर—३.२०५ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ ।

भद्रघटी—चक्रवर्ती ४.११ ब

भद्रशालवन—३ २०६ अ, चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ, सुमेरु का वनखण्ड—निर्देश ३ ४५० अ, विस्तार ३ ४८८, अंकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४४६ ।

भद्रसंघ—दि० सघ १ ३१७ ब ।

भद्रसेन—काष्ठा सघ १ ३२७ अ ।

भद्रांभोजा—बलदेव ४.१७ ब ।

भद्रा—३ २०६ अ चक्रवर्ती ४.११ व, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी ३ ४७६, अंक ३ ४६८-४६९, वाचना ३ ५३१ ब, विद्याधरवश १ ३३६ अ, व्यन्तरेन्द्र गणिका ३ ६११ ब ।

भद्राश्व—३ २०६ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ ।

भद्रासन - पाण्डुकशिला पर स्थित—निर्देश ३ ४५२ अ, विस्तार ३ ४८४, चित्र ३ ४५२ अ ।

भद्रिल—तीर्थंकर शीतलनाथ २ ३७६ ।

भय—३ २०६ अ, अतिचार १ ४४ अ, कर्णव २ ३५ ब, २.३६ अ, निशक्ति २ ५८६ ब, विनय ३.५५३ ब, सज्ञा ४ १२० ब, सत्य ४ २७२ अ, हिंसा ४ ५ ३३ ब ।

भय बोध—व्युत्सर्ग बोध ३.६२२ ब ।

भयद्विक—१ ३७४ ब ।

भय प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४१, स्थिति सत्त्वस्थानो का अल्पबहुव १.१६५ ब, अनुभाग १ ६४, प्रदेश ३ १३६ । बन्ध ३ ६७, बन्धस्थान ३ १०६, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८६ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.२६५, त्रिसर्वांगी भग १ ४०१ ब । सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८ ब ।

भय विनय—विनय ३ ५४८ ब ।

भय वेदनीय मोहनीय ३ ३४४ ब ।

भय संज्ञा—सज्ञा ४.१२० ब, ४ १२१ अ ।

भयानक वन—वसतिका ३.५२८ अ ।

भरणी नक्षत्र २ ५०४ ब ।

भरत—३ २०६ ब, इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ, (विशेष दे भरत चक्री) भावि शलाकापुरुष ४ २५ अ, यदुवंश १.३३७, रघुवंश १ ३३८ अ ।

भरतक्षेत्र—३.२०७ अ । निर्देश ३ ४४६ अ, विस्तार ३ ४७६, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३.४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४४७ । अवगाहना १.१८०, आयु (तिर्यच) १.२६३, आयु (मनुष्य) १ २६४, कर्मभूमि ३.२३५ ब, कालविभाग २.६२ अ, २.६३ । आधुनिक भूगोल ३.४३६ अ, ३.४३७ अ,

वैदिक भूगोल ३४३१ ब ।

भरतकूट—३२०७ अ । विजयार्ध—निर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ के सामने । हिमवान—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ के सामने ।

भरतचंद्र—नंदि सघ १.३२४ अ ।

भरतचक्री—अकम्पन १.३० ब, अच्युत स्वर्ग १.४१ अ, इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ, ऋषभ के पुत्र २.३६१, कुलकर ४.२३, चक्रवर्ती ४.१० अ, चारित्र २.२६१ अ, तीर्थकर ऋषभ २.३६१, दीक्षा २.२६१ अ, लिंगधारण ३.४१६ अ, विभूति ४.१५ अ, सूर्यवंश १.३३६ ब, स्वप्न ४.५०५ अ ।

भरतचंद्र—नदिसघ १.३२४ अ ।

भरतिमध्य—गण्डविमुक्त देव २.२१० ब ।

भरतेशवंभव—इतिहास १.३४७ अ ।

भरतेश्वराभ्युदय—३.२०७ अ, आशाधर १.२८१, इतिहास १.३४४ ब ।

भरिचूड—विद्याधरवश १.३३६ अ ।

भरुकच्छ—३.२०७ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ ।

भर्तृप्रपंच—३.२०७ अ, वेदान्त ३.५६५ ब ।

भर्तृप्रपंच वेदांत—वेदान्त ३.५६६ अ ।

भर्तृहरि—३.२०७ अ ।

भल्लक—नरकलोक में जन्मभूमि का अकार २.५७७ अ ।

भव—३.२०७ ब, कारण २.६४ अ, प्रत्यय १.१८७ ब, ३.८८ ब, ३.६० अ, भावि-शलाकापुरुष ४.२६ अ ।

भवनजय—विद्याधर नगरी ३.५४६ अ ।

भवन—३.२०७ ब, काञ्चनगिरि पर ३.४५३ अ, चैत्य-चैत्यालय में २.३०३ अ । जम्बू व शाल्मली वृक्षस्थलो में ३.४५८ ब, अंकन ३.४५६ । दिग्गजेन्द्र पर्वतो पर ३.४५३ अ, मध्यलोक में ३.६१५ अ, यमक पर्वतो पर ३.४५३ अ । भगनवासी देवों के—निर्देश ३.२०७ अ, ३.६१५ अ, विस्तार ३.२१० ब, अवस्थान ३.२१० ब, स्वरूप ३.२१० ब, सख्या ३.२१० ब, लोकपाल देवों के ३.४५० ब । व्यन्तर देवों के—निर्देश ३.४७१, ३.६१२ अ, ३.६१३, विस्तार ३.६१५ अ, अवस्थान ३.६१२ अ, ३.६१३, स्वरूप ३.६१२ ब, सख्या ३.६१२ ब । स्वर्गवासी देवों के—निर्देश ४.५२१ अ, विस्तार ४.५२१ ब, अवस्थान ४.५२० ब, स्वरूप ४.२५१ अ ।

भवनतापि—देव (आकाशोपपन्न) २.४४५ ब ।

भवनत्रिक देव—प्ररूपणा—बन्ध ३.१०२ बन्धस्थान

३.११३, आयुबन्ध योग्य परिणाम १.२५७ अ, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १.४०६ ब । सत् ४.१८७, संख्या ४.६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८२, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२०, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

भवनपुर—भवनवासी देवों के ३.२०७ ब, ३.२१० अ । व्यन्तर देवों के निर्देश ३.६१२ अ, स्वरूप ३.६१२, विस्तार ३.६१५ अ, सख्या ३.६१२ ब । सुमेरु पर्वत पर ३.४५० अ ।

भवनभूमि—समवसरण ४.३३१ अ ।

भवनवासी देव—निर्देश २.४४५ ब, ३.२०७ ब, अवगा-हता १.१८०, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६५, आयु बन्ध के योग्य परिणाम, १.२५७ ब, चैत्य-चैत्या-लय २.३०२ ब, २.३०३ ब, अवस्थान ३.२१० अ, ३.६१३, लेख्या ३.४२५ ब । इन्द्र—निर्देश ३.२०८ अ, परिवार ३.२०६ अ, शक्ति चिह्न आदि ३.२०८ ब, भवन तथा भवनपुर ३.१२० अ, देवियाँ ३.२०६ अ ।

भवनवासी देव (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३ उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदी-रणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १.४०६ ब । सत् ४.१८७, सख्या ४.६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

भवनधुत—बलदेव ४.१७ ब ।

भवनमिस्तक—उदय (कर्म) १.३६७ अ, कारण २.६४ अ ।

भवपरिवर्तन—संसार ४.१४८ अ ।

भवप्रत्ययिक—अवधिज्ञान १.१८७ ब, १.१६२-१.६६, प्रकृतिबन्ध ३.८८ ब, ३.६० अ ।

भवविचय—धर्मध्यान २.४८० अ ।

भवविपाकी प्रकृति—प्रकृतिबन्ध ३.८६ ब ।

भववृक्ष—साधु ४.४०७ अ ।

भवसंसार—संसार ४.१४७ अ ।

भवसिद्ध—भब्य ३.२११ ब ।

भवस्थिति—३.२११ अ, स्थिति ४.४५७ ब ।

भवाद्धा—३.२११ अ ।

भवाननुगामी—अवधिज्ञान १.१८८ ब ।

भवानुगामी—अवधिज्ञान १.१८८ अ ।

भवाभिनंदी—निन्दा (साधु) २.५८६ अ ।

भवायु—आयु १.२५३ अ ।

भवितव्य—नियति २६१७ ब ।

भविष्यकाल—अवधिज्ञान ११६७ ब, कालप्रमाण २८८ अ ।

भविष्यग्राही ज्ञान—अवधिज्ञान ११६७ ब, केवलज्ञान २१४८ ब, २१४९ ब, २१५१ ब, मन-पर्यय ज्ञान ३२६३ अ, श्रुतज्ञान ४६० ब ।

भविष्यत्—श्रुतज्ञान ४६० ब ।

भविष्यत् ज्ञायक शरीर—निक्षेप २६०४ अ ।

भविष्यदत्तकथा—३२११ अ, इतिहास १३४५ ब ।

भविष्यदत्तचारित्र—३२११ अ, इतिहास १३४७ अ ।

भविष्यवाणी—३२११ अ ।

भविष्याभाव सबन्ध—सम्बन्ध ४१२६ अ ।

भविष्यत्तकहा—इतिहास १३४२ अ, १३३० अ ।

भविष्यत्तचरित—इतिहास १३४४ अ ।

भव्य—३२११ अ, अल्पबहुत्व ११४२ ब, जीव २३३३ ब, श्रुतज्ञान ४६० अ, सन्निपातिक भाव ४३१२ ब, सापेक्षधर्म ११०६ अ, ४३२३ ब ।

भव्यकुमुदचन्द्रिका—३२१४ ब, आधार १२८१ अ, इतिहास १३४४ ब ।

भव्यकूट—समवसरण ४३३० अ ।

भव्यज्ञायक शरीर—अन्तर १३ ब ।

भव्यजनकठाभरण—३२१४ ब, इतिहास १३४५ अ ।

भव्यत्व—प्ररूपणा—बन्ध ३१०७, बन्धस्थान ३१६३, उदय १३८४, उदयस्थान १३६३, उदीरणा १४११ अ, सत्त्व ४२८४, सत्त्वस्थान ४३०२, ४३०६, त्रिसयोगी भंग १४०८, सत् ४२५४, सख्या ४१०८, क्षेत्र २२०६, स्पर्शन ४४६२, काल २११७, अन्तर १२०, भाव ३२२१ ब, अल्पबहुत्व ११४२, ११५२ ।

भव्यत्व भाव—३२१२ अ, सन्निपातिक भाव ४३१२ ब ।

भव्यत्वाभिव्यक्ति—पद्धति ३८ ब ।

भव्यनोआगम द्रव्य—अन्तर १३ ब ।

भव्यसिद्ध—भव्य ३२११ ब ।

भव्यसेन—३२१४ ब ।

भव्यस्पर्श—स्पर्श ४४७६ अ ।

भाग—३२१४ ब, पर्याय ३४५ ब ।

भागचंद—३२१४ ब, इतिहास १३३४ ब, १३४८ अ ।

भागवत—वैष्णवधर्म ३६०६ अ ।

भागहार—३२१४ ब, अनुयोगद्वार ११०२ अ, गणित २२२२ ब, २२२४ अ ।

भागाभाग—३२१४ ब, अनुयोगद्वार ११०२ अ, ११०३ ब, जीवविषयक प्ररूपणा ४११०-११६ । बन्ध-

विषयक ३२१५, ४११७, ४५२७, सत्त्वविषयक ३२१५, ४११७ ।

भागाहार—३२१६ अ, अनुयोगद्वार ११०२ ब, गणित २२२२ ब, २२२४ अ, सक्रमण ४८४ अ ।

भागाहार संक्रमण—सक्रमण ४८४ अ, अल्पबहुत्व ११७४ ब ।

भाग्य—३२१६ अ ।

भाग्यपुर—३२१६ अ ।

भाजक—३२१६ अ, गणित २२२३ अ ।

भाजनांग जातीय कल्पवृक्ष—वृक्ष ३५७८ अ ।

भाजित—३२१६ अ, गणित २२२३ अ ।

भाज्य—३२१६ अ, गणित २२२३ अ ।

भाट्ट दीपिका—मीमांसा दर्शन ३३११ अ ।

भाट्टमत—मीमांसा दर्शन ३३११ अ ।

भाद्रवन-सिंह-निष्क्रीडित व्रत—३२१६ अ ।

भानु—३२१६ अ, तीर्थकर धर्मनाथ २३८०, यदुवंश १३३७, राक्षसवंश १३३८ अ, हरिवंश १३४० अ ।

भानुकण—राक्षसवंश १३३८ ब ।

भानुकीर्ति—३२१६ अ, नन्दिसंघ देशीयगण १३२५, इतिहास १३३२ अ ।

भानुगति—राक्षसवंश १३३८ अ ।

भानुगुप्त—३२१६ अ, गुप्तवंश १३११ अ-ब, १३१५ ।

भानुनंदि—३२१६ अ, नन्दिसंघ १३२३ अ, इतिहास १३२६ अ ।

भानुप्रभ—राक्षसवंश १३३८ अ ।

भानुमती—३२१६ अ ।

भानुमित्र—३२१६ अ, शकवंश १३१४ ।

भानुरक्ष—राक्षसवंश १३३८ अ ।

भानुवर्मा—राक्षसवंश १३३८ अ ।

भामंडल—३२१६ अ, अर्हन्त प्रातिहार्य ११३७ ब ।

भामती टीका—वेदान्त ३५६५ ब ।

भारद्वाज—३२१६ ब, मनुष्यलोक ३२७५ अ ।

भारद्वाज वृत्ति—वैशेषिक दर्शन ३६०७ ब ।

भारामल्ल कवि—३२१६ ब, इतिहास १३४८ अ ।

भार्गव—३२१६ ब, मनुष्यलोक ३२७५ अ ।

भार्गवाचार्य—३२१६ ब, सांख्यदर्शन ४३६८ ब ।

भाव—३२१६ ब, अध्यवसान १५२ अ, अनुयोगद्वार ११०२ अ, उत्पाद १३६१ अ, चित्तविकार (विभ्रम) ३५६२ ब, भाव ३२२४ अ, महा सामान्य ४४१२ अ ।

भाव (विशेष)—अवधिज्ञान का विषय ११६७ ब, आर्त-

ध्यान मे १ २७४ अ, धर्मध्यान मे २ ४८१ ब, पौद्ग-
लिकत्व ३ ३१८ ब, रौद्रध्यान मे ३ ४०७ ब, ३ ४०८
ब ।

भाव (स्वचतुष्टय)—२.२७८ अ, परभाव २ २७८ अ,
सप्तभगी ४ ३१९ ब, ४ ३२० अ । स्वभाव २ २७७
ब ।

भाव अतर—अतर १.३ ब ।

भाव अनंत—अनंत १ ५५ ब ।

भाव अनुयोगद्वार—अनुयोगद्वार १ १०३ ब ।

भाव अप्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३ ११७ अ ।

भाव अप्रत्याख्यान—अप्रत्याख्यान १ १२६ अ ।

भाव अशुद्धआहार—उद्दिष्ट १.४१३ ब ।

भाव आस्रव—आस्रव १ २८२ ब ।

भाव इंद्रिय—इन्द्रिय १ ३०१ ब, १ ३०२ अ, १.३०४-
३०५ ।

भाव उदय—उदय १.३६६ अ ।

भाव उपक्रम—उपक्रम १.४१६ ब ।

भाव उपशम—उपशम १ ४३७ अ ।

भावकर्म—उदय १ ३६६ अ, कर्म २ २६ अ-२७ ब, २.२८
ब; जीव पुद्गल २ २८ ब, तो कर्म २.२७ अ ।

भावकषाय—कषाय २ ३५ ब ।

भावकाय—गुप्ति २ २५० अ ।

भावकीर्ति—काष्ठासघ १ ३२७ अ ।

भावक्रीत—आहार दोष १ २६० ब, उद्दिष्ट दोष १.४१३
अ, वसतिका दोष ३ ५२८ ब ।

भावक्रोध—विवेक ३ ५६७ अ ।

भावग्रंथ—परिग्रह ३ २८ अ ।

भावग्रह—ग्रह २ २७४ अ ।

भावचद्र—नंदिसघ १ ३२३ ब ।

भावतीर्थ—तीर्थ २ ३६३ ब ।

भाव त्रिभगी—इतिहास १.३४५ अ ।

भावदोष—आहार १.२६० ब ।

भावध्येय—२.५०० अ, २.५०१ ब, २ ५०२ अ ।

भावनंदि—नंदिसघ १ ३२३ ब ।

भाव नपुंसक—नपुंसक २.५०५ ब ।

भाव नमस्कार—नमस्कार २ ५०६ ब, २.५०७ अ, विनय
३.५५२ अ ।

भाव नय—नय २ ५१४ ब, २.५२१ ब, २.५२२ ब,
२.५२३ अ ।

भावन-लोक—निर्देश ३.२०६ ब, विस्तार ३ ६१२ अ,
बवस्थान ३ २१० अ, चित्र ३.२१० अ, पंकखर भाग

३.२०६ ब, भवनों की सख्या ३ २१० ब । अप् तथा
तेज-कायिक २ ४५ ब ।

भावना—३ २२४ अ, अभ्यास १ १३१ ब, उपयोग १.४२६
ब, धर्मध्यान २ ४८२ अ, २ ४८५ ब, ध्येय २ ५०२
अ, शुक्लध्यान ४.३३ अ, शुभोपयोग १ ४३३ अ, श्रुत-
ज्ञान ४.५६ ब, ४.६२ ब ।

भावना (धर्म-तप-व्रत आदि की)—अस्तेय व्रत की १ २१४
अ, अहिंसा व्रत की १ २१६ अ, आकिञ्चन्य धर्म की
१.२२४ ब, आर्जव धर्म की १ २७२ अ, क्षमा धर्म की
२ १७७ ब, चारित्र की २ २८२ ब, तप धर्म की
२ ३६० अ, परिग्रहत्याग व्रत का ३ २६ ब, वैयावृत्त्य
की ३ ६०६ ब, वैराग्य की ३ ६०७ अ, व्रत की
३.६२६ ब, सत्य धर्म की ४ २७२ अ, सम्यग्ज्ञान की
२.२६३ ब, सम्यग्दर्शन की ४ ३५१ अ, सल्लेखना की
४ ३६० ब, ४.३६२ अ ।

भावना-पञ्चीसी व्रत—३ २२५ ब ।

भावना-पद्धति—३ २२५ ब, इतिहास १ ३४५ ब ।

भावना-लीनता—सुख ४.४३२ ब ।

भावना-विधि व्रत—३ २२५ ब ।

भाव-निक्षेप—२ ५६३ ब, २ ६०५ अ-ब ।

भाव-निबधन—निबधन २ ६१० ब ।

भावनिर्जरा—निर्जरा २.६२२ अ-ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७७
अ ।

भावनिर्विचिकित्सा—निर्विचिकित्सा २ ६२७ अ ।

भावपरमाणु—ध्येय २ ५०१ ब, परमाणु ३ १४ ब, शुक्ल-
ध्यान ४.३३ ब ।

भावपरिवर्तन—ससार ४ १४८ ब ।

भावपाहुड—३ २२६ अ, इतिहास १ ३४० ब ।

भावपुण्य—३ ६० अ ।

भावपुरुष—पुरुष ३ ६६ ब ।

भावपूजा—पूजा ३ ७५ अ ।

भावप्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३ ११६ ब ।

भावप्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३ १३२ अ ।

भावप्रमाण—प्रमाण ३ १४४ ब, ३ १४५ अ ।

भावप्ररूपणा—अनुयोगद्वार १ १०३ अ, केवली २ १५८ अ,
क्षीणकषाय २ १८६ ब, जीव सामान्य की ओघ आदेश-
प्ररूपणा ३ २१६, मिथ्यादृष्टि ३ ३०४ अ, मिश्र गुण-
स्थान ३.३०६ अ ।

भावप्राण—प्राण ३.१५२ ब ।

भावप्राधान्य—आगमार्थ १.२३१ अ, पाप ३.५३ ब, पुण्य
३.६० ब, पूजा ३.७७ ब, बन्ध ३.१७४ ब, मार्गणा
३.२६७ अ । लिग (वेद) ३ ५८४ अ-ब, लिग (साधु)
३.४१७ ब, विनय (साधु) ३ ५५३ ब ।

भाव-प्रासुक-आहार—उद्दिष्ट १.४१३ ब ।

भावबंध—उपशम १.४४२ अ, ३ १७० ब, ३ १७४ ब ।

भावभावक भाव—कर्ता २ २२ ब ।

भावमंगल — ३ २४१ अ ।

भावमन—अनुभव १ ८१ ब, गुप्ति २ २४६ ब, प्राण ३ १५३ ब, मन ३ २७० अ, मूर्तत्व तथा पौद्गलिकत्व ३ ३१८ अ ।

भावमल—मल ३ २८८ अ ।

भाव-मान-कषाय विवेक—विवेक ३ ५६७ अ ।

भावमार्गणा—मार्गणा ३.२६७ अ ।

भावमोक्ष—मोक्ष ३.३२२ ब ३ ३२४ ब ।

भावयुति—युति ३.३७३ ब ।

भावयोग—योग ३.३७५ ब ।

भावलिग (वेद)—वेद ३ ५८४ अ-ब, ३ ५८६ अ ।

भावलिग (साधु)—लिग ३.४१७ ब, ३.४१८ ब, विनय ३.५५३ ब ।

भावलेश्या लेश्या ३.४२२ ब, ३.४२६ अ ।

भावलोभ विवेक—विवेक ३.५६७ अ ।

भाववचन—मूर्त ३ ३१७ अ ।

भाववती शक्ति—भाव ३.२२४ अ ।

भाववान्—द्रव्य २.४५६ अ ।

भावविवेक—विवेक ३.५६६ ब ।

भावविशुद्धि—प्रत्याख्यान ३.१३२ अ ।

भाववेद—वेद ३.५८४ अ, ३.५८६ अ ।

भावशक्ति—भाव ३.२२४ अ ।

भावशल्य—शल्य ४.२६ ब ।

भावशुद्धि—आलोचना १.२७७ अ, आहार १ २८६ अ, ज्ञानातिचार १.२२८ अ, धर्म २.४६६ ब, शुद्धि ४.३६ अ ।

भावश्रुत—आगम १.२२६ ब, १.२३८ ब, आत्मा १ २४४ अ, श्रुतकेवली ४.५६ अ, श्रुतज्ञान ४.५६ ब, ४ ६१ अ । सूत्र—(आगम) १.२३८ ब, स्वाध्याय ४.५२५ अ ।

भावश्रुत ग्रंथ कृति—ग्रंथ २ २७३ ब ।

भावसंग्रह—३ २२६ अ, इतिहास १ ३४२ ब, १ ३४५ अ ।

भाव-संयोगपद—पद ३ ५ अ ।

भावसवर—सवर ४.१४१ ब ।

भावसत्य—सत्य ४ २७१ ब ।

भाव-सल्लेखना—सल्लेखना ४ ३८२ ब ।

भाव-सामायिक—सामायिक ४.४१६ अ ।

भाव-सिंह—३.२२६ अ ।

भावसूत्र—यज्ञोपवीत ३.३६६ ब ।

भावसेन—३ २२६ अ, लाडवागड संघ १.३२७ ब, इतिहास १.३३० ब, १ ३३२ अ, १ ३४४ ब ।

भावस्तवन—भक्ति ३ १६६ ब, ३ २०० ब ।

भाव स्त्री—स्त्री ४ ४५० अ ।

भावस्पर्श—स्पर्श ४ ४७६ अ ।

भावस्वाध्याय—स्वाध्याय ४.५२३ अ ।

भावागार—अगारी १ ३४ अ ।

भावानंत—अनंत १ ५५ ब ।

भावानुराग—राग ३.३६५ अ ।

भावाभाव—उत्पादादि १ ३६१ अ ।

भावाभाव शक्ति—भाव ३ २२४ अ ।

भावार्थ—३ २२६ अ, आगम १.२३१ ब ।

भावार्थ-दीपिका—३ २२६ अ ।

भावावसन्न—अवसन्न १ २०१ ब ।

भावास्त्रव—आस्त्रव १.२८२ ब ।

भावि-आगम—उपशम १.४३७ अ ।

भाविज्ञायिक शरीर—उपशम १ ४३७ अ ।

भाविता—तीर्थंकर कुन्धुनाथ २.३८८ अ ।

भावि-नोआगम—अनंत १ ५५ ब, निक्षेप २ ६०० अ ।

भावि-नैगमनय—नय २.५२२ अ, २ ५३० अ, २ ५३३ अ ।

भावि-नोआगम द्रव्य—काल २ ८१ ब ।

भावि-भूत उपचार—उपचार १ ४२० ब ।

भावोद्भय—इन्द्रिय १.३०१ ब, १.३०२ अ, १.३०४-३०५ ।

भावोदय—उदय १.३६६ अ ।

भावोपशम—उपशम १.४३७ अ ।

भाव्य-भावक भाव—कर्ता-कर्म २ २२ ब, २.२४ अ, संबन्ध ४.१२६ अ ।

भाषा—३.२२६ अ-ब, अनुयोग १ १०१ ब, योग (मनो-योगी) ३.३८० अ ।

भाषा-द्रव्य वर्गणा—वर्गणा ३.५१३ अ ।

भाषापरिच्छेद—वैशेषिक दर्शन ३.६०८ अ ।

भाषा-पर्याप्ति—पर्याप्ति ३.४१ ब ।

भाषा-पर्याप्ति काल—काल २.८१ अ, नामकर्म उदय-स्थान १.३६२-३६७ ।

भाषावर्गणा—वर्गणा ३.५१३ अ ३.५१५ ब, ३ ५१६ ब ।

भाषासमिति—वाग्गुप्ति २.२५१ अ, सत्यधर्म ४.२७३ ब, समिति ४.३४० अ ।

भाष्य—योगदर्शन ३.३८४ अ ।

भाष्य-सूक्ति—वैशेषिक दर्शन ३.६०७ ब ।

भासुर—३.२२७ ब, ग्रह २.२७४ अ ।

भास्कर—मीमासादर्शन ३.३११ अ ।

भास्कर (कवि)—३.२२७ ब, इतिहास १.३३३ अ ।

भास्करनदि—३.२२७ ब, इतिहास १.३३२ ब, १.३४५ अ ।

भास्कर वेदांत—३.२२७ ब, वेदान्त ३.५६७ अ ।

भास्कराभ—राक्षसवंश १.३३८ अ ।

भिक्षा—३.२२७ ब ।

भिक्षाकाल—भिक्षा ३.२२८ ब ।

भिक्षाचर्या—भिक्षा ३.२२८ ब ।

भिक्षावृत्ति—आहार १.२८६ अ, भिक्षा २.२२८ ब, श्रावक (कायक्लेश) २.४८ अ, सप्त ग्रह (आहार) १.२८७ अ ।

भिक्षाशुद्धि—अस्तेयव्रत भावना १.२१४ अ, भिक्षा ३.२२८ ब, ३.२२९ अ ।

भिक्षु—श्वेताम्बर ४.८० ब ।

भिक्षुक—आश्रम १.२८१ अ ।

भिक्षु-प्रतिमा—सल्लेखना ४.३६३ अ ।

भित्तिकर्म—कर्म २.२६ अ, निक्षेप २.५६८ ब ।

भिन्न—३.२३३ ब ।

भिन्न कर्ता-कर्म—कर्ता २.२४ अ ।

भिन्न दशपूर्वी—श्रुतकेवली ४.५५ अ ।

भिन्न परिकर्माष्टक—गणित २.२२३ ब ।

भिन्नपूर्वित्व ऋद्धि—ऋद्धि १.४४८ ।

भिन्न मुहूर्त—३.२३३ ब, अन्तर्मुहूर्त १.३० अ, काल-प्रमाण २.२१६ ब ।

भिल्लक संघ—इतिहास १.३२२ अ, एकात जैनाभासी १.४६५ ब ।

भो—एकात १.४६१ अ ।

भोति—भय ३.२०६ अ ।

भोम—३.२३३ ब, कुरुवंश १.३३६ अ, नारद ४.२१ अ, यदुवंश १.३३७, राक्षस जातीय व्यतर ३.३६३ ब, राक्षसवंश १.३३८ अ, हरिवंश १.३४० अ ।

भोम (व्यंतरेद्र)—निर्देश ३.६११ अ, परिवार ३.६११ ब, सख्या ३.६११ अ, आयु १.२६४ ब ।

भोमप्रभ—राक्षसवंश १.३३८ अ ।

भोमरथी—३.२३३ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ ।

भोमसेन—३.२३३ ब, काष्ठासंघ १.३२७ अ, पुन्नाटसंघ १.३२७ अ, इतिहास १.३३३ अ ।

भोमावलि—२.२३४ अ, तीर्थंकर ऋषभ २.३६१, रुद्र ४.२२ अ ।

भोमवर्मा—यदुवंश १.३३७ ।

भोष्म—३.२३४ अ, कुरुवंश १.३३६ अ, राक्षसवंश १.३३८ अ ।

भुजंगदेव—३.२३४ अ, मध्यलोकवासी व्यन्तर ३.६१३ ब । लवण सागर का रक्षक—आयु १.२६४ ब ।

भुजंगम—तीर्थंकर २.३६२ ।

भुजंगशाली—महोरग जातीय व्यतर देव ३.२६३ अ ।

भुजंग—महोरग जातीय व्यतर देव ३.२६३ अ ।

भुजंगप्रिया—व्यन्तरेद्र गणिका ३.६११ ब ।

भुजंगा—व्यन्तरेद्र गणिका ३.६११ ब ।

भुजंगार बंध—प्रकृतिबंध ३.८६ अ ।

भुजंगार स्थितिबंध—स्थिति ४.४५६ ब ।

भुजबलिचरित—इतिहास १.३४६ ब ।

भुजवर द्वीप-सागर—नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तर ३.४७८, अकन ३.४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष चक्र २.३४६ ब, अधिपति देव ३.६१४ ब ।

भुक्ति-मुक्ति-विचार—इतिहास १.३४४ ब ।

भुज्यमान आयु—अपवर्तन १.२६१ अ, आयु १.२५३ ब ।

भुवनकीर्ति—३.२३४ अ, नन्दिसंघ भट्टारक १.३२४ अ, नन्दि संघ बला० (शुभ० आम्नाय) १.३२४ अ ।

भुवनकीर्ति गीत—३.२३४ अ, इतिहास १.३४७ अ ।

भूगोल—३.४३१ अ, आधुनिक ३.४३५ ब, चातुर्द्वीपिक ३.४३७ अ । जैनाभिमत ३.४३१ अ, बौद्धाभिमत ३.४३४ अ, वैदिकाभिमत ३.४३१ ब, सप्तद्वीपिक ३.४३१ ब ।

भूत—३.२३४ अ, परतत्रवाद ३.१२ अ, श्रुतज्ञान ४.६० अ, स्वप्न ४.५० अ ।

भूत (देव)—निर्देश ३.६१० ब, अवगाहना १.१८०, अवधि-ज्ञान १.१६८ ब, आयु १.२६४, अवस्थान ३.६१२-६१४, ३.४७१ । इन्द्र—निर्देश ३.६११ अ, शक्ति आदि ३.६१०-६११, वर्ण तथा चैत्यवृक्ष ३.६११ अ, परिवार ३.२०६ अ ।

भूत (व्यन्तर देव)—प्ररूपणा—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब । सत्त्व ४.१८८, सख्या ४.६७ क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अत्र १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

भूतकांता—व्यन्तरेद्र गणिका ३.६११ ब ।

भूतकाल—अवधिज्ञान १.१६७ ब, काल प्रमाण २.८८ अ,

निक्षेप (ज्ञायक शरीर) २.५६५ अ ।
 भूतग्राही ज्ञान—अवधिज्ञान १.१६७ ब, केवलज्ञान २.१४८ ब, २.१४९ ब, २.१५१ ब, मनःपर्ययज्ञान ३.२६३ अ, श्रुतज्ञान ४.६० ब ।
 भूतग्राही नय—नय २.५२२ अ ।
 भूतज्ञायक शरीर—उपशम १.४३७ अ, निक्षेप २.५६६ अ ।
 भूतवेव—हरिवंश १.३४० अ ।
 भूत नैगमनय—नय २.५३० अ ।
 भूतपूर्व नय २.५२२ अ ।
 भूतपूर्व न्याय—नय २.५२२ अ ।
 भूतपूर्व प्रज्ञापन नय—नय २.५२२ अ ।
 भूत प्रज्ञापन नय—नय २.५२२ अ ।
 भूत भावी उपचार—उपचार १.४२० ब ।
 भूतबली—३.२३४ अ, मूलसष १.३१७, १.३२२ ब, १ परि०/२२, कालावधि १. परि०/२७ विशेष विचार १. परि०/२११ । इतिहास १.३२८ ब, १.३४० अ ।
 भूतमुख—चक्रवर्ती ४.१५ अ ।
 भूतरक्ता—व्यतरेद्र गणिका ३.६११ ब ।
 भूतरमण—भद्रशाल वन का एक भाग—निर्देश ३.४५० अ, विस्तार ३.४८८, अकन ३.४४४ के सामने, ३.४५७, ३.४६४ के सामने ।
 भूतवर—३.२३४ अ ।
 भूतवर सागर-द्वीप—निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अंकन ३.४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष चक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४ ।
 भूतविषय नय—नय २.५२२ अ ।
 भूतसेन—काष्ठासघ १.३२७ अ ।
 भूता—व्यतरेद्र गणिका ३.६११ ब ।
 भूतानन्द—नागेन्द्र ३.२०८ अ, परिवार ३.२०९ अ, आयु १.२६५, अवस्थान ३.२०९ ब ।
 भूतारण्यक वन—३.२३४ ब—निर्देश ३.४६० ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने ।
 भूतार्थ—नय २.५६७ ब, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ ।
 भूतोत्तम—३.२३४ अ-ब ।
 भूधरवास—३.२३४ ब, इतिहास १.३३४ ब, १.३४७ ब ।
 भूपाल—३.२३४ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ ।
 भूपाल चतुर्विंशतिका—३.२३४ ब ।
 भूपाल चतुर्विंशतिका टीका—आशाधर १.२८१ अ, इतिहास १.३४४ ब ।

भूमि—३.२३४ ब, गणित २.२२६ ब, ३.२३० ब, दर्पण तुल्य (अर्हतातिशय) १.१३७ ब ।
 भूमिकल्प—३.२३६ ब, इन्द्रादि १.२६६ ब ।
 भूमिका—दे० गुणस्थान ।
 भूमिकुडल—३.२३६ ब ।
 भूमितिलक—३.२४७ ब, ३.२३६ ब ।
 भूमितुड—विद्या ३.५४४ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, विद्याधरवंश १.३३६ अ ।
 भूमिधन—गणित २.२३० ब ।
 भूमिनाश—प्रलय ३.१४७ ब ।
 भूमिपाल—तीर्थंकर वीरसेन २.३६२ ।
 भूमिमंडल—विद्याधर नगरी ३.५४५ ब ।
 भूमिमित्र—मगधदेश इतिहास १.३१२ ।
 भूमिशुद्धि—३.२३६ ब ।
 भूमिसेस्तर—सस्तर ४.१५३ अ ।
 भूमिस्पर्श—आहारातराय १.२६ ब ।
 भूलसुधार—आगम १.२३८ अ, आगमार्थ १.२३२ ब ।
 भूषणगृह—ज्योतिष देवों के प्रासादों में २.३५१ ब ।
 भूषणशाला—भवनवासी देवों के भवनों में ३.२१० ब ।
 भूषणांग जाति कल्पवृक्ष—वृक्ष ३.५७८ अ ।
 भृंगनिभा—३.२३६ ब, सुमेरु की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नाम निर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अंकन ३.४५१, चित्र ३.४५१ ।
 भृंगा—३.२३६ ब, सुमेरु की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नामनिर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अंकन ३.४५१, चित्र ३.४५१ ।
 भृंगार—चैत्यचैत्यालय २.३०२ ब ।
 भृकुटी—३.२३६ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०२ ब, तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ का यक्ष २.३७६ ।
 भृत्यवंश—३.२३६ ब, इतिहास १.३११ अ, १.३१४ ।
 भेदकर्म—कर्म २.२६ अ, निक्षेप २.५६८ ।
 भेद—३.२३६ ब, उत्पादादि १.३५६ ब, १.३६१ अ, उपचार १.४१६ अ, द्रव्य २.४५८ अ, २.४६०, पर्याय ३.४५ ब, वर्गणा ३.५१६ अ, सापेक्ष धर्म (अनेकान्त) १.१०६ अ, स्कन्ध ४.४४७ अ ।
 भेदकल्पना-निरपेक्ष-शुद्ध-द्रव्याधिक नय—नय २.५४५ अ ।
 भेदकल्पना-सापेक्ष-अशुद्ध-द्रव्याधिक नय—नय २.५४४ अ ।
 भेदज्ञान—अनुभव १.८७ अ, ज्ञान २.२६१ ब, प्रज्ञा (अनुभव) १.८७ अ, सस्कार (वासना) ४.१५० अ, सम्यग्ज्ञान (ज्ञान) २.२६२ ब, २.२६५ अ ।

भेदग्रहण—आकार १ २१८ ब ।

भेदपक्ष—द्रव्य २ ४५६ अ-ब, २.४६० अ ।

भेदपद—अनुयोग १ १०२ ब ।

भेदप्रवृत्ति—विश्लेषण पद्धति (नय) २ ५५८ अ ।

भेदरत्नत्रय—मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

भेदवाद—३.२३७ अ ।

भेदविज्ञान—उपयोग १ ४३२ ब, ज्ञान (सम्यक्) २.२६७ ब ।

भेदसंघात—वर्गणा ३ ५१६ अ, ३ ५१८ ब, संघात ४ १२४ अ, स्कन्ध ४.४४७ अ ।

भेद-स्वभाव—भेद ३ २३६ ब ।

भेदातीत—लब्धि ३ ४१५ अ ।

भेदाभेद—अनेकांत (सापेक्ष धर्म) १ १०६ अ, उत्पादादि १.३५६ ब-३६१ अ, कर्ता-कर्म २.१७-२४, कारक २.४८-५०, कारण-कार्य २ ५५ अ, द्रव्य २ ४५८ अ, २.४५६ अ-ब, भोक्ता-भोग्य ३ २३८ अ ।

भेदाभेद-विपर्यय—ज्ञान २.२६४ ब, विपर्यय ३ ५५६ अ ।

भेदोपचार—उपचार १ ४१६ अ नय २ ५५६ ब ।

भेदसम—उपदेश १ ४२५ ब, श्रोता ४ ७४ ब ।

भेदा—उपदेश (श्रोता) १ ४२५ ब, तीर्थंकर वासुपूज्य २ ३७६, श्रोता ४ ७४ ब ।

भेदयशस्त्रि—अस्तेय व्रत १ २१४ अ ।

भेदवपद्यावती कल्प—इतिहास १ ३४३ ब ।

भोक्ता—३.२३७ अ, कर्ता २ २० ब, २ २४ ब, जीव २ ३३३ ब, द्रव्य २ ४५७ अ ।

भोक्ता-भोग्य भाव—कर्ता-कर्म २ २२ अ, २ २४ ब ।

भोक्तृत्व—भोक्ता ३ २३७ ब ।

भोक्तृत्व नय—२ ५२३ ब ।

भोक्तृत्व भोग्य भाव—कर्ता-कर्म २.२२ अ, २ २४ ब ।

भोगंकरा—गजदन्त के कूट की देवी ३ ४७३ अ, ३.६१४ ।

भोगकृति—गजदन्त के कूट की देवी ३ ४७३ अ, ३.६१४ ।

भोगंधरी—३.२३७ ब ।

भोग—३ २३७ ब, इन्द्रिय विषय १.३०६ अ, काम २.४२ ब, निदान २ ६०८ अ-ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब, राग ३ ३६६ ब, सम्यग्दृष्टि ३.४०० अ ।

भोग (नाम)—चक्रवर्ती ४.१५ अ ।

भोग निदान—निदान २ ६०८ अ-ब ।

भोगपत्नी—स्त्री ४.४५० ब, ४.४५२ अ ।

भोगभूमि—निर्देश ३.२३५, अकालमरण ३.२८४ ब, अधःकर्म १.४८ ब, अवगाहना १.१८०, आयु १.२६३,

१ २६४, आयु का अपकर्ष काल १.२५६ ब, आयु-बंध १ २६१ ब, १.२६२ ब, आयुबंध के योग्य परिणाम १ २५५-२५६, उदय-व्युच्छिति १ ३७७, कालविभाग २ ६३, गणना ३.४४५, गुणस्थान ३ २३५ ब, गोत्र ३ ५२२ अ, जीवसमास २ ३४३, मनुष्य ३ २७३, वेद ३ ५८७ अ । सत् ४.१८५, सम्य-क्त्व ३ २३५ ब, वैदिकाभिमत ३ ४३१ ब ।

भोगमालिनी—३ २३८ ब, गजदन्त के कूट की देवी ३ ४७३ अ, ३.६१४ ।

भोगरति—सुख ४.४३४ अ ।

भोगवती—३.२३८ ब, गजदन्त के कूट की देवी ३ ४७३ अ, व्यतरेद्र गणिका ३ ६११ ब, मध्यलोक में अवस्थान ३ ६१४ ब ।

भोगवर्धन—प्रतिनारायण ४ २० ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ ।

भोगा—व्यतरेद्र गणिका व वल्लभिका २ ६११ ब ।

भोगाकांक्षा—निदान २ ६०८ अ ।

भोगांतराय कर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, १ २७ ब, स्थिति ४ ४६७, अनुभाग १ ६४, प्रदेश ३.१३७ । बध ३.६७, बन्धस्थान ३ १०६, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, तत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४.२६४, त्रिसयोगी भग १ ३६६ संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६६ ।

भोगोपभोग ३.२३८ ब, अनुभव १.८१ अ, अनर्थदण्ड १ ६४ अ, सुख ४ ४३० अ ।

भोगोपभोग परिमाण व्रत—३ २३८ ब, अनर्थदण्ड १.६४ अ, सचित्तत्याग प्रतिमा ४ १५८ अ ।

भोज—३ २३६ ब, योगदर्शन ३ ३८४ अ ।

भोजवश—३ २३६ ब, इतिहास १ ३१० अ, १ ३३६ ब ।

भोजकवृष्णि—३ २३६ ब, यदुवश १ ३३६, हरिवंश १ ३४० अ ।

भोजन—३ २४० अ, दान २ ४२४ ब, भिक्षा काल ३ २२८ ब ।

भोजनकथा—कथा २.३ ब ।

भोजनदान—दान ३.४२४ ब ।

भोजनपान—अहिंसा १ २१६ अ ।

भोजनसपात—आहारान्तराय १.२६ अ ।

भोजनगं जातीय कल्पवृक्ष—वृक्ष ३ ५७८ अ ।

भोजवृत्ति—योगदर्शन ३.३८४ अ ।

भोज्यशूद्र—वर्ण व्यवस्था ३ ५२५ ब ।

भोमनिमित्तज्ञान—ऋद्धि १४४८, निमित्तज्ञान २६१२ व।
भ्रम—३२४० अ, कर्ता-कर्म २२२ ब। नरक पटल—
 निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन
 ३४४१। नारकी—अवगाहना ११७८, अवधिज्ञान
 ११६८, आयु १२६३।

भ्रमक—३२४० अ, नरकपटल—निर्देश २.५८० अ,
 विस्तार २.५८० अ, अकन ३४४१। नारकी—
 अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान ११६८, आयु
 १२६३।

भ्रमका—३२४० अ, नरक पटल—निर्देश २.५८० अ,
 विस्तार २.५८० अ, अकन ३४४१। नारकी—
 अवगाहना ११७८, अवधिज्ञान ११६८, आयु
 १२६३।

भ्रमघोष—कुरुवंश १३३६ अ।

भ्रमण—जीवप्रदेश २३३६ ब।

भ्रमणकाल—काल—पुरुषवेदी २६६ ब, स्त्रीवेदी २६६ ब।

भ्रमरघोष—कुरुवंश १३३५ ब।

भ्रमराहार—आहार १.२८८ ब, भिक्षा ३.२२६ ब।

भ्रष्ट मुनि—साधु ४४०६ ब, स्वच्छन्द साधु ४५०३ अ।

भ्रात—३२४० अ, नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार
 २.५७६ ब, अकन ३४४१। नारकी—अवगाहना
 ११७८, अवधिज्ञान ११६८, आयु १२६३।

भ्रांति—३२४० अ, सस्कार ४१५० अ।

भ्रामरी वृत्ति—३२४० अ, आहार १.२८८ ब, भिक्षा
 क्लेश (श्रावक) २.४८ अ, भिक्षा ३.२२६ ब।

भ्रूक्षेपण—व्युत्सर्ग दोष ३६२२ अ।

म

मंललि—पूरन कश्यप ३.८२ अ।

मगरस—३.२४० अ, इतिहास १३३३ ब, १३४६ ब।

मंगराज—३२४० अ, इतिहास १३३३ ब।

मंगल—३२४० अ, ग्रह २२७४ अ। गजदन्त का कूट
 तथा देव—निर्देश ३४७२ ब, विस्तार ३४८३,
 अकन ३४४४ के सामने, ३.४५७।

मंगल (ज्योतिषलोक)—ज्योतिषविमान—निर्देश २.३४६
 ब, आकार २.३४७, विस्तार २.३५१ ब, अकन

२३४७, चित्र २३४७, किरण तथा वाहक देव
 २३४७। देव—निर्देश २३४५ ब, आयु १.२६६
 ब। इन्द्र निर्देश २३४५ ब, शक्ति २३४५ ब।
 आधुनिक मत ३४३६, वैदिक मत ३४३२ ब।

मंगल गोचर—कृतिकर्म २.१३५ अ।

मंगलगोचर प्रत्याख्यान—कृतिकर्म २.१३७ ब।

मंगल द्रव्य—समवसरण ४३३० ब।

मंगला—३२४४ ब, तीर्थकर सुमतिनाथ २३८०,
 तीर्थकर स्वयंप्रभ २३६२, विद्या ३.५४४ अ।

मंगलावती—३२४४ ब। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३४६०
 अ, नामनिर्देश ३४७० ब, विस्तार ३४७६,
 ३४८०, ३४८१, अकन ३.४४४ के सामने, २४६४
 के सामने, चित्र ३४६० अ। वक्षारगिरि का कूट
 तथा देव ३४७२ ब।

मंगलावर्त—३२४४ ब, गजदन्त का कूट—निर्देश ३४७३
 ब, विस्तार ३४८३, अकन ३४४४ के सामने,
 ३४५७।

मंगिना—तीर्थकर नेमिनाथ २३८८।

मंजूषा—३२४४ ब, विदेह नगरी—निर्देश ३४६० अ,
 नामनिर्देश ३४७० ब, विस्तार ३४७६, ३४८०,
 ३४८१, अकन ३४४४ के सामने, ३४६४ के सामने,
 चित्र ३४६० अ।

मंडन—मीमांसक ३३११ अ, वेदान्त ३.५६५ ब।

मंडन मिश्र—३.२४४ ब, वेदान्त ३.५६५ ब।

मंडप—समवसरण ४.३३० अ।

मंडपभूमि—३.२४४ ब, समवसरण ४.३३० अ।

मंडल—३२४५ अ, अग्नि १.३५ ब, १३६ अ, आकाश
 १२२० ब, मन्त्र ३.२४५ ब।

मंडलीक—३२४५ अ, राजा ३.४०० ब, तीर्थकर ऋषभ
 आदि २.५८६।

मंडित—३.२४५ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

मन्त्र—३.२४५ अ-ब, पदस्थ ध्यान ३.५ ब। हिंसा ४.५३४
 ब।

मन्त्र बोध—आहार १.२६१ ब।

मन्त्र महोदधि—इतिहास ५.३४३ ब।

मन्त्रवादी देवचंद्र—नन्दिसघ १.३२५।

मन्त्रशाला—ज्योतिष देवो के प्रासादो मे २३५१ ब।

मन्त्रसामर्थ्य—हिंसा ४.५३४ ब।

मन्त्री—२.२४८ ब, प्रतिनारायण ४.२० ब।

मन्त्रोपजीवी—३.२४८ ब।

मंदकषाय—कषाय २.३६ अ, २.३६ अ।

मदपरिणाम—उदीरणा १.४१० अ ।

मदप्रबोधिनी—३ ३४८ ब, अभयचन्द्र १.१२७ अ, इतिहास १ ३४५ अ ।

मदभाव—परिणाम ३ ३२ अ ।

मदर (कूट)—कुडलवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६७ । रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८ । सुमेरु पर्वत का—निर्देश ३ ४७३, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४५१ ।

मंदर (नाम)—कुरुवण १ ३३५ ब, तीर्थकर विमलनाथ २ ३८७, वानरवण १ ३३८ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

मदर (सुमेरु)—३ २४८ ब, सुमेरु ४ ४३७ अ, वैदिकाभिमत ३.४३१ ब ।

मदरपुर—प्रतिनारायण ४.२० ब ।

मदराकार क्षेत्र—३ २४८ ब ।

मंदरार्थ—३.२४८ ब, तीर्थकर विमलनाथ २ ३८७, पुन्नाट सघ १.३२७ अ, इतिहास १ ३२८ ब ।

मंदिर—तीर्थकर वासुपूज्य २.३८७, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६६, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

मंदिर—निर्माणकर्म—श्रावक ४.५२ अ ।

मंदोदरी—३ २४८ ब ।

मकर-मुखासन तप—कायवर्णेश २ ४७ ब ।

मकलन—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०२ ब ।

मख—३.२४८ ब, पूजा ३.७४ अ ।

मगध—३ २४८ ब, अग्निभूति १ ३६ ब, इतिहास १.३१० ब, परि०/२ १ २, मनुष्यलोक ३ २७५ अ-ब ।

मगधतारनलक—३ २४८ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ ।

मगर—तीर्थकर पुष्पदन्त २ ३७६ ।

मघवा—३ २४८ ब, चक्रवर्ती ४ १० अ, तीर्थकर २ ३६१ ।

मघवान्—३ २४८ ब, गणधर २ २१३ अ ।

मघवी—नरक पृथिवी—निर्देश २.५७६ अ, पटल २ ५८०, इन्द्रक श्रेणीबद्ध २ ५७८, २.५८०, विस्तार २ ५७६, २ ५७८, अंकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १६८ आयु १.२६३ ।

मघवी (नरक पृथिवी)—प्ररूपणा—बंध ३ १००, बधस्थान ३ ११३, उदय १.३७६ उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब । सत् ४.१७०, सख्या ४ ६५, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४ ४७६, काल २ १०१, अन्तर १ ८, भाव ३.२२० अ, अल्प-बहुत्व १.१४४ ।

मघा—३.२४८ ब, तीर्थकर सुमतिनाथ ३.३८०, नक्षत्र २.५०४ ब ।

मघा सवत्—इतिहास १.३१० अ ।

मच्छरसम श्रोता—उपदेश १.४२५ ब ।

मजीरा—चैत्यचैत्यालय २ ३०२ अ ।

मज्जा—औदारिक शरीर १ ४७१ ब, १ ४७२ अ ।

मज्जानुराग—राग ३ ३६५ अ ।

मटंब—३ २४८ ब, चक्रवर्ती ४ १३ ब, बलदेव ४ १७ ब ।

मणि—३ २४६ अ, चक्रवर्ती ४ १३ अ, मन्त्र ३.२४५ ब ।

मणि (कूट)—कुडलवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६७ । रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३ ४६८ । शिखरी पर्वत का—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४ के सामने ।

मणिकांचन—३ २४६ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब ।

मणिकांचन (कूट)—३ २४६ अ, रुक्मि पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४ । शिखरी पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४४४ के सामने ।

मणिकुंडल—अच्युत १ ४१ अ ।

मणिकेतु—३.२४६ अ ।

मणिग्रीव—विद्याधर वण १ ३३६ अ ।

मणिचित्त—३ २४६ अ, सुमेरु ४ ४३७ अ ।

मणिधूल—विद्याधरवण १ ३३६ अ ।

मणिपूर चक्र—पदस्थष्ठ्यान (नाभिकमल) ३ ६ ब ।

मणिप्रभ—३ २४६ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ ।

मणिप्रभ (कूट)—कुडलवर पर्वत का—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६७ । रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३.४७६ ब, विस्तार ३.४८७ ।

मणिभद्र (कूट)—३.२४६ अ, रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३ ४६६ । विजयार्ध पर्वत का—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ के सामने ।

मणिभद्र (देव)—३.२४६ अ, यक्ष ३.३६६ अ, व्यतरेंद्र—निर्देश ३.६११ अ, सख्या ३.६११ अ, परिवार ३.६११ ब, आयु १.२६४ ब ।

मणिभवन—३.२४६ अ ।

मणिभासुर—विद्याधरवण १ ३३६ अ ।

मणिमालिनी—३.२४६ अ, गजदंत के कूट की देवी ३.६१४ । सुमेरु के वन की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७३ ब, अंकन ३.४५१ ।

मणिवज्र—३ २४६ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, ३.५४६ अ ।

मणिस्यंदन—विद्याधरवण १.३३६ अ ।

मतंग—३.२४६ अ, अन्तकूट केवली १.२ ब ।

मतगज —यदु वंश १ ३३७ ।

मत —३.२४६ अ, एकान्तमत १ ४६४ ब ।

मतानुज्ञा — ३ २४६ अ ।

मतार्थ—३.२४६ अ, आगम १ २३० अ, कर्ताकर्म २.२४ ब ।

मति—अध्यवसान १ ५२ अ, मतिज्ञान ३ २५० अ ।

मतिज्ञान—३ ३४६ अ, अनुभव प्रत्यक्ष १.८३ ब, अवग्रह, आदि की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६०, अवधि-ज्ञान १ १८६ अ, १ १६० ब, केवलज्ञान २ २५६-२६०, गति-अगति (गुणोत्पादन) २ ३२२, गुणस्थान तथा जीवसमास २ २६१, नय २ ५५४ अ, परोक्ष ३ ३६ अ, प्रत्यक्ष (अनुभव) १ ८३ ब, (सा-व्यवहारिक) ३ १२२ ब, मतःपर्यय ३ २६७ ब, मोक्ष मार्ग ४ ६० ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ, ४.६१ अ-ब ।

मतिज्ञान (प्ररूपणा) -बंध ३.१०६, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १.३६३ अ, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.३००, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०७ अ । सत् ४ २३५, सख्या ४ १०६, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २.११३, अन्तर १.१५, भाव ३.२२१ अ, अल्पबहुत्व १ १५० ।

मतिज्ञान सिद्ध — अल्पबहुत्व १.१५४ अ ।

मतिज्ञानावरण—ज्ञानावरण २.२७१ अ । प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.२७१ अ, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १.६१ ब, १.६४ ब, प्रदेश ३.१३६ । बध ३.६८, बधस्थान ३ १०६, उदय १ ३७५, उदयस्थान १.३८७ उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२ सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.२६४, त्रिसयोगी भग १ ३६६ । सक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८ ब ।

मतिसागर — द्रविड सध १.३२० अ ।

मतजला—३.२५६ अ । विभंगा नदी — निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३.४८६, ३ ४६०, अकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने ।

मत्यज्ञान — अज्ञान १ ३७ ब, मतिज्ञान ३.२५२ अ, जीव-समास तथा गुणस्थान २.२६१ । प्ररूपणा—दे० मतिज्ञान ।

मत्स—३ २५६ अ ।

मत्सर—३.२५६ अ ।

मत्स्य—३.२५६ अ, तीर्थंकर अरहनाथ २ ३७६, मनुष्य-लोक ३.२७५ अ, हरिवंश १ ३३६ ब ।

मत्स्ययुगल—स्वप्न ४.५०४ ब ।

मत्स्योद्धर्त—३.२५६ अ, व्युत्सर्गदोष ३.६२२ ब ।

मथमिति की—३.२५६ अ ।

मथुरा — ३ २५६ अ, उग्रसेन १-३५२ अ, नारायण ४ १८ अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ ।

मथुरा संघ—३.२५६ अ, जैनाभासी संघ १ ३१६ अ, इतिहास १ ३२१ ब, १.३२७ ब ।

मद—३.२५६ अ, मार्देव ३.२६८ ब ।

मदनकीर्ति—आशाघर १.२८० ब ।

मदनवेगा—यदुवंश १ ३३७ ।

मदना — ३ २५६ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ ।

मदिरा—मद्य ३.२५६ ब, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब ।

मद्य—३ २५६ ब, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब, श्रावक ४.५० ब ।

मद्यमयी—सुमेरु की परिधि ३ ४४६ अ ।

मद्यांग नातीय कल्पवृक्ष—वृक्ष ३.५७८ अ ।

मद्र — ३ ३६० अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

मद्रक—३.२६० अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ ।

मद्रकार—मनुष्यलोक ३.२७५ अ ।

मद्री—३.२६० अ, अन्धकवृष्णि १ ३० अ, यदुवंश १.३३७ ।

मधु—३ २६० अ, प्रतिनारायण ४.२० अ, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब, श्रावक ४.५० ब ।

मधुकरी वृत्ति—आहार १ २८८ ब, भिक्षा ३ २२६ ब ।

मधुकैटभ—३ २६० ब, तीर्थंकर अनन्तनाथ २ ३६१, प्रति-नारायण ४.२० अ ।

मधुक्लीड—प्रतिनारायण ४.२० अ ।

मधुपिगल—३ २६० ब ।

मधुर (कवि)—इतिहास ३ ३३२ ब ।

मधुर भाषण—गुरु २.२५२ ब, सत्य ४.२७२ ब, समिति ४.३४० ब ।

मधुरा—३.२६१ अ, व्यन्तरेन्द्र गणिका ३.६११ ब ।

मधुरालापा—व्यन्तरेन्द्र गणिका ३.६११ ब ।

मधुसूदन—प्रतिनारायण ४ २० अ ।

मधुसूदन सरस्वती—३.२६१ अ, वेदान्त ३.५६५ ब ।

मधुसेना—तीर्थंकर मल्लिनाथ २ ३८८ ।

मधुस्तावी ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५६ अ ।

मध्य—३.२६१ अ, परमाणु ३.१६ ब, वाष्णीवर सागर का रक्षक देव ३.६१४, वैष्णव ३ ६०६ अ ।

मध्यखंड द्रव्य—कृष्टि २.१४१ ब ।

मध्य-ग्रंथेयक—ग्रंथेयक स्वर्ग के पटल ४.५१८-५२० ।

मध्य-व्य-धन—गणित २ २२६ ब ।

मध्यदिन—एकान्त (अज्ञानवादी) १.४६५ ब ।

मध्यदेश—मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

मध्यधन—गणित २.२२६ ब, २.२३२ अ ।

मध्यप्रदेश — ३ २६१ अ ।

मध्यम—वारुणीवर सागर का रक्षक देव ३ ६१४ ।

मध्यम अनन्त—अनन्त १ ५६ ब, गणित २.२१४ ब ।

मध्यम अन्तरात्मा—१ २७ अ ।

मध्यम अवगाहना—सख्याप्ररूपणा ४ ६४ अ ।

मध्यम असंख्यात—असंख्यात १ २०६ ब, गणित २.२१४ ब ।

मध्यम आराधना—सल्लेखना ४ ३८७ अ ।

मध्यम ग्रंथेयक—ग्रंथेयक स्वर्ग पटल ४ ५१८-५२० ।

मध्यम नक्षत्र—सल्लेखना ४.३६७ ब ।

मध्यम धर्मध्यान—धर्मध्यान २ ४७६ अ ।

मध्यम पद—आगम १.२२८ ब, पद ३.४ ब, श्रुतज्ञान ४.६५ अ ।

मध्यम पात्र — पात्र ३ ५२ ब ।

मध्यम पारिषद—पारिषद ३.५६ अ ।

मध्यम प्रोषधोपवास—प्रोषधोपवास ३ १६४ अ ।

मध्यम व्यास — गणित २ २३३ ब ।

मध्यम संख्यात—गणित २.२१४ ब, सख्यात ४ ६२ अ ।

मध्यम सूची—गणित २.२३३ ब ।

मध्य स्वर—स्वर ४.५०८ ब ।

मध्यमा — भाषा ३.२२७ ब ।

मध्य भीमांसा—दर्शन २.४०४ अ ।

मध्यलोक — ३ २६१ अ, ३.४४२ अ, चित्र ३.४४३ । क्षेत्र-प्ररूपणा २ १६१ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ, २.३०४ अ ।

मध्यलोक सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३ ।

मध्यस्थ भाव—सामायिक ४ ४१६ अ ।

मध्याह्न — ३.२६१ अ ।

मध्याह्न ऋद्धि—ऋद्धि १.४५६ ब ।

मन.कर्म — कर्म २.२६ अ ।

मनःपर्ययज्ञान—३.२६१ अ, अवधिज्ञान १.१८८ ब, १ १८६ अ, अवधिज्ञान (प्रत्यक्षता परोक्षता) १ १६० अ-ब, उपक्रम १ ४१६ ब, ऋद्धि १.४४८, गति-अगति (गुणोत्पादन) २ ३२२ अ, जीवसमास तथा गुणस्थान २ २६१ । दर्शन २ ४१६ अ, पचम काल १.१८६ ब, परिहारविशुद्धि ३ ३७ अ, प्रत्यक्षता परोक्षता (अवधिज्ञान) १.१६०-१६१, मोक्षमार्ग (अवधिज्ञान) १.१८६ ब, वेद भाव ३.५८८ ब ।

मनःपर्ययज्ञान (प्ररूपणा)—बध ३ १०६, बधस्थान ३.११३, उदय १.३८३, उदयस्थान १ ३६३ अ, उदी-

रणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ ३००, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०७ अ, सत् ४ २३६, संख्या ४ १०६, क्षेत्र २ २०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २ ११३, अन्तर १ १५, भाव ३ २२१ अ अल्पबहुत्व १ १५० ।

मनःपर्ययज्ञान सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५४ अ ।

मनःपर्ययज्ञानावरण — ३ २७१ ब, प्रकृति ३ ८८, २ २७०, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ६४ ब, प्रदेश ३ १३६ । बन्ध ३.६७, बन्धस्थान ३ १०६, उदय १ ३७५, उदय-स्थान १ ३८७, उदीरणा १ ४११, उदीरणा-स्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २६४, त्रिसं-योगी भंग १ ३६६ । संक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८ ।

मनःपर्ययज्ञानावरणीय—दे. मनःपर्ययज्ञानावरण ।

मनःपर्ययज्ञानी—तीर्थंकर सघ २ ३८७, स्वाध्याय ४ ५२४ अ ।

मनःपर्याप्ति पर्याप्ति ३ ४१ ब ।

मनःपरावर्तन—आवर्त १ २७६ अ ।

मनःप्रतिक्रमण — प्रतिक्रमण ३ ११६ ब ।

मनःप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान ३ १३२ अ ।

मनःशिल—३ २६६ ब । सोलहवाँ सागर द्वीप—निर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३.४७८, अकन ३.४४३, जल का रस ३.४७० अ । ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३ ६१४ ।

मनःशुद्धि—धर्म २ ४६६ ब, भक्ति ३.१६६ अ ।

मन — ३ २६६ ब, अनुभव १ ८१ ब, अवधिज्ञान १ १६१ अ-ब, आहारान्तराय १.२६ अ, उपयोग (कर्मबन्ध) १.४३३ ब, एकेन्द्रिय १.३०७ अ, कर्म २.२६ अ, केवली २.१६३ अ, द्रव्यमन (अनुभव) १.८१ ब, न्याय २ ६३३ ब, पर्याप्ति ३.३८० अ, प्राण ३.१५३ अ, ३.१५४ ब, प्राणायाम ३.१५६ अ, मतिज्ञान ३.२५० ब, ३.२६८ अ, मनःपर्यय ज्ञान ३.२६२ अ, ३ २६७ ब, ३.२६८ अ, मूर्त ३.३१८ अ, भावमन (अनुभव) १.८१ ब, सज्ञी ४.१२२ अ, सस्कार ४.१५० अ, स्वाध्याय ४ ५२५ अ ।

मनक—३.२७२ अ, नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अकन ३.४३६ । नारकी—अव-गाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

मनचिन्ती अष्टमी व्रत—३.२७२ अ ।

मनन—स्वाध्याय ४.५२३ अ ।

मनरंगलाल—३.२७२ ब, इतिहास १.३३४ ब, ३.४८८ अ ।

मनाधिगुप्त—भावि तीर्थंकर २.३७७ ।

मनु—३ २७२ ब, कुलकर २ १३० ब, भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ, विद्या ३ ५४४ अ, विद्याधरनगरी ३ ५४५ ब ।

मनुज—३.२७२ ब ।

मनुपुत्रक—विद्याधर वंश १.३३६ अ ।

मनुष्य—३ २७२ ब, अवधिज्ञान १ १६४ ब, आकाश मे अवस्थान १ २२४ अ, आयुबन्ध १.२६२ अ, गति-अगति (जन्म) २.३१६ अ, जीव २.३३३ ब, पुरुषवेद ३ ५८६ अ, वैक्रमिक शरीर ३.६०३ अ, व्यन्तर (भूताविष्ट) ३ ६११ अ, सन्निपातिक भाव ४ ३१२ ब ।

मनुष्यक्षेत्र—आकाश १.२२४ अ ।

मनुष्यगति—निर्देश ३ २७३, अवगाहना १ १८०, अवधि-ज्ञान १.१६४ ब, अवधिज्ञान का विषय १.१६६ अ, आयु १.२६४, कषाय २ ३८ अ, जन्म (गति-अगति) २.३२२, दुःख २ ४३५ अ, लेश्या ३.४२८ ब ।

मनुष्यगति (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०१, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १.३७७, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८२, उद्वेलना युक्त सत्त्व ४ २८२, सत्त्व-स्थान ४.२६८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०६ ब । सत् ४ १७७, संख्या ४ ६६, क्षेत्र २ १६६, स्पर्शन ४ ४८०, काल २ १०२, अन्तर १ ६, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४ ।

मनुष्यगति नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३ १३६ । बन्ध ३ ६७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भंग १.४०४ । सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६६ अ ।

मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी—नाम कर्म २ ५८३ ब ।

मनुष्यगत्यानुपूर्वी नामकर्म प्रकृति—आनुपूर्वी १ २४७ अ, प्ररूपणा—(दे. मनुष्यगति नामकर्म प्रकृति प्ररूपणा) ।

मनुष्यचतुष्क—उदय १.३७४ ब ।

मनुष्यत्रिक—उदय १.३७४ ब ।

मनुष्यणी—निर्देश ३.२७३ । वेद—गुणस्थान ३ ५८६ ब । वेदभाव ३.५८५ ब, स्त्रीवेद ३.५८६ अ । प्ररूपणा—बन्ध ३.१०१ बन्धस्थान ३ ११३ उदय १ ३७७, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भंग १.४०६ ब । सत् ४ १८०, संख्या ४.६६, क्षेत्र

२ १६६, स्पर्शन ४.४८०, काल २ १०३, अन्तर १ ६, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४ ।

मनुष्यणी सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १४४ ।

मनुष्यद्विक—उदय १ ३७४ ।

मनुष्यलोक—३.२३५, ३.२७४ ।

मनुष्यव्यवहार—३.२७६ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०४ अ ।

मनुष्यसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १४४ ।

मनुष्यायु कर्मप्रकृति—आयु (बन्धयोग्य परिणाम) १ २५५ ब, प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, १ २५३, स्थिति ४ ४६२, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६ । बन्ध ३ ६७, बन्ध-स्थान ३.१०८, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २६४, त्रिसयोगी भंग १.४०१ । सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६६ ।

मनोगुप्ति—अतिचार (गुप्ति) २ २५० अ-ब, अहिंसा १ २१६ अ, गुप्ति (निश्चय व्यवहार) २.२४८ ब, २ २४६ अ, गुप्ति (भाव) २ २४६ अ ।

मनोजय—प्राणायाम ३ १५६ अ, समय ४.१३६ अ, स्वाध्याय ४ ५२५ अ ।

मनोज्ञ—आर्तध्यान १ २७३ ब, १.२७४ अ, परिग्रह ३ २६ ब ।

मनोज्ञ साधु—३ २७६ अ ।

मनोज्ञान—मनोयोग ३.२७७ ब ।

मनोत्पन्न सुख—सुख ४ ४२६ ब ।

मनोदुष्ट—२.२७६ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ ब ।

मनोद्वयवर्गणा—वर्गणा २.५१३ अ ।

मनोबल—३ २७६ अ, ऋद्धि १ ४४७, १ ४५५ अ, पर्याप्ति ३.४४ अ ।

मनोभद्र—३ २७६, यक्ष २ ३६६ अ ।

मनोभव—भावि शलाकापुरुष ४ २६ अ ।

मनोमतिज्ञान—श्रुतज्ञान ४.६२ ब ।

मनोयोग—३ २७६ अ, अपर्याप्त (योग) ३ ३८० अ, कार्य-कारण (योग) ३ ३७८ ब, काल २ ६६ ब, काला-वधि का अल्पबहुत्व १ १६१, भाषा पर्याप्ति (योग) ३.३८० अ, (मनोमतिज्ञान मनोयोग) ३ २७७ ब, वचनोत्पत्ति (योग) ३ ३८१ अ, योग ३ ३७६ अ, ३ ३८० अ-ब, शरीरपर्याप्ति (योग) ३.३८० अ ।

मनोयोग (प्ररूपणा)—बध ३ १०४, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १.३६२ ब, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.२६६, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १.४०६ ब । सत् ४ २१२, संख्या ४ १०२, क्षेत्र २.२०२

स्पर्शन ४४८५, काल २.१०८, अतर १.१२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४८।
मनोरम—३.२७८ अ, किन्नर २.१२४ ब, सुमेरु ४.४३७ अ।
मनोरमा—३.२७८ अ।
मनोरम्य—राक्षसवंश १.३३८ अ।
मनोवन्दना—वन्दना ३.४६४ ब।
मनोवर्गणा—वर्गणा ३.५१३ अ, ३.५१५ ब, ३.५१६ अ।
मनोवेग—३.२७८ अ, चक्रवर्ती ४.१५ अ, राक्षसवश १.३३८ अ।
मनोवेगा—३.२७८ अ, तीर्थकर चन्द्रप्रभ की यक्षिणी २.३७६।
मनोहर—३.२७८ अ, तीर्थकर पद्मप्रभ श्रेयांस व वासुपूज्य २.३८३, मनोरग जातीय व्यन्तरदेव ३.२६३ अ, राक्षसवंश १.३३८ अ, शतारेंद्र का यान ४.५११ ब।
मनोहरण—३.२७८ ब, यक्ष ३.३६६ अ।
मनोहरलाल—इतिहास १.३३४ अ।
मनोहरा—नारायण ४.१८ ब।
मनोहरी—कुलकर ४.२३।
मनोह्लाद—राक्षसवश १.३३८ अ।
ममकार—३.२७८ ब, अहकार १.२१५ अ।
ममत्व—३.२७८ ब, परिग्रह ३.२४ ब, शरीर ४.८ अ, हिंसा (सुख) ४.५३२ ब।
ममेदं बुद्धि—वात्सल्य (आकाक्षा) ३.५३२ ब।
मय—३.२७८ ब, यदुवंश १.३३७।
मयणजुञ्ज—इतिहास १.३४७ अ।
मयणपराजयचरित्र—इतिहास १.३४५ ब।
मयूर—अच्युतेन्द्र का यान ४.५११ ब।
मयूरग्रीव—भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ।
मयूरपिच्छ—क्षुल्लक २.१८८ ब।
मयूरवान्—राक्षसवंश १.३३८ अ।
मयूरी—चक्रवर्ती ४.११ ब।
भरण—३.२७८ ब, आहारातराय १.२६ ब, काल २.६६ अ, नरक २.५७४, लेश्या ३.४२७ ब, षट्कालिक हानि-वृद्धि २.६३।
भरणकांडिका—इतिहास १.३४३ ब।
भरणसूतक—सूतक ४.४४२ ब।
भरणावली—उदीरणा १.४१० अ।
भरणाशीच—सूतक ४.४४२ ब।
भरणासन्न—स्वाध्याय ४.५२६ अ।
भरियानी—गंडविमुक्त देव २.२१० ब।

मरीचि—३.२८८ अ, अक्रियावादी १.३२ अ, एकांती १.४६५ ब।
मरु—३.२८८ अ।
मरुडवश—३.३१४ अ।
मरुत—३.२८८ अ, लौकातिक देव ३.४६३ ब, स्वर्ग-पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४.५१६ ब, देवआयु १.२६६।
मरुतचारण ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५२ ब।
मरुत्वान यज्ञ—४.२२ अ।
मरुदेव—३.२८८ अ, यदुवंश १.३२७।
मरुदेवी—३.२८८ अ, कुलकर ४.२३, चक्रवर्ती ४.११ ब, तीर्थकर ऋषभ २.३८०।
मरुदेव—कुलकर ४.२३।
मरुप्रभ—३.२८८ अ, किपुरुष २.१२५ अ।
मरुभूति—३.२८८ अ।
मर्मस्थान—३.२८८ अ, औदारिक शरीर १.४७२ अ।
मर्यादा—३.२८८ अ, जल २.३२५ अ, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ अ, ३.२०३ अ।
मल—३.२८८ अ, परिषह ३.३३ ब, ३.३४ अ, समिति (प्रतिष्ठापन) ४.३४१ ब।
मलद—३.२८८ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।
मलदोष—आहार १.२८६ ब।
मल-परिषह—३.२८८ ब, ३.३३ ब, ३.३४ अ।
मलय—३.२८८ ब, प्रतिनारायण ४.२० ब, बलदेव ४.१६ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब, यदुवंश १.३३७।
मलयकीर्ति—इतिहास १.३३३ अ।
मलयगिरि—मनुष्यलोक ३.२७५ ब, श्वेताबर टीकाकार १.३३१ अ।
मलिन—सम्यग्दर्शन ४.३७० ब।
मलौषध ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५५ अ।
मल्ल—३.२८८ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ-ब।
मल्लधारीदेव—३.२८८ अ, नदिसंघ देशीय गण १.३२४ ब, इतिहास—१.३३१ ब।
मल्लवादी—३.२८८ अ, इतिहास—प्रथम १.३२६ अ, १.३४० ब।
मल्लि—तीर्थकर मुनिसुव्रतनाथ के गणधर २.३८७।
मल्लिणाह कव्व—इतिहास १.३४५ ब।
मल्लिनाथ—३.२८८ अ, तीर्थकर प्ररूपणा २.३७६-३६१।
मल्लिनाथचरित्र—३.२८८ अ, इतिहास १.३४५ ब।
मल्लि भूपाल—३.२८८ अ।
मल्लिभूषण—३.२८८ अ, नदिसंघ १.३२४ अ, इतिहास—प्रथम १.३३३ अ।

मल्लिखेण—३२८६ अ, इतिहास—प्रथम १३३१ अ-ब,
१३४३ अ-ब, द्वितीय १३४४ अ, तृतीय १३३२ ब,
१३४५ अ ।

मल्लिखेण-प्रशस्ति—३२८६ अ ।

मशकसभ लोता—उपदेश १४२५ ब ।

मसिकर्मयि—आर्य १२७५ अ ।

मस्करी—एकान्त अज्ञानवादी १४६५ ब, परवाद ३२३
अ ।

मस्करी गोशाल—३२८६ अ, पूरनकश्यप ३८२ ब ।

मस्करी पूरन—पूरनकश्यप ३८२ ब ।

मस्तक—३२८६ ब, मनुष्यलोक ३२७५ अ । स्वर्ग पटल—
निर्देश ४५१७, विस्तार ४५१७, अकन ४५१६ ब,
देवआयु १२६७ ।

मस्तककमल—पदस्थध्यान ३६ ब ।

मस्तिष्क—३२८६ ब, औदारिक शरीर १४७२ अ ।

मह—३२८६ ब, पूजा ३७४ अ ।

महत्तर—३२८६ ब ।

महत्तरदेवी—भवनवासी—परिवार ३२०६ अ, वैमानिक
—नामनिर्देश ४५१३ ब, सख्या ४५१२, आयु
१२७० । व्यंतर—आयु १२६४ ब ।

महत्ता—३२८६ ब ।

महनंदि—इतिहास १३३३ अ, १३४६ ब ।

महा अडड—काल का प्रमाण २२१६ अ ।

महा अडडांग—काल का प्रमाण २२१६ अ ।

महाधिक लृणफल—तोल का प्रमाण २२१५ अ ।

महा-ऊह—काल का प्रमाण २२१६ अ ।

महा-ऊहाण—काल का प्रमाण २२१६ अ ।

महा ऋद्धि—ऋद्धि १४४७, १४५४ ब ।

महाकक्ष—३२८६ ब, विद्याधर नगरी ३५४५ अ ।

महाकच्छ—३२८६ ब, गणधर २२१३ अ ।

महाकच्छा—३२८६ ब, विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३४६०
अ, नामनिर्देश ३४७० ब, विस्तार ३४७६, ३४८०,
३४८१, अकन ३४४४ के सामने, ३४६४ के सामने,
चित्र ३४६० अ ।

महाकथानक—संख्या का प्रमाण २२१४ ब ।

महाकमल—काल का प्रमाण २२१६ अ ।

महाकमलांग—काल का प्रमाण २२१६ अ ।

महाकल्प—३२८६ ब, श्रुतज्ञान ४६६ ब ।

महाकल्प्य—श्रुतज्ञान ४६६ ब ।

महाकल्याण—चक्रतर्ती ४१५ ब ।

महाकाय—व्यंतर—निर्देश ३६११ अ, सख्या ३६११

अ, परिवार ३६११ ब, आयु १२६४ ब ।

महाकाल—३२८६ ब, ग्रह २२७४ अ, चक्रवर्ती १.१४
ब, नारद ४२१ अ, पिशाच जातीय देव ३५८ ब ।

व्यतरेद्र—निर्देश ३६११ अ, सख्या ३६११ अ,
परिवार ३६११ ब, आयु १२६४ ब ।

महाकाली—३२८६ ब, तीर्थकर श्रेयासनाथ की यक्षिणी
२३७६, विद्या ३५४४ अ ।

महाकीर्ति—नदिसंघ १३२३ ब ।

महाकुमुद—काल का प्रमाण २२१६ अ ।

महाकुमुदांग—काल का प्रमाण २२१६ अ ।

महाकूट—३२८६ ब, विद्याधर नगरी ३५४५ अ ।

महाकौशल—३२८६ ब ।

महाक्षेत्र—भरत आदि क्षेत्र—निर्देश ३४४६ अ, ३४६२
ब, ३४६३ ब, विस्तार ३४७६, ३४८०, ३४८१,
अकन ३४४४ के सामने, ३४६४ के सामने ।

महाखर—३२८६ ब ।

महागंध—३२८६ ब ।

महागंध (देव)—क्षौद्रवर द्वीप सागर का रक्षक ३६१४,
नन्दीश्वर द्वीप सागर का रक्षक ३६१४, आयु
१२६५ ।

महागिरि—हरिवंश १३३६ ब, १.३४० अ ।

महागौरी—३२८६ ब, विद्या ३५४४ अ ।

महाग्रह—ग्रह ३२७४ अ ।

महाघोष—स्तनित कुमारेद्र—निर्देश ३२०८ ब, अवस्थान
३२०६ ब, परिवार ३२०६ अ, आयु १२६५ अ ।

महाचंद्र—३२८६ ब, भावि शलाकापुरुष ४२५ ब ।

महाज्वाल—३२८६ ब, विद्याधर नगरी ३५४५ ब,
३५४६ अ ।

महातनु—३२८६ ब, महोरग जातीय व्यन्तर देव ३२६३
अ ।

महातमः प्रभा—३२६० अ । नरक पृथिवी—निर्देश
२५७६, पटल २५७६, इन्द्रक श्रेणीबद्ध २५७६,
२५८०, विस्तार २५७६, २५७८, अकन ३४४१ ।
नारकी अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१६८,
आयु १२६३ ।

महातमः प्रभा (प्ररूपणा)—बध ३१००, बधस्थान ३.११३,
उदय १३७६, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा
१.४११ अ, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४.२६८,
४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब । सत् ४.१७०,
सख्या ४.६५, क्षेत्र २१६७, स्पर्शन ४४७६, काल
२.१०१, अंतर १८, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व
१.१४४ ।

महातेज—तीर्थकर अजितनाथ २ ३७८ ।
 महात्मा—३ २६० अ ।
 महानुदित—काल का प्रमाण २.२१६ अ ।
 महानुदितान्ग—काल का प्रमाण २ २१६ अ ।
 महादेवी—तीर्थकर नेमिनाथ २ ३८० ।
 महादेह—३ २६० अ, पिशाचजातीय व्यन्तरदेव २.५८ ब ।
 महाधनु—यदुवश १ ३३७ ।
 महाध्वजा—चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ ।
 महानंद—अच्युत १.४१ अ, मगधदेश इतिहास १.३१३ ।
 महानलिन—काल का प्रमाण २ २१६ अ ।
 महानलिनांग—काल का प्रमाण २ २१६ अ ।
 महानिमित्तज्ञान—ऋद्धि १ ४४८, निमित्तज्ञान २.६१२ ब, विद्या ३ ५४४ अ ।
 महानेमि—यदुवश १ ३३७ ।
 महान्—औदारिक १.४७१ अ ।
 महापद्म—३ २६० अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, कुंडलवर पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७५ ब । विस्तार ३ ४८७, अकन ३.४६७ । कुरुवश १.३३५ ब, १.३३६ अ, तीर्थकर पुष्पदत्त व शीतलनाथ २.३७८, तीर्थकर भाविकालीन २ ३७७, भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ ।
 महापद्म (हृद)—निर्देश ३.४४६ ब, ३.४५३ ब, विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४५४ ।
 महापद्म नंद—मगधदेश इतिहास १ ३१३ ।
 महापद्मान्ग—काल का प्रमाण २ २१६ अ ।
 महापद्मा—असुरेद्र की अग्रदेवी ३ २०६ अ । विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७०, विस्तार ३.४७६, ३ ४८०, ३.४८१, अकन २.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ । वक्षार-गिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४ के सामने ।
 महापवन—वायु ३.५३४ ब ।
 महापुंडरीक—३ २६० अ, श्रुतज्ञान ४.६६ ब, रुक्मि पर्वत का द्रह—निर्देश ३.४४६ ब, ३.४५३ ब, विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अकन ३.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४५४ ।
 महापुर—३.२६० अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ ।
 महापुराण—३.२६० अ, इतिहास—प्रथम १ ३४३ अ, द्वितीय १.३३१ अ ।

महापुराण कालिका—इतिहास १.३४५ अ ।
 महापुराण टिप्पणी—इतिहास १.३४३ अ ।
 महापुरी—३ २६० अ, चक्रवर्ती ४.१० ब, विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३ ४७६, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ ।
 महापुरुष—३.२६० अ, किपुरुष जातीय व्यन्तर देव २ १२५ अ, व्यतरेद्र—निर्देश ३.६११ अ, संख्या ३.६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, आयु १.२६४ ।
 महाप्रभ—३.२६० अ । कुंडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६७ । घृतवर सागर व द्वीप का रक्षक देव ३ ६१४ ।
 महाप्रातिहार्य—वृक्ष ३ ५७६ ।
 महाबध—३.२६० अ, ३ परि०, सत्कर्म पजिका ४ परि०, इतिहास १ ३४० अ ।
 महाबल—३.२६० अ, इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ, तीर्थकर अभिनदन व सुममिनाथ २.३७८, तीर्थकर भुजगम २ ३६२, बलदेव ४.१६ अ, भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ, सोमवश १.३३६ ब ।
 महाबाल—गणधर २.२१३ अ ।
 महाबाहू—कुंडलवर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ ब, अकन ३ ४६७ । राक्षसवश १.३३८ अ ।
 महाभद्र—तीर्थकर २ ३६२ ।
 महाभानु—यदुवश १.३३७ ।
 महाभारत—३.२६० ब ।
 महाभाषा—दिव्यध्वनि २ ४३२ अ ।
 महाभिषेक—३.२६० ब ।
 महाभीम—३.२६० ब, नारद ४.२१ अ, राक्षस जातीय व्यन्तर देव ३ ३६३ ब । व्यतरेद्र—निर्देश ३.६११ अ, संख्या ३.६११ अ, परिवार ३.६११ ब, आयु १.२६४ ।
 महाभुज—३.२६० ब ।
 महाभूत—३.२६० ब, भूत जातीय व्यन्तर देव ३.२३४ अ ।
 महामंडलीक—३ २६० ब, राजा ३.४०१ अ ।
 महामति—३ २६० ब ।
 महामत्स्य—अवगाहना १.१७६, वनस्पति ३.५०५ ब, समूच्छिम् ४ १२८ ब ।
 महामात्य—३.२६० ब ।
 महामानसी—३ २६० ब, तीर्थकर कुथुनाथ की यक्षिणी २.३७६, विद्या ३ ५४४ अ ।
 महामेघ रथ—तीर्थकर कुथुनाथ २.३७८ ।

महामेरु - सुमेरु ४.४३७ अ ।

महायक्ष—३.२६० ब, तीर्थकर अजितनाथ का यक्ष २.३७६ ।

महायान—३.२६० ब, बौद्धदर्शन ३.१८७ अ-ब ।

महायोजन—३.२६० ब ।

महारक्ष—राक्षसवश १.३३८ अ ।

महारत्न—नारायण ४.१८ अ ।

महारथ—कुरुवश १.३३५ ब, गणधर २.२१३ अ, यदुवश १.३३७, हरिवश १.३४० अ ।

महारव—राक्षसवश १.३३८ अ ।

महारस—गणधर २.२१३ अ ।

महाराज—राजा ३.४०० ब ।

महाराजा—३.२६० ब ।

महाराष्ट्र—३.२६१ अ ।

महारुद्र—३.२६१ अ, ग्रह २.२७४ अ, नारद ४.२१ अ ।

महालता—३.२६१ अ, काल का प्रमाण २.२१६ ब ।

महालतांग—३.२६१ अ, काल का प्रमाण २.२१६ ब ।

महावग्न—पूरन कश्यप ३.८२ अ ।

महावत्सा—२.२६१ अ, विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० । वक्षारगिरि का कूट—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४ के सामने ।

महावप्र—३.२६१ अ ।

महावप्रा—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ । वक्षारगिरि का कूट—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५-४८६, अकन ३.४४४ ।

महावसेन—काष्ठासघ १.३२७ अ ।

महावसु—हरिवश १.३४० अ ।

महावाह—व्यतरेंद्र गणिका ३.६११ ब ।

महाविकृति—मास ३.२६३ अ ।

महाविद्या—विद्या ३.५४४ अ ।

महावीरतीर्थ—अनुत्तरोपपादक १.७० ब, अंतकृत केवली १.२ ब, अपराजित १.११६ अ ।

महावीर-निर्वाण सवत्—इतिहास १.३०६ अ, १.३१० अ, १.३१६, १.परि०/१ ।

महावीर पंडित—आशाधर १.२८० ब ।

महावीरपुराण—३.२६२ अ, इतिहास—प्रथम ५.३४५ ब, द्वितीय १.३४६ ब ।

महावीर भगवान्—३.२६१ अ, अग्निमित्र १.३६ ब, इन्द्रभूति १.२६६ ब, गणधर २.२१३ अ । तीर्थकर प्ररूपणा मगधदेश इतिहास १.३१० ब, मूलसघ १.३१६, १.परि०/२.१, २, ८ । वीरसंवत् १.परि०/१, श्रुततीर्थ १.३१८ अ ।

महावीराचार्य—३.२६२ अ, इतिहास १.३३० अ, १.३४२ अ ।

महावीराष्टक—इतिहास १.३४८ अ ।

महावीर्य—कुरुवश १.३३६ अ ।

महाव्रत—अस्तेय १.२१३ ब, अहिंसा १.२१५ ब, तप २.३६० अ, परिग्रह ३.२६ अ, बद्धायुष्क १.२६२ ब, ब्रह्मचर्य ३.१८६ ब, व्रत ३.६२७ अ, शुभोपयोग १.४३३ अ, सयम ४.१३६ ब, सत्य ४.२७० ब, सत्लेखना ४.३६६ अ, स्वामित्व (तप) २.३६० अ ।

महाशख—३.२६२ अ, लवणसागर मे स्थिति पर्वत—निर्देश ३.४६२ अ, नामनिर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३.४७६, अकन ३.४६१, वर्ण ३.४७८ ।

महाशलाका—सख्या ४.६२ अ ।

महाशलाका कुड—असख्यात १.२०६ ब ।

महाशिरा—३.२६२ अ । कुडलवर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ ब, अकन ३.४६७ ।

महाशुक्र (स्वर्ग)—३.२६२ अ, चक्रवर्ती ४.१० ब, नारायण ४.१८ ब, बलदेव ४.१६ ब । स्वर्ग—निर्देश ४.५१४ ब, पटल ४.५१८, इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४.५१८, ४.५२०, उत्तर विभाग ४.५२१ अ, अवस्थान ४.५१४ ब, अकन ४.५१५ । इस स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८, अकन ४.५१५, देव आयु १.२६८ ।

महाशुक्र (देव)—अवगाहना १.१८१ अ, अवधिज्ञान १.१६८ ब, आयु १.२७०, आयुवध के योग्य परिणाम २.२५८ अ । इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब, उत्तरेंद्र ४.५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, अवस्थान ४.५२० ब, चिह्न, शक्ति आदि ४.५११ ब, विमान, नगर व भवन ४.५२०-५२१ ।

महाशुक्र (प्ररूपणा)—वध ३.१०२, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १.४०६ ब । सत् ४.१६२, संख्या ४.६८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

महाश्वता—३ २६२ अ, विद्या ३ ५४४ अ ।

महासंधिक—३ २६२ अ ।

महासता—३ २६२ अ, अस्तित्व १ २१३ अ, द्रव्य २.४५५ अ, सापेक्ष धर्म १ १०६ अ, ४.३२३ अ ।

महासर—कुरुवंश १ ३३५ ब ।

महासर्वतोभद्र—३ २६२ अ ।

महासाधु—तीर्थकर २ ३७७ ।

महा-सामान्य—सामान्य ४.४१२ अ ।

महासुव्रत—बलदेव ४.१६ ब ।

महासेन—३.२६२ अ, तीर्थकर चन्द्रप्रभ २.३८०, तीर्थकर पार्श्वनाथ २ ३६१, यदुवश १ ३३६, हरिवश १.३४०, इतिहास १.३२६ ब, १.३३० ब, १ ३४२ ब । काष्ठा सध १ ३२७ अ ।

महास्कंध—३.२६२ अ, परमाणु ३.१६ अ, वनस्पति ३ ५०५ ब, वर्गणा ३ ५१३ अ, ३ ५१५ ब, ३ ५१६ अ, ३ ५१८ ब, स्कंध ४ ४४६ ब ।

महास्कंध स्थान—वनस्पति ३ ५०५ ब ।

महास्वर—३ २६२ अ । गधर्व जातीय व्यंतर २.२११ अ ।

महाहिमवान् (कूट)—३.२८२ अ, पद्महृद का कूट—निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३ ४५४ । महाहिमवान् पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४ के सामने ।

महाहिमवान् (पर्वत)—निर्देश ३ ४४६ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७, इनके कूट तथा देव ३.४७२ अ ।

महाहृदय—कुडलवर पर्वत के कूट का देव ३ ४७५ ब, अकन ३ ४६७ ।

महितसागर (कवि)—इतिहास १.३३४ ब ।

महिम—मनुष्यलोक ३ २७५ अ ।

महिमा—३ २६२ ब, साधु (आत्म प्रशंसा) ४ ४०८ अ ।

महिमा ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १.४५१ अ ।

महिमा नगर—अर्हद्वली १ १३८ ब, यति सम्मेलन १ परि०/२ २ ।

महिला—सगति ४ ११६ ब । स्त्री ४ ४५० अ ।

महिष—३ २६२ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

महिषग—३.२६२ ब ।

महिषमति—३.२६२ ब ।

महिषसम श्रोता—उपदेश १.४२५ ब ।

महिचद—नंदिसध १.३२३ ब, १ ३२४ अ, काष्ठासध १ ३२७ अ, इतिहास १ ३३४ अ, १.३४७ ब ।

महीजय—यदुवंश १.३३७ ।

महीवत्त—हरिवंश १.३३६ ब ।

महीदेव—३ २६२ ब, मूलसंघ १ ३२२ ब, अकलंक भट्ट १.३१ अ ।

महींद्र—इतिहास १.३३३ ब, १ ३४७ अ ।

महीधर—गणधर २ २१२ ब ।

महीपाल—३ २६२ ब ।

महीभागी—गणधर २.२१३ अ ।

महीशुर—२.२६२ ब ।

महेंद्र—३.२६२ ब, अजना १.२ अ, गणधर २.२१२ ब, यदुवश १ ३३७, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ । कुडल-वर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६७ ।

महेंद्रका—मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

महेंद्रकीर्ति—नंदिसध १.३२३ ब, १.३२४ ब ।

महेंद्रगिरि—यदुवश १.३३७ ।

महेंद्रजित्—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ ।

महेंद्रदत्त—चक्रवर्ती ४.१० अ ।

महेंद्रदेव—३.२६२ ब, इतिहास १ ३३१ अ ।

महेंद्रपुर—विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ ।

महेंद्रविष्णु—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ ।

महेंद्रसेन—इतिहास १ ३३४ अ ।

महेंद्रिका—३ २६२ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

महेश्वर—२.१६३ अ, निदा २.५८८ ब ।

महेश्वरमुनि—मूलसध १ ३२२ ब ।

महोदधि—वानरवश १.३३८ ब ।

महोदय—समवसरण ४.३३० अ ।

महोपवास विधि—स्वाध्याय ४ ५२६ अ ।

महोरग—३.२६३ अ । व्यतरदेव—निर्देश ३ ६१० ब । अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १६८, आयु १.२६४ ब । इन्द्र—निर्देश ३.६११ अ, शक्ति आदि ३ ६१०-६११, वर्ण व चैत्यवृक्ष ३.६११ अ, अवस्थान ३ ६१२-६१४, ३ ४७१ ।

महोरग (देव)—प्ररूपणा—बंध ३ १०२, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ ३८२, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब । सत् ४.१८६, सख्या ४ ६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अंतर १.१०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

मांडपिक—क्रियावादी २.१७५ ब ।

मांडल गढ—आशाधर १ ३८० ब ।

मांडलिक—वायु ३.५३४ ब ।

मांडलीक—३ २६३ अ, एकातो १.४६५ ब, क्रियावादी २.१७५ ब ।

मांडव्य—गणधर २ २१३ अ ।

मांस—३.२६३ अ, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब, वैक्रियिक शरीर २ ५७३ ब, श्रावक ४.५० ब ।

मांसदर्शन—आहारातराय १ २८ ब ।

मांसपेशी—औदारिक शरीर १.४७२ अ ।

मागधदेव—चक्रवर्ती ४ १५ ब, प्रतिनारायण ४ २० अ ।

मागध द्वीप ३ २६३ ब—निर्देश ३.४५५ अ, ३.४६२ ब, विस्तार ३.४७६, अकन ३.४४४, ३ ४६१, ३ ४६४ के सामने। सीता-सीतोदा नदी के तीर्थ ३.४६० अ ।

माघ—३.२६४ अ ।

माघचंद्र—नदिसघ १ ३२३ ब, काष्ठासघ १ ३२७ अ ।

माघनंदि—३ २६४ अ । प्रथम नदिसघ १.३१८ ब, देशीयगण १.३२४ ब, बलात्कार गण १.३२३ अ, मूलसंघ १.३२२ ब, इतिहास १ ३२८ ब । १.परि०/- २ १, २, ३, ७ । १ परि०/४.२, कालावधि १ परि०/- २.८ । तृतीय—इतिहास १.३३२ अ । चतुर्थ—इतिहास १ ३३२ अ, १ ३४४ ब ।

माघनंदि कोल्हापुरीय—देशीयगण १ ३२५, इतिहास १ ३३१ ब ।

माघनंदि त्रैविद्य—देशीयगण १.३२५ इतिहास १.३३१ ब ।

माघवी—३.२६४ अ । नरक पृथिवी—निर्देश २.५७६ अ, पटल इंद्रक व श्रेणीबद्ध २ ५७८, २ ५८०, विस्तार २.५७६, २ ५७८, अंकन ३ ४४१ । नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १६८, आयु १ २६३ । प्ररूपणा—बध ३ १००, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब । सत् ४.१००, सख्या ४ ६५, क्षेत्र २ १६७, स्पर्शन ४.४७६, काल २ १०१, अंतर १.८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४ ।

माठर—३.२६४ अ, अक्रियावाद १ ३२ अ, एकाती १ ४६५ ब, साख्य ४ ३६८ ब ।

माणव—मनुष्यलोक ३.२७५ अ ।

माणवक—तीर्थकर २ ३७७ ।

माणिकचद—इतिहास १.३३३ ब ।

माणिकभद्र—३.२६४ अ ।

माणिकसेन—सेनसंघ १ ३२६ अ ।

माणिक्यनंदि—३ २६४ अ, नदिसघ १ ३२३ अ, देशीय गण १ ३२५, इतिहास १ ३२६ ब, १ ३३१ अ, १.३४३ अ ।

माणिक्यराज—इतिहास १.३३३ ब, १ ३४६ ब, १ ३४७ अ ।

मातंग—३ २६४ अ, तीर्थकर पद्मप्रभ व पार्श्वनाथ का यक्ष २.३७६, मातंग वश १ ३३६ ब, विद्या ३ ५४४ अ, विद्याधर १ ३३६ अ, विद्याधरवश १ ३३६ ब, १ ३३६ अ ।

मातंगवश—इतिहास १ ३३६ ब ।

मातंगी विद्या—इतिहास १ ३३६ अ ।

मातलिजल्प—इतिहास १ ३४२ ब ।

माता—प्रवचनमाता ३ १४८ अ ।

मातृका—पदस्थ ध्यान ३ ६ ब ।

मातृका यत्र—यत्र ३ ३५६ ।

मात्सर्य—३ २६४ अ ।

माथुरगच्छ—एकात (जैनाभासी सग) १.४६५ अ, काष्ठा-सघ १ ३२१ अ ।

माथुरसंघ—एकात (जैनाभासी सघ) १ ४६५ ब, इतिहास १ ३१६ अ, १ ३२१ ब ।

माद्विती—प्राणतेद्र का यान ४ ५११ ब ।

माद्री—कुरुवश १ ३३६ अ ।

माधव—३ २६४ ब ।

माधवचक्र—३.२६४ ब, नंदिसघ १.३२३ ब, देशीयगण १ ३२५ ।

माधवचंद्र त्रैविद्य—इतिहास १.३३० अ, १ ३३२ अ, १ ३४२ अ, १ ३४४ ब ।

माधवसिंह—३ २६४ ब ।

माधवसेन—३ २६४ ब, माथुरसघ १.३२७ ब, इतिहास १.३३० ब ।

माधवाचार्य—३ २६४ ब ।

माधवी—नारायण ४ १८ ब ।

माध्यदिन—३ २६४ ब, एकाती १ ४६५ ब, अज्ञानवादी १ ३८ ब ।

माध्यमिक—३ २६४ ब, बौद्धदर्शन ३.१८७ ब ।

माध्यस्थ—३.२६४ ब ।

माध्यस्थता—धर्म २ ४६७ अ, शुद्धोपयोग १ ४३० ब ।

माध्यस्थ भाव—आमायिक ४ ४१४ ब ।

माध्यस्थ्य—उपेक्षा १.४४४ ब ।

माध्व वेदांत—३ ३०५ ब, वेदांत ३.६०७ अ ।

मान—३.२६४ ब, ग्रह २.२७४ अ, सुमेरु के वन में देव भवन—निर्देश ३.४५० अ, अंकन ३.४५१। प्रमाण ३.१४५ अ।

मान (कषाय)—३.२६४ ब, कषाय २.३५ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६०, १.१६१, द्वैष कषाय २.३६ अ, मार्दव ४.१३६ ब। प्ररूपणा—बंध ३.१०५, बधस्थान ३.११३, उदय १.३८२, उदयस्थान १.३६३ अ, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.३००, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०७ अ। सत् ४.२३२, सख्या ४.१०५, ४.११७, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४.४८८, काल २.११२, अन्तर १.१५, भाव ३.२२१ अ, ३.२२३, अल्पबहुत्व १.१४६, भागाभाग ४.११७।

मानकांडक—कांडक २.४१ अ।

मानतुग—३.२६५ अ, स्तोत्र ४.४४६ ब, इतिहास १.३२६ अ, १.३४१ ब।

मानबंड—सुमेरु ४.४३६ ब।

मानपद—सूक्ष्म ४.५३७ ब।

मान (कर्म) प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४१, स्थिति ४.४६१, अनुभाग १.६४ अ-ब, प्रदेश ३.१३६। बध २.६७, बधस्थान ३.१०६, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८६, उदीरणा १.४११, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६५, त्रिसंयोगीभग १.४०१ ब। सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

मानव—३.२६५ अ, चक्रवर्ती ४.१४ ब, जीव २.३३३ ब, विद्या ३.५४४ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

मानवक—ग्रह २.२७४ अ।

मानवपुत्रक—विद्याधर १.३३६ अ।

मानवयोजन—३.२६५ अ, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ ब।

मानवर्तिक—३.२६५ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।

मानवी—३.२६५ अ।

मानशक्ति—कषाय २.३८ अ।

मानस—३.२६५ अ, मानुषोत्तर पर्वत के कूट देव—निर्देश ३.४७५ अ, अंकन ३.४७४, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

मानस-आस्रव—आस्रव १.२८२ ब।

मानस-आहार—आहार १.२८५ अ, आहारक १.२६५ अ, देव २.४४६ अ।

मानस-कायोत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३.६२० अ।

मानसचेष्टित—नारायण ४.१८ अ।

मानस-जप—व्युत्सर्ग ३.६२० ब।

मानस-जाप—व्युत्सर्ग ३.६२० ब।

मानस दुख—दुख २.४३४ ब।

मानसरोवर—३.२६५ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

मानस-विनय—विनय ३.५४८ ब।

मानस-व्युत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३.६२० अ।

मानसाहार—आहार १.२८५ अ, आहारक १.२६५ अ, देव गति २.४४६ अ।

मानसिक आस्रव—आस्रव १.२८२ ब।

मानसिक आहार—आहार १.२८५ अ, आहारक १.२६५ अ, देव गति २.४४६ अ।

मानसिक कायोत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३.६२० अ।

मानसिक जप—व्युत्सर्ग ३.६२० अ।

मानसिक जाप—व्युत्सर्ग ३.६२० ब।

मानसिक दुख—दुख २.४३४ ब।

मानसिक विनय—विनय ३.५४८ ब, ३.५४६ ब।

मानसिक व्युत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३.६२० अ।

मानसी—३.२६५ अ, तीर्थंकर शीतलनाथ की यक्षिणी २.३७६, विद्या ३.५४४ अ।

मानस्तम्भ—३.२६५ ब, इन्द्रभूति १.२६६ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०२ ब, सौधर्म स्तम्भ ४.४४५ ब।

मानस्तम्भ-भूमि—समवसरण ४.३३० ब, ४.३३३ ब।

मानो—जीव २.३३३ ब।

मानो दोष—आहार १.२६१ अ।

मानुष—२.२६५ ब, मनुष्य ३.२७३ ब, मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ अ, अंकन ३.४६४, यक्ष ३.३६६ अ।

मानुषोत्तर—३.२६५ ब, भद्रशाल वन का भाग ३.४५० अ, चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ।

मानुषोत्तर पर्वत—३.२६५ ब, जेनाभिमत—निर्देश ३.४६३ ब। कूटो के नाम ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अंकन ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६४, वर्ण ३.४७८। वैदिकाभिमत—निर्देश ३.४३१ ब, चित्र ३.४३२। चैत्यचैत्यालय २.३०३ अ।

मान्धाता—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब।

मान्यखेट—३.२६६ अ, अकालवर्ण १.३१ अ, इतिहास १.३१५ अ।

मान्यार्हता अधिकार—ब्राह्मण ३.१६६ ब।

माप—३.२२६ अ।

मापिकी—३.२६६ अ।

माया—३.२६६ अ, वेदात् ३.५६६ ब।

माया कषाय—आर्जव १.२७२ अ, कषाय २३५ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६०, १.१६१, रागद्वेष कषाय २३६ अ। प्ररूपणा—बध ३.१०५, बंधस्थान ३११३, उदय १३८२, उदयस्थान १३६३ अ, उदीरणा १४११ अ, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४३००, त्रिसयोगी भग १४०७ अ। सत् ४२३२, सख्या ४१०५, ४११७, क्षेत्र २२०४, स्पर्शन ४४८८, काल २११२, अतर ११५, भाव ३२२१ अ, ३२२३, अल्पबहुत्व ११४६, भागाभाग ४११७।

मायाकांडक—कांडक २४२ अ।

मायाक्रिया—क्रिया २१७४ ब।

मायाक्षर—पदस्थ ध्यान ३७ ब।

मायागता चूलिका—श्रुतज्ञान ४६६ अ।

माया प्रकृति—(प्ररूपणा)—प्रकृति ३८८, ३३४१, स्थिति ४४६१, अनुभाग १६४ अ-ब, प्रदेश ३१३६। बध ३६७, बधस्थान ३१०६, उदय १३७५, उदयस्थान १३८६, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४२६५, त्रिसयोगी भग १४०१ ब। सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व ११६८।

मायाप्रायस्थिति—व्युत्सर्ग दोष ३६२२ अ।

मायाशक्ति—कषाय २३८ अ।

मायाशल्य—माया ३२६६ अ, शल्य ४.२६ ब।

मायी—आहार दोष १२६१ अ, जीव २.३३३ ब।

मायूरी—३२६४ ब, विद्या ३५४४ अ।

मार—३२६४ ब, भावि शलाकापुरुष ४२६ अ। नरक-पटल—निर्देश २५८० अ, विस्तार २५७६ ब, अकन ३४४०। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।

मारण—मन्त्र ३.२४५ ब, राक्षसवश १३३८ अ।

मारणांत सल्लेखना—सल्लेखना ४.३८६ अ।

मारणांतिक कषाय—मरण ३२८७ ब।

मारणांतिक वेदना—मरण ३२८७ ब।

मारणांतिक समुद्घात—निर्देश ४३४३, उपपाद १४२७ ब, क्षेत्र २१६६ अ, क्षेत्र प्ररूपणा २१६७-२०७, जन्म २३१६ ब, मरण ३२८६ अ, विशुद्धि ३५७० अ, सकलेश ३५७० अ, सत्त्व ४३४३, सल्लेखना ४३८५ ब, सासादन ४४२५ अ, स्पर्शन प्ररूपणा ४४७७-४६४।

मारसिंह—३२६६ ब।

मारा—नरकपटल—निर्देश २५८० अ, विस्तार २.५८०,

अंकन ३४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।

मारीच—३.२६६ ब।

मारुतचारण ऋद्धि—ऋद्धि १.४५२ ब।

मारुत-वेग—बलदेव ४१६ अ।

मारुति-धारणा—वायु ३५३५ अ।

मार्कडेय—हरिवग १३४० अ।

मार्ग—३२६६ ब, मिथ्यादर्शन ३३०० अ।

मार्गण—सल्लेखना ४३६० ब।

मार्गणा—३२६६ ब, ३२६७ अ, ऊहा १४४५ ब, कषाय २३५ ब।

मार्गणास्थान—स्थान ४४५२ ब।

मार्ग दर्शनार्थ—आर्य १२७५ अ।

मार्गप्रभावना—प्रभावना ३१३६ ब।

मार्गप्राप्त्युक्त—विहार ३५७५ अ।

मार्गयथानुमार्ग—श्रुतज्ञान ४६० अ।

मार्गस्त्रि—सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब।

मार्गवाद—मार्गणा ३२६८ अ, श्रुतज्ञान ४६० अ।

मार्ग-सम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४३४८ ब।

मार्ग-सम्यक्त्वार्थ—आर्य १२७५ अ, सम्यग्दर्शन ४३४८ ब।

मार्गिणी—तीर्थकर नमिनाथ २३८८।

मार्गोपसंयत—समाचार ४३३७ अ।

मार्जार—श्रोता ४७४ ब।

मार्दव—सयम ४१३६ ब, सम्यग्दृष्टि ४३७८ ब।

मार्दव धर्म—मार्दव ३२६८ अ, सयम ४१३६ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७८ ब।

मार्दवधर्म-लोक—मार्दव ३२६८ ब।

मालक—३५४४ अ।

मालव—३२६६ अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

मालवा—३२६६ अ, आशाधर १२८० अ, मागध देश इतिहास १३१० ब, १३११ अ, १३१५।

माला—स्वप्न ४५०४ ब।

मालांग—३२६६ अ।

मालांग जातीय कल्पवृक्ष—वृक्ष ३५७८ अ।

माला निमित्तज्ञान—ऋद्धि १४४८।

मालारोहण—३२६६ अ, आहार दोष १२६१ अ, उदिष्ट १४१३ अ, वसतिका दोष ३५२६ अ।

मालास्वप्न—स्वप्न ४५०४ अ।

मालिकोद्वहन—३.२६६ ब, व्युत्सर्ग दोष ३.६२१ ब।

मालिनी—व्यतरेंद्र गणिका ३६११ ब।

माली—राक्षसवश १.३३८ ब।

माल्य—२.२६६ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब, विद्याधर
नगरी ३.५४६ अ।

माल्यकल्लीवनोपांत—मनुष्यलोक ३.२७५ अ।

माल्यवती—३.२६६ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

माल्यवान—३.२६६ ब, यदुवश १.३३७, राक्षसवश
१.३३८ ब।

माल्यवान्—३.२६६ ब, गजदत्त—निर्देश ३.४५६ ब,
नामनिर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५,
३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४५६ ३.४६४ के सामने,
चित्र ३.४५२ ब, वर्ण ३.४७७, कूट ब देव ३.४७२।
गजदत्त का कूट—निर्देश ३.४७३ अ, विस्तार ३.४८३,
अंकन ३.४४४, ३.४५७। द्रह—निर्देश ३.४५६ ब,
नामनिर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४६०, ३.४६१,
अंकन ३.४४४, ३.४५७, ३.४६४ के सामने। नाभि-
गिरि—निर्देश ३.४५२ ब। नामनिर्देश ३.४७१ अ,
विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४,
३.४६४ के सामने, चित्र ३.४५२ ब, वर्ण ३.४७७।

माषफल—३.२६६ ब।

माषवती—३.२६६ ब। मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

मास—३.२६६ ब, काल का प्रमाण २.२१६ अ-ब।

मासिक धर्म—सूतक ४.४४३ अ।

मासैकवासिता—३.२६६ ब।

माहिषक—३.२६६ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।

माहिष्मती—मनुष्यलोक ३.२७६ अ।

माहेन्द्र—३.२६६ ब, चक्रवर्ती ४.१० ब, नारायण ४.१८ ब।
विद्याधर नगरी ३.५४६ अ।

माहेन्द्र (देव)—निर्देश ४.५१० ब, अवगाहना १.१८० ब।
अवधिज्ञान १.१६८ ब, आयु १.२६७, आयुवध के
योग्य परिणाम १.२५८ अ। इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब,
उत्तरेन्द्र ४.५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, अवस्थान
४.५२० ब, चिह्न आदि ४.५११ ब, विमान नगर ब
भवन ४.५२०-५२१।

माहेन्द्र (देव प्ररूपणा)—बध ३.१०२, बधस्थान ३.११३,
उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा
१.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८
४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१६१,
सख्या ४.६८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल
२.१०४, अन्तर १.१०, भाव २.२२० ब, अल्पबहुत्व
१.१४५।

माहेन्द्र (स्वर्ग)—निर्देश ४.५१४ ब, उत्तर विभाग ४.५२०

ब, पटल ४.५१७, इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४.५१७,
४.५२०, अवस्थान ४.५१४ ब, अंकन ४.५१५।

मिट्टीसम श्रोता—उपदेश १.४२५ ब, श्रोता ४.७४ ब।

मित संभाषण—३.२६६ ब, समिदी ४.३४० अ-ब।

मित्र—नक्षत्र २.५०४ ब, संगति ४.१२० अ, स्वर्ग पटल
—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४.५१७, अंकन ४.५१६
ब, देव आयु १.२६७।

मित्रक—३.२६६ ब, पुन्नाट संघ १.३२७ अ।

मित्रता—संगति ४.१२० अ।

मित्रनंदि—३.२६६ ब, इतिहास १.३२८ अ।

मित्रफल्यु—गणधर २.२१३ अ।

मित्रभाव—तीर्थंकर अभिनदननाथ २.३६१।

मित्रयज्ञ—गणधर २.२१२ ब।

मित्रवीर—३.२६६ ब, पुन्नाट संघ १.३२७ अ, इतिहास
१.३२८ ब।

मित्रवीर्य—तीर्थंकर सुमतिनाथ २.३६१।

मित्रसेना—तीर्थंकर अरनाथ २.३८०।

मित्राग्नि—गणधर २.२१२ ब।

मिथिला—३.२६६ ब, तीर्थंकर नमिनाथ, मल्लिनाथ २.३७६,
नारायण ४.१८ अ, हरिवश १.३४० अ।

मिथ्या अनेकांत—अनेकांत १.१०५ ब।

मिथ्या अवधिज्ञान—अवधिज्ञान १.१८७ अ।

मिथ्या अहंकार—कर्ता २.२०३ अ।

मिथ्या उपदेश—उपदेश १.४२४ अ।

मिथ्या एकांत—एकांत १.४५६ ब, १.४६३ अ-ब, १.४६४
अ-ब।

मिथ्या कर्ता-कर्म—कर्ता २.२२ अ।

मिथ्याकार—समाचार ४.३३६ ब।

मिथ्याज्ञान—अज्ञान १.३७ अ, अध्यवसान १.५२ ब,
सम्यग्ज्ञान ३.२६३ अ—२६७।

मिथ्याचारित्र—अध्यवसान १.५२ ब, चारित्र २.२८३ अ।

मिथ्यात्व—अज्ञान १.३७ अ, अंतरायाम १.४४१ अ,
अशुभोपयोग १.४३३ ब, उपशम १.४३८ ब, एकान्त
१.४६४ अ, कर्ता-कर्म २.२२ ब, २.२३ अ, कारक
२.५० ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.६६१ ब, ज्ञान-
दर्शन (मिथ्या) २.२६४ अ, त्रिधाकरण १.४३८ ब,
व्यवहार नय २.५६४ अ, सासादन (काल) २.६५
अ, ब ४.४२६ अ।

मिथ्यात्व क्रिया—क्रिया २.१७४ ब।

मिथ्यात्व प्रकृति (कर्म)—आबाधा १.२४६ अ, मोहनीय
३.३४२ ब, ३.३४३ अ, सर्वधाती १.६३ ब। प्ररूपणा

—प्रकृति ३ ८८, ३ ३४१, स्थिति ४.४६१, अनुभाग १ ६३ ब, १ ६४ ब, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ६७, ३ १७८ ब, बधस्थान ३ १०६, उदय १ ३७५, उदय-स्थान १ ३८६, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८ सत्त्वस्थान ४ २६५, स्थिति-सत्त्व स्थानो का अल्पबहुत्व १ १६५ ब। त्रिसयोगी भंग १ ४०१ ब। उपशम १ ४३८ ब, क्षय २ १७६ अ, सक्रमण ४ ८५ अ, ४.८६ अ, ४ ८७ अ-ब, ४.८८ अ, अल्पबहुत्व १.१६६।

मिथ्यात्व प्रत्यय—उदय ३ १२७-१३०।

मिथ्यात्वादिक—ग्रन्थ २ २७३ अ।

मिथ्यादर्शन—३ ३०० अ, अध्यवसान १ ५३ अ, अनत १ ५४ ब, अनतानुबधी १ ६० अ, अवधिज्ञान १ १६४ ब, करण चिह्न १ १६२ ब, प्रत्यय ३ १२६ अ, दर्शना-वरण ४.३४६ ब।

मिथ्यादर्शन क्रिया—क्रिया २.१७४ ब।

मिथ्यादर्शन प्ररूपणा—बध ३ १०७ ब, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८६, उदयस्थान १ ३६३, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८४, सत्त्व-स्थान ४ ३०१-४ ३०६, त्रिसयोगी भग १ ४०८। सत् ४ २६० सख्या ४ १०६ क्षेत्र २ २०६, स्पर्शन ४ ४६३, काल २ ११६, अन्तर १ २१, भाव ३.२२१ ब, अल्प-बहुत्व १ १५२।

मिथ्यादर्शन वाक्—वचन ३ ५६७ ब।

मिथ्यादृष्टि—३ ३०१ ब, अज्ञानी १ ३७ अ, २ २७३ अ, अधश्चक्षानी (श्चक्षानी) ४ ४५ अ, अभव्य (भव्य) ३ २२३ ब, अवधिज्ञान १ १६० अ, १ १६४ ब, आगमाथं ग्रहण १ २३२ अ-ब, आरोहण-अवरोहण २ २४७, उपदेश १ ४२६ अ, उपशम १ ४३८ ब, करण दशक २ ६ अ, कर्ता-कर्म २ २२ ब, २.२३ अ, कषाय २ ४० ब, काय २ ४५ अ, कारक (भेदाभेद) २ ५० ब। गति गति (कालाबधे का अल्पबहुत्व) १ १६१। ज्ञान २ २५७ ब, ज्ञानी (अज्ञानी) २ २७३ अ, चेतना (कर्म व कर्मफल) २ २६७ ब, २.२६६ ब, दशकरण २ ६ अ, धम्मध्यान २ ४८२ अ, नय २ ५२६ अ, निदा २ ५८६ अ, परिषह ३.३७। भव्य (अभव्य) २ २२३ ब, राग ३ ३६८ ब, ३ ३६६ अ-ब, शास्त्र-ज्ञान (ज्ञान) २ २६५ ब, २ २६७, श्रद्धान ४.४५ अ, ४.४६ अ, श्रुतकेवली (साधु) ४.५६ अ, सक्रमण ४.८७ अ-ब, समुद्रात ४.३४३ अ।

मिथ्यादृष्टि (प्ररूपणा)—बध ३.६७, बंधस्थान ३.१०६

उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३६२ अ, उदीरण १.४११ अ, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २८७, ४.२६७, ४ ३०४, त्रिसयोगी भग १ ४०५ ब। सत् ४ १६१, सख्या ४ १०६, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २.६६, अन्तर १ ७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १.१४२ ब।

मिथ्या नय—नय २ ५२०, २.५२४ अ।

मिथ्या मत—एकात १ ४६४ ब।

मिथ्या शल्य—शल्य ४ २६ ब।

मिथ्या श्रुतज्ञान—श्रुतज्ञान ४.५६ ब।

मिथ्याहकार—कर्ता २.२३ अ।

मिथ्योपदेश—उपदेश १ ४२४ अ।

मिनट—३ ३०७ अ, काल का प्रमाण २ २१७ अ।

मिश्र—३ ३०७ अ, अनुकपा १ ६६ ब, अनुभव १.८६ अ। उपयोग १ ४३१ ब, काय २ ४३ ब, काययोग २ ४६ ब, १ ४७२ अ-ब, काल २ ८० अ, मिश्र गुणस्थान ३ ३०७ अ, समुद्रात ४.३४३ अ।

मिश्र काययोग—आयु बध १ २६३ ब, औदारिक १ ४७२ अ-ब, काय (पर्याप्त) २ ४६ ब, वैक्रियिक ३ ६०४ अ, प्ररूपणा—बंध ३ १०४, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३८०, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६६, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०७ अ। सत् ४.२१८, सख्या ४.१०३, क्षेत्र २ २०२, स्पर्शन ४.४८५, काल २.१०८, अंतर १.१३, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४८।

मिश्रकाल—काल २ ८० अ।

मिश्रकेशा—३ ३०७ अ, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३ ४६८, ३ ४६६।

मिश्र गुणस्थान—३.३०७ अ, दे० सम्यग्मिथ्यादृष्टि।

मिश्र तद्व्यतिरिक्त—अंतर १ ३ ब।

मिश्र दोष—आहार १ २६० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ, वसतिका ३ ५२८ ब।

मिश्र द्रव्य—सहनानी २ २१६ अ।

मिश्र नोकर्म द्रव्यबंधक—बंधक ३ १७६ अ।

मिश्र पाहुड—प्राभूत ३ १५६ ब।

मिश्रपूजा—पूजा ३ ७४ ब।

मिश्रप्रकृति—दे० सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति।

मिश्र बंधक—बंधक ३.१७६ अ।

मिश्र मत—मीमांसादर्शन ३.३११ अ।

मिश्र मोहनीय—सक्रमण ४.८६ अ, दे० सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति।

मिश्रयोग—आयुबध १ २६३ ब, औदारिक १ ४७२ अ-ब,
काय (पर्याप्त) २ ४६ ब, वैक्रियिक ३ ६०४ अ ।
प्ररूपणा—बध ३ १०४, बधस्थान ३ ११३, उदय
१ ३८०, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११
अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ २६६, ४ ३०५,
त्रिसंयोगी भग १ ४०७ अ । सत् ४ २१६, सख्या
४.१०४, क्षेत्र २.२०२, स्पर्शन ४.४८५, काल
२ १०८, अतर १ १३, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व
१ १४८ ।

मिश्रयोनि—योनि ३ ३८७ अ ।

मिश्रशरीर काल—उदयस्थान १ ३६७ ।

मिश्रशरीर पर्याप्तिकाल—उदयस्थान १ ३६७ ।

मिश्रशल्य — शल्य ४ २६ ब ।

मिश्रश्रद्धा—मिश्र (गुणस्थान) ३ ३०७ ब ।

मिश्रितश्रेणीव्यवहार गणित—गणित २.२३१ अ ।

मिश्रानुकपा—अनुकपा १ ६६ ब ।

मिश्रानुभव—अनुभव १ ८६ अ ।

मिश्रोपयोग—१ ४३१ ब ।

मिहिरकुल—३ ३१० ब, हूनवश १ ३११ अ-ब, १ ३१५
अ ।

मीना—तीर्थकर सुपाश्वर्ननाथ २ ३८८ ।

मीनार्या—तीर्थकर सुपाश्वर्ननाथ २ ३८८ ।

मीमांसा—३ ३११ अ, ऊहा १ ४४५ ब, विचय ३.५४६
ब ।

मीमांसा दर्शन—३ ३११ अ, एकाती १ ४६५ अ-ब,
दर्शन २ ४०३ अ ।

मीमांसानुक्रमणी—मीमांसादर्शन ३ ३११ अ ।

मीमांसा न्यायप्रकाश—मीमांसादर्शन ३ ३११ अ ।

मीमांसापरीक्षा—अतिचार १ ४४ अ ।

मील—क्षेत्र का प्रमाण २ २१५ ब ।

मुज—३ ३१३ अ, भोजवंश १ ३१० अ ।

मुड—३ ३१३ अ, एकाती १ ४६५ ब, क्रियावादी २.१७५
ब । मगधदेश इतिहास १ ३१२, १ ३१३ ।

मुकुटसप्तमी व्रत—३ ३१३ अ ।

मुकुद—मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

मुक्त जीव—अल्पबहुत्व १ १४२ ब, उत्पादादि १.३६२
ब, जीव २ २३४ ब, धर्माधर्म द्रव्य २ ४८६ अ, मोक्ष
३.३२३ अ, ३ ३२४ अ, शरीर (सल्लेखना) ४.३६७
ब । सत् प्ररूपणा ४ १६५, सुख ४.४३१ अ, ४.४३३
अ ।

मुक्त जीवराशि—सहनानी २ २१६ अ ।

मुक्तदत्त—भावि शलाकापुरुष ४ २५ अ ।

मुक्तावली व्रत—व्रत ३ ३१३ अ ।

मुक्ताशुक्ति कर्म—कर्म २ १३५ अ ।

मुक्ताशुक्ति मुद्रा—मुद्रा ३ ३१३ ब, २ १३५ अ ।

मुक्ताहर—३.३१३ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

मुक्ताहार—विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

मुक्ति—दे. मोक्ष ।

मुख—३ ३१३ अ, गणित २ २२६ ब, २.२२० ब ।

मुखधन—गणित २ २२६ ब ।

मुखनिविष ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५५ ब ।

मुखवस्त्रिका—श्वेतावर ४ ७६ ब ।

मुखस्थ कमल—पदस्थ ध्यान ३ ६ ब ।

मुख्य—३ ३१३ ब, गौण १ २३२ अ, स्याद्वाद ४ ४६६ अ ।

मुख्य गणधर—तीर्थकर प्ररूपणा २ ३८७ ।

मुख्य-गौण व्यवस्था—निश्चय-व्यवहार २ ५६८ अ,
सामान्य ४ ४१४ अ, स्याद्वाद ४ ४६६ अ ।

मुख्य धर्मध्यान—धर्मध्यान २.४७६ अ ।

मुख्य मंगल—मंगल ३ २४१ ब ।

मुख्य व्यवस्था—निश्चय-व्यवहार २ ५६८ अ, सामान्य
४ ४१३ अ, स्याद्वाद ४ ४६६ अ ।

मुग्ध बोध—इतिहास १.३४० ब, व्याकरण ३ ६१७ ब ।

मुद्रा—३ ३१३ ब, कृतिकर्म २.१३३ ब, २ १३५ अ, मत्र
३ २४५ ब ।

मुद्राकर्म—अनुयोग १.१०१ ब ।

मुनि—३ ३१३ ब । विशेष दे. साधु ।

मुनिगुप्त—गणधर २ २१२ ब ।

मुनिदत्त—गणधर २.२१२ ब ।

मुनिदेव—गणधर २ २१२ ब ।

मुनि प्रायश्चित्त (शास्त्र)—३ ३१३ ब, इन्द्रनदि १.२६६
ब ।

मुनिभद्र—३ ३१४ अ, इतिहास १ ३३२ ब ।

मुनियज्ञ—गणधर २ २१२ ब ।

मुनि-लिंग—लिंग ३.४१७ अ, ३ ४१६ ब ।

मुनिसुव्रत—तीर्थकर २ ३७६-३६१, भावि तीर्थकर
२.३७७ ।

मुनिसुव्रत काव्य—इतिहास १.३४५ अ ।

मुनिसुव्रतनाथ—३.३१४ अ, राक्षसवश १ ३३८ अ, वानर-
वश १.३३८ ब, हरिवश १ ३३६ ब, १ ३४० अ ।

मुनिसुव्रत पुराण—३ ३१४ अ, इतिहास १ ३४७ ब ।

मुन्नालाल—३ ३१४ अ, इतिहास १ ३३४ ब ।

मुमुक्षु—३.३१४ अ ।

सुरजमध्य व्रत—३.३१४ अ ।

सुरबा—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब ।

सुररा—३.३१४ अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ ।

सुरारी मिश्र—मीमासादर्शन ३.३११ अ ।

सुरवश—३.३१४ अ, इतिहास १.३१० ब, १.३१३ ।

सुलगित (बैद्यराज)—हरिदेव ४.५३० अ ।

सुष्टिविधान व्रत—३.३१४ अ ।

सुहावापुर—३.३१४ अ ।

सुहृत्—३.३१४ ब, काल का प्रमाण २.२१६ अ-ब ।

सू—मूल की सहनानी २.२१८ ब ।

सूक—३.३१४ ब ।

सूककेवली—केवली २.१५७ अ ।

सूक दोष—व्युत्सर्ग दोष ३.६२३ अ ।

सूक संज्ञा—३.३१४ ब, व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ ।

सूडबिंदी—३.३१४ ब ।

सूड—३.३१४ ब, कर्ताकर्म २.२२ ब, मिथ्यादर्शन ३.३०० अ, ३.३०१, अ, मोक्षमार्ग ३.३३७ ब, राग ३.३६८ अ ।

सूडता—३.३१५ अ, अमूढदृष्टि १.१३२ ब, १.१३३ अ ।

सूडशिष्य—उपदेश १.४२५ ब ।

सूड श्रोता—उपदेश १.४२५ ब ।

सूत्र—३.३१६ अ, समिति (प्रतिष्ठापना) ४.३४१ ब ।

सूख श्रोता—उपदेश १.४२५ ब ।

सूच्छेन—समूच्छिप्त ४.१२६ ब ।

सूच्छा—३.३१६ अ, परिग्रह ३.२४ ब, ३.२५ अ, सुख (हिंसा) ४.५३२ ब ।

सूर्त—३.३१६ अ, गुण २.२४४ ब, जीव २.३३२ ब, द्रव्य २.४५६ अ, बंध ३.१७३ अ, संसारी जीव (मन.पर्यय ज्ञान) ३.२६३ अ, सापेक्ष धर्म १.१०६ अ, ४.३२३ ब, स्पर्श ४.४७६ ब ।

सूर्तत्व—सूर्त ३.३१६ अ ।

सूति—३.३१६ अ, चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ, पूजा ३.७७ अ-ब, सूर्तपरिणाम ३.३१६ ब ।

सूतिक पदार्थ—अवधिज्ञान १.१६६ अ ।

सूल—३.३१६ अ, गणित २.२२३ अ, तीर्थकर सुविधि नाथ २.३८०, नक्षत्र २.५०४ ब, सहनानी २.२१८ ब, हरिवंश १.३४० अ ।

सूलक—३.३१६ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ ।

सूलकर्म—३.३१६ अ, आहार दोष १.२६१ ब, वसतिका दोष ३.५२६ ब ।

सूलक्रिया—३.३१६ अ ।

सूलगुण—३.३१६ अ, चारित्र (संयत) २.२६३ अ, श्रावक ४.५० ब, साधु ४.४०४ अ ।

सूलगुण प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३.१३३ अ ।

सूल प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६ । बंध ३.६७, बध-स्थान ३.१०८, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८८, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२८७, त्रिसयोगी भग १.३६६ । सक्रमण ४.८४ अ, अल्पबहुत्व १.१७१ ।

सूलप्रलंब—ताल प्रलंब २.३६६ अ ।

सूल प्रायश्चित्त—प्रायश्चित्त ३.१६१ ब ।

सूल बीज—वनस्पति ३.५०२ ब, ३.५०६ अ ।

सूलराज—३.३१६ अ ।

सूलराशि—३.३१६ अ, गणित २.२२२ ब ।

सूलवीर्यक—विद्या २.५४४ अ, विद्याधरवश १.३३६ अ ।

सूलसंघ—३.३१६ अ, परिचय १.३१५ ब, १.परि०/२२, विचार १.परि०/२.१, पट्टावली १.३१६-३.१७ । विभाजन १.३१७ ब, १.परि०/२-२, ४-१ । श्वेताम्बर-दिगम्बर भेद १.परि २३ । जैनाभासी सघ १.३१६ अ ।

सूलस्थान—३.३१६ अ ।

सूलस्थान प्रायश्चित्त—आहार १.२८८ ब, प्रायश्चित्त ३.१६१ ब ।

सूला—३.३१६ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ ।

सूलाचार—३.३१६ ब, इतिहास १.३४० ब ।

सूलाचारप्रदीप—इतिहास १.३४६ अ ।

सूलाराधना—३.३१६ ब, आशाधर १.२८१ अ ।

सूलाराधनादर्पण—३.३१६ ब । इतिहास १.३४४ अ ।

सूलितल गच्छ—द्राविड सघ १.३२० ब, १.३२२ अ ।

सूलोत्तर प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६ । बध ३.६७, बधस्थान ३.१०८, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८८, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२८७, त्रिसंयोगी भग १.३६६ । सक्रमण ४.८४ अ, अल्पबहुत्व १.१७१ ।

सूष—मोक्ष (मोम का साचा) ३.३२६ ब ।

सूसल—३.३१६ ब, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ अ ।

सूक्षित दोष—आहार दोष १.२६१ ब ।

सूग—३.३१६ ब ।

सूगचारित—३.३१६ ब । स्वच्छद साधु ४.५०३ ब ।

सूगशिरा—नक्षत्र २.५०४ ब, तीर्थकर सभवनानाथ २.३८०

मृगशीर्ष—३.३१६ ब, नक्षत्र २.५०४ ब ।

मृगांक—३.३१६ ब, इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ, बलदेव ४.१७ ब ।

मृगारिदमन—राक्षसवश १.३३८ अ ।

मृगावती—नारायण ४.१८ ब ।

मृगोद्धर्मा—विद्याधरवंश १.३३६ अ ।

मृत शरीर—अपवाद (क्षपक) १.१२२ अ, मोक्ष ३.३२८ ब । सल्लेखना ४.३६६ ब ।

मृतसजीवनी—३.३१६ ब, विद्या ३.५४४ अ ।

मृत्तिका-नयन यंत्र—यंत्र ३.३५७ ।

मृत्तिका-सम श्रोता—उपदेश १.४२५ ब ।

मृत्युजय यंत्र—यंत्र ३.३५७ ।

मृत्यु—नरक २.५७४, मरण ३.२७८ ब ।

मृत्युभय—३.२०६ ब ।

मृदंग—लोक (ऊर्ध्व) ३.४३८ ब, वैराग्य ३.६०७ ब ।

मृदंगमध्य व्रत—३.३१६ ब ।

मृदगाकार—३.३१६ ब, क्षेत्रफल गणित २.२३४ अ ।

मृदु भाषण—गुरु २.२५२ ब, सत्य ४.२७२ ब, समिति ४.३४० ब ।

मृदुभाषिणी—अतरेन्द्र गणिका ३.६११ ब ।

मृषानंद—रौद्रध्यान ३.४०७ ब, ३.४०८ अ ।

मृषा योग—अनुभय वचन ३.३८० ब, असजी ३.३८० ब, असत्य—दे० असत्य, प्रत्यय ३.१२६ अ, मनोभाग ३.३८० अ, वचनयोग १.२०६ अ, ३.४६७ ब, ४.२७३ अ । प्ररूपणा—बंध ३.१०४, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.२६६, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.२१२, सख्या ४.१०२, क्षेत्र २.२०२, स्पर्शन ४.४८४, काल २.१०८, अतर १.१२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४७ ।

मृषावाद—प्रत्यय ३.१२६ अ ।

मेखलापुर—३.३२० अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

मेघंकरा—सुमेरु के कूट की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७३ ब, अंकन ३.४५१ ।

मेघंकरा—३.३२० अ ।

मेघ—३.३२० अ, तीर्थंकर सभवाथ, अभिनंदननाथ, विमलनाथ २.३८२, मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ अ, अंकन ३.४६४, यमकगिरि का रक्षक देव ३.४५३ अ । यदुवश १.३३७, राक्षसवश

१.३३८ अ । स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अंकन ४.५१६ ब, देव आयु १.२६७ ।

मेघकूट—३.३२० अ । यमकगिरि—निर्देश ३.४५३ अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४५७, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७ । विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

मेघचंद्र—३.३२० अ, नदिसघ १.३२३ अ-ब, अभयनंदि १.१२७ अ, इतिहास १.३२६ ब ।

मेघचंद्र त्रैविद्य—प्रथम—देशीय गण १.३२५, इतिहास १.३३० ब । द्वितीय—देशीय गण १.३२५ इतिहास १.३३१ अ ।

मेघचारण ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५२ ब ।

मेघध्वान—राक्षसवश १.३३८ अ ।

मेघनाद—३.३२० अ ।

मेघमाल—३.३२० अ, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ ।

मेघमाला व्रत—३.३२० अ ।

मेघमालिनी—३.३२० अ, सुमेरु पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७३ ब, अंकन ३.४५१ ।

मेघरथ—३.३२० अ, कुरुवश १.३३६ अ । तीर्थंकर शान्तिनाथ २.३७८ । तीर्थंकर सुमतिनाथ २.३८० ।

मेघराजी—उत्तरेन्द्र की ज्येष्ठा देवी ४.५१३ ब ।

मेघवती—३.३२० अ, सुमेरु के कूट की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७३ ब, ३.६१४ ।

मेघवाहन—३.३२० ब, राक्षस वश १.३३८ अ-ब, विद्याधरवश १.३३६ ब ।

मेघा—नरक पृथिवी—निर्देश २.५७६ अ, पटल २.५७६, इन्द्रक व श्रेणीबद्ध २.५७८, २.५७९ । विस्तार २.५७६, २.५७८, अंकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६३ । प्ररूपणा—बंध ३.१००, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१७० सख्या ४.६५, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४.४७६, काल २.७७१, अतर १.८, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४ ।

मेघानीक—विद्याधरवश १.३३६ अ ।

मेघक—३.३२० अ ।

मेढासम श्रोता—उपदेश १.४२५ ब ।

मेद—३.२२० ब, औदारिक शरीर १.४७२ अ ।

मेदार्य—गणधर २.२१३ अ ।

मेधा—३.३२० ब ।

मेधावी—इतिहास १.३३३ अ, १.३४६ अ ।

मेरुवर पुराण—इतिहास १.३३२ अ, १.३४४ ब ।

मेय—३.३२० ब ।

मेरु—३.३२० ब, तीर्थंकर विमलनाथ २.३६१, प्रतिनारायण ४.२० अ ।

मेरु—३.३२० ब, गणधर २.२१२ ब, वानरवंश १.३३८ ब, सुमेरु ४.४३६ ब, ४.४३७ अ ।

मेरुकीर्ति—३.३२० ब, नंदिसंघ १.३२३ अ, इतिहास १.३२६ ब ।

मेरुचंद—नंदिसंघ १.३२४ अ, इतिहास १.३३४ अ ।

मेरुधन—गणधर २.२१२ ब ।

मेरुपक्षि व्रत—३.३२० ब ।

मेरुभूति—गणधर २.२१२ ब ।

मेरुषेणा—तीर्थंकर अभिनदतनाथ २.३८८ ।

मेरुभृंग—कषाय (माया) २.३८ अ, तीर्थंकर नेमिनाथ २.३८३ ।

मेरुसम धोता—उपदेश १.४२५ ब ।

मेहेसरचरित—इतिहास १.३४५ ब ।

मैगस्थिनीज—३.३२० ब ।

मैत्री—३.३२१ अ, अनुकंपा १.६६ अ ।

मैत्रीभाव—सामायिक ४.४१६ ब ।

मैत्रीभावना—३.३२१ ब, सामायिक ४.४१६ ब ।

मैथिलीकल्याणम्—इतिहास १.३४४ अ ।

मैथुन—३.३२१ अ, प्रत्यय ३.१२६ अ, प्रविचार ३.१४६ अ, ब्रह्मचर्य ३.१६२ ब, ३.१६३ अ-ब, वेदभाव ३.५८३ ब, हिंसा ४.५३२ ब ।

मैथुनशाला—ज्योतिष देवो के प्रासादों में २.३५१, भवन-वासी देवो के भवनो ३.२१० ब ।

मैथुन संज्ञा—संज्ञा ४.१२० ब, ४.१२१ अ, स्त्री ४.४५० अ ।

मैनासुंदरी—३.३२१ अ ।

मोक—३.३२१ अ मनुष्यलोक ३.२७५ अ ।

मोक्ष—३.३३१ अ, अग्र्य १.३६ अ । उपयोग १.४३२ अ, कर्मोदय २.७४ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ । चारित्र २.२८५ ब, धर्मद्वयान २.४८४ अ, पुरुषार्थ ३.७० ब, मोक्षमार्ग (प्रत्यय) ३.३३४ ब, ३.३३५ अ, राग ३.३६६ ब, वर्णव्यवस्था (उच्च-नीच कुल) ३.५३४ अ, सुख ४.४३१ ब, ४.४३२ ब, ४.४२४ अ ।

मोक्ष पाहुड—३.३३२ अ, इतिहास १.३४० ब ।

मोक्ष पुरुषार्थ—पुरुषार्थ ३.७० ब ।

मोक्षमार्ग—३.३३२ अ, अभ्यास १.१३१ ब, अवधिमान-पर्यय ज्ञान १.१८६ अ, कारण (कर्मोदय) २.७४ ब, कारण (जीव परिणाम) २.६८ अ, धर्म (निश्चय) २.४७४ अ, विनय ३.५५१ ब, सामायिक (साम्य) ४.४१५ ब ।

मोक्षमार्गप्रकाशक—३.३४० अ, इतिहास १.३४८ अ ।

मोक्षमार्ग यंत्र—यंत्र ३.३५७ ।

मोक्षविनय—विनय ३.५४८ अ ।

मोक्षशास्त्र—तत्त्वार्थसूत्र ३.२५६ ब ।

मोक्षसप्तमी व्रत—३.३४० अ ।

मोड़वाली गति—विग्रह गति ३.५४१ ब ।

मोद—एकांतवादी १.४६५ ब, अज्ञानवाद १.३८ ब ।

मोद क्रिया—मत्र ३.२४६ ब, संस्कार ४.१५१ अ ।

मोष—वचन ३.४६८ अ ।

मोषवचन—वचन ३.४६८ अ ।

मोषवाक्—वचन ३.४६८ अ ।

मोह—३.३४० अ, अशुभोपयोग १.४३३ ब, उपयोग १.४३३ अ-ब, कर्तकर्म २.२२ ब । करुणा २.१५ अ, गुणस्थान २.२४६ अ, पुण्य ३.६१ अ, प्रत्यय ३.१२६ अ, मूर्त ३.३१८ ब, राग ३.३६५ ब, ३.४१० अ, विभाव ३.५५८ ब, वेद ३.५८३ ।

मोहज भाव—औदयिक भाव १.४०८ ब ।

मोहन—ध्यान २.४६७ अ, राक्षसवश १.३३८ अ ।

मोहनीय कर्मप्रकृति—३.३४० ब, आवाधा १.२४६ अ, उदयबध कारण-कार्य भाव ३.१७६ अ, उपशम १.४३७-४४०, क्षय २.१७८ ब, वेदनीय कर्म ३.५६४ अ । प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४१, स्थिति ४.४६१, स्थितिरात्त्व स्थानो का अल्पबहुत्व १.१६५ ब, अनुभाग १.६४ ब, अनुभाग का अल्पबहुत्व १.१६६, प्रदेश ३.१३६, प्रदेशबध का अल्पबहुत्व १.१४२ ब, बंध ३.६७, बंध सबधी नियम ३.६३, ३.६४ अ, बंधस्थान ३.१०६ अ, उदय १.३७५ उदय के निमित्त १.३६७ ब, उदयस्थान १.३८६, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा-स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८ सत्त्वस्थान ४.२६५, सत्त्वस्थानो का काल २.१२०, सत्त्व की अपेक्षा जीवो की सख्या ४.११७ अ, त्रिसंयोगी भग १.४०१ ब, संक्रमण ४.८४ अ, अल्पबहुत्व १.१६८ ।

मोह-विवेक-युद्ध—इतिहास १.३४७ अ ।

मौख्य—३.३४४ ब ।

मौद्गलायन—३.३४४ ब, अक्रियावादी बौद्ध १.३२ अ, एकांती १.४६५ ब ।

मौन—३.३४५ अ, आहार १.२८६ अ, भिक्षा ३.२२६ अ, सत्य ४.२७० ब, सल्लेखना ४.३८६ ब, ४.३६२ ब, सामायिक ४४१७ अ।

मौनवृत्ति—सल्लेखना ४३६२ ब।

मौनव्रत—३.३४५ ब।

मौनाध्ययन वृत्ति - सस्कार ४१५२ ब।

मौनाध्ययन वृत्ति क्रिया—सस्कार ४.१५१ ब।

मौर्यपुत्र—गणधर २.२१३ अ।

मौर्यवश—इतिहास १.३१० ब, १.३१३।

मौलिक प्रक्रिया—३.३४५ ब।

म्रक्षित - ३.३४५ ब, वसतिका दोष ३.५२६ ब।

म्लेच्छ—निर्देश ३.२७३ ब, ३.३४५ ब, अंतर्द्वीपज निर्देश ३.३४६ अ, अतर्द्वीपजो की आयु १.२६४ अ, चक्रवर्ती ४१५ ब, प्रतिनारायण ४२० अ, प्रव्रज्या ३.१५० अ, सत् प्ररूपणा ४१८४।

म्लेच्छ-खंड—निर्देश ३.४४६ अ, ३.४६२ ब, ३.४६३ ब, विदेहस्थ ३.४६० अ, गणना ३.४४५ अ, अंकन ३.४४४ के सामने, ३.४४७, ३.४६४ के सामने, काल-विभाग २.६२ अ।

य

यंत्र—३.३४७ अ, करणत्रिक (अध.करण) २.७-६, (अपूर्व-करण) २.१२ ब, मंत्र ३.२४५ ब।

यंत्रपीडन जीविका—४४२१ ब।

यंत्रशाला—भवनवासी देवों के भवनो मे ३.२१० ब।

यंत्रेशयंत्र—यत्र ३.३५७।

यक्ष - ३.३६६ अ, चक्रवर्ती ४.१३ अ, चैत्य-चैत्यालय २.३०२ अ, तीर्थकर प्ररूपणा २.३७६। पिशाच जातीय व्यंतर देव ३.५८ ब। व्यंतर देव—निर्देश ३.६१० ब, ३.५८ ब, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १.१६८ ब, अवस्थान ३.६१२-६१४, आयु १.२६४। इन्द्र—निर्देश ३.६११ अ, शक्ति आदि ३.६१०-६११, वर्ण व चैत्यवृक्ष ३.६११ अ। बौद्धाभिमत ३.४३५ अ। प्ररूपणा—बंध ३.१०२, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब,

उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १.४०६ ब। सन् ४.१८८, सख्या ४.६७, क्षेत्र ३.१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

यक्षलिक—३.३६६ अ।

यक्षवर (सागर द्वीप)—३.३६६ अ। अत से चतुर्थ—निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अकन ३.४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिषचक्र ३.३४८ ब, अधिपतिदेव ३.६१४।

यक्षिणी—तीर्थकर प्ररूपणा २.३७६, तीर्थकर नेमिनाथ की मुख्य आर्यिका २.३८८।

यक्षिता—तीर्थकर अरनाथ की मुख्य आर्यिका २.३८८।

यक्षेश्वर—३.३६६ अ, तीर्थकर अभिनदननाथ का यक्ष २.३७६।

यक्षोत्तम—३.३६६ अ।

यज्ञ—३.३६६ अ, अग्नि (आत्मा) १.३५ ब, पूजा ३.७४ अ।

यज्ञोपवीत—३.३६६ ब, क्षुल्लक २.१८८ ब, वर्णव्यवस्था ३.५२३ ब।

यति—३.३७० अ, अनगर १.६२ अ।

यतिपूजा - शुभोपयोग १.४३४ ब।

यतिवर वृषभ—३.३७० अ।

यतिवृषभ—३.३७० अ, मूलसध १.३२२ ब, १.परि०/-२-१; ३.१५, १.३२२ ब, आर्यमंक्षु १.२७५ ब, उच्चारणाचार्य १.३५२ अ। इतिहास १.३२८ ब, १.३४० ब।

यति सम्मेलन—१.परि०/२-२,७,८।

यत्न—कारण (कर्मव्यवस्था) २.६८ ब।

यत्नाचार—अहिंसा १.२१७ ब।

यत्याचार—३.३७० अ।

यत्रतत्रानुपूर्वी—आनुपूर्वी १.२४७ अ।

यथाकाल उदय—उदय १.३६८ अ।

यथाख्यात चारित्र—३.३७० ब, लब्धिस्थानों का अल्प-बहुत्व १.१६०, सिद्धों का अल्पबहुत्व १.१५३।

यथाख्यात विहार—३.३७० ब।

यथाख्यात विहार-शुद्धि सयत—३.३७० ब।

यथाख्यात संयम ३.३७० ब, प्ररूपणा—बध ३.१०६, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३८३, उदयस्थान १.३६३ अ, उदीरणा १.४११, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.३०२, ४.३०५, त्रिस-

योगी भंग १ ४०७ ब। सत् ४ २३८, संख्या ४ १०६,
क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४ ४८६, काल २.११४, अंतर
१ १७, भाव ३ २२१ अ, अल्पबहुत्व १ १५१।

यथाच्छंद मुनि—स्वच्छंद साधु ४ ५०३ ब।

यथाच्छंद श्रोता—उपदेश १ ४२५ ब।

यथाजात—३ ३७० ब।

यथाजातरूपधर—३.३७० ब, निर्ग्रथ २.६२१ ब।

यथातथानुपूर्वी—आनुपूर्वी १ २४६ ब।

यथानुपूर्व—श्रुतज्ञान ४.६० अ।

यथार्थ—३ ३७१ अ।

यथालब्ध—आहार १ २८८ अ।

यदु—३ ३७१ अ, यदुवश १ ३३६, हरिवश १.३४० अ।

यदुवंश—निर्देश १ ३३६, इतिहास १.३३७, हरिवश
१.३४० अ।

यदृच्छा—परतत्रवाद ३ १२ अ।

यदृष्ट—३ ३७१ अ, आलोचना १ २७७ ब।

यम—३ ३७१ अ, नक्षत्र २ ५०४ ब, भोगोपभोग ३ २३६
अ, यमकगिरि का रक्षक देव ३ ४५३ अ, इस देव के
प्रासाद का विस्तार ३.६१५, शुभोपयोग १ ४३३ अ,
सयम ४ १३६ ब, सामायिक २ ३०८ ब।

यम (लोकपाल) — ३ ३७१ अ, लोकपाल ३ ४६१ ब, आयु
१ २६६, ऋद्धि व शक्ति ४ ५१३ अ, दिग्गजेद्र
पर्वतवासी वाहन देव ३ ६१३ अ, ३ ४५३ अ, सुमेरु
पर्वत पर भवन ३ ४५० अ-ब, स्वर्गलोक मे ४.५१३
अ।

यमक—३ ३७१ अ।

यमकगिरि—निर्देश ३.४५३ अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ,
विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४,
३ ४५७, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४५३ अ, वर्ण
३.४८३, गणना ३ ४४५ अ।

यमकायिक—आकाशोपन्न देव २ ४४५ ब।

यमकूट—यमकगिरि—निर्देश ३.४५३ अ, नामनिर्देश
३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६,
अकन ३ ४४४, ३.४५७, ३.४६४ के सामने, चित्र
३ ४५३ अ, वर्ण ३ ४७७।

यमदंड—३.३७१ अ।

यमदग्नि—३ ३७१ अ।

यमदेव—३.३७१ अ।

यमलोक—३.३७१ अ, अतकृत १.२ ब।

यमुना—मनुष्य क्षेत्र ३ २७५ ब।

यव—३ ३७१ अ, क्षेत्र का प्रमाण ३ २०४ अ।

यवन—३.३७१ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

यवमध्य—वनस्पति ३.५०६ अ, योगस्थानो मे समथो का
अल्पबहुत्व १.१६१ ब, अनुभागबध अध्यवसाय
स्थानो की रचना का अल्पबहुत्व १ १७६, सान्तर
सिद्धो का अल्पबहुत्व १ १५३ ब।

यवमध्य काल—अद्धा असंक्षेप १ ४७ अ, अल्पबहुत्व
१ १६१ ब।

यवमध्य क्षेत्र—३ ३७१ अ।

यवमध्य-रचना—याग ३ ३८२ अ।

यवमुरज क्षेत्र—३ ३७१ ब।

यश कीर्ति—३.३७१ ब। प्रथम—नदिसंघ १ ३२३ अ,
१ ३२४ अ, इतिहास १ ३२८ ब। द्वितीय—काष्ठासघ
१.३२७ ब, इतिहास १ ३३० ब। तृतीय—अनन्त-
कीर्ति १ ५६ ब, इतिहास १ ३३२ अ, १ ३४५ अ।
चतुर्थ—इतिहास १.३३२ अ, १ ३४३ ब। पंचम
—इतिहास १ ३३१ अ, १.३४६ अ। षष्ठ—इतिहास
१ ३३३ अ, १ ३४६ अ। सप्तम—इतिहास १ ३३३
ब।

यश. नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ६६ अ,
२ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ६५, प्रदेश
३ १३६। बध ३ ६७, बधस्थान ३.११०, उदय
१ ३७५, उदयस्थान १ ३६२, उदीरणा १.४११ अ,
उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान,
४.३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४.८४ अ,
अल्पबहुत्व १.१६६।

यश—३ ३७२ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६
अ, विस्तार ३ ४८७, अकन ३.४६६।

यशपाल—३ ३७२ अ, मूलसघ १ ३१६।

यशस्कांत—मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश
३ ४७५ अ, अकन ३.४६४।

यशस्तिलकचद्रिका—३ ३७२ अ, इतिहास १ ३४६ ब।

यशस्तिलकचपू—३ ३७२ अ, इतिहास १ ३४२ ब।

यशस्वती—कुलकर ४.२३, चक्रवर्ती ४ ११ ब।

यशस्वान्—३ ३७२ अ, किपुरुषजातीय व्यतरदेव २.१२५
अ। मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश
३ ४७५ अ, अकन ३ ४६४।

यशस्विनी—३ ३७२ अ, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—
निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३ ४६६।

यशस्वी—३ ३७२ अ, कुलकर ४ २३।

यशोदेव—३ ३७२ अ।

यशोधर—३.३७१ अ, चक्रवर्ती ४ १० ब, तीर्थंकर २.३७७,

मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ अ,
अकन ३.४६४। ग्रैवेयक स्वर्ग का पटल—निर्देश
४.५१८, विस्तार ४.५१८, अकन ४.५१५, देव-
आयु १.२६८।
यशोधरचरित्र—३.३७२ अ। इतिहास—प्रथम १.३४३
अ। द्वितीय १.३४५ ब। तृतीय १.३४६ अ। चतुर्थ
१.३४६ ब। पंचम १.३४७ ब।
यशोधरा—३.३७२ अ, कुलकर ४.२३। रचकवर पर्वत
की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अकन ३.४६८,
३.४६९।
यशोधर्मा—भोजवश १.३१० अ।
यशोनंदि—३.३७२ अ, नंदिसंघ १.३२३ अ, इतिहास
१.३२८ ब।
यशोबाहु—गणधर २.२१२ ब। भद्रबाहु द्वि०—मूलसंघ
१.३१६, इतिहास १.३२८ अ।
यशोभद्र—३.३७२ अ, मूलसंघ १.३१६ इतिहास १.३२८
अ।
यशोभद्र सूरि—इतिहास १.३३० ब।
यशोभद्रा—३.३७२ ब।
यशोरथ—३.३७२ ब।
यशोवती—चक्रवर्ती ४.११ ब।
यशोवर्मा—३.३७२ ब।
यशोविजय—३.३७२ ब, इतिहास १.३३४ अ, १.३४७
ब।
याग—पूजा ३.७४ अ, यज्ञ ३.३६९ अ।
याज्ञिक—एकांत १.४६५ ब।
याज्ञिक मत—३.३७२ ब। एकांत १.४६५ ब।
याचना—३.३७२ ब, परिषद् ३.३३ ब, ३.३४ अ, भिक्षा
३.२२६ अ।
याचना-परिषद्—३.३७२ ब, ३.३३ ब, ३.३४ अ।
याचनी भाषा—भाषा ३.२२७ अ।
यादव—तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ व नेमिनाथ ३.३८०।
यादववंश—इतिहास १.३३७, हरिवंश १.३४० अ।
यान—३.३७२ ब। देव विमान विविध आकार ४.५११।
यापनीय संघ—इतिहास १.३१६ ब। एकांत (जैनाभासी)
१.४६५ अ-ब।
याम—३.३७२ ब।
यावानुद्देश—३.३७२ ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ।
युक्त—३.३७३ अ, अनंत २.११५ अ, असंख्यात २.२१४
ब, २.२१५ ब।
युक्ताचारी हिंसा—हिंसा ४.५३५ ब।

युक्तानंत—अनंत १.५६ ब, २.२१५ अ।

युक्तासंख्यात—असंख्यात १.२०५, २.२१५ ब।

युक्ति - अनुभव १.८२ ब, अविनाभाव १.२०२ ब। आगम
(प्रामाण्य) १.२३६ अ, ऊहा १.४४५ ब, तर्क २.३६५
अ, न्याय २.६३३ अ-ब, पद्धति (अभिप्राय) ३.६ ब,
मतिज्ञान ३.२५४ ब, स्वभाव ४.५०७ अ।

युक्तिक—यदुवश १.३३६।

युक्तिचिंतामणि स्तव—३.३७३ अ, इतिहास १.३४२ ब।

युक्त्यनुशासन—३.३७३ अ, इतिहास १.३४० ब।

युक्त्यनुशासनालंकार—इतिहास १.३४१ ब।

युग—३.३७३ अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, क्षेत्र का
प्रमाण २.२१५ अ, सृष्टिक्रम २.६१, पूर्णता की तिथि
२.३५१ अ।

युगकंधर—३.३७३ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२१ ब।

युगत—यदुवश १.३३७।

युगंधर—तीर्थंकर चंद्रप्रभ व पुष्पदन्त २.३७८।

युगपत—३.३७३ अ, केवलज्ञान २.१४६ ब।

युगप्रतिक्रमण—१.प्रति०/२ २, ८।

युगमंधर—तीर्थंकर २.३६२।

युगल अष्टक—उदय १.३७४ ब।

युगलविरोधी धर्म—अनेकान्त १.१०६ अ।

युगादि पुरुष—३.३७३ अ, कुलकर २.१३० ब।

युग्म—३.३७३ अ, अनुयोगद्वार (पद) १.१०२ ब।

युतसिद्ध—३.३७३ अ।

युति—३.३७३ ब।

युधिष्ठिर—३.३७३ ब, कुरुवंश १.३३६ अ।

युवती—३.३७३ ब, चक्रवर्ती ४.१३ अ, स्त्री ४.६५० अ।

युवेनच्चांग—३.३७३ ब।

यूक—३.३७३ ब।

यूनान—३.३७३ ब।

यूपकेशरी—लवणसागर का पाताल—निर्देश ३.४७४ ब,
विस्तार ३.४७८, अंकन ३.४६१, चित्र ३.४६२ अ।

योग—३.३७३ ब। निर्देश ३.३७६ ब, ३.३७७ अ,
अविभाग प्रतिच्छेद १.२०३ अ, ३.२८७ अ-ब,
अविभाग प्रतिच्छेदो का अल्पबहुत्व १.१६२, आयु-
बंध १.२६३ ब, आस्रव १.२८२ अ, औदारिक शरीर
१.४७२, करण-त्रिक (अनिवृत्तिकरण) २.१३ ब,
कायक्लेश २.४७ ब। केवली २.१६४ ब, गुणस्थान
२.२४६ अ, ध्यान १.४६६ अ, प्रत्यय ३.१२६ अ,
प्रदेशबन्ध ३.१३५ ब, प्राणायाम ३.१५४ ब, बंध
४.१७५ अ, ३.१७८ ब, मोक्षमार्ग ३.३३७ अ,

लेख्या ३४२४ ब। शरीर स्वामित्व ४.७, षट्कर्म-
स्वामित्व ४ २६६।

योग (प्ररूपणा)—बध ३.१०४, बंधस्थान ३ ११३, उदय
१ ३७६, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ,
उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान
४ २६६, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत्
४.२११, स्वामित्व सत्त्व ३ ३७६, सख्या ४ १०२,
क्षेत्र २ २०२, स्पर्शन ४.४८५, काल २.१०८, अतर
१ ४ अ, १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४७,
पचशरीरस्वामित्व अल्पबहुत्व १ १५६ ब।

योग (उपयोग)—उपयोग १ ४३२ ब, अशुभोपयोग
१.४३३ ब, शुद्धोपयोग १ ४३१ अ।

योगचंद्र—३ ३८३ ब, इतिहास १ ३३१ ब।

योगत्यागक्रिया—संस्कार ४ १५२ अ।

योगदर्शन—३ ३८४ अ, दर्शन २.४०३ अ।

योगदेव—इतिहास १ ३३३ अ-ब, १ ३४७ अ।

योगद्वार—आस्रव १ २८३ अ।

योगनिग्रह—गुप्ति २ २४८ अ।

योगनिद्रा—निद्रा २ ६१० अ, सम्यग्दृष्टि ४ ३७८ अ।

योगनिरोध—३ ३८५ ब, ध्यान २ ४६६ ब, योग ३ ३८८
ब।

योगनिर्वाणसंप्राप्तिक्रिया—संस्कार ४ १५१ ब।

योगनिर्वाणसाधनक्रिया—संस्कार ४ १५१ ब।

योगपरिवर्तन—काल २ ६५ ब, शुक्लध्यान ४ ३३ अ,
संक्रांति ४ ६१ अ।

योगप्रत्यय—उदय ३ १२७।

योगमत—एकांत १ ८६५ ब।

योगमार्ग—३ ३८५ ब, इतिहास १ ३४२ ब।

योगमार्गणा—दे० योग (प्ररूपणा)।

योगमुद्रा—मुद्रा ३ ३१३ ब।

योगवक्रता—३ ३८५ ब।

योगवर्गणा—योग (अविभाग प्रतिच्छेद) ३ ३८३ अ,
अविभाग प्रतिच्छेदो का अल्पबहुत्व १ १६२, जीव-
प्रदेशो का अल्पबहुत्व १.१७६, कर्मप्रदेशो का
अल्पबहुत्व १ १७६।

योगवार्तिक—योगदर्शन ३ ३८४ अ।

योगशल्य—भावि शलाकापुरुष ४ २६ ब।

योगशास्त्र—३ ३८६ अ, इतिहास १.३४४ अ।

योगसंक्रमण—शुक्लध्यान ४.३३ अ-ब।

योगसंक्रांति—शुक्लध्यान ४.३७ ब, संक्रांति ४.६१ अ।

योगसम्ग्रह क्रिया—संस्कार ४.१५२ अ।

योगसार—३.३८६ अ, प्रथम (योगेद्र कृत) इतिहास
१ ३४१ अ, द्वितीय (अमितगति कृत) इतिहास
१.३४२ ब। तृतीय—इतिहास १ ३४६ ब।

योगसूत्र—योगदर्शन ३ ३८४ अ।

योगस्थान—निर्देश—३ ३८१ अ, अविभाग प्रतिच्छेद
१.१६२, ३.३८३ ब, अवस्थानकाल २ १२१, योग
३.३८३ ब, स्थान ४ ४५२ ब। प्ररूपणा—सत्,
(इन्द्रिय मार्गणा पूरी) १.१६०-१६४, संख्या ४.११६
ब, अल्पबहुत्व १ १६१ ब, १ १७६, भागाभाग
४.११६ ब, स्वामित्व (इन्द्रिय मार्गणा पूरी) ३ ३८२
ब।

योगस्पर्धक—योग ३.३८३ ब।

योगाचार—बौद्धदर्शन ३.१८७।

योगाविभाग-प्रतिच्छेद—योग ३.३८३ अ-ब, अल्पबहुत्व
१ १६२ ब।

योगिभक्ति—भक्ति ३.१६८ अ, इतिहास १.३४० ब।

योगी—३ ३८६ अ, जीव २ ३३३ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७६
ब, सुख ४.४३३ ब, स्नातक ४ ४७१ अ।

योगेद्र देव—३ ३८६ अ, इतिहास १ ३२६ अ, १.३४१
अ।

योग्य क्षेत्र—कृतिकर्म २.१३५ ब।

योग्यता—३ ३८६ ब, कारण—(परिणमन) २.६१ अ,
(शक्ति) २.५६ अ, २ ६१ अ।

योग्य पात्र—उपदेश १.४२५ ब, पात्र (दान) ३.५२ अ,
व्रत ३ ६२५ ब।

योग्य मुद्रा—कृतिकर्म २ १३४ ब।

योजन—३.३८६ ब, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ अ-ब।

योजना—योग ३.३७६ अ।

योध—राक्षसवंश १ ३३८ अ।

योनि—३.३८६ ब, परतत्रवाद ३ १२ अ, वेदभाव ३.५८६
अ।

योनिभूत स्थान—जन्म २ ३१२ ब।

योनिमति तिर्यंच—३.३८८ अ, तिर्यंच २.३६७, वेद
३.५८५ ब। प्ररूपणा—बध ३ १०१, बधस्थान
३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदी-
रणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व
४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग
१ ४०६ ब। सत् १ २७५, सख्या ४ ६५, क्षेत्र
२ १६८, स्पर्शन ४.४८०, काल २.१०६, अतर १.८,
भाव ३.२२०. अ, अल्पबहुत्व १ १४४।

योषा—स्त्री ४ ४५० अ।

योग — ३.३८८ अ ।

योगराज्य क्रिया — मस्कार ४.१५२ अ ।

र

र — रज्जू की सहनानी २.२१६ ब ।

रङ्ग — ३.३८८ अ, इतिहास १.३३२ ब, १.३४५ ब ।

रक्कस — ३.३८८ अ ।

रक्त — आहारानराय १.२६ अ, औदारिक शरीर १.४७१ ब, १.४७२ अ ।

रक्तकबला — ३.३८८ अ । पाङ्कवन की शिला — निर्देश ३.४५० ब, विस्तार ३.४८४, अकन ३.४५०, वर्ण ३.४७७ ।

रक्तनिभ — ग्रह २.२७४ अ ।

रक्तवती — शिखरी पर्वत का कूट तथा देवी — निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने ।

रक्तशिला — ३.३८८ अ । पाङ्कवन की शिला — निर्देश ३.४५० ब, विस्तार ३.४८४, अकन ३.४५० ब, वर्ण ३.४७७ ।

रक्ता (कुंड) — ३.३८८ अ, रक्ता नदी का कुंड तथा उसकी देवी — निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४६०, अकन ३.४४७ । इस कुंड में स्थित द्वीप तथा कूट — निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३.४८४, अकन ३.४४७, वर्ण ३.४७७ ।

रक्ता (कूट) — ३.३८८ अ, शिखरी पर्वत का कूट तथा देवी — निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने ।

रक्ता (देवी) — ३.३८८ अ, रक्ताकूटवासिनी ३.४७२ ब, रक्ताकुंडवासिनी ३.४५५ अ ।

रक्ता (नदी) — ३.३८८ अ, निर्देश ३.४५५ अ, ३.४६० अ, विस्तार ३.४८६-४६०, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, जल का वर्ण ३.४७८ ।

रक्तोदा (कुंड) — ३.३८८ अ, रक्तोदा नदी का कुंड — निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४६०, अकन ३.४४७ । इस कुंड का द्वीप तथा कूट — निर्देश ३.४५६ अ । विस्तार ३.४८४, अकन ३.४४७, वर्ण ३.४७७ ।

रक्तोदा (कूट) — ३.३८८ अ, शिखरी पर्वत का कूट तथा देवी — निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४ । रक्तोदा कुंड में स्थित कूट — निर्देश ३.४५६ अ । विस्तार ३.४८४, अकन ३.४४७, वर्ण ३.४७७ ।

रक्तोदा (देवी) — ३.३८८ अ, रक्तोदा कुंड तथा कूटवासिनी ३.४५६ अ, ३.४७२ ब ।

रक्तोदा (नदी) — ३.३८८ अ । ऐरावत तथा विदेहक्षेत्रों की — निर्देश ३.४५५ अ, ३.४६० अ, विस्तार ३.४८६, ३.४६०, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, जल का वर्ण ३.४७८ ।

रक्तोष्ठ — विद्याधरवश १.३३६ अ ।

रक्षा — अहिंसा १.२१६ ब, १.२१७ ब, शरीर ४.८ अ ।

रक्षावधन व्रत — ३.३८८ अ ।

रक्षिता — तीर्थंकर मल्लिनाथ २.३८० ।

रघु — ३.३८८ अ, इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ, रघुवश १.३३८ अ ।

रघु (कवि) — इतिहास १.३३४ ब ।

रघुनाथ — ३.३८८ ब ।

रघुवंश — इतिहास १.३३८ अ ।

रज — ३.३८८ ब ।

रजत — ३.३८८ ब । कुडलवर पर्वत का कूट — निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६७ । मानुषोत्तर पर्वत का कूट — निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अकन ३.४६४ । माल्यवान गजदत्त का कूट — निर्देश ३.४७३ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४, ३.४५७ । रुचकवर पर्वत का कूट — निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६८ । सुमेरु के वन का कूट — निर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४५१ ।

रजतप्रभ — कुडलवर पर्वत का कूट — निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६७ ।

रजताभ — कुडलवर पर्वत का कूट — निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६७ ।

रजस्वला स्त्री — भिक्षा ३.२३२ अ, सूतक ४.४४३ अ ।

रजोहरण — षष्ठ्याबर ४.७६ ब ।

रज्जू — ३.३८८ ब, औदारिक शरीर १.४७२ अ, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ ब, गणित २.२१८ ब, लोक का आयाम ३.३४३ ब, सहनानी २.२१६ ब ।

रज्जू^२ — रज्जूप्रतर की सहनानी २.२१६ ब ।

रज्जू^३ — रज्जूचन की सहनानी २.२१६ ब ।

रज्जूधन—तहतानी २२१६ ब।

रज्जूप्रतर—तहतानी २२१६ ब।

रति—३३८८ ब, उपदेश १.४२४ अ। कपाय २.३५ ब, २३६ अ, चैत्य-चैत्यालय (मूर्ति) २३०३ ब, मुख ४.४३० ब, हिंसा ४.५३३ ब।

रतिकर—३३८८ ब, नदीश्वर द्वीप का पर्वत—निर्देश ३४६६ अ, विस्तार ३४८७, अकन, ३४६५, वर्ण ३.४७८।

रतिकूट—३३८६ अ, विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

रति-प्रकृति—३३८८ ब, प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४१, स्थिति ३४४६, अनुभाग १६४ ब, प्रदेश ३१३६। बंध ३६४ ब, ३६६ ब, ३६७, बंध की कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१ ब, बंधस्थान ३१०६, उदय १३७५, उदयस्थान १.३८६, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४२६५, स्थितिसत्त्व स्थानों का अल्पबहुत्व ११६५ ब, त्रिसंयोगी भग १४०१ ब। सक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व ११६८।

रतिप्रिय—३३८६ अ, किन्नरजातीय व्यतरदेव २१२४ ब।

रतिप्रिया—व्यतरेद्र वल्लभिका ३६११ ब।

रतिवाक्—वचन ३४६७ ब।

रतिवेदनीय—मोहनीय ३३४४ ब।

रतिषेण—३३८६ अ, तीर्थकर सुमतिनाथ २.३७८।

रतिषेणा—तीर्थकर पद्मभग २३८८।

रतिसेना—व्यतरेद्र वल्लभिका ३६११ ब।

रत्न—३३८६ अ, कवि—इतिहास १.३३० ब, चक्रवर्ती ४१२ अ, ४१३ अ, नारायण ४१६ ब।

रत्नकंबल—श्वेतांबर ४८० अ।

रत्नकरडश्रावकाचार—३३८१ अ, इतिहास १३४० ब।

रत्नकीर्ति—३३८६ अ। प्रथम—नदिसंघ १.३२४ अ, काष्ठा सघ १३२७ ब। इतिहास—द्वितीय १३३२ ब। तृतीय १.३३३ ब, १.३४६ ब। चतुर्थ १३३४ ब।

रत्नकूट—३३८६ अ, मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३४७५ अ, विस्तार ३४८६, अकन ३४६४। रुचक-वर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६८।

रत्नगर्भ—यदुवश १.३३७।

रत्नचित्र—विद्याधरवश १.३३६ अ।

रत्नत्रय—३३८६ अ, मोक्षमार्ग ३३३५ ब, शुभोभयोग १४३४ ब।

रत्नत्रयकथा—३.३८६ अ।

रत्नत्रयचक्र यत्र—यत्र ३३५८।

रत्नत्रयविधान—३.३८६ अ।

रत्नत्रयविधान टीका—इतिहास १३४४ ब, आशावर १२८१ अ।

रत्नत्रयविधान यंत्र—यत्र ३.३५८।

रत्नत्रयव्रत—३.३८६ अ।

रत्नद्वीप—राक्षसवश १.३३८ अ।

रत्ननदि—३३८६ ब, नदिसंघ १.३२३ अ, इतिहास १३२८ ब, १३२६ अ।

रत्नपुर—तीर्थकर धर्मनाथ २.३७६, प्रतिनारायण ४२० ब, विद्याधर नगरी ३५४६ अ।

रत्नपुरी—३३८६ ब।

रत्नप्रभ—३३८६ ब। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६६। लोक-पाल ३४६१ ब।

रत्नप्रभा—३.३८६ ब। नरक पृथिवी—निर्देश २५७६ अ, पटल २५७६ ब, इद्रक श्रेणीबद्ध व प्रकीर्णक २५७८, २५७९, विस्तार २.५७६, २५७८, अकन ३४४१, चित्र ३३६०। नारकी—अवगाहना ११७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६३। प्ररूपणा—बध ३१००, बधस्थान ३११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १३६२ ब, उदीरणा १४११ अ, सत्त्व ४२८१, सत्त्वस्थान ४२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १४०६ ब। सत् ४.१६१, सध्या ४६५, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४.४७६, काल २१०१, अतर १.८, भाव ३२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४।

रत्नमाला—३.३६१ अ, हरिवंश १.३४० अ।

रत्नमाली—विद्याधरवश १.३३६ अ।

रत्नमुक्तावली व्रत—३.३६१ अ।

रत्नरथ—विद्याधरवश १३३६ अ।

रत्नराशि—स्वप्न ४.५०४ ब, ४.५०५ अ।

रत्नवज्र—विद्याधरवश १.३३६ अ।

रत्नवती—यदुवश १.३३७।

रत्नवृष्टि—कल्याणक २.३२ ब।

रत्नशैल—रत्नप्रभा ३.३६१ अ।

रत्नश्रवा—३.३६१ अ, राक्षसवश १३३८ ब।

रत्नसंचय—३३६१ अ, तीर्थकर अभिनंदननाथ २.३७८ विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

रत्नसचया—विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६—३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।

रत्ना—चमरेद्र की अप्रदेवी ३.२०६ अ।

रत्नाकर—३.३६१ अ, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ।

रत्नाकर वर्णी (कवि)—इतिहास १.३३३ ब, १.३४७ अ।

रत्नाढ्या—व्यंतेरेद्र की वल्लभिका ३.६११ ब।

रत्नावतमिका—नागयण ४.१८ अ।

रत्नावली व्रत—३.३६१ अ।

रत्नि—३.३६१ ब।

रत्नोच्चय—३.३६१ ब। रुक्मवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६६, सुमेरु पर्वत का नाम ४.४३७ अ।

रत्नोपचय—३.३६१ ब।

रथ—३.३६१ ब।

रथनूपुर—३.३६१ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

रथपुर—३.३६१ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

रथरेणु—३.३६१ ब, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ अ।

रथवीपुर—श्वेतावर ४.८० अ।

रमणीया—३.३६१ ब। नदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३ अ, नामनिर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४६१, अकन ३.४६५। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।

रम्यक—शुक्रेद्र का यान ४.५११ ब।

रम्यक कूट—३.३६१ ब, रुक्मि पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४। वक्षारगिरि का कूट ३.४७२ ब।

रम्यक क्षेत्र—३.३६१ ब। महाक्षेत्र—निर्देश ३.४४६ अ, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने। भोगभूमि—निर्देश ३.२३५ ब, अवगाहना १.१८०, आयु १.२६३, १.२६४, काल विभाग २.६२ ब, चातुर्वर्षिक भूगोल ३.४३७ ब, वैदिकाभिमत ३.४३१ ब, सुषमाकाल २.६३। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।

रम्यक देव—३.३६१ ब, रुक्मि पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७२ ब, अकन ३.४४४। वक्षारगिरि के कूट का देव ३.४७२ ब।

रम्यकविजय—काल २.६२ ब।

रम्यका—३.३६१ ब।

रम्यपुर—३.३६२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

रम्या—३.३६२ अ। नदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३ अ, नामनिर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४६१, अकन ३.४६५। मनुष्यलोक ३.२७५ ब। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।

रयणसार—३.३६२ अ, इतिहास १.३४० ब।

रयसकात देव—३.३६२ अ।

रवि—राक्षसवश १.३३८ अ, विद्याधर वश १.३३६ अ, हरिवश १.३४० अ।

रविघोष—कुरुवश १.३३६ अ।

रविचद्र—देगीवगण १.३२४ ब, इतिहास १.३३२ अ, १.३४४ ब।

रवितेज—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ।

रविनिदि—३.३६२ अ।

रविप्रभ—वानरवश १.३३८ ब।

रविभद्र—३.३६२ अ इतिहास १.३३० ब।

रविमन्यु—इक्ष्वाकुवश १.३३५ ब।

रविवयकहा—इतिहास १.३३२ ब, १.३४६ अ।

रविवार व्रत—३.३६२ अ।

रविषेण—३.३६२ अ, सेनसब १.३२६ अ, इतिहास १.३२६ ब, १.३४१ ब।

रवेस्था—मनुष्यलोक (नदी) ३.२७५ ब।

रश्मिदेव—३.३६२ अ।

रश्मिवेग—३.३६२ अ।

रस—३.३६२ अ, ईर्यायथ कर्म १.३४६ अ, आहारांतराय १.२८ ब, पूजा ३.७८ ब।

रस-ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५५ ब।

रसकर्म—मत्र ३.२४५ ब।

रस कषाय कषाय २.३५ ब।

रसकूट—३.३६२ अ, शिखरी पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७२, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४ के सामने।

रसज—जीव २.३३४ अ।

रसदेवी ३.३६३ अ, शिखरी पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३.४७२ ब, अकन ३.४४४ के सामने।

रसना इन्द्रिय—३.३६३ अ, आहारांतराय १.२८ ब, इन्द्रिय १.३०२ अ, इन्द्रिय की अवगाहना का अल्पबहुत्व १.१५७, इसके प्रदेशों का अल्पबहुत्व १.१५७।

प्रधानता ४.१३६ अ ।

रसना ज्ञान—कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६० ब ।

रस निरपेक्ष—आहार १.२८८ अ ।

रस-परित्याग—३.३६३ अ ।

रसमान—प्रमाण ३.१४५ अ ।

रसा—व्यतरेद्र गणिका ३.६११ ब ।

रसायन—मत्र ३.२४५ ब ।

रहस्य—३.३६३ ब ।

रहस्यपूर्ण चिट्ठी—३.३६३ ब, इतिहास १.३४८ अ ।

रहोभ्याख्यान—३.३६३ ब ।

राई—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ अ-ब ।

राक्षस—३.३६३ ब, राक्षसवंश १.३३८ अ ।

राक्षस(देव)—३.३६३ ब, पिशाच जातीय व्यतर देव - निर्देश ३.५८ ब, नामनिर्देश ३.६१० ब, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६४ ब । बौद्धाभिमत ३.४३४ ब । इंद्र—निर्देश ३.६११ अ, शक्ति आदि ३.६१०-६११, वर्ण व चैत्यवृक्ष ३.६११ अ, अवस्थान ३.४७१, ३.६१२-६१४ ।

राक्षस (देव)—प्ररूपणा—बध ३.१०२, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१८८, संख्या ४.६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अतर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

राक्षस द्वीप—राक्षसवंश १.३३८ अ ।

राक्षस-राक्षस—३.३६३ ब ।

राक्षसवंश—इतिहास १.३३८ अ, विद्याधर वंश १.३३६ अ ।

राक्षसी विद्या—राक्षसवंश १.३३८ अ ।

राग—३.३६३ ब । अपराध (विभाव) ३.५५८ ब, अभिलाषा १.६५ अ, १.६६ अ, आकाक्षा १.६५ ब, १.६६ अ, आकाशवत् अन्त १.२२४ ब, उपयोग १.४३२ अ-४३३ ब । कषाय २.३६ अ, पौद्गलिक (मूर्त) ३.३१८ ब, बध ३.१७५ अ, मूर्त ३.३१८ ब, विभाव ३.५५८ ब, ३.५५६ अ, ३.५६० अ, ३.५६२ अ, सत्त्व ४.५२८, हिंसा १.२१६ अ, १.२१७ ब, ४.५३२ अ ।

राग-परिहार—चाग्रि २.२८४ अ, त्याग २.३६६ ब, राग ३.३६७ अ, सामायिक ४.४१६ ब, ४.४१६ अ ।

राग-प्रत्यय—प्रत्यय ३.१२६ अ ।

राग लोकेषणा—अनाकाक्ष अनशन १.६६ अ, उपदेश १.४२४ ब, तप २.३५८ ब, २.३६० अ, धर्म २.२७५ अ, ध्याता २.४६३ अ, राग ३.३६६ ब, ३.३६७ अ, वाद ३.५३३ अ, विनय ३.५५२ ब । विवेक ३.५६६ अ, सल्लेखना ४.३८३ अ, साधु ४.५०५ अ, स्वाध्याय ४.५२३ ।

रागांश - उपयोग १.४३२ अ ।

राघव—हरिदेव ४.५३० अ ।

राजकथा—कथा २.३ ब ।

राजगृह—तीर्थकर मुनिसुव्रत २.३७६, प्रतिनारायण ४.२० ब । मगध देश इतिहास १.३१० ब ।

राजधानी—३.४०० अ, चक्रवर्ती ४.१६ अ, भरत, ऐरावत तथा विदेह क्षेत्रों की प्रधान नगरियाँ—निर्देश ३.४४६ अ, ३.४६० अ, गणना ३.४४५ अ, अंकन ३.४४४, ३.४४७, ३.४६० अ ।

राजापड—भिक्षा ३.२३३ अ ।

राजपुर—चक्रवर्ती ४.१० ब ।

राजभय—आहारातराय १.२६ ब ।

राजमती—तीर्थकर नेमिनाथ २.३८८ ।

राजमती विप्रलभ—३.४०० अ, आशाधर १.२८१ अ, इतिहास १.३४४ ब ।

राजमल्ल—३.४०० अ, इतिहास १.३३३ ब, १.३४७ अ ।

राजमल्ल सत्यवाक्य—३.४०० ब ।

राजर्षि ऋषि १.४५७ ब ।

राजवलिकथे—३.४०० अ ।

राजवल्लभ नौकर—निदा (साधु) २.५८६ अ ।

राजवार्तिक—३.४०० ब, अकलक १.३१ अ, इतिहास १.३४१ ब ।

राजशेखर—३.४०० ब ।

राजसदान—दान २.४२३ अ ।

राजसिंह—३.४०० ब, प्रतिनारायण ४.२० ब ।

राजसेना—श्रेणी ४.७२ अ ।

राजसेवा—निदा (साधु) २.५८६ अ, साधु ४.५०८ अ ।

राजा—३.४०० ब ।

राजादित्य—इतिहास १.३३१ ब ।

राजीमती—३.४०१ अ ।

राजुलमती—भोजवश १.३३६ ब ।

राजू—३.४०१ अ, (रज्जू) ३.३८८ ब, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ ब, गणित २.२१८ ब, लोक का आयाम ३.४३८ ब, सहनानी २.२१६ ब ।

राज्य—३.४०१ अ ।

राजेंद्रकीर्ति—काष्ठासंघ १.३२७ अ ।

राज्य—३.४०१ अ । रुक्मवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६८ ।

राज्यकाल—जगतुंग २.३१० अ ।

राज्यवंश—३.४०१ अ, इतिहास १.३१० अ, १.३३५ अ ।

राज्यसेवक—निदा (स्वच्छंद साधु) २.५८६ अ, साधु ४.४०८ अ ।

राज्यातिक्रम—अस्तेय व्रत १.२१३ ब ।

राज्योत्तम—३.४०१ अ, रुक्मवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६८ ।

रात्रि—३.४०१ अ, अपवाद मार्ग १.१२२ अ, पूजा ३.८० ब, सूर्य की गति से उत्पत्ति २.३५१, सम्यग्दृष्टि ४.३७८ अ ।

रात्रिक आलोचना—आलोचना १.२७६ ब ।

रात्रिक पूजा—पूजा ३.८० ब ।

रात्रिक प्रतिक्रमण—कृतिकर्म २.१३७ ब, प्रतिक्रमण ३.११६ अ, व्युत्सर्ग ३.६२१ अ ।

रात्रिभुक्तित्याग—रात्रिभोजन ३.४०३ अ, व्रत ३.६२७ ब । श्रावक ४.५० ब, हिंसा ४.५३२ ब ।

रात्रिभोजन—३.४०१ अ, जल-गालन २.३२६ अ, व्रत ३.६२७ ब, श्रावक ४.५० ब, हिंसा ४.५३२ ब ।

रात्रिभोजनत्यागव्रत कथा—इतिहास १.३४६ ब ।

रात्रियोग—कृतिकर्म २.१३७ ब ।

रात्रिवचनालाप—अपवाद मार्ग १.१२२ अ ।

राघ—३.४०३ ब, आराधना १.२७१ अ ।

राम—३.४०३ ब, अग्निप्रभदेव १.३६ ब, चक्रवर्ती ४.१६ अ, रघुवंश १.३५८ अ, हरिदेव ४.५३० अ ।

रामकथा—३.४०३ ब, इतिहास १.३४१ अ ।

रामकीर्ति—नंदिसंघ १.३२३ ब ।

रामगिरि—३.४०३ ब ।

रामचंद्र—३.४०३ ब, काष्ठासंघ १.३२७ अ, नंदिसंघ १.३२३ ब ।

रामचंद्र त्रैविद्य—३.४०३ ब, इतिहास १.३३२ अ । देशीयगण १.३२५ अ ।

रामचंद्र मुमुक्षु—इतिहास १.३३२ ब, १.३४५ अ ।

रामचरित्र—इतिहास १.३४५ ब ।

रामदत्ता—३.४०३ ब ।

रामनंदि—३.४०३ ब, देशीयगण १.३२५ ।

रामपुत्र—३.४०३ ब, अंतकृत केवली १.२ ब ।

रामपुराण—इतिहास १.३३३ ब, १.३४७ ब ।

राम-बलदेव—तीर्थंकर २.३६१ ।

रामल्य—श्वेतावर ४.७७ अ, ४.७८ अ, इतिहास १.३२८ अ, स्थूलभद्र ४.४७१ अ ।

रामसेन—३.४०४ अ, काष्ठा संघ १.३२७ अ, मायुर संघ १.३२७ ब, इतिहास १.३३१ अ, १.३४३ ब ।

रामा—वैमानिक उत्तरेद्रो की ज्येष्ठा देवी ४.५१४ अ, तीर्थंकर सुविधिनाथ २.३८० ।

रामानंदी—वैष्णव दर्शन ३.६०६ अ ।

रामानुज वेदांत—३.४०४ अ, वेदांत ३.५६७ ब ।

रामापति—वैमानिक उत्तरेद्रो की ज्येष्ठा देवी ४.५१३ ब ।

रामायण (जैन)—इतिहास १.३३२ ब ।

रायचंद—३.४०४ अ ।

रायमल—३.४०४ अ, इतिहास—अनंतकीर्ति के शिष्य १.३३३ ब, प. टोडरमल के अन्तेवासी १.३३४ ब, सकलचंद्र भट्टारक के शिष्य १.३३४ अ । इतिहास १.३४७ ब ।

रायमल्लाम्युदय—इतिहास १.३४७ अ ।

रावण—३.४०४ अ, तीर्थंकर प्ररूपणा २.३६१, प्रति-नारायण ४.२०, राक्षसवंश १.३३८ अ ।

रावणभाष्य—वैशेषिक दर्शन ३.६०७ ब ।

राशि—३.४०४ अ ।

राष्ट्रकूट—अकालवर्ष १.३१ अ ।

राष्ट्रकूटवंश—इतिहास १.३१५ अ ।

रासभ—३.४०४ अ ।

राह—ज्योतिष ग्रह—निर्देश २.३४८ अ, आकार व चित्र २.३४७ । विस्तार २.३५१ ब, इद्र २.३४५ ब, चंद्रग्रहण २.३५१ अ ।

रिक्कु—३.४०४ अ ।

रिटठणेमिचरिउ—३.४०४ अ, इतिहास १.३४१ ब ।

रिण—३.४०४ अ ।

रिणराशि—३.४०४ अ ।

रिपुदम—तीर्थंकर संभवनाथ २.३७८ ।

रिष्टकसंभवा—३.४०४ अ, आकाशोपपन्न देव २.४४५ ब ।

रिष्टसमुच्चय—इतिहास १.३४३ ब ।

रिष्टा—विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६-४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ ।

रुक्मण—कुरुवंश १.३३६ अ ।

रुक्मपात्रांकित—तीर्थमंडल यंत्र ३.३५६, वज्रमंडल यंत्र ३.३५६, वरुणमंडल यंत्र ३.३५६ ।

रुक्मि (कूट)—३४०४ ब, पुंडरीक या महापुंडरीक हृद का कूट—निर्देश ३४७४ अ, विस्तार ३४८३, ३४८५, ३४८६। रुक्मि पर्वत का कूट—निर्देश ३४७२ ब, विस्तार ३४८३, ३४८५, ३४८६, अंकन ३४४४ के सामने।

रुक्मि (पर्वत)—३४०४ ब, वर्षधर पर्वत—निर्देश ३४४६ ब, विस्तार ३४८२, ३४८५, ३४८६, अंकन ३४४४ के सामने, ३४६४ के सामने, वर्ण ३४७७।

रुक्मिणी—३४०४ ब, नारायण ४१८ ब।

रुक्मिणी व्रत—३४०४ अ।

रुचक—३४०४ ब। कुंडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३४७५ ब, विस्तार ३४८७, अंकन ३४६७। निषध पर्वत का कूट—निर्देश ३४७२ अ, विस्तार ३४८३, अंकन ३४४४। पद्म आदि हृदों के कूट—निर्देश ३४७४ अ, विस्तार ३४८३, अंकन ३४५४। मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३४७५ अ, विस्तार ३४८६, अंकन ३४६४। रुचक पर्वत का कूट—निर्देश ३४७६ अ, विस्तार ३४८७, अंकन ३४६८, ३४६९। सुमेरु के वन का कूट—निर्देश ३४७३ ब, विस्तार ३४८३, अंकन ३४५१।

रुचक (स्वर्ग)—३४०४ ब। सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४५१६, विस्तार ४५१६, अंकन ४५१६ ब, देव आयु १२६६।

रुचकांता—३४०४ ब। रुचक पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३४७६ ब, अंकन ३४६८।

रुचकाभा—कुंडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३४७५ ब, विस्तार ३४८७, अंकन ३४६७।

रुचककीर्ति—३४०४ ब, रुचकवर पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३४७६ ब, अंकन ३४६८।

रुचकगिरि—३४०४ ब। विशेष दे. रुचकवर पर्वत।

रुचकप्रदेश—जीव के आठ मध्यप्रदेश २३३९ अ। लोकाकाश के आठ मध्यप्रदेश ३४४० ब।

रुचकप्रभ—कुंडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३४७५, ब विस्तार ३४८७, अंकन ३४६७।

रुचकप्रभा—३४०४ ब, रुचकवर पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३४७६ ब, अंकन ३४६८।

रुचकवर—३४०४ ब।

रुचकवर द्वीप—निर्देश ३४६६ ब, नामनिर्देश ३४७० अ, विस्तार ३४७८, अंकन ३४४३। चित्र ३४६८ ब, ३४६९, ज्योतिष चक्र २३४८ ब, अधिपति देव ३६१४।

रुचकवर पर्वत—चैत्यचैत्यालय २३०३ अ, रुचकवर द्वीप का कुडलाकार पर्वत—निर्देश ३४६६ ब, विस्तार ३४८७, चित्र ३४६८, ३४६९, वर्ण ३४७८, कूट तथा देव ३४७६, कूटों का विस्तार ३४८७।

रुचकवर सागर—निर्देश ३४७० अ, विस्तार ३४७८, अंकन ३४४३, जल का रस ३४७० अ, ज्योतिष-चक्र २३४८ ब, अधिपति देव ३६१४।

रुचका—३४०४ ब, रुचकवर पर्वत की देवी—निर्देश ३४७६ ब, अंकन ३४६८, ३४६९।

रुचकांता—रुचकवर पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३४७६ ब, अंकन ३४६९।

रुचकाभा—३४०४ ब, रुचकवर पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३४७६ ब, अंकन ३४६९।

रुचकी—३४०४ ब।

रुचकोत्तम—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३४७६ ब, विस्तार ३४८७, अंकन ३४६९।

रुचकोत्तमा—रुचकवर पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३४७६ ब, अंकन ३४६९।

रुचकोत्तर—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३४७६ अ, विस्तार ३४८७ अंकन ३४६९।

रुचि—३४०४ ब, उपदेश १४२५ अ, १४२६ ब, मोहनीय ३३४२ ब, राग ३३६५ ब, श्रद्धान ४४४ अ, सम्यग्दर्शन ४३४८ ब, ४३५० ब, ४३५७ अ, सुख ४४३० ब।

रुचिर—४४०४ ब। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३४७६ अ, विस्तार ३४८७, अंकन ३४६९। स्वर्ग पटल—निर्देश ४५१६, विस्तार ४५१६, अंकन ४५१६ ब, देव आयु १२६६।

रुजा—३४०५ अ।

रुद्र—३४०५ अ, जन्म (गति-अगति) २३२१ ब, ग्रह २२७४ अ, नक्षत्र २५०४ ब, नारद ४२१ अ, ४२२ अ।

रुद्रदत्त—३४०५ अ, अन्धकवृष्णि १३० अ।

रुद्ररुद्र—तीर्थकर पुष्पदंत २३९१।

रुद्रवती—व्यंतरेंद्र की गणिका ३६११ ब।

रुद्रवसंत व्रत—३४०५ अ।

रुद्रसंप्रवाय—वैष्णव दर्शन ३६०९ अ।

रुद्रसेन—काष्ठा संघ १३२७ अ।

रुद्रा—व्यंतरेंद्र की गणिका ३६११ ब।

रुद्राश्व—३४०५ अ, विद्याधर नगरी ३५४५ ब।

रुद्रिल—सांख्य दर्शन ४३९८ ब।

रुधिर—३४०५ अ, अर्हत भगवान १.१३७ ब, आहारातराय १.२६ अ, औदारिक शरीर १.४७१ व, १.४७२ अ। स्वर्ग पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अंकन ४.५१६ ब, देव आयु १.२६६।

रुक्षत्वस्कंध—४४४८ अ।

रुक्षगुग्गुल—स्कंध ४४४८ अ।

रुक्षाणु—ईर्यापथ कर्म १.३५० अ।

रुद्ध संख्या—३४०५ अ।

रुद्धि—कर्ताकर्म २.२२ अ, नय २.५३६ ब, २.५६३ अ।

रूप—३४०५ अ, गुण २.२४० अ।

रूपगता चूलिका—३.४०५ अ, श्रुतज्ञान ४.६६ अ।

रूपचंब पांडेय—३.४०५ अ, १.३३४ अ-ब, १.३४७ ब।

रूपनिभ—३.४०५ ब, ग्रह २.२७४ अ।

रूपपाली—३४०५ ब, किन्नर जातीय व्यंतर देव २.१२४ ब।

रूपमद—मद ३.२५६ ब।

रूपरेखा—३४०५ ब।

रूपवती—व्यतरेद्र वल्लभिका ३.६११ ब।

रूपसत्य—सत्य ४.२७१ ब।

रूपस्थ ध्यान—३४०५ ब।

रूपातीत ध्यान—३४०६ ब।

रूपानुपात—३.४०६ ब।

रूपाधिक भागाहार—अनुयोगद्वारा १.१०२ ब।

रूपिणी—नारायण ४.१८ ब।

रूपी—अवधिज्ञान १.१६६ अ, मूर्त ३.३१६ अ।

रूपोन भागाहार—अनुयोगद्वारा १.१०२ ब।

रूप्य—रुक्मिपर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ के सामने।

रूप्यकूला (कुंड)—३.४०६ ब, रूप्यकूला नदी का कुंड—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४६०, अंकन ३.४५७। इस कुंड में स्थित द्वीप—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.४४७, वर्ण ३.४७७।

रूप्यकूला (कूट)—३.४०६ ब, रूप्यकूला कुंड का कूट—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.४४७। रुक्मिपर्वत का कूट—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ के सामने, वर्ण ३.४७७।

रूप्यकूला (देवी)—रूप्यकूला कुंड की देवी—निर्देश ३.४५५ अ, अंकन ३.४४७ रूप्यकूला कूट की देवी—निर्देश ३.४७२, अंकन ३.४४४ के सामने।

रूप्यकूला (नदी)—३.४०६ ब, हरण्यवत क्षेत्र की महानदी—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३.४८६,

३.४६०, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, जल का वर्ण ३.४७८।

रूप्यमाषफल—३४०५ ब, तेल का प्रमाण २.२१५ अ।

रूप्यवर—३.४०६ ब।

रूप्यवर द्वीप सागर—३.४०६ ब, नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अंकन ३.४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।

रेखा—३.४०६ ब।

रेचक—प्राणायाम ३.१५५ अ।

रेणुका—तीर्थकर चंद्रबाहु २.३६२।

रेवती—३.४०६ ब, तीर्थकर अनतनाथ-धर्मनाथ-अरनाथ २.३८०, नक्षत्र २.५०४ ब।

रेवा—३.४०६ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

रेशमी वस्त्र—वस्त्र ३.५३१ अ।

रैन मंजूषा—३.४०६ ब।

रैवत—तीर्थकर २.३७७, शिखरी पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ के सामने।

रैवतक—३.४०६ ब।

रोग—३.४०६ ब, परिवाह ३.३३ ब, ३.३४ अ।

रोगपरिषह—३.४०६ ब। ३.३३ ब, ३.३४ अ।

रोगराहित्य—अर्हतातिशय १.१३७ ब।

रोचक शैल—३.४०७ अ।

रोचन—दिग्गजेद्र पर्वत—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४ के सामने।

रोटतीज व्रत—३.४०७ अ।

रोध—आहारातराय १.२६ अ।

रोम—३.४०७ अ, औदारिक शरीर १.४७२ अ।

रोमज (वस्त्र)—वस्त्र ३.५३१ अ।

रोमश—३.४०७ अ, एकातवादी १.४६५ ब, क्रियावादी २.१७५ ब।

रोम शैल—यदुवंश १.३३७।

रोम समानता—अर्हतातिशय १.१३७ ब।

रोमहर्षिणी—३.४०७ अ, एकाती १.४६५ ब, वैनयिक ३.६०५ अ।

रोष—३.४०७ अ।

रोहिणी—३.४०७ अ, तीर्थकर अजितनाथ की यक्षिणी २.३७६, नक्षत्र २.५०४ ब, बलदेव ४.१७ ब, यदुवंश १.३३७, विद्या ३.५४४ अ, वैमानिक दक्षिणेद्र की वल्लभिका ४.५१३ ब, व्यंतरेंद्र वल्लभिका ३.६१४ ब।

रोहिणी व्रत—३४०७ अ ।

रोहित कुंड—३४०७ अ, रोहित नदी का कुंड—निर्देश ३४५५ अ, विस्तार ३४६०, अंकन ३४४७ ।
रोहित कुंड में स्थित द्वीप—निर्देश ३४५५ अ ।
विस्तार ३४८४, अंकन ३४४७, वर्ण ३४७७ ।

रोहित (कूट)—३४०७ अ, रोहित कुंड के द्वीप में स्थित कूट—निर्देश ३४५५ ब, विस्तार ३४८४, अंकन ३४४७, वर्ण ३४७७ । महाहिमवान् पर्वत का कूट—निर्देश ३४७२ अ, विस्तार ३४८३, अंकन ३४४४ ।

रोहित (देव)—३४०७ अ, रोहित कुंड की देवी—निर्देश ३४५५ अ, अंकन ३४४७ । महाहिमवान् के कूट की देवी—निर्देश ३४७२ अ, अंकन ४४४४ । लवण सागर के पर्वत का रक्षक देव ३४७४ ब ।

रोहित (नदी)—३४०७ अ, हैमवत क्षेत्र की महानदी—निर्देश ३४५५ अ, विस्तार ३४८६, ३४६०, अंकन ३४४४, ३४६४ के सामने, जल का वर्ण ३४७८ ।

रोहित पटल—स्वर्ग पटल—निर्देश ४५१६, विस्तार ४५१६, अंकन ४५१६ ब, देव आयु १२६६ ।

रोहितास्या कुंड—३४०७ अ, रोहितास्या नदी का कुंड निर्देश ३४५५ अ, विस्तार ३४८४, अंकन ३४४७ ।
रोहितास्या कुंड का द्वीप—निर्देश ३४५५ अ, विस्तार ३५८४, अंकन ३४४७, वर्ण ३४७७ ।

रोहितास्या कूट—३४०७ अ, रोहितास्या कुंड के द्वीप का कूट—निर्देश ३४५५ ब, विस्तार ३४८४, अंकन ३४४७, वर्ण ३४७७ । महाहिमवान् पर्वत का कूट—निर्देश ३४७२ अ, विस्तार ३४८३, अंकन ३४४४ के सामने ।

रोहितास्या देवी—३४०७ अ, रोहितास्या कुंड की देवी—निर्देश ३४५५ अ, अंकन ३४४७, रोहितास्या कूट की देवी—निर्देश ३४७२ अ, अंकन ३४४४ के सामने ।

रोहितास्या नदी—३४०७ अ, हैमवत क्षेत्र की महानदी—निर्देश ३४५५ अ, विस्तार ३४८६, ३४६०, अंकन ३४४४, ३४६४ के सामने, जल का वर्ण ३४७८ ।

रौद्र—३४०७ अ ।

रौद्र ध्यान—३४०७ अ, अशुभोपयोग १.४३३ ब, ध्यान २.४६७ अ, सम्पद्दृष्टि ४३७६ अ, सामायिक ४४१७ ब ।

रौद्रनाद—नारायण ४१८ ब ।

रौरव—३४०६ अ, नरक पटल—निर्देश २५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३, वैदिकाभिमत नरक ३४३२ ब ।

रौरव—३४०६ अ, नरक पटल—निर्देश २५७६ अ, विस्तार २.५७६ अ, अंकन ३४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

ह—पदस्थ ध्यान ३६ ब ।

ल

लंका—३४०६ अ, प्रतिनारायण ४२० अ-ब, राक्षसवश १.३३८ अ, विद्याधरवश १.३३६ अ ।

लका-शोक—राक्षसवश १.३३८ अ ।

लंघन—प्रोषधोपवास ३.१६६ ब ।

लंब-संक्षेत्र—३४०६ अ ।

लंबित—३४०६ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ ।

लंबिताधर—विद्याधरवश १.३३६ अ ।

ल०—लक्ष की सहनानी २.२१८ ब ।

ल० को०—लक्ष कोटि की सहनानी २.२१८ ब ।

लखण (कवि)—३४०६ अ, इतिहास १.३३२ अ ।

लखनवि—नदिसंध १.३२५ ।

लक्ष—सहनानी २.२१८ ब ।

लक्षकोटि—सहनानी २.२१८ ब ।

लक्षण—३४०६ अ, गुण २.२४० अ, प्रवृत्ति ३.१४६ अ ।

लक्षणनिमित्तज्ञान—निमित्तज्ञान २.६१३ अ, ऋद्धि १.४४८ ।

लक्षणपंक्ति व्रत—३४१० अ ।

लक्षणाभास—लक्षण ३.४०६ ब ।

लक्षपर्व—३४१० अ, विद्या ३.५४४ अ ।

लक्षावधि—साधु ४.४०८ अ ।

लक्ष्मण—३४१० अ, अग्निप्रभ देव १.३६ ब, तीर्थकर २.३६१, प्रतिनारायण ४.२० अ, रघुवश १.३३८ अ ।

लक्ष्मणदेव (कवि)—३.४१० अ, इतिहास १.३३२ ब ।

लक्ष्मणपुरी—३.४१० अ ।

लक्ष्मणसेन—३४१० अ। प्रथम—काष्ठासंघ १.३२७ अ, इतिहास १.३२६ अ। सेनसंघ १ ३२६ अ, इतिहास १ ३३३ अ।

लक्ष्मणा—तीर्थकर चन्द्रप्रभ २ ३८०।

लक्ष्मी—३.४१० अ, आनन्द का यान ४५११ ब, नारायण ४१८ ब, स्वप्न ४५०४ ब।

लक्ष्मीकूट—विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

लक्ष्मीचंद्र—३४१० अ। प्रथम—नदिसंघ १.३२३ ब, १ ३२४ अ, इतिहास १ ३३३ अ।

लक्ष्मीचंद्र (कवि)—इतिहास १ ३३३ अ, १ ३३४ ब।

लक्ष्मीदेवी—पुडरीक हृद की देवी—निर्देश ३४५३ ब, परिवार ३.६१२ अ, अंकन ३४४४ के सामने, भवन-वासी देवी—आयु १२६५, परिवार ३ ६१२ अ, भवन का विस्तार ३.६०६। रुचकवर पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३४७६ अ, अंकन ३४६८। शिखरी पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३४७२ ब, विस्तार ३४८३, अंकन ३४४४ के सामने।

लक्ष्मीमती—३४१० अ, तीर्थकर चन्द्रप्रभ २ ३८०।

लक्ष्मीवती—रुचकवर पर्वत के कूट की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३.४६६।

लक्ष्मीसेन—सेनसंघ १.३२६ अ।

लक्ष्य—३४१० अ।

लक्ष्य-लक्षण संबंध—४१२६ अ।

लक्ष्य-लक्षण समानाधिकरण—लक्षण ३४१० अ।

लगड शय्यासन तप—कायक्लेश २.४७ ब।

लक्ष्मि ऋद्धि—ऋद्धि १४४७, १.४५१ अ।

लघीयस्त्रय—३४१० ब, अकलंक १ ३१ अ, इतिहास १ ३४१ ब।

लघीयस्त्रयवृत्ति—अभयचंद्र १ १२७ अ।

लघु—३४१०, चूर्णि २.६३८।

लघुत्व गति—गति २ २३५ अ।

लघुभाषा—दिव्यध्वनि २४३२ अ।

लघु मासिक प्रायश्चित्त—प्रायश्चित्त १.४० ब।

लघुरिक्थ—३४१० ब, गणित २ २२५ अ।

लघुशंका—व्युत्सर्ग दोष ३ ६२१ अ।

लघु शतक चूर्णि—इतिहास १.३४१ अ।

लघु सर्वज्ञसिद्धि—३४१० ब, अनंतवीर्य १.६० अ, इतिहास १.३४२ अ।

लघुहृद—अकलंक भट्ट १.३१ अ।

लज्जा—विनय ३.५५३ ब।

लतांग—काल का प्रमाण २.२१६ अ, २ २१७ अ।

लता—अनुभाग १ ६१ ब, १.६३ ब, काल का प्रमाण २ २१६ अ, २ २१७ अ।

लतागृह—भवनवासी देवी के भवनो में ३.२१० अ।

लताभूमि—समवसरण ४.३३० ब।

लतावक्र—३४१० ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२१ ब।

लब्ध—३४१० ब।

लब्धराशि—३४१० ब।

लब्धाभिमान—हरिवंश १ ३४० अ।

लब्धि—३४१० ब, उपयोग १ ४२६ अ, १ ४३० अ-ब, उपशम १ ४३८ अ-ब, कारण (योग्यता) २ ५६ अ, छेदोपस्थापना २ ३०६ अ, विकल्प (निर्विकल्प) ३.५३८ अ, श्रुतज्ञान ४ ५६ ब, ४ ६२ ब।

लब्धि-अक्षर—अक्षर १.३२ ब।

लब्धिप्राप्त—वैक्रियिक ३ ६०३ ब।

लब्धिविधान व्रत—३४१५ अ।

लब्धिसंपन्न ऋषि—सम्यग्दर्शन का निमित्त ४ ३६४ ब।

लब्धिसंवेग संपन्नता—संवेग ४ १४४ अ-ब।

लब्धिसार—३.४१५ ब, इतिहास १ ३४३ अ।

लब्धिसार टीका—इतिहास १ ३४८ अ।

लब्धिस्थान—अल्पबहुत्व १ १६० अ, छेदोपस्थापना २ ३०६ अ, लब्धि ३ ४१४ अ, ३ ४१५ अ।

लब्ध्यक्षर—अक्षर १.३२ ब।

लब्ध्यक्षर ज्ञान—श्रुतज्ञान ४.६५ ब।

लब्ध्यपर्याप्त—आयु १.२६४, जीव २.३३३ ब, जीवसमास २.३४३, पर्याप्ति ३ ४२ अ, मनुष्य ३.२७३, योग-स्थान ३.३८३ अ, वेदभाव ३ ५८७ अ।

लय—मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब।

लयकर्म—कर्म २.२६ अ, निक्षेप २.५६८ अ।

लयभाजन—निदा (मिथ्या साधु) २.५८६ अ।

लरि०—लघुरिक्थ की सहनानी २.२२५।

ललितकीर्ति—३४१५ ब। प्रथम अनंतकीर्ति १ ५६ ब, इतिहास १ ३३२ अ। द्वितीय—काष्ठा संघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३३४ ब। तृतीय—नदिसंघ भट्टारक १ ३२३ ब।

ललितांग देव—३.४१५ ब।

लल्लक—३.४१५ ब, नरक पटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १ २६३।

लव—३.४१५ ब, काल का प्रमाण २ २१६ अ-ब, गणित २ २२३ ब, प्रतिबुद्धता ३.१६६ ब।

लवणतापि—३४१५ ब, देव (आकाशोपपन्न) २.४४५ ब।

लवणसागर—३.४१५ ब, निर्देश ३.४६० ब, नामनिर्देश ३.४७० अ, पर्वत तथा पाताल ३.४६२ अ, ३.४७४ ब, विस्तार ३.४७८, अंकन ३.४४३, ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६१, जल का रस ३.४८०, अधिपति देव ३.६१४। जीव—अन्तर्द्वीपज मनुष्य ३.३५८ अ, अवगाहना १.१७६, तिर्यंच २.३७० ब। वैदिकाभिमत—निर्देश ३.४३१ ब, अंकन ३.४३२।

लवणादेवी—सिंधु नदी के कूट की देवी ३.६१४, आयु १.२६५ ब।

लवणोदसिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३ अ।

लवपुर—३.४१५ ब।

लहू—अतराय (आहारातराय) १.२६ अ।

लांगल—३.४१५ ब। स्वर्ग पटल—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४.५१७, अंकन ४.५१५, देव आयु १.२६७।

लांगल स्नातिका—३.४१५ ब, मनुष्यलोक ३.३७६ अ।

लांगल चित्र—करणत्रिक २.६ अ।

लांगल रचना—करणत्रिक (अध.करण) २.८ ब, २.६ अ।

लांगलस्वस्तिका—३.४१५ ब।

लांगलावर्त—३.४१५ ब।

लांगलावर्त—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नाम-निर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४।

लांगलिका गति—विग्रह गांत ३.५४० ब।

लांतव (देव)—३.४१५ ब। निर्देश ४.५१० ब, अवगाहना १.१८१ अ, अवधिज्ञान १.१६८ ब, आयु १.२६७, आयु बध के योग्य परिणाम १.२५८ ब।

लांतव देव (प्ररूपणा)—बध ३.१०२, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगीभंग १.४०६ ब। सत् ४.१६२, सख्या ४.६८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२०, अल्पबहुत्व १.१४५।

लांतव स्वर्ग—निर्देश ४.५१८, पटल ४.५१८, इद्रक व श्रेणीबद्ध ४.५१८, ४.५२०, दक्षिण विभाग ४.५२१ अ, अवस्थान ४.५१४ ब, विस्तार ४.५१८, अंकन ४.५१५। नारायण ४.१८ ब।

लाक्षा वाणिज्य कर्म—सावध ४.४२१ ब। निर्देश ४.५१०

ब, दक्षिणेद्र ४.५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, अवस्थान ४.५२० ब, चिह्न आदि ४.५११ ब, विमान नगर व भवन ४.५२०-५२१।

लाखू (कवि)—इतिहास १.३३२ अ, १.३४५ अ।

लाघव—३.४१६ अ, अचेलकत्व १.४० अ, शीघ्र ४.४२ ब।

लाट—३.४१६ अ।

लाटी संहिता—३.४१६ अ, इतिहास १.३४७ अ।

लाड़बागड़ गच्छ—एकांत जैनाभास १.४६५ अ, काष्ठासघ १.३२१ अ, १.३२२ अ, १.३२७ ब।

लाड़बागड़ संघ—काष्ठा सघ १.३२१ अ, १.३२७ ब।

लाभ—३.४१६ अ।

लाभांतराय—अन्तराय १.२७ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, १.६४ ब, स्थिति ४.४६७, अनुभाग १.६४ ब, प्रदेश ३.१३७। बध ३.६७ बधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६४, त्रिसंयोगीभंग १.३६६। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६६ ब।

लालसा—निदान २.६०८ अ।

लिंग—३.४१६ अ, मोक्ष ३.३२७ ब, वेद ३.५८३ ब, सल्लेखना ४.३६० ब।

लिंगज श्रुतज्ञान—श्रुतज्ञान ४.५६ अ।

लिंगपाहुड—३.४२० ब, इतिहास १.३४० ब।

लिंग व्यभिचार—नय २.५३७ ब।

लिंगशुद्धि—शुद्धि ४.४० अ।

लिंगसावरण—वेद ३.५८६ अ।

लिपिबद्ध—आगम १.२२८ ब।

लिपि संख्यान क्रिया—मंत्र ३.२४७ अ, संस्कार ४.१५१ अ।

लिप्त—३.४२० ब, आहार दोष १.२६१ ब।

लील—३.४२० ब, क्षेत्र का प्रमाण २.२१७ अ।

लीन—चारित्र २.२८४ अ, मोक्षमार्ग (लय) ३.३३५ ब, सामायिक ४.४१५ ब।

लीलाविस्तार टीका—३.४२० ब, इतिहास १.३४२ अ।

लुका—३.४२० ब, श्वेतावर ४.८० ब।

लुका मत—३.४२० ब। श्वेतावर ४.८० ब।

लेखक्रिया—क्रिया २.१७४ ब।

लेखन—आगम १.२२८ ब।

लेप—३.४२० ब।

लेपाहार—आहार १.२८५ अ, आहारक १.२६५ अ।

लेख्यकर्म—कर्म २२६ अ, निक्षेप २.५६८ अ ।

लेख्याहार—आहार १.२८५ अ, आहारक १.२६५ अ ।

लेवड़—३.४२० ब ।

लेश्या—३.४२० ब, आयुबंध के स्थान १.२५६ अ, आर्तध्यान १.२७४ अ, कषाय २.३६ अ, काल २.६७ अ, २.६७ ब, केवली २.१६४ ब, जन्म २.३१८ ब, जन्म (गति अगति) २.३२१ अ, तीर्थंकर नामकर्म प्रकृति २.३७६ ब, धर्मध्यान २.४८१ ब, मरण ३.२८३ ब, रौद्रध्यान ३.४०८ ब, सल्लेखना ४.३८४ अ, ४.३६० ब ।

लेश्या मार्गणा (प्ररूपणा)—३.४२५ ब । प्ररूपणा—बध ३.१०७, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३८४, उदय-स्थान १.३६३ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा-स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४.२८६, ४.३०१, ४.३०६, त्रिसंयोगीभग १.४०७ ब । सत् ४.२४२, सख्या ४.१०७, क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४.४६०, कान २.११५, अन्तर १.१८, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व १.१५१, भागाभाग ४.११३ । पच-शरीर स्वामित्व ४.७ ।

लेह्य—आहार १.२८५ अ ।

लौकागच्छ—श्वेताबर ४.८० ब ।

लौकाशाह—श्वेताबर ४.८० ब ।

लौच—२.१६६ ब ।

लो०—घनलोक की सहनानी २.२१६ ब ।

लोक—३.४२८ ब, निर्देश ३.४३१ अ, आकार ३.४३८ अ, लक्षण ३.४३८ अ, विस्तार ३.४३८ अ, त्रि विभाग ३.४४० ब, चित्र ३.४३६, संतुलित अध्ययन ३.४३१ अ । ओम् १.४७० अ, धर्माधर्म द्रव्य २.४८८ ब । २.४६८, सत् ४.१६० अ ।

लोक अनुप्रेक्षा—अनुप्रेक्षा १.७६ ब, १.८० अ ।

लोकचक्र—३.४६१ अ, नदिसंघ १.३२३ अ-ब, इतिहास १.३२६ अ ।

लोकनाभि—सुमेरु ४.४३७ अ ।

लोकिनिदा—आहारातराय १.२६ ब ।

लोकपक्ति क्रिया—३.४६१ अ, क्रिया २.१७५ अ ।

लोकपाल—३.४६१ अ । भवनवासी—निर्देश ३.२०६ अ, आयु १.२६५ । वैमानिक—निर्देश ४.५१२, आयु १.२६६-२७०, देवियों की गणना ४.५१३ ।

लोकपूरण समुद्धात—केवली २.१६६ ब ।

लो० प्र०—लोकप्रतर की सहनानी २.२१६ ब ।

लोकप्रतर—३.४६२ अ, सहनानी २.२१६ ब ।

लोकप्रमाण—संख्या ४.६२ ब ।

लोकबाधित—बाधित ३.१८२ ब ।

लोकाबिदुसार—श्रुतज्ञान ४.६६ अ ।

लोकमध्य—सुमेरु ४.४३७ अ ।

लोकमूढता—अमूढदृष्टि १.१३२ ब, मूढता ३.३१५ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६१ ब ।

लोकवाद—एकात १.४६५ अ-ब, लोकोत्तर वाद ३.४६२ अ ।

लोकविनिश्चय—इतिहास १.३४० अ ।

लोकविभाग—३.४६२ अ, इतिहास १.३२६ अ, १.३४१ अ ।

लोकव्यवहार—सम्यग्दर्शन २.५५७ अ ।

लोकश्रेणी—३.४६२ अ ।

लोकसंस्थान—ध्येय २.५०० अ ।

लोकसेन—३.४६२ अ, पचस्तूप संघ १.३२६ ब, इतिहास १.३३० अ ।

लोकांत—लौकातिक देव ३.४६३ अ ।

लोकांतिक—लौकातिक देव ३.४६३ अ ।

लोकाकाश—आकाश १.२२० ब, १.२२४ अ, उत्पादादि १.३६२ ब ।

लोकाग्र—मोक्ष ३.३२४ ब ।

लोकादित्य—३.४६२ अ, अकालवर्ष १.३१ अ ।

लोकानुप्रेक्षा—१.७६ ब, १.८० अ ।

लोकानुवृत्ति—विनय ३.५४८ ब ।

लोकायत—चार्वाक २.२६४ ब ।

लोकालोक विभाग—धर्माधर्म द्रव्य २.४८६ ब, २.४६० अ ।

लोकालोक व्याप्ति—केवलज्ञान २.१४७ ब ।

लोकेषणा—अनाकाक्ष अनशन १.६५ अ, १.६६ अ, उपदेश १.४२४ ब, तप २.३५८ ब, २.३६० अ, धर्म २.२७५ अ, ध्याता २.४६३ अ, राग ३.३६६ ब, ३.३६७ अ, वाद ३.५३३ अ, विनय ३.५५२ ब, विवेक ३.५६६, सल्लेखना ४.३८३ अ, साधु ४.४०५ अ, स्वाध्याय ४.५२३ ।

लोकोत्तर गणना—प्रमाण ३.१४४ ब ।

लोकोत्तर चेतना—चेतना २.२६६ ब ।

लोकोत्तर जुगुप्सा—जुगुप्सा २.३४४ अ, सूतक ४.४४२ ब ।

लोकोत्तर मंगल—निक्षेप २.६०१ अ ।

लोकोत्तरवाद—३.४६२ अ ।

लोकोत्तर शरण—शरण ४.५ अ ।

लोकोत्तर शुचित्व—शुचि ४.३८ अ ।

लोकोत्तरीय वाद—श्रुतज्ञान ४.६० अ ।

लोगाक्षि भास्कर—३.४६४ अ, मीमांसा दर्शन ३.३११ अ, वैशेषिक दर्शन ३.६०८ अ ।

लोभ (कषाय)—३.४६२ ब, कषाय २.३५ ब, २.३८ अ, २.३९ अ, काङ्क २.४२ अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६०-१.१६१, शौच ४.४२ ब, सजा (परिग्रह) ४.१२१ अ । प्ररूपणा—बध ३.१०५, बधस्थान ३.११३, उदय १.३८२, उदयस्थान १.३९३ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.३००, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०७ अ । सत् ४.२३२, सख्या ४.१०५, ४.११७, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४.४८८, काल २.११२, अतर १.१५, भाव ३.२२१ अ, ३.२२३, अल्पबहुत्व १.१४६, भागाभाग ४.११७ ।

लोभकर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४१, स्थिति ४.४६१, अनुभाग १.६४ ब, प्रदेश ३.१३६ । बध ३.१७, बंधस्थान ३.१०६, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८६, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६५, त्रिसंयोगी भग १.४०१ ब । सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८ ।

लोभाकुलता—व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ ।

लोभाणु—सूक्ष्म सापराय ४.४४१ ब ।

लोभी—आहार दोष १.२६१ अ ।

लोह—३.४६२ ब । नरक पटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

लोलक—३.४६२ ब । नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार ३.५७६ ब, अकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

लोलवत्स—३.४६२ ब । नरक पटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

लोलुक—नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब । अकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

लोलुप—नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अकन ३.४४१, नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

लोहवाहिनी—चक्रवर्ती ४.१५ अ ।

लोहागल—३.४६३ अ । विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

लोहाचार्य—३.४६३ अ । प्रथम—मूलसघ १.३१६,

इतिहास १.३२८ अ, १.परि०/२ २,३,५,७ । द्वितीय—मूलसघ १.३१६, १.३१७, नंदिसघ बलात्कारगण १.३२३ अ, पुननाट सघ १.३२७ अ, इतिहास १.३२८ अ । तृतीय—मूलसघ १.३२२ ब, नंदिसघ बलात्कारगण १.३२३ अ, इतिहास १.३२८ ब । चतुर्थ—सेनसघ १.३२६ अ ।

लोहागल—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

लोहार्य—मूलसघ १.३१६ । इतिहास १.३२८ अ ।

लोहित—३.४६३ अ । गजदत्त का कूट—निर्देश ३.४७३ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४, ३.४५७ । ग्रह २.२७४ अ । पाण्डुक वन में सोमदेव का भवन—निर्देश ३.४५० ब, अकन ३.४५० ब । मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अकन ३.४६४ । लवणसागर के पर्वत का देव ३.४७४ ब ।

लोहित (स्वर्ग पटल)—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४.५१७, अकन ४.५१६ ब, देव आयु १.२७६ ।

लोहितांक—रत्नप्रभा (वित्रा पृथिवी) ३.३८६ ब । लवण सागर के पर्वत का देव ३.४७४ ब ।

लोहिताक्ष—३.४६३ अ, हवकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६६ । स्वर्ग-पटल—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४.५१७, अकन ४.५१६ ब, देव आयु १.२६७ ।

लोहिताभमयी—मुमेरु की परिधि ३.४४६ अ-ब ।

लौह मास—चन्द्र की गति से उत्पत्ति २.३५१ अ ।

लौकांतिक देव—३.४६३ अ, आयुबध के योग्य परिणाम १.२५८ ब, जन्म २.३१७ ब, द्विचरम शरीर ४.५१० ब ।

लौकिक—३.४६४ अ । नरक पटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३, निक्षेप २.५१६ ब ।

लौकिक कर्तकर्म—कर्तकर्म २.२३ अ ।

लौकिक क्रिया—साधु ४.४०५ ब ।

लौकिक गणना—प्रमाण ३.१४४ ब ।

लौकिक चेतना—चेतना ३.२६६ ब ।

लौकिक जुगुप्सा—जुगुप्सा २.३४४ अ, सूतक ४.४४२ ब ।

लौकिक जैन—२.३४४ अ ।

लौकिकता—कर्तकर्म २.२३ अ, चेतना २.२६६ ब, जैन २.३४४ अ ।

लौकिक मंगल—निक्षेप २.६०१ अ ।

लौकिक मूढता—अमूढदृष्टि ११३२ ब, मूढता ३.३१५
अ, सम्यग्दर्शन ४.३६१ ब।
लौकिकवाद—एकांत १४६५ अ-ब, लोकोत्तर वाद
३४६२ ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ।
लौकिक शरण—शरण ४५ अ।
लौकिक शास्त्र—शास्त्र ४२८ अ।
लौकिक शुचि—शुचि ४३८ अ।
लौकिक संगति—संगति ४११८ अ।
लौकिक सुख—सुख ४४३० ब।

व

वंग—मनुष्यलोक (वंग) ३२७५ अ।
वंगा—३४६४ अ, मनुष्यलोक (वंगा) ३२७५ ब।
वंचन—स्वर्गपटल—निर्देश ४५१६, विस्तार ४५१६,
अकन ४५१६ ब, देव आयु १२६६।
वंचना—माया ३२६६ अ।
वंदन—विनय ३५५२ अ-ब।
वंदनमाला—मंगल ३.२४४ अ।
वंदना—३४६४ ब, उपयोग १.४३४ अ, कृतिकर्म २.१३४
अ, २.१३५ अ, पूजा ३७६ ब, विनय ३.५४३ ब,
३५५२ अ-ब, व्युत्सर्ग ३.६२१ अ, श्रुतज्ञान ४६६
ब, समय (उपयोग) १.४३४ अ, सामायिक ४४१७
अ।
वंदना मुद्रा—मुद्रा ३३१३ ब।
वंदनीय—विनय ३५५३ अ।
वद्य—विनय ३५५३ अ, ३५५४ अ।
वंश—३.४६६ अ, इतिहास १.३१० अ, वर्ण व्यवस्था
३.५२० ब।
वंशक—मगधदेश इतिहास १३१२।
वंशपत्र (योनि)—योनि ३.३८७ अ।
वंशा—३४६६ अ। नरक पृथिवी—निर्देश २५७६ अ,
पटल २५७६, इद्रक श्रेणीबद्ध प्रकीर्णक २.५७८,
२.५७६, विस्तार २५७६, २.५७८, अंकन ३.४४१।
नारकी—अवगाहना ११७८, अवधिज्ञान ११६८,
आयु १२६३।

वंशा (नरक)—प्ररूपणा—बध ३१००, बंधस्थान ३.११३,
उदय १.३७६, उदयस्थान १३६२ ब, उदीरणा
१.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व
४२८१, सत्त्वस्थान ४२६८, ३३०५ त्रिपयोगीभग
१४०६ ब। सत ४१६६, संख्या ४.६५, क्षेत्र
२१६७, स्पर्शन ४४७६, काल २.१०१, अन्तर १८,
भाव ३२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४।

वंशाल—३४६६ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।
वंशालय—विद्या ३.५४४ अ, विद्याधर १.३३६ अ, विद्या-
धर नगरी ३५४६ अ।
व—जघन्य वर्ग की सहनानी २२१६ अ।
व_१—सूच्यंगुल तथा घनांगुल की वर्गशलाका २२१६ ब।
व_१ + $\frac{व}{१६ + २}$ —जगश्रेणी की वर्गशलाका राशि
२.२१६ ब।

व_१^१—प्रतरांगुल की वर्गशलाका राशि २.२१६ ब।
व_{१६/१}—जगश्रेणी की वर्गशलाका राशि २२१६ ब।
 $\left[\frac{व_{१६/२}}{व_२} \right]$ —घनांगुलकी वर्गशलाका राशि २२१६ ब।
 $\left[\frac{व_{१}^{१६/१}}{व_१^{१६/१}} \right]$ —जगप्रतरकी वर्गशलाका राशि २२१६ ब।

वकुश—साधु (बकुश) ४४०८ ब।
वक्कज—वस्त्र ३५३१ अ।
वक्खार—आवास १२८० ब।
वक्तृत्व—केवलज्ञान (सर्वज्ञता) २१५२ अ।
वक्तव्य—३४६६ अ, सप्तभगी ४३२६ ब।
वक्तव्यता—३४६६ अ, उपक्रम १४१६ ब, श्रुतज्ञान
४६७ ब।
वक्षता—३४६६ अ, आगम १२३४ ब, उद्देश १४२४
ब, १.४२५ अ, जीव २३३३ ब, प्रामाणिकता (आगम)
१.२३४ ब, सामान्य (इच्छा) ४४१३ अ।
वक्त्रग्रीव—३४६७ अ कुन्दकुन्द २१२६ ब, २.१२७ ब,
मूलसध १३२२ ब, इतिहास १३३१ ब।
वक्रांत—३.४६७ अ। नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब,
विस्तार २.५७६ ब, अकन ३४४१। नारकी—
अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।

वक्षार—३.४६७ अ।
वक्षारगिरि—३४६७ अ, चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ,
विदेह क्षेत्र के पर्वत—निर्देश ३४६० अ, नामनिर्देश
३४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६,
अंकन ३४४४, ३४६४ के सामने। चित्र ३४६० अ,
वर्ण ३.४७७, कूट तथा देव ३.४७२ ब।

वचन—३४६७ अ, अतिचार १४४ अ, आगम (प्रामाण्य) १.२३४ ब, केवली २१६३ अ-ब, मन (योग) ३३८१ अ, मूर्तत्व ३३१७ अ, योग (मन) ३३८१ विवेक ३५६७ अ, व्युत्सर्ग ३.६०० अ ।

वचन (अनृत)—असत्य १२०८ ब ।

वचन (अनालोच्य)—असत्य १२०८ ब ।

वचन (अभूतोद्भावन)—असत्य १२०८ ब ।

वचन (असत्य)—असत्य १२०८ अ ।

वचन (असूनुत) असत्य १.२०६ अ ।

वचन (ऋत)—असत्य १२०८ अ ।

वचन (कर्म)—कर्म २२६ अ ।

वचनगुप्ति—अतिचार (गुप्ति) २२५० ब, अहिंसा १२१६ अ, गुप्ति २२४८ ब, २२४९ अ, २.२५० ब ।

वचन-गोचरातीत—मोक्ष ३.३३० अ ।

वचननिविष ऋद्धि—ऋद्धि १४५५ ब ।

वचन-पथ—एकांत ४४६५ अ, नय २५२४ अ ।

वचन-परावर्तन—कृतिकर्म (आवर्त) १२७६ अ ।

वचन (परुष)—असत्य १२०८ अ ।

वचन प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३.१३२ अ ।

वचनप्रवृत्ति—मनोयोग ३.२७७ अ ।

वचनप्राण—प्राण ३१५३ अ, ३.१५४ ब ।

वचनबल—३४६८ ब, ऋद्धि १४४७, १४५५ अ, पर्याप्ति ३४४ अ, योग ३३८० अ ।

वचनबल ऋद्धि—ऋद्धि १४४७, १४५५ अ ।

वचनयोग—३४६८ अ, अपर्याप्ति (योग) ३३८० अ, काल २.६६ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६०, केवलज्ञान (सर्वज्ञत्व) २१५२ अ, दिव्यध्वनि २४३० ब, योग ३.३७६ अ-ब, ३.३८० अ-ब ।

वचनयोग (प्ररूपणा)—बध ३१०४, बधस्थान ३११३, उदय १२७६, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४.२८३, ३३७६ अ, सत्त्वस्थान ४२६६, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १४०६ ब । सत् ४२१३, सख्या ४.१०२, क्षेत्र २२०२, स्पर्शन ४.४८५, काल २१०८, अन्तर ११२, भाव ३२२० ब, अल्पबहुत्व ११४७ ।

वचनवदना—वदना ३४६४ ब ।

वचनविवेक—विवेक ३५६७ अ ।

वचनशुद्धि—भक्ति ३१६६ अ, शुद्धि ४३६ अ, ४३४७ ब ।

वचन (सत्प्रतिषेध)—असत्य १.२०८ ब ।

वचनातीत—अवक्तव्य १.१७७ अ, तत्त्व १२१६ अ, नय २५५४ ब, मोक्ष ३३३० अ, नय (अवक्तव्य) ११७७ अ, २५२२ ब, नय (वचनातीत) २५५४ सापेक्ष धर्म (अवक्तव्य) ४३२४ ब ।

वचनालाप—(रात्रि को) अपवादमार्ग ११२२ अ ।

वज्र—३.४६८ ब, गणधर ३२१३ अ, तीर्थंकर सुमति व अभिनन्दन २३८७, विद्याधरवश १३३६ अ ।

वज्र (कूट)—कुडलवर पर्वत का—निर्देश ३४७५ ब, विस्तार ३४८७, अकन ३४६७ । मानुषोत्तरपर्वत का—निर्देश ३४७५ अ, विस्तार ३४८६, अकन ३४६४ । रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३४७६ अ, विस्तार ३४८७, अकन ३४६८ । सुमेरु के वनो मे स्थित—निर्देश ३४७३ ब, विस्तार ३४८३, अकन ३४५१ । सुमेरु के वन मे सोम देव का पुर—निर्देश ३४५०, अकन ३४५१ ।

वज्र (स्वर्ग)—अनुदिश स्वर्ग का श्रेणीबद्ध निर्देश ४५१६ अ, अकन ४५१५, ४५१७, देव आयु १२६६ । सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४५१७, विस्तार ४५१७, अकन ४५१६ ब, देव आयु १२६७ ।

वज्रकठ—वानरवश १३३८ ब ।

वज्रकांड—चक्रवर्ती ४१५ अ ।

वज्रखंडिक—३४६८ ब, मनुष्यलोक ३२७५ ब ।

वज्रघोष—३४६८ ब ।

वज्रचमर—तीर्थंकर अभिनन्दन तथा पद्मप्रभ २३८७ ।

वज्रचूड—विद्याधरवश १३३६ अ ।

वज्रजघ—३४६६ अ, विद्याधरवंश १३३६ अ ।

वज्रजानु—विद्याधरवश १३३६ अ ।

वज्रतुंडा—चक्रवर्ती ४१५ अ ।

वज्रवत—३४६६ अ, तीर्थंकर वासुपूज्य २३७८ ।

वज्रदंष्ट्र—यदुवंश १३३७, विद्याधर वश १३३६ अ ।

वज्रदत्त—तीर्थंकर श्रेयासनाथ २३७८ ।

वज्रधर—तीर्थंकर ३३६२ ।

वज्रधर्मा—यदुवंश १३३६ ।

वज्रध्वज—विद्याधरवंश १३३६ अ ।

वज्रनदि—३४६६ अ । प्रथम—नदिसघ १३२३ अ, इतिहास १३२६ अ । द्वितीय—द्रविडसघ १३२० ब, मूलसंघ १३२२ ब, इतिहास १३२६ अ ।

वज्रनाभि—३४६६ अ, तीर्थंकर ऋषभ, विमल तथा वासुपूज्य २.३७८, तीर्थंकर अभिनन्दन २३८७ ।

वज्रनाराचसंहनन—४.१५५ अ-ब, नामकर्मप्रकृति प्ररूपणा

—प्रकृति ३८८, २५८३, स्थिति ४४६३, अनुभाग १६५, प्रदेश ३१३६। बध ३६७, बध स्थान ३११०, उदय १३७५, उदयस्थान १३६०, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४३०३, त्रिसयोगी भंग १४०४ सक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व ११६८ अ।

वज्रपंजरविधान—इतिहास १३४३ ब।

वज्रपाणि—विद्याधरवश १३३६ अ।

वज्रपुर—३४६६ अ, मनुष्यलोक ३२७६ अ, विद्याधर नगरी ३५४६ अ।

वज्रप्रभ—३४६६ अ, वानरवंश १३३८ ब।

वज्रप्रभ (कूट)—कुडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३४७५ ब, विस्तार ३४८७, अकन ३४६७।

वज्रबाहु—३४६६ ब, विद्याधरवंश १३३६ अ, हरिवंश १३४० अ।

वज्रभूत—विद्याधरवंश १३३६ अ।

वज्रमध्य—राक्षसवश १३३८ अ।

वज्रमध्य व्रत—३४६६ ब।

वज्रमय—सुमेरु पर स्थित यमदेव का पुर—निर्देश ३४५० अ, अकन ३४५१।

वज्रमयी—सुमेरु की परिधि ३४४६ अ-ब।

वज्रमूक—३४६६ ब।

वज्रमूल—सुमेरु ४४३७ अ।

वज्रयश—१.परि०/३.४, इतिहास १३२८ ब।

वज्रर्षभनाराचसंहनन—४१५५ अ-ब, नामकर्म प्रकृति प्ररूपणा—प्रकृति ३८८, २५८३, स्थिति ४४६३, अनुभाग १६५, प्रदेश ३१३६। बध ३६७, बंधस्थान ३११०, उदय १३७५, उदयस्थान १३६०, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४३०३, त्रिसयोगीभंग १४०४। सक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व ११६६ अ।

वज्रवर—३४६६ ब।

वज्रवर सागर-द्वीप—३४६६ ब। निर्देश ३४७० अ, विस्तार ३४७८, अकन ३४४३, जल का रस ३४७० अ, ज्योतिषचक्र २३४८ ब, अधिपति देव ३६१४।

वज्रवा—इक्ष्वाकुवंश १३३५ ब।

वज्रवान—३४६६ ब, गंधर्व जातीय व्यंतरदेव २२११ अ, विद्याधरवश १३३६ अ।

वज्रशृंगला—३४६६ ब, तीर्थंकर अभिनदननाथ की यक्षिणी ३३७६, विद्या ३५४४ अ।

वज्रसंज्ञ—विद्याधरवश १३३६ अ।

वज्रसार—गणधर २२१३ अ, तीर्थंकर ऋषभनाथ २३७८।

वज्रसेन—विद्याधरवश १३३६ अ।

वज्राकुशा—३४६६ ब, तीर्थंकर सुमतिनाथ की यक्षिणी २३७६, विद्या ३५४४ अ।

वज्राद्य—३४६६ ब, विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

वज्राद्यपुर—विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

वज्रा पृथिवी—सागरो की आधारभूत पृथिवी ३४४२ अ।

वज्राभ—विद्याधरवश १३३६ अ।

वज्रायुध—३४६६ ब, विद्याधरवश १३३६ अ।

वज्रागल—३४६६ ब, विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

वज्राद्धतर—३४६६ ब, विद्याधर नगरी ३५४६ अ।

वज्रास्य—विद्याधरवश १३३६ अ।

वट—तीर्थंकर ऋषभदेव २३८३।

वटुकेर—३४६६ अ, कुन्दकुन्द २१२७ अ, इतिहास १३२८ ब।

वड्डमाणवरिउ—३४६६ ब, इतिहास १३४४ अ, १३४५ ब।

वणथली—३५०० अ।

वणिकूर्म—सावद्य ४४२० ब।

वणिवर्ग(दोष)—३५०० अ, वसतिका दोष ३५२६ ब।

वत्थि मोक्खो—ब्रह्मचर्य ३१८६ अ।

वत्स—३५०० अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब, तीर्थंकर पद्मप्रभ २३७६।

वत्समित्रा—३५०० अ, गजदत्त के कूट की देवी—निर्देश ३४७२ ब, अकन ३४५७।

वत्सराज—३५०० अ, राष्ट्रकूटवश १३१५ अ।

वत्सवत्—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३४६० अ, नामनिर्देश ३४७० ब, विस्तार ३४७६, ३४८०, ३४८१, अकन ३४४४, ३४६४ के सामने, चित्र ३४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३४७२ ब, विस्तार ३४८२, ३४८५, ३४८६, अकन ३४४४, ३४६० अ।

वत्सा—३५०० अ, विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३४६० अ, नामनिर्देश ३४७० ब, विस्तार ३४७६, ३४८०, ३४८१, अकन ३४४४, ३४६४ के सामने, चित्र ३४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३४७२ ब, विस्तार ३४८२, ३४८५, अकन ३४४४, ३४६० अ।

वत्सावती—३५०० अ, विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३४६० अ, नामनिर्देश ३४७० ब, विस्तार ३४७६, ३४८०,

३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, अकन ३.४४४।

वदतोव्याधात—३.५०० अ।

वदन—३.५०० अ।

वह्निग—३.५०० अ।

वद्धदेव (चूड़ामणि)—मूलसध १.३२२ ब।

वध—३.५०० अ, अहिंसा व्रत का अतिचार १.२१६ अ, वधकोपदेश १.६३ ब।

वधपरिषह—३.५०० अ, परिषह ३.३३ ब, ३.३४ अ।

वधू—स्त्री ४.४५० अ।

वध्यघातक—३.५०० ब, विरोध ३.५७४ ब, संबंध ४.१२६ अ।

वनक—३.५०० ब। नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।

वनखड्ग—जबू व शात्मली वृक्षस्थल—निर्देश ३.४५८ ब, अकन ३.४५६। भूतारण्यक देवारण्यक—निर्देश ३.४६० ब, विस्तार ३.४८७, ३.४८८, अकन ३.४४४, ३.४६२। सुमेरु के चार वन—निर्देश ३.४५० अ, विस्तार ३.४८८। अकन ३.३४४, ३.४५७, ३.४६४ के सामने।

वनजीविका—सावध (खर कर्म) ४.४२१ ब।

वनभूमि—चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ।

वनमाल—३.५०० ब। स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४.५१७, अकन ४.५१५, देवआयु १.२६७।

वनमाला—३.५०० ब।

वनवास—३.५०० ब।

वनवास्था—३.५०० ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।

वनस्पति (काय)—३.५०० ब, ३.५०२, अवगाहना १.१७६, आयु १.२६४, काय २.४४, २.४६ अ, जीव २.३३३ ब, जीवसमाप्त २.३४३, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब, ३.२०४ अ, सचित्त-अचित्त ४.१५८ अ, स्थावर ४.४५३, ४.४५४ ब।

वनस्पतिकाय—प्ररूपणा—बध ३.१०४, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६६, ४.०३५, त्रिसयोगीभग १.४०६ ब। सत् ४.२०६, सख्या ४.१०१, क्षेत्र २.२०१, स्पर्शन ४.४८३, काल-२.१०६, अन्तर १.१२, भाव

३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५।

वनीपक—२.५१० ब, आहारदोष १.२६१ अ।

वपुःस्पर्श—व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ।

वप्र—३.५१० ब।

वप्रकावती—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश अकन ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब। विस्तार ३.४८२, ३.४८५, अकन ३.४४४ के सामने।

वप्रथु—हरिवंश १.३४० अ।

वप्रचान्—३.५१० ब।

वप्रा—चक्रवर्ती ४.११ ब, तीर्थकर नमिनाथ २.३८०। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। वक्षार गिरि का कूट व देवी—निर्देश ३.४८२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, अकन ३.४४४ के सामने।

वप्रावत्—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६०, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, अकन ३.४४४ के सामने।

वसन—आहारातराय १.२६ अ।

वय—३.५१० ब।

वयोपेक्षा विवर्जन—व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ।

वयोवृद्ध—संगति ४.११६ अ।

वरकुमार—कुरुवश १.३३५ ब, १.३३६ अ।

वरध्वज—भावि शलाकापुरुष ४.२५ ब।

वरज्येष्ठ—यम लोकपाल का यान ४.५१३ अ।

वरतनु—३.५११ अ।

वरतनु (देव)—चक्रवर्ती ४.१५ ब, प्रतिनारायण ४.२० अ।

वरतनु (द्वीप)—लवण तथा कालोदसागर का अन्तर्द्वीप—निर्देश ३.४६२ ब, ३.४६३ अ, विस्तार ३.४६२ ब, ३.४६३ अ, ३.४७८, अकन ३.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने, सीता व सीतोदा नदी का तीर्थ ३.४६० ब।

वरवत्—तीर्थकर नेमिनाथ २.३८७।

वरधर्म—तीर्थकर मल्लिनाथ २.३७८।

वररुचि ३.५११ अ, चक्रवर्ती ४.१० ब।

वरवीर—३.५११ अ।

वरसेन—अच्युत १.४१ अ, बलदेव ४.१७ अ, ४.१८ अ।

वरसेना—तीर्थकर वासुपूज्य २ ३८८ ।

वरांगकुमार—३.५११ अ ।

वरांगचरित्र—इतिहास १ ३४६ अ ।

वरांगचरित्र—इतिहास १ ३४५ ब ।

वराटक—३.५११ ब, पूजा ३.७६ अ, निक्षेप २.५६८ ब ।

वराटक कर्म—कर्म २ २६ अ, निक्षेप २ ५६८ ब ।

वराह—३ ५११ अ, तीर्थकर श्रेयासनाथ (गेंडा) २ ३७६, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब ।

वराहमिहिर—३ ५११ अ, श्वेतावर ४ ७८ ब ।

वरुण ३ ५११ ब, गणधर २ २१३ अ, तीर्थकर मल्लिनाथ का यक्ष २.३७६, नक्षत्र २ ५०४ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब । वारुणीवर द्वीप का रक्षक देव ३ ६१४ ।

वरुणकायिक—३.५११ ब, देव (आकाशोपपन्न) २.४४५ ब ।

वरुणपर्वत—मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

वरुणपुर—जल २.३२४ ब ।

वरुणप्रभ—३.५११ ब, वारुणीवर द्वीप का रक्षक देव ३.६१४ ।

वरुण लोकपाल—वैमानिक देवों के—निर्देश ३ ४६२ अ, शक्ति आदि ४ ५१३ अ, मध्यलोक में अवस्थान ३.६१३ ब, ३ ६१४, सुमेरु पर्वत पर भवन ३.४५० अ-ब, स्वर्गलोक में अवस्था ४ ५१३ अ, आयु १.२६६ ।

वरुणा—तीर्थकर चद्रप्रभ २ ३८८ ।

वर्ग—३ ५११ ब, उदय १.३६६ ब, गणित २.२२३ अ, २ २२४ अ, त्रिवर्ग २.४०० ब ।

वर्गण संवर्गण - गणित २.२२३ ब ।

वर्गणा—३ ५११ ब, उदय १ ३६६ ब, कर्म २.२७ अ-ब, कृष्टि (अनुभाग) २ १४० ब, निर्वर्गणा २.६२६ अ, प्रदेश (समयप्रबद्ध) ३.१३५ ब, सख्या ४.६३ अ ।

वर्गणा (प्ररूपणा)—सत् ३ ५१२ अ, सख्या ४ ११६ ब, क्षेत्र २ २०८, स्पर्शन ४ ४६४, भाव (वर्गणा के स्वामियो का) ३ २२३ । अल्पबहुत्व—वर्गणाबद्ध प्रदेशों का १ १४२ अ, १ १५५, १.१७६, शरीरबद्ध वर्गणाओं का १.१५७, वर्गणा की अवगाहना का १ १५७, वर्गणा पचक के द्रव्य प्रमाण आदि का १ १५६ ब, एकश्रेणी व नाना श्रेणी वर्गणाओं का १ १५५ ।

वर्गणा शलाका—३ ५१८ ब ।

वर्गधारा—गणित २.२२६ अ ।

वर्गमूल—३.५१८ ब, गणित २.२२३ अ, २.२२४ अ ।

वर्गशलाका—३ ५१६ अ, गणित २ २२५ अ ।

वर्गशलाका राशि—गणित २ २२६ अ । सहनानी २.२१६ ब ।

वर्ग-समीकरण—३ ५१६ अ ।

वर्गित—गणित २ २२५ अ ।

वर्गित सर्वगित—३.५१६ अ, अनन्त १.५६ अ, गणित २ २२३ ब ।

वर्चंगत—रत्नप्रभा (चित्रा पृथिवी) ३.३६१ अ ।

वर्चस्क—३ ५१६ अ । नरकपटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन १ ४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

वर्ण—३.५१६ अ, ईर्यापथ कर्म १, ३४१ अ, निक्षेप २.६०२ ब, प्रव्रज्या ३.१४६ ब ।

वर्णचतुष्क १.३७४ ब ।

वर्णभातृका—पदस्य ध्यान ३ ६ ब ।

वर्णलाभ क्रिया—संस्कार ४ १५१ ब, ४.१५२ ब ।

वर्णविभाग—वर्णव्यवस्था ३ ५२२ ब ।

वर्णव्यवस्था—३ ५१६ ब, गोत्रकर्म निर्देश ३.५२० ब, वर्णव्यवस्था निर्देश ३ ५२३ अ, उच्च-नीच कुल ३ ५३४, शूद्र ३ ५२५ ब ।

वर्णोत्तम अधिकार—ब्राह्मण ३.१६५ ब ।

वर्ण्यसमा जाति—३ ५२५ ब ।

वर्तना—३ ५२६ अ, काल २.८२ ब, २ ८३ अ, २.८५ अ-ब ।

वर्तमान काल—३.५२६ अ, अल्पबहुत्व १ १४२ ब, काल (प्रमाण) २.८८ अ, नय २.५३६ अ ।

वर्तमान ज्ञायक शरीर—अन्तर १.३ ब, निक्षेप २ ६०३ ब ।

वर्तमान ग्राही नय—नय ३.५२२ अ ।

वर्तमान नेगम-नय—नय २ ५३० अ-ब ।

वर्द्धल—३.५२६ अ, नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १ २६३ ।

वर्द्धमान—३.५२६ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६६ ।

वर्द्धमानकीर्ति—नन्दिसंघ १.३२३ ब ।

वर्द्धमानचरित्र—इतिहास १.३४५ ब, १.३४६ अ ।

वर्द्धमानचारित्र—३.५२६ अ, असंग १ २०७ ब, इतिहास १.३३० ब, १.३४३ अ ।

वर्द्धमान भट्टारक—इतिहास—प्रथम १.३३२ ब, १.३४५ ब । द्वितीय १.३३३ ब ।

वर्द्धमान महावीर—अग्निमित्र १.३६ ब, इंद्रभूति १.२६६ ब, गणधर २ २१३ अ, तीर्थकर प्ररूपणा २.३७६-३६१, मगधदेश इतिहास १.३१०, महावीर ३.२६१

अ, मूलसंघ १.३१६, १ परि०/२ १, २, ८ । वीरसंवत्
१ परि०/१, श्रुततीर्थ १.३१८ अ ।

वर्द्धमान यंत्र—यत्र ३ ३५६ ।

वर्धकि—३ ५२६ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ ।

वर्धमानक—चक्रवर्ती ४ १५ अ ।

वर्मा—तीर्थकर पार्श्वनाथ २ ३८० ।

वर्मिला—तीर्थकर पार्श्वनाथ २ ३८० ।

वर्ष—३ ५२६ अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, सूर्य की
गति से उत्पत्ति २ ३५१ अ, चातुर्विधिक मत ३ ४३७
ब, बौद्धमत ३ ४३४, वैदिक अभिमत ३ ४३१ ब ।

वर्ष दशक—काल का प्रमाण २ २१६ अ ।

वर्षधर—३ ५२६ अ, प्रत्येक द्वीप में लंबायमान पर्वत—
निर्देश ३ ४४६ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५,
३ ४८६, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, वर्ष
३.४७७, गणना ३.४४५ अ, ३.४६२ ब, ३ ४६३ ब,
इसके कूट तथा देव ३.४७२ अ ।

वर्षलक्ष—काल का प्रमाण २.२१६ अ ।

वर्ष शतसहस्र—काल का प्रमाण २ २१६ अ ।

वर्षा ऋतु—योग (कालस्थिति) ३ ३७५ ब ।

वर्षायोग—३ ५२६ ब, कायक्लेश २.४७ ब, कृतिकर्म
२.१३१ अ, योग ३ ३७५ ब ।

वलजुअ कच्छउड—अडर १.२ अ ।

वलय—३ ५२६ ब, क्षेत्रफल परिधि, व्यास आदि २ २३३
ब, चन्द्र सूर्य आदि के वलय २ ३४७ ।

वलाहक—३ ५२६ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, ३.५४६
अ ।

वलीक—३.५२६ ब, अंतकृत केवली १ २ ब ।

वल्कल—३ ५२६ ब, एकातवादी १ ४६५ ब, अज्ञानवादी
१.३८ ब ।

वल्गु—३ ५२६ ब, गद्या क्षेत्र का अपर नाम २.२११ अ,
लोकपाल का यान ४ ५१३ अ । विदेहस्थ क्षेत्र—
निर्देश ३ ४६० अ, नाम निर्देश ३.४७० ब, विस्तार
३.४७६-४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने,
चित्र ३ ४६० अ । वक्षारगिरि का कूट तथा देव—
निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५,
३.४८६, अकन ३ ४४४ ।

वल्गु (स्वर्ग)—स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार
४.५१६, अकन ४ ५१६ ब, देव आयु १ २६६ ।

वल्गुप्रभ—कुबेर लोकपाल का यान ४ ५१३ अ ।

वल्लभ—३.५२६ ब, वेदान्त ३ ६०१ अ ।

वल्लभगोविंद—राष्ट्रकूट वंश १ ३१५ ब ।

वल्लभा—भवनवासी इन्द्रो की ३ २०६ अ, व्यन्तरेन्द्रो की
३.६११ ब, वैमानिक इन्द्रो की ४ ५१२, ४.५४३ ब ।

वल्लभिका—३ ५२६ ब, भवनवासी इन्द्रो की ३.२०६ अ,
व्यन्तरेन्द्रो की ३ ६११ ब, वैमानिक इन्द्रो की ४ ५१२,
४ ५१३ ब ।

वल्लरि छेदना—२.३०६ ब, २ ३०७ अ ।

वल्लिभूमि—३ ५२६ ब, समवसरण ४ ३३० ब ।

वशवर्तिता—कारण (कर्मोदय) २ ७१ ब ।

वशार्तमरण—मरण ३ २८१ ब ।

वशित्व ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १.४५१ अ ।

वशिष्ठ—३.५२६ ब, एकात विनयवादी १ ४६५ ब,
वैनयिक ३.६०५ अ ।

वशीकरण—ध्यात २.४६७ अ, मन्त्र ३.२४५ ब ।

वश्यकर्म—३ ५२६ ब ।

वश्ययत्र—यत्र ३ ३६० ।

वसत—३.५२६ ब, सुमेरु ४ ४३७ अ ।

वसंतकीर्ति—नदिसंघ १ ३२३ ब ।

वसंतभद्र व्रत—३.५२६ ब ।

वसतिका—३ ५२६ ब, अतिचार १.४४ अ, अथालन्द
चारित्र १.४६ अ, अधःकर्म ३ ४८ अ, उद्दिष्ट १ ४१३
ब, सल्लेखना ४ ३६२ अ ।

वसा—३ ५३० अ, औदारिक शरीर १ ४७२ अ ।

वसिष्ठ—द्वीपकुमारदेव—निर्देश ३ २०८ अ, परिवार
३ २०६ अ, अवस्थान ३.२०६ ब, आयु १ २६५ ।

वसुंधर—३ ५३० अ, कुरुवंश १ ३३५ ब, गणधर २.२१२
ब, चक्रवर्ती ४ १० अ, ४ १६ अ ।

वसुधरा—३ ५३० अ । रुक्मवर पर्वत की दिक्कुमारी—
निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३ ४६८, ३ ४६९ । वैमा-
निक इन्द्रो की ज्येष्ठा देवी ४ ५१३ ब, ४ ५१४ अ ।

वसु—३.५३० अ, अज्ञानवादी १ ३७ अ, १.३८ ब, एकात
अज्ञानवादी १ ४६५ ब, कुरुवंश १ ३३५ ब, नक्षत्र
२.५०४ ब, लौकातिक देव ३ ४६३ ब, हरिवंश
(असत्य के प्रभाव से नरक) १ ३४० अ ।

वसुका—वैमानिक इन्द्रो की ज्येष्ठा देवी ४.५१३ ब ।

वसुकीर्ति—कुरुवंश १.३३५ ब, १.३३६ अ ।

वसुगिरि—हरिवंश १.३४० अ ।

वसुदर्शन—नारायण ४.१८ ब ।

वसुदेव—३ ५३० अ, गणधर ३ २१२ ब, बलदेव ४ १७
अ, ४ १८ अ, यदुवंश १.३३७ ।

वसुधर्मा—वैमानिक इन्द्रो की ज्येष्ठा देवी ४.५१३ ब ।

वसुधर्मी—यदुवंश १ ३३७ ।

वसुधा—३ ५३० अ ।

वसुधारक—चक्रवर्ती ४ १५ अ ।

वसुध्वज—यदुवंश १ ३३७ ।

वसुनंदि—३ ५३० अ । प्रथम—नंदिसंघ १ ३२३ अ,
इतिहास १ ३२६ अ । द्वितीय—देशीय गण १ ३२४
ब, १ ३२५ अ, इतिहास १.३३० अ । तृतीय—इतिहास
१ ३३१ अ, १ ३४३ ब ।

वसुनंदि श्रावकाचार—३ ५३० ब, इतिहास १ ३४३ ब ।

वसुपाल—३ ५३० ब ।

वसुपूज्य—तीर्थंकर वासुपूज्य २ ३८० ।

वसुबंधु—३ ५३० ब ।

वसुभूति—नारायण ४ १८ ब ।

वसुमती—३ ५३० ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, विद्याधर
नगरी ३ ५४५ ब ।

वसुमत्का—३ ५३० ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब ।

वसुमान—यदुवंश १ ३३७ ।

वसुमित्र—३ ५३० ब, गणधर २ २१२ ब, शकवंश
१ ३१४ ।

वसुमित्रा—वैमानिक इन्द्रो की ज्येष्ठा देवी ४ ५१३ ब,
४ ५१४ अ, व्यतरेन्द्रो की वल्लभिका ३.६११ ब ।

वसुरथ—कुटुंबंश १ ३३५ ब ।

वसुषेण—३ ५३० ब ।

वस्तु—३ ५३० ब, अनेकात १ १०८ ब, एकात (विवक्षा)
१ ४६२ ब, १ ४६३ अ, कारण (वस्तुस्वार्तत्र्य)
२ ६० अ, २ ७३ अ, द्रव्य २ ४५४ ब, नमस्कार
२ ५०६ ब, श्रुतज्ञान ४ ६४ ब ।

वस्तुग्राही नय—नय २ ५१३ ब ।

वस्तुत्व—३ ५३० ब ।

वस्तुविद्या—३ ५३१ अ ।

वस्तुसमास—३ ५३१ अ, श्रुतज्ञान ४ ६४ ब ।

वस्तून ग्रह २ २७४ अ ।

वस्त्र—३ ५३१, अचेलकत्व १.४० ब, श्वेतांबर ४ ७६ ब ।

वस्त्ररहित—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब ।

वस्त्रांग (कल्पवृक्ष)—३ ५३१ अ, वृक्ष ३ ५७८ अ ।

वस्त्रौक—३ ५३१ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

वह्नि—३ ५१०, लौकातिक ३ ४६३ ब । अग्नि के अर्थ में
देखिए अग्नि ।

वह्निजरी—विद्याधर वंश १ ३३६ अ ।

वह्निजेज—विद्याधर वंश १.३३६ अ ।

वांछा—परिग्रह ३ २७ ब, सज्ञा ४ १२० ब ।

वाह्म—३ ५३१ अ, निक्षेप २ ६०२ अ ।

वाक् (वचन) ३ ४६७ अ । विशेष दे० वचन ।

वाक्छल—छल २ ३०५ ब, न्याय २ ६३४ अ ।

वाक्शुद्धि—समिति ४ ३४० ब, शुद्धि (वचन) ४.३६ अ ।

वाकुस—३ ५३१ अ ।

वाक्य—३ ५३१ अ ।

वाक्यप्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३ ११६ ब ।

वागर्थसंग्रह—इतिहास १ ३४२ अ ।

वागलि—तीर्थंकर समाधिगुप्ति २ ३७७ ।

वाग्भट्ट—३ ५३१ ब, इतिहास—प्रथम १ ३३१ अ,
१ ३४३ ब । द्वितीय १ ३३२ ब, १ ३४५ अ ।

वाग्भट्टसंहिता—आगाधर १.२८१ अ, इतिहास १ ३४४
अ ।

वाधावेण—काल २ ६५ ब ।

वाङ्मय—आगम १ २२७ ।

वाचक—३ ५३१ ब ।

वाचक-वाच्य संबंध—आगम १ २३२ ब, १ २३३ अ, नय
२ ५५० अ, संबंध ४.१२६ अ ।

वाचक शब्द—नय २ ५२८ ब, सप्तभंगी ४ ३२४ ब ।

वाचना—३ ५३१ ब, उपयोग १ ४२६ ब ।

वाचनिक—व्युत्सर्ग ३ ६२० ब ।

वाचनिक आस्रव—आस्रव १ २८२ ब ।

वाचनिक व्युत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३ ६२० ब ।

वाचनोपगत—निक्षेप २ ६०२ अ ।

वाचस्पति—न्याय २ ६३४ अ ।

वाचस्पति मिश्र—३ ५३१ ब, वेदात ३ ५६५ ब, योगदर्शन
३ ३८४ अ, सांख्यदर्शन ४.३६८ ब ।

वाचा उपकरण-विवेक—विवेक ३ ५६७ अ ।

वाचा मायाविवेक—विवेक ३.५६७ अ ।

वाचा लोभविवेक—विवेक ३ ५६७ अ ।

वाचा वसतिसंस्तरविवेक—विवेक ३ ५६७ अ ।

वाचा वैयावृत्यविवेक—विवेक ३ ५६७ अ ।

वाचा शरीरविवेक—विवेक ३ ५६७ अ ।

वाचिक—विनय ३ ५४८ ब ।

वाचिक आस्रव—आस्रव १ २८२ ब ।

वाचिक विनय—विनय ३ ५४६ ब ।

वाचिक व्युत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३ ६२० ब ।

वाच्य—अनेकात (सापेक्ष धर्म) १ १ ६ अ, नय २ ५२८
ब ।

वाच्य-वाचक भाव—आगम १ २३२ ब, १.२३३ अ, नय
२ ५५० अ, संबंध ४.१२६ अ ।

वाटग्राम—३ ५३१ ब ।

वाटवान्—३.५३१ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ ।

वाण—३.५३१ ब, गणित २ २३३ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

वाणप्रस्थ—(दे. वानप्रस्थ) ।

वाणिज्य—३.५३१ ब, सावद्य ४ ४२० ब ।

वाणिज्य कर्मणि—आर्य १ २७५ अ ।

वाणी—३.५३१ ब, आगम १ २२७ ब, ओम् १.४६६ ब ।

वात—औदारिक शरीर १ ४७१ ब, वातवलय ३.५३२ अ ।

वातकायिक—दे० वायुकायिक ।

वातकुमार—३.५३१ ब, भवनवासी देव—निर्देश ३ २०८ अ, ३.२१० ब, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १ १६८, आयु १ २६५ । इन्द्र—निर्देश ३ २०८ अ, शक्ति आदि ३ २०८ ब । अवस्थान ३ २०६ ब, ३ ४७१, ३ ६१२-६१४ ।

वातकुमार देव—प्ररूपणा—बंध ३ १०२, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४ ३०५, त्रिसंयोगीभग १ ४०६ ब । सत् ४.१८८, संख्या ४ ६७, क्षेत्र २ १६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २ १०४, अतर १ १०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

वातपृष्ठ—मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

वातवलय—३.५३२ अ, लोक ४.४४० अ, चित्र ३ ४३६ ।

वातव्यतर—लेश्या ३ ४२५ ब ।

वात्सल्य—३.५३२ अ, उपकार १ ४१५ ब, निश्चय वात्सल्य ३.५३२ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५१ अ, ४ ३५८ ब ।

वात्सायन—३.५३३ अ, न्यायदर्शन २.६३४ अ ।

वाद—३.५३३ अ, एकात १ ४६५ अ, कथा २ २ अ, न्याय २ ६३३ अ-ब, स्याद्वाद ४ ४६७ ब ।

वाद (नरकपटल)—निर्देश २ ५८० ब, विस्तार २.५७६ ब, अकन ३ ४४१ । नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३ ।

वाद-न्याय—३.५३४ अ, इतिहास १.३४१ ब ।

वाद-महाणव—३.५३४ अ, अभयदेव १ १२७ अ, इतिहास १ ३३० अ, १ ३४२ अ ।

वाद-विवाद—अस्तेय १ २१४ अ, वाद ३.५३३ ब ।

वादाभास—वाद ३ ५३३ ब ।

वादिचक्र—३.५३४ अ, नंदिसघ १ ३२४ अ, इतिहास १.३३३ ब, १.३४७ अ ।

वादिचतुर्मुख—नंदिसघ १.३२५ ।

वावित्व ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४८ ।

वादिदेव सूरि—३.५३४ अ, इतिहास १.३३८ ब, १.३५१ ब, १.३५२ अ ।

वादिभूषण—नंदिसघ १.३२४ अ, इतिहास १ ३३३ ब ।

वादिराज—३.५३४ अ । प्रथम—मूलसघ १ ३२२ ब, इतिहास १.३२८ ब, १ ३४० ब । द्वितीय—द्राविडसंघ १ ३२० ब, इतिहास १.३३१ अ, १ ३४३ अ-ब । स्तोत्र ४.४४६ ब ।

वादिराज सूरि—द्राविडसघ १ ३२० अ ।

वादीन्द्र मुनि—आशाधर १.२८० ब ।

वादी—तीर्थकरवश २ ३८७ ।

वादीभसिंह (अजितसेन)—३.५३४ ब, इतिहास १ ३३१ ब, १.३४४ अ ।

वादीभसिंह (ओडय देव)—मूलसघ १ ३२२ ब, इतिहास १ ३२६ ब, १ ३४१ ब ।

वादबलि—अक्रियावाद १ ३२ अ ।

वानप्रस्थ—३.५३४ ब, आश्रम १ २८१ अ, सुल्लक २ १६० अ ।

वानप्रस्थ आश्रम—वर्णव्यवस्था ३.५२४ ब ।

वानरद्वीप—वानरवश १ ३३८ ब ।

वानरवश—इतिहास १ ३३८ ब ।

वानायुज—३.५३४ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

वापी—जम्बू-शाल्मली वृक्षस्थलो मे—निर्देश ३ ४५८ ब, विस्तार ३ ४६०, ३ ४६१ । नदीश्वर द्वीप मे—निर्देश ३ ४६३ ब, नामनिर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३, ४६१, अकन ३ ४६५ ।

वामदेव—३.५३४ ब, यदुवंश १.३३७ ।

वामदेव पंडित—इतिहास २.३३१ ब, १.३४५ अ ।

वामन—लोकपाल ३ ४६१ ब ।

वामन मुनि—इतिहास १.३३३ अ, १ ३४४ ब ।

वामनसंस्थान-नामकर्म-प्रकृति—४ १५४ ब, प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३ १३६ । बंध ३ ६७, बधस्थान ३.११० उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३ । त्रिसंयोगी भग १.४०४ । संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६६ अ ।

वामा—३.५३४ ब ।

वायव्य—३.५३४ ब ।

वायु—३.५३४ ब, अर्हतातिशय १.१३७ ब ।

वायुकायिक—३.५३४ ब, आयु १.२६४, काय २.४४१, जीव २.३३३ ब, जीवसमास २ ३४३, वनस्पति ३ ५०६ अ, लोक में अवस्थान ३ ५३५ अ । वक्रियिक ३.६०२ ब, स्थावर ४.४५३, ४.४५४ ब ।

वायुकायिक—प्ररूपणा—बध ३ १०४, बधस्थान ३ ११३, उदय १.३७६, उदय की विज्ञाना १ ३७३ अ, उदय स्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२६६, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४ २०७, सख्या ४ १०१, क्षेत्र २.२०१, स्पर्शन ४ ४८४, काल २ १०६, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० ब, अलबहुत्व १ १४५।

वायुकुमार देव—दे० वातकुमार।

वायुचारण ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५२ ब।

वायुधारणा—प्राणायाम ३ १५५ ब।

वायुनिरोध—प्राणायाम ३ १५५ ब।

वायुभूति—३ ५३५ ब, गणधर २ २१३ अ।

वायुमंडल—वायु ३.५३४ ब। बौद्धाभिमत ३ ४३४ अ।

वायुरथ—३.५३५ ब।

वायुवेग—यदुवश १ ३३७।

वायुशर्मा—गणधर २ २१२ ब।

वाराणसी—तीर्थकर सुपार्श्व तथा पार्श्वनाथ २ ३७६।

वारिणी—३.५३५ ब, विद्याधरनगरी धारिणी ३ ५४६ अ।

वारिषेण—३.५३५ ब, अनुत्तरोपपादक दशमी १ ७० ब।

वारिषेणा—गजदत्त के कूट की देवी ३.४७३ अ, ३ ६१४।

वारुणी—३ ५३५ ब, ३.५३६ अ, रुक्मवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६८, ३ ४६६। विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

वारुणी धारणा—वारुणी ३.५३५ ब।

वारुणीवर—३ ५३६ अ, चतुर्थ सागर द्वीप—निर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अंकन ३ ४४३, जल का रस ३ ४७० अ, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।

वार्क्षमूल—विद्याधरवश १.३३६ अ।

वार्क्षमूलिक—विद्याधरवश १.३३६ अ।

वार्ता—३.५३६ अ।

वार्तिक—३ ५३६ अ। अनुयोगद्वार १ १०२ अ।

वार्तिककर्म—अनुयोगद्वार १.१०२ अ।

वार्द्धल—नरकपटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३।

वार्धगण्य—३.५३६ अ, साख्यदर्शन ४.३६८ ब।

वार्षिक प्रतिक्रमण—कृतिकर्म २.१३६ ब, प्रतिक्रमण ३.११६ अ, व्युत्सर्ग ३.६२१ अ।

वाल्मीकि—३.५३६ अ, एकांत विनयवादी १.४६५ ब,

वैनयिक ३.६०५ अ, साख्यदर्शन ४.३६८ ब।

वाविल—३ ५३६ अ। नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।

वासना—३ ५३६ अ, सुख ४ ४३० अ।

वासनाकाल—अनन्तानुबन्धी १ ६१ ब, काल २ ८१ अ, अप्रत्याख्यानावरण १ १२६ ब, प्रत्याख्यानावरण ३ १३३ ब, संज्वलन ४ १२५ अ।

वासवत—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

वासव—३ ५३६ अ, कुरुवश १ ३३५ ब, गधर्व २ २११ अ, विद्याधरवंश १ ३३६ अ, हरिवश १ ३४० अ।

वासवकेतु—हरिवश १ ३४० अ।

वासुकि—३ ५३६ अ, कुरुवश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ, यदुवश १ ३३७। कुडलवर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३ ४७५ ब, अंकन ३ ४६७।

वासुदेव—३ ५३६ अ, तीर्थकर कृष्ण २.३७७, प्रतिनारायण ४ २० ब।

वासुदेव सार्वभौम—३ ५३६ अ।

वासुपूज्य—३.५३६ अ, तीर्थकर प्ररूपणा २ ३७६-३६१।

वाह—तैल का प्रमाण २.२१५ अ।

वाहिनी—३.५३६ अ, सेना ४.४४४ अ।

वाह्लिक—यदुवश १.३३७।

वाह्लीक—३.५३६ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

विदफल—३ ५३६ अ।

विदुसार—हरिवश १.३४० अ।

विष्य पर्वत—३.५३६ ब।

विष्यवर्मा—३.५३६ ब, आशाधर १ २८० ब, भोजवश १.३१० अ।

विष्यव्यासी—३.५३६ ब, साख्यदर्शन ४.३६८ ब।

विष्यशक्ति—३ ५३६ ब, प्रतिनारायण ४.२० ब।

विष्याचल—३ ५३६ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

विशति—आयुबधस्थान १ २५६ अ, प्ररूपणा ३ १४७ अ, मार्गणा (२० प्ररूपणा) ३.२६८ अ।

वि—विकलेद्रिय की सहनानी २ २१६ अ।

विकद—ग्रह २ २७४ अ, बलदेव ४.१८ अ।

विकथा—कथा २.२ अ, २.३ अ-ब, समिति ४ ३४० ब, साधु ४.४०५ ब।

विकल—३.५३६ ब।

विकलचारित्र—सयम ४.१३७ अ।

विकलन—३.५३६ ब।

विकलप्रत्यक्ष—प्रत्यक्ष ३.१२३ अ।

विकलादेश—३.५३६ ब, सकलादेश ४.१५६ ब, सप्तभंगी

४३१५ ब, ४३१६ अ ।

विकलादेशी—नय २५१७ अ ।

विकलेन्द्रिय—३५३७ अ, सहनानी २.२१६ ब । निर्देश २.३६७, अवगाहना १.१७६ आयु १.२६३, १२६४, जन्म २३१५ अ, जीवसमास २.३४३, त्रस २३६८, वेद ३५८७ अ, सकलेश विशुद्धि स्थानो का अल्पबहुत्व ११६०, सजी ४१२२ ब, सस्थान १.३७४ अ ।

विकलेन्द्रिय (प्ररूपणा)—बध ३.१०३, बधस्थान ३११३, उदय १३७८, उदयस्थान १३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४२६६, ४३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४१६५, सख्या ४.६६, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४४८३, काल २१०६, अंतर १११, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व ११४५ ।

विकल्प—३५३७ अ, आकार १.२१८ ब, केवलज्ञान २१५५ अ, धर्मध्यान २.४८५ ब, नय २५१४ अ, २.५१६, पर्याय ३.४५ ब, मनोयोग ३२७७ ब, सल्लेखना ४३८२ ब ।

विकल्पनय—नय २५२३ अ ।

विकल्प समा—३.५३६ अ ।

विकस—ग्रह २२७४ अ ।

विकार—३५३६ अ, कषाय २.३६ ब, काम के दश विकार २.४२ ब, विनय ३५३६ अ, पर्याय ३.४५ ब ।

विकार्य कर्म—कर्ता-कर्म २१७ अ ।

विकाल—ग्रह २२७४ अ ।

विकृत गति—गति २२३५ ब ।

विकृतवान्—३.५३६ ब । हरिक्षेत्र का नाभिगिरि—निर्देश ३४५२ ब, नामनिर्देश ३४७१ अ, विस्तार ३४८३, ३४८५, ३४८६, अकन ३.४४४, ३४६४ के सामने, चित्र ३.४५२ ब, वर्ण ३४७७ ।

विकृति—३५३६ ब, निर्विकृति २६२६ ब ।

विक्रम—३५३६ ब ।

विक्रमप्रबध टीका—३५३६ ब ।

विक्रम संवत्—इतिहास १३०६ अ ।

विक्रमादित्य—३.५३६ ब, गुप्तवश १३१५, मौर्यवंश १३१३ ।

विक्रांत—३५३६ ब । नरकपटल—निर्देश २५७६ ब, विस्तार २५७६ ब, अंकन ३४४१ । नारकी—अवगाहना ११७८, आयु १२६३ ।

विक्रांतकौरव—इतिहास १.३४४ अ ।

विक्रिया—३५३६ ब, देवगति २.४४६ ब, नरक गति

२५७४ अ, वैक्रियिक ३६०२ अ ।

विक्रिया ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १४५०, परिहार-विशुद्धि समय ३३७ अ ।

विक्रिया ऋद्धिधारी—तीर्थकर सघ २३८६ ।

विक्षेप—३५३६ ब, ध्यान २४६५ अ ।

विक्षेपिणी कथा—उपदेश १.४२५ अ, १४२६ अ, कथा २२ ब, श्रोता ४.७५ ब ।

विगलि—तीर्थकर स्वयभू २३७७ ।

विज्ञप्ति—३५३६ ब ।

विज्ञान—३.५३६ ब, अध्यवसान १५२ अ, मतिज्ञान ३.२५५ ब ।

विज्ञानभिक्षु—३५३६ ब, योगदर्शन ३३८४ अ, साख्य दर्शन ४३६८ ब ।

विज्ञानवाद—३५३६ ब, बौद्धदर्शन ३१८७ अ ।

विज्ञानाद्वैत—अद्वैतवाद १४७ ब, बौद्धदर्शन ३१८७ अ ।

विज्ञानामृतभाष्य—साख्यदर्शन ४३६८ ब ।

विग्रह—३५४० अ ।

विग्रहगति—३.५४० अ, उपपाद १.४२७ ब, अवगाहना ११७८ अ, आनुपूर्वी १२४७ अ-ब, कार्मणकाययोग २७६ ब, जीवप्रवेश २३३६ ब, निगोद वनस्पति ३५०५ अ, जन्म २३१२ ब, पर्याय ३.४३ अ, वनस्पति (निगोद) ३.५०५ अ, भुजगारबध (स्थिति) ४४५६ ब, मरण ३२८६ ब, विग्रहगति ३.५४१ अ, वेद ३५८७ ब, सस्थान (आनुपूर्वी) १२४७ अ, स्थिति (बध) ४.४५६ ब ।

विघट—राक्षसवश १.३३८ अ ।

विघ्न—३५४१ ब, अर्हतातिशय १.१३७ ब ।

विचय—३.५४१ ब ।

विचार—३५४१ ब, नय २५२० ब ।

विचारस्थान—स्थिति ४४५७ ब ।

विचारणा—ऊहा १.४४५ ब, विचय ३५४१ ब ।

विचिकित्सा—निर्विचिकित्सा ३.६२७ अ ।

विचित्र—३५४२ अ, कुरुवश १३३५ ब, विचित्रकूट यमकगिरि का रक्षक देव ३४५३ अ ।

विचित्रकूट—३५४२ अ, यमकगिरि—निर्देश ३४५३ अ, नामनिर्देश ३४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३४८६, अकन ३४४४, ३४५७, ३.४६४ के सामने, चित्र ३४५३ अ, वर्ण ३४७७ । विद्याधर नगरी ३५४५ अ ।

विचित्रगुप्त—चक्रवर्ती ४.१० ब ।

विचित्रवाहन—भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ ।

विचित्रवीर्य—कुरुवंश १ ३३५ ब ।

विचित्रा—३ ५४२ अ, सुमेरु के वनों की दिक्ककुमारी ३.४७३ ब ।

विचित्राश्रयाकीर्ण—३.५४२ अ, सुमेरु ४.४३७ अ ।

विच्छेद—आगम १.२२६ ब ।

वि०छे० छे०—घनलोक के अर्द्धच्छेद की सहनानी २.२१६ ब ।

विजय—३.५४२ अ, अच्युत १ ४१, कुरुवंश १ ३३६ अ, ग्रह २ २७४ अ, चक्रवर्ती का तथा उसके पिता का नाम ४ १० अ, ४ ११ ब, तीर्थकर नमिनाथ के पिता तथा थोता का नाम २.३८०, २ ३६१, तीर्थकर श्रेयास के समय बलदेव २ ३६१, तीर्थकर सुपाश्वरनाथ का यक्ष २ ३७६, तीर्थकर भाविकालीन २ ३७७, बलदेव का नाम ४.१६ अ, यदुवंश १ ३३७, विद्याधर वंश १ ३३६ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ । श्रुत-केवली (मूलसंघ) १ ३१६, १.३२८ अ ।

विजय कवि—इतिहास १ ३४६ अ ।

विजयकीर्ति—३.५४२ अ, नदिसंघ १ ३२४ अ, इतिहास १ ३३३ अ ।

विजय कूट—गजदत्तो के कूट—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३ ४४४, ३.४५६ । निषध पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३ ४४४ । रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८ ।

विजयगिरि—चक्रवर्ती ४ १३ अ, ४ १५ ब ।

विजयगुप्त—गणधर २ २१२ ब ।

विजयचंद्र—काष्ठासंघ १.३२७ अ ।

विजयचरी—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ ।

विजयदेव—विजयद्वार का रक्षक देव ३ ६१५ अ, इसका नगर ३ ६१२ ब, आयु बध के योग्य परिणाम १ २५८ ब ।

विजयद्वार—जम्बूद्वीप की जगती का पूर्वद्वार—निर्देश ३.४४४ ब, विस्तार ३ ४८४, अंकन ३ ४४४ ।

विजयनदि—देशीय गण १.३२५ । इतिहास १ ३३१ अ ।

विजयनगर—३ ५४२ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ ।

विजयपुर—प्रतिनारायण ४.२० ब, बलदेव ४ १६ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ ।

विजयपुरी—३ ५४२ ब, विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७६-४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ ।

विजय महाराज—कुरुवंश १.३३५ ब ।

विजयमित्र—गणधर २ २१२ ब ।

विजयवंश—३.५४२ ब ।

विजय वर्णी—इतिहास १.३३२ ब, १.३४५ अ ।

विजयवर्मा—३.५४२ ब, भोजवंश १ ३१० अ ।

विजयवान्—विदेह वक्षार—निर्देश ३.४६० अ, नाम-निर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४६० अ, ३ ४६४ के सामने (चित्र सं० ३७), वर्ण ३ ४७७ । इस वक्षार का कूट—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४ हरिक्षेत्र का नाभि-गिरि—निर्देश ३ ४५२ ब, नामनिर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने (चित्र सं० ३७), चित्र ३ ४५२ ब, वर्ण ३ ४७७ ।

विजय विमान—३.५४२ अ । अनुत्तर स्वर्ग का विमान—निर्देश ४ ५१६ अ, अंकन ४.५१५, ४ ५१७, देव ४ ५१० ब । चक्रवर्ती ४ १० ब ।

विजयसागर—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ ।

विजयसिंह—इतिहास १ ३३३ अ ।

विजयसेन—३ ५४२ ब, श्रुतकेवली १ ३१६ । नागसेन के गुरु—इतिहास १ ३३० अ । काठासंघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३२८ अ ।

विजयसेना—तीर्थकर अजितनाथ २ ३८० यदुवंश १ ३५७ ।

विजया—३ ५४२ ब, तीर्थकर मल्लिनाथ की यक्षिणी २.३७६, तीर्थकर वासुपूज्य का माता २ ३८०, तीर्थकर देवयश, बाहू तथा विशालभद्र की माता २ ३६२ । बलदेव की माता ४ १७ ब । नन्दीश्वर द्वीप की वाी—निर्देश ३ ४६३ अ, नामनिर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४६१, अंकन ३ ४६५ । रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६८, ३ ४६९ । विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नाम-निर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७६-४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६० अ, ३.४६२ विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

विजयाचार्य—३ ५४२ ब, अपराजित १.११६ अ ।

विजयार्ध—३ ५४२ ब, प्रतिनारायण ४ २० अ, वानरवंश १ ३३८ ब ।

विजयार्ध कुमार—विजयार्ध का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४ ।

विजयार्ध गिरि—निर्देश ३ ४४८ अ, ३ ४६० अ, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, अंकन ३.४४४, ३ ४४७, ३ ४६४

के सामने (चित्र स० ३७), चित्र ३.४४८ अ, वर्ण
३.४७७, गणना ३.४४५ अ ।

विजयाश्रिता—जाति २.३२६ ब ।

विजयिल—गणधर २.२१२ ब ।

विजयोदया टीका—३.५४२ ब, इतिहास १.३४१ ब ।

विजस्का—३.५४२ ब ।

विजाति—३.५४२ ब । उपचार १.४१६ ब ।

विजिगीषु कथा—३.५४२ ब, कथा २.२ अ ।

विजिष्णु—३.५४२ ब, ग्रह २.२७४ अ ।

विडीषधि ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५५ ब ।

वितंडा—३.५४२ ब, न्याय २.६३३ अ-ब, वाद ३.५३३ ब ।

विनत—३.५४३ अ, शब्द ४.३ अ ।

वितथ—३.५४३ अ ।

वितर्क—३.५४३ अ, ऊहा १.४४६ अ ।

वितस्ता—३.५४३ अ ।

वितस्ति—३.५४३ अ, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ अ, २.२१७
अ ।

वित्तसार—इतिहास १.३४५ ब ।

विदर्भ—३.५४३ अ, तीर्थकर सुविधि २.३८७ अ ।

विदर्भपुर—३.५४३ अ ।

विदल—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब ।

विदारण क्रिया—क्रिया २.१७४ ब ।

विदिशा—३.५४३ अ, दिशा २.४३३ ब ।

विदुर—३.५४३ अ, कुरुवंश १.३३६ अ ।

विदरथ—यदुवंश १.३३७ ।

विदेह—३.५४३ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब, ३.२७६ अ ।

विदेहकूट—गजदत्तो के कूट—निर्देश ३.४७२ ब, ३.४७३
अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४, ३.४५७ । नील
पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार
३.४८३, अंकन ३.४४४ ।

विदेहक्षेत्र—३.५४३ अ, कुदकुद २.११७ ब, विदेह ३.५४३
ब, निर्देश ३.४४६ अ, विस्तार ३.४७६-४८१, अंकन
३.४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र स० ३७), बत्तीस
विदेह नामनिर्देश ३.४७० ब । जैनाभिमत ३.४३१ ब,
समवसरण ४.३३१ ब ।

विदेहक्षेत्र (कर्मभूमि)—निर्देश ३.२३५ ब, अवगाहना
१.१८०, आयु १.२६३, १.२६४, दुःखमा-सुखमाकाल
२.६३, सत् प्ररूपणा ४.१८४ अ ।

विहावण—३.५४३ ब ।

विद्वणू (कवि)—३.५४३ ब ।

विद्वाशन—अनशन १.६६ अ, अपवाद मार्ग २.१२१ अ,

तप २.३६० अ ।

विद्या—३.५४३ ब, मंत्र ३.२४५ ब, विद्याधर वंश
१.३३६ अ ।

विद्या (दोष)—आहार १.२६१ ब, वसतिका ३.५२६ ब ।

विद्या कर्मार्थ—आर्थ १.२७५ अ, साव्य ४.४२१ अ ।

विद्याधर—३.५४४ ब, चकार्त्तो ४.१५ ब, चित्त १.३३६
ब, जातियाँ १.३३६ अ । प्रतिनारायण ४.२० अ,
वश १.३३८ ब, सत् प्ररूपणा ४.१८४ ब ।

विद्याधर जिन—जिन २.३२६ अ ।

विद्याधरलोक—निर्देश ३.५४४ ब, कालविभाग २.६२ अ,
२.६३, नगरियाँ ३.५४५ अ, नगरियों की गणना
३.४४५ अ, अमन ३.४४८ । धातकीखड मे
३.४६२ ३, पुष्करार्ध द्वीप मे ३.४६३ ब ।

विद्याधरवंश—इतिहास १.३३८ ब ।

विद्यानंद—इतिहास १.३२६ ब, १.३४१ ब ।

विद्यानंद महोदय—३.५४६ अ, इतिहास १.३४१ ब ।

विद्यानंदि—३.५४६ अ । प्रथम—देखिए विद्यानंद ।
द्वितीय—नदिसघ १.३२३ ब, १.३२४ अ, इतिहास
१.३३३ अ, १.३४५ अ । तृतीय—इतिहास १.३३३
ब, १.३४६ अ । चतुर्थ—इतिहास १.३३३ ब ।

विद्यानिकाय—विद्याधरवंश १.३३६ अ ।

विद्यानुवाद (पूर्व)—३.५४६ ब, रुद्र ४.२२ ब, श्रुतज्ञान
४.६६ अ ।

विद्याप्रदान—अपवादमार्ग १.१२२ अ ।

विद्याभूषण भट्टारक—नदिसघ १.३२४ अ ।

विद्यारण्य—वेदात ३.५१५ ब ।

विद्याश्रमण—श्रुतकेवली ४.५५ अ ।

विद्युच्चर—३.५४६ ब ।

विद्युजिह्व—३.५४६ ब, ग्रह २.२७४ अ ।

विद्युत्—देवकुरु का द्रह—निर्देश ३.४५६ अ, नामनिर्देश
३.४७४ अ, विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अंकन ३.४४४,
३.४५७, ३.४६४ के सामने ।

विद्युत्करण—३.५४६ ब ।

विद्युत्कुमार—३.५४६ ब । भवनवासी देव—निर्देश ३.२१०
अ, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १.१६८, आयु
१.२६५ । इद्र—निर्देश ३.२१० ब, शक्ति आदि
३.२०८ ब, अवस्थान ३.२०६ ब, ३.६१२-६१४ ।

विद्युत्कुमार (देव प्ररूपणा)—बध ३.१०२, बधस्थान
३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब,
उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व
४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२८८, ४.३०५, त्रिसयोगी

भग १.४०६ ब। सत् ४ १८८, संख्या ४.६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्श ४.४८१, काल २.१०४, अतर १ १०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५ अ।

विद्युत्केश—३ ५४६ ब, राक्षसवश १.३३८ ब।

विद्युत्प्रभ—३ ५४६ ब, चक्रवर्ती ४.१५ अ, यदुवश १.३३७, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब, ३ ५४६ अ।

गजदन्त—निर्देश ३.४५६ ब, नामनिर्देश ३.४७१ व, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, ३ ४८६ अंकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने (चित्र स० ३७), चित्र ३ ४५२ ब, वर्ण ३ ४७७, इसका कूट तथा देव ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४४४, ३ ४५७।

विद्युत्त्वान्—विद्याधरवश १ ३३६ अ।

विद्युदाभ—विद्याधरवश १ ३३६ अ।

विद्युद्दंष्ट्र—३ ५४६ ब। विद्याधरवश १.३३६ अ।

विद्युद्दृढ—विद्याधरवश १ ३३६ अ।

विद्युद्वेग—विद्याधरवश १.३३६ अ।

विद्युन्मुख—विद्याधरवश १ ३३६ अ।

विद्युशता—अर्हन्तातिशय १ १४१ ब। १ १३७ ब।

विद्योपजीवन—३.५४६ ब।

विद्वावण—अधःकर्म १ ४८ अ। विद्वावण ३ ५४३ ब।

विद्वावण कर्म—कर्म २ २६ अ।

विद्रुम—बन्धदेव ४ १६ ब, यदुवश १.३३७ ब।

विद्वज्जनबोधक—३.५४६ ब।

विद्वेषण मन्त्र—मन्त्र ३ २४५ ब।

विद्य—३ ५४६ ब, मतिज्ञान ३.२५४ ब।

विद्या—पर्याय ३ ४५ ब।

विद्याता—३ ५४६ ब।

विधान—३ ५४६ ब, अनुयोगद्वार १.१०२ अ, संख्या ४ ६२ अ।

विधि—३ ५४७ अ, अनेकात (सापेक्षधर्म) १ १०६ अ, तत्त्व २ ३५३ अ, द्रव्य २ ४५४ ब, निषेध २ ६२६ अ, सकलादेण ४ १५७ अ, सप्तभगी ४ ३१८ ब, ४.३१६ ब, स्याद्वा ४ ४६८ अ, ४ ४६६ अ, ४ ५०० ब।

विधिदानक्रिया—संसार ४ १५१ ब।

विधिवाक्य—वाक्य ३ ५३१ अ।

विधिबिवेक—मीमांसादर्शन ३ ३११ अ।

विधिसाधक हेतु—हेतु ४ ५३६ ब।

विधु—‘एक’ का सैद्धांतिक नाम २ २१८ ब।

विध्यात-संक्रमण—संक्रमण ४.८४ अ, ४ ८७ ब। अल्पबहुत्व १.१७४ ब।

विनिमि—उग्रवश १.३३५ ब, गणधर २.२१३ अ, भोज

वश १ ३३६ ब, मातगवश १ ३३६ ब, विद्याधरवश १ ३३८ ब, १ ३३६ अ।

विनयधर—३ ५४७ अ, पुन्याटमघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३२८ अ।

विनय—३ ५४७ अ, ३.५५२ ब, अतिचार १ ४४ अ, सल्लेखना ४ ३६० ब।

विनयकर्म—कर्म २ २६ ब, कृतिकर्म २.१३३ ब।

विनयचंद्र—३ ५५४ ब, काष्ठासघ १.३२७ अ, इतिहास १ ३३२ अ।

विनयचरी—विद्याधर नगरी ३ ४४५ अ।

विनयचारी—३.५५५ अ।

विनयतप—विनय ३ ५४८ अ, ३ ५५१ अ।

विनयदत्त—३ ५५५ अ, श्रुतकेवली १ ३१७, १.परि०/ ३ ६, इतिहास १ ३२८ ब।

विनयपुरी—३.५५५ अ।

विनयभद्र—आशाधर १ २८० ब।

विनय मिथ्यात्व—मिथ्य गुणस्थान ३ ३०८ ब।

विनय लालसा—३.५५५ अ, सप्तऋषि ४ ३१३ अ।

विनयवादी—एकात १ ४६५ अ-ब, वैनयिक ३ ६०५ अ।

विनयविजय उपाध्याय—३ ५५५ अ।

विनयशुद्धि—प्रत्याख्यान ३ १३२ अ, शुद्धि ४.३६ अ।

विनयश्री—वैमानिक इरो को वल्लभिका देवी ४.५१३ ब।

विनयसपन्नता—विनय ३ ५४८ अ, ३.५५० ब।

विनयसेन—३ ५५५ अ। प्रथम—पञ्चस्तूपसघ १ ३२६ ब, इतिहास १ ३३७ अ। द्वितीय—काष्ठासघ १ ३२१ अ, इतिहास १ ३३८ अ।

विनयोपसंयत—समाचार ४ ३३७ अ।

विनायक—३.५५५ अ, राक्षस ३ ४०६ ब।

विनायक यंत्र—यंत्र ३ ३६०।

विनाश—३ ५५५ अ, गुण २.२४२ अ, नय २.५५० ब।

विनिमय—३ ५५५ अ।

विनिहात्र—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

विनीत—गणधर २ २१२ ब।

विनीता—तीर्थकर ऋषभ तथा अनंतनाथ २ ३७६, भरत क्षेत्र ३ २०७ अ ३.४४६ अ।

विनोदीलाल—३.५५५ अ, इतिहास १ ३३२ ब।

विपक्ष—३ ५५५ अ।

विपरिणाम—३ ५५५ अ।

विपरिणामना—विपरिणाम ३.५५५ अ।

विपरीत मत—विपर्यय ३.५५५ ब।

विपरीत मिथ्यात्व—विपर्यय ३.५५६ अ।

विपरीतवाद—एकात १ ४६५ ब, विपर्यय ३.५५६ अ।

विपरीत श्रद्धान—मिथ्यादर्शन ३.३०० ब, श्रद्धान ४.४६ अ।

विपरीत श्रद्धानी—मिथ्यादृष्टि ३ ३०४ अ।

विपरीताभिनिवेश—सम्यग्दर्शन ४.३५६ ब।

विपर्यय—३ ५५५ ब।

विपर्यय ज्ञान—विपर्यय ३ ५५५ ब।

विपर्यय मिथ्यात्व—विपर्यय ३.५५५ ब।

विपल—३ ५५६ अ, काल का प्रमाण २.२१७ अ।

विपलांश—काल का प्रमाण २ २१७ अ।

विपाक—३ ५५६ अ, उदय १ ३६५ ब, ध्येय २.५०० अ, बध ३ १७१ ब।

विपाकजा निर्जरा—निर्जरा २ ६२२ अ।

विपाक-प्रत्ययिक बंध—बध ३.१७२ अ।

विपाक-विचय—धर्मध्यान २ ४८० अ।

विपाकसूत्र—३ ५५६ ब, श्रुतज्ञान ४.६८ अ।

विपुल—३.५५६ ब, ग्रह २ २७४ अ, भाविकालीन तीर्थकर २ ३७७, मन-पर्यय ज्ञान ३ २६६ अ।

विपुलख्याति—तीर्थकर संभवनाथ २ ३७८।

विपुलत्व—मन पर्ययज्ञान ३.२६६ अ।

विपुलमति—मन पर्ययज्ञान ३.२६६ अ।

विपुलवाहन—संभवनाथ व अभिनंदननाथ २ ३७८।

विपुलाचल—इंद्रभूति १.२६६ ब।

विष्पाणस मरण—मरण ३ २८० अ।

विप्रतिपत्ति—३ ५५६ ब।

विप्राणस मरण—मरण ३.२८२ अ।

विलुप्त—३.५५६ ब।

विभंग ज्ञान—३ ५५६ ब, अपर्याप्त १ १६५ ब, अवधिज्ञान १.१८६ ब, १.१६० अ, १.१६५ अ-ब, गुणस्थान २ २६१, जीवसमास २.२६१।

विभंग ज्ञान (प्ररूपणा)—बध ३.१०५, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३६३ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८३, १.४०७ अ, सत्त्वस्थान ४ ३००, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०७ अ। सत् ४ २३४, सख्या ४.१०६, भेत्र २ १६६, २.२०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २ ११३, अतर १ १५, भाव २ २२१ अ, अलंबित्व १ १५०।

विभंगज्ञानी क्षेत्र २ १६६ अ।

विभंगदर्शन—वर्णन २.४१५ ब।

विभंगा—३.५५६ ब। कुण्ड—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३.४६०, ३ ४६१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने

(चित्र स० ३७)। गणना ३.४४५ अ। नदी—निर्देश ३ ४५६ अ, २ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३.४८६, ३ ४६०, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, गणना ३ ४४५ अ।

विभक्ति—३ ५५६ ब, अनुयोगद्वार १ १०३ अ।

विभक्तिकरण—आदेश १.२४५ ब।

विभाग-निष्पन्न क्षेत्र—क्षेत्रप्रमाण २.२०६ अ।

विभाव—३ ५५७ अ, निमित्त २.७४ ब, पर्याय ३.४६ अ, सापेक्षधर्म (अनेकात) १.१०६ अ, अनित्य पर्यायाधिक नय २ ५५१ ब।

विभाव अर्थपर्याय—पर्याय ३ ५० अ।

विभाव-क्रिया—क्रिया २.१७३ ब, विभाव ३ ५५७ ब।

विभाव-गति—गति २ २३५ ब।

विभाव-गुण—गुण २ २४० ब।

विभाव-गुणपर्याय—पर्याय ३ ५० अ।

विभाव-गुणव्यजनपर्याय—३ ५० अ।

विभाव-द्रव्यपर्याय—३.४६ ब।

विभाव-द्रव्यव्यजनपर्याय—३.४६ ब।

विभाव-पुद्गल—पुद्गल ३ ६७ अ।

विभाव शक्ति—बध ३ १७७ अ।

विभाव-स्वभाव—विभाव ३ ५५६ अ।

विभाषा—३ ५६२ ब, अनुयोगद्वार १.१०१ ब।

विभीषण—३ ५६२ ब, राक्षसवश १ ३३८ ब।

विभु—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ।

विभुत्वशक्ति—३ ५६२ ब।

विभूति—भरत चक्रवर्ती ४.१५ अ।

विभ्य—३ ५६२ ब।

विभ्रम—३ ५६२ ब।

विभ्रान्त—३ ५६२ ब, नरक पटल—निर्देश २ ५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अकन ३ ४४१। नारकी - अव-गाहना १ १७८, आयु १ २६३।

विमर्श—३ ५६२ ब।

विमल—३ ५६२ ब, अच्युतेद्र विमान ४ ५११ ब, आरणेद्र विमान ४ ५११ ब, क्षीरवर सागर का देव ३ ६१४, ग्रह २ २७४ अ, चक्रवर्ती ४.१० ब, तीर्थकर अजित नाथ २ ३७८, तीर्थकर भाविकालीन २.३७७, विद्या-धर नगर ३ ५४६ अ।

विमल (कूट)—गजदत का कूट—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४, ३.४५७। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ-ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६६।

विमल (स्वर्गपटल)—सौवर्ग पटल—निर्देश ४.५१६,
विस्तार ४.५१६, अंकन ४.५१६ ब, देव आयु
१.२६६ ।

विमलकीर्ति—इतिहास १ ३३१ ब ।

विमलदास—३.५६२ ब, अनंत देव १.५६ ब, इतिहास
१ ३३३ अ ।

विमलदेव—३.५६२ ब, इतिहास १.३३० अ ।

विमलनाथ—३.५६२ ब, तीर्थकर प्ररूपणा २ ३७६-३६१ ।

विमलपुराण—३.५६३ अ, इतिहास १ ३४७ ब ।

विमलप्रभ—३.५६३ अ, क्षीरवर सागर का देव ३.६१४,
भूत भावि तीर्थकर २ ३७७ ।

विमलवाहन—३.५६३ अ, कुलकर ४ २३, तीर्थकर अजित
व सभवनथ आदि २.३७८ । भावि शलाकापुरुष
४.२५ अ ।

विमलसुंदरी—नारायण ४ १८ ब ।

विमलसूरि—३.५६३ अ, इतिहास १ ३२६ अ, १.३४०
ब ।

विमला—कुलकर ४.२३, व्यनरेद्र गणिका ३ ६११ ब ।

विमलेश्वर—३.५६३ अ, भूतकालीन तीर्थकर २.३७७ ।

विमा—३.५६३ अ ।

विमान—३.५६३ अ । ज्योतिषलोक—निर्देश २ ३५१ ब,
बनावट २ ३५१ ब, विस्तार २ ३५१ ब, अवस्थान
२ ३४६ ब, अंकन २.३४७, चित्र ३ ३४७ । चर-अचर
भेद २ ३४६ ब, देवयान ४.५११ ब । सन्लेखना
४ ३६४ अ, साधु ४.५०४ ब । स्वर्गलोक—निर्देश
४.५१४ ब, विस्तार ४.५२१ ब । अंकन ४.५१५,
बनावट ४.५०१ अ, सख्या ४.५२० अ, अवस्थान
४.५१६-५१८, ४.५२० ब, चित्र ४.५१७ ।

विमानपंक्ति व्रत—३.५६३ ब ।

विमानवासी देव—निर्देश २.४४५ ब, ४.५१० अ, अव-
गाहता १ १८०, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १ २६६-
२६६ ।

विमुख—३.५६३ ब ।

विमुखी—३.५६३ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब ।

विमोच—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

विमोचिता—३.५६३ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

विमोचितावास—अस्तेय १ २१४ अ ।

विमोचिपुर—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

विमोह—३.५६३ ब ।

विरक्त—ध्याता २ ४६३ ब ।

विरजस्का—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

विरजा—३.५६३ ब । नदीश्वर द्वीप की बायी—निर्देश
३.४६३ ब, नामनिर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४६१,
अंकन ३ ४६५ । विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ,
नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६ ३ ४८०,
३ ४८१, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र
सं ३७), चित्र ३ ४६० अ ।

विरत—३.५६३ ब, ग्रह २.२७४ अ ।

विरताविरत—३.५६४ अ, सचतासंयत ४.१३४ अ ।

विरति—३.५६४ अ, उपदेश (परद्रव्यविरति) १ ४२४ अ,
संयम ४ १३८ ब ।

विरलन—३.५६४ अ, गणित २.२२३ ब ।

विरलन देय प्रक्रिया—३.५६४ अ, गणित २.२२३ ब ।

विरहकाल—अंतर १.३ अ, १.६ ब ।

विराग—३.५६४ अ, धर्मध्यान २.४८० अ, प्रत्याख्यान
३ १३२ ब ।

विराट—३.५६४ अ ।

विराधन—३.५६४ अ ।

विराधित—३.५६४ अ ।

विरुद्ध—जीव २ ३३५ अ, न्याय २.६२३ ब ।

विरुद्धधर्मत्व शक्ति—३.५६४ अ ।

विरुद्ध राज्यातिक्रम—३.५६४ अ, अस्तेय १ २१३ ब ।

विरुद्ध हेतुभास—३.५६४ अ ।

विरोध—३.५६४ ब, अनेकाते १ १०६-१११, आगमार्थ
१ २३२ अ, उपदेश १.४२५ अ ।

विरोधी धर्म—अनेकाते १.१०८ ब, १.१०६-१११, जीव
२.३३७ ब ।

विरोधी हिंसा—हिंसा ४.५३५ अ ।

विलया—स्त्री ४ ४५० अ ।

विलसित—३.५६५ अ ।

विलास—३.५६५ अ ।

विलेपन—३.५६५ अ, निक्षेप २ ६०२ ब, पूजा ३ ७६ अ ।

विल्लाल—३.५६५ अ ।

विलहण—आशाधर १ २८० अ ।

विवक्षा—३.५६५ अ, एकाते १ ४६१ अ-१.४६३ अ,
सामान्य ४ ४१३ अ, स्याद्वाद ४.४६७ ब, ४.४६८ ब,
४.४६९ ब ।

विवर—३.५६५ अ, लवणसागर के पाताल—निर्देश
३ ४६० ब, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, स्वरूप ३ ४६० ब,
विस्तार ३.४७६, अंकन ३ ४६१, चित्र ३.४६१,
३ ४६४ के सामने ।

विवर्त—३.५६५ अ, परिणाम ३ ३१ अ ।

विवाद—वाद ३.५३३ अ-ब ।

विवाह—३.५६५ अ।

विवाह क्रिया—पत्कार ४.१५१ ब, ४.१५२ ब।

विवाह पटल—३.५६५ ब।

विवाहिता स्त्री—४.४५० ब।

विविक्त—वसंतिका ३.५२७ ब।

विविक्त वसंतिका—वसंतिका ३.५२७ ब।

विविक्त शय्याशन—३.५६५ ब।

विवृत—योनि ३.३८७ अ।

विवेक—३.५६६ अ, प्रायश्चित्त ३.१६१ अ, विचय ३.५४१ ब।

विवेक प्रायश्चित्त—विवेक ३.५६६ अ।

विवेचन—३.५६७ अ।

विशद—३.५६७ अ।

विशदाचग्रह—अवग्रह १.१८२ अ, १.१८३ अ।

विशल्या—३.५६७ ब।

विशल्याकारिणी—३.५६७ ब, विद्या ३.५४४ अ।

विशाख—तीर्थकर मल्लिनाथ २.३८७।

विशाखदत्त—मूलसव १.३१६।

विशाखनदि—३.५६७ ब, प्रतिनारायण ४.२० ब।

विशाखभूति—३.५६७ ब, चक्रवर्ती ४.१६ अ।

विशाखयूप—मगध देश इतिहास १.३१२।

विशाखा—३.५६७ ब। तीर्थकर मुनार्थ, चद्रप्रभ व पार्श्व-
नाथ २.३८०, नक्षत्र २.५०४ ब।

विशाखाचार्य ३.५६७ ब, मूलसव (श्रुतकेवली) १.३१६,
१ परि०/२.३, चद्रगुप्त मौर्य १ परि०/२.७, इतिहास
१.३२८ अ।

विशालकीर्ति—आशाधर १.२८० अ, नदिसव भट्टारक
१.३२३ ब, इतिहास १.३३४ ब।

विशालनयन—रुद्र ४.२२ अ।

विशालनेत्र—कुंडलवर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५
अकन ३.४६७।

विशालप्रभ—तीर्थकर २.३६२।

विशाला—३.५६७ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

विशालाक्ष—३.५६७ ब, गणधर २.२१३ अ।

विशिष्ट—३.५६७ ब, कुंडलवर पर्वत के कूट का देव—
निर्देश ३.४७५ अ, अकन ३.४६७। गजदत्त का कूट
तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३,
अकन ३.४४४, ३.४५७।

विशिष्ट पद—अनेकात १.१०२ ब।

विशिष्टाहृत—वेदांत ३.५६७ ब।

विशुद्ध—३.५६७ ब, सम्यग्दर्शन (लेश्या) ४.३६३ अ।

विशुद्धता—करण (अधकरण) २.६ अ।

विशुद्ध परिणाम—स्थिति ४.४५८ ब।

विशुद्धि—३.५६८ अ, उदयाभाव १.३६६ ब, उपयोग
(अशुद्ध) १.४३१ ब, १.४३३ ब, उद्योग (शुभ)
१.४३३ अ। करणिक—अधकरण २.६-११, अति-
वृत्तिकरण २.१३-१४, अपूर्वकरण २.१२ अ, अल्प-
बहुत्व २.७ अ। त्रिकरण २.७ अ, मगध ज्ञान
३.२६७ ब, स्वाध्याय ४.५२६ अ।

विशुद्धि लब्धि—लब्धि ३.४१२ अ।

विशुद्धि व सक्लेश—विशुद्धि ३.५६६ ब।

विशुद्धि-स्थान—अल्पबहुत्व १.१६०, विशुद्धि ३.५६८ ब,
स्थान ४.४५२ ब।

विशेष—३.५७० अ, गणित २.२२६ ब, गुण २.२४० अ,
पर्याय ३.४५ ब, सप्तभगी ४.३१८ अ, सापेक्ष धर्म
(अनेकात) १.१०६ अ, सामान्य ४.४१२ अ।

विशेष उपयोग—आकार (ज्ञान) १.२१६ अ।

विशेष काल—सप्तभगी ४.३२३ अ।

विशेष क्षेत्र—क्षेत्र २.१६२ अ।

विशेष गुण—गुण २.२४०, २.२४२ ब, २.२४३ ब।

विशेषण—पक्ष ३.२ अ।

विशेषण-विशेष्य भाव—आगम १.२३३ ब, नय २.५४६ ब।

विशेष नय—२.५२३ ब।

विशेष विधि—आराम १.२३२ अ।

विशेष-संग्रह नय—नय २.५३४ अ।

विशेष-संग्रह भेदक व्यवहार नय—२.५५८ ब।

विशेष स्वभाव—स्वभाव ४.५०६ अ।

विशेषाभोचना—सल्लेखना ४.३६१ ब।

विशेषावश्यक भाष्य—३.५७० ब, इतिहास १.३४१ अ।

विशेष्य-विशेषण भाव—आगम १.२३३ ब, नय २.५४६
ब।

विशोक—३.५७० ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

विशोका—विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

विश्रमण-काल—अद्धा असक्षेप १.४७ अ।

विश्रुता—वैमानिक इन्द्रो की वल्लभिका देवी ४.५१३ ब।

विश्रेणी गति—विग्रहगति ३.५४१ अ।

विश्लेषण—३.५७० ब।

विश्व—३.५७० ब, कुरुवंश १.३३५ ब, १.३३६ अ, नक्षत्र
२.५०४ ब, लौकांतिक देव ३.४६३ ब।

विश्वकीर्ति—काण्ठासव १.३२७ अ।

विश्वकेतु—कुरुवंश १.३३५ ब।

विश्वचंद्र—काष्ठासघ १ ३२७ अ, नदिसघ भट्टारक १ ३२३ ब ।

विश्वतत्त्वप्रकाश—इतिहास १ ३४४ ब ।

विश्वध्वज—कुरुवश १ ३३५ ब ।

विश्वनंदि—३.५७० ब, नदिसघ भट्टारक १ ३२३ ब, बलदेव ४ १८ अ ।

विश्वनाथ—वैशेषिक दर्शन ३ ६०८ अ ।

विश्वभू—३.५७० ब ।

विश्वभूषण—३.५७० ब ।

विश्वरूप—यदुवश १ ३३७ ।

विश्वलोचन कोष—इतिहास १ ३४५ अ ।

विश्वसेन—३.५७० ब, कुरुवश १.३३५ ब, १ ३३६ अ, गणधर २.२१२ ब, तीर्थकर शांति तथा पार्श्वनाथ २ ३८० ।

विश्ववसु—हरिवश १ ३४० अ ।

विषंग—३.५७० ब ।

विष—३.५७० ब, अनुभाग १.६० ब, चैत्य २ ३०२ ब ।

विषकुभ—उपयोग १.४३४ अ, चारित्र २ २८८ ब, २ २६० अ ।

विषद—यदुवश १.३३६ ।

विषम—स्कंध ४ ४४८ अ ।

विषम दृष्टांत—३.५७० ब, दृष्टांत २ ४४० अ ।

विषमधारा—गणित २.२२६ अ ।

विषमित्र—यदुवश १ ३३६ ।

विषमोच्चिका—चक्रवर्ती ४.१५ अ ।

विष—३.५७० ब, इन्द्रिय १ ३०६ अ, सुख ४ ४३० ब ।

विषयत्याग—मिथ्यादृष्टि ३ ३०७ अ ।

विषयरुचि—सुख ४.४३० ब ।

विषयविराग—विराग ३ ५६४ अ ।

विषयसंरक्षणानंद—रौद्रध्यान ३.४०८ अ ।

विषयातीत—सुख ४ ४३२ ब ।

विषयाधीन—सुख ४ ४३० ब ।

विषयाभिलाष—राग ३ ३६५ ब ।

विषयासक्ति—उपयोग १.४३३ ब ।

विषय—३.५७१ अ ।

विषापहार स्तोत्र—इतिहास १.३४२ अ ।

विषुप—काल २.६१ ब ।

विष्कंभ—३.५७१ अ, गणित २ २३२ ब ।

विष्कंभक्रम—क्रम २.१७१ ब ।

विष्कंभ सूची—सूची ४ ४४२ अ ।

विष्ठा—३.५७१ अ, औदारिक शरीर १.४७२ अ, समिति ४.३४१ ब ।

विष्णु—३.५७१ अ, कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ, जीव २.३३३ ब, नक्षत्र २ ५०४ ब, तीर्थकर श्रेयास नाथ २ ३८०, निंदा २ ५८८ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०६ ब ।

विष्णुकुमार—३.५७१ अ, अकंपनाचार्य १ ३० ब ।

विष्णुदत्त—३.५७१ अ ।

विष्णुनंदि—३.५७१ अ, मूलसघ १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ ।

विष्णुयशोधर्म—३.५७१ अ, हूनवंश १ ३११ ब, १ ३१५ अ ।

विष्णुवर्धन—३.५७१ अ ।

विष्णुश्री—तीर्थकर श्रेयासनाथ २.३८० ।

विष्णुसजय—यदुवश १.३३७ ।

विष्णुस्वामी—वैष्णवदर्शन ३.६०६ अ ।

विसंयोजन—उपशम १ ४३६ ब ।

विसंयोजना—३.५७१ अ, उपशम १.४३७ ब ।

विसंवाद—वाद ३.५३३ अ, यो वक्रता ३ ३८५ ब ।

विसदृश—३.५७२ ब, परिणाम ३.३२ अ, सापेक्ष धर्म (अनेकांत) १.१०६ अ ।

विसर्जन—पूजा ३.८० ब ।

विसर्पण—जीव २.३३८ ब ।

विसृष्टांक तप—कायक्लेश २ ४७ अ ।

विस्तर सत्त्व त्रिभगी—इतिहास १.३३० ब, १ ३४२ ब ।

विस्तार—३.५७२ ब ।

विस्तार-दर्शनार्थ—आर्य १ २७५ अ ।

विस्तार-हवि—उपदेश १ ४२५ अ, सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब ।

विस्तार-विशेष—गुण २ २४१ अ ।

विस्तार-सम्यक्त्वार्थ—आर्य १.२७५ अ ।

विस्तार-सम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४ ३४८ ब ।

विस्तार-सामान्य—क्रम २.१७२ ब, द्रव्य २ ४५४ अ ।

विस्तारानत—अनंत १ ५५ ब ।

विस्तारासंख्यात—असंख्यात १ २०६ ।

विस्मय—सम्यग्दर्शन ४ ३७२ ब ।

वित्तसोपचय—३.५७३ अ, अल्पबहुत्व १.१४२ अ, १ १५७, आस्रव १.२८३ अ, कारण (अबद्धकर्म) २ ५६ ब, कर्मण १.७६ अ, गुण २.२४१ ब, प्रदेश ३.१३५ अ, बध ३.१७४ ब, वर्गणा ३.५१६ ब, संमूर्च्छन ४.१२८ अ ।

विहायोगति—३.५७३ अ ।

विहायोगति नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६ । बध ३.६७ अ, ३.६७, बधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४ । सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६६ ।

विहायोद्विक—उदय १.३७४ ब ।

विहार—३.५७३ ब, आयिका १.२७६ अ ।

विहारक्रिया सस्कार ४.१५२ अ ।

विहारवत् स्वस्थान—क्षेत्र २.१६२ अ, १.१६७-२०७ ।

विचार—विचार ३.५४१ ब ।

वीची—अनुवीची भाषण १.१०४ अ ।

वीतभय—३.५७५ ब ।

वीतभी—इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ ।

वीतराग—३.५७५ ब, अनगर १.६२ अ, अनुभव १.८५ ब, चारित्र २.२६३ अ, छद्मस्थ २.३०५ ब । मोक्ष ३.३२४ ब ।

वीतरागकथा—कथा २.२ अ, वाद ३.५३३ ब ।

वीतरागचारित्र—उत्सर्ग मार्ग १.१२१ अ, उपयोग (शुद्ध) १.४३१ अ, चारित्र २.२८५ अ, २.२८६ ब, २.२६० ब, पद्धति ३.६ अ, सम्यग्दर्शन ४.३५८ अ ।

वीतराग छद्मस्थ—उपशांत कषाय १.४४२ ब, छद्मस्थ २.३०५ ब, शुक्लध्यान ४.३६ अ ।

वीतरागता—उपयोग (शुद्ध) १.४३० ब, धर्म २.४६७ अ ।

वीतराग धर्मध्यान—उपयोग (शुद्ध) १.४३१ अ, पद्धति ३.६ अ ।

वीतराग वचन—आगम १.२३५ अ ।

वीतराग श्रमण—साधु ४.४०६ अ ।

वीतराग सम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४.३६० ब ।

वीतराग सम्यग्दृष्टि—सम्यग्दृष्टि ४.३७७ ब ।

वीतराग सुख—अनुभव १.८५ अ, सुख ४.४३२ अ ।

वीतराग स्तोत्र—३.५७५ ब, स्तोत्र ४.४४६ ब ।

वीतरागांश सवर १.४३२ अ ।

वीतशोक—३.५७६ अ, ग्रह २.२७४ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब ।

वीतशोका—३.५७६ अ, चक्रवर्ती ४.१० ब, तीर्थकर मल्लिनाथ २.३७८, बलदेव ४.१६ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब । नदीश्वर द्वीप की बापी—निर्देश ३.४६३ अ, नामनिर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४६१, अकन

३.४६५ । विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नाम निर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ ।

वीथी—चंद्र सूर्य की २.३४६ ब, समवसरण ४.३३० ब, ४.३३१ ।

वीर—३.५७६ अ, महावीर के लिए दे० महावीर, यदुवश १.३३६, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, हरिवश १.३४० अ, सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४.५१६ ब, देव आयु १.२६६ ।

वीर कवि—इतिहास १.३३१ अ, १.३४३ ब ।

वीरचंद्र—३.५७६ अ, प्रथम—नंदिसघ १.३२४ अ, इतिहास १.३३३ ब । द्वितीय—भिल्लक सघ १.३२२ अ, इतिहास १.३३३ अ ।

वीरचर्या—तप २.३६० अ, श्रावक २.४८ अ, ४.५२ ब ।

वीर-जयंती व्रत—३.५७६ अ ।

वीरनदि—३.५७६ अ, नदिसघ १.३२३ अ, देशीय गण १.३२४ ब, १.३२५, अभयनदि १.१२७ अ । इतिहास—प्रथम १.३२६ अ । द्वितीय १.३३० ब, १.३४२ ब । तृतीय १.३३० ब । चतुर्थ १.३३१ ब, १.३४४ अ ।

वीरनिर्वाण-क्रिया—कृतिकर्म २.१३६ अ ।

वीरनिर्वाण सबत्—इतिहास १.३०६ अ, १.३१० अ, १.३१६ ।

वीरभातंडी—३.५७६ ब, इतिहास १.३४३ अ ।

वीरवित—३.५७६ ब, पुन्नाटसघ १.३२७ अ ।

वीर-वैष्णव—वैष्णवदर्शन ३.६०६ अ ।

वीरशासनजयंती व्रत—३.५७६ ब ।

वीरसंघ विघटन १.३१७ ब ।

वीरसागर—३.५७६ ब, इतिहास १.३३४ ब ।

वीरसेन—३.५७६ ब, इक्ष्वाकुवश १.३३५ ब, तीर्थकर ऋषभानन २.३६२ ।

वीरसेन (आचार्य)—प्रथम—पचस्तूपसघ १.३२६ ब, इतिहास १.३२६ ब, १.३४१ ब । द्वितीय—काष्ठा सघ १.३२७ अ । माथुरसघ १.३२७ ब । सेनसंघ १.३२६ अ । इतिहास १.३३० अ । तृतीय—लाड-वागडसघ १.३२७ ब । इतिहास १.३३१ अ ।

वीरसेना—तीर्थकर ऋषभानन २.३६२ ।

वीरांगज मुनि—कल्की २.३१ ब ।

वीरानंद—चक्रवर्ती ४.१५ ब ।

वीरासन—आसन १.२८१ अ-ब, कृतिकर्म २.१३५ ब ।

वीरासन तप—कायक्लेश २४७ ब ।

वीर्य—३.५७६ ब, कुरुवंश १३३५ ब, तीर्थकर विशाल-
प्रभ २.३६२ ।

वीर्य (गुण)—३.५७६ ब, जीव २.३३७ अ, योग ३३७७
अ ।

वीर्य-चर्या—तप २३६० अ, श्रावक ४४८ अ, ४५२ ब ।

वीर्य-प्रवाद—३.५७७ अ, श्रुतज्ञान ४६८ ब ।

वीर्य लब्धि—३.४११ ब ।

वीर्यांतराय—अंतराय १२७ ब ।

वीर्यांतराय कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, १.२७,
स्थिति ४४६७, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३७ ।
बध ३.६७, बंधस्थान ३.११०, उदय १३७५, उदय-
स्थान १३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान
१.४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४२६४, त्रिस-
योगीभंग १.३६६, सक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व
११६६ ।

वीर्याचरण—मिथ्यादृष्टि ३.२०३ ब ।

वीर्याचार—आचार १.२४१ अ ।

वृंदावन—३.५७७ अ, इतिहास १३३४ ब, १.३४८ अ ।

वृंदावन विलास—३.५७७ ब, इतिहास १३४८ अ ।

वृंदावनी—वैष्णवदर्शन ३६०६ अ ।

वृंदावली—३.५७७ ब, आवली १.२७६ ब ।

वृकाथंक—३.५७७ ब, मनुष्यलोक ३२७५ अ ।

वृक्ष—३.५७७ ब, जम्बू द्वीप में गणना ३.४४५ अ । जम्बू-
वृक्ष ३.४५८ अ, चित्र ३.४५८ ब, वर्ण ३.४७७ ।
वृक्षस्थल ३.४५८ ब, चित्र ३.४५६ । वसतिका
(वृक्षमूल) ३.५२७ ब, साधु (भव वृक्ष) ४.४०७ अ,
स्वप्न ४.५०५ अ ।

वृक्षमूल—३.५८० अ, वसतिका ३.५२७ ब, विद्या ३.५४४
अ ।

वृक्षमूल योग—अतिचार २.४७ ब, कायक्लेश २.४७ ब ।

वृक्षमूल विद्या—विद्या ३.५४४ अ, विद्याधर वंश १३३६
अ ।

वृक्षमूलावास—कायक्लेश २.४६ ब ।

वृत्त—३.५८० अ, औदारिक शरीर १.४७१ अ, गणित
(क्षेत्रफल, व्यास आदि) २.२३२ ब, २.२३३ ब ।

वृत्त-विष्कम्भ—३.५८० अ ।

वृत्ति—३.५८० अ ।

वृत्तिपरिसंख्यान—३.५८० अ ।

वृत्तिमत्त्व—३.५८१ अ ।

वृत्तिमान—३.५८१ अ ।

वृत्तिलाभ क्रिया—सस्कार ४१५२ ब ।

वृत्तिविलास—३.५८१ अ, इतिहास १.३३१ अ, १.३४४
अ ।

वृत्तिसूत्र—आगम १२३६ अ ।

वृत्त्यश—पर्याय ३.४५ ब ।

वृद्धि—३.५८१ अ, संगति ४.११६ अ ।

वृद्धार्थ—यदुवंश १.३३७ ।

वृद्धि—३.५८१ ब, अवधिज्ञान १.१६६ ब, गणित २.२२६
ब ।

वृद्धि-हानि—अवधिज्ञान १.१६७ ब, षड्गुण ४.८१ अ ।

वृद्ध-ह्लास—काल २६३ ।

वृष—३.५८१ ब ।

वृषध्वज—कुरुवंश १३३५ ब ।

वृषभ—३.५८१ ब, तीर्थकर ऋषभनाथ २३७६, तीर्थकर
सीमधर तथा सूरिप्रभ २.३६२, स्वप्न ४.५०४ ब ।

वृषभगिरि—३.५८५ अ, निर्देश ३.४४६ अ । विस्तार
३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४४७,
३.४६४ के सामने । वर्ण ३.४७७, विदेहस्थ ३.४६०
अ । चक्रवर्ती ४१५ ब ।

वृषभदेव—मध्यलोक में अवस्थान ३.६१३ अ; आयु
१.२६५ अ ।

वृषभध्वज—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ ।

वृषभसंघ—१३१७ ब, १३१६ अ, १.३२६ अ ।

वृषभसेन—३.५८२ अ, गणधर २.२१२ ब, तीर्थकर ऋषभ
देव २३८७ ।

वृषभाकार प्रणाली—गंगानदी का द्वार ३.४५५ अ ।

वृषभेष्टा—लौकातिक देव ३.४६३ ब ।

वृषानंत—कुरुवंश १.३३५ ब ।

वृष्य—अभिषव १.१३० ब ।

वृष्यरससेवा—ब्रह्मचर्य ३.१८६ अ ।

वृहदारण्यक—वेदात ३.५६५ ब ।

वृहदध्वज—कुरुवंश १.३३५ ब ।

बेंगी नगर—आंध्रदेश की नगरी १.३० ब ।

बेत—कषाय (मान) २.३८ अ ।

बेगवती—यदुवंश १.३३७ ।

बेगवान्—यदुवंश १३३७ ।

बेणा—३.५८२ अ, मनुष्यलोक ३२७६ अ ।

बेणु—३.५८२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब ।

बेणु (देव)—मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश
३.४७५ अ, अंकन ३.४६४ । शालमली वृक्ष का देव
१.४५८ अ, १.६०३ ब । सुवर्ण कुमारेंद्र—निर्देश

३.२०८ अ, परिवार ३ २०९ अ, निवास ३ २०९ ब, आयु १.२६५ ।

वेणुतालि—मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अंकन ३ ४६४ ।

वेणुधारी—३ ५८२ अ, मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अंकन ३ ४६४ । शाल्मलीवृक्ष का देव ३ ४५८ अ, ३ ६१३ ब । सुपर्ण कुमार—निर्देश ३ २०८ अ, परिवार ३ २०९ अ, निवास ३ २०९ ब, आयु १.२६५ ।

वेणुन—३ ५८२ अ ।

वेणुनीत—मानुषोत्तर पर्वत के कूट देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अंकन ३ ४६४ ।

वेणुपुर—३ ५८२ अ ।

वेणुमती—३ ५८२ अ, मनुष्यनोक ३ २७५ ब ।

वेणुमूल—कषाय (माया) २ ३८ अ ।

वेणुवती—३ ५८२ अ ।

वेणुश्री—तीर्थकर श्रेयासनाथ २ ३८० ।

वेतरणी नरकलोक की नदी २ ५७३ अ, २ ५७७ ब ।

वेत्ता—३ ५८२ अ ।

वेत्र—कषाय (मार) २ ३८ अ ।

वेत्रवती—३ ५८२ अ ।

वेत्रासन—३ ५८२ अ, अधोलोक ३ ४३८ अ, वैराग्य ३ ६०७ ब ।

वेद (कर्म प्रकृति)—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३ ३४३ ब, स्थिति ४ ४६१, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३ १३६, बध ३ ६७, बधस्थान ३ १०६, उदय १ ३७५, उदय के निमित्त १ ३६७ ब, उदय की विशेषता १ ३७१ ब, १ ३७२ ब, १ ३७३ ब, उदयस्थान १ ३८६, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २६५, त्रिसयोगी भग १ ४०१ ब । सक्रमण ४ ८६ अ, अल्पबहुत्व १ १६८, १ १७६ ।

वेद (कषाय)—३ ५८२ अ, ३ ५८३ ब, कषाय २ ३५ ब, २ ३६ अ, जीव २ ३३३ ब, मैथुन संज्ञा ४ १२१ अ ।

वेद (मार्गणा)—प्ररूपणा—बध ३ १०५, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०७ अ । सत् ४ २२२, सख्या ४ १०४, क्षेत्र ३ २०३, स्पर्शन ४ ४८७, काल २ १११, अंतर १ १४, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४८, पंचशरीर स्वामियों का अल्पबहुत्व १ १५६ ब, भागाभाग ४ ११२ ।

वेद (शास्त्र)—निदा २ ५८८ ब, श्रुतज्ञान ४ ६० अ ।

वेदक—३ ५६० अ ।

वेदककाल—काल २ ८१ अ ।

वेदक-सम्यक्त्व—३ ५६० अ, काल २ ६८ अ, क्षयोपशम २ १८३ ब, २ १८४ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३६६ अ, ४ ३७० ब । प्ररूपणा—बध ३ १०७, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८५, उदयस्थान १ ३६३, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ ३०१, ४ ३०६, त्रिसयोगी भग १ ४०८ । सत् ४ २५७, सख्या ४ १०६, क्षेत्र २ २०६, स्पर्शन ४ ४६२, काल २ ११८, अंतर १ २०, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५२, संक्रमण ४ ८७ अ ।

वेदक सम्यग्दृष्टि—क्षयोपशम २ १८५ ब, संक्रमण ४ ८७ अ ।

वेदत्रय—अल्पबहुत्व १ १७६, उदय १ ३७३ ब ।

वेदन—३ ५६० अ, अनुभव १ ८१-८६ ।

वेदना—३ ५६० अ, आर्तध्यान १ २७४ अ, उपलब्धि १ ४३५ अ, समुद्घात ४ ३४३ ब, सम्यग्दर्शन का निमित्त ४ ३६३ अ, स्वाध्याय ४ ५२६ अ ।

वेदना-भय—भय ३ २०६ ब ।

वेदनाभिभव—सम्यग्दर्शन का निमित्त ४ ३६३ ब ।

वेदना-सन्निकर्ष—सन्निकर्ष ४ ३१२ अ ।

वेदना-समुद्घात—३ ५६१ अ, निर्देश (समुद्घात) ४ ३४३, सत् ४ ३४३, क्षेत्र २ १६७-२०७, स्पर्शन ४ ४७७-४६४ ।

वेदनीय—३ ५६१ ब, आबाधा १ २४६ अ, घाती १ ६१ अ । प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३ ६३ अ, ३ ५६१, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ६५, अनुभाग का अल्प-बहुत्व १ १६६ अ, प्रदेश ३ १३६ । बध ३ ६७, बध-स्थान ३ १०६, उदय १ ३७५, उदय के निमित्त १ ३६७ ब, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २६५, त्रिसयोगी भग १ ३६६ । सक्रमण ४ ८४ अ, अल्पबहुत्व १ १६८ ।

वेद-सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ब ।

वेदांत—३ ५६४ ब, एकांत १ ४६५ ब ।

वेदांतसार—वेदांत ३ ५६५ ब ।

वेदिका—३ ६०१ ब । जंबूद्वीप—निर्देश (ज्योति) ३ ४४४ ब, गणना ३ ४४६ अ, विस्तार ३ ४८४; अंकन ३ ४४४, वर्ण ३ ४७७ । जंबू व शाल्मली वृक्षस्थल—निर्देश ३ ४५८ अ, विस्तार ३ ४८४, अंकन ३ ५६७, वर्ण ३ ४७७ । द्रह्—निर्देश ३ ४४४ ब, विस्तार

३.४८४, अंकन ३.४५४, वर्ण ३.४७७। पुष्करिणी—अंकन ३.४५१, रेखाण्यक व भूतारण्य वन—निर्देश ३.४४४, ३.४५७ ब, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.४४४, ३.४४७, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७। पर्वत—निर्देश ३.४४४ ब, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.४४७, ३.४४६, ३.४५२, वर्ण ३.४७७। भद्रशाल वन—निर्देश ३.४५८ अ, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.४४४, वर्ण ३.४७७।

वेदिकाबद्ध—३.६०१ ब, व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ ब।

वेदिस—३.६०१ ब।

वेदी—३.६०१ ब, विशेष प्ररूपणा दे० ऊपर वेदिका।

वेधिस—निक्षेप २.६०२ अ।

वेलधर देव नगरी—लवणसागर मे ३.४६२ अ, अंकन ३.४६१।

वेलंब—३.६०१ ब, मानुषोत्तर पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अंकन ३.४६४। वायुकुमार इद्र—निर्देश ३.२०८ अ, परिवार ३.२०६ अ, अवस्थान ३.२०६ ब, आयु १.२६५।

वेश्या—३.६०१ ब, ब्रह्मचर्य ३.१६२ अ, स्त्री ४.४५० ब।

वेश्यागमन—ब्रह्मचर्य ३.१६१ ब।

वैकालिक दशक—३.६०१ ब, श्रुबज्ञान ४.६७ ब।

वैक्रियिक—३.६०१ ब।

वैक्रियिक काययोग—३.६०३ ब, प्ररूपणा—बध ३.१०४, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३८०, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.३८३, सत्त्वस्थान ४.२१६, ४.३०५, त्रिस-योगीभग १.४०७ अ। सत् ४.२६६, सख्या ४.१०३, क्षेत्र २.२०२, स्पर्शन ४.४८५, काल २.६६ ब, २.१०८, अतर १.१३, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४८।

वैक्रियिक चतुष्क—उदय १.३८४ ब।

वैक्रियिक द्विक—उदय १.३७४ ब।

वैक्रियिक वर्गणा—वर्गणा ३.५१४ ब।

वैक्रियिक विमान—विमान ३.५६३ अ।

वैक्रियिक शरीर—आहारक शरीर १.४५७ अ, कल्याणक २.३२ ब, नरक २.५७३ ब, प्रदेश अल्पबहुत्व १.१५७।

वैक्रियिक शरीर अंगोपांग—१.१ ब।

वैक्रियिक शरीर अंगोपांग नामकर्मप्रकृति—प्ररूपणा—दे० नीचे वैक्रियिक शरीर नामकर्मप्रकृति।

वैक्रियिक शरीर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५,

प्रदेश ३.१३६। बध ३.६७, बंधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३७३ ब, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, सत्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६६।

वैक्रियिक शरीर बंध—वैक्रियिक-वैक्रियिक, वैक्रियिक-तैजस, वैक्रियिक-कर्मण, वैक्रियिक-तैजस-कर्मण ३.१७० ब।

वैक्रियिक षट्क—उदय १.३७४ ब।

वैक्रियिक समुद्धात—वैक्रियिक ३.७०४ अ। समुद्धात—निर्देश ४.३४३, क्षेत्र २.१६७-२०७, स्पर्शन ४.४७७-४६४।

वैखरी—भाषा ३.२२७ ब।

वैखानस मुनि—वैष्णवदर्शन ३.६०६ अ।

वैज्ञानिक भूगोल—निर्देश ३.४३५ ब।

वैचित्र्य—कारण (कर्मोदय) २.७१ ब।

वैजयंत—३.६०४ ब, ग्रह २.२७४ अ, विद्याधर नगरी ३.४४५ अ। जम्बूद्वीप की जगती का द्वार—निर्देश ३.४४४ ब, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.४४४ ३.४४७, इसका रक्षकदेव ३.६१३। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८।

वैजयंत (स्वर्ग)—अनुत्तर विमान—निर्देश ४.५१६ अ, विस्तार ४.५१८, अंकन ४.५१५, ४.५१७। देव—निर्देश ४.५१० अ, आयु १.२६६, आयु बध के योग्य परिणाम १.२५८ ब। चक्रवर्ती ४.१५ अ-ब।

वैजयंती—विदेहनगरी—निर्देश ३.४७० ब, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६-४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६२, चित्र ३.४६० अ।

वैजयंती—३.६०४ ब, बलदेव ४.१७ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ। नंदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३ अ, नामनिर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४६१, अंकन ३.४६५। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ-ब, अंकन ३.४६८, ३.४६६। विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।

वैदूर्य—३.६०४ ब, मनुष्यलोक, ३.२७५ ब, रत्नप्रभा ३.३८६ ब।

वैदूर्य (कूट)—महाहिमवान् पर्वत का—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४। मानुषोत्तर

पर्वत का—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अकन ३.४६४। रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६८, ३.४६९। पद्म आदि द्रव्यों के—निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४५४।

वैद्यमयी—सुमेरु पर्वत की परिधि ३.४४९ अ-ब।

वैद्यमयसागर-द्वीप—नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अकन ३.४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष चक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।

वैद्यमय (स्वर्गपटल)—सौधर्ष पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४.५१६ ब, देव आयु १.२६६।

वैतरणी—३.६०४ ब। नरक की नदी—निर्देश २.५७३, २.५७७ ब। बौद्धाभिमत ३.४३४ ब, वैदिकाभिमत ३.४३२। मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

वैतराणी—३.६०४ ब।

वैतादय—३.६०४ ब, चक्रवर्ती ४.१५ ब।

वैतुष्य—३.६०४ ब, उपेक्षा १.४४४ ब, ४.४१४ ब।

वैवर्भ—३.६०४ ब, तीर्थंकर चद्रप्रभ तथा सुविधिनाथ २.३८७, मनुष्यलोक ३.२७५ अ-ब।

वैदिक दर्शन—३.६०४ ब, दर्शन २.४०२ ब।

वैदिक भूगोल—निर्देश ३.४३१ ब।

वैदिक मूढता—अमूढदृष्टि १.१३२ ब, मूढता ३.३१५ ब।

वैदिक शास्त्र—शास्त्र ४.२८ अ।

वैदिश—३.६०४ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

वैद्यसार—३.६०४ ब, इतिहास १.३४० ब।

वैद्युत—विद्याधरवंश १.३३९ अ।

वैद्यमय—३.६०४ ब, दृष्टांत २.४३८ अ।

वैनयिक—३.६०५ अ, मिश्रगुणस्थान ३.३०८ ब, श्रुतज्ञान ४.६६ ब।

वैनयिक मिथ्यात्व—वैनयिक ३.६०५ अ।

वैनयिकी ऋद्धि—ऋद्धि १.४४८, १.४५० अ।

वैभाविक भाव—विभाव ३.५५७ ब।

वैभाविकी क्रिया—विभाव ३.५५७ ब।

वैभाविकी शक्ति—विभाव ३.५५७ ब, ३.५५८ अ।

वैभाविकी—बौद्धदर्शन ३.१८६ ब।

वैमनस्क—३.६०५ ब, नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन ३.४४१। नारकी—अव गाहना १.१७८, आयु १.२६३।

वैमानिक देव—निर्देश ३.४४५, २.२४४ ब, ४.५१० अ, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १.१६७ अ, १.१६८, आत्मरक्ष १.२४३ ब, आयु १.२६६-२६९, आयुबध

के योग्य परिणाम १.२५८ अ। इंद्र—निर्देश ४.५१० ब, परिवार ४.५१३ अ, शक्ति ४.५११ ब, विमान नगर व भवन ४.५२१ अ।

वैमानिक देव (प्ररूपणा)—बंध ३.१०२, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगीभग १.४०६। सत् ४.१८९, संख्या ४.६७, क्षेत्र २.१६९, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अंतर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

वैयधिकरण्य—३.६०५ ब।

वैयाकरणी—३.६०५ ब, एकांत १.४६५ ब।

वैयावृत्ति—सल्लेखना ४.३६५ अ।

वैयावृत्त्य—३.६०५ ब, ३.६०६ ब, अपवाद मार्ग १.१२१ ब। दान २.४२२ ब।

वैयावृत्त्यकरण शुद्धि—शुद्धि ४.४१ अ।

वैयावृत्त्य तप—वैयावृत्त्य ३.६०५ ब।

वैयावृत्त्य योगयुक्तता—३.६०७ अ।

वैर—३.६०७ ब।

वैरकुमार—३.६०७ अ।

वैरगसार—इतिहास १.३४४ अ।

वैरत्याग अर्हतातिशय १.१३७ ब।

वैराग्य—३.६०७ अ, उपदेश १.४२४ अ, उपेक्षा १.४४४ ब, करुणा २.१५ ब, मिथ्यादृष्टि ३.३०३ अ, राग ३.३६८ ब, ३.३६९ अ, साधु ४.४०६ ब।

वैराग्यभावना—अनुप्रेक्षा १.७८ अ, ध्येय २.५०२ अ।

वैराग्यमाला—३.६०७ ब, इतिहास १.३४६ ब।

वैरात्रिक—३.६०७ ब, कृतिकर्म २.१३७ ब।

वैरिसिंह—३.६०७ ब।

वैरोचन—अनुदिश स्वर्ग विमान—निर्देश ४.५१६ अ, विस्तार ४.५१६ अ, अकन ४.५१५, ४.५१७, आयु १.२६९। असुरेद्र—निर्देश ३.२०८ अ, परिवार ३.२०९ अ, अवस्थान ३.२०९ ब, आयु २.२६५।

वैरोटी—३.६०७ ब, तीर्थंकर अनतनाथ की यक्षिणी २.३७९, विद्या ३.५४४ अ।

वैलक्षणा—वैमानिक इंद्रो की वल्लभिका देवी ४.५१३ ब।

वैवस्वत यम—३.६०७ ब।

वैशद्य—विशद ३.५६७ अ।

वैशाख—३.६०७ ब।

वैशेषिक (दर्शन)—३.६०७ ब, एकांत १.४६५ अ। १.४६६ अ, दर्शन २.४०३ अ, द्रव्य २.४५८ अ, वैशेषिक ३.६०८ अ।

वैशेषिक सूत्र—३.६०७ ब ।

वैश्य—३.६०६ अ, वर्णव्यवस्था ३.५२३ ब, ३.५२४ अ ।

वैश्रवण—३.६०६ अ, तीर्थंकर मल्लिनाथ २.३७८ ।

दिग्गजेंद्र पर्वत का देव—३.४५३ अ, मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव ३.४७५ अ ।

वैश्रवण कायिक—देव (आकाशोपन्न) ३.४४५ ब ।

वैश्रवण कूट—विदेह वक्षार—निर्देश ३.४६० अ, नाम निर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७ । पद्म आदि द्रव्यों के कूट—निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४५४ । मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अंकन ३.४६४ । रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८ । वक्षारगिरि का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४६० अ । विजयार्ध गिरि का कूट—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४, ३.४४८ । बिद्याधरनगरी ३.५४५ अ-ब ।

वैश्वानर—३.६०६ अ, कुरुवंश १.३३५ ब, १.३३६ अ, तीर्थंकर शीतलनाथ का रुद्र २.३६१, रुद्र ४.२२ अ ।

वैश्विक आधार—आधार १.२४६ अ ।

वैष्णव दर्शन—३.६०६ अ ।

वैसादृश्यप्रत्यभिज्ञान—प्रत्यभिज्ञान ३.१२५ अ ।

वैसादृश्य—प्रत्यभिज्ञान ३.१२५ अ ।

वैस्त्रसिक परिणाम—परिणाम ३.३१ ब ।

वैस्त्रसिक बंध—बंध ३.१६६ ब ।

वैस्त्रसिक शब्द—शब्द ४.३ अ ।

वैस्त्रसिकी क्रिया—क्रिया २.१७३ ब ।

वैष्णव—वस्त्र ३.५३१ अ ।

वोटिक—श्वेतांबर ४.८० ।

वोम्मरस—इतिहास १.३३३ अ ।

व्यंग्यव्यंजक भाव—स्फोट ४.४६५ अ ।

व्यंग्यव्यंजक संबध—संबध ४.१२६ अ ।

व्यंजन—३.६०६ ब, अक्षर १.३३ अ, शुक्लध्यान ४.३३ ब ।

व्यंजन-निमित्तज्ञान—ऋद्धि १.४४८, निमित्तज्ञान २.६१३ अ ।

व्यंजन-पर्याय—३.४७ ब, ३.४८ ब, सप्तभंगी ४.३२२ ब ।

व्यंजन-पर्याय नैगमनय—नय २.५३१ अ ।

व्यंजन-पर्याय नैगमाभास—नय २.५३१ ब ।

व्यंजन-शुद्धि—३.६०६ ब, उभय शुद्धि (सम्यग्ज्ञान) १.४४४ अ ।

व्यंजन-संक्रांति—संक्रांति ४.६१ अ ।

व्यंजनावग्रह—अवग्रह १.१८२ अ, १.१८३, मतिज्ञान ३.२५७ अ ।

व्यंतर—३.६०६ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ-ब, मनुष्य-शरीर-प्रवेश ३.६११ अ, स्वप्न ४.५०५ अ ।

व्यंतरदेव—निर्देश २.४४५ ब, ३.६१० ब, भेद ३.६१० ब । अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १.१६८, अवस्थान १.४७१, ३.६१२-६१४, आयु १.२६४, आयु-बध के योग्य परिणाम १.२६८ ब, इद्र—निर्देश ३.६११ अ, शक्ति आदि २.६१० ब, शरीर का वर्ण आदि ३.६११ अ, देवी ३.६११ ब, भव, आवास नगर ३.६१२ अ-ब ।

व्यंतरदेव (प्ररूपणा)—बध ३.१०२, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१८७, संख्या ४.६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अतर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

व्यतर लोक—निर्देश ३.६१२ अ ।

व्यकलन—३.६१५ अ, गणित २.२२२ ब, २.२२४ अ ।

व्यक्त—मन.पर्यायज्ञान ३.२६४ अ ।

व्यक्तनिर्वृत्त्यक्षर—अक्षर १.३२ ब ।

व्यक्तराग—राग ३.३६६ अ ।

व्यक्ति—३.६१५ अ, कर्म २.२६ अ, साधु ४.५०७ अ ।

व्यक्ति-स्थिति—उत्कर्षण १.३५४ ब ।

व्यग्रता-विनिवृत्ति—ध्यान २.४६५ अ ।

व्यतिकर (बोध)—३.६१६ अ, कर्ता-कर्म २.२२ ब ।

व्यतिक्रम—३.६१६ अ ।

व्यतिरेक—३.६१६ अ ।

व्यतिरेकी दृष्टांत—अनुमान १.६८ ब, दृष्टांत २.४३८ अ ।

व्यतिरेकी धर्म—व्यतिरेक ३.६१६ अ ।

व्यतिरेकी पर्याय—पर्याय ३.४७ अ ।

व्यतिरेकी लिगानुमान—अनुमान १.६७ ब ।

व्यतिरेकी विशेष—व्यतिरेकी ३.६१६ अ ।

व्यतिरेकी व्याप्ति—अनुमान १.६७ अ ।

व्यतीत शोक—तीर्थंकर नेमिनाथ २.३७८ ।

व्यधिकरण—३.६१६ ब ।

व्यभिचार—३.६१६ ब, शब्द नय २.५३६ ब ।

व्यभिचारी हेत्वाभास—व्यभिचार ३.६१६ ब ।

व्यय—उत्पाद-व्यय-श्रीव्य १.३५७ ब, मार्गणा ३ २६७ ब ।

व्यय सभाषण—सत्य ४.२७३ अ ।

व्यवच्छेद—३.६१७ अ ।

व्यवसाय—३.६१७ अ अध्यवसान १ ५२ अ ।

व्यवस्था—३ ६१७ अ ।

व्यवस्था-पद—अनुयोगद्वार १.१०२ ब, पद ३ ४ ब ।

व्यवहार-अनशन—अनशन १ ६५ अ ।

व्यवहार-अनुप्रेक्षा—अनुप्रेक्षा १.७२-७८ ब ।

व्यवहार-अमूढदृष्टि—अमूढदृष्टि १ १३२ ब ।

व्यवहार-अहिंसा—अहिंसा १ २१७ ब ।

व्यवहार-आलोचना—आलोचना १.२७६ ब ।

व्यवहार-उपगृहण—उपगृहण १.४१७ अ ।

व्यवहार-उपयोग—उपयोग (शुभोपयोग) १.४३४ अ-१ ४३५ अ ।

व्यवहार-कर्ताकर्म—कर्ता-कर्म २ २१-२४ ।

व्यवहार-कारक—कारक २.४६ अ ।

व्यवहार-कारण—कारण (निमित्त) २ ७३ अ ।

व्यवहार काल—काल २.८६ ब ।

व्यवहार-क्षमा—क्षमा २ १७७ अ ।

व्यवहार गणित—इतिहास १ ३३१ ब ।

व्यवहार-गुप्ति—गुप्ति २ २४८ अ, २ २४९ अ, २ २५० अ ।

व्यवहार-ज्ञान—२ २५८ ब, ज्ञान २ २६८ ब ।

व्यवहार-ज्ञानाचार—आचार १ २४० अ ।

व्यवहार-चारित्र—चारित्र २ २८४ अ, २ २८६ ब ।

व्यवहार-चारित्राचार—आचार १ २४० ब ।

व्यवहार-तप—तप (लक्षण) २ ३५८ ब, तप (बाह्य) २.३५९ अ, २ ३६१ ब ।

व्यवहार-तपाचार—आचार १ २४० ब ।

व्यवहारत्व (गुण)—३ ६१७ ब ।

व्यवहार दर्शनाचार—आचार १.२४० अ ।

व्यवहार-धर्म—उपयोग—अशुद्धोपयोग १.४३४ ब, पुण्य १ ४३४ अ, विषकुभ १.४३४ अ, शुभोपयोग १.४३४ अ । धर्म २ ४६६ ब, २ ४६९ अ-ब, २ ४७५ ।

व्यवहार-धर्मध्यान—धर्मध्यान २ ४७९ अ, २ ४८५ ब ।

व्यवहार-नय—नय—निर्देश २ ५१४ ब, २ ५१५ अ, उपचार २ ५६२ अ, सविकल्प २ ५५५ अ, अशुद्ध निश्चय २ ५५५ अ । अपवाद-मार्ग १ १२० ब । नय-सप्तक—२.५२७ ब, २.५२८ अ, २ ५३२ अ, २ ५५६ ब । निक्षेप—२.५६३ अ, २.५६५ अ,

उदाहरण—आत्मद्रव्य २ ५२३ ब, रागद्वेष कषाय २.३६ अ-ब, सप्तमंगी ४ ३१८ ब ।

व्यवहार-नय-उपक्रम—उपक्रम १ ४१६ ब ।

व्यवहार-नयाभास—नय २ ५५९ अ ।

व्यवहार-पंडितमरण—मरण ३ ३८१ अ ।

व्यवहार-पर्याय—पर्याय ३.४५ ब ।

व्यवहार-पत्य—उपमाप्रमाण २.२१८ अ, काल का प्रमाण २ २१७ ब ।

व्यवहार-प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३ १३१ अ ।

व्यवहार-प्रभावना—प्रभावना ३ १३६ ब ।

व्यवहार-प्राण—प्राण ३.१५२ ब, ३ १५४ अ ।

व्यवहार-प्रायश्चित्त—प्रायश्चित्त ३.१५८ अ ।

व्यवहार-प्रोषधोपवास—प्रोषधोपवास ३ १६३ अ ।

व्यवहार-बालमरण—मरण ३ २८१ अ ।

व्यवहार-ब्रह्मचर्य—ब्रह्मचर्य ३ १८६ अ ।

व्यवहार-भक्ति—भक्ति ३ १६७ ब ।

व्यवहार-भोक्ता-भोग्यभाव—कर्ता-कर्म २ २२ अ, भोक्ता ३ २३७ अ, भोग ३.२३८ अ ।

व्यवहार-मोक्षमार्ग—मोक्षमार्ग ३ ३३५ अ, ३ ३३६ अ ।

व्यवहार-रत्नत्रय—उपयोग (शुभ) १.४३४ ब, सवर ३ १४३ ब ।

व्यवहार-वात्सल्य—वात्सल्य ३ ५३२ अ ।

व्यवहारवान् (आचार्य)—व्यवहारत्व गुण ३ ६१७ ब ।

व्यवहार-विनय—विनय ३ ५४८ अ ।

व्यवहार-वीर्याचार—आचार १.२४१ अ ।

व्यवहार-श्रुतकेवली—श्रुतकेवली ४.५५ ब ।

व्यवहार-संयम—संयम ४ १३६ ब ।

व्यवहार-सत्य—सत्य ४.२७१ ब ।

व्यवहार-समिति—समिति ४ ३३६ अ, ४ ३४२ अ ।

व्यवहार-सम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४ ३५६ अ ।

व्यवहार-सागर—काल का प्रमाण २ २१७ ब ।

व्यवहार-साधु—साधु ४ ४०४ अ ।

व्यवहार सुख—सुख ४ ४३२ अ ।

व्यवहार-स्तवन—भक्ति ३ १६६ ब ।

व्यवहार-स्थितिकरण—स्थितिकरण ४.४७० अ ।

व्यवहार-स्वाध्याय—स्वाध्याय ४.५२३ अ ।

व्यवहार-हिंसा—हिंसा ४ ५३४ अ ।

व्यवहारावलंबी—मिथ्यादृष्टि ३.३०३ ब, साधु ४.४०४ अ ।

व्यवहारेक्षिता अधिकार—ब्राह्मण ३.१६६ अ ।

व्यसन—३.६१७ ब, श्रावक ४.५० ब ।

व्याकरण—३.६१७ ब, आगमज्ञान १.२३१ ब, १.२३२ अ ।

व्याकरण क्रियाकलाप—आशाधर १.२८० ब, इतिहास १.३४४ अ ।

व्याकरण गुजराती—३.६१७ ब ।

व्याकरण जैनेन्द्र—३.६१७ ब ।

व्याकरण प्राकृत—३.६१७ ब ।

व्याकरणशास्त्र—नय (शब्दनय) २.५३६ अ ।

व्याक्षेपासक्त-चित्तता—व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ ।

व्याख्या—३.६१७ ब ।

व्याख्यान—उपदेश १.४२५ ब, पद्धति ३.६ ब ।

व्याख्यानाचार्य—सत्त्व ४.२७६ ब ।

व्याख्यानाभास—आगम १.२३६ ब ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति—३.६१७ ब, श्रुतज्ञान ४.६८ अ-ब, अमित-गति १.१३२ अ, इतिहास १.३२८ ब, १.३४० अ, १.३४३ अ ।

व्याख्यालंकार टीका—आशाधर १.२८१ अ ।

व्याघात—३.६१८ अ, सूक्ष्म ४.४३८ अ ।

व्याघात-अपकर्षण—अपकर्षण १.११३ ब, १.११६ ब ।

व्याघात-उत्कर्षण—उत्कर्षण १.३५३ ब ।

व्याघात-काल—काल (योगमार्गणा का जघन्य काल) २.१६ अ ।

व्याघ्रभूति—३.६१८ अ, अक्रियावाद १.३२ अ, एकांत १.४६५ ब ।

व्याघ्रहस्ती—३.६१८ अ, पुननाटसंघ १.३२७ अ ।

व्याघ्री—३.६१८ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

व्याज—३.६१८ अ ।

व्यापक—३.६१८ अ ।

व्यापकानुपलब्धि अनुमान—३.६१८ अ, अनुमान १.६७ अ ।

व्यापार—३.६१८ अ ।

व्याप्ति—३.६१८ अ, कारण-कार्य २.५६ अ, तर्क २.३६५ अ ।

व्याप्तिज्ञान—मतिज्ञान ३.२५४ ब ।

व्याप्य—३.६१८ ब ।

व्याप्य-व्यापक भाव—कर्ता-कर्म २.१६-२४, कारण-कार्य २.५७ अ ।

व्याप्यव्यापक संबध—कारक २.५० अ, संबध ३.१२६ अ ।

व्याप्यासिद्ध हेत्वाभास—असिद्ध हेत्वाभास १.२१० अ ।

व्यामोह—३.६१८ ब ।

व्यावृत्ति—३.६१८ ब, पर्याय ३.४५ ब ।

व्यास—३.६१८ ब, एकांत विनयवादी १.४६५ ब ।

वैनयिक ३.६०५ अ । कुसवंश १.३३६ अ, गणित २.२३२ ब, २.२३३ ब । योगदर्शन ३.३८४ अ ।

व्युच्छित्ति—३.६१८ ब, उदय १.३७५, उद्दीरणा १.४११ अ, बंध ३.६७, सत्त्व ४.२७८ ।

व्युच्छेद—आगम (तीर्थव्युच्छेद) १.२३७ अ ।

व्युत्क्रांत—३.६२४ अ, नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब; विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३.४४१ । नारकी—अव-गाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

व्युत्सर्ग—३.६१८ अ, त्याग २.३६६ ब ।

व्युत्सर्ग-तप—व्युत्सर्ग ३.६२३ अ ।

व्युत्सर्ग प्रायश्चित्त—प्रायश्चित्त ३.१६१ अ ।

व्युपरतक्रिया-निवृत्ति—शुक्लध्यान ४.३५ ब ।

व्युष्टिक्रिया—मंत्र ३.२४७ अ, संस्कार ४.१५१ अ ।

व्योमैकु—विद्याधरवंश १.३३६ अ ।

व्योमचर—विद्या ३.५४४ अ ।

व्योमवती—वैशेषिक दर्शन ३.६०७ ब ।

व्योमशेखर—वैशेषिक दर्शन ३.६०७ ब ।

व्रणमुख—३.६२४ अ, औदारिक शरीर १.४७२ अ ।

व्रण संरोहिणी—विद्या ३.५४४ अ ।

व्रत—३.६२४ अ, अस्तेय १.२१३ अ, अहिंसा १.२१५ ब, उपयोग १.४३३ अ, १.४३४ ब, १.४३५ अ, चारित्र २.२८६ अ, २.२९० अ, २.२९१ ब, २.२९२ ब, ध्याता २.४६३ अ, पुण्य (उपयोग) १.४३५ अ, भक्ष्या-भक्ष्य ३.२०१ ब, राग ३.४०० अ, शुभोपयोग १.४३३ अ, १.४३४ अ-ब, सवर ४.१४३ ब, २.२९२ ब ।

व्रत-कथाकोष—कथाकोष २.३ ब, इतिहास १.३४६ अ ।

व्रतखंडन—अतिचार १.४२ ब, अपवाद मार्ग १.१२१ अ ।

व्रतचर्या-क्रिया—मंत्र ३.२४७ अ, संस्कार ४.१५१ अ, ४.१५२ ब ।

व्रतत्याग—चारित्र २.२९० ब, २.२९१ अ, २.२९४ अ ।

व्रतदान—व्रत ३.६२५ ब ।

व्रतधर्मा—कुसवंश १.३३५ ब ।

व्रतप्रतिमा—३.६२८ ब, दर्शनप्रतिमा २.४१८ अ ।

व्रतभंग—अतिचार १.४२ ब, अपवाद मार्ग १.१२१ अ ।

व्रतशुद्धि—शुद्धि ४.४० अ ।

व्रतारोपण—व्रत ३.६२५ ब ।

व्रतावतरण क्रिया—संस्कार ४.१५१ ब, ४.१५२ ब ।

व्रती—३.६२६ अ, बद्धायुष्क १.२६२ ब ।

व्रातमंदर—कुसवंश १.३३६ अ ।

श

शंकर मिश्र—वैशेषिक ३.६०७ ब ।
 शंकर वेदांत—४१ अ, वेदांत ३.५६६ अ ।
 शंकराचार्य—४१ अ, वेदांत ३.५६५ ब ।
 शंकरानंद—४१ अ ।
 शंका—४१ अ, अतिचार १४४ अ, आप्त १.२४७ ब,
 निःशक्ति २.५८६ ब ।
 शंकाकार शिखा—४१ अ ।
 शंकातिचार—अतिचार १.४४ अ, संशयमिध्यात्व ४.१४५
 ब ।
 शंका-राहित्य—आप्त १ २४७ ब ।
 शंकित दोष—४.१ अ, आहार १.२६१ ब, वसतिका
 ३.५२६ ब ।
 शंकित विपक्षवृत्ति—व्यभिचार ३.६१६ ब ।
 शंकुक—विद्या ३.५४४ अ, विद्याधरवंश १.३३६ अ ।
 शंकु समुच्छिन्नक—४१ अ ।
 शंख—४.१ अ, चक्रवर्ती ४१४ ब, चैत्यचैत्यालय २ ३०२,
 अ, तीर्थंकर नेमिनाथ १.३७६, तीर्थंकर प्रभादेव
 २ ३७७, तीर्थंकर वज्रधर २.३६२, यदुवंश १.३३७,
 हरिवंश १.३४० अ । लवण सागर के पर्वत—निर्देश
 ३.४६२ अ, नामनिर्देश ३.४७४, विस्तार ३.४७६,
 अंकन ३.४६१, वर्ण ३.४७८ ।
 शंख-परिणाम—४.१ अ, ग्रह २ २७४ अ ।
 शंखरत्न—४.१ अ । रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश
 ३.४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६६ ।
 शंखवज्र—४.१ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।
 शंखचर—४१ ब, बारहवाँ द्वीप-सागर—निर्देश ३.४७०
 अ, विस्तार ३.४७८, अंकन ३.४४३, जल का रस
 ३.४७० अ, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिपति देव
 ३.६१४ ।
 शंखवर्ण—४१ अ, ग्रह २.२७४ अ ।
 शंखा—विदेहक्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७०
 ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अंकन
 ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ ।
 विदेह वक्षार का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब,
 ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४ के सामने ।
 शंखाकार आकृति—४.१ ब, गणित (क्षेत्रफल) २ २३४
 अ ।

शंखावर्त योनि—योनि ३.३८७ अ ।
 शंख—४.१ ब, यदुवंश १.३३७ ।
 शंखरदेव—४.१ ब ।
 शंखुक—४.१ ब ।
 शक—४.१ ब, अग्निमित्र १.३६ ब ।
 शकट—४१ ब, तीर्थंकर ऋषभदेव २.३८४ ।
 शकट द्वीप—मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।
 शकटमुखी—४२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।
 शकटमुख—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।
 शक वंश—४२ अ, इतिहास १.३१० ब, १ ३१४ ।
 शक संवत्—१.३०६ ब, १ ३१० अ ।
 शकुंदमन—यदुवंश १.३३७ ।
 शक्कर—अनुभाग १.३० ब ।
 शक्ति—४२ अ, अनशन १ ६६ अ, कर्म २ २६ अ, कर्मो-
 दय (कारण) २ ७१ ब । कषाय २ ३८ अ, कारण
 २ ६० अ, २.७१ ब, गुण २ २४० अ, २.२४१ अ,
 तप २ ३६० अ, २.३६३ ब, प्रकृति ३.८७ ब,
 प्रोषधोपवास ३.१६५ अ, स्वभाव ४.५०७ अ ।
 शक्ति-अंश—गुण २ २४१ अ ।
 शक्तिकुमार—४२ अ ।
 शक्तितः अनशन—१ ६६ अ ।
 शक्तितस्तप—तप २ ३६० अ, २ ३६३ ब ।
 शक्तितस्त्याग—त्याग २.३६७ अ ।
 शक्ति-भूपाल—४२ अ ।
 शक्ति-स्थिति—उत्कर्षण १ ३५४ ब ।
 शक्य पक्ष—पक्ष ३ २ ब ।
 शक्य प्राप्ति—४२ अ ।
 शकपुरी—४.२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।
 शक्रादित्य—४२ अ ।
 शची—वैमानिक इंद्रो की ज्येष्ठा देवी ४ ५१३ ब ।
 शत—संख्या परिमाण २.२१४ ब, इन्द्र १ २६६ अ ।
 शतइन्द्र—इन्द्र १.२६६ अ ।
 शत उज्ज्वल—गजदंत कूट—निर्देश ३.४७३ अ, विस्तार
 ३.४८३, अंकन ३.४४५, ३.४५७ ।
 शतक—इतिहास १ ३४१ अ ।
 शतक चूर्ण—इतिहास १ ३४१ अ, बृहत् १ ३४१ ब ।
 शतक ज्वाल—गजदंत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७३
 अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४, ३.४५७ ।
 शतधनु—गणधर २ २१२ ब, यदुवंश १ ३३७, हरिवंश
 १ ३४० अ ।
 शतपदा—४२ अ, रुचकवर पर्वत के कूट की देवी—निर्देश

३ ४७६ ब, अकन ३ ४६८, ३ ४६८, ३ ४६९ ।

शतपर्व—४.२ अ, विद्या ३ ५४४ अ ।

शतभागा—४.२ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

शतभिषा—४.२ अ, तीर्थकर वासुपूज्य २ ३८०, नक्षत्र २ ५०४ अ ।

शतमति—४.२ अ ।

शतमुख—४.२ ब, यदुवश १ ३३७ ।

शतरथ—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ ब ।

शतसहस्र—संख्या-परिमाण (गणित) २ २१४ ब ।

शतहृद—४.२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

शतहृदा—रुचकवर पर्वत की देवी ३.४७६ ब ।

शताख्य—स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४ ५१५, देव आयु १ २६८ ।

शतानीक—४.२ ब, कुरुवश १ ३१० ब, विद्याधरवश १ ३३६ अ ।

शतार (देव)—४.२ ब, देव—निर्देश ४ ५१० ब, अव-
गाहना १ १८० ब, अवधिज्ञान १ १६८ ब, आयु
१ २६८, आयुबंध के योग्य परिणाम १ २५८ ब ।
इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब, दक्षिणेद्र ४ ५११ अ,
परिवार ४ ५१२-५१३, चिह्न आदि ४.५११ ब, अव-
स्थान ४.५२० ब, विमान नगर व भवन ४.५२०-
५२१ ।

शतार (देव) प्ररूपणा—बध ३ १०२, बधस्थान ३.११३,
उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा
१.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२,
सत्त्वस्थान ४ २६८, ४ ३०५, त्रिसयोगीभग १ ४०६
ब । सत् ४ १६२, संख्या ४ ६८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन
४.४८१, काल २.१०४, अतर १ १०, भाव ३ २२०
ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

शतार (स्वर्ग)—४.२ ब । निर्देश ४.५१४ ब, पटल ४ ५१८,
इन्द्रक श्रेणीबद्ध ४ ५१८, ४ ५२०, दक्षिण विभाग
४ ५२१ अ । अवस्थान ४.५१४ ब, अकन ४ ५१५ ।
स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन
४ ५१५ ।

शत्रुंजय—४.२ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, विद्याधरवश
१.३३६ अ ।

शत्रु—४.२ ब, गुरु २.२५२ ब, सुख ४ ४३० ब ।

शत्रुघ्न—४.२ ब, यदुवश १.३३७, रघुवश १.३३८ अ ।

शत्रुभयंकर—राष्ट्रकूटवंश १.३१५ ब ।

शत्रुसेन—यदुवंश १ ३३७ ।

शनि—४.२ ब, ग्रह २ २७४ अ । ज्योतिष विमान—निर्देश

२.३४७, आकार २ ३४७, किरणे तथा वाहक देव
२.३४७, विस्तार २ ३५१ ब, अकन २.३४७, चित्र
२ ३४७ । आधुनिक मत ३ ४३६, वैदिकाभिमत
३.४३२ ब । इन्द्र—निर्देश २.३४५ ब, किरणे तथा
शक्ति २.३४७ ।

शबर-भाषा—मीमांसादर्शन ३ ३११ अ ।

शबर-स्वामी—४.२ ब, मीमांसादर्शन ३ ३११ अ ।

शबरी-गुह्यगूहन—व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ ।

शबल—४.२ ब ।

शब्द—४.२ ब, आगम १ २२६ ब, १ २३४ अ, आगमार्थ
१ २३१ अ, १ २३२ ब, आहारातराय १ २६ अ,
ध्येय २ ५०० अ, नय २ ५१४ ब, २ ५४३ अ, मूर्त
३.३१८ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२३ अ, सप्तभगी
४ ३२४ ब, ४.३२५ ब, स्फोट ४ ४६५ ब ।

शब्दकोष—४.४ ब ।

शब्द-गौरव—गौरव या गारव २.२३६ अ ।

शब्द-ग्रहण संस्कार—संस्कार ४.१५० अ ।

शब्दचिंतामणि—इतिहास १.३४६ ब ।

शब्दनय—आगम १ २३४ अ, कषाय २ ४० अ, नय
सामान्य २.५१४ ब, २ ५२० ब, नय सप्तक २ ५२६
ब, २.५२७ ब, २ ५२८ अ, नय (शब्द नय) २ ५३६
अ, २ ५३६ ब, २ ५४० अ, २ ५४१ अ, २.५४३
अ, निक्षेप २ ५६५ ब, २ ५६६ ब, समभिरुद्ध नय
२.५४० अ, सप्तभगी ४ ३२३ ब ।

शब्दनय-उपक्रम—उपक्रम १ ४१६ ब ।

शब्द-नयाभास—नय २.५३७ अ ।

शब्द-प्रमाण—आगम १ २२८ अ, प्रमाण १ २३४ अ ।

शब्द-ब्रह्म—ब्रह्म ३ १८८ अ ।

शब्दभेद—नय (अर्थभेद) २.५३६ अ, २ ५४१ अ, मतिज्ञान
(अर्थभेद) ३ २५४ अ ।

शब्दरत्नप्रदीप—इतिहास १ ३४७ ब ।

शब्द-लिंगज—श्रुतज्ञान ४ ५६ अ, ४ ६० ब, ४.६७ अ ।

शब्दवान्—४.४ ब, नाभिगिरि—निर्देश ३.४५२ ब, नाम-
निर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५,
३.४८६, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र
३.४५२ ब, वर्ण ३.४७७ ।

शब्दसंक्रमण—शुक्लध्यान ४ ३३ अ ।

शब्द-समय—ज्ञान २.२६६ अ, समय ४.३२८ अ ।

शब्दांभोज भास्कर—इतिहास १.३५३ अ ।

शब्दाकुलित—आलोचना का दोष १ २७७ ब ।

शब्दाद्वैत—अद्वैतवाद १.४७ ब, एकात १.४६५ ब ।
 शब्दानुपात—४.४ ब ।
 शब्दानुशासन—इतिहास १ ३४२ अ, १ ३४३ ब, १.३४७ ब ।
 शब्दार्थ—आगम—गीगता १ २३४ ब, देशकाल १ २३४ अ ।
 शब्दावतार—इतिहास १ ३४० ब ।
 शम—४.४ ब ।
 शयन—कृतिकर्म २ १३५ ब, कायक्लेश २ ४६ ब ।
 शयनतप—२.४७ ब ।
 शयनासन शुद्धि—वसतिका ३.५२८ अ ।
 शय्या—सल्लेखना ४ ३६० ब ।
 शय्याधर—भिक्षा ३.२३१ ब ।
 शय्या परिषह—४४ ब, चर्या २.२७६ अ, परिषह ३.३३ ब, ३.३४ अ ।
 शय्या व संस्तर शुद्धि—शुद्धि ४.४१ अ ।
 शर—कुरुवश १.३३५ ब ।
 शरण—४५ अ, अनुप्रेक्षा १.७३ अ, १ ७६ अ, द्रव्य (अनन्य शरण) २.४६१ अ ।
 शरद्वीप—कुरुवंश १ ३३५ ब ।
 शरभरथ—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब ।
 शरावती—४५ अ ।
 शरीर—४.५ अ, अंगोपाग १.१ ब, अध.कर्म १ ४८ ब, आकार १.४७१ ब, कर्म २.२६ अ, काम २.४४ अ, कायोत्सर्ग ३.६२० अ, कारक २.५०, केवली २.१५८ ब, क्षीणकषाय २ १८७ अ, चक्रवर्ती ४.१० ब, ४ ११ अ, जीव २ ३३८ अ, तीर्थकर २ ३७३ ब, देव २ ४४६ अ, नरक २.५७३ ब, निगोद (क्षीण-कषाय) २.१८७ अ, न्याय २.६३३ ब, पिंडस्थ ध्यान ३.५८ अ, लेण्या (वर्ण) ३.४२५ अ, व्युत्सर्ग तप ३.६२० अ, षट्कालिक वृद्धि-हानि २ ६३, सौक्ष्म्य-स्थौल्य ४ ६, १ १५७ ब ।
 शरीर—प्ररूपणा—शरीरबद्ध प्रदेशवर्गणा—सत् ४.६, अल्पबहुत्व १ १५७ । सौक्ष्म्य-स्थौल्य—सत् ४.६, अल्पबहुत्व १ १५७ ब । पंच शरीर स्वामित्व—सत् ४७, अल्पबहुत्व १ १४२ अ, १ १५८ ब, शरीरस्थान स्वामित्व—सत् ४७ ।
 शरीर-कृशीकरण—उपकार १.४१५ अ, कायक्लेश तप २ ४७ अ, सल्लेखना ४.३८२ ब ।
 शरीरत्याग—व्युत्सर्ग तप ३.६१६ अ, सल्लेखना ४.३६२ ब ।

शरीरत्रिक—उदय १.३७४ ब ।
 शरीर-नामकर्म-प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३ ६५ अ, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३ १३६ । बध ३ ६७, बधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोमीभग १.४०४ । संक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६६ ।
 शरीर-निर्मलता—अर्हतातिशय १.१३७ ब ।
 शरीर-निर्माण क्रम—जन्म २.३१३ अ ।
 शरीरनिर्वर्तनाधिकरण—अधिकरण १ ४६ ब ।
 शरीर-निर्वृत्तिस्थान—पर्याप्ति ३ ४२ अ ।
 शरीर-पर्याप्ति—पर्याप्ति ३.४१ अ, योग ३ ३८० अ ।
 शरीर-पर्याप्ति काल—काल २ ८१ अ, उदयस्थान १.३६३-३६७ ।
 शरीर-प्रमाण जीव—जीव २.३३८ अ ।
 शरीर-बंध—बध ३.१७० ब ।
 शरीर-बंधन गुणछेदना—छेदना २ ३०६ ब, २ ३०७ अ ।
 शरीर-बकुश—बकुश ३.१८० अ ।
 शरीरबद्ध प्रदेश—अल्पबहुत्व १.१५७ ।
 शरीरबद्ध वर्गणा—अल्पबहुत्व १.१५६ ।
 शरीर-रक्षा—आहार १ २६२ ब ।
 शरीर-वर्गणा—वर्गणा ३ ५१६ ब, अल्पबहुत्व १.१५७ ।
 शरीर-वियोग—हिंसा ४.५३६ ब ।
 शरीर-विससोपचय—अल्पबहुत्व १ १४२ अ, १.१५७ ।
 शरीर-शोषण—उपकार १ ४१५ अ, कायक्लेश तप २.४७ अ ।
 शरीर सल्लेखना—४.३८२ ब ।
 शरीरसघात—संघात ४.१२५ अ ।
 शरीरसघात नामकर्म—सघात ४.१२४ अ ।
 शरीर-सस्कार—साधु ४.४०५ अ ।
 शरीर-स्वामित्व—अल्पबहुत्व १.१५८ ब ।
 शरीरी—जीव २ ३३३ ब ।
 शर्करा—अनुभाग १.६० ब ।
 शर्कराप्रभा—४.८ ब, नरक पृथिवी अपरनाम वंशा—निर्देश २.५७६ अ, पटल २.५७६ ब, इन्द्रक श्रेणीबद्ध प्रकीर्णक २.५७८, २.५७९, विस्तार २.५७६, २.५७८, अंकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१६८, आयु १.२६३ ।
 शर्कराप्रभा (प्ररूपणा)—बंध ३.१०१, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा

१४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४.२८८, ४.३०५, त्रिसयोगीभग १.४०६ ब। सत् ४.१६६, संख्या ४.६५, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४.४७६, काल २.१०१, अतर १.८, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४।

शर्करावती—४.८ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

शर्मा—तीर्थकर विमलनाथ ३.३८०।

शलाका—४.८ ब, संख्या ४.६२ अ।

शलाकाकुड—असंख्यात १.२०६ ब।

शलाका-निष्ठापन—भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ।

शलाकापुरुष—४.८ ब, आयुबध योग्य परिणाम १.२५६ अ, कुलकर २.१३० ब, गज २.२११ ब, जन्म (गति अगति) २.३२१, २.३२२, त्रिपृष्ठ २.४०० अ, मरण ३.२८४ ब।

शल्य—४.२६ अ, ४.२७ अ, व्याता २.४६३ अ, व्रती ३.६२६ अ।

शल्यरहित—व्रत प्रतिमा ३.६२८ ब।

शवदिसर्जन—सल्लेखना ४.३६६ ब।

शवशय्यासन तप—कायवर्ण २.४७ ब।

शशांक—कुरुवश १.३३५ ब, तीर्थकर जयकीर्ति २.३७७। यदुवश १.३३७।

शशांकमुख—विद्याधर वश १.३३६ अ।

शशि—इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ।

शशिन—यदुवश १.३३७।

शशिप्रभ—४.२७ अ, चक्रवर्ती ४.१० अ, यदुवश १.३३७, विद्याधरनगरी ३.५४५ ब, ३.५४६ अ।

शशिप्रभा—विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

शहद—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब, श्रावक ४.५० ब।

शहाबुद्दीन—आशाधर १.२८० ब।

शांतकर—स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८, अकन ४.५१५, देव आयु १.२६८।

शांत कषाय—बंधक ३.१७३ अ।

शांतनु—४.२७ अ, कुरुवश १.३३५ ब, १.३३६ अ, यदुवश १.३३६, १.३३७।

शांतभद्र—४.२७ अ।

शांतरिक्ष—४.२७ अ।

शांति—उपेक्षा १.४४४ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ।

शांतिकीर्ति—४.२७ अ, नदिसघ १.३२३ अ, इतिहास १.३२६ ब, १.३३३ ब।

शांतिचक्र पूजा—इन्द्रनदि १.२६६ ब।

शांतिचक्र यंत्रोद्धार—यत्र ३.३६२।

शांतिचक्र—कुरुवश १.३३५ ब, १.३३६ अ।

शांतिनाथ—४.२७ अ, अपराजित १.११६ अ, कुरुवश १.३३५ ब, १.३३६ अ, तीर्थकर प्ररूपणा २.३७६-३६१।

शांतिनाथचारित्र—इतिहास १.३४३ अ, १.३४५ ब।

शांतिनाथ पुराण—४.२७ अ, असग कवि १.२०७ ब, इतिहास १.३४७ अ।

शांतिनाथ स्तोत्र—स्तोत्र ४.४४६ अ।

शांतिप्रभ—कुरुवश १.३३५ ब।

शांति यंत्र—यत्र ३.३६१।

शांतिवर्धन—कुरुवश १.३३५ ब, १.३३६ अ।

शांतिविधान यंत्र—यत्र ३.३६३।

शांतिषेण—कुरुवश १.३३५ ब, इतिहास १.३२६ अ।

शांतिसागर—४.२७ ब, इतिहास १.३३४ ब।

शांतिसेन—४.२७ ब। पुन्नाटसघ १.३२७ अ, लाडबागड़ सघ—१.३२७ ब, इतिहास १.३३० अ।

शांत्यष्टक—४.२७ ब, इतिहास १.३४० ब।

शांत्याचार्य—४.२७ ब, ज्वेताबर ४.७७ अ, १.परि०/२४, इतिहाम १.३३० ब, १.३४३ अ।

शांति—नारायण ४.१६ ब।

शाकटायन न्यास—४.२७ ब, इतिहास १.३४३ अ, टीका १.३४४ ब।

शाकटायन पाल्यकीर्ति—इतिहास १.३३० अ, १.३४२।

शाकटाल—सगध देश इतिहास १.३१० ब।

शाकल्य—४.२७ ब, अज्ञानवाद १.३८ ब।

शाखा—४.२७ ब।

शातंकर—४.२७ ब।

शाती—नाभिगिरि का रक्षक देव ३.४७१ अ।

शाप—४.२७ ब।

शामकुड—४.२७ ब, इतिहास (कुदकुद) १.३२८ ब, १.३४० ब।

शारीरिक दुःख—दुःख २.४३४ ब।

शाल—तीर्थकर धर्मनाथ, सभवाथ २.३८३, हरिवंश १.३४० अ।

शालगुहा—४.२८ अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।

शालि—तीर्थकर धर्मनाथ, मल्लिनाथ २.३८३।

शालिग्राम—अग्निभूति १.३६ ब।

शालिभद्र—४.२८ अ, अनुत्तरोपपादकदशाग १.७० ब।

शालिवाहन—४.२८ अ, भृत्यवंश १.३१४। इतिहास १.३११ अ, १.३१४।

शालिवाहन संवत्—१.३०६ ब।

शालिसिक्थ मत्स्य—समूच्छन ४.१२८ अ।

शाली (देव)—भावजदेव—आयु १ २६५, अवस्थान ३.६१३ अ।

शाल्मली वृक्ष—४.२८ अ, तीर्थंकर सभवनार्थ २ ३८३।
वृक्ष—निर्देश ३.४५८-४५९, ३.५७८ ब, अवस्थान ३ ४५६ ब, विस्तार ३.४५८ अ, अंकन ३.४४४, ३ ४५७, चित्र ३ ४५८ ब, वर्ण ३ ४७७, वृक्ष ३.५७८ ब।

शाल्मली वृक्षस्थल—४.२८ अ, अवस्थान ३.४५८ अ, अंकन ३ ४५७, चित्र ३.४५९, वर्ण ३ ४७७, देव प्रासादों का विस्तार ३ ६१५। बौद्धाभिमत नरकस्थित अय.शाल्मली वन ३.४३४ ब, वैदिकाभिमत ३ ४३१ ब।

शाश्वत उपादान—उपादान १.४४३ ब।

शाश्वत जिनस्तुति—स्तोत्र ४.४४९ अ, इतिहास १ ३४१ अ।

शाश्वत सुख—सूक्ष्म सापराय ४ ४४१ अ।

शाश्वतानत—अनत १ ५५ ब।

शाश्वतासख्यात—असख्यात १ २०५ ब।

शासन—४ २८ अ, आगम १.२२७ ब।

शासनदिवस—महावीर ३ २९१ अ।

शासन देव—विनय ३ ५५३ अ।

शास्त्र—४.२८ अ, अग्र (श्रुत) १ ३९ अ, अध्यात्म १.५४ अ, आगम १.२२७-२३९, चैत्य-चैत्यालय २.३०१ अ, पूजा ३ ७७ अ। शब्दलिङ्गज श्रुतज्ञान ४.६७ अ, स्वाध्याय ४ ५२३ अ।

शास्त्रज्ञान—ज्ञान २ २६७ ब, २.२६८ अ, (चारित्र) २ २६७ ब, मिथ्यादृष्टि २.२६५ ब, २.२६७ ब, श्रुतज्ञान (द्रव्य) ४.५९ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५६ अ।

शास्त्र-तात्पर्य—ज्ञान २.२६९ अ।

शास्त्रदान—अपवाद मार्ग १ १२२ अ, दान २.४२३ अ।

शास्त्रदीपिका—मीमांसादर्शन ३.३११ अ।

शास्त्र-पठन—सिद्धांतशास्त्र के पठन का अधिकार २.४८ अ, स्वाध्याय ४ ५२४ ब, ४.५२५ अ।

शास्त्रवार्तासमुच्चय—४.२८ ब, इतिहास १.३४४ ब।

शास्त्रसारसमुच्चय—४.२८ ब, इतिहास १.३४४ ब।

शास्त्राध्ययन—श्रावक का अधिकार २.४८ अ, स्वाध्याय ५.५२४ ब, ४.५२५ अ।

शास्त्रार्थ—वाद ३ ५३३ ब।

शाह ठाकुर—इतिहास १.३३३ ब, १.३४५ अ।

शिकार—आखेट १.२२५ अ।

शिक्षक—तीर्थंकर संघ २.३८६।

शिक्षा—४.२८ ब, सल्लेखना ४ ३९० ब।

शिक्षाकाल—काल २.८० ब।

शिक्षागुरु—गुरु २.२५२ अ।

शिक्षाव्रत—४.२८ ब।

शिक्षाडी—४ २८ ब।

शिक्षरनी—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब।

शिक्षरी—४.२८ ब, वर्षधर पर्वत—निर्देश ३ ४४६ ब, नामनिर्देश ३.४७१, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७, वैदिकाभिमत शृंगी पर्वत ३.४३१ ब।

शिक्षरी (कूट)—पद्म आदि हृदों के कूट—निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४५४। शिक्षरी पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४ के सामने।

शिक्षा—कुल्लक २ १८८ ब।

शिक्षिकंठ—भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ।

शिक्षिल—साधु ४.४०७ ब।

शिक्षिल श्रद्धानी—सम्यग्दर्शन ४.३७१ अ।

शिक्षिलाचारी—साधु ४.४०७ ब।

शिप्रा—४ २८ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

शिर.कंप—४.२८ ब।

शिरोनति—कर्म २ २६ अ, कृतिकर्म २.१३३ ब, नमस्कार २ ५०६ अ, वदना ३.४९४ ब।

शिरोमणि दास—इतिहास १.३३३ ब।

शिला—४.२९ अ।

शिलामय आसन—कृतिकर्म २.१३५ ब।

शिलामय संस्तर—संस्तर ४.१५३ ब।

शिलायुध—यदुवंश १.३३७।

शिलारेखा—कषाय (क्रोध) २ ३८ अ।

शिल्पकर्म—सावद्य ४.४२० ब।

शिल्पकर्मार्थ—आर्य १.२७५ अ, सावद्य ४.४२१ अ।

शिल्पिसंहिता—४.२९ अ, इतिहास १.३४२ ब।

शिल्पि डिक्कार—इतिहास १.३४० अ।

शिवकर—४.२९ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

शिव—४.२९ अ, तीर्थंकर २.३७७, ध्यान २.४९९ अ, लवण-सागर के पर्वतों का रक्षक देव ३.४७४ ब।

शिवकुमार—४.२९ अ।

शिवकुमार बेला व्रत—४.२९ अ।

शिवकोटि—४.२९ अ, इतिहास—प्रथम १.३३८ अ, १.३४० अ।

शिवगुप्त—४.२९ ब, चक्रवर्ती ४.१० ब। पुननाट संघ

१.३२७ अ, इतिहास १.३२८ अ ।
 शिवघोष—बलदेव ४.१७ ब ।
 शिवतत्त्व—४.२६ ब ।
 शिवदत्त—४.२६ ब, मूलसंघ १.३१७, १ परि०/२.६, इतिहास १.३२८ ब ।
 शिवदेव—४.२६ ब ।
 शिवदेवी—४.२६ ब, तीर्थंकर नेमिनाथ २.३८० ।
 शिवनंद—यदुवंश १.३३७ ।
 शिवनंदि—नदिसंघ १.३२३ ब ।
 शिवभूति—श्वेतांबर ४.७८ अ-ब, ४.७९ ब ।
 शिवमंदिर—४.२६ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ-ब ।
 शिवमत—एकांत (वैशेषिक) १.४६५ ब ।
 शिवमार—४.२६ ब ।
 शिवमृगेश धर्म—४.२६ ब ।
 शिवलाल—४.२६ ब । इतिहास १.३३४ ब ।
 शिवशर्म सूरि—इतिहास १.३२६ अ, १.३४१ अ ।
 शिवसागर—४.२६ ब, इतिहास १.३३४ ब ।
 शिवस्कंद—४.२६ ब, इतिहास १.३२८ ब ।
 शिवा—वैमानिक इन्द्रो की ज्येष्ठा देवी ४.५१३ ब, ४.५१४ अ ।
 शिवाकर—नारायण ४.१८ ब ।
 शिवादित्य—वैशेषिक दर्शन ३.६०८ अ ।
 शिवार्थ—४.२६ ब, इतिहास (शिवकोटि) १.३२८ अ, १.३४० अ ।
 शिवि—यदुवंश १.३३६ ।
 शिविका—४.३० अ ।
 शिशुनाग—मगधदेश इतिहास १.३१२ ।
 शिशुनाग वंश—मगधदेश इतिहास १.३१२ ।
 शिशुपाल—४.३० अ, कल्कीराज २.३० ब, कल्कीवश १.३११ ब, १.३१५ अ ।
 शिष्य—४.३० अ, आलोचना १.२७८ अ, उपदेश १.४२५ अ-ब, गुरु २.२५२ ब ।
 शीत—४.३० अ, परिषद् ३.३३ ब, ३.३४ अ. योनि ३.३८७ अ । नरकगटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।
 शीतयुद्ध—४.३० अ । मनुष्यलोक ३.२७५ ।
 शीतपरिषद्—४.३० अ, परिषद् ३.३३ ब, ३.३४ अ ।
 शीतयोग—कायक्लेश २.४७ ब, २.४८ अ ।
 शीतलनाथ—४.३० अ, तीर्थंकर प्रह्लादा २.३७६-३६१ ।
 शीतलप्रसाद—४.३० अ, इतिहास १.३३४ ब ।

शीतल वायु—अर्हतातिशय १.१३७ ब ।
 शीता—रुचकवर पर्वत के कूट की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ ।
 शीतोपचार—अपवाद मार्ग १.१२२ अ ।
 शीतोष्ण—योनि ३.३८७ अ ।
 शीर्ष-प्रकंपित—काल का प्रमाण २.२१६ ब ।
 शीर्ष-प्रकंपित—व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ ।
 शीर्ष-प्रहेलिका—काल का प्रमाण २.३१६ अ-ब ।
 शीर्ष प्रहेलिकांग—काल का प्रमाण २.२१६ अ-ब ।
 शील—४.३० अ उपयोग (शुभ) १.४३४ ब, गुण २.२४० अ, ब्रह्मवर्ग ३.१६० अ, ३.१६३ अ, शुभापयोग १.४३४ ब, सावयकर्म ४.४२१ ब ।
 शीलकथा—४.३१ अ, इतिहास १.३४८ अ ।
 शीलचंद—नदिसंघ भट्टारक १.३२३ ब ।
 शीलपनाका—इतिहास १.३४७ ब ।
 शीलपाहुड—४.३१ अ, इतिहास १.३४० ब, वच० १.३४८ अ ।
 शीलव्रत—४.३१ अ, शील ४.३० अ ।
 शीलव्रतानतिचार—शील ४.३० ब ।
 शीलव्रतेष्वनतिचार—शील ४.३० ब ।
 शीलवृद्ध—सगति ४.११६ अ ।
 शीलसन्तमी व्रत—४.३१ अ ।
 शुभा—४.३१ अ ।
 शुक्र—महा शुक्रेंद्र का यान ४.५११ ब ।
 शुक्रसम श्रोता—उपदेश १.४२५ ब, श्रोता ४.७४ ब ।
 शुक्राद्या—असुरेंद्र की अग्र देवी ३.२०६ अ ।
 शुक्ति—४.३१ अ ।
 शुक्तिमती—४.२१ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब, (नगर) ३.२७६ अ ।
 शुक्र—४.३१ अ, औदारिक शरीर १.४७१ ब, १.४७२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।
 शुक्र (ग्रह)—४.३१ अ, ग्रह २.२७४ अ, ज्योतिष विमान—निर्देश २.३४८ अ, आकार २.३४७, किरण तथा वाहक देव २.३४७, विस्तार २.३५१ ब, अंकन २.३४७, चित्र २.३४७ । देवआयु १.२६६ अ, इन्द्र २.३४५ ब । आधुनिक मत ३.४३६ अ, वैदिकाभिमत ३.४३२ ब ।
 शुक्र (देव)—देव—निर्देश ४.५१० ब, अवगाहना १.१८१ अ, अवधिज्ञान १.१६८ ब, आयु १.२६८, आयु बं० के योग्य परिणाम १.२५८ ब । इन्द्र—निर्देश ४.५१ ब, दक्षिणेन्द्र ४.५११ अ, परिवार ४.५१२-५११

अवस्थान ४५२० ब, चिह्न आदि ४.५११ ब, विमान नगर व भवन ४५२०-५२१ ।

शुक्र (देव)—प्ररूपणा—बध ३१०२, बधस्थान ३११३, उदय १३७८, उदयस्थान १३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४२८२, सत्त्वस्थान ४२६८, ४३०५, त्रिसयीगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१६२, सख्या ४६८, क्षेत्र २२००, स्पर्शन ४४८१, काल २१०४, अतर १.१०, भाव ३२२० ब, अल्प-बहुत्व ११४५ ।

शुक्र (स्वर्ग)—स्वर्ग—निर्देश ४५१४ ब, पटल ४५१८, इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४५१८, ४५२०, दक्षिण विभाग ४५२१ अ, अवस्थान ४.५१४ ब, अकन ४५१५ । स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४५१८, अकन ४.५१५ ।

शुक्लध्यान—४.३१ अ, काजावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, धर्मध्यान २.४८१ अ, ध्याता २.४६२ अ, २.४६३ ब, पद्धति ३६ अ, प्रतिक्रमण ३११७ ब, मोक्षमार्ग ३३२६ अ, विकल्प ३५२८ ब, शुद्धोपयोग १.४३१ अ ।

शुक्लपक्ष—लवण सागर मे जलवृद्धि ३४६० ब ।

शुक्ल लेश्या—कालावधि का अल्पबहुत्व १.१५६, लेश्या ३४२३ ब, आयुबंध १.२५६ अ । प्ररूपणा—बंध ३.१०७, बधस्थान ३११३, उदय १३८४, उदय-स्थान १३६३ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४२८४, सत्त्वस्थान ४३०१, ४.३०६, त्रिसयीगी भग १.४०७ ब। सत् ४.२५१, सख्या ४.१०८, क्षेत्र २.२०६, स्पर्शन ४.४६०, काल २११६, अतर १.१८, भाव ३२२१ ब, अल्पबहुत्व ११५१ ब ।

शुचि—४.३८ अ, पिशाच जातीय व्यतरदेव ३.५८ ब ।

शुचित्व—शुचि ४.३८ अ ।

शुचिदत्त—गणधर २.२१३ अ ।

शुचिशाल—गणधर २.२१३ अ ।

शुतभुंग—४.३८ अ ।

शुद्ध—४.३८ अ, अनशन १.६६ अ, अनुभव १.८२ ब, १.८४ ब, १.८६ ब, आहार १.२६२ ब, उपयोग १.८६ अ, तत्त्व २.३५३ अ, नय २.५५१ अ, परम ३.१३ अ, श्रुतज्ञान ४.६० अ । सापेक्षधर्म—अनेकात १.१०६ अ, सप्तभंगी ४.२२३ ब ।

शुद्ध अर्थ-पर्याय—पर्याय ३.४६ ब ।

शुद्ध आहार—अपवाद मार्ग १.१२१ अ, आहार १.२८५ अ ।

शुद्ध उपयोग—उत्सर्ग मार्ग १.१२१ अ, उपयोग १.४३० ब-१.४३१ ब, (गुणस्थान) १.४३४ अ, पद्धति ३८ ब ।

शुद्ध-उपलब्धि—उपलब्धि १.४३५ ब ।

शुद्धचारित्र—धर्मध्यान (पंचमकाल) २.४८४ ब, मोक्षमार्ग ३३३५ ब ।

शुद्धचेतना—चेतना २.२६७ अ ।

शुद्धता—उदयाभाव १.३६६ ब ।

शुद्धद्रव्य—नय २.५३१ अ-ब ।

शुद्धद्रव्य नैगमनय—नय २.५३१ अ ।

शुद्धद्रव्य-नैगमाभास—नय २.५३२ अ ।

शुद्धद्रव्य-व्यंजनपर्याय नैगमनय—नय २.५३१ ब ।

शुद्धद्रव्य-व्यंजनपर्याय नैगमाभास—नय २.५३२ अ ।

शुद्धद्रव्यायंपर्याय नैगमानय—नय २.५३१ ब ।

शुद्धद्रव्यार्थपर्याय नैगमाभास—नय २.५३२ अ ।

शुद्धद्रव्याधिक नय—नय २.५४३ ब, नय (संग्रह) २.५३४ ब ।

शुद्ध ध्यान—ध्यान २.४६६ अ ।

शुद्ध नय—नय २.५२३ ब ।

शुद्ध निश्चयनय—नय २.५५३ ब ।

शुद्ध परिणाम—उपयोग १.४३४ ब, परिणाम ३.३१ ब ।

शुद्धपर्यायाधिक नय—नय (ऋजुसूत्र) २.५३५ अ ।

शुद्ध पारिणामिक भाव—उत्पादादि १.३५८ अ, गुण २.२४१ ब, २.२४२ ब, ध्येय २.५०१ ब, परम ३.१२ ब, पारिणामिक ३.५५ अ, भव्य ३.२१४ अ, भाव ३.२१६ अ, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब, ३.३३७ ब, ३.३३८ अ ।

शुद्ध भाव—उपयोग १.४३० ब, धर्म २.४६७ अ, पद्धति ३८ ब ।

शुद्धमति—४.३८ ब, तीर्थकर २.३७७ ।

शुद्ध सद्भूत नय—नय २.५६० अ ।

शुद्धात्म ज्ञान—४.३८ ब, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब ।

शुद्धात्म-दर्शन—४.३८ ब, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब ।

शुद्धात्म-द्रव्य—मोक्षमार्ग ३.३३६ अ ।

शुद्धात्म-पठन—मोक्षमार्ग ३.३३६ अ ।

शुद्धात्म-संवित्ति—पद्धति ३६ अ ।

शुद्धात्म-स्वरूप—४.३८ ब, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब ।

शुद्धात्मा—तत्त्व २.३५५ ब, ध्येय २.५०१ ब, पद्धति ३६ अ, सम्यग्दर्शन ४.३५७ अ, ४.३५८ अ ।

शुद्धात्मानुभव—अनुभव १.८६ ब, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ, स्वरूपाचरण ४.५०६ अ ।

शुद्धात्मानुभूति—मोक्षमार्ग ३.३३५ ब, ३.३३६ अ-ब, सामायिक ४.४१६ अ ।

शुद्धात्माभिमुख परिणाम—पद्धति ३ ८ ब ।

शुद्धाद्वैत—वेदात ३ ६०१ अ ।

शुद्धाभ देव—४ ३८ ब, तीर्थकर २ ३७७ ।

शुद्धाशन—अपवाद १ १२१ अ, अनशन १ ६६ अ, तप २ ३६० अ ।

शुद्धाशुद्धोपयोग—उपयोग १ ४३० ब ।

शुद्धि—४ १८ ब, आहार १.२८५ अ-ब, १ २८६ अ, आगम १ २२८ अ, उपयोग १.४३० ब, उभय शुद्धि १ ४४४ ब, द्रव्य क्षेत्रादि की शुद्धि (आगम) १ २२८ अ, भावशुद्धि (आहार) १ २८६ अ, विष्कुम्भ (उपयोग) १ ४३४ अ, सम्यग्ज्ञान (उभय शुद्धि) १ ४४४ ब ।

शुद्धोदन—४ ४१ अ ।

शुद्धोपयोग—१.४३० ब-४३१ ब, (गुणस्थान) १ ४३४ अ, चारित्र २ २८६ अ-ब, धर्म २ ४६६ अ, धर्मध्यान २.४८३ अ, पद्धति ३ ८ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ, संवर ४ १४३ ब, हिंसा (अशुद्धोपयोग) ४ ५३२ अ ।

शुद्धोपयोगी—धर्म २ ४६६ ब, साधु ४.४०३ अ, ४ ४०७ ब ।

शुभंकर—कुरुवश १ ३३५ ब, १.३३६ अ ।

शुभ—४ ४१ अ, अनुभव १ ८६ अ, उपयोग १.४३०-१ ४३५, उपशम १.४३७ अ, धर्म २ ४७२ ब, परिणाम ३ ३१ अ, प्रणिधान ३ ११५ अ, मनोयोग ३ २७७ ब, मोह ३ ३४० ब, योग ३ ३७७ अ, सयत ४ १३२ ब ।

शुभ आस्रव—आस्रव १ २८२ ब, संवर ४ १४३ अ ।

शुभ उपयोग—अपवादमार्ग १ १२० ब । उपयोग—१.४३०-१ ४३५, गुणस्थान १ ४३४ अ, धर्म १.४३३-४३४, विष्कुम्भ १ ४३४ अ । चारित्र २.२६० अ-ब, धर्म २ ४६६ ब, संवर ४ १४३ ब ।

शुभ उपशम—उपशम १ ४३७ अ ।

शुभकरण चिह्न अवधिज्ञान १ १६२ अ ।

शुभकर्म—राग ३ ३६६ अ ।

शुभ काययोग—काय २ ४६ अ ।

शुभकीर्ति—४ ४१ ब, नदिसंघ भट्टारक १ ३२३ ब । काष्ठासघ १ ३२७ अ, इतिहास १.३३३ अ, १ ३४६ अ ।

शुभचंद्र—४.४१ ब, शलाकापुरुष ४.२५ ब, प्रथम—नदिसंघ १.३२४ अ, इतिहास १ ३३१ अ, १ ३४३ अ । द्वितीय—नदिसंघ देशीयगण १.३२४ ब, १.३२५, इतिहास १.३३१ ब । तृतीय—इतिहास १ ३३१ ब ।

चतुर्थ—नदिसंघ भट्टारक १ ३२३ ब, इतिहास १ ३३२ अ । पंचम—इतिहास १ ३३२ अ । षष्ठ—इतिहास १ ३३२ ब । सप्तम—१ ३३३ ब, १ ३४६ ब, १ ३४७ अ ।

शुभ-तैजस-शरीर—तैजस २ ३६४ ब ।

शुभ-तैजस-समुद्घात—तैजस २ ३६६ अ ।

शुभध्यान—धर्मध्यान २ ४७८ अ, २ ४८२ अ ।

शुभनदि—४.४१ ब, इतिहास १ ३२८ ब ।

शुभ नामकर्म प्रकृति—पुण्य ३ ६० ब । प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २.५८३, स्थिति ४ ४६६, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३ १३६ । बंध ३ ६७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४ । सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्र १.१६७ अ ।

शुभ परिणाम—उपयोग १.४३१ ब, पुण्य ३.६० अ, ३ ६३ अ ।

शुभ भाव—अनुप्रेक्षा १ ७८ ब, (चारित्र) १ ७८ ब, पुण्य ३ ६३ अ ।

शुभ भावना—धर्मध्यान २ ४८२ ब ।

शुभ योग—योग ३ ३७५ ब, संवर ४ १४२ ब ।

शुभ लेश्या—लेश्या ३ ४२२ ब ।

शुभ वचनयोग—वचन ३.४६८ ब ।

शुभ विचार—सामादिक ४.४१७ ब ।

शुभ स्वप्न—स्वप्न ४ ५०४ अ ।

शुभा—विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ ।

शुभानुबधी निर्जरा—अनुप्रेक्षा १.७५ ब, निर्जरा २ ६२२ ब ।

शुभास्रव—आस्रव १.२८२ ब, संवर ४.१४३ अ ।

शुभोपयोग—अपवाद मार्ग १ १२० ब । उपयोग—१.४३०-४३५, (अशुद्धोपयोग) १ ४३३ ब, (गुणस्थान) १.४३४ अ, (धर्म) १.४३४, (विष्कुम्भ) १.४३४ अ । चारित्र २ २६० अ-ब, धर्म २.४६६ ब, संवर ४.१४३ ब ।

शुभोपयोगी—चारित्र २.२६३ ब, साधु ४.४०४ अ, ४ ४०७ ब ।

शुभ्र—४.४२ अ ।

शुभ्रपुर—मनुष्यलोक ३.२७६ अ ।

शुम्भा—४.३१ अ ।

शुष्क—४.४२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

शूकर—तीर्थकर विमलनाथ २ ३७६ ।

शूद्र—आहारातराय १.२६ ब, प्रायश्चित्त ३.१६२ अ,
भिक्षा ३.२३२ अ, ब्राह्मण ३.१६५ अ, वर्णव्यवस्था
३.५२५ ब ।

शूद्र (कारु) — वर्णव्यवस्था ३.५२५ ब ।

शूद्रवश — वर्णव्यवस्था ३.५२४ अ ।

शूद्रवर्ण—वर्णव्यवस्था ३.५२३ ब, ३.५२४ अ-ब ।

शून्य—अगृहीत द्रव्य की सहनानी '०' २.२१६ अ ।

शून्य—४.४२ अ, अनुभव १.८२ अ, जीव २.३३३ अ,
ध्यान २.४६६ ब, पदस्थ ध्यान ३.७ अ, शुक्लध्यान
४.३३ अ ।

शून्यघर—वसतिका ३.५२७ ब ।

शून्य दोष—कर्ता कर्म २.२२ ब ।

शून्य ध्यान—धर्मध्यान २.४८५ ब, शुक्लध्यान ४.३२ ब ।

शून्य नय—४.४२ अ, नय २.५२३ अ ।

शून्य परिकर्माष्टक—गणित २.२२२ अ, २.२२४ ब ।

शून्य वर्गणा—वर्गणा ३.५१८ अ ।

शून्यवाद—४.४२ अ, एकांत १.४६५ ब, बौद्धदर्शन
३.१८७ ब ।

शून्यागारावास—अस्तेय १.२१४ अ ।

शूर—४.४२ अ, अधकवृष्णि १.३० अ, कुरुवंश १.३३६
अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ, यदुवंश १.३३६, हरिवंश
१.३४० अ ।

शूरसेन—४.४२ अ ।

शूरललित—४.४३ ब, व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ ।

शृंगारमंजरी—इतिहास १.३४५ अ ।

शृंगारार्णवचंद्रिका—इतिहास १.३४५ अ ।

शेषवत् अनुमान—अनुमान १.६७ ब ।

शेषवती—४.४२ अ, रुचकवर पर्वत के कूट की दिक्कुमारी
—निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३.४६८ अ ।

शेष—४.४२ अ ।

शैल—४.४२ अ, अनुभाग १.६१ ब, १.६४ अ, कषाय
(मान) २.३८ अ, रत्नप्रभा ३.३६१ अ, यदुवंश
१.३३७ ।

शैलकर्म—कर्म २.२६ अ, निक्षेप २.५६८ अ ।

शैलघन श्रोता—उपदेश १.४२५ ब ।

शैलनगर—नारायण ४.१८ ब ।

शैलभद्र—४.४२ अ, यक्ष ३.३६६ अ ।

शैलराज—सुमेरु ४.४३७ अ ।

शैला—४.४२ अ ।

शैलेशी अवस्था—शुक्लध्यान ४.३५ अ ।

शैवदर्शन—४.४२ अ, एकांत १.४६५ ब, वेदांत ३.६०१ अ ।

शोक—४.४२ अ, कषाय २.३५ ब, (रागद्वेष) २.३६ अ,

कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, हिसा ४.५३३ ब ।

शोक—(कर्मप्रकृति)—४.४२ अ, चारित्र मोहनीय ३.३४३
ब, ३.३४४ ब, उपशम १.२६ अ, १.४४० अ, उपशम
की कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, क्षपणा १.२६
ब, २.१७६ ब, क्षपणा का कालावधि का अल्पबहुत्व
१.१६१, चारित्र २.२६४ अ ।

शोक (कर्मप्रकृति)—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४१,
स्थिति ४.४६१, स्थिति सत्त्वस्थानो का अल्पबहुत्व
१.१६५ ब, अनुभाग १.६४ ब, प्रदेश ३.१३६ । बंध
३.६७, बंधस्थान ३.१०६, बंध की कालावधि का
अल्पबहुत्व १.१६१, उदय १.३७५, उदय की काला-
वधि का अल्पबहुत्व २.१२०, उदय की विशेषता
१.३७२ अ ब, उदयस्थान १.३८६, उदीरणा १.४११
अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्व-
स्थान ४.२६५, स्थिति सत्त्वस्थानो का अल्पबहुत्व
१.१६५ ब, त्रिसंयोगी भग १.४०१ ब । संक्रमण
४.८५ अ अल्पबहुत्व १.१६८ ।

शोक वेदनीय—मोहनीय ३.३४४ अ, ३.३४४ ब ।

शोका—विदेह नगरी—निर्देश ३.५६० अ, नामनिर्देश
३.४७० ब, विस्तार ३.४७६ ३.४८०, ३.४८१,
अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ ।

शोधन—आहार (अन्नशोधन) १.२८५ ब ।

शोधित—४.४२ ब, गणित (व्यकलन) २.२२२ ब ।

शोभ—४.४२ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

शोच—४.४२ ब, समिति (उपकरण) ४.३४१ अ ।

शोचधर्म—४.४२ ब, गुप्त २.२५० ।

शोचोपकरण—समिति ४.३४१ अ ।

शौद्धोदनि—परवाद ३.२३ अ ।

शौरपुर—४.४३ ब, अधकवृष्णि १.३० अ, मनुष्यलोक
३.२०६ अ ।

शोरीपुर—तीर्थंकर नेमिनाथ २.३७६ ।

शौर्यपुर—यदुवंश १.३३६ ।

श्मशान-निलय—मातंगवश १.३३६ ब ।

श्मशानभूमि—वसतिका ३.५२७ ब ।

श्यामकुमार—४.४३ ब ।

श्याम द्वीप व सागर—तेरहवां द्वीप व सागर—निर्देश
३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अंकन ३.४४३, जल का
रस ३.४७० अ, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिष्ठी देव
३.६१४ ।

श्यामा—वैमानिक इन्द्रो की ज्येष्ठा देवी ४.५१४ अ, यदु-
वंश १.३३७ ।

श्रद्धा—प्रत्यय ३ १२५ ब, मोहनीय ३ ३४२ ब, सम्प्रदर्शन ४.३५० ब, ४ ३५६ अ, ४.३५६ ब सम्प्रदृष्टि ४.३७८ ब ।

श्रद्धान—४४३ ब, अदर्शन परिषद् १४६ ब, अनुभव १ ८२ ब, आगमार्थ १ २३२ ब, उपदेश १.४२६ ब प्रायश्चित्त ३ १५८ ब, ३ १६२ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०२ ब, ३.३०५ अ, सम्प्रदर्शन ४ ३४६ अ-ब, ४.३५२ ब, ४ ३५४ अ, ४ ३५६ अ-ब, ४ ३५६ अ, साधु ४४०६ ब ।

श्रद्धान प्रायश्चित्त—प्रायश्चित्त ३ १५८ ब ।

श्रद्धानवाद—एकात १ ४६५ ब ।

श्रद्धानांश—मिश्र गुणस्थान ३ ३१० अ ।

श्रद्धानाश्रद्धान—मिश्र गुणस्थान ३ ३१० अ ।

श्रद्धावती—नाभिगिरि—निर्देश ३ ४५२ ब, नामनिर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४५२ ब ।

श्रद्धावान्—४ ४६ ब, सम्प्रदृष्टि ४.३७८ ब ।

श्रद्धावान् (कूट)—वक्षारगिरि का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४ ।

श्रद्धावान् (पर्वत)—४.४६ ब । नाभिगिरि—निर्देश ३ ४५२ ब, नाम निर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७ । वक्षारगिरि—निर्देश ३ ४६० अ, नाम निर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७ ।

श्रमण—४ ४६ ब, अनगर १.६२ अ, अनुभव १.८६ अ, साधु ४.४०६ अ, ४.४०७ ब, ४ ४१० अ । विशेष दे० साधु ।

श्रमणशय्या—व्युत्सर्ग ३.६२१ अ ।

श्रवण—आहारान्तराय १ २६ अ, ग्रह २ २७४ अ, तीर्थ-कर श्रेयास तथा मुनिमुव्रतनाथ २.३८०, नक्षत्र २.५०४ ब ।

श्रमण्य—परिग्रह ३.२५ ब ।

श्रावक—४ ४६ ब, अनुभव १.८४-८६ अ, आहारान्तराय १ २८ अ, उपकार १.४१६ अ, कायक्लेश २.४८ अ, क्रिया २ १७४ अ-ब, २.१७५ अ, तीर्थंकर संघ २.३८८, पूजा ३ ७५ अ, बौद्ध दर्शन ३ १८६ ब ।

श्रावकसंघ—कल्की २.३१ ब ।

श्रावकसूत्र—यज्ञोपवीत ३.३६६ ब ।

श्रावकाचार—४.५२ ब, इतिहास—(धर्मरत्नाकर) १ ३४३ अ, आगम परम्परा १ ३४३ ब ।

श्रावकाचार सारोद्धार—इतिहास १ ३४५ ब ।

श्रावणद्वादशी व्रत—४ ५२ ब ।

श्रावस्ती—तीर्थंकर सभवनार्थ २ ३७६, नारायण ४ १८ ब, प्रतिनारायण ४ २० ब ।

श्राविका—उपकार १ ४१६ अ, तीर्थंकर सघ २.३८७ ।

श्रिति—४ ५२ ब, सल्लेखना ४.३६० ब ।

श्री—४ ५३ अ । पद्मद्रुह की देवी—निर्देश ३.४५३ ब, परिवार ३.६१२ अ, अवस्थान ३ ६१४ अ, अंकन ३.४०३, भवन विस्तार ३ ६१५ रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६८, ३.४६९ । हिमवान पर्वत का कूट तथा देवी—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४ के सामने ।

श्रीकंठ—४ ५३ अ, भावि शलाकापुरुष ४ २६ अ, वानर-वश १.३३८ ब ।

श्रीकटन—४.५३ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

श्रीकल्प—४.५३ अ । काल का प्रमाण २ २१६ ब, २.२७ अ ।

श्रीकांत—भावि शलाकापुरुष ४ २५ ।

श्रीकांता—४.५३ अ, तीर्थंकर कुंथुनाथ २ ३८०, सुमेरु के वनों की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नामनिर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३.४६०, ३ ४६१, अंकन ३.४५१, चित्र ३ ४५१ ।

श्रीकूट—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

श्रीचंद्र—४ ५३ अ, कुरुवंश १.३३५ ब, १ ३३६ अ, चक्र-वर्ती ४.१६ अ, भावि शलाकापुरुष ४.२५ ब ।

श्रीचंद्र—४.५३ अ, नन्दिसंघ भट्टारक १ ३२३ ब, १ ३२४ अ । इतिहास १.३३१ अ, १ ३३३ अ, १ ३४३ ब, १.३४६ ब ।

श्रीचंद्रा—सुमेरु के वनों की पुष्करिणी—निर्देश ३ ४५० अ, नामनिर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३ ४६०, ३.४६१, अंकन ३ ४५१, चित्र ३ ४५१ ।

श्रीवत्स—४.५३ अ, तीर्थंकर २.३७७ ।

श्रीवत्स—४.५३ अ, मूलसंघ १ ३१७, परि०/२.६, इति-हास—प्रथम १.३२८ ब, द्वितीय १.३२६ अ, ब ।

श्रीधर—४ ५३ अ, तीर्थंकर २ ३७७, पुष्कर सागर का देव ३.६१४, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ, वैशेषिक ६०७ ब ।

श्रीधर—४ ५३ अ, नन्दिसंघ देशीय गण १ ३२४ ब ।

इतिहास—प्रथम १३२६ ब, १३४२ अ। द्वितीय १३३० ब, १३४४ अ। तृतीय १३३०, १३४४ अ। चतुर्थ १३३१ ब, १३४५ ब। पंचम १३३१ ब। षष्ठ १३३२ अ। सप्तम १३३२ ब। अष्टम १३३३ अ।

श्रीधरा—४५३ अ।

श्रीधर्म—तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ २३७८।

श्रीध्वज—यदुवश १३३७।

श्रीनंदन—४५३ अ।

श्रीनंदि—४५३ ब, नदिसंघ भट्टारक १३२३ ब। देशीय गण १३२५, इतिहास १३३१ अ।

श्रीनदि तटगच्छ—एकात (जैनाभासी संघ) १४६५ अ।

श्रीनाथ—४५३ ब।

श्रीनिकेत—४५३ ब, विद्याधर नगरी ३५४५ ब।

श्रीनिकेतन—३५४५ ब।

श्रीनिचय—४५३ ब, पद्म आदि द्रहो के कूट—निर्देश ३४७४ अ, विस्तार ३४८३, अकन ३४५४।

श्रीनिलया—सुमेरु के वनो की पुष्करिणी—निर्देश ३४५३ ब, नामनिर्देश ३४७३ ब, विस्तार ३४६०, ३४६१, अकन ३४५१, चित्र ३४५१।

श्रीनिवास—४५३ ब, विद्याधर नगरी ३५४६ अ।

श्रीपर्वत—मनुष्यलोक ३२७५ ब।

श्रीपाल—४५३ ब। पंचस्तूप संघ १३२६ ब, इतिहास १३२६ ब, द्राविड संघ १३२०।

श्रीपाल-आख्यान—इतिहास १३४७ अ।

श्रीपालचरित—४५३ ब, इतिहास १३४६ अ-ब, १३४७ अ-ब, १३४८ अ।

श्रीपालदेव—द्रविडसंघ १३२० अ।

श्रीपाल वर्णों—४५४ अ।

श्रीपुर—४५४ अ, चक्रवर्ती ४१० ब, विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

श्रीपुर-पार्श्वनाथस्तोत्र—इतिहास १३४१ ब।

श्रीपुरुष—४५४ अ।

श्रीप्रभ—४५४ अ, पुष्कर सागर का देव ३६१४, विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

श्रीबल्लभ गोविंद—राष्ट्रकूट वंश १३१५ ब।

श्रीभद्र—४५४ अ, तीर्थंकर २३७७।

श्रीभद्रा—४५४ अ, सुमेरु के वनो की पुष्करिणी—निर्देश ३४५३ ब, नामनिर्देश ३४७३ ब, विस्तार ३४६०, ३४६१, अकन ३४५१, चित्र ३४५१।

श्रीभूति—भावि शलाकापुरुष ४२५ अ।

श्रीभूषण—४५४ अ, नदिसंघ भट्टारक १३२३ ब,

१३२४ अ, इतिहास १३३३ ब, १३४७ अ।

श्रीमंडप—समवसरण ४३३० अ।

श्रीमंडप भूमि—४५४ अ, समवसरण ४३३१ अ।

श्रीमती—४५४ अ, कुलकर ४२३, तीर्थंकर कुशुनाथ २३८०, वैमानिक इन्द्रो की ज्येष्ठा देवी ४५१४ अ।

श्रीमन्यु—४५४ अ।

श्रीमहिता—४५४ अ, सुमेरु के पर्वत के वनो की पुष्करिणी—निर्देश ३४५३ ब, नामनिर्देश ३४७३, विस्तार ३४६०-३४६१, अकन ३४५१, चित्र ३४५१।

श्रीमाधव—मीमांसादर्शन ३३११ अ।

श्रीराधावल्लभ—वैष्णवदर्शन ३६०६ अ।

श्रीरुह—तीर्थंकर युगमधर २३६२।

श्रीवंश—४५४ अ, इतिहास १३३६ ब।

श्रीवत्स—वैशेषिक दर्शन ३६०७ अ।

श्रीवत्समित्रा—गजदत के कूट की देवी—निर्देश ३४७२ ब, अवस्थान ३६१४।

श्रीवर्द्धन—हरिवंश १३४० अ।

श्रीवर्मा—४५४ अ।

श्रीवल्लभ—४५४ अ।

श्रीवसु—कुरुवश १३३५ ब।

श्रीविजय—४५४ ब।

श्रीवृक्ष—४५४ ब। कुडलवर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३४७५ ब, अकन ३४६७। महेन्द्र का यान ४५११ ब। रुक्मवर पर्वत का कूट—निर्देश ३४७६ ब, विस्तार ३४८७, अकन ३४६६। हरिवंश १३४० अ।

श्रीव्रत—कुरुवश १३३५ ब।

श्रीशैल—४५४ ब।

श्रीष—तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ २३८३।

श्रीषेण—४५४ ब, अच्युत १४१ अ, भावि शलाकापुरुष ४२१। सेनसंघ १३२६ अ।

श्रीसंचय—४५४ ब, पद्म आदि द्रहो का कूट—निर्देश ३४७४ अ, विस्तार ३४८३, अकन ३४५४।

श्रीसंप्रदाय—वैष्णवदर्शन ३६०६ अ।

श्रीसौध—४५४ ब, विद्याधरनगरी ३५४५ ब।

श्रीहर्म्य—विद्याधर नगरी ३५४५ ब।

श्रीहर्ष—४५४ ब, वेदांत ३५६५ ब।

श्रुत—अग्र १३६ अ, अवर्णवाद १२०१ अ, आत्मा १२४४ अ, चैत्य-चैत्यालय २३०१ अ, जन्म (गति-अगति) २३२२ अ, तत्त्व २३५३ अ। श्रुतकेवली ४५६ अ, श्रुतज्ञान ४५८ ब, ४५६ अ।

श्रुतकीर्ति—४५४ ब, नदिसंघ देशीयगण १३२५, नदिसंघ

भट्टारक १ ३२३ ब, १ ३२४ अ । इतिहास १ ३३१
अ-ब, १ ३३२ ब, १ ३४६ ब ।

श्रुतकेवली—४ ५४ व, अनुभव १ ८६ अ, आगम १ २३८
ब, ध्याता २ ४६२ अ-ब, श्रुतकेवली ४ ५७ अ । मून-
सध १.३१६, १ परि०/२ २, अपराजित १ ११६ अ ।

श्रुतगुरु—गुरु २ २५२ अ, नमस्कार २ ५०५ ब ।

श्रुतज्ञान—४ ५७ अ, अतिचार १ २२८ अ, अनुभव १ ८३,
अनुमान १ ६७ ब, अर्थापत्ति १ १३६ अ, अवधिज्ञान
१ १८६ अ, आगम १ २२७-२३६, उपमान १ ४२८
अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६० ब, केवलज्ञान
(अनुभव) १.८३, तत्त्व २ ३५३ अ, पद ३ ५ ब,
परोक्ष ३ ३६ अ, १ ८३ ब, मन ४ ६० ब, मन पर्यय
३ २६८ ब, श्रुतकेवली ४ ५६ अ, सज्ञी ४ १२३ अ,
स्वाध्याय ४ ५२५ अ, स्वामित्व (जीवसमास)
१ २६१ ।

श्रुतज्ञान (प्ररूपणा)—बध ३ १०५, बधस्थान ३ ११३,
उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३६३, उदीरणा १ ४११
अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान
४ ३००, ४ ३०५, त्रिसयोगीभग १ ४०७ । सत्
४ २३५, सख्या ४ १०६, क्षेत्र २ २०४, स्पर्शन
४ ४८८, काल २ ११३, अंतर १ १५, भाव ३ २२१
अ, अल्पबहुत्व १ १५० ।

श्रुतज्ञान उपक्रम—१ ४१६ ब ।

श्रुतज्ञान व्रत—४ ७० ब ।

श्रुतज्ञानसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५४ अ ।

श्रुतज्ञानावरण—ज्ञानावरण—निर्देश २ २७१ अ, आबाधा
१.२४६ अ, मोहनीय ३ ३४२ अ, वर्णना ३ ५१७ अ ।
प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २.२७१ अ, स्थिति ४ ४६०,
अनुभाग १ ६४ ब, प्र-श ३ १३६ । बत्र ३ ६७, बध-
स्थान ३ १०६, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७,
उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व
४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २६४, त्रिसयोगी भग १.३६६ ।
सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६८ ।

श्रुतज्ञानी—अनुभव (केवलीसम) १ ८३ ब ।

श्रुतग्रंथकृति—ग्रंथ २ २७३ ब ।

श्रुततीर्थ—इतिहास—उत्पत्ति १ ३१७ ब, १. परि०/२ १,
ह्लास १.३१८ अ, १. परि०/३ १ ।

श्रुतदर्शन—दर्शन २.४१५ ब ।

श्रुतदेवता—समवसरण ४ ३३० अ ।

श्रुतधर आम्नाय—इतिहास, १. परि०/२ १-२-३, ३.१ ।

श्रुतपंचमी क्रिया—कृतिकर्म २.१३६ अ ।

श्रुतपंचमी व्रत—४ ७१ अ ।

श्रुतभक्ति (दशभक्ति) —इतिहास १ ३४० ब ।

श्रुतभावना—भावना ३ २२४ ब ।

श्रुतमूनि—इतिहास १ ३३२ ब, १ ३४५ अ-ब ।

श्रुतवाद—४.७१ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ ।

श्रुतवीर—सेनसध १ ३२६ अ ।

श्रुतसागर—४ ७१ अ, नदिसंघ १ ३२४ अ, इतिहास
१ ३३३ अ, १ ३४६ अ ।

श्रुतसागरी—इतिहास १ ३२६ अ ।

श्रुतस्कध—स्वाध्याय ४ ५२५ अ, ।

श्रुतस्कध पूजा—इतिहास १ ३३४ अ, १ ३४६ ब ।

श्रुतस्कध व्रत—४ ७१ अ ।

श्रुतज्ञान—श्रुतज्ञान ४ ५६ ब ।

श्रुतावतार—४ ७१ अ, इन्द्रनिदि १ २६६ ब, इतिहास
१ ३१६, १ ३३० ब, १ ३३२ ब ।

श्रुति—सूर्य की अग्रदेवी २ ३४६ अ ।

श्रुतिकीर्ति—बलदेव ४ १७ ब ।

श्रुतिगम्य—४.७१ अ ।

श्रेढी—४.७१ ब, गणित २.२२८ ब ।

श्रेढी व्यवहार गणित गणित २.२२८ ब ।

श्रेणिक—४.७१ ब, तीर्थकर महापद्म २.३७७, तीर्थकर
वर्द्धमान २.३६१, मगधदेश इतिहास १.३१० ब,
१.३१२ ।

श्रेणी—४ ७१ ब, अनुयोगद्वार १ १०२ अ, आरोहण अव-
रोहण काल की अर्वाध तथा अल्पबहुत्व १ १६१, गुण
स्थान २ २४७ अ, युगपत् प्रवेश करने वालों का
प्रमाण ४ ६४, विग्रहगति ३ ५४१ ब, विद्याधर लोक
३ ५४१ ब, ३ ४६४ अ, विद्याधर लोक में काल-
विभाग २ ६३, सेना की अठारह श्रेणी ४ ७२ अ ।

श्रेणीचारण ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १.४५१ ब ।

श्रेणीबद्ध—४ ७२ ब । नरक बिल—निर्देश २ ५७१ ब,
२ ५७६ अ, विस्तार २ ५७८ ब, अकन ३.४४१,
सख्या २ ५७८-५८० । स्वर्गविमान निर्देश ३ ५६३
अ, ४.५१६ अ, नामनिर्देश ४ ५१६ अ, विस्तार
४ ५१६-५१८, अकन ४.५१७, सख्या ४.५१६-
५२० ।

श्रेणीबद्ध कल्पना—४ ७४ अ ।

श्रेयस्कर—४ ७४ अ, लौकातिक देव ३.४६३ ब ।

श्रेयांस—४ ७४ अ, कुरुवंशी राजा १.३३५ ब, तीर्थकर
२.३७६-३६१, नारायण ४ १८ ब, स्वप्न ४.५०५ अ ।

श्रेयांससेन—काष्ठासध १.३२७ अ ।

श्रेयोविधा—अभयनंदि १.१२७ अ ।

श्रेष्ठी—तीर्थंकर २.३७७।

श्रोता - ४.७४ अ, उपदेश १.४२४ ब।

श्रोत्र (इंद्रिय)—आहारातराय १.२६ अ, इंद्रिय १.३०२ अ, प्रदेश तथा अवगाहना का अल्पबहुत्व १.१५७, प्राण्यकारी १.३०३ ब।

श्रोत्रज मतिज्ञान - कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६० ब, श्रुतज्ञान ४.६२ अ।

श्रोत्रिय ब्राह्मण ३.१६५ अ।

श्लक्ष्णकला—४.७५ ब।

श्लेष—४.७५ ब।

श्लेष संबंध—४.७५ ब।

श्लेष्म—ओदारिक शरीर १.४७२ अ।

श्लोकवातिक—४.७६ अ, इतिहास १.३४१ ब। मीमांसा-दर्शन २.३११ अ।

श्लोहित—४.७६ अ।

श्वपाकज - विद्याधरवश १.३३६ अ।

श्वपाकविद्या—विद्याधरवश १.३३६ अ।

श्वस्ना—४.७६ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

श्वसोच्छ्वास—४.७६ अ, उच्छ्वास १.३५२ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१ अ, प्राणायाम ३.१५५ अ, शुक्लध्यान ४.३५ ब।

श्वेत—तीर्थंकर मल्लिनाथ २.३८३।

श्वेतकुमार—४.७६ अ।

श्वेतकेतु—४.७६ अ, विद्याधरनगरी ३.५४५ अ।

श्वेतध्वज—विद्याधरनगरी ३.५४५ अ।

श्वेतपंचमी व्रत—४.७६ अ।

श्वेतरुधिर—अर्हतातिशय १.१३७ ब।

श्वेतवर्ण—मंगल ३.२४४ अ।

श्वेतवस्त्र—क्षुल्लक २.१८८ ब।

श्वेतवाहन—४.७६ अ।

श्वेतांबर—४.७६ अ, अचेलकत्व १.४० अ, कुदकुद २.१२७ अ, मूलसंघ १.३१६ अ, १. परि०/२.३, निंदा २.५८८ ब।

श्वेतांबर पराजय—इतिहास १.३४७ ब।

श्वेतांबर संघ—एकात (जैनाभास) १.४६५ अ।

श्वेतांबराभास—श्वेतांबर ४.८० ब।

ष

षंड वन—तीर्थंकर २.३८३।

षट्—अनायतन १.२५१ अ, आवश्यक कर्म (श्रावक)

४.५१ ब, आवश्यक कर्म (साधु) १.२७६ ब, आहार १.२८५ अ, कर्तव्य (श्रावक) ४.५१ ब, कर्म (असि-मसि आदि) ४.२४, ४.४२० ब, कारक २.४८, खंड ४.८१ अ, घनागुल की सहनानी २.२१६ ब, दर्शन (एकात मत) १.४६५ अ, द्रव्य २.४५५ ब, पर्याप्ति ३.४१ अ, रम ३.३६३ अ, हानिवृद्धि ४.८१ अ।

षट्-अनायतन—आयतन १.२५१ अ।

षट्-आवश्यक—श्रावक ४.५१ ब, साधु १.२७६ ब।

षट्कर्म—श्रावक ४.५१ ब, सावद्य ४.४२० ब।

षट्काय—काय २.४६ ब।

षट्कारक—कारक २.४८-५०, ज्ञान (भेदज्ञान) २.२६१ ब। ध्यान २.४६५ अ।

षट्खंड—४.८१ अ, भरत आदि क्षेत्रो के छः छः खंड—निर्देश ३.४४६ अ, विस्तार ३.४४७, ३.४६० अ, ३.४७६, अवन ३.४४७, ३.४६४ के सामने, गणना ३.४४५ अ, काल विभाग २.६३।

षट्खंड टीका—इतिहास १.३४० ब।

षट्खंडागम—४.८१ अ, इतिहास १.३४० अ।

षट्खंडागम टीका—इतिहास १.३४० ब।

षट् गुण हानि वृद्धि—४.८१ अ, अगुरुलघु १.३४ अ अध्यवसाय १.५३ ब, गणित २.२३१।

षट्चक्र—पदस्थ ध्यान ३.६ ब।

षट्चत्वारिंशत्—अर्हत के गुण १.१३७ ब, आहार के दोष १.२८७ अ, १.२८६ अ, वसतिका के दोष ३.५२८ अ।

षट्त्रिंशत्—आचार्य के गुण १.२४२ अ।

षट्पर्याप्ति—केवली २.१६२ ब, पर्याप्ति ३.४१ अ।

षट्प्राभूत टीका—इतिहास १.३४६ ब।

षडशता—परमाणु ३.१७ अ।

षडनायतन—आयतन १.२५१ अ।

षडशीति—इतिहास १.३४५ अ।

षडावश्यक—आवश्यक (साधु) १.२७६ श्रावक ४.५१ ब।

षडक—४.८१ ब।

षड्गुण-हानि-वृद्धि—४.८१ अ, अगुरुलघु १.३४ अ अध्यवसाय १.५३ ब, गणित २.२३१ अ।

षड्ज - ४.८१ ब, स्वर ४.५०८ ब।

षड्वर्शन—एकात १.४६५ अ, दर्शन २.४०२ ब।

षड्वर्शनसमुच्चय—४.८२ अ, इतिहास १.३४१ अ।

षड्दिक्-अपक्रम—गति ३.३५ ब, २.२३६ अ।

षड्दिक्-गति—गति २.२३५ ब, २.२३६ अ।

षड्द्रव्य—निर्देश (द्रव्य) २.४५५ ब, अल्पबहुत्व १.१४२ ब, कर्म २.२८ ब, कारण-कार्य २.६३ ब।

षड्रस—रस-परित्याग तप ३ ३६३ अ ।

षड्रसी व्रत—४ ८२ अ ।

षड्विध आहार—आहार १.२८५ अ ।

षड्विंशति (कर्म प्रकृति)—सक्रमण ४ ८७ ब, सत्त्व ४ २७६ अ ।

षण्वति प्रकरण—४.८२ अ, इतिहास १ ३४२ ब ।

षष्ठ अणुव्रत—रात्रिभोजन ३ ४०३ अ ।

षष्ठ बेला—४ ८२ अ ।

षष्ठ भक्त—४ ८२ अ, अनशन १ ६५ ब, कायक्लेश २ ४७ अ, प्रोषधोपवास ३ १६४ ब ।

षष्ठितत्र—साख्यदर्शन ४.३६८ ब ।

षष्ठीव्रत—४.८२ अ ।

षाष्टिक पद्धति—४ ८२ अ ।

षोडश—सहनानी अनत=१६, अनतानत=१६, असख्यात (परीत)=१६, जीवराशि=१६ । काल समय राशि=१६ ख ख, आकाशप्रदेश राशि=१६ ख ख ख । २ २१६ अ ।

षोडश—आहार के उत्पादन व उद्गम दोष १ २८६-२८९, कुलकर ४.२३ अ, पृथ्वी (रत्नप्रभा) ३ ३८९ ब, भावना ३.२२५ अ, स्वप्न ४ ५०४ अ ।

षोडशकारणधर्म चक्रोद्धारयंत्र—यत्र ३ ३६३ ।

षोडशकारणभावना—भावना ३ २२५ ।

षोडशकारणभावना व्रत ४ ८२ अ ।

षोडशपदिक अल्पबहुत्व—अल्पबहुत्व १ १४२ ब ।

षोडश स्वप्न—४.५०४ अ, ब, ४.५०५ अ ।

स

सं—संज्ञी की सहनानी २.२१६ अ, सामायिक ४.४१५ अ ।

संकटहरण व्रत—४.८२ अ ।

संकर दोष—४.८२ अ, कर्ता-कर्म २.२२ ब ।

संकलन—४.८२ अ, गणित २ २२२ ब, २.२२४ अ ।

संकलन-व्यवहार—गणित २.२२६ ब ।

संकलन-श्रेणी व्यवहार—गणित २.२२८ ब, २.२२६ ब ।

संकलित धन—४.८२ ब ।

संकल्प—४.८२ ब, आहारांतराय १.२६ अ, विकल्प ३ ५३७ ब ।

संकल्पी हिंसा—हिंसा ४ ५३५ अ ।

संकुट—४ ८२ ब, जीव २ ३३३ ब ।

संकेत—४ ८२ ब ।

संकेत क्रम—४ ८२ ब ।

संकोच—४ ८२ ब ।

संकोच-विकोच—काय ८ ४६ ब, मनोयोग ३ २७६ ब, योग ३ ३७६ ब ।

संकोच-विस्तार—जीव २ ३३८ ब, २ ३३६ ब, मोक्ष ३ ३२६ अ, योग ३ ३७६ अ ।

संकोच-विस्तार धर्म—जीव २ ३३८ ब, २ ३३६ ब ।

संक्रमण—४ ८२ ब, अंतरकरण १ २५ ब, १.२६ अ-ब, अष्टकर्म अल्पबहुत्व १ १७५, आयुर्कर्म १ २६० ब-२६१, करणदशक २ ६, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६०, कृष्टि २ १४२ अ, क्षपणा २ १८० अ, गलितावशेष २ २३८ ब, गुणस्थान (करण दशक) २ ६ अ, प्रदेशो का अल्पबहुत्व १.१७४ ब ।

संक्रांति—४ ६१ अ, शुल्कस्थान ४.३७ अ ।

संक्लिष्ट हस्तकर्म—हस्तकर्म ४.५३० ब ।

संक्लेश—उद्योग १ ४३१ ब, १.४३३ ब, विष्णुद्धि ३ ५६८ अ-ब, स्थितिबंध ४ ४५८ ब, ४.४६०-४६७, स्थान ४ ४५२ ब, स्थानो का अल्पबहुत्व १.१६० अ ।

संक्षेप दर्शनार्थ—आर्य १.२७५ अ ।

संक्षेप रुचि—उपदेश १.४२५ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३४८ ब ।

संक्षेप शारीरिक—वेदात ३.५६५ ब ।

संक्षेप सम्यक्त्वार्थ—आर्य १.२७५ अ ।

संक्षेप सम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४ ३४८ ब ।

संख्या—४.६१ अ, अनुयोगद्वार १.१०२ अ-ब, अवधिज्ञान १.१६६ अ, करणत्रिक (परिणाम) २ ७-१४, गणित २.२१४ ब, २ २२६ अ-ब, जीवप्ररूपणा ४.६४-१०६, द्रव्य २.४५६ ब, मोक्ष (मुक्तजीव) ३ ३२८ अ ।

संख्यात—असख्यात १.५८ ब, गणित २ २१४ ब, २.२१८ अ, संख्या ४ ६२ अ ।

संख्यात गुणवृद्धि अध्यवसाय १.५३ अ, श्रुतज्ञान ४ ६६ अ, षड्गुण हानि-वृद्धि ४.८१ ब ।

संख्यात भागवृद्धि—अध्यवसाय १.५३ ब, श्रुतज्ञान ४.६६ अ, षड्गुण ४.८१ ब ।

संख्याताणुवर्गणा—वर्गणा ३.५१३ अ, ३.५१५ ब, ३.५१६ अ ।

संख्या तुल्यघात—४.१ १६ अ ।

संख्याधिकार—अनुयोगद्वार १ १०३ अ ।

संख्या व्यभिचार—नय २ ५३७ ब ।

संगति—४ ११८ अ ।

संगीत समयसार—इतिहास १ ३४४ ब ।

संगीति—अर्हदबलि १ १३८ ब ।

संग्रह—४.१२३ ब, आगमार्थ १.२३२ अ ।

संग्रहकृष्टि—कृष्टि १ १४० अ-ब, २.१४१ अ ।

संग्रहनय—उपचार १.४२३ अ, कषाय २.३६ अ-ब, दर्शन २.४०६ ब, नय २.५२७ ब, २.५३२ अ, २.५३३ ब, निक्षेप २ ५६५ अ, सप्तभंगी ४.३१८ ब ।

संग्रहनय-उपक्रम—उपक्रम २.४१६ ब ।

संग्रहाभास—नय २.५३४ ब ।

संघ—४ १२३ ब, अवर्णवाद १.२०१ अ, इतिहास १ ३१६, उपकार १.४१६ अ, एकात जैनाभाम १ ४६५ अ, कल्की २ ३१ ब ।

संघकरमोचन दोष—व्युत्सर्ग ३ ६२३ अ ।

संघसाक्षी—व्रत ३ ६२६ अ ।

संघाट—नरक पटल—निर्देश २ ५७६, विस्तार २ ५७६, अंकन ३ ४४१ । नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३ ।

संघात—४ १२४ अ, वर्णणा ३ ५१६ अ, श्रुतज्ञान ४ ६४ ब, स्कध ४ ४४७ अ ।

संघात (नामकर्म प्रकृति)—४ १२४ अ । प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३ १३६, बध ३.६७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४ । सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८ ।

संघातन—४ १२४ अ ।

संघातन कृति—संघातन ४.१२४ अ ।

संघातन-परिशातन कृति—संघातन ४ १२४ ब ।

संघात-समास-ज्ञान—श्रुतज्ञान ४.६४ ब ।

संघातिम—निक्षेप २ ६०२ ब ।

संघायणी (बृ० संघायणी सुत्त)—४.१२४ ब, इतिहास १.३४१ अ ।

संचया—४.१२४ ब ।

संचरण—जीव २.३३६ ब ।

संचार—४.१२४ ब ।

संचारगति—गति २.२३५ अ ।

संचालन—जीव २.३३६ ब ।

संचेतन—४ १२४ ब ।

संचेतना—अनुभव १ ८२ अ ।

सजम—रुद्र ४ २२ ब ।

संजयंत—४.१२४ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ, हरिवंश १ ३४० अ ।

संजयंती—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

संजय—४ १२४ ब, विद्याधरवश १ ३३६ अ ।

सजात—तीर्थंकर २ ३६२ ।

संज्ञ—संज्ञी ४ १२२ अ ।

संज्ञा—४ १२० ब, मार्गणा ३ २६८ अ ।

संज्ञासंज्ञ—४ १२१ ब ।

संज्ञी—४ १२१ ब, आयु १ २६४ अ, केवली २ १६३ ब, जीव २.३३३ ब, जीवसमाम २ ३४३, प्राण ३ १५३ अ, संक्लेश विगुद्धि स्थानो का अल्पबहुत्व १-१६० अ, संज्ञी मार्गणा ४ १२१ ब, सहनानी २ २१६ अ ।

संज्ञी मार्गणा (प्ररूपणा)—प्ररूपणा—बध ३.१०८ बंध स्थान ३ ११३, १ ३८५, उदयस्थान १.३६३ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ ३०२, ४.३०६, त्रिसयोगी भग १ ४०८ अ । सत् ४.२६०, सधगा ४ १०६, क्षेत्र २ २०७, स्पर्शन ४ ४६३, काल २.११६, अतर १.२१, भाव ३ २२२ अ अल्पबहुत्व १ १५२ ।

संज्वलन—४ १२४ ब, कषाय २.३५ ब, २.३८ अ, २.३६ अ, संयत ४ १३२ अ ।

संज्वलन (कर्मप्रकृति)—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४१, स्थिति ४.४६१, अनुभाग १ ६१ ब, १.६४ अ, प्रदेश ३ १३६ । बध ३ ६७ बधस्थान ३ १०६, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८६, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा-स्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २६५, स्थिति सत्त्वस्थान अल्पबहुत्व १.१६५ ब, त्रिसयोगी भग १ ४०१ ब, सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८ ।

संज्वलन चतुष्क—उदय १ ३७४ ब ।

संज्वलित—४ १२५ ब । नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २ ५७६ ब, अंकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

संततता—४ १२५ ब ।

संतलाल—४ १२५ ब, इतिहास १.३३४ अ ।

संतान—४.१२५ ब, ग्रह २.२७४ अ, धर्मध्यान २.४८१ ब, वर्णव्यवस्था ३ ५२० ब ।

संतिणाहचरित्र—इतिहास १.३३३ ब, १.३४४ अ, १.३४५

अ, १.३४६ अ, १.३४७ अ ।

संतोष—शौच ४४२ ब, संयम ४.१३६ ब ।

संतोषतिलक जयमाल—इतिहास १ ३४७ अ ।

संतोष भावना—भावना ३.२२५ अ ।

सदंश—आहारातराय १ २६ ब ।

संदिग्ध—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ अ ।

संदिग्ध अन्न—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ अ ।

संदिग्धासिद्ध हेत्वाभास—असिद्धहेत्वाभास १.२१० अ ।

संदृष्टि—४ १२५ ब, अधःकरण २७-६, अपूर्वकरण २ १२ ब ।

संवेह—नि शक्ति २ ५८६ ब ।

संघान—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ अ ।

संघानक—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ ब ।

संधि—४.१२५ ब, औदारिक शरीर १ ४७२ अ, ग्रह २ २७४ अ ।

संध्या—सामायिक ४ ४१५ ब ।

संध्याकार—राक्षसवंश १.३३८ अ ।

संध्याकाल—वदना ३ ४६५ अ ।

संनिधिकरण—पूजा ३ ८० ब ।

सन्यास-आश्रम—आश्रम १ २८१ अ, वर्णव्यवस्था ३.५२४ ब ।

सन्यास-क्रिया—कृतिकर्म २ १३६ अ ।

सन्यास-मरण—सल्लेखना ४ ३६२ ब, ४ ३६३ ब, ४ ३८६ ब ।

संन्यास-विधि—स्वाध्याय ४.५२६ अ ।

संपराय—४ १२५ ब ।

संपरिकीर्ति—राक्षसवंश १ ३३८ अ ।

संपूर्ण जीवराशि—सहनानी २ २१६ अ ।

संप्रज्वलित—४.१२५ ब । नरकपटल—निर्देश २ ५७६ ब । विस्तार २ ५७६ ब, अकन ३ ४४१ । नारकी अव-गाहना १.१७८, आयु १ २६३ । वैदिकाभिमत नरक महाज्वाल तथा वह्निज्वाल ३ ४३२ ब ।

संप्रति—४.१२५ ब, मौर्यवंश १ ३१३, इतिहास १.३१० ब ।

संप्रदान कारक—४ १२५ ब । कारक २ ४८ ब ।

संप्रदान शक्ति—४ १२५ ब ।

संप्रदाय-विरोध—आगम १.२३७ ब ।

संप्राप्तिजनित उदय—उदय १ ३६६ अ ।

सबध—४.१२५ ब, कारक २ ४६ ब, ज्ञान २ २६१ ब, नय २ ५४६ ब, न्याय २ ६३३ अ, सप्तभंगी भेदाभेद ४.३२४ अ-ब, ४.३२५ ब ।

संबंधशक्ति—४.१२६ ब ।

संबंधांतर अधिकार—ब्राह्मण ३.१६६ ब ।

संबंधाहार—सचित्त ४ १५८ अ ।

संभव—४ १२६ ब, ग्रह २.२७४ अ, तीर्थंकर २ ३७६-३६१, देव (आकाशोपपन्न) २.४४५ ब ।

संभवचरित—इतिहास १.३४६ अ ।

संभवदल कर्म—१.१०२ अ ।

संभवनाथ—४.१२६ ब, तीर्थंकर २.३७६-३६१ ।

संभवयोग—योग ३ ३७६ अ ।

संभावना सत्य—सत्य ४ २७१ ब ।

संभाषण—४ १२६ ब ।

संभिन्नमति—४.१२६ ब ।

संभिन्नश्रोत्र-ऋद्धि १.४४८, १.४४९ ब, गणवर २.२१२ ब ।

संभूत—चक्रवर्ती ४ १० अ, नारायण ४.१८ ब, हरिवंश १.३४० अ ।

संभ्रांत—४.१२६ ब । नरकपटल—निर्देश २ ५७६ ब, विस्तार २ ५७६ ब, अकन ३ ४५७ । नारकी—अव-गाहना १ १७८, आयु १ २६३ ।

संभद—शलाकापुरुष ४ २६ अ ।

संमिश्र—भोगोपभोग ३ २३६ ब, सचित्त ४ १५८ अ ।

संमूर्च्छन—४ १२६ ब ।

संमूर्च्छन जन्म—संमूर्च्छन ४ १२६ ब ।

संमूर्च्छन मनुष्य—संमूर्च्छन ४ १२७ अ, मनुष्य ३ २७३ ।

संमूर्च्छिम—४ १२६ ब । अवधिज्ञान १ १६५ अ, जीव-समास २.३४३, तिर्यंच २ ३६७, मनुष्य ३ २७३, वनस्पति ३ ५०३ अ, ३ ५०६ अ ।

संमूर्च्छिम तिर्यंच—तिर्यंच २ ३६७, वेद ३ ५८७ अ ।

संमूर्च्छिम मनुष्य—मनुष्य ३ २७३, संमूर्च्छन ४.१२७ ब ।

संमेदशिखर—तीर्थंकर प्ररूपणा—२ ३८५ ।

संमेदाचल माहात्म्य—४ ३४४ अ, इतिहास १ ३४८ अ ।

संमेलन—अर्हद्बली १.१३८ ब ।

संमोह (देव)—४.१२८ ब, आयुबंध के योग्य परिणाम १ २५८ अ, देव २ ४४५ ब, पिशाच जातीय व्यतर देव ३ ५८ ब ।

संमोही भावना—४ १२८ ब, भावना ३ २२५ ब ।

संयत—४ १२८ ब, विशेषताओं के लिए दे० संयम । प्ररूपणाओं के लिए दे० प्रमत्तसंयत तथा अप्रमत्त-संयत ।

संयतासंयत—४ १३३ ब, विशेषताओं के लिए दे० संयमा-संयम । प्ररूपणा—बंध ३ ६७, बधस्थान ३.११०, ३.१११, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६२ अ,

उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२८८, ४.२९६, ४.३०४, त्रिसयोगी भंग १.४०६ अ। सत् ४.१६२, सख्या ४.६५, क्षेत्र २.१६७, स्पर्शन ४.४७७, काल २.६६, अंतर १.७, भाव ३.२२२ ब, अल्पबहुत्व १.१४३।

संयम—४.१४० ब, तीर्थंकर २.३७७, शलाकापुरुष ४.२५ अ।

संयम (सयत)—४.१३५ ब, अनगार (सयत) १.६२ अ, अवधिज्ञान १.१६५ अ, आयुका अपवर्तन १.२६१ ब, आर्तध्यान १.२७४ अ, आहारक समुद्घात १.२६८ ब, उन्मयोग १.४३१ अ, १.४३२ अ, १.४३३ अ, १.४३४ अ, ऋद्धि (चारण) १.४५१ ब, कषाय २.३४ अ, केवली २.१६५ अ, क्षयोपशम २.१८५ ब, २.१८६ अ, क्षयोपशमिक भाव २.१८२ ब, चारित्र २.२८२ ब, २.२८७ ब, २.२८८ अ, २.२८९ अ, २.२९१ ब, १.२९३ अ ब, जन्म (गति-अगति) २.३२२ ब, तप २.३५६ ब, २.३६१ अ, तिर्यच २.३६६ ब, निर्जरा का अल्पबहुत्व १.१४१ ब, प्रत्याख्यानावरण ३.१३३ ब, बद्धायुष्क १.२६२ ब, मोक्ष ३.३२६ ब, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ-ब, लब्धि ३.४१४ अ, शुक्लध्यान २.३४ ब, षट्कालिक हानिवृद्धि २.६३, सन्निपातिक भाव ४.३१२ ब, साधु ४.४०७ अ, सामाग्रिक ४.४१८ ब।

सयम (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०६, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८३, उदयस्थान १.३६३ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४.३०६, त्रिसयोगी भंग १.४०७ ब। सत् ४.२३६, सख्या ४.१०६, क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४.४८६, काल २.११४, अंतर १.१६, भाव ३.२२१, अल्पबहुत्व १.१५०, भागाभाग ४.११३। पंचशरीर-स्वामित्व—निर्देश ४.७, अल्पबहुत्व १.१५६ ब। अनुभाग का अल्पबहुत्व १.१६८।

संयम (अपहृत)—अपवादमार्ग १.१२० ब।

सयम (उपेक्षा)—उत्सर्गमार्ग १.१२१ अ।

संयम (उपकरण)—उपकरण १.४१४ ब, समिति ४.३४१ अ।

संयमचरण-चारित्र—चारित्र २.२६३ अ।

संयमभाव—चारित्र २.२८६ अ।

संयमरक्षा—आहार १.२६२ ब।

संयमलब्धि—३.४१४ अ।

सयमलब्धि-स्थान—अल्पबहुत्व १.१६६, स्थान ४.४५२ ब।

संयमविशुद्धि स्थान—अल्पबहुत्व १.१६० अ।

सयमस्वरूप-प्रतिमा—चैत्य-चैत्यालय २.३०० ब।

संयमाचरण—चारित्र २.२८५ अ।

सयमासंयम—४.१३३ ब, अपत्याख्यानावरण १.१२६ अ, आरोहण अवरोहण २.२४७, आर्तध्यान १.२७४ अ, करण दगक २.६ अ, कषाय २.४० ब, काय २.४५ ब, क्षयोपशम २.१८५ अ, २.१८६ अ, क्षयोपशमिक भाव २.१८२ ब, २.१८३ अ, क्षापिक सम्यग्दृष्टि २.३६८ ब, चारित्र २.२८७ ब, तिर्यच २.३६८ ब, तिर्यच अपर्याप्त २.३६६ अ, तीर्थंकर २.३७३ ब, परिषह ३.३४, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १.१७४, बद्धायुष्क १.२६२ ब, लब्धि ३.४१४ अ, मख्या ४.६२ ब, समूच्छन ४.१२७ अ, सन्निपातिक भाव ४.३१२ ब, समुद्घात ४.३४३ अ, सम्यग्दर्शन (क्षायिक) ४.३७३ ब।

सयमासंयम (प्ररूपणा) बन्ध ३.१०६, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८३ उदयस्थान १.३६३ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८५, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४.३०६, त्रिसयोगी भंग १.४०७। सत् ४.२३६, सख्या ४.१०६, क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४.४८६, काल २.११४, अंतर १.१७, भाव ३.२२१ अ, अल्पबहुत्व १.१५१।

संयमोपकरण—उपकरण १.४१४ ब, समिति ४.३४१ अ।

संयोग—विभाव ३.५६१ अ।

सयोगकेवली—दे० सयोगकेवली।

सयोगगति—गति २.२३५ अ।

सयोगद्रव्य—द्रव्य २.४५४ ब।

सयोगपद-उपक्रम—उपक्रम १.४१६ ब।

संयोगवाद—४.१४१ अ, एकात १.४६४ ब १.४६५ अ ब।

संयोग संबंध—४.१४१ अ, नय २.४६० अ, २.५४६ ब।

संयोगाक्षर—अक्षर १.३३ अ।

सयोगाधिकरण—अधिकरण १.४६ अ।

संयोगी स्थान प्ररूपणा—उदय १.३६६-४०८।

संयोगी भंग—उदय १.३६६-४०८, गणित २.२२८ अ।

सयोगी भाव—विभाव ३.५६१ अ, सन्निपातिक भाव ४.३१२ ब।

संयोजन—४.१४१ अ।

संयोजना दोष—आहार १.२६० अ।

संयोजना सत्य—सत्य ४.२७१ ब।

संरंभ—४.१४१ अ।

संरक्षणानंद—रौद्रध्यान ३.४०७ ब, ३.४०८ अ।

संवत्—इतिहास १.३०६अ-३१० अ, १ परि०/१।
 सवत्सर—४.१४१ अ, इतिहास १ ३०६अ-३१०अ,
 १. परि०/१, काल का प्रमाण २.२१६, सूर्य की गति
 से उत्पत्ति २.३५१ अ।
 संवर—४.१४१ ब, अनुप्रेक्षा १.७७ अ, १.८० अ, उपयोग
 १.४३१ अ-१ ४३२ ब, क्षेत्र (व्रतादि का) २ २६२
 ब, गणधर २ २१२ ब, तप २ ३५८ अ, धर्मध्यान
 २.४८३ ब, निर्जरा २.६२३ अ, पुण्य १ ७८ ब, मोक्ष-
 मार्ग ३ ३३७ अ, सवर (निश्चय व्यवहार) ४.१४२
 अ।
 संवर (नाम)—तीर्थंकर मुनिसुव्रत व अरहनाथ २.३७८।
 संवर्गित—४ १४४ अ।
 सवर्तक वायु—प्रलय ३.१४७ अ।
 सचाद—वाद ३.५३३ अ।
 संवास अनुमति—अनुमति १.६६ अ।
 संवाह—४.१४४ अ।
 संवाहन—४ १४४ अ, चक्रवर्ती ४.१३ ब।
 संवित्—४.१४४ अ, ज्ञान २.२५७ ब।
 संवित्ति—अनुभव १.८१-८६।
 संवृत—४.१४४ अ, योनि ३.३८७ अ।
 संवृत-विवृत—योनि ३ ३८७ अ।
 संवृत्ति—अभाव १.१२८ ब।
 संवृत्ति-सत्य—सत्य ४.२७१ ब।
 सवेग—४ १४४ अ, अनुप्रेक्षा १ ७८ अ, निर्वेद २.६२७ ब,
 सम्यग्दर्शन ४ ३५१ अ।
 संवेदन—अनुभव १ ८१-८६, उपयोग १.४३४ ब, प्रत्यक्ष
 ३ १२१ ब।
 संवेजनी कथा—कथा २ ३ अ।
 संवेदनी कथा—उपदेश १ ४२५ अ, १.४२६ अ।
 संव्यवहरण दोष—४ १४४ ब, आहार १.२६१ ब।
 संशय—४.१४४ ब, अनेकात १ १०५ ब, अवग्रह १ १८२
 अ-ब, ईहा १ ३५१ अ-ब, न्याय २ ६३३ अ-ब, मिश्र
 गुणस्थान ३ ३०७ ब, ३ ३०८ ब।
 संशय मिथ्यात्व—संशय ४.१४५ अ।
 संशय मिथ्यादृष्टि—आगमार्थ १.२३२ अ, मिश्रगुणस्थान
 ३.३०८ ब।
 संशय वचन—भाषा ३.२२७ अ।
 संशयसमा जाति—४.१४६ अ।
 संश्लेष—स्कंध ४.४४८ अ।
 संश्लेषबध—बध ३.१७० ब।

संसक्त साधु—४.१४६ अ।
 संसक्त द्रव्यसेवा—ब्रह्मचर्य ३.१८६ अ।
 संसरण—ससार ४.१४६ ब।
 संसर्ग—४ १४६ अ, संगति ४.११८ अ, सप्तभंगी ४.३२४
 अ-ब, ४ ३२५ ब।
 संसार—४ १४६ अ, अनुप्रेक्षा १.७७ अ-ब, १ ८० अ,
 क्षेत्रपरिवर्तन २ २०६ अ, दो प्रकार ४ १४७ अ।
 संसारभीरु—सल्लेखना ४.३६१ ब।
 संसारस्थिति—नियति २ ६१४ ब।
 संसारानुप्रेक्षा—४ १४६ ब।
 ससारी—४ १४६ ब।
 ससारी जीव—भल्यबहुत्व १.१४२ ब, मूर्त ३.३१६ अ,
 सहनानी २.२१६ अ।
 ससिद्धि—आराधना १.२७१ अ।
 सस्कार—४ १४६ ब, (अभ्यास) ४ १५० अ, (क्रिया)
 ४ १५३ अ, गणधर २ २१३ अ।
 संस्तवक—४.१५३ अ, नरक पटल—निर्देश २.५७६ ब,
 विस्तार २.५७६ ब, अकन ३.४४१। नारकी—अव-
 गाहना १ १७८, आयु १.२६३।
 संस्तर—५ १५३ अ, सल्लेखना ४.३८४ अ, ४ ३८५ अ-
 ब, ४ ३८६ ब, ४.३६० अ-ब, ४.३६२ अ, ४.३६६
 ब।
 संस्तव—प्रशंसा १.११२ अ, भक्ति ३.१६६ ब।
 संस्थान—४ १५३ ब, विप्रहृति १.२४७ अ, चक्रवर्ती
 ४ १० ब, षट्कालिक हानिवृद्धि २.६३।
 संस्थान नामकर्म-प्रकृति—आनुपूर्वी नामकर्म १ २४७ ब।
 प्ररूपणा—प्रकृति ३.६५ ब, २.५८३, स्थिति ४.४६३,
 अनुभाग १.६५, प्रदेश ३ १३६। बध ३.६७, बध-
 स्थान ३.११० उदय १.३७५, उदय की विशेषता
 १ ३७२ ब, १.३७३ ब, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा
 १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८,
 सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०४। सक्रमण
 ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६६ अ।
 संस्थान-निर्माण—निर्माण २ ६२५ अ।
 संस्थान-विचय—धर्मध्यान २ ४८० अ।
 संस्थान-विचय धर्मध्यान—धर्मध्यान २ ४८० ब।
 संस्थानाक्षर—अक्षर १ ३३ अ।
 संहनन—४ १५५ अ, चक्रवर्ती ४ १० ब, जन्म (गति
 अगति) २.३२१ अ, ध्याता २.४६२ ब, २ ४६४ अ,
 शुक्लध्यान ४.३६ अ, षट्कालिक हानिवृद्धि २.६३।
 संहनन-काल—सल्लेखना ४.३८७ अ।

सहनन नामकर्म-प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३६५ ब,
२.५८३, स्थिति ४४६३, अनुभाग १६५, प्रदेश
३१३६। बध ३६७, बंधस्थान ३११०, उदय
१३७५, उदय की विशेषता १३७३ ब, उदयस्थान
१३६०, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान
१.४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी
भंग १४०४। संक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व ११६६
अ।

संहरण सिद्ध—अल्पबहुत्व ११५३।

सहार—जीव २३३८ ब।

स^२—समयप्रबद्ध की सहनानी २२१६ अ।

स_{३३}—समयप्रबद्ध की सहनानी २२१६ अ।

सककापिर—४१५६ अ, मनुष्यलोक ३२७५ अ।

सकक्ष—विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

सकल—परमात्मा ३२० अ।

सकलकीर्ति—४१५६ अ, नदिसघ १३२४ अ, इतिहास
१.३३३ अ, १३४५ ब।

सकलचारित्र—सयम ४.१३७ अ।

सकल-जिन—जिन २३२८ ब, पूजा ३७७ अ।

सकल-त्याग—उपयोग १४३१ अ, सयम ४१३७ ब।

सकलवृत्ति—दान २.४२२ ब।

सकल परमात्मा—परमात्मा ३.२० अ।

सकल प्रत्यक्ष—प्रत्यक्ष ३.१२२ ब ३१२३ अ।

सकलभूषण—नदिसघ भट्टारक १३२४ अ, इतिहास
१३३३ ब।

सकलात्मा—परमात्मा ३२० अ।

सकलादेश—४१५६ ब, सप्तभंगी ४.३१५ ब, ४३१६ अ-
ब, ४.३१७ अ।

सकलादेशी—नय २.५१७ अ।

सकलेंद्रिय—जीवसमास २.३४३, त्रस २३६८।

सकलनिभ—४१५७ ब।

सकता—४१५७ ब, जीव २३३३ ब।

सक्रिय—योग ३३७६ ब।

सगर—४.१५७ ब इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ, चक्रवर्ती ४१०
अ, तीर्थंकर अजितनाथ २.३६१।

सचित्त—४.१५७ ब, निक्षेप २६०१ अ, पूजा ३८० अ,
भक्ष्याभक्ष्य ३.२०४ अ-ब, भोगोपभोग ३.२३६ अ,
योनि ३.३८७ अ।

सचित्त काल—काल २८१ ब।

सचित्त गुणयोग—योग ३.३७६ अ।

सचित्त व्यतिरिक्त नोआगम द्रव्य—अतर १३ ब।

सचित्त-त्याग प्रतिमा—आरभ-त्याग प्रतिमा १२७१ अ,
सचित्त ४१५७ ब।

सचित्सद्रव्य शल्य—शल्य ४२६ ब।

सचित्त-निक्षेप—सचित्त ४१५८ ब, निक्षेप २५६१ ब,
२६०१ अ।

सचित्त नोर्कर्म द्रव्य बंधक—बध ३१७६ अ।

सचित्त-पाहुड—प्राभृत ३१५६ ब।

सचित्तपूजा—पूजा ३७४ ब।

सचित्त बंधक—बध ३.१७६ अ।

सचित्त भाव—भाव ३२१८ ब।

सचित्त योनि—योनि ३.३८७ अ।

सचित्त वर्गणा—वर्गणा ३५१६ ब, ३५१८ अ।

सचित्त सबध आहार—भोगोपभोग ३.२३६ ब, सचित्त
४१५८ अ।

सचित्त स्थान—स्थान ४४५३ अ।

सचित्ताचित्त योनि—योनि ३३८७ अ।

सचित्तापिधान—४.१५८ अ।

सचेलता—वेद (स्त्री) ३५८६ अ।

सज्जन—सगति ४११८ अ।

सज्जनचित्तवल्लभ—४१५८ ब, इतिहास १३३१ ब,
१३४३ ब।

सज्जाति-क्रिया—संस्कार ४.१५२ ब।

सतालक—४२७० अ, पिशाच ३.५८ ब।

सतीपुत्र—४२७० अ।

सत्—४१५८ ब, अद्वैतवाद १४७ ब, अनुयोगद्वार ११०२
अ, अनेकात ११०६ अ, असत् १.२०८ अ, अस्तित्व
१२१२ अ, उत्पादादि १३५७ ब, १३५८ अ,
१३६१ अ-ब, कार्य (उत्पादादि) १३६२ ब, जैन-
दर्शन २३४४ ब, द्रव्य २४५३ ब, २४५४ ब, द्रव्य-
गुण-पर्याय (उत्पादादि) १३६१ब-३६२, सापेक्ष
धर्म १.१०६ अ, ४३२३ अ।

सत्—प्ररूपणा—प्रकृति ३६७, स्थिति ४.४६०, अनुभाग
१८६ ब, प्रदेश ३१३६। बध ३६७-१०८, बंध-
स्थान ३.१०८, ३.११३, उदय १३७५-३८७, उदय-
स्थान १.३६२ ब, १.४८६, उदीरणा १४११ अ,
उदीरणा स्थान १४१२, सत्त्व ४.२७८-२८४, सत्त्व-
स्थान ४२८७, ४२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग
१३६६, १४००, ६.४०६ ब, करणदशक-स्वामित्व
२.६, जीव सामान्य ४१६१-२६८, परिषह-स्वामित्व
३३४, प्रत्यय-स्वामित्व ३१२७-१२६, भाव-स्वामित्व
३.२१६-३.२२२, योग-स्वामित्व ३.३७६, शरीर-

स्वामित्व ४७, पटुकर्म-स्वामित्व ४२६६ ब, सत्
४१६० अ, समुद्घात-स्वामित्व ४३४३, स्पर्श
४४७४ ब ।

सत्कथा—कथा २२ अ-ब ।

सत्कर्म—इतिहास १३४१ ब, ४ परि० ।

सत्कर्म पञ्जिका—इतिहास १३४२ अ, ४. परि० ।

सत्कर्म स्थान—अनुभाग १ ८६ ब ।

सत्कार—ब्रह्मचर्य ३१८६ अ, विनय ३५५२ ब, श्रोता
४७५ ब ।

सत्कार-पुरस्कार परिषद्—४२७० अ, परिषद् ३३३ ब,
३३४ अ ।

सत्कीर्ति—बलदेव ४१७ ब ।

सत्क्रिया—क्रिया २१७४ ब ।

सत्तरिका—४२७० अ ।

सत्तवसनकहा—इतिहास १३४७ अ ।

सत्ता—४.२७० अ, अवातर १२१३ अ, अस्तित्व १२१२
ब, १२१३ अ, उदीरणा १.४१० अ, द्रव्य २४५४ ब,
महा (अस्तित्व) १२१३ अ, सापेक्ष धर्म ११०६ अ,
४३२३ अ, सामान्य ४४१२ अ ।

सत्ताईस—प्रकृति सत्त्व—सक्रमण ४ ८७ ब ।

सत्ता-गौण उत्पाद-व्यय ग्राहक नय—नय २५५२ अ ।

सत्ता-ग्राहक मुद्ध-द्रव्याधिक नय—नय २५४४ ब ।

सत्ता मात्र अवलोकन—सम्यग्दर्शन ४३४६ अ ।

सत्ता सापेक्ष स्वभाव नित्य नय—नय २५५२ अ ।

सत्पति—हरिवंश १३४० अ ।

सत्परिणाम—परिणाम ३३२ अ, सामान्य ४४१२ अ ।

सत्पात्र—२४२३ ब ।

सत्पुरुष—४२७० अ, किपुरुष जातीय व्यतिरेक—निर्देश
२१२५ अ, ३६११ अ, परिवार ३६११ ब, आयु
१२६४ ब, सख्या ३६११ अ । सगति ४११६ अ ।

सत्प्रतिपक्षी—४३२६ ब ।

सत्प्रतिषेध—असत्य १२०८ ब ।

सत्य—४२७० अ, अहिंसा १२१७ अ, उपदेश १४२४ ब ।

सत्य अणुव्रत—सत्य ४.२७० ब ।

सत्यक—यदुवंश १३३६ ।

सत्यकिपुत्र—४२७३ ब, तीर्थंकर अनतवीर्य व दिव्यपाद
२३७७, तीर्थंकर वर्द्धमान २३६१, रुद्र ४.२२ अ ।

सत्यगुप्त—गणधर २२१२ ब ।

सत्यघोष—४२७३ ब ।

सत्यदत्त—४२७४ अ, एकांत विनयवादी १.४६५ ब,
तीर्थंकर धर्मनाथ २.३६१, वैनयिक ३६०५ अ ।

सत्यदेव—गणधर २२१२ ब ।

सत्यधर्म—सत्य ४.२७३ ब ।

सत्यनेमि—यदुवंश १.३३७ ।

सत्यप्रवाद—४२७४ अ, श्रुतज्ञान ४६८ ब ।

सत्यभामा—४२७४ अ ।

सत्य मनोयोग—निर्देश ३२७६ ब । प्ररूपणा—बध
३१०४, बधस्थान ३११३, उदय १.३७६, उदय-
स्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा
स्थान १४१२, सत्त्व ४२८३, सत्त्वस्थान ४२६६,
४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४२१२,
सख्या ४१०२, क्षेत्र २२०२, स्पर्शन ४.४८४, काल
२१०८, अंतर १.१२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व
११४८ ।

सत्यमित्र—गणधर २.२१२ ब ।

सत्यवचन योग—वचन योग ३.४६८ अ । प्ररूपणा—दे०
सत्य मनोयोग ।

सत्यवाक् कगुनीवरम् - ४.२७४ अ ।

सत्य महाव्रत—सत्य ४.२७० ब ।

सत्यवीर्य—तीर्थंकर संभवनाथ २.३६१ ।

सत्यव्रत—चारित्र्यशुद्धि व्रत २.२६४ ब ।

सत्यशासनपरीक्षा—४.२७४ अ, इतिहास १३४१ ब ।

सत्या देवी—४२७४ अ, कुलकर ४२३ । रुचकवर पर्वत
के कूट की दिक्कुमारी—निर्देश ३४७६ अ, अकन
३.४६८ ।

सत्याभ—४२७४ अ, लौकातिक देव ३४६३ ब ।

सत्यार्थ उपचरित व्यवहार—उपचार १.४२० अ ।

सत्यासत्य—सत्य ४.२७१ अ ।

सत्यासत्यार्थ उपचरित व्यवहार—उपचार १.४२० अ ।

सत्त्व—४२७४ अ, असत १२०७ ब, आयुर्कर्म १२६२
ब, करण-दशक २.६ अ, गुणस्थान (करण-दशक)
२६ अ, द्रव्य २.४५४ ब, निषेक रचना (उदय)
१.३७०, १३७१ अ, सत् ४१६० अ, सापेक्ष धर्म
(अनेकात) ११०६ अ ।

सत्त्व (प्ररूपणा)—बध ३८६ अ, उदय १.३६८ अ,
१.३७०, १३७१ अ, सत्त्व ४६७८, ४२८५ । सत्त्व-
स्थान—सत्त्व ४२७७ ब, पचभाव ३२२२ ब, अनु-
भागसत्त्व अल्पबहुत्व १.१६५ ब, स्थितिसत्त्व अल्प-
बहुत्व १.१६५, सत्त्व के साथ त्रिसंयोगी भग १.४००-
१.४०८ । काल—सामान्य २१२०, अनंतानुबंधी का
१.६१ अ, मोहनीय का २१२३ । अतर १२३, भाव

३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १.१७५ ।

सत्त्व त्रिभगी — ४ ३११ अ, इतिहास १.३३० ब, १.३४२ ब, १ ३४४ ब ।

सत्त्व भावना — भावना ३ २२४ ब ।

सत्त्व व्युच्छिति — सत्त्व ४ २७७ ब ।

सत्त्वस्थान — सत्त्व ४.२७७ ब । प्ररूपणा दे० सत्त्व ।

सत्त्वाद — ४.२७० अ ।

सत्त्वापसरण — अपकर्षण १ ११५ ब, क्षय २.१८० अ ।

सत्सगति — सगति ४ ११८ ब ।

सदर चउक — ४.३११ अ, उदय १ ३७४ ब ।

सदवस्था रूप उपशम — उपशम १.४३७ अ ।

सदसत् — उत्पादादि — सामान्य १.३५७-३६२, काय १ ३६२, द्रव्य-गुण-पर्याय १.३६१-३६२ ।

सदानन्द — ४ ४११ अ, मोक्षमाग ३ ३३६ अ, वेदात् ३.५६५ ब ।

सदा मुक्त — जीव २ ३३६ ब ।

सदार्चन — पूजा ३ ७४ अ ।

सदाशिव — जीव २.३३६ ब, ३.६०१ अ ।

सदाशिव मत — ४ ३११ अ, एकात् १ ४६५ ब ।

सदासुखदास — ४.३११ अ, अकलकस्तोत्र १.३१ अ, इतिहास १ ३३४ ब ।

सदृश — ४ ३११ ब, ग्रह २ २७४ अ, परिणाम ३ ३२ अ, सापेक्ष धर्म (अनेकात्) १.१०६ अ ।

सदृश उत्पाद — परिणाम ३ ३२ अ ।

सदृश एकत्व उपचार — उपचार १ ४२१ अ ।

सदृश तद् उपचार — उपचार १ ४२० ब ।

सद्गृहित्व क्रिया संस्कार ४.१५३ अ ।

सद्धर्म कथा — कथा २ २ ब ।

सद्धर्मविसंबाद — अस्तेय १.२१४ अ ।

सद्भाव — सप्तभगी ४.३१६ ब ।

सद्भाव-स्थापना — अतर १.३ ब, उपशम १ ४३७ अ, निशेष २ ५६७ ब, २.५६८ ब ।

सद्भाव-स्थापना कर्म — कर्म २ २६ अ ।

सद्भावस्थापना-काल — काल २.८१ ब ।

सद्भावानित्य — नय २ ५५२ अ ।

सद्भाषितावली — इतिहास १.३४५ ब ।

सद्भूत व्यवहार — उपचार १ ४१६ अ ।

सद्भूत व्यवहार नय — नय २ ५५६ ब ।

सद्रूप — अनेकात् १ १०६ अ ।

सद्देष्ट — वेदनीय ३.५६२ अ ।

सनंदा — तीर्थंकर सुबाहु २ ३६२ ।

सनक — साख्य ४ ३६८ ब ।

सनत्कुमार चक्रवर्ती — ४ ३१२ अ, कुस्वश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ, चक्रवर्ती ४ १० अ, तीर्थंकर प्ररूपणा २ ३६१, नारायण ४.१८ ब, बज्रदेव ४ १६ ब, साख्य ४ ३६८ ब ।

सनत्कुमार (देव) — ४ ३१२ अ । देव — निर्देश ४ ५१० ब, अवगाहना १ १८० ब, अवधिज्ञान १ १६८ ब आयु १ २६७, आयुबंध के योग्य परिणाम १ २५८ ब । इद्र — निर्देश ४ ५१० ब, दक्षिणेद्र ४.५११ अ, परिवार ४ ५१२-५१३, चिह्न आदि ४ ५११ ब, अवस्थान ४ ५२० ब, विमान, नगर व भवन ४ ५२०-५२१ ।

सनत्कुमार (देव) — प्ररूपणा — बध ३ १०२, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १ ४११, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४ ३०५ त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब । सत् ४.१६१, सख्या ४ ६८, क्षेत्र २ १६६, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अतर १ १०, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

सनत्कुमार (स्वर्ग) — ४ ३१२ अ, निर्देश ४ ५१४ ब, पटल ४ ५१७, इद्रक व श्रेणीबद्ध ४ ५१७, ४.५२०, विस्तार ४ ५१७, अवस्थान ४ ५१४ ब, अकन ४ ५१५, ४ ५२० ।

सनातन — साख्यदर्शन ४ ३६८ ।

सन्नासन्न — ४ ३१२ अ, क्षेत्र का प्रमाण २ २१५ अ ।

सन्निकर्ष — ४ ३१२ अ, प्रमाण ३ १४३ ब, प्रवचनसन्नि-
कर्ष ३ १४८ अ ।

सन्निधिकरण — पूजा ३ ८० ब ।

सन्निपात्रिक भाव — ४ ३१२ अ ।

सन्निवेश — ४ ३१३ अ ।

सन्नीरा — ४ ३१३ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

सन्मति — ४ ३१३ अ, कुलकर ४.२३ ।

सन्मतिकीर्ति — ४ ३१३ अ ।

सन्मतितर्क टीका — अभयदेव १.१२७ अ ।

सन्मतिसूत्र — ४ ३१३ अ, इतिहास १ ३४१ अ ।

सपर्या — ४.३१३ अ, पूजा ३ ७४ अ ।

सपादलक्ष — आशाधर १ २८० ब ।

सप्त — अनीक १ ६८ ब, ऋषि ४ ३१३ अ, क्षेत्र ३.४४४ ब, ३.४४६ अ, तत्त्व २ ३५३ ब, नय २.५२६ ब, पृथिवी (नरक) २.५७६ अ, भग ४ ३१३ ब, भय ३ २०६ अ, व्यसन ३.६१७ ब, समुद्रघात ४ ३४३ अ ।

सप्त ऋषि — ४ ३१३ अ ।

सप्त-ऋषि पूजा—इतिहास १.३४८ अ ।

सप्तकरण—क्षय (चारित्रमोह) २ १८० अ ।

सप्तकक्षा—अनीक १ ६८ ब ।

सप्तकुम्भ—४ ३१३ अ ।

सप्तक्षेत्र—लोक ३ ४४४ ब, ३.४४६ अ ।

सप्तगृह-भिक्षा—आहार १ २८७ अ ।

सप्त गोदावर—४ ३१३ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

सप्त चत्वारिंशत—शक्तियाँ (जीव) २ ३३७ ब ।

सप्तच्छद-वन—तीर्थकर धर्मनाथ २ ३८३, नन्दीश्वर द्वीप ३ ४६६ अ, भवनवासी देवो के नगर ३ २१० ब, व्यतर देवो के नगर ३ ६१२ ब ।

सप्त-तत्त्व—तत्त्व २ ३५३ ब ।

सप्ततिका—इतिहास १ ३४१ अ, ४ परि० ।

सप्ततिका चूर्ण—इतिहास १ ३४२ अ ।

सप्त-दोष—आहार १ २८६ ब ।

सप्तद्वीपिक भूगोल—निर्देश ३ ४३१ ब ।

सप्त नय—नय २ ५२६ ब ।

सप्त पदार्थ—१० सप्ततत्त्व ।

सप्त पदार्थी—वैशेषिक दर्शन ३ ६०८ अ ।

सप्त पदार्थी टीका—इतिहास १ ३४४ ब ।

सप्तपर्ण वन—तीर्थकर अजितनाथ २ ३८३ ।

सप्तपारा—४ ३१३ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

सप्तभगी तरंगिणी—४.३२६ ब ।

सप्तभंगी—४ ३१३ ब, नय २ ५२२ ब, स्याद्वाद् ४.५०२ अ ।

सप्त भय—भय ३ २०६ अ ।

सप्तविंशति—प्रकृति सत्त्व—सक्रमण ४ ८७ ब ।

सप्तव्यसन कथा—इतिहास १ ३४६ अ ।

सप्तव्यसन चारित्र—४ ३२६ ब, इतिहास १ ३४८ अ ।

सप्तांक—४.३२६ ब ।

सप्रतिपक्षी—४ ३२६ ब ।

सप्रतिपक्षी प्रकृति—प्रकृतिबध ३ ६१ अ ।

सप्रतिपक्षी हेत्वाभास—४.३२६ ब ।

सप्रदेशी द्रव्य—द्रव्य २ ४५६ ब ।

सभाभवन—चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ अ, ज्योतिषी देवो का प्रासादो मे २ ३५१ ।

सभामंडप—चैत्यचैत्यालय २ ३०३ अ ।

सभंतभद्र—४.३२६ ब, मूलसध १ ३२२ ब, इतिहास १.३२८ ब, १.३४० ब ।

सभंतभद्र (लघु)—सेनसध १.३२६ ब, इतिहास १.३४२ ब ।

समतानुपात क्रिया—क्रिया २.१७४ ब ।

सम—४ ३२७ अ, सामायिक ४ ४१४ ब, ४.४१५ अ, सोम लोकपाल का यान ४ ५१३ अ ।

समकित चौबीसी व्रत—४.३२७ अ ।

समकेंद्रिय—४ ३२७ अ ।

समगुण—स्कध ४ ४४८ अ ।

समचतुरस्र संस्थान—संस्थान ४ १५४ अ ।

समचतुरस्र संस्थान नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३ १३६ । बंध ३ ६७, बधस्थान ३ ११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिनयोगो भग १ ४०४ सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६६ अ ।

समच्छिन्नक—४ ३२७ अ ।

समच्छेद—४.३२७ अ, गणित २ २२३ ब ।

समता—४ ३२७ अ, उपयोग (युद्ध) १ ४३० ब, १ ४३१ अ, उपेक्षा १ ४४४ ब, चारित्र २ २८३ ब, २ २८४ अ, तप २ ३६० ब, धर्म २ ४६७ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब, सल्लेखना ४ ३६० ब, ४ ३६२ अ, साधु ४ ४०६ अ, सामायिक ४ ४१४, अ ब, ४ ४१५ अ, सामायिक व्रत ४ ४१७ ब, सामायिक चारित्र ४.४१६ अ ।

समता परिणाम—सामायिक ४ ४१४ ब ।

समता भाव—सामायिक व्रत ४ ४१७ ब सामायिक चारित्र ४ ४१६ अ ।

समता रहित साधु ४.४०७ अ ।

समतोया—४ ३२७ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

समदत्ति—दान २.४२२ ब ।

सद्विबाहु—४.३२७ अ ।

समधारा—गणित २.२२६ अ ।

समनस्क—सजा ४.१२१ अ, भजी ४ १२२ अ ।

समन्वय—४ ३२७ ब । निश्चय-व्यवहार ज्ञान २.२६६ ब, निश्चय-व्यवहार चारित्र २.२६२ अ, निश्चय व्यवहार मोक्षमार्ग ३.३३८ ब निश्चय-व्यवहार सम्यग्दर्शन ४.३५६ ब, निश्चय-व्यवहार हिंसा ४.५३५ ब, बाह्याभ्यन्तर तप २.३६० ब ।

समपर्यकासन तप—कायक्लेश २.४७ ब ।

समपाद तप—कायक्लेश २.४७ अ ।

समभाव—मोक्षमार्ग ३.३३६ अ, सामायिक ४.४१४ अ, ४.४१५ अ, सामायिक व्रत ४.४१७ ब, सामायिक चारित्र ४.४१६ अ ।

समभिरुद्ध नय—नय २.५२८ अ, २.५३६ अ, नय (एवं-भूत) २.५४१ ब, निक्षेप २.५६५ ब, सप्तभगी ४.३२३ ब ।

समभिरुद्धनय उपक्रम—उपक्रम १.४१६ ब ।

समभिरुद्ध नयाभास—नय २.५४० ब ।

समग्रधूमिनाद—नारायण ४.१८ ब ।

समय—४.३२७ ब, करणत्रिक (अध.करण) २.८ अ, २.१० अ, (अपूर्वकरण) २.१२ ब, काल अविभागी २.८७ अ, काल (उत्पत्ति) २.८७ अ, कालद्रव्य २.८४ अ, कालप्रमाण २.२१६ अ-ब, पर्याय ३.४८ अ, मूढता ३.३१५ ब, शब्द-अर्थ-ज्ञान समय ४.३२८ अ, सामायिक ४.४१४ ब, ४.४१५ अ, स्व-पर समय ४.३२८ अ ।

समयप्रबद्ध—४.३२८ ब, उदय १.३६८ ब, १.३६९-३७०, प्रदेश ३.१३५ ब, प्रदेशान्तरवृत्त्व १.१५७, १.१७१, ३.१३५ ब, प्रदेश भागाभागा ४.११६, प्रदेशवर्गणा ३.१३५ ब, सहनानी २.२१६ अ ।

समय-भूषण—४.३२९ अ, इन्द्रादि १.२६६ ब ।

समय भेदाभेद—उत्पादादि १.३६० ।

समयमूढता—मूढता ३.३१५, सम्यग्दर्शन ४.३६१ ब ।

समय वक्तव्यता—वक्तव्यता ३.४६६ अ ।

समयसत्य—सत्य ४.२७२ अ ।

समयसार—४.३२९ अ-ब, अनुभव १.८३ अ, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ, सामायिक ४.४१६ ब ।

समयसार (शास्त्र)—४.३२९ ब, इतिहास १.३४० ब ।

समयसार (आत्मख्याती वचनिका)—इतिहास १.३४० अ ।

समयसारकलश—इतिहास १.३४२ अ ।

समयसार टीका—प्रथम—अमृतचंद्र १.१३३ अ, इतिहास १.३४३ अ ।

समयसार नाटक—४.३२९ ब, इतिहास १.३४७ ब ।

समयसार नाटक टीका—४.३११ ब ।

समरसी भाव—ध्यान २.४६६ अ ।

समवधान कर्म—कर्म २.२६ अ-ब, सत् ४.२६६, संख्या ४.११६ ब, क्षेत्र २.२०८, भाव ३.२२३ ।

समवधान कर्म—कर्म २.२६ ब, सत् ४.२६६ अ ।

समवसरण—४.३२९ ब, इन्द्रभूति गणधर १.२६६ ब ।

समवसरण व्रत—४.३३४ अ ।

समवाय—४.३३४ अ, द्रव्य २.४५४ ब, समय ४.३२७ ब ।

समवाय पदार्थ—समवाय ४.३३४ ब ।

समवाय संबंध—द्रव्य २.४६० ब, नय २.५४६ ब, समवाय

४.३३४ अ, संबंध ४.१२६ अ, स्कंध ४.४४७ ब ।

समवायांग—श्रुतज्ञान ४.६८ अ ।

समवायी—४.३३५ ब ।

समवायी कारण—समवायी ४.३३५ ब ।

समवृत्तस्तूप—४.३३६ अ ।

समवृत्ति—४.३३६ अ ।

समांतर श्रेणी—४.३३६ अ ।

समांतरानीक—४.३२६ अ ।

समांतरी गुणोत्तर श्रेणी—४.३३६ अ ।

समाचार—४.३३६ अ ।

समाचार काल—काल २.८१ ब ।

समाधान क्रिया—क्रिया २.१७४ ब ।

समादेश—४.३३७ अ, उद्दिष्ट १.४१३ अ ।

समाधान—४.३३७ अ, ध्यान २.४६६ अ ।

समाधि—४.३३७ अ, अनुभव १.८३, अतरात्मा १.२७ अ, उपयोग (शुद्ध) १.४३१ अ, उपयोग (ध्यान) १.४६६ अ, मुक्ति २.२५० ब, ज्ञान २.२६८ अ, २.२६९ ब, तप २.३६१ अ, तीर्थ २.३६३ अ, धर्म २.४७१ अ, ध्यान २.४६८ अ, २.४६९ अ, ध्यान (उपयोग) १.४६६ अ, पद्धति ३.६ अ, प्राणायाम ३.१५५ अ-ब, मोक्षमार्ग ३.३४० अ, योग ३.३७५ अ, शुक्लध्यान ४.३२ ब, सल्लेखना ४.३६० ब, सुख ४.४३१ ब, ४.४३२ ब ।

समाधिगुप्त—४.३३८ अ, तीर्थकर २.३७७ ।

समाधितंत्र—४.३३८ अ, इतिहास १.३४१ अ ।

समाधितंत्र टीका—इतिहास १.३४२ ब ।

समाधिमरण—सल्लेखना ४.३६४ अ ।

समाधिरस्तु—विनय ३.५५२ अ ।

समाधि सधारणता—समाधि ४.३३७ ब ।

समान खड—४.३३७ ब ।

समान गोल—४.३३८ अ ।

समान जातीय द्रव्य पर्याय—पर्याय ३.४६ अ ।

समानता—नय (ऋजुसूत्र) २.५५० अ ।

समानवृत्ति—२.४२२ ब ।

समानाधिकरण—४.३३८ अ ।

समानुपात सिद्धांत—४.३३८ अ ।

समाय—सामायिक ४.४१४ ब, ४.४१५ अ ।

समारभ—४.३३८ अ ।

समारोप—उपचार १.४१८ ब ।

समास—४.३३८ अ, जीवसमास २.३४१ ब, श्रुतज्ञान (अक्षर व पर्याय समास) ४.६५ अ ।

समाहार—४.३३८ अ, रुक्मवर पर्वत की दिक्कुमारी—
निर्देश ३४७६ अ, अकन ३४६८।

समिति—४.३३८ अ, अहिंसा १.२१७ ब, अहिंसाव्रत
की भावना १.२१६ अ, उपयोग (शुभ) १.४३३ अ,
१.४३४ ब, गुप्ति २.२५० ब, चारित्र २.२८२ अ,
चारित्रशुद्धि व्रत २.२६४ ब, धर्म २.२५० ब, समय
४.१३६ ब, ४.१३८ ब, सवर (समिति) ४.३४२ ब,
सामायिक चारित्र ४.४२० अ, सूक्ष्मसापराय चारित्र
४.४४१ ब।

समीकरण—४.३४२ ब।

समीपस्थ तत् उपचार - उपचार १.४२० ब।

समीरण गति - वानरवंश १.३३८ ब।

समुच्छिन्नक्रिया-निवृत्ति - शुक्लध्यान ४.३५ अ, ४.३६ ब।

समुत्कीर्तना—अनुयोगद्वार १.१०३ ब।

समुत्पत्ति—कषाय २.३६ अ।

समुत्पत्तिक अनुभाग सत्त्वस्थान—अल्पबहुत्व १.१६५ ब।

समुत्पत्तिक कषाय—२.३५ ब, २.३६ अ, २.३७ अ-ब।

समुत्पत्तिस्थान—अल्पबहुत्व १.१६५ ब, अनुभाग १.८६
ब-६० अ।

समुत्पुक्त ज्ञायक शरीर—अंतर १.३ ब।

भग्नुद्घात—४.३४२ ब, केवली २.१५६ अ, मरण ३.२८२
अ, योग (वचनयोग) ३.३८० ब, आहारक १.२६६
ब।

समुद्दिष्ट—४.३४४ अ, गणित २.२२६ अ-ब, २.२२७ ब।

समुद्देश—४.३४४ अ, उद्दिष्ट १.४१३ अ।

समुद्र—४.३४४ अ, राक्षसवश १.३३८ अ, स्वप्न ४.५०४
ब, ४.५०५ अ।

समुद्रगुप्त—४.३४४ अ, गुप्तवश १.३११ अ, १.३१५।

समुद्रविजय—४.३४४ अ, अन्धकवृष्णि १.३० अ, चक्रवर्ती
४.११ ब, तीर्थंकर तेमिनाथ २.३८०, यदुवश १.३३७,
हरिवश १.३४० अ

सम्मद्विजिण चरिउ—इतिहास १.३४५ ब।

सम्मत्तगुणविहाण कव्व—इतिहास १.३४६ अ।

सम्मत्त सत्य—सत्य ४.२७१ ब।

सम्मद—शलाकापुरुष ४.२६ अ।

सम्मान—ब्रह्मचर्य ३.१८६ ब, विनय ३.५५२ ब।

सम्मिश्र—भोगोपभोग ३.२३६ ब, सचित्त ४.१५८ अ।

सम्मेदशिखर—तीर्थंकर प्ररूपणा २.३८५।

सम्यक्—४.३४४ अ, एकात १.४५६ ब, १.४६२ ब, श्रुत-
ज्ञान ४.५६ ब।

सम्यक्चारित्र—चारित्र २.२८३ अ-ब। दे० चारित्र।

सम्यक्त्व—दे० सम्यग्दर्शन।

सम्यक्त्व उद्योतन—उद्योत १.४१४ अ।

सम्यक्त्वकौमुदी—४.३४४ अ, इतिहास १.३४६ ब।

सम्यक्त्वक्रिया—क्रिया २.१७४ ब।

सम्यक्त्वमिथ्यात्व—दे० सम्यग्मिथ्यात्व।

सम्यक्त्वमोहनीय—दे० सम्यक्प्रकृति।

सम्यक्त्व वाद—एकात १.४६५ ब।

सम्यक्त्वाचरण—चारित्र २.२८५ अ, २.२६३ अ।

सम्यक्त्वाधना—आरोधना १.२७१ ब।

सम्यक् नय—नय २.५२०, २.५२४ अ।

सम्यक् प्रकृति—देशघातो १.६२ ब, मोक्षमार्ग ३.३४३ अ,,
मोहनीय ३.३४३ अ, सम्यग्दर्शन ४.३७१ अ। प्ररूपणा
—प्रकृति ३.८८, ३.३४१, स्थिति ४.४६१, स्थिति
सत्त्वस्थानों का अल्पबहुत्व १.१६५ ब, अनुभाग
१.६५, प्रदेश ३.१३६। बध ३.६७, बधस्थान ३.१०६,
उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८६, उदीरण
१.४११ अ, उदी-णास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८,
सत्त्व काल २.२१०, त्रिसयोगीभग १.४०१ ब,
उपशम १.४३६ अ, क्षय २.१७६ अ, सक्रमण ४.८६
अ, ४.८७ अ, ४.८८ अ। अल्पबहुत्व १.१६८।

सम्यक्त्वोद्योत—उद्योत १.४१४ अ।

सम्यग्नेकांत - अनेकांत १.१०५ ब।

सम्यग्नेकांत—एकात १.४५६ ब, १.४६२ ब।

सम्यगवधिज्ञान अवधिज्ञान १.१८७ अ।

सम्यग्ज्ञान—अधिगमज १.५१ ब, अनुभव १.८१-८६,
अभ्यास १.१३१ ब, आगमज्ञान १.२२८ अ, आत्मा
३.३३७ अ, उपयोग १.४२६ ब १.४३१ ब, उपलब्धि
१.४३५ अ, कषाय १.४३२ ब, काल-वधि का अल्प-
बहुत्व १.१६०, चारित्र २.२८६ अ-ब, जन्म (गति-
अगति) २.३२२ अ, तप २.३६० ब, धर्म ३.४६६ ब,
ध्यान २.४६५ ब, २.४६६ ब। ध्येय २.५०० अ,
निश्चय व्यवहार ज्ञान २.२७० ब, निसर्गज १.५१ ब,
प्रज्ञा १.८७ अ, प्रज्ञाश्रमण १.४५० ब, प्रत्याख्यान
३.१३२ ब, प्रमाण २.२५८ ब, २.५२६ अ, ३.१४१
ब, बुद्धि ३.१८४ ब, मिथ्याज्ञान (अज्ञान) १.३७ अ,
२.२६४ अ, मिश्रज्ञान ३.३०८ अ-ब, मोक्षमार्ग
३.३२८ अ-ब, ३.३३३ ब, ३.३३७ अ, योग १.४३२
ब, राग ३.३६५ अ, विशुद्धि ३.५७० अ, शुद्धोपयोग
(उपयोग) १.४३४ अ, शुद्धशुद्ध उपयोग १.४३२ अ,
श्रुतकेवली ४.५५ ब, श्रुतज्ञान (आगम) १.२२६ ब,
४.५६ ब, सम्यग्ज्ञान २.२६२ अ, २.२६५ ब, सम्यग्-

दर्शन ४ ३५३ ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७५ ब, ४.३७६ ब,
सिद्धो का अल्पबहुत्व १.१५४, सुख ४.४३२ अ,
स्वसवेदन (अनुभव) १ ८१-८७ अ ।

सम्यग्ज्ञानचंद्रिका—इतिहास १ ३४८ अ ।

सम्यग्दर्शन—४ ३४४ ब, अज्ञ (मिश्र) ३ ३१० अ, अधः-
करण २ ७ अ, अधिगमन १ ५१ अ, अनन्तानुबन्धी
१ ६० ब, अनन्तानुबन्धी विसर्गजन १.४३६ ब,
अनिवृत्तिकरण (करण) २.१३ अ, अनुप्रेक्षा १.७८
ब, अनुभव १ ८२ ब, अनुभाग क्षयोपशम) २ १८६
अ, अंतरकरण १ २५ ब, अंतर काल १.४ अ, अपूर्व-
करण (क-ण) २.११ ब, अभ्यास १ १३१ ब, अवधि-
ज्ञान १ १६४ ब, १ १६५ अ, आयु (बद्धायुष्क)
१ २६२ ब, उपलब्धि १ ४३५ अ, उपशम १.४३७ ब-
१ ४३६ ब, करणचिह्न (अवधिज्ञान) १ १६२ अ,
करणत्रिक २ ६-१४, करणलब्धि (लब्धि) ३ ४१४ अ,
कहगा २ १५ अ, कर्मभूमि (भूमि) ३ २३५ ब, कारण
(सम्यग्दर्शन) ४.३६२ अ, क्षय २ १७६ अ, क्षयोपशम
२ १८३ ब, २.१८६ अ-ब, चारित्र २ २८६ अ-ब,
२ २८७ अ, जन्म २ ३१३ ब, जन्म (गति-अगति)
२ ३२२ ब, तप २.३६० ब, तीर्थंच गति २ ३६७ ब,
तीर्थकर २ ३७५ अ, त्रिकरण २.६-१४, देवगति
२.४४७ अ, द्वितीयोपशम (उपशम) १ ४३६ अ, धर्म
२ ४६७ ब, नरकगति २.५७४ ब, २ ५७५ ब,
निश्चयनय (नय) २.५५६ अ, निर्गमज (अधिगमज)
१ ५१ अ, प्रत्याख्यान ३ १३३ ब, प्रथमोपशम
(उपशम) १ ४३७ ब, १ ४३८ अ, बद्धायुष्क (आयु)
१.२६२ ब, भूमि (कर्मभूमि) ३ २३५ ब, भल ३.२८८
ब, मिश्र (सम्यग्मिथ्यात्व) ३ ३१० अ, मोक्षमार्ग
३ ३३७ अ, रुद्र ४.२२ ब, लब्धि (करणलब्धि)
३.४१४ अ, (पचलब्धि) ३ ४१२ ब, लिङ्ग ४.४३०
ब, लेश्या ३ ४२७ अ, विकल्प ३ ५३७ ब, वेद
३ ५८८ अ, व्रत ३.६२५ ब, शंका २ ५८६ ब, ४ १४५
ब, शलाकापुरुष ४ २५ ब, ४.२६ ब, श्रद्धान ४ ४५ ब,
श्रावक ४.४६ ब, श्रोता ४.७५ अ, संज्ञी ४ १२२ ब,
सम्मूर्च्छिम ४ १२७ ब, सम्यग्ज्ञान २ २६३-२६५,
सम्यग्दर्शन ४ ३५१ अ, ४.३६२ अ, ४ ३७१ अ,
साधु ४ ४०६ ब, स्वाध्याय ४ ५२३ अ ।

सम्यग्दर्शन—प्ररूपणा—बध ३.१०८, बधस्थान ३ ११३,
उदय १.३८५, उदयस्थान १.३६३, उदीरणा १.४११
अ, सत्त्व ४.२८४, ४.२८६, सत्त्वस्थान ४.३०२,
४ ३०६, त्रिसंयोगीभंग १.४०८ अ । सत् ४.२४५,

संख्या ४ १०८, क्षेत्र २ २०६, स्पर्शन ४.४६२, काल
२ ११७, अंतर १ २०, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व
१ १५२, भागाभाग ४ ११४ । पंचशरीर स्वामित्व—
निर्देश ४७, अल्पबहुत्व १ १६० अ । षट्कर्म
स्वामित्व ४.७ ।

सम्यग्दर्शन वाक् वचन ३ ४६७ ब ।

सम्यग्दर्शनार्थ—आर्थ १ २७४ ब ।

सम्यग्दृष्टि—४ ३७३ ब, अनुभव १.८४ ब, अवधिज्ञान
१ १६५ अ, आगमार्थ ग्रहण १.२३२ ब, आर्तध्यान
१ २७४ ब, करणदशक २ ६ अ, कषाय २ ४० ब,
काय २ ४५ ब, क्षायिक २ १८६ ब, गर्हण २.२३८
ब, गुणस्थान २ २४६ ब, चेतना २ २६७ ब, तीर्थकर
(जन्म) २ ३७६ ब, दर्शन २ ४१७ अ, दर्शन प्रतिमा
२ ४१८ अ, देवगति २.४४८ ब, नय २ ५२६ अ,
निर्जकित २ ५८६ ब पापभीरु (आगम) १ २४२
ब, बद्धायुष्क १ २६२ ब, मिथ्यादृष्टि, ३ ३०५ अ,
राग (मोग) ३ ३६६ अ, ३.४०० अ, राग (वैराग्य)
३ ३६८ अ-ब, लेश्या ३.४२७ अ विसर्गजन ३ ५७१
ब, वैराग्य ३ ३६८ अ-ब, शंका ४ १४५ ब, श्रद्धान
४.४५ अ, ४ ४६ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ, सक्रमण
४ ८७ अ, संख्या ४ ६३ अ, सणय ४.१४५ ब,
सम्यग्ज्ञान २ २६५ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५१ अ ।
प्ररूपणा—दे० अविरतसम्यग्दृष्टि ।

सम्यग्मिथ्याचारित्र—चारित्र २ २८० ब ।

सम्यग्मिथ्यात्व (प्ररूपणा)—बध ३ १०८ बधस्थान
३ ११३, उदय १ ३८६, उदयस्थान १ ३६३ ब,
उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व
४ २८४, सत्त्वस्थान ४ ३०१, ४ ३०६, त्रिसंयोगी भंग
१ ४०८ अ । सत् ४.२६०, संख्या ४.१०६, क्षेत्र
२ २०६, स्पर्शन ४ ४६३, काल २ ११६, अंतर १ २१,
भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १.१५२ अ ।

सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति—मिथ्यात्वप्रकृति का त्रिधाकरण
(उपशम) १ ४३६ अ, सर्वघाती १.१३ अ । प्ररूपणा—
प्रकृति ३.८८, ३ ३४१, ३.३४३ अ, स्थिति
४ ४६१, स्थितिसत्त्व जघन्य ४ २७७ अ, स्थितिसत्त्व
स्थानो का अल्पबहुत्व १.१६५, अनुभाग १.६३ अ,
१ ६५, प्रदेश ३ १३६ । बध ३.६७, बंधस्थान
३ १०६, उदय १.३७५, ३ ३०७ ब, उदयस्थान
१ ३८६, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान
१ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वकाल २ १२०, स्थिति
सत्त्व जघन्य ४.२७७ अ, सत्त्वस्थान ४.२६६, त्रिसंयोगी

भग १४०१ ब। सक्रमण ४८६ अ, ४८७ अ, ४८८ अ, अल्पबहुत्व ११६८।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि—अनतानुबन्धी ३५७१ ब, अतर काल १४ अ, आरोहण-अवरोहण (गुणस्थान) २२४७, उदय (अनतानुबन्धी) ३५७१ ब, उदय (मिश्रप्रकृति) ३३०७ ब, करणदशक २६, कषाय २४० ब, काय २४५ ब, नरकगति २५७५ ब, परिषह ३३४, प्रत्यय ३१२७, बद्धायुष्क १२६२ ब, मरण ३२८२ ब, सक्रमण ४८६ अ, ४८७ अ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि (प्ररूपणा)—बध ३६७, बंधस्थान ३११०, ३१११, उदय १३७५, उदयस्थान १३६२ अ, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४२८७, ४२६६, ४३०४, त्रिसयोगी भग १४०६ अ। सत् ४१६२, संख्या ४६४, क्षेत्र २१६७, स्पर्शन ४४७७, काल २६६, अंतर १७, भाव ३२२१, अल्पबहुत्व ११४३।

सयलविहिविहाण—इतिहास १३४३ ब।

सयोग—गुणस्थान ३२४६ ब।

सयोगकेवली—अर्हन्त ११३८ अ, आरोहण (गुणस्थान) १२४७, करणदशक २६ अ, कर्मक्षय (केवली) २१५८ अ, कषाय २४० ब, काय २४५ ब, काला-बधि का अल्पबहुत्व ११६१, केवली २१५७ ब, २१५८ अ, नामकर्म उदयस्थान १३६६, १३६७, परिषह ३३४, प्रदेशनिर्जरा का अल्पबहुत्व ११७४ अ, प्राण ३१५३ ब, वनस्पति (अप्रतिष्ठित प्रत्येक-शरीरी) ३५०६ अ, सक्रमण ४८६ ब, समुद्धात ४३४३ अ।

सयोगकेवली (प्ररूपणा)—बध ३६७, बधस्थान ३११३, उदय १३७५, उदयस्थान १३६२ अ, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४२८६, ४२६६, ४३०४, त्रिसयोगी भग १४०६ अ। सत् ४१६४, संख्या ४६४, क्षेत्र २१६७, स्पर्श ४४७७, काल २१००, अतर १७, भाव ३२२२ ब, अल्पबहुत्व ११४३।

सयोगी—समुद्धात ४३४३। दे० ऊपर सयोगकेवली।

सयोगी जिन—केवली २१५७ ब। दे० ऊपर सयोग केवली।

सरल—तीर्थंकर अभिनदन २३८३।

सरलता—आर्जव १२७२ अ।

सरल समीकरण—४३७६ अ।

सरस—४४३७ अ।

सरस्वती—तीर्थंकर वज्रधर २३६२, व्यन्तरेद्र वल्लभिका ३६११ ब।

सरस्वतीमन्त्रकल्प—इतिहास १३४३ ब।

सरस्वतीयंत्र—यंत्र ३३६४।

सरह—४३७६ अ।

सरहपा—४३७६ अ।

सरागचारित्र—अपवादमार्ग ११२० ब, उपयोग (शुभ) १४३३ अ, चारित्र २२८० ब, २२८४ ब, २२६०-२६३।

सराग छद्मस्थ—छद्मस्थ २३०५ ब।

सराग श्रमण—साधु ४४०४ अ।

सराग सयम—चारित्र २२६१ अ।

सराग सम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४३६० ब।

सराग सम्यग्दृष्टि—सम्यग्दर्शन ४३५८ अ। सम्यग्दृष्टि ४३७७ ब।

सरित्—४३७६ अ। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३४६० अ। नामनिर्देश ३४७० ब, विस्तार ३४७६, ३४८०, ३४८१, अकन ३४४४, ३४६४ के सामने, चित्र ३४६० अ।

सरोसूष—निर्देश (तिर्यंच) २३६७, आयु १२६३।

सरोवर—स्वप्न ४५०४ ब।

सर्ज कषाय—कषाय २३५ ब, २३६ अ।

सर्प—तीर्थंकर पार्श्वनाथ २३७६, नक्षत्र २५०४ अ।

सर्पवत् चाल—करण (अध.करण) २१० अ, उपशम १४३६ अ।

सर्पसम श्रोता—उपदेश १४२५ ब, श्रोता ४७४ ब।

सर्पिल्लावी ऋद्धि—ऋद्धि १४४७, १४५६ ब।

सर्वजय—विद्याधर वश १३३६ अ।

सर्व—४३७६ अ, अनशन १६५ ब। तीर्थंकर (सर्व ऋद्धि संख्या) २३८७, मंत्र ३२४८ अ।

सर्व-असर्व बध—बध ३११४।

सर्वकरण—उपशम १४३७ अ।

सर्वगदा—४३७६ अ, अरुणाभास द्वीप का देव ३६१४।

सर्वगत—४३७६ अ, केवलज्ञान २१५३ ब, जीव २३३८ द्रव्य २४५७ अ, स्कध ४४४७ अ।

सर्वगतत्व—४३७६ ब।

सर्वगत नय—नय २५२३ अ।

सर्वगंध—४३७६ अ, अरुणाभास द्वीप का देव ३६१४।

सर्वगुप्त—४३७६ ब, गणधर २२१२ ब, तीर्थंकर विमलनाथ २३७८।

सर्वगुप्त—इतिहास १३२८ अ।

सर्वगुप्ति—तीर्थंकर अनंतनाथ २ ३७८ ।

सर्वज्ञत्व—४ ३७६ ब, अनतत्व १ ५८ ब, अनुभव १.८३ ब, केवलज्ञान २ १४७ अ-२.१५१ अ, केवली २.१५७ ब । वक्तृत्व (केवलज्ञान) २ १५२ अ, श्रुतज्ञान ४ ६३ अ, ४ ६४ अ ।

सर्वज्ञत्व शक्ति—४ ३७६ ब ।

सर्वज्ञदेव — देव (भगवान्) २.४४४ अ ।

सर्वज्ञबाह्य — कर्ताकर्म ५.२३ अ-ब ।

सर्वज्ञसिद्धि—अनतकीर्ति १ ५६ ब, इतिहास—लघु १.३४२ अ, बृहद् १ ३३० अ, १ ३४२ अ ।

सर्वज्ञात्म मुनि—४ ३७६ ब, वेदात् ३ ५६५ ब ।

सर्वग्राहकता—केवलज्ञान २.१४७ अ ।

सर्वघाती—अनुभाग १ ६१-६३, अनुभाग का अल्पबहुत्व १ १७१ अ, उदय १ ३७१ ब, स्पर्धक ४.४७३ अ ।

सर्वचद्र—४.३७६ ब, नदिसघ देशीय गण १.३२४ ब, इतिहास १ ३३० अ ।

सर्वजनानन्द—तीर्थंकर पुष्पदत्त व शीतलनाथ २.३७८ ।

सर्वतत्र—न्याय २.६३३ ब, सिद्धात ४.४२७ ब ।

सर्वतोभद्र—चक्रवर्ती ४ १५ अ, ब्रह्मेद्र का यान ४ ५११ ब, यम लोकपाल का यान ४ ५१३ अ ।

सर्वतोभद्र यंत्र (लघु व बृहद्)-- यत्र ३ ३६५ ।

सर्वतोभद्र व्रत ४.३७६ ब ।

सर्वतोभद्रा—४.३८० अ । नदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३ ४६३ अ, नामनिर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३.४६१, अकन ३ ४६५ ।

सर्वथा—४.३८० अ, एकात् १.४६० अ, नय २.५२५ अ, स्याद्वाद ४.५०० अ, ४ ५०१ अ-ब ।

सर्वदर्शित्व शक्ति—४ ३८० अ ।

सर्वदेव—गणधर २ २१२ ब ।

सर्वदेश दोष—आहार १.२६० ब, उद्दिष्ट १.४१३ ब ।

सर्वदेश अभिघट दोष—आहार १ २६० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ ब ।

सर्वदेश-त्याग—व्रत ३ ६२७ ब ।

सर्वधन—गणित २.२२६ ब, २.२३० ब ।

सर्वधारा—गणित २.२२६ अ ।

सर्वनंदि—४ ३८० अ, इतिहास १ ३२६ अ, १ ३४१ अ ।

सर्वपद्मगत भंग—३.१६७ अ ।

सर्वपदार्थ—श्रुतज्ञान ४.६३ अ ।

सर्वपदार्थ स्थितत्व—अनेकात् (सापेक्ष धर्म) १.१०६ अ ।

सर्वपरित्याग—उत्सर्गमार्ग १.१२१ अ, उपयोग (शुद्ध) १.४३१ अ ।

सर्वप्रभ—४.३८० अ, तीर्थंकर २ ३७७ ।

सर्वप्रिय—गणधर २ २१२ ब ।

सर्वभद्र—४ ३८० अ, यक्ष ३.३६६ अ ।

सर्वमत—जीव २.३३६ ब ।

सर्वयज्ञ—गणधर २ २१२ ब ।

सर्वयश—गणधर २ २१२ ब ।

सर्वरक्षित—४ ३८० अ, लौकातिक देव ३ ४६३ ब ।

सर्वरत्न—४ ३८० अ, मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अकन ३ ४६४ । रुचक-वर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ-ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६८ ।

सर्वरत्नमयी—सुमेरु की परिधि ३.४४६ अ, वनखण्ड ३ ४५० अ ।

सर्वविजय—गणधर २ २१२ ब ।

सर्वविद्याप्रकर्षिणी—विद्या ३.५४४ अ ।

सर्वविद्याविराजिता—विद्या ३.५४४ अ ।

सर्वविपरिणामना—विपरिणाम ३.५५५ ब ।

सर्वविभक्ति—अनुयोगद्वार १.१०३ ब ।

सर्वव्यापी—केवलज्ञान (सर्वगत) २.१५३ ब, जीव (सर्वगत) २ ३३८ अ, द्रव्य (सर्वगत) २.४५७ अ, मुक्तजीव ३ ३२६ अ । स्कन्ध (सर्वगत) ४.४४७ अ ।

सर्वशून्य दोष—कर्ता-कर्म २ २२ ब ।

सर्वश्यामा—तीर्थंकर अनंतनाथ की माता २ ३८० ।

सर्वश्री—कल्की (आयिका) २ ३१ ब, तीर्थंकर अनंतनाथ (आयिका) २ ३८८, व्यंतरेद्र की वल्लभिका ३.६११ ब ।

सर्वसंकर दोष—कर्ता-कर्म २.२२ ब ।

सर्वसंक्रमण—संक्रमण ४.८४ अ-ब, ४ ६० ब, अल्पबहुत्व १.१७४ ब ।

सर्वसंघ—गणधर २.२१३ अ ।

सर्वसाधु—साधु ४ ४०३ अ ।

सर्वसावद्य निवृत्ति—सामायिक ४.४१७ ब ।

सर्वसावद्य योग—सामायिक ४.४१६ ब ।

सर्वसुंदर—४.३८० ब ।

सर्वसेना—व्यंतरेद्र गणिका ३.६११ ब ।

सर्वस्थिति—अनुयोगद्वार १.१०३ अ, स्थिति ४ ४५६ ब ।

सर्वस्थिति विभक्ति—स्थिति ४.४५६ ब ।

सर्वस्पर्श—स्पर्श ४.४७६ अ ।

सर्वांग—केवलज्ञान २.१४६ अ ।

सर्वातिचार—अयिचार १.४२ ब, १.४४ अ ।

सर्वातिचार प्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३.११६ अ ।

सर्वात्मभूत—तीर्थकर २ ३७७ ।

सर्वान्त—अनन्त १ ५५ ब ।

सर्वानशन—अनशन १ ६५ ब ।

सर्वानुकंपा—अनुकंपा १ ७० अ ।

सर्वायुध—तीर्थकर २ ३७७ ।

सर्वार्थ—तीर्थकर चन्द्रप्रभ २ ३८३, रत्नप्रभा (चित्रा पृथिवी) ३ ३६१ अ ।

सर्वार्थपुर—४.३८० ब, विद्याधर नगरो ३ ५४५ ब ।

सर्वार्थसिद्धि—विद्या ३ ५४४ अ ।

सर्वार्थसिद्धि—देव—अवगाहना १.१८१ अ, अवधिज्ञान १.१६८ ब, आयु १ २६६, आयुबध के योग परिणाम १ २५८ व, द्विचरम शरीरी ४ ५१० ब । स्वर्ग—विमान ४ ३८० ब । नामनिर्देश ४.५१८, विस्तार ४ ५१८, अकन ४.५१५, ४ ५१७, चक्रवर्ती ४ १० ब ।

सर्वार्थसिद्धि (देवप्ररूपणा)—बध ३.१०२, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २६८, ४ ३०५, त्रिसयोगीभग १.४०६ ब । सत ४ १६२, सख्या ४ ६८, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २.१०४, अतर १ १०, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

सर्वार्थसिद्धि (शास्त्र)—४ ३८० ब, इतिहास १ ३४१ अ ।

सर्वार्थसिद्धि वचनिका—इतिहास १ ३४८ अ ।

सर्वार्थसिद्धि व्रत—४ ३८० ब ।

सर्वावधि—अवधिज्ञान—निर्देश १ १८७ ब, १ १६३ ब-१६६, गुणप्रत्यय १ १६३ ब, विषय १ १६६ ।

सर्वाशन—अनशन १ ६६ अ, अपवादमार्ग १ १२१ अ, तप २ ३६० अ ।

सर्वासंख्यात—असंख्यात १ २०६ अ ।

सर्वोपशम—सम्यग्दर्शन ४ ३६८ ब ।

सर्वोपशमन—धर्मध्यान २ ४८३ अ ।

सर्वोपशमना—सम्यग्दर्शन ४ ३६८ ब ।

सर्वोषध ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५५ ब ।

सर्वोष फल—४ ३८० ब, तौल का प्रमाण २.२१५ अ ।

सलक्षण—आशाधर १ २८० ब ।

सलक्षण—आशाधर १.२८० ब ।

सल्लेखना—४ ३८० ब, शुद्धि ४.४० ब, सल्लेखना के ४० अधिकार ४ ३६० अ ।

सल्लेखना काल—काल २.८० ब ।

सवरी गुह्यगूहन—४ ३६७ ब ।

सवर्णकारिणी—विद्या ३ ५४४ अ ।

सवर्तक—तीर्थकर चन्द्रप्रभ २.३८३ ।

सवस्त्र लिंग—लिंग ३ ४१७ अ, वेद ३ ५८६ ब ।

सन्निकल्प—विकल्प (ज्ञान) ३.५३७ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३६२ अ ।

सविचार—शुक्लध्यान ४.३३ अ-ब, सल्लेखना ४.३८८ ब, ४ ३६० अ ।

सविचार भक्त प्रत्याख्यान—सल्लेखना ४ ३८८ ब, ४ ३६० अ ।

सविचार स्थान तप—कायक्लेश २.४७ अ ।

सवितर्क—शुक्लध्यान ४ ३३ ब, ४ ३४ ब ।

सविपाक—अनुप्रेक्षा (निर्जरा) १.७५ ब, उदय १.३६५ ब ।

सविपाक उदय—उदय १ ३६५ ब ।

सविपाक निर्जरा—अनुप्रेक्षा १ ७५ ब ।

सविश्वरूपत्व—अनेकात (सापेक्षधर्म) १.१०६ अ ।

सवृद्धिक दोष—आहार १ २६० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ ।

सवृद्धिक प्रामृष्य दोष—आहार १.२६० ब ।

सवेद भाग—वेद ३ ५८७ ब ।

सबैडूर्य—सुमेरु ४ ४३७ अ ।

सव्यभिचार—न्याय २ ६३३ ब ।

सशल्य मरण—मरण ३.२८१ ब ।

ससन्निरोध तप—कायक्लेश २.४७ अ ।

ससिक्थ—४.३६८ अ ।

सहकार—तीर्थकर नेमिनाथ २.३८३ ।

सहकारी—४ ३६८ अ, काल २.६३ ब ।

सहकारीकरण—कारण २ ५६ अ, २ ५७ अ, २ ६३ ब, २ ६६ अ, काल २ ८२, २ ८५ अ, निमित्त २.६१२ अ ।

सहगमन—सगति ४.११६ अ ।

सहचर—हेतु ४.५३८ ।

सहज ४.३६८ अ ।

सहज दुःख—दुःख २.४३४ ब ।

सहदेव—४ ३६८ अ, कुरुवश १.३३६ अ ।

सहदेवी—४.३६८ अ, चक्रवर्ती ४ ११ ब ।

सहधर्मिणी—स्त्री ४.४५२ अ ।

सहनानी—४ ३६८ अ ।

सहप्रवृत्त—गुण २.२४२ ब, द्रव्य २.४५४ अ ।

सहभाव—४.३६८ अ, अविनाभाव १.२०२ ब, गुण २ २४३ अ ।

सहभावी—गुण २२४२ ब, द्रव्य (गुण) २४५४ अ, पर्याय ३४५ ब।

सहभावी विशेष—द्रव्य २.४५४ अ।

सहभू—गुण २२४२ ब, अन्वयी १.११२ ब।

सहभूत—गुण २२४३ अ।

सहभोजन—आहार १२८६ ब।

सहवर्ती—ध्येय (गुण) २५०० अ।

सहवर्ती उदय—उदय १.३७३ अ।

सहवा (कवि)—इतिहास १३३४ अ।

सहवास—सगति ४.११६ ब।

सहवृत्ति—४३६८ अ।

सहसा—अतिचार १४४ अ, निक्षेप १४६ ब।

सहसातिचार—अतिचार १.४४ अ।

सहसा निक्षेप—निक्षेप १.४६ ब।

सहस्ती—रुचकवर पर्वत का दिग्गर्जेन्द्र—निर्देश ३४७६ ब।

सहस्र—गणित २.२१४ ब।

सहस्रकीर्ति—नदिसंध के भट्टारक १.३२४ अ, काष्ठासंध १३२७ अ।

सहस्रनयन—४३६८ अ।

सहस्रनाम स्तव—४.३६८ अ, आशाधर १.२८१ अ, स्तोत्र ४.४४६ ब, इतिहास १.३४४ ब।

सहस्रपर्व—विद्या ३.५४४ अ।

सहस्रबाहु—चक्रवर्ती ४.११ ब।

सहस्ररश्मि—४३६८ अ।

सहस्रानीक—विद्याधरवश १३३६ अ।

सहस्रान्न—तीर्थंकर शातिनाथ २३८३।

सहस्रायुध—४३६८ ब।

सहस्रार (देव)—४३६८ ब। देव—निर्देश ४५१० ब, अवगाहना ११८१ अ, अवधिज्ञान ११६८ ब, आयु १.२६८, आयुबद्ध के योग्य परिणाम १२५८ ब। इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब, उत्तरेन्द्र ४.५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, चिह्न आदि ४.५११ ब, अवस्थान ४.५२० ब, विमान नगर व भवन ४.५२०-५२१। तीर्थंकर नेमिनाथ २.३८३, नारायण ४१८ ब, बलदेव ४.१६ ब।

सहस्रार (देव प्ररूपणा)—बंध ३१०२, बंधस्थान ३११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व ४२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१६२, संख्या ४.६८, क्षेत्र २.२००,

स्पर्श ४.४८१, काल २.१०४, अंतर १.१०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५।

सहस्रार (स्वर्ग)—स्वर्ग—निर्देश ४.५१४ ब, पटल ४५१८, इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४५१८, ४५२०, उत्तर विभाग ४५२१ अ, अवस्थान ४५१४ ब, अकन ४५१५। षटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४५१८, अंकन ४.५१५, देव आयु १२६८।

सहानिवस्था विरोध—विरोध ३.५६४ ब।

सहायक कारण—निमित्त २६१२ ब।

सहेतुक प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३१३१ ब।

सहेतुक वन—तीर्थंकर अजित, सभव, सुमति, सुपार्श्व, शीतल, विमल, अनंत, कुथु, अरनाथ २.३८३।

सह्य—४३६८ ब, मनुष्यलाक ३२७५ ब, यदुवंश १३३७।

सांख्य (दर्शन)—४३६८ ब।

सांख्यकारिका—सांख्य ४३६८ ब।

सांख्यकौमुदी—सांख्य ४३६८ ब।

सांख्यदर्शन—प्रकाश १४६५ अ-ब, २४०३ अ, सांख्य ४३६८ ब।

सांख्यप्रवचन भाष्य—सांख्य ४३६८ ब।

सांख्यप्रवचन सूत्र—सांख्य ४३६८ ब।

सांख्यमत—जीव २३३६ ब।

सांख्यसप्तति—सांख्य ४३६८ ब।

सांख्यसार—सांख्य ४३६८ ब।

सांतरगतिसिद्धि—अल्पबहुत्व ११५३ ब।

सांतर-निरंतर द्रव्यवर्गणा—वर्गणा ३.५१३ ब।

सांतरनिरंतर वर्गणा—वर्गणा ३.५१३ अ, ३.५१५ ब, ३५१६ अ।

सांतरबन्धी प्रकृति—निर्देश ३.८८ ब, ३.६० ब, नियम ३६३-६४, त्रिसंयोगी प्ररूपणा १३६६।

सांतर-मार्गणा—मार्गणा ३.२६७ अ।

सांतर-सिद्धि—अल्पबहुत्व ११५३ ब।

सांतर-स्थिति—स्थिति ४.४५७ अ।

सांद्र—४४०० अ।

सांपरायिक—बंधक ३१७६ अ।

सांपरायिक आस्रव—आस्रव १.२८२ ब।

सांपरायिक बंधक—बंधक ३.१७६ अ।

सांप्रति—४.४०० अ।

सांप्रतिक कृष्टि—कृष्टि २.१४३ अ।

सांवत्सरिक प्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३.११६ अ।

सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष—प्रत्यक्ष ३.१२२ ब।

सांख्यवहारिक शब्दज्ञान—श्रुतज्ञान ४.६१ अ ।

सांसारिक दुःख—सुख ४.४३० ब ।

सांसारिक सुख—सुख ४.४३० ब ।

साक्षाक्ष अनशन—अनशन १.६५ ब ।

साकार—४४०० अ, प्रत्याख्यान ३ १३१ ब ।

साकार उद्योग—आकार १ २१८ ब, १ २१९ अ, विशुद्धि ३ ५७० अ ।

साकार मंत्रभेद—४४०० अ ।

साकार स्थापना—अंतर १.३ ब, उपशम १.४३७ अ, निक्षेप २ ५६७ ब, २.५६८ ब ।

साकेत—४.४०० अ ।

साकेतपुर—मनुष्यलोक ३.२७६ अ ।

साकेता—तीर्थकर अजित, अभिनन्दन व सुमतिनाथ १ ३७६ ।

साक्षर शब्द—भाषा ३ २२६ ब ।

साक्षात् प्रत्यक्ष हेतु—स्वाध्याय ४ ५२४ अ ।

सागर—४४०० अ, काल का प्रमाण २.२१७ ब, तीर्थकर २ ३७७, यदुवश १-३३६ ।

सागर -गणित (क्षेत्रफल आदि) २ २३३ ब, गामनिर्देश ३ ४७०, अकन ३ ४४३ । चातुर्विधिक भूगोल ३ ४३७, बौद्धाभिमत ३.४३४, वैदिकाभिमत ३ ४३१ ब ।

सागर (कूट)—गजदत्त का कूट—निर्देश ३.४७३ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८६, अकन ३.४४४, ३.४५७ । सुमेरु के वनो का कूट—निर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३ ४७३, ३ ४८५, ३.४८६, अकन ३.४५१ ।

सागरदत्त—बलदेव ४ १८ अ ।

सागर वृद्धि—४ ४०० अ ।

सागरसिद्ध—अल्पब्रहुत्व १ १५३ अ ।

सागरसेन—हरिवंश १ ३४० अ ।

सागार—४.४०० ब, समय ४.१३७ अ ।

सागार धर्मावृत—४४०० ब, आशात्रय १ २८१ अ, इतिहास १ ३४४ अ ।

सागरोपम—४.४०० अ ।

सात—नारायण ४.१६ ब ।

सात—अनीक १.६८ ब, ऋषि ४ ३१३ अ, ३.४४४ ब, ३ ४४६ अ, तत्त्व २.३५३ ब, नय २ ५२६ ब, नरक पृथिवी २.५७६ अ, अग ४.३१३ ब, व्यसन ३ ६१७ ब । समुद्रवात ४ ३४३ अ ।

सात (७)—रज्जू, रज्जूप्रतर व रज्जूघन की सहनारी २.२३६ ब ।

सातक—स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८, अकन ४ ५१५ ब । देव आयु १ २६८ ।

सातकर्णी—४४०० ब, इतिहास १ ३१४ ।

सात गारव—गारव २ २३६ अ ।

सात ज्ञान—ज्ञानावरण २ २७२ ब ।

सातस्य—४४०० ब ।

सात नय—नय २.५१४ ब ।

सान बंधक—विशुद्धि ३.५६६ ब ।

सात भय—भय ३ २०६ अ ।

सातवी पृथिवी—क्षेत्रप्ररूपणा २ १६४ ब ।

सात व्यसन—व्यसन ३ ६१७ ब ।

सात स्वप्न—स्वप्न ४ ५०४ ब ।

साता—दुःख २.४३४ ब ।

साता वेदनीय—निर्देश ३.५६२ अ, आबाधा १ २४६ अ, घाती १ ६१ अ, बधयोग्य परिणाम (विशुद्धि) ३ ५६६ अ । प्रहणा—प्रकृति ३ ६६ ब, ३ ५६८, स्थिति ४ ४५६ अ, ४ ४६०, ४.४६६, अनुभाग १ ६५, ४ ५२७ । बध ३ ६७, बंधस्थान ३ १०६, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७ । उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २६४ । त्रिसयोनी भग १.३६६ । सक्रमण ४ ८४ अ, अलाबहुत्व १ १६८ ।

सातिचार सामायिक—सामायिक ४ ४१८ अ ।

सातिप्रयोग—४४०० ब । माया ३ २६६ अ ।

सातिरेक—४४०० ब ।

सातिशय अप्रमत्त—उपशम १.४४० अ, क्षपणा चारित्र-मोह की २.१७६ ब, संयत ४ १३० अ ।

सातिशय केवली—केवली २.१५७ अ ।

सातिशय मिथ्यादृष्टि—निर्देश (मिथ्यादृष्टि) ३ ३०३ अ, करणदशक २ ६ अ । बध ३ ६८ अ, उदय १.३८६-३८७, उपशम १.४३८ अ, सत्त्व ४.२८० ।

सात्यकिपुत्र—४४०० ब, रुद्र ४ २२ अ ।

सात्यमुग्धि—अज्ञानवाद १.३८ ब ।

सात्विक दान—दान २ ४२३ अ ।

सादि—अनुभाग १ ८६ अ, काल २.८८ ब, बध ३.१६६ ब, बंधी प्रकृति ३.८८, ३.९० अ ।

सादित्व—अर्नत १ ५१ अ ।

सादि नित्य पर्यायार्थिक नय—नय २.५५१ ब ।

सादि पद—अनुयोगद्वार १ १०२ ब, १.१०३ ब ।

सादि बंध—प्रकृतिबध ३.११४ ।

सादि बंधी प्रकृति—प्रकृतिबध ३.९० अ ।

सादि मिथ्यादृष्टि—उपशम १४३८ अ, क्षयोपशम २.१८५ अ, सममासयम क्षयोपशम २.१८५ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६८ ब, ४.३७१ ब ।

सादि शरीरी बंध—बध ३.१७० ब ।

सादि स्थिति बंध—स्थिति ४.४५७ अ ।

सादृश्य—४.४०० ब ।

सादृश्य प्रत्यभिज्ञान—प्रत्यभिज्ञान ३.१२५ अ ।

सादृश्य लक्षणसामान्य—सामान्य ४.४१२ ब ।

सादृश्य सत्ता—अस्तित्व १.२१३ अ ।

साधक क्षुल्लक—क्षुल्लक २.१६० अ ।

साधक श्रावक—श्रावक ४.४८ ब ।

साधक हेतु—हेतु ४.५३८ ब ।

साधन—४.४०१ अ, कारण २.५४ अ, २.५७ अ, ज्ञान २.२६८, मोक्षमार्ग ३.३३६ ब, हेतु ४.५३८ ब ।

साधन व्यभिचार—नय २.५३८ अ ।

साधनसाध्य भाव—४.४१२ अ, संबध ४.१२६ अ ।
व्यवहार-निश्चय-समन्वय—ज्ञान २.२६८ ब, चारित्र २.२६० अ, धर्म २.४७१ अ, धर्मध्यान २.४८६ अ, नय २.५६८ अ-ब, मोक्षमार्ग ३.३३६ ब, सम्यग्दर्शन ४.३६० अ ।

साधन हेतु—हेतु ४.५३८ ब ।

साधना—अनुयोग १.१०२ अ, अभ्यास १.१३१ ब, साधु ४.४०६ अ ।

साधर्म्य—४.४०१ अ ।

साधर्म्य उदाहरण—दृष्टांत २.४३८ अ ।

साधर्म्यसमा जाति—४.४०१ अ ।

साधारण—४.४०१ ब, ४.४०२ अ, पारिणामिक ३.५५ अ ।

साधारण कायिक जीव—वनस्पति ३.५०६ अ ।

साधारण गुण—गुण २.२४० ब, ३.२४३ ब ।

साधारणत्व—साधारण ४.४०१ ब ।

साधारण दोष—वसतिका ३.५२६ ब ।

साधारण नामकर्म प्रकृति—प्रकृति ३.८८, २.५८३, ३.५०६ ब, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६, बध ३.६७, बधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा-स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भंग १.४०४ । संक्रमण ४.८५ अ, अल्प-बहुत्व १.१६८ ।

साधारण कायमार्गणा प्ररूपणा—बध ३.१०४, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व

४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६६, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब । सत् ४.२०७, सख्या ४.१०१, क्षेत्र २.२०१ स्पर्श ४.४८४, काल २.१०६, अतर १.१२ भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४६ ।

साधारण वनस्पति—कायनिर्देश २.४४, अवगाहना १.१७६, आयु १.२६४ अ, जीवसमास २.३४३, वनस्पति ३.५०२, ३.५०६, ३.५०८, ३.५१० ।

साधारण स्थान तप—कार्यक्लेश २.४७ अ ।

साधारण हेत्वाभास—साधारण ४.४०२ अ ।

साधारणासाधारण—साधारण ४.४०१ ब ।

साधारणीकृत—४.४०२ अ ।

साधिक जघन्य—सहनानी २.२१८ ब ।

साधित—आराधना १.२७१ अ ।

साधु—४.४०२ अ, अनगार १.६२ अ, अपवाद मार्ग १.१२१ अ, अवर्णवाद १.२०१ अ, आधिका की सगति ४.१२० अ, आवश्यक कर्म १.२८० अ । आहार-चर्या १.२८६-२६३, आहारातराय १.२६ अ, उपकार १.४१६ अ, उपदेश १.४२४ ब, ओम १.४६६ ब, कुशील साधु २.१३१ अ, कृतिकर्म २.१३७ अ, २.१३६ अ, क्रिया २.१७५ अ, गुरु २.२५१ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०१ अ, त्याग २.३६७ ब, दशधर्म २.४७६ अ, देवत्व २.४४४ ब, धर्म २.४७३ अ, धर्मध्यान १.८५ ब, ध्येय २.५०१ अ, नमस्कार (विनय) ३.५५२ ब, परीक्षा (विनय) ३.५५४ अ, पूजा ३.७७ अ, प्रत्या-ख्यान ३.१३२ ब, भिक्षा चर्या ३.३२८ ब, मन्त्रतत्र ३.२४८ अ, मिथ्यादृष्टि (श्रुतकेवली) ४.५६ अ, मृत शरीर (कृतिकर्म) २.१३६ अ, लिंग ३.४१७ ब, वदना (विनय) ३.५५२ ब, विनय ३.५५२ ब, ३.५५४ अ, शुद्धि ४.४१ अ, श्रावक ४.४६ ब, ४.४७ अ, श्रुत-केवली ४.५६ अ, श्रणी ४.७१ ब, सगति (आधिका) ४.१२० अ, सयत ४.१२६ ब, ४.१३२ अ-ब, ४.१३३ अ, ससार ४.१४६ अ, सस्कार ४.१५० अ, सत्य वचन ४.२७० ब, साधु ४.४१० अ ।

साधुधर्म—अनगार धर्म १.६२ अ, अपवादमार्ग १.१२१ अ, उपदेश १.४२४ ब ।

साधु-पूजा—उपयोग १.४३४ ब, पूजा ३.७७ अ ।

साधु-प्रासुक-परित्यागता—त्याग २.३६७ अ ।

साधु-संध—इतिहास १.३१६, कल्की २.३१ ब ।

साधुसमाधि—समाधि ४.३३७ ब ।

साधुसेन—गणधर २.२१२ ब ।

साध्य—पक्ष ३.२ ब, विरुद्ध हेत्वाभास ३.५६४ अ । विरोध ३.५६४ ब ।

साध्य-सम हेतु — ४४११ अ, न्याय २६३३ ब ।
 साध्यसमा जाति — ४४११ अ ।
 साध्य-साधक भाव — ४४११ अ, धर्मध्यान २४८६ अ, नय २५६८ अ-ब, मोक्षमार्ग ३३३६ ब, सम्बन्ध ४१२६ अ, सम्यग्दर्शन ४३६० अ ।
 साध्याभास — पक्ष ३३ अ ।
 सान — ४४११ अ ।
 सानत्कुमार — दे० सनत्कुमार ।
 सानुकार — स्वर्ग पटल — निर्देश ४५१८, विस्तार ४५१८, अकन ४५१५, देव आयु १२६८ ।
 सापराध — विभाव ३५५६ अ ।
 सापेक्ष — एकात १.४६१ अ-४६३, धर्मध्यान २४८६ ब ।
 सापेक्ष तत्त्व — स्याद्वाद ४४९८ अ ।
 सापेक्षता — अनेकात ११०८ ब, नय २५६६ अ, स्वभाव ४५०७ ब ।
 सापेक्ष दृष्टि — स्याद्वाद ४४९६ अ ।
 सापेक्ष धर्म — अनेकात ११०६ अ, सप्तभगी ४३२३ ब ।
 सापेक्ष नय — नय २५२५ ब ।
 सापेक्ष मात्रा — ४४११ अ ।
 सामर्थ्य — कारण (कर्मेदय) २.७१ ब ।
 सामानाधिकरण्य — ४३३८ अ ।
 सामानिक — ४४११ अ ।
 सामानिक देव — ज्योतिष देव २.३४६ अ । भवनवासी देव — निर्देश ३२०६ अ, पद्म आदि द्रव्यो मे श्री आदि देवियों ३४५३-४५४, ३६१२ अ, आयु १.२६५, व्यंतर देव — निर्देश ३.६११ ब, आयु १.२६४ ब ।
 वैमानिक देव — निर्देश ४५१२, देवियों की गणना ४५१३, देवों की आयु १२६६, देवियों की आयु १.२७० ।
 सामान्य — ४४११ ब, जानि २३२६ ब, दर्शनोपयोग २४१० ब, द्रव्य २.४५४ ब, सप्तभगी ४.३१८ अ, समयसार ४.३२६ अ, सापेक्ष धर्म (अनेकात) १.१०६ अ ।
 सामान्य आलोचना — आलोचना १२७७ अ, सल्लेखना ४.३६१ ब ।
 सामान्य उपयोग — दर्शन १२१६ अ ।
 सामान्य काल — सप्तभगी ४३२३ अ ।
 सामान्य केवली — केवली २.१५७ अ ।
 सामान्य क्षेत्र — क्षेत्र २.१६२ अ ।
 सामान्य गुण — गुण २.२४० ब, द्रव्य २.२४३ अ,

पारिणामिक भाव २२४२ ब ।

सामान्य गृह — भवनवासी देवों के भवन ३.२१० ब ।
 सामान्य ज्ञान — ज्ञान (केवलज्ञान) २.२६० ब ।
 सामान्य ग्रहण — दर्शनोपयोग २४१२ ब ।
 सामान्य छल — ल २.३०५ ब, न्याय २६३४ अ ।
 सामान्यतो दृष्ट — अनुमान १६७ ब ।
 सामान्य नय — नय २५२३ अ ।
 सामान्य भूमि — समवसरण ४३३० ब ।
 सामान्य विधि — आगम १२३२ अ ।
 सामान्य विशेषात्मक — सामान्य ४४१२ ब ।
 सामान्य संग्रह नय — नय २५३४ अ ।
 सामान्य संग्रह भेदक व्यवहार नय — नय २५५८ ब ।
 सामान्य स्वभाव — स्वभाव ४.५०६ अ ।
 सामान्यालोचना — आलोचना १२७७ अ, सल्लेखना ४३६१ ब ।
 सामान्याधिकरण — ४४१३ अ ।
 सामायिक — ४.४१३ अ, अभ्यास ११३१. ब, कृतिकर्म २१३५ ब, प्रतिक्रमण ३.११८ अ, प्रोषणोपास ३१६७ अ, शांति ४२७ अ, श्रावक ४४७ अ श्रुत-ज्ञान ४६६ ब, मयत ४.१२६ अ, ४.१३२ अ, समय ४.३२७ अ, समिति ४.३३८ ब, सामायिक ४४१४ ब, ४३२७ अ ।
 सामायिक चारित्र — निर्देश (सामायिक) ४.४१६ अ, उपयोग (शुभ) १४३४ ब, छेदोपस्थापना २.३०८ अ, लब्धिस्थानों का अल्पबहुत्व १.१६० अ, सिद्धों का अल्पबहुत्व ११५३ ब ।
 सामायिक दंडक — कृतिकर्म २१३७ ब, वदना ३.४६५ ब ।
 सामायिक पाठ — ४४२० अ अमिताभ १.१३२ अ, इति-हास १३४३ अ ।
 सामायिक प्रतिभा — सामायिक ४.४१७ ब ।
 सामायिक प्रतिवाधारी — सामायिक ४.४१६ ब ।
 सामायिक भावधृति — ग्रथकृति २.२७३ ब ।
 सामायिक मूढता — अमूढदृष्टि ११३२ ब, मूढता ३.३१५ ब ।
 सामायिक व्रत — सामायिक ४.४१८ अ ।
 सामायिक शास्त्र — शास्त्र ४.२८ अ ।
 सामायिकशुद्धि सयन — सामायिक ४४२० अ ।
 सामायिक संनय — मोक्षमार्ग (स्तत्रय) ३.३३३ ब, मोक्ष-नीय का स्थितिसत्त्व ४३०६ अ । प्रह्वपणा — बंध ३.१०६, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३६३, उदय-स्थान १.३६३, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान

१.४१२, सत्त्व ४२८३, सत्त्वस्थान ४३०१, ४.३०६,
त्रिसंयोगी भंग १४०७। सत् ४.२३७, संख्या ४.१०६,
क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४४८६, काल २११४, अंतर
११६, भाव ३२२१ अ, अल्पबहुत्व ११५१।

सामीप्य — ४.४२० अ।

साम्य — उपेक्षा १.४४४ ब, उपयोग (शुद्ध) १४३१ अ,
चारित्र २२८८ ब, २२८६ ब, सामायिक ४.४१४
अ।

साम्राज्य क्रिया — संस्कार ४.१५२ अ, ४.१५३ अ।

सायणाचार्य — ४४२० अ।

सार — ४.४२० अ।

सारण — यदुवश १३३७।

सारणा — सल्लेखना ४३६० ब।

सारनिबह — ४४२० अ, विद्याधर नगरी ३५४५ ब।

सारसंग्रह — ४.४२० अ, इतिहास १.३४० ब।

सारसमुच्चय — ४४२० ब, प्रतिनारायण ४२० ब, इति-
हास १.३४२ ब।

सारस्वत — ४४२० ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ, लौकातिक
देव ३४६३ ब।

सारस्वत यत्र — यत्र ३३६५।

सारीपुत्र — ४४२०।

सार्द्धद्वय द्वीप प्रज्ञप्ति — अमितगति १.१३२ अ।

सार्द्धद्वय प्रज्ञप्ति — ४.४२० ब, इतिहास १३४३ अ।

सार्धपीर्णमयिक गच्छ — श्वेतावर ४.७७ ब।

सार्धशतक — इतिहास १.३४३ ब।

सार्वभौम — तीर्थंकर मल्लिनाथ २.३६१।

सालंबन ध्यान — शुक्लध्यान ४३३ अ।

साल वन — तीर्थंकर सुविधि तथा वर्द्धमान २३८३।

सालव मल्लिराय — ४.४२० ब।

सालिवाहन (कवि) — ४४२० ब, इतिहास १३३३ ब।

साल्व (कवि) — इतिहास १.३३३ ब।

सावद्य (कर्म) — ४४२० ब, शिल्पकर्म ४.२६ अ, श्रावक
४५२ ब, सरः षोडश कर्म ४३७६ अ।

सावद्य कर्मार्थ — ४४२० ब, ४.४२१ अ, आर्य १२७५
अ।

सावद्य निवृत्ति — अहिंसा १२१६ ब, साम्प्रतिक ४४१५
ब, ४.४१६ ब। ४४१६ ब।

सावद्य परिहार — अहिंसा १२१६ ब।

सावद्य वचन — वचन ३.४६७ ब।

सावयव — द्रव्य २५४६ अ, परमाणु ३.१६ ब।

सावानी (कवि) — इतिहास १.३३४ अ।

सासादन (गुणस्थान) — ४.४२२ अ, अनतानुबंधी १.६१
अ, आगेहण २२४७, करणदशक २६ अ, कषाय
२४० ब, काय २.४५ ब, जन्म २३१४ ब, नरक गति
२५७५ अ-ब, परिषद् ३३४, प्रत्यय ३१२७, बद्धा-
युष्क १२६२ ब, मरण ३२८२ ब, श्रेणी ४७२ अ,
संक्रमण ४८६ अ, ४८७ अ, समुद्घात ४३४३ अ,
सम्यग्दर्शन (उपशम) ४.३६६ अ।

सासादन (गुणस्थान) — प्ररूपणा — बंध ३६७, बंधस्थान
३११०, ३१११, उदय १३७५, उदयस्थान १३६२
अ। उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १४१२,
सत्त्व ४२७८, सत्त्वस्थान ४२८७, ४२६७, ४३०४,
त्रिसंयोगी भंग १४०५ ब। सत् ४१६१, संख्या
४६४, क्षेत्र २१६३ ब, २.१६६ अ, २१६७, स्पर्शन
४.४७७, काल २.६४ ब, २६६, अंतर १४ अ-ब,
१७, भाव ३२२२ ब, अल्पबहुत्व ११४२ ब।

सासादन सम्यग्दृष्टि — प्ररूपणा बंध ३१०८, बंधस्थान
३११३, उदय १.३८५, उदयस्थान १३६३ ब,
उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १४१२, सत्त्व
४२८४, ४.२८६, सत्त्वस्थान ४३०२, ४.३०६,
त्रिसंयोगी भंग १.४०७ ब। सत् ४२५५, संख्या
४.१०८, क्षेत्र २२०६, स्पर्शन ४४६२, काल २११७,
अंतर १.२०, भाव ३२२२ अ, अल्पबहुत्व १.१५२।

साहसगति — ४.४२६ अ।

साहसी — ४४२६ अ।

सिघाटक — चक्रवर्ती ४.१५ अ।

सिद्ध द्वीप सागर — ४४२६ ब, नामनिर्देश ३४७० अ,
विस्तार ३४७८, अकन ३४४३, जल का रस ३४७०
अ, ज्योतिषचक्र २३४८ ब, अधिपति देव ३६१४।

सिंधु कक्ष — ४.४२६ ब, विद्याधर नगरी ३५४५ अ।

सिंधु कुंड — सिंधु नदी का द्वार — निर्देश ३४५५ अ,
विस्तार ३.४६, अकन ३४४७। इस कुंड का द्वीप
— निर्देश ३४५५ अ, विस्तार ३४८४, अकन
३४४७, वर्ण ३४७७।

सिंधु कूट — सिंधु द्वीप का कूट — निर्देश ३४७१ अ,
विस्तार ३४६०, अकन ३४४७, वर्ण ३४७७, हिम-
वान पर्वत का कूट तथा देवी — निर्देश ३४७२ अ,
विस्तार ३४८३, ३४८५, अकन ३४४४।

सिंधु नदी — ४४२६ ब, चक्रवर्ती ४१४ ब, मनुष्यलोक
३२७५ अ-ब। भरत तथा विदेह क्षेत्र — निर्देश
३.४५५ अ, ३.४६० अ, विस्तार ३४८६, ३.४६०।
अकन ३.४४४, ३.४६० अ, ३.४६४ के सामने,
विष्णु ३.४४७, जल का गर्ण ३४७८।

सिंह—४४२६ ब, ग्रह २२७४ अ, तीर्थंकर वर्द्धमान २३७६, यदुवंश १.३३७, विद्याधर नगरी ३५४५ ब, सनत्कुमारेद्र का यान ४५११ ब, स्वप्न ४.५०४ ब, ४५०५ अ।

सिंह (कवि)—इतिहास १.३३१ ब, १.३४४ ब।

सिंहकीर्ति—नदिसंघ भट्टारक १.३२३ ब।

सिंहकेतु—विद्याधरवंश १.३३६ अ।

सिंहचंद्र—शलाकापुरुष ४.२५ ब।

सिंहदमन—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब।

सिंहदृष्ट—मातंगवश १.३३६ ब।

सिंहध्वज—४.४२६ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

सिंहनंदि—४४२६ ब, प्रथम—मूलसंघ १.३२२ ब, नंदि-संघ १.३२३ अ। इतिहास १.३२८ ब। द्वितीय—नंदिसंघ १.३२४ अ, इतिहास १.३२६ अ। चतुर्थ—इतिहास १.३३० ब। पंचम—इतिहास १.३३३ अ। षष्ठ १.३३३ अ।

सिंहनावपुर—तीर्थंकर श्रेयांसनाथ २.३७६।

सिंहनिष्क्रीडित व्रत—४.४२६ ब।

सिंहपुर—४.४२७ अ, तीर्थंकर श्रेयांसनाथ २.३७६, नारायण ४.१८ ब, प्रतिनारायण ४.२० ब, मनुष्य-लोक ३.२७६ अ।

सिंहपुरी—४.४२७ अ। विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।

सिंहबल—पुन्नाटसंघ १.३२७ अ।

सिंहयान—विद्याधरवंश १.३३६ अ।

सिंहस्थ—४.४२७ अ, इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब, तीर्थंकर कुथु तथा अरनाथ २.३७८।

सिंहल—४.४२७ अ, भोजवंश १.३१० अ।

सिंहवर्मा—४.४२७ अ।

सिंहवाहिनी—चक्रवर्ती ४.१५ अ।

सिंहविक्रम—राक्षसवंश १.३३८ अ।

सिंहसंघ—इतिहास १.३३६ अ।

सिंहस प्रभु—विद्याधरवंश १.३३६ अ।

सिंहसूरि—४.५४४ अ, इतिहास १.३२६ अ, १.३३३ अ, १.३४६ अ।

सिंहसेन—४.४२७ अ, तीर्थंकर अनंतनाथ २.२८०, तीर्थंकर अजितनाथ २.३८७, बलदेव ४.१७ अ, ४.१८ अ, यदुवंश १.३३७। पुन्नाटसंघी आचार्य १.३२७ अ।

सिंहासन—अर्हत प्रातिहार्य १.१३७ ब, समवसरण ४.३३१

ब, स्वप्न ४.५०४ ब।

सिकंदर—४.४२७ अ।

सिकतिनी—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

सिक्तानन—४.४२७ अ।

सिक्तनी—४.४२७ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

सिक्थ—ससिक्थ ४.३६८ अ।

सिक्थ भत्स्य—हिंसा ४.५३६ अ।

सितपट चौरासी—४.४२७ अ, इतिहास १.३४४ अ।

सिद्ध—अकाय (काय) २.४५ ब, अर्हत (मोक्ष) ३.३२४ अ। अल्पबहुत्व १.१४२ अ-ब, १.४३ ब, १.१४४ अ, १.१५३-१.१५४, अवगाहनत्व गुण १.१७७ ब, अवर्ण-वाद १.२०१ अ, आराधना १.२७१ अ, उत्पादादि १.३६२ ब, ओम् १.४६६ ब, काय मार्गणा २.४५ अ, चैत्य-चैत्यालय २.३०१ अ, पक्षाभास ३.३ अ, जीव ३.३३४ ब, ध्येय २.५०० ब, मोक्ष ३.३२३ अ, ३.३२४ अ, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब, संख्या ४.६२ ब। सत् प्ररूपणा ४.१६५, सामायिक ४.४१७ ब, सुख ४.४३२ अ।

सिद्धि—४.५४४ अ, इतिहास १.३३० अ, १.३४२ अ।

सिद्धकाल—अल्पबहुत्व १.१४२ ब।

सिद्धकेवली—केवली २.१५७ अ।

सिद्ध गति—अल्पबहुत्व १.१५३, मोक्ष ३.३२३ अ।

सिद्धचक्र कहा—इतिहास १.३४५ अ।

सिद्धचक्रयंत्र बृहत्—यत्र ३.३६७।

सिद्धचक्रयंत्र लघु—यत्र ३.३६६।

सिद्धचक्र विधान—पूजापाठ ३.८१ ब।

सिद्धचक्राष्टक पूजा—पूजापाठ ३.८१ ब।

सिद्ध जीव—मोक्ष ३.३२३ अ।

सिद्धजीव-राशि—गणित (सहनानी) २.२१६ अ।

सिद्धत्व—४.४२७ ब।

सिद्धप्रतिमा क्रिया—कृतिकर्म २.१३६ अ।

सिद्धभक्ति—भक्ति २.१६८ ब। इतिहास १.३४० ब।

सिद्ध भगवान्—दे० सिद्ध।

सिद्धयिनी—४.४२७ ब, तीर्थंकर महावीर की यक्षिणी २.३७६।

सिद्धलोक—मोक्ष ३.३२३ ब।

सिद्धसाधन दोष—अकिंचित्कर हेत्वाभास १.३१ ब।

सिद्धसेन गणी—४.४२७ ब, इतिहास १.३२६ ब, १.३४२ अ।

सिद्धसेन दिवाकर—४.४२७ ब, इतिहास १.३२६ अ, १.३४१ अ।

सिद्धहेमशब्दानुशासन—शब्दकोष ४.४ ब।

सिद्धांत—४.४२७ ब, कर्म २२६ अ, न्याय २६३३ अ,
पद्धति ३६ ब, प्रवचन ३१४७ ब, वेद ३.५८३ ब।
सिद्धांत अध्ययन—कायक्लेश (श्रावक) २.४८ अ। श्रोता
४७५ ब।

सिद्धांतग्रन्थ—पद्धति ३.८ ब।

सिद्धांतचक्रवर्ती—अभयनदि ११२७ अ, इन्द्रनदि १.२६६
ब, इतिहास १३३० ब, १३४२ ब।

सिद्धांत भट्टारक—द्राविड सघ १३२० ब, इतिहास
१.३३० ब।

सिद्धांतशास्त्र—कायक्लेश (श्रावक) २४८ अ, श्रोता
४७५ ब।

सिद्धांतसागर—४.४२८ अ।

सिद्धांतसार—४.४२८ अ, इतिहास १३४४ ब, १.३४६
अ।

सिद्धांतसारदीपक—इतिहास १.३४६ अ।

सिद्धांतसार भाष्य—इतिहास १३४७ ब।

सिद्धांतसारसंग्रह—४४२८ अ, इतिहास १.३४३ ब।

सिद्धांतसेन—४४२८ अ, द्राविड संघ १३२० ब, इतिहास
१३३० ब।

सिद्धांताचार वाचन-क्रिया—कृतिकर्म ३१३६ ब।

सिद्धांतिक देव—नदिसंघ देशीय गण १३२४ ब, इतिहास
१३३१ अ।

सिद्धाभ देव—४.४२८ अ, तीर्थंकर २.३७७।

सिद्धायतन कूट—४४२८ अ, आयतन १२५१ अ, चैत्य-
चैत्यालय २३०४ अ। सभी पर्वतो पर एक एक—
निर्देश ३४७१-४७३, विस्तार ३.४८३, अकन
३४६०, ३४७८। ३४४४, ३४६४ के सामने (चित्र
सं० ३७)।

सिद्धार्थ—४४२८ अ, तीर्थंकर ऋषभदेव २३८३, नेमि-
नाथ २३७८, वर्द्धमान २३८०। मानुषोत्तर पर्वत
का देव—निर्देश ३४७५ अ, अकन ३.४६४, विद्या-
घर नगरी ३५४५ ब।

सिद्धार्थ—मूलसंघ १३१६, इतिहास १.३२८ अ।

सिद्धार्थक—विद्याघर नगरी ३५४५ ब।

सिद्धार्थ भगल—भगल ३.२४४ अ।

सिद्धार्थ—४.४२८ अ, तीर्थंकर अभिनदननाथ की यक्षिणी
२.३८०, विद्या ३.५४४ अ।

सिद्धि—४४२८ अ, ध्यान २.४६६ ब, २.४६७ अ।

सिद्धिप्रिय स्तोत्र—४४२८ अ, इतिहास १.३४० ब।

सिद्धिविनिश्चय—४.४२८ अ, अकलंक भट्ट १.३१ अ,

इतिसास १३४१ ब।

सिद्धिविनिश्चय वृत्ति—इतिहास १३४२ ब।

सिरचालन—व्युत्सर्ग का दोष ३६२२ अ।

सिरा—४४२८ अ, औदारिक शरीर १४७२ अ।

सिरिवालचरिउ—४४२८ अ, इतिहास १३४५ ब,
१.३४६ अ।

सिरीष कषाय—कषाय २.३५ ब, २.३६ अ।

सीता—४.४२८ ब, नारायण ४.१८ ब।

सीताकुड—४४२८ ब, सीता नदी का उद्गम स्थान—
निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४६०, अंकन ३४४७।
इस कुड का द्वीप—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार
३.४८४, अंकन ३.४४७, वर्ण ३४७७।

सीता कूट—४.४२८ अ, सीताकुड का कूट—निर्देश
३४५६ अ, विस्तार ३४८४, अंकन ३४४७, वर्ण
३४७७। गजदंत पर्वत का—निर्देश ३४७३ अ,
विस्तार ३४८३, अंकन ३.४५६। नील पर्वत का—
निर्देश ३.४७३ अ, विस्तार ३.४८३, ३४८५,
३४८६, अंकन ३४४४। रुचकवर पर्वत का—
निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३४८७, अंकन ३४६८।

सीतादेवी—सीताकुड की—निर्देश ३.४६५ अ, अंकन
३४४७। रुचक पर्वत की—निर्देश ३४०६ अ, अंकन
३.४६८।

सीता नदी—४४२८ ब, विदेह क्षेत्र की—निर्देश ३४५५
अ, विस्तार ३.४८६, ३.४६०, अंकन ३.४४४,
३.४६४ के सामने, जल का वर्ण ३४७८। चातुर्वर्षिक
भूगोल ३४३८ अ, बौद्धाभिमत ३४३४ ब।

सीतोदा कुंड—४४२८ ब, सीतोदा नदी का उद्गम स्थान
—निर्देश ३४५५ अ, विस्तार ३.४६०, अंकन
३४४७। इस कुण्ड का द्वीप—निर्देश ३.४५६ अ,
विस्तार ३४८४, अंकन ३४४७, वर्ण ३.४७७।

सीतोदा कूट—४४२८। सीतोदा कुंड में स्थित—निर्देश
३४५५ ब, विस्तार ३४८४, अंकन ३.४४७, वर्ण
३४७७, गजदंत पर्वत का निर्देश ३४७३ अ, विस्तार
३४८३, अंकन ३.४४४, ३४५७। निषध पर्वत का
—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन
३४४४।

सीतोदा देवी—सीतोदा कुंड की—निर्देश ३.४५५ अ,
अंकन ३.४४७। निषध पर्वत के कूट की—निर्देश
३.४७२ अ, अंकन ३.४४४।

सीतोदा नदी—४.४२८ ब, विदेह क्षेत्र की महानदी—
निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४८६, ३.४६०, अंकन

३४४४, ३४६४ के सामने, जल का वर्ण ३४७८।
विभगा नदी—निर्देश ३४६० अ, नामनिर्देश ३४७४
ब, विस्तार ३४८६, ३४९०, अंकन ३४४४,
३४६४ के सामने।

सीदिया—४४२८ ब।

सीमकर—४४२८ ब, कुलकर ४.२३, ३४२२७४ अ।

सीमंतक—४४२८ ब, नरकपटल—निर्देश २५७६ ब।
विस्तार २५७६ ब। अंकन ३४३८। नारकी—अव-
गाहना ११७८, आयु १.२६३।

सीमंघर—४.४२८ ब, कुलकर ४.२३, तीर्थकर २३६२,
तीर्थकर सुमति तथा पद्मप्रभ २.३७८, तीर्थकर
शीतलनाथ २.३६१।

सीमा—४४२८ ब।

सीमातीत संख्या—४४२८ ब।

सीरी—तीर्थकर २३७७।

संगुन ४४२८ ब।

सुंदर—४४२८ ब, कुडलवर पर्वत का कूट तथा देव—
३४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३४६७।

सुंदरदास—४.४२८ ब, इतिहास १.३३३ ब, १.३४७ ब।

सुंदरी—४४२८ ब।

सुअंधदहमी कहा—इतिहास १.३३२ अ, १३४४ अ।

सुकंठ—शलाकापुरुष ४२६ अ।

सुकंदा—असुरेद्र की अग्रदेवी ३२०६ अ।

सुकक्ष—४४२६ अ।

सुकच्छ—४.४२६ अ।

सुकच्छविजय—४.४२६ अ।

सुकच्छा—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३४६० अ, नामनिर्देश
३.४७० ब, विस्तार ३४७६, ३४८०, ३४८१,
अंकन ३४४४, ३४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।
वक्षारगिरि का कूट तथा दिक्कुमारी—निर्देश
३४७२ ब, विस्तार ३४८२, ३.४८५, ३.४८६,
अंकन ३४४४।

सुकांता—असुरेद्र की अग्रदेवी ३२०६ अ।

सुकीर्ति—कुरुवंश १.३३५ ब, १३३६ अ।

सुकुमार—कुरुवंश १३३५ ब, १३३६ अ।

सुकुमालचरित—इतिहास १.३४४ अ।

सुकुमालचारित्र—४.४२६ अ, इतिहास १.३३२ ब,
१३४४ अ।

सुकेतु—४.४२६ अ।

सुकेश—राक्षसवंश १.३३८ ब।

सुकौशल—४.४२६ अ, इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब।

सुकौशलचरित—इतिहास १.३४६ अ।

सुख—४४२६ अ, अनुभव १८१-८५ अ, ईर्यापथ
१३५० अ, देवगति २४४६ अ, देवगति (दुखमेव)
२.४४६ अ, मोक्ष ३.३२४ ब, वेदनीय कर्म
३.५६४ अ, सम्यग्दृष्टि ४.३७४ अ, सामायिक
४४१६ अ, सुख ४४३१ अ ब, सुख (वीतराग)
४४३२ अ, ४४३३ अ, स्वसादन (अनुभव)
१८३-८६।

सुखकारण व्रत—४४३४ ब।

सुखद वायु—अर्हतातिथय १.१३७ ब।

सुख-दुःखोपसंयत समाचार ४३३७ अ।

सुखनिधान—इतिहास १३४७ ब।

सुखबोध—४४३४ ब।

सुखबोधवृत्ति—इतिहास १.३४५ अ, १३४७ अ।

सुखबोधिनी वृत्ति—इतिहास १.३४३ ब।

सुखरथ—हरिवंश १.३४० अ।

सुखशक्ति—४.४३४ ब।

सुखसंपत्ति व्रत—४.४३४ ब।

सुखानुबंध—४.४३४ ब।

सुखानुभूति—भोक्षमार्ग ३.३३६ अ।

सुखाभाव—सुख ४४३३ अ।

सुखाभास—सुख ४.४३० ब।

सुखावह—४.४३४ ब, वक्षारगिरि—निर्देश ३.४६० अ,
नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३४८२, ३४८५,
३.४८६, अंकन ३४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण
३.४७७। इस पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश
३४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६,
अंकन ३४४४।

सुखासन—आसन १.२८१ ब, कृतिकर्म २.१३५ अ।

सुखास्वादन—चारित्र २.२८५ अ।

सुखेद्रकीर्ति—नंदिसंघ भट्टारक १३२३ ब।

सुखोदय क्रिया—संस्कार ४१५१ ब।

सुगंध—४४३४ ब, अरुणाभास द्वीप का रक्षक देव
३.६१४।

सुगंधदशमी व्रत—४.४३५ अ।

सुगंधा—४.४३५ अ। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ,
नामनिर्देश ३४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०,
३.४८१, अंकन ३४४४, ३४६४ के सामने, चित्र
३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश
३४७२ ब, विस्तार ३४८२, ३.४८५, ३.४८६,

अंकन ३४४४।

सुगन्धिनो - ४४३५ अ, विद्याधर नगरी ३५४६ अ।

सुगत—४४३५ अ।

सुगर्भ—यदुवंश १३३७।

सुगात्र—४४३५ अ।

सुग्रीव—४४३५ अ, अगद १.१ अ, तीर्थंकर सुविधिनाथ २३८०, तीर्थंकर सुबाहु २.३६२, राक्षसवश १३३८ अ, वानर वश १३३८ ब।

सुघोषा—व्यन्तरेद्र की गणिका ३६११ ब।

सुचंद्र—शलाकापुरुष ४२५ ब।

सुवक्षु—४४३५ अ, मानुषोत्तर व पुष्करार्ध का देव ३६१४।

सुवरित मिश्र—४४३५ अ, मीमासादर्शन ३.३११ अ।

सुचार—कुरुवंश १३३६ ब।

सुचारित्र मिश्र—मीमासादर्शन ३.३११ अ।

सुचारु—कुरुवंश १.३३५ ब, यदुवंश १.३३७।

सुतारा—४४३५ अ।

सुतेजस—कुरुवंश १३३५ ब।

सुत्तपाहुड—इतिहास १.३४० ब।

सुदंसणचरित्र—इतिहास १.३४३ ब।

सुदर्शन—४४३५ अ, अंतकृत केवली १२ ब, कुरुवंश १३३५ ब, १३३६ अ, तीर्थंकर अरनाथ २३८०, तीर्थंकर धर्मनाथ २३६१, बलदेव ४.१६ अ, विद्याधर नगरी ३५४६ अ।

सुदर्शन (पर्वत व कूट)—बौद्धाभिमत पर्वत ३.४३४ अ, मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८६, अंकन ३.४६४। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ४.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८, ३.४६९। सुमेरु पर्वत ४४३७ अ।

सुदर्शन (स्वर्ग)—स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८, अंकन ४.५१५। देव आयु १.२६८।

सुदर्शन चक्र—चक्रवर्ती ४.१३ अ, ४.१५ अ, नारायण ४.१६ ब।

सुदर्शनचरित्र—४४३५ अ। इतिहास—प्रथम १.३४३ ब, द्वितीय १.३४६ अ।

सुदर्शना—नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३ अ, नामनिर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४६१, अंकन ३.४६५। बलदेव की माता ४.१७ ब, व्यन्तरेद्र 'वल्लभिका ३६११ ब।

सुदास—४४३५ अ।

सुदुर्ग—४४३५ अ, गुणधर २.२१३ अ, तीर्थंकर वासु-

पूज्य २.३८७, बलदेव ४.१६ ब, ४.१७ ब। श्रुतकेवली (मूलसंघ) १३१६।

सुधर्ममित्र—चक्रवर्ती ४.१० ब।

सुधर्मसेन—४४३५ ब, पुन्नाटसंघ १.३२७ अ।

सुधर्माचार्य—मृतसघ (श्रुतकेवली) १३१६, इतिहास १३२८ अ।

सुधर्मा सभा—४४३५ ब, चैत्य-चैत्यालयो मे २.३०३ अ, वैमानिक देवों के भवनो मे ४.५२१ अ, व्यन्तरदेवों के नगरो मे ३६१२ ब, सौधर्म स्वर्ग में ४४४५ अ।

सुनंद—तीर्थंकर २३७७, तीर्थंकर मुनिसुव्रत, नेमि तथा वर्द्धमान २.३७८, तीर्थंकर शीतलनाथ २.३८०, प्रति-नारायण ४२० अ।

सुनदा—कुलकर ४.२३।

सुनंदिषेण—४४३५ ब। पुन्नाटसघ—प्रथम १३२७ अ, द्वितीय १.३२७ अ।

सुनक्षत्र—४४३५ ब। अनुत्तरोपपादक दशामी १.७० ब।

सुनपथ—४४३५ ब।

सुनय—सकलादेश ४.१५७ अ।

सुनेत्रा—नारायण ४.१८ ब।

सुनेमि—यदुवंश १.३३७।

सुपत्नीत्व—स्त्री ४.४५२ अ।

सुपद्म—४४३५ ब। कुरुवंश १३३५ ब, १.३३६ अ।

सुपद्मा—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब। विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र सं० ३७), चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६ अंकन ३.४४४।

सुपर्ण—४.४३१ ब।

सुपर्णकुमार—४.४३५ ब, भवनवासी देव—निर्देश ३.२१० ब, नामनिर्देश ३.२०८ अ, अवगाहना ११८०, अवधि-ज्ञान १.१६८ आयु १.२६५। इन्द्र—निर्देश ३.२०८ अ, शक्ति आदि ३.२०८ ब, अवस्थान ३.२०६ अ, ३.४७१, ३.६१२-६१४।

सुपर्णकुमार देव (प्ररूपणा)—बंध ३.१०२, बंधस्थान ३.११३, उदय १३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२ सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसंयोगीभंग १.४०६ ब। सत् ४.२८८, संख्या ४६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अंतर १.१०,

भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५ ।
सुपाश्वनाथ—४.४३५ ब, तीर्थंकर २.३७७, तीर्थंकर
 सुपाश्वनाथ २.३७६-३६१ तीर्थंकर सूरप्रभ २ ३७७ ।
सुप्रश्वनाथ स्तोत्र—४ ४३५ ब ।
सुप्रकीर्णा—रुचकवर पर्वत के कूट की दिक्कुमारी—निर्देश
 ३.४७६ अ, अंकन ३ ४६८ ।
सुप्रकीर्ति—४ ४३५ ब ।
सुप्रणिधि—४.४३५ ब, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—
 निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६८ ।
सुप्रतिष्ठ—४.४३५ ब, चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ, कुरुवश
 १.३३५ ब, १ ३३६ अ, तीर्थंकर नेमिनाथ २ ३७८,
 तीर्थंकर श्रेयासनाथ २.३६१, तीर्थंकर सुपाश्वनाथ
 २.३८०, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ,
 विस्तार ३.४८७, अंकन ३ ४६८ । रुद्र ४.२२ अ ।
सुप्रबंध—४.४३५ ब ।
सुप्रबुद्ध—४.४३५ ब । मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—
 निर्देश ३.४७५ अ, अंकन ३.४६४ । रुचक पर्वत का
 कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन
 ३.४६८ । स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार
 ४.५१८, अंकन ४ ५१५, देव आयु १.२६८ ।
सुप्रबुद्धा—४ ४३५ ब । नदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश
 ३.४६३ अ, नामनिर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४६१,
 अंकन ३.४६५ । रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—
 निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३ ४६८ ।
सुप्रभ—४ ४३५ ब, कुडलवर पर्वत का कूट तथा देव—
 निर्देश ३ ४७५ ब, घृतवर द्वीप का देव ३ ६१४, चक्रवर्ती
 ४.१० ब, तीर्थंकर २.३७७, तीर्थंकर अनंतनाथ
 २ ३६१, तीर्थंकर नेमिनाथ २ ३८७, नारायण
 ४ १८ ब, बलदेव ४.१६ अ ।
सुप्रभा—४ ४३६ अ, तीर्थंकर २.३८०, नदीश्वर द्वीप की
 वापी—निर्देश ३ ४६३ अ, नामनिर्देश ३ ४७५ ब,
 विस्तार ३.४६१, अंकन ३.४६५ । बलदेव ४ १७ ब,
 रघुवश १ ३३८ अ ।
सुप्रयोगा—४.४३६ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।
सुप्रोति क्रिया—मंत्र ३ २४६ ब, सस्कार ४ १५१ अ ।
सुफलु यदुवंश १ ३३७ ।
सुबल—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ, सोमवंश १ ३३६ ब ।
सुबाला—चक्रवर्ती ४ ११ ब, बलदेव ४ १७ ब ।
सुबाहु—तीर्थंकर २ ३६२, हरिवश १ ३४० अ ।
सुभगत्रिक—उदय १.३७४ ब ।
सुभग नामकर्म प्रकृति—४.४३६ अ । प्रकृति—प्रकृति

३ ८८, ३ ६६ अ, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग
 १.६५, प्रदेश ३.१३६ । बध ३.६७, बधस्थान
 ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा
 १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८,
 सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०४ । सक्रमण
 ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६६ ।
सुभगसुलोचनाचरित्र—इतिहास १.३४७ अ ।
सुभट वर्मा—४.४३६ अ, आशाधर १.२८० ब, भोजवश
 १.३१० अ ।
सुभद्र—४ ४३६ अ, अरुणवर द्वीप का देव ३.६१४, नदी-
 श्वर सागर का देव ३.६१४, नारायण ४.१८ ब, यक्ष
 ३.३६६ अ, व्यतर देव ३ ६१४ अ, रुचकवर पर्वत का
 कूट तथा दिग्गजेद्र—निर्देश ३.४७६ अ-ब, विस्तार
 ३.४८७, अंकन ३.४६८ । वरुण लोकपाल का यान
 ४.५१३ अ । स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार
 ४ ५१८, अंकन ४ ५१५, देव आयु १ २६८ ।
सुभद्रनाटिका—इतिहास १ ३४४ अ ।
सुभद्रसागर—इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ ।
सुभद्रा—४.४३६ अ, चक्रवर्ती ४ १३ अ, ४.१५ ब, बलदेव
 ४.१७ ब, विद्याधर वश (भरतपत्नी) १.३३६ अ,
 व्यतरदे गणिका ३ ६११ ब ।
सुभद्राचार्य—इतिहास १.३२८ अ, ३३१ ब, १.३४४ अ ।
सुभानु—यदुवंश १ ३३७, हरिवश १ ३४० अ ।
सुभाषित तत्र—इतिहास १ ३४१ अ ।
सुभाषितरत्नसंदोह—४ ४३६ अ, अमितगति १.१३२ अ,
 इतिहास १ ३४३ अ ।
सुभाषितरत्नावली—४ ४३६ अ ।
सुभाषितार्णव—४ ४३६ अ, इतिहास १ ३४६ ब ।
सुभीम—४ ४३६ अ । राक्षसवश १ ३३८ अ ।
सुभूति—नारायण ४.१८ ब ।
सुभोगभूमि—आयु बध के योग्य परिणाम १ २५६ अ ।
सुभोगा—गजदत के कूट की देवी—निर्देश ३ ४७३ अ, अंकन
 ३ ४५७ ।
सुभौम—४ ४३६ ब, कुरुवश १ ३३५ ब, चक्रवर्ती २ ३६१,
 चक्रवर्ती (शलाकापुरुष) ४.१० अ, तीर्थंकर अरनाथ
 २ ३६१ ।
सुमंगला—चक्रवर्ती ४ ११ ब, तीर्थंकर सुमतिनाथ २ ३८० ।
सुमंदर—मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।
सुमति—४ ४३६ ब, अपराजित १ ११६ अ, कुलकर
 ४ २३ ।
सुमतिर्भोति—४.४३६ ब, नंदिसध १ ३२४ अ, इतिहास
 १.३३३ ब, १.३४७ अ ।
सुमतिदेव—मूलसंघ १.३२२ ब, इतिहास १.३२६ ब ।

सुमंतिनाथ—४.४३६ ब, तीर्थंकर प्ररूपणा २.३७६-३६१ ।
सुमनस—४.४३६ ब, स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८, अंकन ४.५१५, देव आयु १.२६८ ।
सुमना—नदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३ अ । नाम निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४६१, अंकन ३.४६५ ।
सुमागधी—४.४३६ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।
सुमाली—४.४३६ ब, राक्षसवंश १.३३८ ब ।
सुमित्र—४.४३६ ब, चक्रवर्ती ४.११ ब, तीर्थंकर मुनि-सुव्रत २.३८०, बलदेव ४.१७ ब, यदुवंश १.३३७, हरिवंश १.३४० अ ।
सुमित्रा—गजदंत के कूट की देवी—निर्देश ३.४७२ ब, अंकन ३.४५७, रघुवंश १.३३८ अ ।
सुमुख—४.४३६ ब, यदुवंश १.३३७, राक्षसवंश १.३३८ अ ।
सुमुखी—४.४३६ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, व्यंतरेद्र वल्लभिका ३.६११ ब ।
सुमेधा—४.४३६ ब, असुरेद्र की अग्रदेवी ३.२०६ अ, सुमेरु पर्वत के वन की देवी—निर्देश ३.४७३ ब, अंकन ३.४५१ ।
सुमेरु—४.४३६ ब, ४.४३७ अ, प्रत्येक द्वीप के मध्यवर्ती प्रधान पर्वत—निर्देश ३.४४८ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४५७, ३.४६४ के सामने (चित्र सं० ३७), चित्र ३.४४६, वर्ण ३.४७७, परिधि ३.४४६ अ, चूलिका ३.४४६ ब, वनखण्ड ३.४५० अ । चातुर्वर्षिक भूगोल ३.४३७ ब, बौद्धाभिमत ३.४३४ अ, वैदिकाभिमत ३.४३१ ब, जैनाभिमत ३.४३१ अ । स्वप्न ४.५०४ ब ।
सुयश—४.४३७ अ ।
सुर—४.४३७ अ, असुर १.२१० ब ।
सुरगिरि—४.४३७ अ ।
सुरदेव—४.४३७ अ, तीर्थंकर २.३७७ ।
सुरपतिकांत—४.४३७ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब ।
सुरप्रभ—तीर्थंकर २.३७७ ।
सुरमन्यु—४.४३७ अ ।
सुरम्या—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र सं० ३७), चित्र ३.४६० अ । वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४ ।
सुरश्रेष्ठ—तीर्थंकर नेमिनाथ ३.३७८ ।
सुरस—स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८,

अंकन ४.५१५, देव आयु १.२६७ ।
सुरसमिति—स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८, अंकन ।
सुरस—४.५१५, देव आयु १.२६७ ।
सुरसा—व्यंतरेद्र गणिका ३.६११ ब ।
सुरा—४.४३७ अ, हचक्रवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अंकन, ३.४६८, ३.४६६ । हिमवान् पर्वत का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४ ।
सुरारि—राक्षसवंश १.३३८ अ ।
सुरालय—४.४३७ अ ।
सुराष्ट्र—४.४३७ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ ।
सुरूपदत्त—तीर्थंकर २.३७७ ।
सुरेद्रकांत—विद्याधरनगरी ३.५४५ ब ।
सुरेद्रकीर्ति—नदिसिध भट्टारक १.३२३ ब, इतिहास १.३३४ ।
सुरेद्रचक्र यंत्र—यंत्र ३.३६८ ।
सुरेद्रता क्रिया—संस्कार ४.१५३ अ ।
सुरेद्रभूषण—इतिहास १.३३४ अ ।
सुरेद्रमन्यु—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब ।
सुरेश्वर—४.४३७ ब, वेदात ३.५६५ ब ।
सुलस—४.४३७ ब । देवकुरु का द्रह—निर्देश ३.४५६ ब, नामनिर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अंकन ३.४४४, ३.४५७, ३.४६४ के सामने (चित्र सं० ३७) ।
सुलसा—४.४३७ ब, व्यंतरेद्रो की ज्येष्ठा देवी ४.५१४ अ ।
सुलोका—तीर्थंकर पार्श्वनाथ २.३८८ ।
सुलोचन—४.४३७ ब ।
सुलोचना—४.४३७ ब, अकपन १.३० ब, तीर्थंकर पार्श्व-नाथ २.३८८ ।
सुलोयणाचरिउ—इतिहास १.३४३ ब ।
सुवंक्षु—४.४३७ ब ।
सुवक्त्र—विद्याधर वंश १.३३६ अ ।
सुवज्र—विद्याधरवंश १.३३६ अ ।
सुवत्सा—४.४३७ ब ।
सुवत्सा—४.४३७ ब । गजदंत के कूट की देवी—निर्देश ३.४७२ ब, ३.६१४, अंकन ३.४५७ । विदेहस्थ क्षेत्र निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र सं० ३७), चित्र ३.४६० अ । वक्षार गिरि का कूट तथा दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७२ ब,

विस्तार ३४८२, ३४८५, ३४८६, अकन ३४४४।

सुवप्रा—४४३७ ब।

सुवप्रा—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३४७६, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३४८२, ३४८५, ३४८६, अकन ३४४४।

सुवर्ण—तौल का प्रमाण २.५१५ अ। शिखरी पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३४८३, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३४४४। सुमेरु की परिधि ३.४४६ ब। सुमेरु के वन में वरुण देव का पुर—निर्देश ३.४५० अ, अकन ३.४५१।

सुवर्ण कुभ—बलदेव ४.१७ ब।

सुवर्ण कूट—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

सुवर्णप्रभ—सुमेरु के वन में वरुण देव का पुर—निर्देश ३.४५० अ, अकन ३.४५१।

सुवर्णवती—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

सुवल्गु—४४३७ ब, विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र सं. ३७), चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४।

सुवसु—कुरुवंश १.३३५ ब, यदुवंश १.३३७, हरिवंश १.३४० अ।

सुविधि—४४३७ ब, चक्रवर्ती ४.१५ अ, तीर्थंकर—प्ररूपणा २.३७६-३.६१।

सुविशाल—४४३७ ब। स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८, अकन ४.५१५, देव आयु १.२६८।

सुवीर्य—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ।

सुबेल—राक्षसवंश १.३३८ अ।

सुवेषा—बलदेव ४.१७ ब।

सुव्यक्त—गक्षसवंश १.३३८ अ।

सुव्रत—कुरुवंश १.३३५ ब, १.३३६ अ, तीर्थंकर २.३७७, बलदेव ४.१६ ब, ४.१७ ब, हरिवंश १.३३६ ब, १.३४० अ।

सुव्रता—तीर्थंकर धर्मनाथ २.३८०, २.३८८।

सुशांति—कुरुवंश १.३३५ ब।

सुशील—सगति ४.११६ अ।

सुषमा काल—निर्देश २.८८, २.६३, अवगाहना १.१८०, अवसर्पिणी २.८६, आयु १.२६४, आर्यखंड १.२७५

अ, उत्सर्पिणी २.६०, क्षेत्र २.६२, गणित २.२१७ ब, दर्शनमोह क्षपणा २.१७८ ब, प्रमाण २.६०।

सुषमा-दुषमा काल—निर्देश २.८८, २.६३, अवगाहना १.१८०, अवसर्पिणी २.८६, आयु १.२६४, आर्यखंड १.२७५ अ, उत्सर्पिणी २.६०, क्षेत्र २.६२, गणित २.२१७ ब, प्रमाण २.६०।

सुषमा-सुषमा काल—निर्देश २.८८, २.६३, अवगाहना १.१८०, अवसर्पिणी २.८६, आयु १.२६४, आर्यखंड १.२७५ अ, उत्सर्पिणी २.६०, क्षेत्र २.६२, गणित २.२१७ ब, दर्शनमोह क्षपणा २.१७८ ब, प्रमाण २.६०।

सुषेण—४.४३८ अ, यदुवंश १.३३६।

सुषेणा—तीर्थंकर सभवननाथ २.३८०, वैमानिक इन्द्रो की ज्येष्ठा देवी ४.५१४ अ।

सुसिद्धार्थ—बलदेव ४.१७ ब।

सुसीमा—४.४३८ अ, चद्रमा अग्रदेवी २-३४६ अ, वैमानिक इन्द्रो की वल्लभिका देवी ४.५१३ ब, वैमानिक इन्द्रों की ज्येष्ठा देवी ४.५१४ अ, व्यंजरेद्र की वल्लभिका ३.६११ ब।

सुसीमा (नगरी)—तीर्थंकर अजितनाथ व कुथुनाथ २.३७८, तीर्थंकर ऋषभानन, बाहु, ईश्वर तथा देवयण २.३६२, बलदेव ४.१६ ब। विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।

सुसुताग—मगधदेश इतिहास १.३१० ब, १.३१२, १.३१३।

सुसोमा—तीर्थंकर पद्मप्रभ २.३८०।

सुस्थित—४.४३८ अ, लवणसागर का रक्षक देव ३.६१४, सल्लेखना ४.३६०।

सुस्थिता—४.४३८ अ, रुचक्रवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अकन ३.४६६।

सुस्वर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.६७ अ, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६, बध ३.६७, बधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७६, मत्त्वस्थान ४.३०४, त्रिसयोगी भग १.४०४। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पब्रह्मत्व १.१६७ अ।

सुस्वरा—व्यंजरेद्र गणिका ३.६११ ब।

सुहस्ति—४.४३८ अ।

सुहृ—४.४३८ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

सू—सूक्ष्म की सहनानी २ २१६ अ, सूच्यगुल की सहनानी २ २१६ ब ।

सू^२—प्रतरागुल की सहनानी २ २१६ ब ।

सू^३—घनागुलकी सहनानी २ २१६ ब ।

सूकरिका—४ ४३८ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ ।

सूक्ष्म—४.४३८ अ, जीव २ ३३३ ब, पर्याय ३ ४७ ब, श्रद्धान ४ ४५ अ, सहनानी २ २१६ अ, सूक्ष्म ४ ४३६ ब, ४.४४० ब, स्कंध ४.४४६ अ-ब ।

सूक्ष्म अनुमान लिग - अनुमान १ ६८ अ ।

सूक्ष्म आलोचना—आलोचना का दोष १.२७७ ब ।

सूक्ष्म ऋजुसूत्र नय - नय २ ५३५ अ ।

सूक्ष्म कषाय—सूक्ष्म सांपराय ४.४४१ ब ।

सूक्ष्मकायिक जीव—अप्रतिघाती १.२२३ ब, अहिंसा १ २१७ ब, आयु १ २६४, काय २.४४, जीव २ ३३३ ब, जीवसमाप्त २.३४३, निगोद ३.५०८, वनस्पति ३ ५०३, सूक्ष्म ४ ४३८ अ । प्ररूपणा - बंध ३ १०४, बंधस्थान ३.११३, उदय १ ३७६, उदय की विशेषता १ ३७३ अ, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २६६, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब । सत् ४ २०१, सख्या ४ १०१, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४ ४८४, काल २.१०६, अंतर १.१२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १.१४६ ।

सूक्ष्म कृष्टि—उपशम १.४४१ अ, कृष्टि २ १४२ ब, यक्ष (चारित्र्यमोह क्षपणा) २ १८० ब, सूक्ष्मसांपराय ४ ४४१ ब, ४.४४२ अ ।

सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपानी—शुक्लध्यान ४.३४ ब, ४ ३६ ब ।

सूक्ष्म क्षेत्रफल—गणित २ २३२ ब ।

सूक्ष्म जीव—दे० सूक्ष्मकायिक ।

सूक्ष्मता—पर्याय ३.४८ ब ।

सूक्ष्मत्व गुण—मोक्ष ३ ३२५ ब, ३ ३२६ अ, सूक्ष्म ४.४३६ अ ।

सूक्ष्म दोष—आलोचना १ २७७ ब, आहार १ २६० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ ।

सूक्ष्मनिगोद वर्गणा—वनस्पति ३ ५०५ ब, वर्गणा ३.५१३ अ, ३.५१५ ब, ३.५१६ अ, ३.५१७ ब, ३.५१८ अ ।

सूक्ष्म पदार्थ—श्रद्धान ४.४५ अ ।

सूक्ष्म परिधि—गणित २ २३२ ब ।

सूक्ष्म पर्याय—पर्याय ३ ४७ ब ।

सूक्ष्म प्राभृत दोष—आहार १.२६० ब ।

सूक्ष्म-बादर-स्कंध—स्कंध ४ ४४६ ब ।

सूक्ष्म राग—राग ३.३६६ अ ।

सूक्ष्म लोभ—सूक्ष्मसांपराय ४ ४४१ ब ।

सूक्ष्म व्रत—व्रत ३ ६२७ ब ।

सूक्ष्मशरीर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३ १३६ । बंध ३ ६७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४ । सत्क्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८ ।

सूक्ष्म सांपराय (गुणस्थान)—४ ४४१ अ, अनिवृत्तिकरण १.६८ अ, आरोहण-अवरोहण २ २४७ अ, ईर्ष्या १ ३४६ अ, करणदशक २ ६ अ, कषाय २.४० ब, काय २.४५ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६० ब, छेदोपस्थापना २ ३०८ ब, परिषह ३.३४ अ, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १ १७४, बंधक ३.१७६ अ, लब्धिस्थानो का अल्पबहुत्व १.१६०, सत्क्रमण ४ ८६ अ, सिद्धो का अल्पबहुत्व १.१५३, सूक्ष्मकृष्टि २.१४३ अ ।

सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान प्ररूपणा—बंध ३ ६७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ४०६ अ, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७६, सत्त्वस्थान ४ २८६, ४ ३०४, त्रिसयोगी भग १ ४०६ अ । सत् ४ १६४, सत्क्रमण ४.६४, क्षेत्र २ १६७, स्पर्शन ४.४७७, काल २.१००, अंतर १.७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १.१४३ ।

सूक्ष्मसांपराय चारित्र—सूक्ष्मसांपराय ४ ४४१ अ ।

सूक्ष्मसांपराय बंध—बंध ३.१७६ अ ।

सूक्ष्मसांपराय बंध—बंध ३.१७६ अ ।

सूक्ष्मसांपराय शक्ति संयत—सूक्ष्मसांपराय ४ ४४१ ब, सूक्ष्मसांपराय सयम—सूक्ष्मसांपराय ४ ४४१ अ । प्ररूपणा बंध ३.१०६, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३८३, उ यस्थान १ ३६३ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४ ३०६, त्रिसयोगी भग १ ४०७ ब, सत् ४ २३८ सख्या ४ १०७, क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४ ४८६, काल २ ११४, अन्तर १ १६, भाव ३.२२१ अ, अल्पबहुत्व १.१५१ ।

सूक्ष्म-सूक्ष्म स्कंध—स्कंध ४.४४६ ब ।

सूक्ष्म स्कंध - सूक्ष्म ४.४३८ अ, स्कंध ४.४४६ अ-ब ।

सूक्ष्म-स्थूल स्कंध—स्कंध ४.४४६ अ ।

सूक्ष्म भाषा—भाषा ३.२२७ ब ।

सूची—४.४४२ अ, गणित २.२३३ ब ।

सूचीकर्म—अनुयोग १.१०१ ब ।

सूच्यंगुल—४.४४२ अ, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ ब, सहनानी २.२१६ ब ।

सूतक—४.४४२ अ ।

सूत्र—४.४४३ अ, आगम १.२३७ अ-ब, १.२३८ ब, ज्ञान २.२६६ अ ।

सूत्रकृतांग—४.४४३ अ, श्रुतज्ञान ४.६८ अ ।

सूत्र तात्पर्य—ज्ञान २.२६६ अ ।

सूत्र दर्शनार्थ—आर्य १.२७५ अ ।

सूत्रपाहुड—४.४४३ ब, इतिहास १.३४० ब ।

सूत्रपोरुषी—अध्ययनकुशल साधु १.५२ अ ।

सूत्रमणि—४.४४३ ब, रुचकवर पर्वत की देवी—निर्देश ३.४७६ ब ।

सूत्ररुचि—सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब ।

सूत्र वचन—आगम प्रामाण्य १.२४२ ब ।

सूत्रविरुद्ध—आगम प्रामाण्य १.२३८ अ ।

सूत्रसम—आगम १.२३६ अ, आगम प्रामाण्य १.२३५ ब, निक्षेप २.६०२ अ ।

सूत्रसम द्रव्यनिक्षेप—निक्षेप २.६०२ अ ।

सूत्र सम्यक्त्वार्थ—आर्य १.२७५ अ ।

सूत्रसम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब ।

सूत्रोपसंयत—समाचार ४.३३६ अ ।

सूना—४.४४३ ब ।

सूर—देवकुरु का द्रह—निर्देश ३.४५६ ब, नामनिर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४६०, ३.४६१, अंकन ३.४४४, ३.४५७, ३.४६४ के सामने (चित्र सं० ३७) ।

सूरकीर्ति—नदिसंघ भट्टारक १.३२३ ब ।

सूरवत्त—गणधर २.२१२ ब ।

सूरसेन—४.४४३ ब, कुरुवंश १.३३६ अ, तीर्थंकर कुंथुनाथ २.३८०, मनुष्यलोक ३.३७५ अ । सेनसंघ १.३२६ अ ।

सूरिप्रभ—तीर्थंकर २.३६२ ।

सूरपरि—४.४४३ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ ।

सूर्य—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ, कुरुवंश १.३३५ ब, तीर्थंकर नेमिप्रभ व संजात २.३६२, यदुवंश १.३३७ हरिवंश १.३४० अ ।

सूर्य (ज्योतिष देव)—४.४४३ ब, निर्देश २.३४५ ब, आयु १.२७८ । इन्द्र—निर्देश २.३४५ ब, परिवार २.३४६ अ, किरणे व शक्ति २.३४७, विमान सख्या २.३४८ अ, अवस्थान २.३४६ ब ।

सूर्य (ज्योतिष देव प्ररूपणा) बध ३.१०२, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१८८, सख्या ४.६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अतर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

सूर्य (विमान)—निर्देश (ज्योतिषलोक) २.३५० ब, काल २.८७ ब, किरणे तथा वाहक देव २.३४८ अ, गगनखड २.३५० अ, गतिविधि २.३५० अ, ग्रहण २.३५१, चार क्षेत्र २.३४६ अ, परिवार २.३४६, विस्तार २.३५१, वीथियो २.३४६ ब, अकन २.३४७ । स्वप्न ४.५०४ ब, ४.५०५ अ ।

सूर्यक—मगधदेश इतिहास १.३१२ ।

सूर्यगिरि—४.४४३ ब । विदेह वक्षार—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र सं० ३७), वर्ण ३.४७७ । इस वक्षार का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४ ।

सूर्यग्रहण—ज्योतिषलोक २.३५१ अ ।

सूर्यघोष—कुरुवंश १.३३५ ब ।

सूर्यतप—कायक्लेश २.४७ अ ।

सूर्यद्वीप—निर्देश ३.४६२ ब, विस्तार ३.४७६, अंकन ३.४६१ ।

सूर्यपत्तन—४.४४३ ब ।

सूर्यपुर—४.४४३ ब, प्रतिनारायण ४.२० ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

सूर्यप्रज्ञप्ति—४.४४३ ब, श्रुतज्ञान ४.६८ ब, इतिहास १.३४१ अ ।

सूर्यप्रभ—चक्रवर्ती ४.१३ अ, ४.१५ अ ।

सूर्यप्रभा—सूर्य की अग्रदेवी २.३४६ अ ।

सूर्यमंडल—काल २.८७ ब ।

सूर्यमाल—विदेह वक्षार—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७ । इस का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४ ।

सूर्यरज—४४४३ ब, वानरवश १३३८ ब ।
 सूर्यवश—इक्ष्वाकुवश १३३५ अ, इतिहास १३३६ ब ।
 सूर्यहृद—४४४३ ब ।
 सूर्याचरण—४४४३ ब, सुमेरु ४४३७ अ ।
 सूर्याभ—४४४३ ब, लौकातिक देव ३४६३ ब, विद्याधर
 नगरी ३५४५ अ ।
 सूर्यावर्त—४.४४३ ब, सुमेरु ४४३७ अ ।
 सूवा—सूतक ४४४२ ब ।
 सृष्टि—४.४४३ ब, काल २.६१, केवली ४१६० अ,
 वेदात ३५६६ ब, वैशेषिक दर्शन ३.६०८ अ ।
 सृष्ट्यधिकारता अधिकार—ब्राह्मण ३१६६ अ ।
 सेज्जाधर—४.४४३ ब ।
 सेन—तीर्थकर धर्मनाथ २.३८७ ।
 सेनसंघ—इतिहास १३२६ अ ।
 सेना—४४४४ अ, अनीक १६८ ब, तीर्थकर सभवननाथ
 २३८०, तीर्थकर वासुपूज्य २३८८ ।
 सेनापति—४४४४ अ, चक्रवर्ती ४१३ अ ।
 सेनामुख—४.४४४ अ ।
 सेमर—४४४४ अ ।
 सेवक—तीर्थकर २३७७, मिथ्यादृष्टि ३३०५ ब, राग
 ३३६६ अ ।
 सेवन—वन्दना ३३६६ ब ।
 सेवा—४४४४ अ ।
 सेही—तीर्थकर अनन्तनाथ २.३७६ ।
 सैतालीख—जीव (शक्तियों) २३३७, नय २.५२३ अ ।
 सैधव—४४४४ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।
 सैकंड—काल का प्रमाण २२१७ अ ।
 सैतव—४४४४ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।
 सैद्धांतिक (देव)—४४४४ अ ।
 सोगधिक—सख्या का प्रमाण २.२१४ ब ।
 सोतांतर बाहिनी—विभगा नदी—निर्देश ३४६० अ, नाम-
 निर्देश ३४७४ ब, विस्तार ३.४८६, ३.४६०, अंकन
 ४४४४, ३४६४ के सामने ।
 सोता—निद्रा २६०६ अ, सम्यग्दृष्टि ४.३७८ अ ।
 सोतो-बाहिनी—विभगा नदी—निर्देश ३.४६० अ, नाम-
 निर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३.४८६, ३.४६०, अंकन
 ३.४४४, ३४६४ के सामने ।
 सोना—निद्रा २६१० अ, सम्यग्दृष्टि ४३७८ अ ।
 सोपक्रम आयुष्क—आयु १.२५६ अ, १२६० अ ।
 सोपक्रम काल—काल २८१ अ ।
 सोपाधिक अनुमान—उपाधि १४४४ अ ।

सोम—४४४४ अ, नक्षत्र २५०४ ब, नारायण ४१८ ब,
 यदुवश १.३३७, विद्याधरवश १३३६ अ ।
 सोम (लोकपाल)—निर्देश (लोकपाल) ३.४६१ ब, आयु
 १२६६, मध्यलोक में अवस्थान ३६१३ अ, सुमेरु
 पर्वत पर अवस्थान ३४५० अ-ब, स्वर्गलोक में अव-
 स्थान ४.५१३ अ, शक्ति व ऋद्धि ४.५१३ अ ।
 सोमक—तीर्थकर नेमिनाथ के गणधर २३८७ ।
 सोमकायिक—४४४४ अ, आकाशोपपन्न देव २४४५ ब ।
 सोमकीर्ति—४४४४ अ, काष्ठासघ १३२७ अ, इतिहास
 १३३३ अ, १३४६ अ ।
 सोमदत्त—४.४४४ ब, गणधर २२१२ ब, यदुवश
 १.३३७ ।
 सोमदेव—४.४४४ ब, अग्निभूत १.३६ ब, इतिहास—
 प्रथम १.३३० ब, १.३४२ ब । द्वितीय १३३१ अ,
 १३३३ अ ।
 सोमनाथ—४४४४ ब, इतिहास १.३३२ अ ।
 सोमप्रभ—४४४४ ब, कुरुवंश १.३३५ ब, तीर्थकर बल-
 देव ४१७ अ, ४.१८ अ, राज्यवश सामान्य १३३५
 अ ।
 सोमयश—४.४४५ ब, इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ, सोमवंश
 १३३६ ब ।
 सोमवंश—इतिहास १.३३६ ब, ऋषिवश १३३५ ब,
 चन्द्रवश १३३६ ब ।
 सोम शर्मा ४४४४ ब ।
 सोमश्री—यदुवश १.३३७ ।
 सोमश्रेणी—४४४४ ब ।
 सोमसेन—४४४४ ब, सेनसघ १३२६ अ-ब, इतिहास
 १.३३३ ब, १३४७ ब ।
 सोमा—तीर्थकर मुनिसुव्रतनाथ २.३८० ।
 सोमिल—४.४४४ ब, अंतकृत केवली १२ ब ।
 सोमेश्वर—४.४४४ ब, मीमांसा दर्शन (भट्ट) ३.३११ अ ।
 सोरठ—४४४४ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।
 सोलसा—२४४४ ब, तीर्थकर धर्मनाथ की यक्षिणी
 २.३७६ ।
 सोलह—सहनानी—अनन्त=१६, अनंतानंत=१६,
 असख्यात (परीत)=१६, जीवराशि=१६ । काल
 समय राशि=१६ ख ख, आकाशप्रदेश राशि=१६
 ख ख ख । गणित २.२१६ अ ।
 सोलह—आहार के उत्पादन व उद्गम दोष १.२८६-२६१,
 कुलकर ४.२३ अ पृथिवी (रत्नप्रभा) ३.३८६ ब,
 भावना ३.२२५ अ, स्वप्न ४.५०४ अ ।

सोल्व—४.४४५ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ ।

सौ—सख्या का प्रमाण २.२१४ ब, इन्द्र १.२६६ अ ।

सौकर—४.४४५ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब ।

सौम्य—सूक्ष्म ४.४३८ ब, स्कध ४.४४७ ब ।

सौगधी—मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अंकन ३.४६४ ।

सौत्रांतिक—बौद्ध दर्शन ३.३८७ अ ।

सौदामिनी—४.४४५ अ, रुचकवर पर्वत की देवी—निर्देश ३.४७६ ब, अंकन ३.४६८, ३.४६९ ।

सौदास—४.४४५ अ, इक्ष्वाकुवश १.३३५ ब ।

सौधर्म देव—४.४४५ अ, अवगाहना १.१८० ब, अवधि ज्ञान १.१६८, आयु १.२६६, आयुवध के योग्य परिणाम १.२५८ ब । इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब, दक्षिणेद्र ४.५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, चिह्न आदि ४.५११ ब, अवस्थान ४.५२० ब, विमान, नगर व भवन ४.५२०-५२१ ।

सौधर्म देव (प्रहरणा) — बध ३.१०२, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान, १.४१२ सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१८६, सख्या ४.६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अंतर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

सौधर्म स्वर्ग — निर्देश ४.५१४ ब, पटल ४.५१६, इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४.५१६, ४.५२०, दक्षिण विभाग ४.५२० ब, अवस्थान ४.५१४ ब, अंकन ४.५१५, चित्र ४.५१६ ब । नारायण ४.१८ ब, बलदेव ४.१६ ब ।

सौनव — नारायण ४.१६ ब ।

सौनवक—चक्रवर्ती ४.१५ अ ।

सौभाग्य—सुभग ४.४३६ अ ।

सौभाग्यदशमी-व्रत—४.४४५ ब ।

सौमनस—४.४४५ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ, सनत्कुमार का यान ४.५११ ब । स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१६ अ, अंकन ४.५१५, ४.५१७, देव आयु १.२६८ ।

सौमनस (पर्वत तथा कूट)—गजदंत पर्वत—निर्देश ३.४५६ ब, नामनिर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४६२, चित्र ३.४५२ ब, वर्ण ३.४७७, इसके कूट तथा देव ३.४७२ ब । गजदंत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४५७ ।

रुचकवर पर्वतका—कूट निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७ अंकन ३.४६९ ।

सौमनस वन—सुमेरु पर्वत का वन—निर्देश ३.४५० अ, विस्तार ३.४८८, चित्र ३.४५१ । इस वन का एक भाग ३.४५० अ ।

सौम्य चर्चा—हेतु ३.५३३ ब ।

सौम्य रूपक—स्वर्ग का श्रेणीबद्ध—निर्देश ४.५१६ अ, अंकन ४.५१५, ५.१७, देव आयु १.२६६ ।

सौम्या—व्यंतरेद्र गणिका ३.६११ ब ।

सौम्या वाचना—वाचना ३.५३१ ब ।

सौराष्ट्र—मगधदेश इतिहास १.३१० ब, १ परि० २.२ ।

सौवीर—४.४४४ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ ।

सौवीर भुक्ति व्रत—४.४४४ ब ।

सौधिर शब्द—शब्द ४.३ अ ।

स्कंदगुप्त—४.४४५ ब, गुप्तवश १.३११ अ-ब, १.३१५ । स्कध—४.४४५ ब, अण्डर १.२ अ, आकाश (लोकाकाश) १.२२३ अ, कर्म २.२७ ब, परमाणु १.२२४ अ, वनस्पति ३.५०६ व, ३.५१० अ, सूक्ष्म ४.४३८ अ, सूक्ष्म (महास्कध) ४.४३६ अ ।

स्कंध देश—स्कध ४.४४६ अ ।

स्कध प्रदेश—स्कंध ४.४४६ अ ।

स्कंध बीज—वनस्पति ३.५०२ ब, ३.५०६ अ ।

स्कधशाली—४.४४८ ब, महोरग ३.२६३ अ ।

स्तंभन—ध्यान २.४६७ अ, मंत्र ३.२४५ ब ।

स्तंभन यत्र—यत्र ३.३६८ ।

स्तंभ स्थिति—व्युत्सर्गदोष ३.६२१ ब ।

स्तंभावष्टंभ—४.४४८ ब, व्युत्सर्ग दोष ३.६२१ ब ।

स्तनक—४.४४८ ब । नरक पटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

स्तनदृष्टि—४.४४६ अ, व्युत्सर्ग ३.६२१ ब ।

स्तनलोला—४.४४६ अ । नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८ आयु १.२६३ ।

स्तनलोलुक—४.४४६ अ । नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब । विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

स्तनलोलुप—४.४४६ अ । नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब । अंकन ३.४४१ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

स्तनित—४.४४६ अ ।

स्तनितकुमार—(४४४१ अ) । भवनवासी देव—निर्देश ३.२०८ अ, ३.२१० ब, अवगाहना १.१८०, अवधि ज्ञान १.१६८, आयु १.२६५ । इन्द्र—निर्देश ३.२०८ अ, गक्ति आदि ३.२०८ ब, अवस्थान ३.२०६ ब, ३.४७१, ३.६१२-६१४ ।

स्तनितकुमार (प्ररूपणा)—बंध ३.१०२, बंधस्थान ३.११३ उदय १.३६३, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१८८, संख्या ४.६७, क्षेत्र २.१६६, स्पर्श ४.४८१, काल २.१०४, अंतर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५ ।

स्तनोन्नोति—व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ ।

स्तब्ध—४.४४६ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ ब ।

स्तब्धत्व—मान ३.२६४ ब ।

स्तव—उपयोग १.४२६ ब, भक्ति ३.१६६ ब ।

स्तवदंडक—कृतिकर्म २.१३४ ब ।

स्तवन—उपयोग १.४२६ ब, भक्ति ३.१६६ ब ।

स्तवभूति—तीर्थकर देवयश २.३६२ ।

स्तिमितसागर—यदुवश १.३३७ ।

स्तितवुक संक्रमण—सक्रमण ४.६० ब ।

स्तुति—४.४४६ अ, उपयोग १.४२६ ब, भक्ति ३.१६६ ब ।

स्तुति (दोष)—आहार १.२६१ अ-ब ।

स्तुति विद्या—इतिहास १.३४० ब ।

स्तप—४.४४६ अ, चैत्यचैत्यालय २.३०२ ब, २.३०३ अ ।

स्तेन प्रयोग—४.४४६ अ, अस्तेय व्रतानिचार १.२१३ ब ।

स्तेनित—४.४४६ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ ब ।

स्तेय—४.४४६ अ, अस्तेय १.२१३-२१५, अहिंसा १.२१७ अ ।

स्तेयानंद—रौद्रध्यान ३.४१४ ब ।

स्तोक—४.४४६ अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ-ब ।

स्तोत्र—४.४४६ अ ।

स्थानगृद्धि—निद्रा २.६०८ ब ।

स्थानगृद्धि कर्म प्रकृति—दर्शनावरण २.४२० अ । प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.४२०, स्थिति ४.४६२, अनुभाग १.६४ ब, प्रदेश ३.१३६ । बंध ३.६७, बंधस्थान ३.१०६, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३७३ ब, उदयस्थान १.३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६४, त्रिसयोगी भग १.३६६, संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८ ।

स्थानत्रिक—उदय १.३७४ ब ।

स्त्री—४.४५६ ब, आहारक काययोग १.२६७ ब, परिषह ३.३३ ब, ३.३४ अ, ४.४५२ ब । वेद—तीर्थकर ३.५६० अ, प्रमाद ३.५८६ अ, प्रवज्या २.५८८ ब, मुक्ति ३.५८८ ब । शुक्लध्यान ४.३६ ब, संहनन ४.१५६ अ ।

स्त्रीकथा—कथा २.३ ब ।

स्त्रीपरिषह—४.४५२ अ । परिषह ३.३३ ब, ३.३४ अ ।

स्त्रीप्रवज्या—वेद ३.४८८ ब ।

स्त्रीमुक्ति—वेद ३.५८८ ब ।

स्त्रीमुक्ति प्रकरण—इतिहास १.३४२ अ ।

स्त्रीवेद—४.४४६ ब, आहारक काययोग १.२६७ ब, कषाय २.३५ ब, राग २.३६ अ । प्ररूपणा - बंध ३.१०५, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३८१, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२ ब, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.३००, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०७ अ । सत् ४.२२२, संख्या ४.६४ ब, ४.१०४, क्षेत्र २.२०३, स्पर्श ४.४८७, काल २.१११, अंतर १.१४, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४८ ।

स्त्रीवेद कर्मप्रकृति—निर्देश (मोहनीय) ३.३४४ ब । प्ररूपणा—प्रकृति ३.६४ ब, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६ । बंध ३.६७, बंध की कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, बंध विषयक नियम ३.६६ ब, बंधस्थान ३.१०६, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३७३ ब, उदयस्थान १.३८६, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२६५, ४.३०५, स्थिति सत्त्वस्थानो का अल्पबहुत्व १.१६५ ब, त्रिसयोगी भग १.४०१ ब । संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८ ।

स्त्रीवेद सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३ ब ।

स्त्रीसंसर्ग—संगति ४.११६ ब ।

स्थडिल—समिति ४.३४१ ब, सल्लेखना ४.३८६ ब ।

स्थपति—४.४५२ ब, चक्रवर्ती ४.१३ अ ।

स्थलगता चूलिका—४.४५२ ब, श्रुतज्ञान ४.६६ अ ।

स्थविर कल्प—४.४५२ ब, कृतिकर्म २.१३६ ब, श्वेतांबर ४.७६ अ ।

स्थविरवादी मत—बौद्ध दर्शन ३.१८६ अ ।

स्थान—४.४५२ ब, अष्टवसाय १.५३ अ, अष्टात्म १.५४ अ, अनुभाग १.८६ अ, अनुयोगद्वार १.१०२ ब, अंतर १.३ ब, आवाघा १.२४८ ब, आयुबंध १.१६४ अ, उदय १.३८७, गणित २.२२६ ब, गुणस्थान २.२४६

अ, जीवसमास २.३४१ ब, ३.२६६ ब, बध ३.११०, बंध-उदय-सत्त्व के त्रिसंयोगी स्थान १.३६६, मार्गणा ३.२६६ ब, योग ३.३८८ अ, लब्धि ३.४१४ अ, सकलेश विशुद्धि ३.५६८ ब, सत्त्व ४.२८७।

स्थान अल्पबहुत्व—अनुभाग १.१६६, बंध १.१६४ ब, बंध समुत्पत्तिक १.१६५ ब, योग १.१६१ ब, लब्धि १.१६०, सकलेश विशुद्धि १.१६०, स्थितिबंध १.१६४ ब, स्थितिसत्त्व १.१६५ ब, ह्रस्वमुत्पत्तिक १.१६६ अ।

स्थानकवासी—निन्दा २.५८८ ब, श्वेतावर ४.८० ब।

स्थानगत—भग ३.१६७ अ।

स्थान तप—कायक्लेश २.४७ अ।

स्थायी उपादान—उपादान १.४४३ ब।

स्थानलाभ क्रिया—संस्कार ४.१५२ ब।

स्थानांग—४.४५३ ब, श्रुतज्ञान ४.६८ अ।

स्थानांतर गमन—आहारांतराय १.२६ ब।

स्थानार्ह पद्धति—४.४५३ ब।

स्थापना—४.४५३ ब, अनंत १.५५ ब, अतर १.३ ब, उपशम १.४३७ अ, धारणा २.४६१ अ, ध्यान २.५६८ ब, ध्येय २.५०० अ, पूजा ३.८० ब।

स्थापना उपक्रम—उपक्रम १.४१६ ब।

स्थापनाक्षर—अक्षर १.३३ अ।

स्थापना कर्म—कर्म २.२६ अ।

स्थापना कषाय—कषाय २.३५ ब, २.३७ ब।

स्थापना छेदना—छेदना २.३०६ ब।

स्थापना नय—नय २.५२२ ब।

स्थापना निक्षेप—निक्षेप २.५६७ ब।

स्थापना प्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३.११६ ब।

स्थापना प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३.१३२ अ।

स्थापना मंगल—मंगल ३.२४१ अ।

स्थापना सत्य—सत्य ४.२७१ ब।

स्थापनास्तव—भक्ति ३.२०० ब।

स्थापित—४.४५३ ब, आहारदोष १.२६० ब, उद्दिष्टदोष १.४१३ अ।

स्थावर (काय)—४.४५३ ब, अवगाहना १.१७६, जीव २.३३३ ब, जीवस्थान २.३४२-३४३, पर्याप्ति ३.४४ अ, प्राण ३.१५३ अ। प्ररूपणा—बंध ३.१०४, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२६६, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१६६, संख्या ४.६६,

क्षेत्र २.२०१, स्पर्शन ४.४८३, काल २.१०६, अंतर १.१२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५।

स्थावर जीव—स्थावर ४.४५३ ब।

स्थावर दशक—उदय १.३७४ ब।

स्थावर-लोक—स्थावर ४.४५५ अ।

स्थावर-शरीर नामकर्म-प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६। बध ३.६७, बधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भग १.४०४, सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६७।

स्थित—निक्षेप २.६०१ ब, जीव २.३३६ अ।

स्थिति—४.४५५ ब, अनुयोग १.१०२ अ, अतरकरण १.२५ ब, अपकर्षण १.११५ ब, ईर्यापथ १.३५० अ, उत्कर्षण १.३५३ ब, उत्पादादि १.३६० अ, उदय १.३६५ ब, १.३८७, द्वितीय (अन्तरकरण) १.२५ अ-ब, १.२६ अ, धर्माधर्म २.४८८ ब, २.४६०, प्रथम (अतरकरण) १.२५ अ-ब, १.२६ अ, बध (स्थिति) ४.४६०, बधस्थान अल्पबहुत्व १.१६५, सत्त्व (अल्प-बहुत्व) १.१७६ सत्त्व (काल) २.१२०, सत्त्वस्थान अल्पबहुत्व १.१६४ ब, सर्वस्थिति ४.३८० ब, स्थान ४.४५२ ब, स्थिति प्ररूपणा ४.४६०।

स्थिति-अपसरण—क्षय २.१८० अ, काडक २.४२ अ।

स्थितिकरण—४.४७० अ।

स्थितिकल्प—४.४७० ब।

स्थिति-कांडक घात—अतरकरण १.२६ ब, अपकर्षण १.११६ ब, १.११७ अ।

स्थिति-क्षय—उदय १.३६५ ब।

स्थिति-घात—अनुभाग १.११७ ब, अपकर्ष १.११६ ब, १.११७, आयु १.२६१ ब।

स्थिति-तप—कायक्लेश २.४७ अ।

स्थिति-दंड—केवली २.१६७ अ।

स्थिति-निषेक—उदय १.३७०।

स्थितिबंध—अध्यवसाय स्थान १.५३ अ, ४.११६ ब, अंतरकरण १.२६ ब, स्थिति ४.४५६ ब, ४.४५७ ब।

स्थितिबंध अध्यवसाय स्थान अध्यवसाय १.५३ अ, संख्या ४.११६ ब।

स्थितिबंध प्ररूपणा—स्थिति ४.४६० अ।

स्थितिबंध वेदना—अल्पबहुत्व १.१७६।

स्थितिबंध स्थान—अल्पबहुत्व १.१६४ ब, स्थान ४.४५२ ब।

स्थितिबन्धापसरण—अपकर्षण १ ११५ अ, काण्डक २ ४२ अ, क्षय २.१८० अ ।

स्थिति-भोजन—४ ४७० ब, आहार १.२८६ ब ।

स्थिति-विपरिणामना—विपर्यय ३ ५५५ ब ।

स्थिति-व्यक्ति—उत्कर्षण १.३५४ ब ।

स्थिति-शक्ति—उत्कर्षण १ ३५४ ब ।

स्थिति सक्रमण—आयुबध १ १६५ ।

स्थितिसत्त्व—सत्त्व ४ २७६ ब ।

स्थितिसत्त्वस्थान—अल्पबहुत्व १ १६५ ।

स्थिर—४ ४७० ब, आसन २.४६३ अ, चारित्र २ २८४ अ, चित्त १ ४६६ अ, ध्यान २.४६५ ब, यदुवश १.३३७ ।

स्थिर-आसन—ध्याता २ ४६३ अ ।

स्थिरचित्त—उपयोग १.४६६ अ, ध्यान २ ४६५ ब ।

स्थिर-नामकर्म-प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३.६६ अ, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३.१३६, बंध ३.६७, बधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भग १.४०४ । सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६७ ।

स्थिरभाव—सामायिक ४.४१५ ब ।

स्थिरहृदय—कुडलवर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ ब, अंकन ३ ४६७ ।

स्थूणा—४.४७१ अ, औदारिक शरीर १.४७२ अ ।

स्थूल—अनुमान लिंग १ ६८ अ, औदारिक १.४७१ अ, पर्याय ३ ४७ ब, ३ ४८ ब, स्कध ४.४४६ अ ।

स्थूल अब्रह्म—ध्रावक ४ ५० ब ।

स्थूल ऋजूसूत्र नय—नय २ ५३५ अ ।

स्थूल चोरी—अस्तेय १ २१३ ब ।

स्थूल जीव—अहिंसा १ २१७ ब ।

स्थूल परिग्रह—ध्रावक ४ ५० ब ।

स्थूलभद्र—४ ४७१ अ, इतिहास १ ३२८ अ, १.परि०/- २ २, श्वेताबर ४ ७७ अ-ब, ४ ७८ अ ।

स्थूलव्रत—व्रत ३ ६२७ ब ।

स्थूल-सूक्ष्म—स्कध ७ ४४६ अ ।

स्थूल-स्थूल—पर्याय ३ ४७ ब, स्कध ४ ४४६ अ ।

स्थूलाचार्य—४ ४७१ अ, इतिहास १ ३२८ अ, श्वेताबर ४.७७ अ ।

स्थैर्य—द्वौर्व्य १ ३५८ अ ।

स्थौल्य—सूक्ष्म ४ ४३६ अ ।

स्नात—स्नान ४ ४७१ ब ।

स्नातक—४ ४७१ अ, साधु ४ ४०८ ब ।

स्नान—४ ४७१ ब, पूजा ३ ८१ ब ।

स्नायु—औदारिक शरीर १.४४२ अ ।

स्निग्ध—४.४७१ ब, स्कध ४.४४८ अ ।

स्निग्धगुण—ईर्यापथ कर्म १ ३४६ ब ।

स्निग्धत्व—स्कध ४.४४८ अ ।

स्नेह—अतिचार १.४४ अ, वात्सल्य ३ ५३२ अ-ब ।

स्नेहातिचार—अतिचार १.४४ अ ।

स्पदन—दे० परिस्पंदन ।

स्पंदरहित नेत्र—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब ।

स्पर्धक—४ ४७२ अ, उदय १ ३६६ ब, भोग ३ ३८३ ब ।

स्पर्धक करण—कृष्टि २ १४० ब ।

स्पर्धक शलाका—सहनानी २.२१६ अ ।

स्पर्श—४ ४७३ ब, आहारातराय १ २८ अ, ईर्यापथ कर्म १.३४६ अ, सम्यग्दर्शन ४.३५० ब, सर्वस्पर्श ४.३८० ब ।

स्पर्श-अन्तरविधान—अनुयोग १.१०२ अ ।

स्पर्श-कालविधान—अनुयोग १.१०२ अ ।

स्पर्श क्षेत्रविधान—अनुयोग १.१०२ अ ।

स्पर्श गतिविधान—अनुयोग १ १०२ अ ।

स्पर्श द्रव्यविधान—अनुयोग १.१०२ अ ।

स्पर्शन—अनुयोग १ १०२ अ, आहारातराय १.२८ अ, काला-वधि का अल्पबहुत्व १ १६०, क्षेत्र २.१६१ अ, २ १६२ ब, प्रदेश तथा अवगाहना का अल्पबहुत्व १.१५७, प्ररूपणा ४ ४७७, गोहनीय ३.३४२ ब, स्पर्शन ४.४७४ ब ।

स्पर्शन इन्द्रिय—इन्द्रिय १ ३०२ अ ।

स्पर्शन क्रिया—क्रिया २ १७४ ब ।

स्पर्शनानुगम—अनुयोग १.१०३ अ ।

स्पर्शनानुयोगद्वार—स्पर्श ४.४७४ ब ।

स्पर्श नाम कर्मप्रकृति—प्रकृति ३ ८८, २.५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३ १३६, बंध ३ ६७, बधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०४ । सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६६ ।

स्पर्श नाम-विधान—अनुयोग १.१०२ अ ।

स्पर्श नाम विभोषणता—अनुयोग १ १०२ अ ।

स्पर्श-निक्षेप—अनुयोग १.१०२ अ ।

स्पर्श-परिमाण विधान—अनुयोग १ १०२ अ ।

स्पर्श-प्रत्ययविधान—अनुयोग १.१०२ अ ।

स्पर्श-भागाभाग-विधान—अनुयोग १.१०२ अ ।

स्पर्श-भावविधान—अनुयोग १.१०२ अ ।

स्पर्श-सन्निर्घर्षविधान—अनुयोग १.१०२ अ ।

स्पर्श-स्पर्श विधान—अनुयोग १.१०२ अ, स्पर्श ४.४७६ अ ।

स्पर्श-स्वामित्वविधान—अनुयोग १.१०२ अ ।

स्पष्ट — ४.४९५ अ ।

स्पष्टता—विशद ३.५६७ ब ।

स्पृश्य—वर्णव्यवस्था ३.५२५ ब ।

स्पृष्ट—इंद्रिय १.३०३ अ ।

स्पृहा—४.४९५ अ ।

स्फटिक—४.४९५ अ । अनुदिश स्वर्ग का श्रेणीबद्ध—

निर्देश ४.५१६ अ, अंकन ४.५१५, ४.५१७, देव आयु १.२६६ । कारण (कर्मसंयोग का उदाहरण) २.७१ ब । कुडनवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६७ । गजदंत का कूट—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४ ३.४५७ । मानुषांतर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अंकन ३.४६४, रत्नप्रभा की चित्रा पृथिवी ३.३६१ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८, ३.४६९ । सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अंकन ४.५१६ ब, देव आयु १.२६६ ।

स्फटिकप्रभ—४.४९५ अ, कुडनवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६७ ।

स्फुट—राक्षसवश १.३३८ अ ।

स्फुटपद—इतिहास १.३४७ ब ।

स्फोट—४.४९५ अ, कर्म ४.४२१ ब ।

स्फोटित—४.४९५ ब, गणित २.२२२ ब ।

स्मरण—आहारातराय १.२६ अ, मतिज्ञान ३.२५४ ब ।

स्मरणाभास—४.४९५ ब ।

स्मितगिरि—मनुष्यलोक ३.२७५ ब ।

स्मितयश—इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ ।

स्मृति—४.४९५ ब, आहारातराय १.२६ अ, प्रत्यभिज्ञान ३.२५४ अ, मतिज्ञान ३.२५४ अ ।

स्मृत्यनुपत्त्यानानि—४.४९५ ब ।

स्मृत्यंतराधान—४.४९५ ब ।

स्मृत्त—४.४९६ अ ।

स्यात्—४.४९६ अ, सप्तभंगी ४.३१५ ब, ४.३१७ अ, स्याद्वाद ४.४९७ अ ।

स्यात्कार—स्यात् ४.४९६ ब, सप्तभंगी ४.३१५ ब,

स्याद्वाद ४.५०० अ, ४.५०१ अ ।

स्याच्चेतन—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्याच्छुद्ध—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यात्पद—नय २.५१७ ब ।

स्यात्परम—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादचेनन—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादनित्यत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादनुपचरित—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादनेकत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादनेकप्रदेशत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादपरम—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादभव्यत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादभेदत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादमूर्त—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादवक्तव्य—सप्तभंगी ४.३१४ ब ।

स्यादशुद्धत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादस्ति—सप्तभंगी ४.३१४ ब, स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादस्ति अवक्तव्य—सप्तभंगी ४.३१४ ब ।

स्यादस्ति नास्ति—सप्तभंगी ४.३१४ ब ।

स्यादस्ति नास्ति अवक्तव्य—सप्तभंगी ४.३१४ ब ।

स्यादस्त्यवक्तव्य—सप्तभंगी ४.३१४ ब ।

स्यादुपचरित—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादेकत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादेकप्रदेशत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादभव्यत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यादभेदत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्याद्वाद—४.४९६ ब, श्रुतज्ञान ४.६३ ब, सप्तभंगी ४.३१३ अ सापेक्ष ४.४११ अ ।

स्याद्वादभूषण—४.५०२ ब, अभयचंद्र १.१२७ अ, इतिहास १.३४५ अ ।

स्याद्वादमंजरी—४.५०२ ब, इतिहास १.३४५ अ ।

स्याद्वादमजूषा—४.५०२ ब, इतिहास १.३४७ ब ।

स्याद्वादरत्नाकर—इतिहास १.३४४ अ ।

स्याद्वादवदन विदारण—४.५०२ ब, इतिहास १.३४६ ब ।

स्याद्वादसिद्धि—४.५०३ अ इतिहास १.३४४ अ ।

स्याद्वादोपनिषद्—४.५०३ अ, इतिहास १.३४२ ब ।

स्यान्नास्ति—सप्तभंगी ४.३१४ ब, स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यान्नास्त्यवक्तव्य—सप्तभंगी ४.३१४ ब ।

स्यान्नित्यत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्यान्मूर्तत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब ।

स्रष्टा—कर्म २.२८ अ ।

स्व—अनेकांत (सापेक्ष धर्म) १ १०६ अ ।

स्व-अनुकपा — अनुकपा १ ६६ अ ।

स्व-अहिंसा — अहिंसा १ २१६ ब ।

स्व-आकार—सप्तभगी ४ ३२२ अ ।

स्व-उपकार—उपकार १ ४१५ अ-व ।

स्वकाल —काल २ ८० अ, चतुष्टय २ २७८ अ, सप्तभगी ४ ३२३ अ ।

स्वकाल निर्जरा — अनुप्रेक्षा १ ७५ ब ।

स्वकीय काल—सप्तभगी ४ ३१६ अ ।

स्व-क्षेत्र—क्षेत्र २ १६१ ब, ३ १६३ अ, चतुष्टय २ २७८ अ, ससार ४ १४७ अ-ब, सप्तभगी ४ ३१६ अ, ४ ३२१ अ ।

स्वगणानुपस्थापनप्रायश्चित्त—३.३५ ब ।

स्वगुरु-स्थापनावाप्ति क्रिया—संस्कार ४ १५१ ब ।

स्वग्राम-अभिघट दोष—आहार १.२६० ब, उद्दिष्ट १.४१३ ।

स्वग्राम दोष—आहार १ २६० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ ।

स्वचतुष्टय—चतुष्टय २ २७७ ब, सप्तभगी ४.३१७ ब, ४ ३१६ ब ।

स्वचारित्र—चारित्र २.२८२ ब, २ २८३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३८ अ ।

स्वच्छत्व शक्ति—४ ५०३ ब ।

स्वच्छद—४.५०३ अ, अवसन्न १ २८१ ब, साधु ४ ४०८ अ, ४.४०६ ब ।

स्वच्छद वृत्ति—अपवादमार्ग १ १२३ ब ।

स्वच्छंद श्रोता—उद्देश १ ४२५ ब ।

स्वच्छंद साधु ४.५०३ अ ।

स्वच्छदाचार—आहार १ २८८ ब ।

स्वच्छाहार—४.५०३ ब ।

स्वजाति—जाति २.३२६ ब ।

स्वजाति आगेप—उपचार ३ ४१६ ब ।

स्वजाति-विजाति-उपचार—उपचार १.४२० अ ।

स्वतसिद्ध—मत् ४.१७६ ब ।

स्वतत्त्व—तत्त्व २ ३५३ अ ।

स्वतंत्र ४.५०३ ब, कारण-कार्य २.६० अ, २ ७३ अ, गुण २.२४२ अ, द्रव्य २.४६० ब, वस्तु (कारणकार्य) २ ७३ अ, स्वच्छद ४ ५०३ अ ।

स्वतंत्र लिंग—चक्रवर्ती ४.१० ब ।

स्वतंत्रवाद—एकांत १ ४६५ ब ।

स्वतंत्र विवक्षा—स्थादाद ४.४६८ अ ।

स्वदार सतोष—ब्रह्मचर्य ३ १८६ ब ।

स्वदेश अभिघट दोष—आहार १.२६० ब ।

स्वदेश दोष—आहार १ २६० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ ।

स्वद्रव्य—४.५०३ ब, चतुष्टय २.२७८ अ, द्रव्य २.४५३ अ, सप्तभगी ४ ३२१ ब ।

स्वद्रव्य रति—उपदेश १.४२४ अ ।

स्वद्रव्यादि-ग्राहक नय—नय २ ५४५ ब ।

स्वधर्मव्यापकत्व शक्ति—४ ५०३ ब ।

स्वनिदा—निदा २ ५८८ अ ।

स्व-निमित्त—२ ६११ ब ।

स्वनिमित्तक उत्पाद आकाश १ २२१ ब, उत्पाद १.३५७ ब ।

स्वपक्ष-साधक हेतु—हेतु ४ ५४२ अ ।

स्वपर-भवभासक—दर्शनोपयोग २ ४०८ ब ।

स्वपर-चतुष्टय—चतुष्टय २ २७८ अ ।

स्वपर-चारित्र—चारित्र २ २८० ब ।

स्वपर तत्त्व—मोक्षमार्ग ३ ३३६ ब ।

स्वपर प्रकाशक—केवलज्ञान २ १५२ ब, ज्ञान २ २५८ ब, २ २५६, दर्शन उपयोग २ ४०८ अ ।

स्वपर भेद-विज्ञान—ज्ञान (निश्चय) २ २६७ ब ।

स्वपर-विवेक—सम्यग्दर्शन ४ ३५८ ब, ४ ३५६ अ ।

स्वपर-स्थान—अल्पबहुत्व १ १५४ ब, १ १५५ अ, १ १७५, भागाभाग ४ ११५ ।

स्व-पर्याय—पर्याय ३ ४६ ब ।

स्वपाक—विद्या ३ ५४४ अ ।

स्वप्न—४ ५०४ अ, अतिचार १.४४ ब, निद्रा २ ६०८ ब ।

स्वप्न-निमित्तज्ञान—ऋद्धि १ ४४८, निमित्तज्ञान २ ६१३ अ ।

स्वप्नसत्य—स्वप्न ४ ५०४ अ ।

स्वप्नातिचार—अतिचार १.४४ ब ।

स्व प्रकाशक—दर्शनोपयोग २ ४०८ अ ।

स्वप्रतिभास—दर्शनोपयोग २ ४०८ ब ।

स्वप्रत्यय उत्पाद—आकाश १.२२१ ब, उत्पाद १ ३५७ ब ।

स्वभाव—४ ५०५ ब, अनेकांत (सापेक्ष धर्म) १.१०६ अ, कहुणा २.१५ अ, कारण २.५४ ब, २.६० अ, काल २.८३ अ, मति २.२३५ ब, गुण २.२४० अ, चतुष्टय २.२७८ अ, चारित्र २ २८२ ब, २.२८३ ब, द्रव्य २.४६० ब, परतत्रवाद ३.१२ अ, परिणमन (कारण) २.६० अ, पर्याय ३.४६ अ, पुद्गल ३.६७ अ, प्रकृति बध ३.८७ ब, भाव ३.२१८ ब, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब, विभाव ३.५५७ ब, ३.५५६ अ, ससार ४.१४७ अ, सत् ४.१५६ ब, सप्तभगी ४.३२२ ब, सापेक्ष धर्म (अनेकांत) १.१०६ अ, सापेक्षधर्म (सप्तभगी) ४.३२२ ब, स्वतन्त्रता (वरण) २.६० अ ।

स्वभाव अनित्य नय—नय २.५५२ अ ।

स्वभाव क्रिया क्रिया २ १७३ ब ।

स्वभाव गति—गति (ऊर्ध्वगति) २.२३५ अ, गति २ २३५ अ, २ २३६ अ, जीव पुद्गल २ २३५ ब ।

स्वभावगुणपर्याय — पर्याय ३ ४६ ब ।

स्वभाव-गुणव्यजन पर्याय—पर्याय ३ ५० अ ।

स्वभावज्ञान—उपयोग १.४३० अ ।

स्वभावदर्शन—उपयोग १ ४३० अ ।

स्वभावद्रव्यपर्याय — पर्याय ३.४६ अ ।

स्वभावद्रव्यव्यजन पर्याय—पर्याय ३ ४६ अ ।

स्वभाव नय—नय २ ५२३ ब ।

स्वभाव निरपेक्ष — मिथ्यादर्शन ३ ३०१ अ ।

स्वभाव-पुद्गल — पुद्गल ३ ६७ अ ।

स्वभाववाद—४ ५०७ ब, एकात १ ४६५ अ-ब । नियति वाद २ ६१६ अ, पुरुषार्थवाद (नियति) २ ६१६ अ ।

स्वभावविरुद्धानुपलब्धि हेतु—४ ५३८ ।

स्वभाव-सिद्ध—सत् ४ १५६ ब ।

स्वभाव-स्थिति—मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब ।

स्वभावाराधना—उपयोग १ ४३० ब, धर्म २ ४६७ अ ।

स्वमुख-उदय — उदय १ ३६६ अ, १.३६७ अ, १ ३७१ ब ।

स्वयंप्रभ — ४.५०७ ब, ग्रह २ २७४ अ, तीर्थंकर २ ३७७, २ ३६२, तीर्थंकर सभवनार्थ व अभिनन्दन २ ३७८, रुचक वर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ ब, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६८, ३ ४६९, सुमेरु ४ ४३७ अ, सोम लोकपाल का यान ४ ५१३ अ ।

स्वयंप्रभ पर्वत—जीवो की अवगाहना १ १७८ अ ।

स्वयंप्रभा—४ ५०७ ब, कुलकर ४.२३ ।

स्वयंबुद्ध — ४.५०७ ब, ४.५०८ अ ।

स्वयंभू—४.५०८ अ, गणधर २ २१३ अ, जीव २ ३३३ ब, तीर्थंकर २ ३७७, तीर्थंकर कुथुनाथ व पार्श्वनाथ २.३८७, तीर्थंकर वासुपूज्य तथा विमल २ ३६१, नारायण ४ १८ अ, योगदर्शन ३.३८४ अ ।

स्वयंभू—इतिहास १ ३२६ ब, १.३४१ ब ।

स्वयंभूछंद—४ ५०८ अ, इतिहास १.३४१ ब ।

स्वयंभू-मुखोत्पन्न—ब्राह्मण ३ १६५ अ ।

स्वयंभूरमण—४ ५०८ अ, द्वीप सागर पर्वत—४.५०८ अ, निर्देश ३ ४६६ ब, नामनिर्देश ३.४७० अ, अवगाहना १.१७६, आयुबंध १.२६१ ब, कर्मभूमि (भूमि) ३ २३५ ब, काल विभाग २.६३, तिर्यंच २ ३७०, द्वीप २.४६२ ब, विस्तार ३ ५०३, अंकन ३ ४४३, उत्तोतिष चक्र २.३४८ ब, जल का रस ३.४७० अ, अधिपति देव ३.६१४ ।

स्वयंभूस्तोत्र—४ ५०८ अ, स्तोत्र ४.४४६ अ, इतिहास १ ३४० ब ।

स्वयंवर—तीर्थंकर अभिनन्दनार्थ २ ३८० ।

स्वयंवर विधि—अकंपन १ ३० ब ।

स्वयं शोधक—आतचार १ ४४ ब ।

स्वयं हिंसन—हिंसा ४ ५३४ ब ।

स्वर—४ ५०८ ब, अक्षर १.३३ अ ।

स्वरकीर्ति—नदिसंघ भट्टारक १.३२३ ब ।

स्वरक्षा—अहिंसा १ २१६ ब ।

स्वरनामकर्म प्रकृति—स्वर ४ ५०८ ब । प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ६५, प्रदेश ३.१३६ । बंध ३ ६७, बंधस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदय की विशेषता १.३७४ अ, उदयस्थान १ ३६०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंभग १ ४०४ । सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १७१, १ १७६ ।

स्वरनिमित्त ज्ञान—ऋद्धि १.४४८, निमित्तज्ञान २.६१२ ब ।

स्वरसेना — व्यंतरेद्र वल्लभिका ३.६११ ब ।

स्वराज्य क्रिया—संस्कार ४.१५२ अ ।

स्वरूप—४ ५०८ ब, चारित्र २.२८३ ब, सामायिक ४.४१७ अ ।

स्वरूप (देव)—४ ५०८ ब, भूत जातीय व्यतर देव ३ २३४ अ । इन्द्र—निर्देश ३.६११ अ, सख्या ३ ६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, आयु १ २६४ ब । यक्ष ३.३६६ अ ।

स्वरूप चतुष्टय — सप्तभंगी ४ ३२१ ब ।

स्वरूप फल—उदय १.३६६ ब ।

स्वरूपलय — मोक्षमार्ग ३.३३५ ब ।

स्वरूप विपर्यास—विपर्याय ३.५५६ अ, सम्यग्ज्ञान २ २६४ ब ।

स्वरूप संबोधन—४.५०६ अ, अकलक भट्ट १ ३१ अ, इतिहास १.३४१ ब, १.३४७ ब ।

स्वरूप संबेदन—दर्शनोपयोग २.४१२ अ ।

स्वरूपाचरण चारित्र--४.५०६ अ, अनुभव १.८५ अ । चारित्र २.२८५ अ, चारित्र (संयमाचरण) २.२८० ब ।

स्वरूपाभाव — अभाव १.१२८ अ ।

स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास—हेत्वाभास १.२१० अ ।

स्वरूपास्तित्व—अस्तित्व १.२१२ ब ।

स्वर्ग—४५०६ अ, वैदिकाभिमत स्वर्लोक ३.४३३।

स्वर्गवासी देव—निर्देश २४४५ ब, ४५१० ब, अवगाहना ११८० ब, अवधिज्ञान ११६८ ब, आयु १२६८, आयु बंध के योग्य परिणाम १२५८ ब, कल्याणक २.३२ ब, जन्म २३१७ अ-ब, त्रायस्त्रिंश २.३६६ ब, सम्यक्त्वादि गुण २४४८। इन्द्र—निर्देश ४५१० ब, परिवार ४५१२, शक्ति आदि ४.५११ अ-ब, दक्षिण उत्तर विभाग ४.५११ अ, देवियाँ ४५१३। प्ररूपणा—बध ३.१०२, बधस्थान ३११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १३६२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा-स्थान १.४१२, सत्त्व ४२८२, सत्त्वस्थान ४२६८, ४.३०५, त्रिसयोगीभग १.४०६ ब। सत् ४.१८६, सख्या ४६३ ब, ४६७, क्षेत्र २१६१, स्पर्शन ४४८१, काल २१०४, अन्तर १.१०, भाव ३२२० अ, अल्पबहुत्व ११४५।

स्वर्गसिद्ध—अल्पबहुत्व ११४३।

स्वर्गोत्कृष्ट—राक्षस वश १३३८ अ।

स्वर्ण—४.५२२ अ।

स्वर्णकमल—अर्हतातिशय १.१३७ ब।

स्वर्णकूला (कुंड)—४५२२ अ, स्वर्णकूला नदी का द्वार—निर्देश ३४५५ अ, विस्तार ३४६०, अकन ३४४७। इसी कुंड में स्थित द्वीप—निर्देश ३४५६ अ, विस्तार ३४८४, अकन ३४४७, वर्ण ३४७७।

स्वर्णकूला (कूट)—४५२२ अ, स्वर्णकूला कुंड में स्थित—निर्देश ३४५६ अ, विस्तार ३.४८४, अकन ३४४७, वर्ण ३४७७। शिखरी पर्वत का—निर्देश ३४७२ ब, विस्तार ३४८३, ३४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४।

स्वर्णकूला (देवी)—स्वर्णकूला कुंड की—३.४५५ अ, शिखरी पर्वत के कूट की—निर्देश ३४७२ ब, अकन ३४४४।

स्वर्णकूला (नदी)—४५२२ अ, हैरण्यवत क्षेत्र की महा-नदी—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३४८६-४६०, अकन ३४४४, ३४६४ के सामने (चित्र सं० ३७) जल का वर्ण ३.४७८।

स्वर्णनाभ—४.५२२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

स्वर्णभद्र—४५२२ अ।

स्वर्णमध्य—४.५२२ अ, सुमेरु ४४३७ अ।

स्वर्णमयी—सुमेरु की परिधि ३.४४६ ब।

स्वर्णरेखा—४.५२२ अ।

स्वर्णवती—४.५२२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

स्ववचनबाधित—बाधित ३१८२ ब।

स्ववश—४५२२ अ, अनुभव १८३ ब।

स्ववात्सल्य—उपकार १४१५ ब।

स्वपर विभाग—संयग्दर्शन ४३५६ ब।

स्ववृत्ति—एकाग्रचित्तानिरोध १४६६ अ।

स्वसंयोगी—भंग ३.१६७ अ।

स्वसंवेदन—अनुभव १८१-८७, अनुभव (केवलज्ञान) १.८३ अ, दर्शन (संप्रदाय) २.४०६ ब, विकल्प ३५३८ अ, शुक्लध्यान ४३४ ब, सम्यग्दर्शन ४३५१ ब, ४.३५२ अ, सुख ४.४३१ ब।

स्वसंवेदन ज्ञान—उपयोग १४३४ ब, ज्ञान (निश्चय) २.२६२ ब, विकल्प (निर्विकल्प) ३५३८ अ, प्रत्या-ख्यान ३१३२ ब, मोक्षमार्ग ३३३५ ब, सम्यग्दृष्टि ४३७६ ब।

स्वसंवेद्य सुख—सुख ४.४३१ ब, ४.४३३ ब।

स्वसमय—४.५२२ अ, चारित्र २२८२ ब, समय ४३२८ अ।

स्वसमय-उपक्रम—उपक्रम १.४१६ ब।

स्वसमय-प्रवृत्ति—चारित्र २२८३ ब।

स्वसमय-वक्तव्यता—वक्तव्यता ३४६६ अ।

स्वसहाय—सत् ४१५६ ब।

स्वस्तिक—४.५२२ अ। कुंडलवर पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३४६७। गजदंत का कूट तथा देव—निर्देश ३४७३ अ, विस्तार ३४८३, ३४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४, ३४५७। तीर्थंकर शीतलनाथ २.३७६। देवकुरु का दिग्गजेंद्र—निर्देश ३४७१ ब, विस्तार ३४८३, ३४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४। रुचक-वर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ-ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३४६८।

स्वस्तिमति—४.५२२ अ।

स्वस्त्री—स्त्री ४.४५० ब।

स्वस्थ—यदुवंश १३३६, स्वास्थ्य ४.५२६ अ।

स्वस्थान-अप्रमत्त—उपशम १.४३६ ब।

स्वस्थान-अल्पबहुत्व—अल्पबहुत्व १.१४३-१७६।

स्वस्थान उद्देलना—सत्त्व ४.२८१.२८२।

स्वस्थान गुणकर—कृष्टि २.१४० ब।

स्वस्थान-गोपुच्छा—गोपुच्छा २२५४ अ।

स्वस्थान भागाभाग—संख्या ४११० अ।

स्वस्थान संक्रमण—संक्रमण ४८४ अ।

स्वस्थान संयत—संयत ४.१३० अ।

स्वस्थान सत्त्व—सत्त्व ४ २७५ अ ।

स्वस्थान-सन्निकर्ष—सन्निकर्ष ४ ३१२ अ ।

स्वस्थान स्वस्थान—क्षेत्र २ १६७-२०७ ।

स्वस्थान-स्वस्थान-अवस्थान—क्षेत्र २ १६२ अ ।

स्वहस्त क्रिया—क्रिया २ १७४ ब ।

स्वहिता—हिता ४ ५३२ ब ।

स्वहित—हित ४ ५३८ अ ।

स्वाति—४ ५२२ अ, तीर्थकर २.३८१, नक्षत्र २.५०४ ब, नाभिगिरि का देव ३ ४७१ अ । मानुषोत्तर पर्वत का देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अकन ३ ४६४, सस्थान ४.१५३ ब ।

स्वात्मरक्षा—अहिता १ २१६ ब ।

स्वात्मा—चारित्र २ २८४ अ । सप्तभगी ४.३२१ ब ।

स्वाद्य—४ ५२२ अ, आहार १ २८५ अ ।

स्वाधीन—सुख ४.४३२ ब, ४.४३३ अ, स्वाध्याय ४ ५२४ अ ।

स्वाधीन सुख—सुख ४.४३२ ब, ४.४३३ अ ।

स्वाध्याय—४.५२२ ब, कृतिकर्म २ १३७ ब, धर्मध्यान २ ४७८ अ, श्रावक (कायवलेष) २.४८ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६२ ब ।

स्वानुभव—अनुभव १ ८१-८६, सम्यग्दर्शन ४.३५३ ब ।

स्वानुभव दर्पण—४ ५२६ ब ।

स्वानुभूति—सम्यग्दर्शन ४ ३५३ अ ।

स्वानुभूत्यावरण—अनुभव १.८४ ब ।

स्वाभाविक आनंद—मोक्षमार्ग ३.३३६ अ, सुख ४.४३१ ब ।

स्वाभाविक क्रिया—विभाव ३ ५५७ ब ।

स्वाभाविक दुःख—२.४३४ ब ।

स्वाभाविक विमान—विमान ३ ५५३ अ ।

स्वाभाविक स्वभाव—स्वभाव ४ ५०६ ब ।

स्वाभाविकी शक्ति—विभाव ३ ५५८ अ ।

स्वामित्व—४ ५२६ ब, अनुयोग १.१०२ अ, अर्थविग्रह १.१८३ ब, भावपचक ३ २१६ ब, योगस्थान अल्पबहुत्व १ १६२ अ, व्यंजनावग्रह १.१८३ ब ।

स्वामीकुमार—कुमार २ १२६ ब ।

स्वार्थ—४.५२६ अ ।

स्वार्थप्रमाण—प्रमाण ३ १४१ अ-ब ।

स्वार्थाधिगम—अधिगम १.५० ब ।

स्वार्थानुमान—अनुमान १.६७ अ, १.६८ ब ।

स्वार्थी—उपकार १.४१६ अ, ग्रह २.२७४ अ ।

स्वास्तिक—४ ५२६ अ ।

स्वास्थ्य—४ ५२६ अ, अनुभव १.८१ ब, उपयोग १ ४३१ अ ।

स्वाहा—४ ५२६ ब ।

स्वेच्छा—साधु ४ ४०७ ब ।

स्वेच्छाचारी—साधु ४ ४०६ ब स्वच्छद साधु ४.५०३ अ ।

स्वेदज जीव २ ३३४ अ ।

स्वेदराहित्य अर्हतातिशय १.१३७ ब ।

स्वेष्टकृत—अज्ञानवाद १ ३८ ब ।

स्वोदयबंधी प्रकृति—उदय १ ३६८ अ, सयोगी प्ररूपणा १ ३६६ ।

स्वोपकार—उपकार १ ४१५ अ-ब ।

ह

हस—४ ५२६ ब, तीर्थकर सीमधर भगवान् २.३६२, ब्रह्मेन्द्र का यान ४.५११ ब, शुक्लध्यान ४ ३३ अ ।

हंसगर्भ—४.५२६ ब, विद्याधरनगरी ३ ५४५ ब, ३ ५४६ अ ।

हंसद्वीप—राक्षसवंश १ ३३८ अ ।

हंससंप्रदाय—वैशेषिक दर्शन ३.६०६ अ ।

हंससम श्रोता—श्रोता ४ ७४ ब ।

हंस साधु—वेदात ३.५६५ ब ।

हठबाब—दे० एकांत ।

हत—४.५२६ ब, गणित २.२२२ ब, २.२२३ अ ।

हतसमुत्पत्तिक स्थान—अनुभाग १ ६० अ, अल्पबहुत्व (अनुभाग सत्त्व) १.१६६ अ, अल्पबहुत्व (मोहनीय) १.१७५ ।

हतहत-समुत्पत्तिक स्थान—अनुभाग १ ६० अ ।

हनन—४ ५२६ ब, गणित २.२२२ ब ।

हनुमंतचारित्र—४.५२६ ब, इतिहास १ ३४७ अ ।

हनुमान्—४.५२६ ब, अंजना १ २ अ । मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव ३ ४७५, अकन ३.४६४ ।

हनुरुह द्वीप—४.५२६ ब ।

हयग्रीव—शलाकापुरुष ४ २६ अ ।

हय राय—मंगल ३.२४४ अ ।

हर—गणित २.२२३ ब, शलाकापुरुष ४.२६ अ ।

हरण—४ ५२६ ब ।

हरणवती—मनुष्यलोक ३.२७६ अ ।

हरि—४.५२६ ब, इतिहास (पौराणिक राज्यवश) १.३३५ अ, रघुवश १ ३३८ अ, हरिवश १ ३३६ ब, १ ३४० अ ।

हरि (कुड व कूट)—हरित नदी का कुड - निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४६०, अकन ३ ४४७ । इस कुड का द्वीप—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३.४८४, अकन ३ ४४७, वर्ण ३ ४७७ । इस कुड में स्थित कूट—निर्देश ३ ४५६ अ, विस्तार ३ ४८४, अकन ३ ४४७, वर्ण ३ ४७७ । महाहिमवान् तथा निषध पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३ ४४४ । गजदंतो के कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४, ३ ४५७ ।

हरि (क्षेत्र) — ४.५३० अ, विशेष दे० हरिवर्ष ।

हरिकंठ—शलाकापुरुष ४ २६ अ ।

हरिकांत—४.५२६ ब, इतिहास (पौराणिक राज्यवश) १ ३३५ अ । विद्युत्कुमारेन्द्र—निर्देश ३ २०८ अ, आयु १ २६५, परिवार ३ २०६ अ, निवास ३ २०६ ब । हरिकाता नदी का कुड तथा देवी—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३.४६०, अकन ३ ४४७ । महाहिमवान् पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३.४८६, अकन ३ ४४४ ।

हरिकाता—४ ५३० अ । हरिक्षेत्र की महानदी—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३ ४८६, ३ ४६०, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, जल का वर्ण ३ ४७८ । इस नदी का कुड—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४६०, अकन ३ ४४७ । इस कुड में स्थित द्वीप—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४८४, अकन ३.४४७, वर्ण ३ ४७७ । इस कुंड में स्थित कूट—निर्देश ३ ४५५ ब, विस्तार ३ ४८४, अकन ३ ४४७, वर्ण ३ ४७७ ।

हरिकेतु - चक्रवर्ती ४.११ ब ।

हरिगिरि—हरिवश १ ३४० अ ।

हरिग्रीव—राक्षस वश १ ३३८ अ ।

हरिघोष - कुरुवश १ ३३५ ब, १.३३६ अ ।

हरिचंद्र—४.५३० अ, शलाकापुरुष ४.२५ ब, विद्याधर वंश १ ३३६ अ ।

हरिचंद्र कवि—इतिहास—प्रथम १.३३० अ, १.३४२ अ, द्वितीय १ ३३२ ब, १ ३४५ ब ।

हरिण—तीर्थंकर शातिनाथ २.३७६, तीर्थंकर बाहु २ ३६२, स्वप्न ४ ५०५ अ ।

हरिजय—विद्याधरवंश १ ३३६ अ ।

हरित—४.५३० अ । हरिक्षेत्र की महानदी—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४८६, ३ ४६०, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, जल का वर्ण ३.४७७ ।

इस नदी का कुड - निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४६०, अकन ३ ४४७ । इस कुड का द्वीप—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४८४, अकन ३ ४४७, वर्ण ३ ४७७ । इस कुंड में स्थित कूट—निर्देश ३ ४५५ ब, विस्तार ३ ४८४, अकन ३ ४४७, वर्ण ३ ४७७ ।

हरित (स्वर्ग)—सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अंकन ४ ५१६ ब, देव आयु १ २६७ ।

हरितप्रभ—लोकपाल ३ ४६१ ब ।

हरिताल—४ ५३० अ ।

हरितालमयी—सुमेरु की परिधि ३ ४४६ अ-ब ।

हरितालवर—द्वीप सागर—निर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अकन ३.४४३, जल का रस ३ ४७० अ, ज्योतिष चक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३ ६१४ ।

हरिदेव (कवि)—४ ६३० अ, इतिहास १ ३३२ ब, १ ३४५ ब ।

हरिद्र—सुमेरु के वन में लोकपाल का भवन—निर्देश अकन ३ ४५० ब, अकन ३ ४५० ब ।

हरिद्वती—४ ५३० अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

हरिध्वज—कुरुवश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ ।

हरिनंदि—नदिसघ के भट्टारक १ ३२३ ब ।

हरिपुर - प्रतिनारायण ४ २० ब ।

हरिभद्र (याकिनीसूनु) - ४ ५३० अ, इतिहास १.३२६ ब, १ ३४१ ब ।

हरिभद्र सूरि—४.५३० अ, इतिहास १.३२६ अ, १.३३१ ब, १ ३४१ अ ।

हरिमधु—४ ५३० अ, एकान्त १ ४६५ ब, क्रियावाद १ २७५ ब ।

हरिसम शुक्ल—वैष्णव दर्शन ३ ६०६ ब ।

हरिवंश—४ ५३० अ, इतिहास—पौराणिक राज्यवंश १ ३३५ अ, यदुवश १ ३३६, १ ३३६ ब ।

हरिवंश गोस्वामी—वैष्णवदर्शन ३.६०६ ब ।

हरिवंश पुराण—४ ५३० ब । इतिहास—प्रथम १.२२६ ब, १.३४१ ब । द्वितीय १ ३३३ अ, १.३४३ ब । तृतीय १.३३२ अ । चतुर्थ १ ३४५ ब । पंचम १.३४५ ब । षष्ठ १.३४६ अ । सप्तम १.३३३ अ, १.३४६ ब । हिन्दी अनुवाद १.३३३ ब । अष्टम १ ३३४ ब ।

हरि वर्मा—४.५३० ब, तीर्थंकर मुनिमुक्त २ ३७८ ।

हरिवर्ष—४ ५३० ब, महाहिमवान् तथा निषध पर्वत का

कूट तथा देव—निर्देश ३४७२ अ, विस्तार ३४८३, ३४८५, ३४८६, अंकन ३४४४। महा क्षेत्र—निर्देश ३४४६ अ, विस्तार ३४७६, ३४८०, ३४८१, अंकन ३४४४, ३४६४ के सामने, भोगभूमि ३२३५ ब, कालविभाग २६२ ब, २६३, अवगाहना ११८०, आयु (तियंच) १२६३, आयु (मनुष्य) १२६४। वातु-द्वीपिक भूगोल ३४३७ ब, वैदिकाभिमत ३४३१ ब।

हरिवाहन—अच्युत १४१ अ।

हरिविजय—निषध पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३४७२ अ, विस्तार ३४८३, अंकन ३४४४।

हरि व्यासी—वैष्णव दर्शन ३६०६ अ।

हरिश्मथु—४.५३० अ, एकात १४६५ ब, क्रियावाद २.१७५ ब। विद्याधर वश १३३६ अ।

हरिषेण—४.५३० ब, चक्रवर्ती ४१० अ, तीर्थकर २.३६१। असुरेन्द्र—निर्देश ३.२०८ अ, परिवार ३.२०६ अ, अवस्थान ३.२०६ ब, आयु १२६५। हरिवंश १३४० अ।

हरिषेण (आचार्य)—इतिहास—प्रथम १.३३० अ, १.३४२ अ। द्वितीय १३३० ब, १३४३ अ।

हरिषेणा—तीर्थकर शांतिनाथ २.३८८।

हरिसह—गजदत का कूट तथा देव—निर्देश ३४७३ अ, विस्तार ३४८३, अंकन ३४४४, ३४५७।

हरे फल-फूल—पूजा ३७६ ब।

हर्ष—शलाकापुरुष ४.२६ अ।

हर्षवर्धन—४.५३० ब।

हर्षसेन—काष्ठा संघ भट्टारक १३२७ अ।

हल—चक्रवर्ती ४१३ अ, करणत्रिक २.६ अ।

हलभूत—गणधर २२१२ ब।

हल्दी—भक्ष्याभक्ष्य ३२०४ अ।

हल्दी का दाग—लोभ २३८ अ।

हलाहल—अनुभाग १६० ब।

हस्त—४.५३० ब, क्षेत्र का प्रमाण २२१५ अ, तीर्थकर २३८३, नक्षत्र २.५०४ ब।

हस्तकर्म—४.५३० ब, क्रिया २१७४ ब।

हस्त प्रहेलित—४.५३० ब, काल का प्रमाण २२१६ ब, २.२१७ अ।

हस्ति—एकातवाद का उदाहरण १४६३ ब, तीर्थकर मुनिसुव्रत २३८२, सौधमेद्र तथा एगानेद्र का यान ४५११ ब, स्वप्न ४५०४ अ।

हस्तिनापुर—४.५३० ब, तीर्थकर अरनाथ कुंधुनाथ २३७६, तीर्थकर नेमिनाथ २३७८, नारायण ४-१८

ब, प्रतिनारायण ४.२० ब, बलदेव ४१६ ब, मनुष्य-लोक ३.२७६ अ।

हस्तिनायक—४.५३० ब, विद्याधर नगरी ३५४५ ब।

हस्तिपानी—४.५२० ब, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

हस्तिमल—४.५३० ब, इतिहास १.३३२ अ, १३४४ अ।

हस्तिमुडासन तप—कायक्लेश २४७ ब।

हाथ—४.५३० ब, क्षेत्र का प्रमाण (हस्त) २२१५ अ।

हाथी—एकातवाद का उदाहरण १४६३ ब, तीर्थकर मुनिसुव्रत २३८२, सौधमेद्र तथा एगानेद्र का यान ४५११ ब, स्वप्न ४५०४ अ।

हानि—४.५३१ अ, सल्लेखना ४३६२ ब।

हार—४.५३१ अ, गणित २२२३ अ-ब, पर्याय ३.४५ ब।

हारजीत—वाद ३.५३३ ब।

हारित—४.५३१ अ, एकात १.४६५ ब, क्रियावाद २.१७५ ब।

हारिद्र—४.५३१ अ, भक्ष्याभक्ष्य (हल्दी) ३.२०४ अ। सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४५१६, विस्तार ४५१६, अंकन ४५१६ ब, देव आयु १.२६७।

हारी—४.५३१ अ, विद्या ३५४४ अ।

हारीत—(हारित) ४.५३१ अ, एकात १४६५ ब, क्रिया-वादी २१७५ ब।

हारीति—साख्यदर्शन ४३६८ ब।

हार्य—४.५३१ अ, गणित २२२३ अ।

हाव—४.५३१ अ, विभ्रम विलास ३५६२ ब।

हास्तिन—४.५३१ अ, विद्याधर नगरी ३५४५ ब।

हास्तिविजय—४.५३१ अ, विद्याधर नगरी ३५४५ ब।

हास्य—४.५३१ अ, कषाय २३५ ब, २३६ अ, हिंसा ४५३४ ब।

हास्य द्विक्—उदय १३७४ ब।

हास्य वचन—समिति ४३४० ब।

हास्य वेदनीय कर्मप्रकृति—मोक्षनीय ३३४४ ब, हास्य ४.५३१ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३८८, ३३४४ ब, स्थिति ४४६१, अनुभाग १.६४, प्रदेग ३१३६। बंध ३.६३, ३.६४, ३.६६ ब, ३.६७, बंध की कालावधि का अल्पबहुत्व ११६१, बंधस्थान ३१०६, उदय १.३७५, उदयस्थान १३८६, उदीरणा १४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४३७८, सत्त्वस्थान ४२६६, स्थिति सत्त्वस्थानो का अल्पबहुत्व १.१६५ ब, त्रिसयोगीभंग १४०१ ब। सक्रमण ४८५ अ, अल्पबहुत्व—११६८।

हाहांग—४.५३१ अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, २.२१७ अ ।

हाहा—४.५३१ अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, २.२१७ अ, गधर्व जाति का व्यतर देव २.२११ अ ।

हिगुल—४.५३१ अ ।

हिगुलवर—द्वीप सागर—निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अंकन ३.४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४ ।

हिंसक—अहिंसा १.२१७ अ, अहिंसा (प्रमत्त) १.२१६ अ ।

हिंसा—४.५३१ अ, अध्यवसान १.५३ अ, कषाय २.३५ अ, अशुद्धोपयोग (अहिंसा) १.२१६ ब, १.२१७ ब, अहिंसा १.२१६ अ-ब, १.२१७ अ-ब, परिग्रह ३.२५ ब, श्रावक ४.५० ब ।

हिंसाभाव—अर्हतातिगय १.१३७ ब ।

हिंसात्व—परिग्रह ३.२५ ब ।

हिंसादान—अनर्थदण्ड १.६३ ब ।

हिंसा दोष—श्रावक ४.४६ अ ।

हिंसानंद—रौद्रध्यान ३.४०७ अ ।

हिंसानंदी—रौद्रध्यान ३.४०७ अ ।

हिंसायज्ञ—यज्ञ ३.३६६ ब ।

हिंसाशुद्धि—श्रावक ४.४६ अ ।

हिजरी सवत्—इतिहास १.३०६ ब ।

हित—४.५३७ अ, उपदेश १.४२४ ब, १.४२५ अ, १.४२६ ब, मिथ्यादृष्टि ३.३०५ ब, समिति ४.३४० अ-ब ।

हितकारक वचन—४.२७० ब ।

हिताहित वचन—सत्य ४.२७२ ब ।

हितोपदेश—उपदेश १.४२४ ब, १.४२५ अ, १.४२६ ब ।

हिम—४.५३७ अ । नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २.५७६ ब, अंकन ३.४४१ । नारकी अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

हिमगिरि—हरिवंश १.३४० अ ।

हिमनाश—तीर्थंकर शीतलनाथ २.३८२ ।

हिमपुर—४.५३७ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

हिमपुष्टि—यदुवंश १.३३७ ।

हिमवत्—४.५३७ अ ।

हिमवान्—४.५३७ अ, चक्रवर्ती ४.१५ ब, यदुवंश १.३३७ ।

हिमवान् (पर्वत)—४.५३७ अ । जैन मान्यता—निर्देश ३.४४६ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७ । तुलना ३.४३६ ब, चातुर्वर्षिक भूगोल

३.४३७ ब, बौद्धाभिमत ३.४३४ ब, वैदिकाभिमत ३.४३१ ब ।

हिमवान् (कूट तथा देव)—कुंडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६७ । पद्महृद का कूट—निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४५४ । सुमेरु के वन का कूट—निर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४१ । हिमवान् पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४ के सामने ।

हिमशीतल—४.५३७ अ, अकलंक भट्ट १.३१ अ ।

हिरण—स्वप्न ४.५०५ अ ।

हिरण्य—४.५३७ ब ।

हिरण्यकशिपु—४.५३७ ब, इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब ।

हिरण्यगर्भ—४.५३७ ब, इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब, योगदर्शन ३.३८४ अ ।

हिरण्यनाभ—४.५३७ ब ।

हिरण्योत्कृष्ट जन्मता—संस्कार-४.१५२ अ ।

ही—एकांत १.४६०-४६२ ।

हीन—४.५३७ ब, गणित २.२२२ ब, व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ, ३.६२३ अ ।

हीनयान—बौद्धदर्शन ३.१८७ अ ।

हीनाधिक मानोन्मान—४.५३७ ब, अस्तेय व्रतमतिचार १.२१३ ब ।

हीयमान—४.५३७ ब, अवधिज्ञान १.१८७ ब, १.१६३ ब ।

हीराचंद—४.५३७ ब, इतिहास १.३३४ अ ।

हीरानंद—४.५३७ ब ।

हीलित—४.५३७ ब ।

हुंकार—व्युत्सर्ग ३.६२२ अ ।

हुंडकसंस्थान—संस्थान ४.१५४ ब ।

हुंडकसंस्थान नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.६५, प्रदेश ३.१३६, बंध ३.६७, बधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३७४ अ, उदयस्थान १.३६०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगीभग १.४०४ । सक्रमण ४.८५ अ, अल्पाहुत्वा १.१६६ अ ।

हुंडावसपिणी—काल २.६१, चक्रवर्ती ४.१६ ब, जन्म २.३१४ ब ।

हुल्लराज—४.५३७ ब, नंदिसंघ १.३३५ ।

हूनवंश—४.५३७ ब, कस्की २.३० ब, इतिहास १.३११ अ.ब, १.३१५।

हूह—४.५३७ ब, काल का प्रमाण २.२१६ अ, २.२१७ अ। गन्धर्व जातीय व्यंतर देव २.२११ अ।

हूह अंग—४.५३८ अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, २.२१७ अ।

हूहक—काल का प्रमाण २.२१६ अ।

हूहकांग—काल का प्रमाण २.२१६ अ।

हूहकमल—पदस्थ ध्यान ३.६ ब।

हूहयंगम—४.५३८ अ, किन्नर जातीय व्यंतर देव २.१२४ ब।

हूहयावती—विभंगा नदी—निर्देश ३.४५६ अ, ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३.४८६, ३.४९०, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने (चि० स० ३७)।

हूहिक—यदुवंश १.३३६।

हूदिनंवि—नदिसघ भट्टारक १.३२३ ब।

हेतु—४.५३८ अ, अनुमान अवयव १.६८ ब, कारण २.५४ अ, न्याय २.६३३ ब।

हेतुत्र—धर्माधर्म २.४८८ ब, २.४९०।

हेतुबिंदु टीका—अर्चट १.१३४ ब।

हेतुमत—हेतु ४.५४० ब।

हेतुवाद—पद्धति ३.८ ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ, हेतु ४.५४० ब।

हेतुवाद समर्थन—आगम १.२३७ ब।

हेतुविचय—धर्मध्यान २.४८० अ।

हेत्वंतर—४.५४१ ब।

हेत्वंतर निग्रहस्थान—हेत्वंतर ४.५४१ ब।

हेत्वाभास—अज्ञातासिद्ध १.२१० अ, असिद्ध १.२०६ ब, आश्रयासिद्ध १.२१० अ, एकदेशासिद्ध १.२१० अ, न्याय २.६३३ अ, व्याप्यासिद्ध १.२१० अ, सन्दिग्धासिद्ध १.२१० अ, स्वरूपासिद्ध १.२१० अ, हेतु ४.५४० ब, ४.५४१ अ।

हेम (वैद्यराज)—हरिदेव ४.५३० अ।

हेमकीर्ति भट्टारक—नदिसघ १.३२३ ब, १.३२४ अ।

हेमकूट—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

हेमग्राम—४.५४१ ब।

हेमचंद्र—४.५४१ ब। प्रथम—काष्ठासघ १.३२७ अ, इतिहास १.३३० अ। द्वितीय (श्वे० हेमचंद्र सूरि)—स्तोत्र ४.४४६ ब, इतिहास १.३३१ अ, १.३४३ ब, तृतीय—इतिहास १.३४४ अ।

हेममाला—व्यन्तरेद्र वृत्तभिका ४.५१३ ब।

हेमरथ—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब।

हेमराजपांडे—४.५४२ अ, इतिहास १.३३४ अ।

हेय—मिथ्यादृष्टि ३.३०५ ब, ३.३०६ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५६ ब।

हेयबुद्धि—सम्यग्दर्शन ४.३५६ ब।

हेलित—व्युत्सर्ग दोष ३.६२३ अ।

हैमवत् (कूट)—४.५४२ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८। सुमेरु के वन का कूट—निर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, अंकन ३.४५१। हिमवान् पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, अंकन ३.४४४ के सामने।

हैमवत् (क्षेत्र)—४.५४२ अ, निर्देश ३.४४६ अ, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने। अवगाहना १.१८०, आयु (तिर्यंच) १.२६३, आयु (मनुष्य) १.२६४, काल विभाग २.६२ अ, २.६३, भोगभूमि ३.२३५ ब।

हैमी नाममाला—(अभिधानचिन्तामणि) इतिहास १.३४३ ब।

हैरण्यवत् (कूट)—४.५४२ अ, शिखरी पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, अंकन ३.४४४ के सामने।

हैरण्यवत् (क्षेत्र)—४.५४२ अ, निर्देश ३.४४६ अ, विस्तार ३.४७६, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३.४४४ के सामने। अवगाहना १.१८०, आयु (तिर्यंच) १.२६३, आयु (मनुष्य) १.२६४, कालविभाग २.६२ ब, २.६३, भोगभूमि ३.२३५ ब। चातुर्द्वीपिक भूगोल ३.४३७ ब, वैदिकाभिमत हिरण्यमय क्षेत्र ३.४३१ ब।

होयसल—४.५४२ ब।

होलीरेणुकाचरित्र—४.५४२ ब, इतिहास १.३३३ ब, १.३४७ अ।

ह्यूनसांग—४.५४२ ब।

हूद—४.५४२ ब, प्रत्येक वर्षधर पर्वत पर स्थित—निर्देश ३.४४६ ब, ३.४५३ ब, विस्तार ३.४९०, ३.४९१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र स ३७), चित्र ३.४५४, गणना ३.४४५ अ, ३.४७४ अ।

हूस्व—४.५४२ ब, अक्षर १.३३ अ।

ह्रीं—पदस्थध्यान ३.७ अ।

ह्री (कूट)—४.५४२ ब, महाहिमवान् पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४।

ह्री (देवी)—४.५४२ ब, महापद्म हृद की देवी—निर्देश
 ३.४५३ ब, परिवार ३.६१२ अ, मध्यलोक में अव-
 स्थान ३.६१४ अ, भवन का विस्तार ३.६१५, आयु
 १.२६५। महाहिमवान् पर्वत के कूट की देवी—निर्देश

३.४७२ अ, अकन ३.४४४। रुचकवर पर्वत की
 दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अकन ३.४६८,
 ३.४६९।

ह्रीमत—४.५४२ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।



शब्दानुक्रमणिका में छूटे हुए शब्द

आकाशपुष्प—२.२२४ ब, असत्, अविद्यमान।
 आकाशभूत—१.२२४ ब, भूत जाति के व्यन्तरदेव।
 इकट्ठी—१.३०७ ब, बादल सख्या।
 उज्ज्वल—१.३५३ अ, विद्युत्प्रभ गजदन्त पर स्थित शतउज्ज्वल
 कूट तथा देव का नाम।
 उत्पादनोच्छेद—१.३५६ ब, एक प्रकार का व्युच्छेद।
 उत्पादलब्धिस्थान—१.३५६ ब, एक प्रकार का लब्धिस्थान।
 उत्तरोत्तर—१.३५६ ब, गणित प्रकरण से सम्बन्धित।
 उपासकाचार—१.४४४ ब, एक श्रावकाचार।
 ऋषि मन्त्र—१.४५८ अ, मन्त्र विशेष।
 कंटकद्वीप—२.१ अ, लवण समुद्र में स्थित एक अन्तर्द्वीप।
 क्षायिक सम्यग्ज्ञान—२.१८६ अ, दे सम्यग्ज्ञान।
 घनप्रायोगिक शब्द—२.२७४ ब, दे शब्द।
 घोषप्रायोगिक शब्द—२.२७५ अ, दे. शब्द।
 चन्द्रकल्याणकव्रत—२.२७५ ब, दे. कल्याणकव्रत।
 चतुःशिर—२.२७७ ब, दे नमस्कार।
 चलितप्रदेश—२.२७६ ब, दे. जीव।
 चारक्षेत्र—२.२८० अ, दे विहार-क्षेत्र।
 जलशुद्धि—२.३२६ अ, दे. जलगालन।
 जसफल—२.३२६ ब, दे. जयपाल।
 जाग्रत—२.३२६ ब, दे. निद्रा।
 जाति आर्य—२.३२८ अ, दे. आर्य।
 जैनाभिषेक—२.३४५ अ, दे. पूजापाठ।
 जोइंदु—२.३४५ अ, दे. योगेदु।
 ज्ञानवाद—२.२७० अ, दे वाद।
 तत्प्रायोगिक शब्द—२.३५७ अ, दे शब्द।
 तद्व्यतिरिक्त संयमलब्धिस्थान—२.३५७ अ, दे लब्धि।
 तिर्यक्क्रम—२.३७१ अ, दे क्रम/१।
 तीर्थकृद्भावना क्रिया—२.३६३ ब, दे सस्कार/२।
 तृतीय भक्त—२.३६४ अ, दे प्रोषधोपवास/१।
 त्रिराशि गणित—२.४०० अ, दे. गणित/II/४
 दत्ति—२.४०२ अ, दे. दान।
 दिक्व्रत—२.४२८ ब, दे. दिग्व्रत।
 दिव्यलक्षणपंक्तिव्रत—२.४३३ ब, दे. पंक्तिव्रत।
 दीर्घस्वर—२.४३४ अ, दे अक्षर।
 दुगुंछा—२.४३६ ब, दे. जुगुप्सा।
 देवारण्यक—२.४५० अ, पूर्व विदेह के वनखण्ड।
 दे. लोक ३.६१४।
 देशचारित्र—२.४५० ब, दे सयतासयत।

दोहासार—२.४५१ ब, दे. योगसार स./३।
 द्योतन—२.४५२ अ, दे. उद्योत।
 द्वारपाल—२.४६२ अ, दे लोकपाल।
 धर्मानुकम्पा—२.४८७ ब, दे. अनुकम्पा।
 धर्मी—२.४६० ब, दे. पक्ष।
 धूलिकलशाभिषेक—२.४६२ अ, दे. प्रतिष्ठा-विधान।
 ध्रुवमतिज्ञान—२.५०२ ब, दे. मतिज्ञान/४।
 ध्रुववर्गणा—२.५०३ अ, दे. वर्गणा।
 नरकायु—२.५८० अ, दे. आयु/३।
 नाग्न्य—२.५८२ अ, दे. अचेलकत्व
 नास्तित्व भंग—२.५८५ ब, दे. सप्तभंगी/४।
 नास्ति स्वभाव—२.५८५ ब, दे असत् स्वभाव, अन्य का
 अन्य रूप से न होना।
 निजगुणानुस्थान—२.६०७ अ, दे परिहार प्रायश्चित्त।
 निहव—२.६१० अ, ज्ञान का अपलाप करना, छिपाना।
 निर्दोषसप्तमीव्रत—२.६२४ ब, दे. नंदसप्तमीव्रत।
 निर्लाछन कर्म—२.६२५ ब, दे. सावद्य/५।
 निर्वाह—२.६२६ अ, दे. निर्वहण।
 निर्विष—२.६२७ ब, दे. निर्विष नाम की एक ऋद्धि
 (आस्यनिर्विष, दृष्टिनिर्विष)।
 निषध हृद—२.६२८ ब, देवकुरु का एक हृद।
 निस्तारक मन्त्र—२.६२६ ब, दे. मन्त्र/१/६।
 पंचकल्याणकव्रत—३.१ अ, दे. कल्याणकव्रत।
 पत्नी—३.३ ब, दे. स्त्री।
 परंपराश्रय हेत्वाभास—३.११ ब, दे. अन्योन्याश्रय।
 परमार्थ प्रत्यक्ष—३.२२ ब, दे. प्रत्यक्ष/१।
 परस्पर कल्याणकव्रत—३.२३ ब, दे. कल्याणकव्रत।
 परिग्रहानन्दी रौद्रध्यान—३.३० अ, दे. रौद्रध्यान।
 परिग्राहिकी क्रिया—३.३० अ, दे क्रिया/३/८
 परिणामप्रत्यय प्रकृतियाँ—३.३२ ब, दे. प्रकृतिबन्ध/२।
 परिणामशुद्ध प्रत्याख्यान—३.३२ ब, दे. प्रत्याख्यान/१।
 पांडुर्य—३.५२ अ, आर्यखण्ड स्थित मध्यप्रदेश।
 पातालवासी—३.५२ अ, लवण आदि समुद्रों में रहनेवाले।
 पानांगकल्पवृक्ष—३.५३ ब, दे. वृक्ष/१।
 पिष्टपेसन—३.५६ अ, दे अतिप्रसंग।
 पुद्गल परिवर्तन—३.६८ ब, दे. ससार/२।
 पुरुस्कार परिषह—३.७१ ब, दे. सत्कार।
 पूर्वज्ञान—३.८३ ब, दे. श्रुतज्ञान/III/१।
 पृच्छनी भाषा—३.८३ ब, दे. भाषा।

प्रकारक सूरि—३.८६ अ, दे प्रकुर्वी।
 प्रज्ञापन नय—३.११४ अ, दे नय/1/५।
 प्रज्ञापिनी भाषा—३.११४ ब, दे भाषा।
 प्रच्छना—३.११४ ब, दे. पृच्छना।
 प्रत्यक्षबाधित पक्षाभास—३.१२४ अ, दे. बाधित।
 प्रत्यक्षबाधित हेत्वाभास—३.१२४ अ, दे. बाधित।
 प्रत्ययिक बन्ध—३.१३१ अ, दे. बन्ध/१।
 प्रमाण सप्तभंगी—३.१४५ ब, दे. सप्तभंगी/२।
 प्रयोगबन्ध—३.१४६ ब, दे. बन्ध/१।
 प्रलाप—३.१४७ ब, दे. वचन।
 प्रवालचारणऋद्धि—३.१४८ ब, दे. ऋद्धि/४।
 प्रव्रज्याकाल—३.१५१ अ, काल/१।
 प्रव्रज्याक्रिया—३.१५१ अ, दे. सस्कार/२।
 प्रव्रज्यागुरु—३.१५१ अ, दे. गुरु/३।
 प्रशस्त उपशम—३.१५१ ब, दे. उपशम/१।
 प्राभृतकज्ञान—३.१५६ ब, दे. श्रुतज्ञान/II/१।
 प्राभृतकसमासज्ञान—३.१५७ ब, दे. श्रुतज्ञान/II/१।
 प्रायोगिक शब्द—३.१६२ अ, दे. शब्द।
 प्लवंग संवत्—३.१६७ अ, दे. इतिहास/२।
 बध वचन—३.१८० ब, दे. वचन।
 बध्यमान आयु—३.१८० ब, दे. आयु।
 बाह्य उपकरण इन्द्रिय—३.१८३ ब, दे. इन्द्रिय/१।
 बाह्य निर्वृति इन्द्रिय—३.१८३ ब, दे. इन्द्रिय/१।
 ब्रह्म ऋषि—३.१८८ अ, दे. ऋषि।
 भाटक जीविका—३.२१६ अ, दे. सावद्य/५।
 भिन्न अंकगणित—३.२३३ ब, दे. गणित/II/१।
 भेदग्राही शब्दनय—३.२३७ अ, दे. नय/III/१/६।
 मंडलीक वायु—३.२४५ अ, दे. वायु।
 मंत्रन्यास—३.२४८ ब, दे. प्रतिष्ठाविधान।
 मंद—३.२४८ ब, दे. तीव्र।
 मंदराभिषेक क्रिया—३.२४८ ब, दे. सस्कार/२।
 मनशुद्धि—३.२७२ ब, दे. शुद्धि।
 मनोदंड—३.२७६ अ, दे. योग/१।
 मनोविनय—३.२७८ ब, दे. विनय/१।
 मरणभय—३.२८८ अ, दे. भय।
 मशकपरिषह—३.२८६ अ, दे. दशपरिषह।
 मसिकर्म—३.२८६ अ, दे. सावद्य/३।
 महातप ऋद्धि—३.२९० अ, दे. ऋद्धि/५।
 महामह—३.२९० ब, दे. पूजा।
 माय—३.२९६ अ, आगमस्वरूप।
 मायावाद—३.२९६ ब, दे. वेदान्त/२।
 मिथ्यादर्शन शल्य—३.३०१ ब, दे. शल्य।
 मिष्ट संभाषण—३.३१० ब, दे. सत्य।

मुखपटविधान—३.३१३ ब, दे. प्रतिष्ठा विधान।
 मृषामन—३.३१६ ब, दे. मन।
 मृषावचन—३.३१६ ब, दे. वचन।
 मोष मन—३.३४० अ, दे. मनोयोग।
 युग्मचतुष्टय—३.३७३ अ, दे. अनेकान्त/४।
 राजवंश—३.४०० ब, दे. इतिहास/३।
 रेवस्या—३.४०६ ब, आर्यखण्ड की एक नदी।
 रेशम—३.४०६ ब, दे. वस्त्र।
 रूपरेखा—३.४०५ ब, outline
 लयनकर्म—३.४१५ ब, दे. निक्षेप/४।
 लौच—३.४६३, अ, दे. केशलोच।
 वचनबाधित—३.४६८ ब, दे. बाधित।
 वचनविनय—३.४६८ ब, दे. विनय/१।
 वचनातिचार—३.४६८ ब, दे. अतिचार।
 वचनोपगत—३.४६८ ब, दे. निक्षेप/५।
 वाल्हीक—३.५३६ अ, भरतक्षेत्र का एक प्रदेश (दे. मनुष्य/४)।
 वास्तु—३.५३६ अ, गृह सम्बन्धी शिल्पविद्या।
 विद्युच्चोर—३.५४६ ब, दे. विद्युत्प्रभ/६।
 विद्युन्माला—३.५४६ ब, पश्चिम पुष्करार्द्ध का मेरु।
 विधिचंद—३.५४७ अ, कवि बुधजन।
 विपतत्त्व—३.५५५ अ, दे. गरुड तत्त्व।
 विपरीत दृष्टान्त—३.५५५ ब, दे. दृष्टान्त।
 विपर्यास—३.५५६ अ, दे. विपर्यय।
 विमिचिता—३.५६३ ब, विजयार्ध की दक्षिण श्रेणी का एक नगर।
 विराग विचय—३.५६४ अ, दे. धर्मध्यान/१।
 विश्वास—३.५७० ब, दे. श्रद्धान।
 विषय व्यवस्था हानि—३.५७० ब, दे. हानि।
 विष संरक्षण ध्यान—३.५७० ब, दे. रौद्रध्यान।
 विसदृश प्रत्यभिज्ञान—३.५७२ ब, पूर्व ज्ञानरूप न होना।
 वीचार—३.५७५ ब, दे. विचार।
 वीचारस्थान—३.५७५ ब, दे. स्थिति/१।
 वीरशासन दिवस—३.५७६ ब, दे. महावीर।
 वृद्ध—३.५८१ अ, गुणो मे वृद्धि को प्राप्त।
 वेद्य—३.६०१ ब, दे. वेदना/१।
 वैतृष्णा—३.६०४ ब, दे. उपेक्षा।
 वैधर्म्यसमा—३.६०५ ब, दे. साधर्म्यसमा।
 व्यतिरेकी हेतु—३.६१६ ब, दे. हेतु।
 व्यवस्था हानि—३.६१७ ब, दे. हानि।
 व्यवहार द्रव्य—३.६१७ ब, दे. नय/V/४/२/४
 व्युदास—३.६२४ अ, दे. अभाव।
 शक्ति तत्त्व—४.२ अ, दे. शैवदर्शन।
 शन्मुख—४.२ ब, भ. वासुपूज्य का शासक यक्ष।

शब्द पुनरुक्त निग्रह स्थान—४.४ ब, दे पुनरुक्त।
 शरीर मद—४.८ ब, दे मद।
 शरीर मिश्रकाल—४.८ ब, दे काल/१।
 शामिल यव मध्य—४.२७ ब, दे. यव।
 शास्त्राभ्यास—४.२८ ब, दे स्वाध्याय।
 शिखाचारण ऋद्धि—४.२८ ब, दे. ऋद्धि/४।
 शीतगुह—४.३० अ, भरतक्षेत्र मे मलयगिरि के निकट का एक पर्वत।
 शीतभोगतप—४.३० अ, दे कायक्लेश।
 शील कल्याणकव्रत—४.३१ अ, दे कल्याणकव्रत।
 शीलांक—४.३१ अ, नवागवृत्ति के कर्ता श्वेताम्बराचार्य।
 श्यामवर—४.४३ ब, मध्यलोक का तेरहवों द्वीप व सागर।
 शृंखलित—४.४३ ब, कायोत्सर्ग का एक अतिचार।
 श्रुतमूढ—४.७१ अ, दे मूढ।
 श्रुतिकल्याणव्रत—४.७१ ब, दे कल्याणकव्रत।
 श्वस्त्रा धारणा—४.७६ अ, दे वायु।
 षंड—४.८१ अ, दे नपुसक।
 षट्काल—४.८१ अ, दे काल/४।
 संकलन धन—४.८२ अ, दे गणित/II/१/३।
 संकलन वार—४.८२ ब, दे. गणित/II/१।
 संघातज्ञान—४.१२४ अ, दे. श्रुतज्ञान/II।
 संधारा—४.१२५ ब, दे सस्तर।
 संदिग्धानेकान्तिक हेत्वाभास—४.१२५ ब, दे व्यभिचार।
 संपृच्छिनी दोष—४.१२५ ब, दे. भाषा।
 संमत सत्य—४.१२६ ब, दे सत्य/१।
 संयमी—दे सयत।
 संशयानेकान्तिक हेत्वाभास—४.१४६ अ, दे. व्यभिचार।
 संशयासिद्ध हेत्वाभास—४.१४६ अ, दे. असिद्ध।
 सकलचन्द्र—४.१५६ ब, दे इतिहास/७/५।
 सकल विधि विधान—४.१५६ ब, दे. पूजापाठ।
 सचित्त संमिश्र—४.१५८ ब, दे. सचित्त/३।
 सत्कर्मिक—४.२७० अ, दे सत्त्व।
 सत्वाद—४.२७० अ, कपिलादिका मत है कि कारण व्यापार से पूर्व भी कार्य सत् ही है।
 सत्संगति—४.२७० अ, दे. सगति।
 सत्योपचार—४.२७४ अ, दे. उपचार/१।
 सत्त्वकाल—४.३११ अ, दे काल/१/६।
 सप्त व्यसन—४.३२६ ब, दे व्यसन।
 समवायिनी क्रिया—४.३३५ ब, दे. क्रिया/३।
 समुत्पत्तिक बन्धस्थान—४.३४२ ब, दे. अनुभाग/१।
 सम्पेदाचल माहात्म्य—४.३४४ अ, प. मनरगलाल कृत छन्दबद्ध रचना।

सम्यक्त्व प्रकृति—४.३४४ अ, दे मोहनीय/२।
 सम्यक्त्व लब्धि—४.३४४ अ, दे. लब्धि/१/३।
 सम्यक् मिथ्यात्व गुणस्थान—४.३४४ अ, दे., मिश्र।
 सम्यग्दर्शन क्रिया—४.३७३ ब, दे क्रिया/३।
 सरःशोष कर्म—४.३७६ अ, दे. सावद्य/५।
 सरस्वती पूजा—४.३७६ अ, दे. पूजा।
 सर्वधाती प्रकृति—४.३७६ ब, दे अनुभाव/४।
 सर्वधाती स्पर्धक—४.३७६ ब, दे स्पर्धक।
 सर्वतोभद्रपूजा—४.३७६ ब, दे पूजा/१।
 सहज विपर्यय—४.३६८ अ, दे. विपर्यय।
 सहवृत्ति—४.३६८ अ, दे तादात्म्य सम्बन्ध।
 सांपराय—४.४०० अ, दे सपराय।
 सांशयिक मिथ्यात्व—४.४०० अ, दे. संशय।
 साधनमन्त्र—४.४०१ अ, दे. मन्त्र/१/६।
 साधन विकल—४.४०१ अ, दे दृष्टान्त/१/८।
 साध्य विकल्प—४.४११ अ, दे. दृष्टान्त/८।
 साध्य विरुद्ध—४.४११ अ, दे. विरुद्ध।
 सान्निपातिक भाव—४.४११ अ, दे सन्निपातिक भाव।
 सिद्धार्थ—४.४२८ ब, एक विद्या।
 सुखमा काल—४.४३४ ब, दे. काल/४।
 सुप्त—४.४३५ अ, दे. निद्रा।
 सुरलोक—४.४३७ अ, दे. स्वर्ग/५।
 सुषिर प्रायोगिक शब्द—४.४३८ अ, दे शब्द/१।
 सूक्ष्मा वाणी—४.४४२ अ, दे भाषा।
 स्थितिबंधोत्सरण—४.४७० ब, दे. उत्कर्षण/५।
 स्थितिसत्त्वापसरण—४.४७० ब, दे. अपकर्षण/३।
 स्वतन्त्रता—४.५०३ ब, द्रव्य, गुण, पर्याय स्वतन्त्र है।
 स्वात्मनि क्रिया विरोध—४.५२२ अ, दे. विरोध।
 हद्दी—४.५२६ ब, दे. अस्थि।
 हत्या—४.५२६ ब, आत्महत्या, मरण।
 हित संभाषण—४.५३७ अ, दे. सत्य/२।